DUE DATE SLIP

GOVT. COLLEGE, LIBRARY

KOTA (Raj.)

Students can retain library books only for two weeks at the most.

BORROWER'S No.	DUE DTATE	SIGNATURE

भारत का औद्योगिक विकास

विषय सूचि

दूसरा भाग

भारत के कुछ प्रसिद्ध औद्योगिक प्रतिष्ठान।

पूंजीवाद और साम्यवाद

पूंजीवाद और साम्यवाद (कम्युनिज्म) दोनों ही औद्योगिक क्रान्ति के बच्चे हैं। ये दोनों एक ही परिवार के हैं इसीलिये वे आपसमें इतना अधिक लड़ते हैं।

आज का पूंजीवाद उस पूंजीवाद से बिल्कुल भिन्न है जो दो तीन पीढ़ी पहले था। यह एक दूसरी बात है कि आज का पूंजीवाद उस पूंजीवाद से अच्छा या बुरा है जिसपर १०० वर्ष पहले कार्लमार्क्स ने लिखा था। पर इसमें कोई सन्देह नही कि वह भिन्न था। यदि आज आप पूंजीवाद की आलोचना उन्हीं दिशाओं में करें जैसा १०० वर्ष पूर्व कोई व्यक्ति करता था तो आप एक ऐसे विषय की आलोचना करेंगे जो आज नही है पर जो १०० वर्ष पूर्व थी।



पं० जवाहर लाल नेहरू

साम्यवाद क्रांतिकारी सिद्धान्त की तरह आरंभ हुआ, पर यह एक आश्चर्य की बात है कि वह किस तरह अधिक कठोर होता गया, और कभी कभी वह अपनी वास्तविक स्थिति से भी हट गया। उसने एक ऐसी महत्वाकांक्षा का प्रतिनिधित्व किया जिससे बहुसंख्यक जनता में हलचल मच गई, पर उसके रूप जड़वत कठोर होते गये। पर निसंदेह उनमें भी परिवर्तन हुआ, और यदि उनमें परिवर्तन न होता तो कोई और चीज उसका स्थान ग्रहण कर लेती।

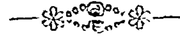
गत दस वर्षों में राजनीतिक क्षेत्र में बहुत परिवर्तन हुए एशिया, यूरोप और अन्यत्र बहुत ही अधिक हुए, और एशिया का यूरोप और अमेरिका से संपूर्ण सम्बन्ध-कुछ ऐसा हुआ जो बराबर परिवर्तन शील, रहा। राजनीतिक परिवर्तनों का अभिप्राय संबंधों में हेरफेर करना है। कभी कभी बड़े बड़े हेरफेर होते हैं। यदि ऐसे हेरफेर न हो तो नई समस्याए बराबर उत्पन्न होंती रहेगी। आप आज की समस्याओं को हल करने में निष्फल रहते हैं क्योंकि आप अपने दिमागों में ऐसा चित्र रखते है जो आज का नही है। और जो बीते हुए कल का चित्र है।

मनुष्य का यह स्वभाव होता है कि वह ऐसी चीजो पर विचार नहीं करता जो उसे अच्छी नहीं लगती। पर वास्तविक चीजों की उपेक्षा करने से ऐसा नहीं होगा कि उन चीजों का अस्तित्व ही न रहे, वे रहेंगी और फल यह होगा कि समस्याएं और भी कठिन हो जायंगी।

—पं० जवाहर लाल नेहरू

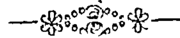
भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



शक्ति (मशीन) युग का उदय और उसकी समस्याएँ

Rise of Power Age Its Problems.



औद्योगिक युग और उसकी समस्याएँ

मनुष्य की तीव्र अनुसन्धान-वृत्ति ने प्रकृति के गूढ़ रहस्यों पर विजय पाई। विज्ञान ने प्रकृति के भण्डार में छिपी हुई महान् शक्ति का पता लगाया। वह शक्ति विद्युत्-शक्ति, वाष्पशक्ति, गैसशक्ति और परमाणुशक्ति के रूप में प्रगट हुई।

इस शक्ति का उपयोग मानव ने अपने दैनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में किया। तेल के दियों से टिमटिमाने वाले नगर बिजली की चकाचौंध करने वाली रोशनी से जगमगाने लगे। बड़ी २ भीमकाय मशीनों का आविष्कार हुआ। महीनों में सम्पन्न होने वाला उत्पादन घण्टों में सम्पन्न होने लगा। यातायात के साधन बढ़े और मनुष्य ने विशाल संसार को एक छोटी दुनिया के रूप में परिवर्तित करा दिया। मगर इसके साथ ही साथ इस नई दुनियाँ में नई समस्याएँ भी उत्पन्न हुईं। मनुष्य ने कर्त्तव्य की तरफ से निगाह हटाकर "अधिकार" को अपने जीवन का केन्द्र-बिन्दु बनाया। दलित और शोषित वर्ग ने अपने अधिकारों के लिए आवाज बुलन्द करना प्रारम्भ किया। सारे संसार में "वर्ग-संघर्ष" ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया।

इसी वर्ग संघर्ष में से "कम्यूनिज्म"! "सोशलिज्म" "अनारकिज्म" इत्यादि अनेक सिद्धान्त और संस्थाएं पैदा हुईं, मगर फिर भी विश्व-मानव को शान्ति नहीं मिली। सब प्रकार की सुख-सुविधाओं के साधन विद्यमान रहने पर भी, प्रकृति के महान् शक्ति-भण्डार पर कब्जा होने पर भी समस्त "विश्वमानव" आज जितना अशान्त, अस्थिर और उद्विग्न है, उतना समस्त इतिहास के किसी पृष्ठ पर नहीं रहा।

और इस अशान्ति का पहला कारण "अधिकारों" की धुन में मनुष्य की कर्त्तव्य के प्रति उपेक्षा है। राष्ट्र से, समाज से, उद्योग से उसे अधिकार के रूप में क्या पाना है, इस सम्बन्ध में मनुष्य जितना सतर्क है, उतना वह समाज को कर्त्तव्य के रूप में क्या देना है, इस सम्बन्ध में नहीं है।

अशान्ति का दूसरा कारण यन्त्र-कला के द्वारा मनुष्य जो उत्पादन करता है उसके वितरण की गैर व्यवस्था है। पूंजीपति अपनी पूंजी के बल पर उत्पादन के अधिक भाग पर अपना अधिकार रखते आये हैं और सरकारें उनकी पीठ ठोंकती रही हैं। मगर धीरे २ मजदूरों के संगठन प्रबल होने लगे, पूंजीपतियों की शोषण-क्रिया का पता राज्य और जनता को लगने लगा। समय मजदूरों के साथ हो गया और अब मजदूर यह आशा करने लगे हैं कि उत्पादन का सब कुछ उन्हीं को मिल जाय तथा अब राज्य सरकारों का रुख भी मजदूरों की तरफ है। इस प्रकार भयङ्कर वर्ग-संघर्ष के बीच हमारा औद्योगिक जगत् क्रमागत गति से आगे बढ़ता जा रहा है। मगर समाज में स्थायी शान्ति स्थापित करने के लिए पहली आवश्यक चीज यह है कि मनुष्य अपने अधिकारों के साथ २ अपने कर्म को भी समझे और दूसरी चीज यह है कि समाज में "वितरण" की व्यवस्था ऐसी सुलझी हुई हो जिसमें सभी को अपना हिस्सा मिले और अच्छा खाना, अच्छा पहनना और सुविधा जनक मकान सभी को नसीब हो।

वितरण की विषमता (Wrong Distribution) ही समाज में सारी अशान्ति की जड़ है।

भारत का औद्योगिक विकास

पूर्वाभास --

आज से लगभग सौ सवा सौ वर्ष पूर्व जब तक संसार में शक्ति-युग का विकाश नहीं हुआ था, मनुष्य का रहन-सहन, उसकी समाज-व्यवस्था, उसकी भावनाएँ तथा उसकी उत्पादन करने की पद्धति आज से बिलकुल भिन्न प्रकार की थीं।

उस समय मनुष्य की दुनिया का विस्तार बहुत सङ्कीर्ण था। रेल, मोटर, वायुयान तथा तार और पोस्ट आफिस की सुविधा न होने से अपने गांव तथा जिले तक ही उसकी दुनिया सीमित थी, जहां वह पैदल या बैल गाड़ियों के द्वारा यात्रा कर सकता था। जीवन में शायद एक बार अपने परम पुनीत तीर्थों के दर्शन के लिए संघ-बद्ध होकर वह यात्रा करता था, तब उसे मालूम होता था कि अपने गांव और जिले के सिवा भी उसका देश काफी बड़ा है। समुद्र-यात्राका सौभाग्य तो कुछ विरले व्यापारियों, राजपुरुषों और भाग्यशाली व्यक्तियों को ही प्राप्त होता था। शादी-ब्याह भी उस जमाने में आस-पास के स्थानों में ही हुआ करते थे।

प्राकृतिक प्रकोप जैसे अनावृष्टि, अतिवृष्टि, तूफान, भूकम्प इत्यादि से रक्षाके साधन न होने और अपने को असहाय अवस्था में पाकर, वह अनेकों देवी-देवताओं तथा अज्ञेय शक्ति पर पूरा २ विश्वास रख कर उसकी नियमित उपासना करता था और नास्तिकता को घोर पाप समझता था।

अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जिन वस्तुओं की उसको आवश्यकता होती थी, उसका उत्पादन वह स्वयं अपने ही हाथों से करता था। छोटे २ गृह उद्योगों के द्वारा ही उसे अपनी आवश्यकताएँ पूरी करनी पड़ती थीं जिसकी वजह से उसकी आवश्यकताएं भी बहुत स्वल्प और सीमीत होती थीं।

कहना न होगा कि शक्ति युग के पूर्व कालीन उस ऐतिहासिक काल में मानवीय-संस्कृति का सब से अधिक विकास भारतवर्ष, यूनान और मिस्र में हुआ था। इन तीनों देशों में भी सांस्कृतिक विकास में भारतवर्ष सबसे आगे था। इस देश में एक ओर यहां के सुरम्य जंगलों में संसार त्यागी ऋषि अपनी महान् तपस्या के बल पर सृष्टि और परमात्मा के परमतत्व की खोज में लीन होकर गीता, उपनिषद्, महाभारत, सूत्रग्रन्थ इत्यादि विश्व के महान् साहित्य के निर्माण में लगे हुए थे, वहाँ दूसरी ओर महान् वीर, तेजस्वी और शोध-खोज की प्रवृत्ति वाले राजा और व्यापारी गण अपने सुख और आराम के लिए भिन्न २ प्रकार के कारीगरों को प्रोत्साहन देकर तरह २ की नवीन वस्तुओं का आविष्कार करवाने में अत्यन्त आनन्द का अनुभव करते थे।

इतिहास इस बात का साक्षी है। भारतवर्ष की महान काव्यकला और चित्रकला की तरह यहाँ की

नगर-निर्माण-कला और भवन-निर्माण कला भी संसार के सब देशों से उत्कृष्ट कोटि की थी। यहाँ के बने हुए वस्त्र ढाका की मलमलों और काशी की जरदोजी को पहनने के लिए विदेशों के बड़े २ सम्राट लालायित रहते थे। गन्ने के रस से शक्कर बनाने के आविष्कार भी सबसे पहले इसी देश में आज से हजारों बरस पहले हुआ था जब कि संसार के अन्य देश मीठे पदार्थों में शहद के सिवा किसी दूसरे पदार्थ को जानते भी नहीं थे।

लोहे को गलाने, ढालने और उससे बड़े २ गोले सभी प्रकार के शस्त्रास्त्र और बड़े २ स्तूप बनाने का काम भी उस समय बड़े पैमाने पर होता था। उड़ीसा प्रान्त में भुवनेश्वर और कनारक के मन्दिर ऐसे हैं जिन पर प्रशंसनीय चित्रकारी की गई है। इनको देखकर बंगाल में पाये जाने वाले लोहे के प्राचीन अस्त्र-शस्त्रों के सम्बन्ध में बहुत कुछ खोज और अध्ययन किया जा सकता है। कनारक के मन्दिर में इन चित्रों के अलावा प्रवेश-द्वार के पास २३ फुट ऊँचा और ११ इञ्च मोटा एक विशाल लोहे का स्तूप भी लगा हुआ है जो बतलाता है कि नवीं सदी में (जब कि इस मन्दिर का निर्माण हुआ तब) इस देश के कारीगर लोहे के इतने विशाल स्तूप ढालने में समर्थ थे।

इसी समय की बनी हुई "बचऊर्ला" नामक विशालकाय तोप नवाब मुर्शिदाबाद के इमाम बाड़े और महल के बीच रक्खी हुई है। इस प्रकार लोहे के विशाल स्तूप और स्थूलकाय तोपें जब ढालकर बनाई जाती थीं तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उस समय इस देश के कारीगर लोहे को गलाने और उसको मनमानी आकृति में ढालने की कला से पूर्णतः परिचित थे।

पत्थर की स्थापत्य-कला का इतिहास तो उससे भी अधिक गौरवपूर्ण और उज्ज्वल है। हमारे देश के प्राचीन विशाल मन्दिरों में पत्थरों पर कोई और स्थापत्य-कला के जो उत्कृष्ट प्रदर्शन किये गये हैं, उन्हें देखकर विदेशी इतिहासकार आज भी दाँतों तले अंगुली दबाते हैं। रामेश्वरम् का विशाल मन्दिर, आबू के महान जैन-मन्दिर, श्रवण बेल गोला में स्थापित बाहुबली की ५२ फीट ऊंची दिव्य प्रतिमा, एक पहाड़ को काटकर उसके अन्दर बना हुआ धर्म-राजेश्वर का मन्दिर (मध्य भारत) इत्यादि अनेकानेक मन्दिर और जमीन के अन्दर पाये जाने वाले भवन, भारतीय स्थापत्य-कला की उत्कृष्टता को घोषित कर रहे हैं।

मगर इन सब विशेषताओं के बावजूद यन्त्र-सामग्री उपलब्ध न होने के कारण, यह सारा कार्य्य मनुष्य के हस्त-कौशल के द्वारा ही होता था और देश में निर्मित बढ़िया और उत्तम वस्तुओं का उपभोग केवल राजपुरुष और धनवान लोग ही कर पाते थे। साधारण जन-समुदाय को तो खाने के लिये मोटा अन्न और पहनने को मोटे वस्त्र ही नसीब होते थे।

फिर भी यह मानने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती कि मोटा खाने, मोटा पहनने और गरीबी का जीवन व्यतीत करने पर भी मनुष्य समाज के एक शांत वातावरण में (Simple Living & High Thinking) सादा जीवन और उच्च विचार वाला जीवन व्यीत करता था।

आज के युग की तरह उस समय जीवन-संघर्ष इतना प्रबल नहीं था कि उस संघर्ष से लड़ते २ भी उसका बहुमूल्य जीवन समाप्त हो जाय और फिर भी उसके अपने लिए और अपने बाल-बच्चों के लिए अन्न-वस्त्र की व्यवस्था न हो सके।

उस समय परिवार का एक मनुष्य कमाता था और परिवारके दस प्राणी उस की कमाई पर आराम से जीते थे। मनुष्य को आवश्यकताओं का विस्तार अधिक न होने से सभी अपने को सुखी अनुभव करते थे।

मतलब यह कि वह युग अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व रखता था, जिस प्रकार उसमें कुछ बुराइयाँ और कमजोरियां थीं, उसी प्रकार उसकी अपनी कुछ विशेषताएँ और भलाइयाँ भी थीं जिनकी वजह से आज के युग में प्राप्त सब सुख—सुविधाएँ प्राप्त न होने पर भी उस समय का मानव आज के मानव की तरह अशान्त और असन्तुष्ट नहीं था। शान्ति और संतोष ही उस युग के मुख्य प्रतीक थे। इस बात की पुष्टि में हम उन दिनों बाहर से आये हुए अनेक विदेशी यात्रियों के उद्धरण दे सकते हैं मगर विषयान्तर के कारण तथा समय और स्थान की कमी से उनको यहाँ देना अप्रासंगिक होगा।

शक्तियुग का विकास और उसकी समस्याएं

शक्तिजन्य औद्योगिक विकास का जो समुन्नत स्वरूप आज हम देख रहे हैं, वह अनन्त कालीन परिश्रम पूर्ण बौद्धिक खोज का फल है। शक्ति युग का आधुनिक विकास संसार के सभी स्थानों में एक साथ और एक समान नहीं हुआ, फिर भी यह स्वीकार करने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती कि आधुनिक शक्ति-युग का प्रधान केन्द्र यूरोप की भूमि ही रही है। अभी तक विज्ञान चार या पांच प्रकार की शक्ति (Power) का आविष्कार कर चुका है और इन आविष्कारों ने सारे विश्व-मानव के जीवन में एक अद्भुत कायापलट कर दिया है। इन आविष्कारों ने मनुष्य के जीवन प्रकार को बदल दिया है, उसके आदर्शों को बदल दिया है, उसके विश्वासों की नींव को हिला दिया है, उसकी आकांक्षाओं को विशाल कर दिया है और उसकी संघर्ष-वृत्तिको जाग्रत कर उसकी रक्त-पिपासा को बढ़ा दिया है।

अभीतक का इतिहास बतला रहा है कि विज्ञान की सृजन और विनाशक—इन दोनों प्रकार की शक्तियों में से मनुष्य ने अपनी स्वार्थवृत्ति के वश होकर उसकी विनाशक शक्ति को ही अधिक ग्रहण किया है और इन्हीं विनाशक शक्तियों की उपासना के कारण वह गत अर्धशताब्दी के भीतर-भीतर ही अपने को दो महान विनाशक युगों में फँसा चुका है और तीसरे युद्ध के लिए भी जैसे व्याकुल हो रहा है।

सृजन के क्षेत्र में भी वितरण पद्धति के दोष पूर्ण होने के कारण वह संघर्ष पूर्ण जीवन का ही मुकाबिला करता रहा है, पर इसका कारण भी मनुष्य की स्वार्थ-बुद्धि ही है, विज्ञान की सृजनशक्ति नहीं।

शक्ति तो एक शक्ति ही है, उसका उपयोग मनुष्य चाहे तो निर्माणमें करले, चाहे विनाशमें। अग्नि भी एक शक्ति है। मनुष्य चाहे तो उसका अपने जीवन-निर्माण में उपयोग करे, चाहे तो उसमें अपने

आपको भस्म करके सर्वनाश का महान दृश्य उपस्थित करले, उसमें शक्तिका या अग्नि का कोई दोष नहीं है, सारा दोष मनुष्य की स्वार्थ-बुद्धि का है।

हाँ, तो आधुनिक विज्ञान ने अब तक नीचे लिखी शक्तियों का ज्ञान प्राप्त कर लिया है और इन शक्तियों के साथ ही आधुनिक औद्योगिक युग का प्रारंभ होता है।

विद्युत्-शक्ति (ELECTRIC POWER)

विद्युत्-शक्ति के मूल सिद्धान्त का पता तो ईसाके ६०० वर्ष पहले म्युलिटस नामक व्यक्ति को लगा था। जिसने बतलाया था कि शालिग्राम-शिला और अम्बर को रगड़ने से एक शक्ति पैदा होती है और वह कागज के समान भारशून्य पदार्थों को अपनी ओर खींच लेती है।

मगर विद्युत् शक्ति का क्रमबद्ध इतिहास सोलहवीं शताब्दी में इंगलैंड की महारानी एलिजाबेथ के समय में उनके चिकित्सक डॉक्टर विलियम गिलबर्ट से प्रारम्भ होता है।

इन चिकित्सक महोदय का कार्यकाल सन् १५४४ ई० से १६०३ तक माना जाता है। अम्बर नामक पदार्थ को यूनानी भाषा में 'एलेक्ट्रिक' कहते हैं। अतः अम्बर को रगड़ने से जो आकर्षण करने की शक्ति उत्पन्न होती थी, उसे इन्हीं डाक्टर महोदय ने 'इलेक्ट्रिक' (Electric) शब्द से सम्बोधित किया और आपके बाद सन् १६५० में वाल्टर चार्ल्टन ने सर्वं प्रथम इलेक्ट्रिसिटी (Electricity) शब्द का प्रयोग किया था। इस प्रकार विद्युत् शक्ति का नाम संस्कार किया गया। सन् १७२९ ई० में स्टिफेन्सन ग्रे नामक एक अन्य विद्वान ने इस रहस्य का पता लगा लिया कि आकर्षण करने वाली यह शक्ति एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ को हस्तान्तरित भी की जा सकती है। सन् १७३३ ई० में डू० फे० नामक एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने यह सिद्ध कर दिया कि आकर्षण करने वाली यह विद्युत् शक्ति प्रकार भेद के आधार पर दो प्रकार की होती है। इस विद्युत्-अन्वेषण-क्षेत्र में बेंजामिन फ्रैंकलिन का नाम अत्यन्त प्रसिद्ध है और इनके द्वारा की गई इस ओर की प्रगति को ही यह श्रेय है कि उसने ऊष्णता का विद्युत् प्रभाव और रासायनिक संयोग के विद्युत् परिणाम जैसे चमत्कार को प्रत्यक्ष कर दिया। इसके बाद की खोज ने विद्युत्-शक्ति के धारा प्रवाही स्वरूप और चुम्बकीय व्यवस्था-जन्य विद्युत् प्रवाह को भी मूर्तिमान कर दिया।

जहाँ शक्ति के वास्तविक रहस्य को खोज निकालने में मनुष्य अस्तव्यस्त रहा, वहाँ उस शक्ति से काम लेने की विधि खोजने के प्रति वह कभी उदास नहीं था। शक्ति को सेविका बनाने के लिए यांत्रिक आविष्कार करने में भी उसने असाधारण परिश्रम किया।

वाष्प-शक्ति

बहुत काल तक उत्पादन-कार्य में लकड़ी का कोयला भट्ठियों में प्रयोग होता रहा, पर बाद को पत्थर के कोयले से काम लिया जाने लगा। कहा जाता है कि लकड़ी के कोयले के स्थान में पत्थर के कोयले का

प्रयोग प्रथम ऐब्राहम डर्बीज और हेनरी कोर्ट ने आरम्भ किया था । यह कार्य अनेक शताब्दी तक होता रहा और इसी बीच लोगों ने वाष्प की शक्ति का परिचय प्राप्त किया। वाष्पशक्तिसे काम लेने के लिये उपयुक्त यंत्र खोज निकालने के लिये उद्योग आरम्भ हो गया। मानव-शरीर की गर्मी का समीप से अध्ययन करने के उपरान्त मनुष्य ने अपने शरीर की गर्मी के दो भेद अन्तर-दहन और वाह्यदहन के रहस्य को भली प्रकार से जान लिया । इन दोनों ही भेदों को दृष्टि में रख कर शक्ति-उत्पादन कर शक्ति-प्रवाह करने वाले यंत्रों के निर्माण में वह लग गया।

ईसा मसीह के बाद १६ वीं शताब्दी के अन्त में उसने भाफ की शक्ति से चलने वाले इंजिन की कल्पना को मूर्तरूप देने का निश्चय कर लिया। सन १६६३ ई० में थॉमस् न्यूकमेन ने सबसे प्रथम भाफ का इंजिन चलती हालत में बनाया, परन्तु लगभग १०० वर्ष तक इस इंजिन ने किसी का ध्यान आकर्षित नहीं किया। इस इंजिन में भाफ द्वारा काम करने की व्यवस्था की गयी। यह एक गर्मी उत्पन्न करने वाला यन्त्र बनाया गया जिसमें सब काम यन्त्र द्वारा ही होता था। इस यन्त्र के आविष्कार का श्रेय जेम्स वाट को है परन्तु उसके पूर्व भी इस ओर विकासोन्मुखी प्रगति से खोज निरन्तर होती रही थी। न्यूकमेन, पापिन और सवेरी के प्रयत्न कुछ कम सराहनीय नहीं हैं। इन महापुरुषों में सवेरी हो वह व्यक्ति है जो इञ्जिन नामक पूर्वकालीन वैज्ञानिक खिलौने को व्यवहारिक क्षेत्र में उपादेय बना सका। आधुनिक काल का यह समुन्नत स्टीम इंजिन चार्ल्स पारस-स के बौद्धिक वर्चस्व का परिणाम है। सन् १६६८ ई० में सवेरी थामस ने अपने भाफ के इंजिन को पेटेन्ट कराया। इसके बाद इसमें सुधार और संशोधन होने लगे। सन् १७०५ ई० में न्यूकोमेन्स ने इसमें कुछ सुधार किये। सन् १७६२ ई० से सन् १७८२ ई० के बीच में जेन्यंस वाट ने इसमें अनेक सुधार किये और अन्त में इंजिन बना कर बेचने का व्यापार भी मैथ्यूवाल्टन के साथ उसने बर्मिघटन (इंगलैंड) में आरम्भ कर दिया। आरम्भ में भाफ से चलने वाले इस स्टीम इंजिन का प्रयोग पानी फेकने के काममें किया गया। सन् १८०२ ई० में स्टीम इंजिनका प्रयोग जहाज चलाने में हुआ। इसी बीच जार्ज स्टीफेंसन ने स्टीम इंजिन से रेलवे की गाड़ियाँ चलाने की बात सोची और तदनुसार उसने रेल की पटरियों को ढलवा कर ४ वर्ष तक रेल बिछाने का काम किया। दिनाङ्क २७ सितम्बर सन् १८२५ई० को उसने अपनी रेलगाड़ी जिसमें ६०० यात्री थे और कुछ माल लदा हुआ था, प्रथम बार चलाई। इसके बाद उसके पुत्र रावर्ट ने भी यही काम किया और अपनी योग्यता के कारण वह संसार के सर्वश्रेष्ठ इंजिनियरोंमें एक हुआ। स्मरण रहे, स्टीम इंजिन वाह्यदहनके सिद्धान्तपर निर्मित यंत्र है। इस यंत्रमें भाफ बनाने के लिए आरम्भ में पत्थर का कोयला ईंधन के रूप में प्रयोग किया गया था, परन्तु आज कल तेल और पेट्रोल भी ईंधन के रू में प्रयोग होता है।

भाफ से चलने वाले इंजिन-जैसे आटा चक्की का इंजिन, पानी फेंकने वाला इंजिन, सड़क बनाने वाला इंजिन, भारी चीजों को उठाने वाला इंजिन, रेल चलाने वाला इंजिन आदि वाह्यदहन

(External Combustion) से चलने वाले होते हैं। इस प्रकार के स्टीम इंजिनों के अतिरिक्त तेल से चलने वाले इंजिन जो पेट्रोल इंजिन कहे जाते हैं, जैसे मोटर सइकल, हवाई जहाज आदि के इंजिन अन्तरदहन (Internal Combustion) से चलने वाले इंजिन होते हैं। जहाँ भाफ से चलने वाले इंजिन में यंत्र के बाहर गर्मी द्वारा भाफ बनाई जाती है और उस भाफ से वह इंजिन चलता है, वहाँ अन्तर-दहन वाले इंजिनमें गर्मी तथा शक्ति दोनों ही यंत्रके अन्दर ही उत्पन्न होती हैं। ये इंजिन वाह्यदहन विधि में सुधार करके बनाए गये हैं।

वाह्यदहन वाले इंजनों में पत्थर का कोयला जला कर भाफ बनाते हैं और उस भाफ से इंजिन चलता है। अन्तर-दहन वाले इंजिन में पत्थर के कोयले के स्थान में पेट्रोल ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है। पेट्रोल अथवा मिट्टी के तेल की भाफ और हवा के संयोग से यंत्र के भीतर ही एक जलने वाली गेस बनती है और इस गैस से इंजिन काम करता है। इस प्रकार भाफ और गैस की शक्ति से इंजिन चलते हैं जो दो प्रकार के ऊपर कहे गये हैं। इनके अतिरिक्त बिजली की शक्ति से भी इसी प्रकार के काम लिये जाते हैं। यह विद्युत्-शक्ति, पावर-हाउस में यंत्रों द्वारा, जिन्हें डाइनामों या जेनरेटर कहते हैं, तैयार की जाती है और ताँबे के तारों द्वारा इष्ट स्थानों को पहुचाई जाती है। जल-प्रवाह से विद्युत उत्पन्न करने की ओर सन् १९१० ई० से अधिक जोर दिया जाने लगा है।

शक्ति से काम लेने के लिए अनेक आविष्कार हुए हैं। नाना प्रकार के शक्ति संचालित यंत्रों का निर्माण करने के उद्देश्य से सन् १८२० ई० के लगभग यंत्र-निर्माण के उत्पादन केन्द्र स्थापित हुए। फ्लाई शटल का आविष्कार जॉन की ने सन् १७३३ ई० में किया और सूत कातने के यंत्र का आविष्कार सन् १७७० ई० में जेम्स हार्ग्रीव्स ने किया। मार्क राइट ने जल-शक्ति से चलने वाले चर्खे सन् १७७५ ई० में बनाये। कपड़े के कारखाने सर्व प्रथम १८ वीं शताब्दी के अन्तर्गत जल-शक्ति से चलाये गये। सुधरी विधि से शक्ति का प्रयोग कपड़े के कारखानों में सर्व प्रथम सूत कातने में किया गया और फिर कपड़ा बुनने में।

परमाणु-शक्ति

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि तत्व अविभाज्य हैं, पर आज के मानव ने यह पता लगा लिया है कि * किरणातु (यूरेनियम) नामक धातु के अणु फट सकते हैं। साधारण किरणातु (यूरेनियम) से अलग किये हुए † आइसोटोप के अणु बड़ी सरलता से फट कर कई करोड़ डिग्री तापक्रम और वायु के दबाव का करोड़ों गुना अधिक दबाव उत्पन्न करने में समर्थ हैं—इस बात का पता लगा कर कल का सामान्य मानव आज अपने को महामानव सिद्ध करने की चेष्टा कर रहा है। इस खोज को लेकर संसार के वैज्ञानिक वर्षों

* किरणातु नामक धातु को यूरेनियम कहते हैं। यह भारत में प्रचुर मात्रा में पायी जाती है।

† (Isotope) u. 235 के अणु।

तक अनुसन्धान करते रहे और अन्त में अमेरिका की एक प्रसिद्ध ‡ प्रयोग शाला में उन्हों ने अपना सम्मिलित अनुसन्धान कार्य आरम्भ कर दिया। अनेक देशों के प्रमुख वैज्ञानिकों के इस अथक परिश्रम का परिणाम अणु-बम के आविष्कार की घोषणा के रूप में संसार के सन्मुख आया। प्रथम अणु-बम की प्रकट परीक्षा दिनाङ्क १ जुलाई सन् १९४५ ई० को अमेरिका के एक निर्जन मरुस्थल में हुई थी। अणु बम एक अत्यन्त विनाशकारी अस्त्र है। इस बम के द्वारा द्वितीय महा युद्ध में अमेरिका ने ÷ जापानियों को आत्मसमर्पण करने के लिए बाध्य कर दिया था।

भारतवर्ष में परमाणु शक्ति का अनुसन्धान

हाल ही में यह बात बड़े आनन्द के साथ मालूम हुई है कि भारत सरकार की ट्रांबे द्वीप [बम्बई] की परमाणु-अनुसन्धान शाला में भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० भाभा परमाणु शक्ति का अनुसन्धान करने में सफल हो गये हैं।

भारत के प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने इस महान् सफलता पर उक्त डा० भाभा को बधाई का सन्देश देते हुए लिखा है:—

"मैं आप को इस महान अनुसन्धान की सफलता पर हार्दिक बधाई देता हूँ। देश के एक महान वैज्ञानिक के नाते आपने इस अनुसन्धान के द्वारा दिन-रात परिश्रम करके इस देश की बहुत बड़ी सेवा की है, उसके लिये यह देश आपका सदैव कृतज्ञ रहेगा"।

अणु-शक्ति इतनी प्रचण्ड होती है कि केवल १ पौण्ड यूरेनियम * के द्वारा ४ इञ्जिन वाला वायुयान विश्व के ८० चक्कर लगा सकता है। अणु को फाड़ने वाले न्यष्टि-यन्त्र के निर्माता स्व० डाक्टर एनरिको फैर्मी ने अपनी मृत्यु से पूर्व भविष्य वाणी की थी कि वह दिन दूर नहीं जब अणु-शक्ति-चालित वायुयान में १ हजार से भी अधिक व्यक्ति एक साथ तीव्र गति से व्योम विहार कर सकेंगे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि अणु शक्ति को शान्ति काल में रेल, हवाई जहाज, जलयान आदि आदि के संचालन में प्रयोग किया जा सकता है।

‡ New Mexico Atomic Bomb Laboratory.

÷ दिनाङ्क ६ अगस्त सन् १९४५ ई० सोमवार को अमेरिका के प्रेसीडेण्ट की आज्ञा से जापान के हीरोशिमा नामक नगर पर अणु-बम फेंका गया था जिसके कारण ६ हजार जापानी स्त्री-पुरुष और बच्चे मर गये और लगभग १ लाख व्यक्ति घायल हुए। उस एक बम की आग और धमाके के कारण लगभग संपूर्ण हीरोशिमा नगर जिसकी जनसंख्या २ लाख ५० हजार थी नष्ट हो गया। यही गति जापान के नगर नागासाकी की भी हुई। अतः अणु-बम की महा विनाश कारिणी शक्ति का सहज अनुमान किया जा सकता है।

* भारत में यूरेनियम धातु के अक्षय भण्डार है जो वर्तमान में राजकीय नियंत्रण में सुरक्षित हैं।

अणु-शक्ति का प्रस्फुटन न्यष्टि-विखण्डन द्वारा होता है। न्यष्टि-विखण्डन में विखण्डन प्रक्रिया का सम्पादन होता है। उसमें भारी से भारी प्राकृतिक तत्व यूरेनियम का उपयोग होता है। इस विखण्डन क्रिया की निष्पत्ति के हेतु न्यूट्रोनों की किरणाणु-अणुओं पर भयंकर प्रवेग से वर्षा की जाती है। इस प्रकार की शृङ्खलाबद्ध प्रतिक्रिया द्वारा ही न्यष्टि-विखण्डन से अणु-शक्ति निष्क्रमण सम्भव बनाया है। चाहे न्यष्टि-प्रतिक्रिया-वाहक-यन्त्र हो और चाहे †अणु-बम दोनों ही अवस्थाओं में शृङ्खलाबद्ध प्रतिक्रिया मुख्य प्रक्रिया है। इसके अभाव में अणु-शक्ति का निष्क्रमण हो ही नहीं सकता। अणु-शक्ति की उपलब्धि के पश्चात् न्यष्टि-विखण्डन-प्रक्रिया द्वारा इस भूमण्डल पर भी करोड़ों डिग्री ताप की उत्पत्ति सम्भव हो गयी है।

जहां एक ओर संसार अणु-शक्ति की ओर भौचक्का सा देख रहा था वहाँ संसार प्रसिद्ध पत्र लन्दन टाइम्स ने एक नवीन वैज्ञानिक खोज की घोषणा कर संसार को स्तम्भित कर दिया ❀। नवीन वैज्ञानिक खोज है उद्जन-बम का आविष्कार। यह उद्जन बम (Hydrogen Bomb) अणु-बम (Atom Bomb) से भी अधिक शक्ति शाली है। एक यूरेनियम अणु-बम का प्रभाव जहां २० मील के क्षेत्र फल पर पड़ता है वहां इस अणु बम से यदि ११ गुना बड़ा उद्जन बम हो तो जिस स्थान पर उस उद्जन बम का विस्फोट होगा उस स्थान से १६ मील की दूरी तक चतुर्दिक के पत्थर उसकी गर्मी से पिघल जायगे और ८० मील तक की इमारते नष्ट हो जायगा। यदि यूरेनियम अणु-बम से ४५ गुना बड़ा उद्जन बम हो तो उस उद्जन बम का प्रभाव १५०० मील के क्षेत्र पर पड़ेगा। अतः स्पष्ट ही है कि यह उद्जन-शक्ति अणुशक्ति से भी अपार शक्तिशाली है।

उद्जन-शक्ति का सिद्धान्त अणु-शक्ति के सिद्धान्त से बिलकुल भिन्न है। जहां अणु-शक्ति का प्रस्फुटन न्यष्टि-विखण्डन द्वारा होता है वहां उद्जन-शक्ति का प्रस्फुटन न्यष्टि द्रवण द्वारा होता है। अणु-शक्ति अणुओं के फटने के सिद्धान्त पर उत्पादन की जाती है और उद्जन-शक्ति अणुओं के द्रवण पर सृजन की जाती है। अब तक की वैज्ञानिक खोज के अनुसार कुल ९२ प्राकृतिक तथा ६ यन्त्र निर्मित तत्वों की उपलब्धि होती है। इन सभी तत्वों में उद्जन की क्रम संख्या प्रथम है।

उद्जन अन्य सभी तत्वों से भार में हलका है और इसी लिये इसे अन्य तत्वों के मध्य में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त है। सभी तत्व इलैक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन कणों के विभिन्न सम्मिश्रण से बने हुए हैं। साधारण उद्जन में एक इलैक्ट्रोन और उसकी एक न्यष्टि में प्रोटोन होता है। यह सभी लोग जानते हैं कि पानी, उद्जन (Hydrogen) तथा जारक, (Oxggen) अणुओं से मिलकर बना हुआ एक संयुक्त पदार्थ है।

उपरोक्त परमाणु और उद्जन शक्तियों का प्रयोग अभी तक विभिन्न प्रकार के परमाणु बम और हाइड्रोजन बम का निर्माण करके मनुष्य जाति का विनाश करने की आसुरी प्रवृत्ति पर ही हुआ है। इसी शक्ति के द्वारा गतमहा युद्ध के समय अमेरिका ने जापान के होनोलूलू और नागासकी नामक नगरों पर बम डालकर वहाँ सर्वनाश का ताण्डव नृत्य उपस्थित कर दिया था।

मगर जिस प्रकार विनाश के कार्य्य में इस शक्ति का उपयोग सफल हुआ है उसी प्रकार निर्माण के कार्य्य में भी मनुष्य इस शक्ति का उपयोग करेगा। और जब यह शक्ति निर्माण कार्य्य में जुट जावेगी। जो संसार का उत्पादन आज से कम समय, कम परिश्रम और कम खर्च में कई गुना बढ़ जावेगा।

---

†'अणु-बम' उत्पादन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करना सम्भव नहीं अतः इस पर अधिक प्रकाश डाला जाना भी सम्भव नहीं है।

❀देखिये दिनांक १३ जनवरी सन् १९५० ई० का लन्दन टाईम्स

द्वितीय सोपान

मशीन युग की महान् समस्याएँ

इस प्रकार विद्युतशक्ति, वाष्प शक्ति और गैस शक्ति का आविष्कार हो जाने के पश्चात् यूरोप में सभी उद्योगों के बड़े २ कारखाने खुलने लगे और छोटी २ मशीनों की जगह बड़ी २ धुँआधार मशीनें मानव जाति के लिए धुँआधार उत्पादन करने लगी।

भारतवर्ष में भी मशीन उद्योग की यह लहर शीघ्र गति से पहुँची और सन् १८५० से यहाँ पर भी मशीन युग का प्रारम्भ हो गया।

विश्व में मशीन युग का प्रारम्भ होने के साथ ही साथ उसकी कुछ नवीन समस्याएं भी उत्पन्न हो गई। उससे कुछ भलाइयां भी पैदा हुई और कुछ बुराइयां भी। सबसे बड़ी भलाई इस युग के प्रभाव से यह हुई कि अब तक चले आये असंगठित मानवने संगठित होना सीखा। पूंजीपति, मजदूर, किसान सभी लोगोंने अपने २ यूनियन बनाने की प्रथा डाली और संगठित हो गये। इसी प्रकार सबसे बुराई इस युग के प्रभाव से यह पैदा हुई इन सुसंगठित ग्रूपोंने पारस्परिक सहयोग से रहने की अपेक्षा आपस में भीषण संघर्ष करना प्रारम्भ किया।

इस सारी स्थिति को भली प्रकार समझने के पहले हमें यह देखना होगा कि इस आधुनिक शक्ति-युग की आधारभूत नींव में कौन २ से मौलिक तत्व हैं। जिनके आधार पर आजका औद्योगिक जगत् खड़ा हुआ है।

साधारणतय पांच मौलिकतत्व हमें आधुनिक औद्योगिक युग की बुनियाद में दिखलाई देते हैं (१) भूमि (२) श्रम (३) पूंजी (४) साहस और (५) संचालन।

भूमि (किसान)

मशीन युग के विशाल कारखानों को चलाने के लिए सबसे पहले रुई, गन्ना, जूट, चाय इत्यादि कच्चे माल की आवश्यकता होती है। यह सारा माल खेती, और खनिज द्रव्यों के रूप में हम भूमि से प्राप्त करते हैं।

भूमि से कच्चा माल उत्पन्न करने वाला किसान के रूप में मशीन युग के सम्मुख उपस्थित होता है। आज वहीं मशीन युग की बुनियाद में पहला मौलिक तत्त्व है जिसके बल पर बड़े२ कारखाने कच्चे माल को पक्के माल का रूप देते हैं। अतः मशीन युग की आमदनी के वितरण में सबसे महत्त्व पूर्ण भाग किसान का होता है।

भारत वर्ष की भूमि रत्नगर्भा भूमि है। हमारे यहाँ भिन्न २ प्रान्तों में भिन्न २ प्रकार की फसलें पर्याप्त मात्रा में पैदा होती हैं। आसाम में चाय, बंगाल में जूट और चावल, बिहार और यू० पी० में गन्ना सी० पी०, बरार मध्य भारत और गुजरात में रुई इत्यादि, भिन्न २ प्रान्तों में भिन्न २ प्रकार का उत्पादन योग्य कच्चा माल तैयार होता है।

मगर इतने प्रचुर उत्पादन के बावजूद आज भी हमारे यहाँ का किसान भूखा, नङ्गा और सुविधा युक्त गृह से रहित है। उसके बच्चों के लिए पढाई और बीमारी के लिए औषधि की व्यवस्था भी दुर्लभ है। वह अपने महाजन और सरकार दोनों का कर्जदार है।

वैसे इस देश मे किसानों के अधिकारों के लिए लड़ने वाले छोटे, बड़े, कांग्रेस समर्थित या कम्यूनिस्ट समर्थित अनेकों संगठन है। फिर भी कारखानों के मजदूरों की तरह किसानों के बल शाली और व्यापक संगठन की कमी अभी भी मालूम होती है।

मजदूर (मजदूरी)

मशीन युग के विशाल कारखानों को चलाने के लिए दूसरे जिस मौलिकतत्व की आवश्यकता होती है, वह मजदूरी है। किसी भी प्रकार का उत्पादन क्यों न हों बिना श्रम के वह कभी सम्भव नहीं होता।

संसार के प्रत्येक भाग में मनुष्य अपने श्रम से जीविका उपार्जन करना चाहता है। परन्तु वह स्वभाव से ही न्यूनतम काम करके अधिकतम पारिश्रमिक प्राप्त करने का इच्छुक होता है। प्रारम्भ से ही वह इस चेष्टा में रहा है कि किसी न किसी प्रकार वह श्रम से बचे और इसीलिए उसने मशीनों का आविष्कार किया एवं श्रम विभाजन को कार्य्य-शील बनाया। इसी को न्यूनतम-उद्योग का नियम (Law of Least Efforts) कहते हैं और यही आर्थिक उन्नति की आधार शिला है।

किसी देश के औद्योगिक विकास के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वहां के मजदूरों की कार्य्य-क्षमता बढ़े। मजदूरों की कार्य्यक्षमता बढ़ाने के लिए यह आवश्यक है कि उनका स्वास्थ्य, उनका रहन सहन, उनकी शिक्षा सभी एक इन्सान की तरह हो। उनको खाने के लिए स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन, पहनने के लिए सभ्य कोटि के वस्त्र, रहने के लिए छोटे मगर साफ हवादार मकान, बीमारी के लिए औषधियां और डॉक्टर, पढ़ने के लिए पुस्तकालय, खेलने के लिए ग्राउण्ड और मनोरंजन के लिए क्लब घरों की व्यवस्था हो। सब प्रकार के साधन और सुविधाओं से सम्पन्न मजदूर ही अपनी कार्य्य-क्षमता का पूरा विकास कर सकता है।

भरतवर्ष के औद्योगिक इतिहास को देखने से पता चलता है कि एक कॉफी लम्बे समय तक यहां के औद्योगिक क्षेत्रों ने मजदूरों की सुविधा और उनके रहन-सहन पर ध्यान नहीं दिया है। मजदूरों की अशिक्षा, उनकी असमर्थता और उनके असङ्गठित होने का यहां के उद्योगपतियों ने बहुत अनुचित और

अनाधिकार पूर्ण लाभ उठाया है और उद्योगपतियों के इन अनीतिपूर्ण कार्यों में यहां की ब्रिटिश सरकार ने भी उनका पूरा २ साथ दिया है।

हमारे ही देश की तरह यूरोप में भी वहाँ के उद्योग पतियों ने किसान और मजदूरों के साथ अत्यन्त निर्लज्जता पूर्ण और अमानवीय व्यवहार किया और इसी के फलस्वरूप वहां-कार्ल-मार्क्स और लेनिन के समान विभूतियों ने पैदा होकर किसान और मजदूरों के पक्ष में आवाज बुलन्द की। उनके विशेष संगठन बनाये और एक दिन रूस की जार शाही के तख्त को उलट कर कम्यूनिज्म के पौधे का प्रथम वृक्षा रोपण किया। आज यह पौधा अनुकूल हवा और पानी पाकर अनेकों गुण और दोषों के रहने पर भी सारे संसार पर हावी होता जा रहा है।

इसी प्रकार के आन्दोलनों से संसार भर के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों में नवीन चेतना और जागृति का संचार हुआ और उनके अनेकों राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बने।

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन

(International Labour Organijetion,)
I. L. O.

विश्व के मजदूरों के कल्याण के लिए तथा समस्त मानवजाति की सेवा के लिए आज संसार में अगर कोई ठोस संगठन है तो वह "अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन" है।

सन् १९१४–१८ के प्रथम विश्व-युद्ध की समाप्ति के पश्चात्, सन्धि की शर्तों के अनुसार एक अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति समिति–जिसे "लीग ऑफ नेशन्स" के नाम से पुकारा जाता था–की स्थापना जेनेवा के शान्त वातावरण में की गई। इस प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय-संगठन का निर्माण करते समय उन निर्माण कर्त्ताओं की आँखों के सामने वे मौलिक कारण तो नाच ही रहे थे जिनके कारण वह विश्व-युद्ध प्रारम्भ हुआ था। सभी लोग यह महसूस कर रहे थे कि कुछ विशेष राष्ट्रों की राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं के अतिरिक्त युद्ध के अधिक खतरनाक कारण आर्थिक तथा सामाजिक असमानताओं की जड़ में से पैदा होते हैं। ये असमानताएं ही संसार की शान्ति को भंग करती रहती है। इसलिए यह समझा गया कि सामाजिक उदारता और न्याय के द्वारा ही संसार में अजर, अमर शान्ति प्राप्त हो सकती है।

इन्हीं सब बातों को सोचकर लीग ऑफ नेशन्स के कर्णधारों ने ११ अप्रैल सन् १९१९ को "अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ" की स्थापना की। जो कि I. L. O. के नाम से प्रसिद्ध है और इसका विधान वर्सेलीज की संधि के तेरहवें भाग में जोड़ दिया गया।

इस कहानी को यहां पर दोहराने की आवश्यकता नहीं है कि द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ होने के पूर्व ही, पश्चिमी राष्ट्रों की स्वार्थ परता के कारण "लीग ऑफ नेशन" का कितना करुणा जनक अन्त हो गया पर यह एक आश्चर्य जनक तत्व है कि घात प्रतिघात की उस कठिन परिस्थिति में भी I. L. O. अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ अपनी उपयोगिता को सिद्ध करते हुए अविचल भाव से जीवित रहा और समय का वह भयंकर बवण्डर भी उस अक्षय दीपक को न बुझा सका।

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ का यह संगठन युद्ध के विरुद्ध एक मजबूत दीवार का काम करता है। और इसी लिए इसकी हल चलें राजनैतिक विचारों तथा साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं से बिलकुल प्रभावित नहीं होतीं।

आज यह संस्था राष्ट्रसंघ (United Nations) से सम्बन्धित हो गई है और उसकी विशेष एजन्सियों में एक एजन्सी स्वीकार कर ली गई है।

संविधान

यह संस्था संसार के विभिन्न राष्ट्रों का एक मजदूर संगठन है। इसका प्रधान कार्य्य संसार के मजदूरों की कार्य्य क्षमता, तथा उनके रहन सहन की हालत को सुधारना है। इस संस्था के संचालक श्री डेविड मार्स के शब्दों में तत्कालीन लाभ के सिवा इस संस्था का उद्देश्य संसार में राष्ट्रों की एक अन्तर्राष्ट्रीय जाति की स्थापना करना है। जिसमें कि सब मानव नियमित रूप से होती हुई उन्नति के बीच में शान्ति से रह सकें।

जो राष्ट्र इस संस्थाके संचालनके निमित्त आर्थिक सहायता देते हैं वे ही इसके सदस्य हो सकते हैं। इस संस्था के कार्य्य का सुचारु रूप से संचालन करने के लिए सदस्य राष्ट्रोंकी सरकारें, नौकरी देने वाले उद्योगपति और मजदूर ये तीनों अपने२ प्रतिनिधि भेज कर इसको सुचारु रूप से चलाने में हिस्सा बटाते हैं।

इस संस्था के अब तक ६६ सदस्य हैं। जो चन्दा सदस्यों से प्राप्त होता है वह ६५ लाख डॉलर अथवा तीन करोड़ रुपये वार्षिक से अधिक है। इन चंदा देने वाले देशों में भारत का पाँचवाँ नम्बर है। पहला नम्बर उत्तरी अमेरिका का है जो २५% प्रतिशत चन्दा देता है। दूसरा नम्बर ब्रिटेन का है जो १२.७९ प्रतिशत चन्दा देता है इसके बाद फ्रान्स और जर्मन रिपब्लिक का नम्बर है और पाँचवा नम्बर भारत का है जो प्रतिवर्ष १३ लाख रुपया अर्थात् कुल आमदनी का ४.८७ प्रतिशत चन्दा देता है।

इस संस्था के ३ मुख्य भाग हैं। १—अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सम्मेलनकी जनरल कान्फ्रेन्स (General Conference) २—शासकीय संस्था जो कि शासन का कार्य्य करती है और ३—अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर ऑफिस (International Labour office) जिसमें वेतन शुदा कर्मचारी काम करते हैं और जो कि अपना सारा समय संगठन के कार्य में लगाते हैं।

एक वर्ष में एक बार सम्मेलन का अधिवेशन होता है। इस अधिवेशन में प्रत्येक सदस्य देश अपने चार प्रति निधि भेजता है । जिनमें से दो सरकार के प्रतिनिधि, एक नौकरी देने वालों का प्रतिनिधि तथा एक मजदूरों का प्रतिनिधि होता है।

इस संघ की शासकीय संस्था में सरकारों के सोलह, नौकरी देने वालों के आठ और मजदूरों के आठ ऐसे कुल बत्तीस प्रतिनिधि रहते हैं। सोलह सरकारी प्रतिनिधियों में आठ सदस्य तो प्रधान औद्योगिक देशों से छाँट लिये जाते हैं और शेष आठ चुनाव के द्वारा चुन लिये जाते हैं। भारत सरकार तो प्रथम वर्ग में आती है और इसकी इस शासकीय संस्था में स्थायी सदस्यता है।

इस संस्था का प्रधान दफ्तर जेनेवा में है, तथा सहायक दफ्तर लन्दन, नई दिल्ली, ओटावा, पेरिस, रोम, शंघाई, तथा वाशिंगटन में बने हुए हैं। राष्ट्र संघ के साथ एक मेल जोल का दफ्तर न्यूयार्क में भी है

यह दफ्तर (Jenaral conferenca) सामान्य सम्मेलन, शासकीय संस्था के अधिवेशन, तथा अन्य सभा और सम्मेलनों की तैय्यारी मत्रालय के लिए पहले से ही कर देता है। यह दफ्तर संगठन की सभाओं के लिए प्रमाण तैय्यार करता है। भिन्न २ प्रकार की पत्रिकाएँ छपाता है। सामाजिक तथा आर्थिक प्रश्नों का अध्ययन करता है तथा उनके सम्बन्ध में रिपोर्ट पेश करता है और जहाँ तक संगठन का सामर्थ्य चलता है वहाँ तक इस बारे में सूचनाएँ इकट्टी करता तथा फैलाता है। यह दफ्तर सरकारों, मजदूरों, नौकरी देने वालों तथा अन्य संगठनों की प्रार्थना पर सलाह देता है तथा सहायता करता है।

यह दफ्तर प्रधान संचालक के अधिकार में रहता है। ये संचालक भिन्न २ राष्ट्रीयता के होते हैं। और उनको यह शपथ लेना पड़ती है। कि वे विदेशी अधिकारियों की आज्ञा को न तो पा सकते हैं और न स्वीकार ही कर सकते हैं।

सबसे ऊपर एक विशेषज्ञों की समिती प्रतिज्ञाओं (Conventions) तथा सिफारिशों (Recommendations) की प्रार्थना पर नियुक्त की गई है। जिन २ तरीकों से भिन्न २ सरकारें I. L. O के उद्देश्यों के स्तर को कार्यान्वित कर रही हैं। उनकी रिपोर्टों को जांचने या निरीक्षण करने का कार्य्य भार इस समिति के जिम्मे रहता है।

सन्१९५३ के अन्ततक I.L.O. के द्वारा १०३ प्रतिज्ञाये (Conventions) और २७ सिफारिशें (Recommendations) पास की जा चुकी हैं। यह दोनों मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरों के कानून का निर्माण करती है। जैसा कि ऊपर बतलाया गया है यह दोनों संस्थाएँ रहन सहन के निम्न से निम्न स्तर तथा नौकरी की शर्तों को निर्धारित करती है। यह सच है कि अधिकतर सदस्य देश ज्यादातर प्रतिज्ञाओं को निश्चित या दृढ़ नहीं कर पाये हैं। फिर भी इन्होंने संसार के पिछड़े हुए देशों तथा कम उन्नति शील देशों के ऊपर चारित्रिक दबाव डाला है। औद्योगिक सम्बन्ध कायम करने में भी ये काफी उपयोगी हुए हैं। इन अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने सामाजिक उन्नति करना प्रांरभ कर दिया है परन्तु वास्तविक लाभ जो इनसे

उपलब्ध होगा वह कई वर्षोंके पश्चात् ही महसूस किया जावेगा। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूरों के कानून को (International Labour code) पूर्ण रूप से इस सम्बन्ध में हथियार न समझा जा सकेगा। तो भी यह एक जीवित हथियार है जो कि सारे संसार में मजदूर जाति का उत्थान करेगा तथा जनता की रहन सहन के स्तर को ऊँचा उठावेगा।

कलापूर्ण सहायता

I. L. O. अपने प्रारंभके वर्षों से ही भिन्न २ देशों की सरकारों को कलापूर्ण सहायता करता रहा है। इस प्रकार के कार्यक्रम का अद्भुत विस्तार सन् १९५० में सम्भव हो सका जब कि कलापूर्ण सहायता तथा आर्थिक विकास का कार्यक्रम बढ़ाया गया जो कि राष्ट्र संघ तथा इसकी कितनी ही विशिष्ट एजेन्सियों के सहयोग के साथ प्रचारित किया गया था। जिस धन को लेकर राष्ट्र संघ ने इस कार्य को प्रारंभ किया था उसका कुछ भागI. L. O. की स्वेच्छा के ऊपर भी छोड़ दिया। इस नये कार्यक्रम के अनुसार यह संगठन अपने आपको कलापूर्ण योजनाओं में एकाग्र करने में समर्थ हुआ। जो कि माल के उत्पादन को शीघ्र ही बढ़ाने में और सेवा भावना बढ़ाने में सहायता करेगा। और इसके फलस्वरूप अउन्नतिशील देशों की रहन कार्य किया है सहन की स्थिति भी सुधरेगी। गत तीस तथा इससे भी अधिक वर्षों में I. L. O. ने जो उत्तम श्रेणी का उसका सन् १९४४ में फिलेडेल्फीया में-किये गये प्रसिद्ध प्रकाशन से स्पष्ट वर्णन प्राप्त हो जावेगा।

थोड़े में हम इस संस्था I. L. O. को शांति का एक हथियार कर सकते हैं। यह उन स्थितियों से जो कि युद्धों से बन गई है, गरीबी और आवश्यकताओं और अन्याय तथा अरक्षा, के विरुद्ध लगातार लड़ रहा है। बहुत कुछ प्राप्त किया जा चुका है परन्तु बहुत कुछ और पाना अभी बाकी है और यह तभी सम्भव हो सकता है जब कि सरकार, नौकर रखने वाले तथा मजदूर इस अन्तर्राष्ट्रीय संगठन को सफल बनाने के लिये तथा इसके उद्देश्य की प्राप्ति के लिये एक दूसरे की भावना को समझकर तथा एक दूसरे के विचारों की प्रशंसा करते हुए सहायता करें



भारत में मजदूर-आंदोलन ❀

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रीय आंदोलन और मजदूर आंदोलन का जन्म लगभग एक साथ हुआ। देश की राष्ट्रीय भावना को एक ओर सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, दीवान रघुनाथराव, दादाभाई नौरोजी तथा ह्यूम ने मूर्त रूप दिया, दूसरी ओर श्री एन० एम० लोखण्डे ने मजदूरों की एक संस्था खड़ी की, जिसकी ओर से उन्होंने सन् १८८४ ई० में फैक्ट्रीज ऐक्ट के दोषों का निवारण करने के लिए सरकार से लिखा-पढ़ी शुरू की। उनके द्वारा सरकार को इस सम्बन्ध में भेजा गया स्मृति-पत्र देश के ट्रेड यूनियन साहित्य में एक ऐतिहासिक महत्व रखता है। सन् १८९० ई० में उस शिशु-संस्था ने 'बम्बई मिल हैंड्स एसोसिएशन' नाम ग्रहण कर कार्य करना प्रारम्भ किया। श्री लोखण्डे उसके प्रथम सभापति हुए। सरकार ने १८९२ ई० में श्री लोखण्डे को 'फैक्ट्री कमीशन' का सदस्य बना कर उनकी मजदूर-सेवाओं का महत्व स्वीकार किया। इस युग में (१८९७ ई०) 'अमलगमेटेड' सोसाइटी आफ रेलवे सर्वेन्ट्स' नाम की भी संस्था बनी, जो मुख्यत: यूरोपियनों द्वारा प्रभावित थी। इस युग में यूनियनों का काम केवल अर्जीनवीसी करना था। यह विशेषता केवल मजदूर यूनियनों की ही नहीं थी, बल्कि यही हाल उस समय कांग्रेस-जैसी संस्था का भी था।

बंग-भंग के बाद

बंगाल के विभाजन के बाद देश का राजनैतिक वायुमण्डल बदला। बंगाल में भी मजदूर संगठन का श्रीगणेश हुआ। इसके पूर्व आन्दोलन का केंद्र-बिन्दु केवल बम्बई ही था। बंग-भंग आन्दोलन के दौर में कलकत्ते के छापेखानों के मजदूरों ने हड़ताल भी की और १९०५ ई० में उन्होंने 'प्रिंटर्स यूनियन, कलकत्ता' को जन्म दिया। बंग-भंग आन्दोलन से उद्भूत भावना के द्योतक देश में लोकमान्य तिलक समझे जाते थे। अतः यह स्वभाविक ही था कि बम्बई के मजदूर आंदोलन में एक नई लहर दौड़े। १९०७ ई० में बम्बई में पोस्टल यूनियन बनी और १९०९ ई० में 'कामगार हित वर्धक सभा, का निर्माण हुआ। इस काल में बम्बई में एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना घटी, जिसके ऐतिहासिक महत्व पर आधुनिक रूस के विधाता श्री लेनिन ने एक लम्बा लेख लिख डाला। वह घटना थी—लोकमान्य तिलक को १९०८ ई० में ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई साढ़े छः वर्ष की सजा। इस घटना ने देश के मजदूर आन्दोलन की प्रगति को मोड़ दिया। श्री तिलक के वकील "जोजेफ बैपिटिस्टा" मजदूरों के प्रिय नेता बनकर "बैपिटिस्टा काका" कहलाए। श्री तिलक तथा उनके अनुयायियों की बम्बई के मजदूरों में बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखकर उनके प्रतिद्वन्दी श्री गोपाल कृष्ण गोखले का ध्यान भी इस ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने अपनी 'सर्वेण्टस आफ इण्डिया सोसाइटी' का मजदूर विभाग बम्बई में खोल दिया। उसको चलाने के लिए श्री नारायण राव एवं श्री मल्हारराव जोशी को नियुक्त किया। यही जोशी जी ए० आई० टी० यू० सी० के प्रथम प्रधान मन्त्री हुए।

❀ श्री काशीनाथ पाण्डेय के एक लेख से आधारित

प्रथम महायुद्ध के बाद

प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर भारत में दो प्रकार की परिस्थितियाँ पैदा हो गईं, जिनमें ट्रेड यूनियनों का स्थापन तेजी से आरम्भ हो गया। भारतीयों का सम्पर्क लड़ाई के दिनों में विदेशियों से हुआ। इस पारस्परिक सम्पर्क ने मजदूरों में एक नई चेतना पैदा की। इसके अतिरिक्त बढ़ती हुई महंगाई के समय खूब लाभ उठाने पर भी उद्योग पतियों के द्वारा मजदूरों की वेतन-वृद्धि पर कोई ध्यान न देना, साथही १२ घंटे की ड्यूटी में भोजनके लिए केवल आधे घंटे की छुट्टी देना मजदूरों में घोर असन्तोष पैदा करनेके लिए पर्याप्त था। इन्हीं सब बातों को लेकर १९१८ ई० में मद्रास में 'टेक्सटाइल लेबर यूनियन" का जन्म श्री बी० पी० वाडिया की अध्यक्षता में हुआ, जिसे अर्थशास्त्री सही मानने में देश की प्रथम ट्रेड यूनियन मानते हैं। लगभग इसी समय श्रीमती अनुसूया बहन ने जो यूरोप के मजदूर आंदोलन को देख कर लौटी थीं, अहमदाबाद के मजदूरों का संगठन बनाया, जो आगे चल कर 'टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और जिसे आगे चलकर महात्मा गांधी का प्रबल समर्थन प्राप्त हुआ। मद्रास में 'सेण्ट्रल लेबर बोर्ड' नामक एक और संस्था बनी, जिसका कार्य मद्रास प्रान्त में विभिन्न स्थानों में मजदूर संस्थाओं का निर्माण करना था। प्रथम महायुद्ध की समाप्ति पर सन् १९२० ई० में "लीग आफ नेशन्स" के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन का निर्माण हुआ। चूँकि भारत लीग आफ नेशन्स का सदस्य था, इसलिए भारतीय मजदूर प्रतिनिधि को उसमें सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उन दिनों भारत में कोई केन्द्रीय राष्ट्रीय मजदूर संस्था न थी, अतः इस उद्देश्य से १९२१ ई० में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में भारतीय मजदूर प्रतिनिधियों की एक सभा हुई और 'आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' का जन्म हुआ और उसके प्रधान मन्त्री श्री जोशी हुए। आई० एल० ओ० में भारतीय प्रतिनिधि भेजने का अधिकार इसी संस्था को प्राप्त हुआ। सन् १९२२ ई० में विभिन्न व्यवसायों में कुछ यूनियनें बनीं, जिनमें, 'आल इण्डिया रेलवेमेन्स फेडरेशन, सेण्ट्रल रेलवे बोर्ड बम्बई, केन्द्रीय तथा प्रान्तीय पोस्टल एण्ड टेलीग्राफ यूनियनें मुख्य थीं, पर अभी तक मजदूर संस्थाओं को किसी प्रकार का कोई कानूनी संरक्षण प्राप्त नहीं था, बल्कि ऐसी संस्थाओं का बनाना अपराध था।

भारतीय व्यवसायिक संघ विधेयक

सन् १९२० में बकिंघम और कर्नाटक मिल में हड़ताल हुई और मिल ने श्री बी० पी० वाडिया तथा 'मद्रास टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन, के विरुद्ध मद्रास हाईकोर्ट में मुकदमा दायर कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि हाईकोर्ट ने श्री वाडिया-द्वारा निर्मित यूनियन को गैर-कानूनी घोषित कर दिया और एक निरोधाज्ञा (इन्जेक्शन) जारी कर दी कि न तो कोई कर्मचारी हड़ताल कर सकता है और न किसी को इसके लिए प्रोत्साहित कर सकता है। मद्रास हाईकोर्ट के इस निर्णय से न केवल भारत के मजदूरों में बेचैनी फैली, बल्कि ब्रिटेन के निवासी भी इससे अछूते न रह सके। उनका एक प्रतिनिधि-मंडल भारत

मन्त्री से मिला और उनसे ट्रेड यूनियनों के निर्माण और रजिस्ट्रेशन के लिए कानून बनवाने के लिए अनुरोध किया। 'ए० आई० टी० यू० सी० के प्रधानमन्त्री श्री एन० एम० जोशी ने, जो उस समय केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य थे, सन् १९२१ ई० श्रमिक संघों के रजिस्ट्रेशन एवं संरक्षण के लिए एक प्रस्ताव असेम्बली में पेश किया। मजदूरों का सौभाग्य था कि उस समय की केन्द्रीय असेम्बली में स्वराज्य पार्टी का अच्छा प्रभाव था। पं० मोतीलाल नेहरू स्वराज्य पार्टी के नेता थे। पं० मोतीलाल नेहरू तथा देशबन्धु चित्तरंजनदास ने जो चुनाव-घोषणा प्रकाशित की थी, उसमें मजदूरों के लिए धारासभाओं द्वारा कानून बनवाने का प्रयत्न करने का वादा किया गया था। इस प्रस्ताव को भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया। इन प्रस्ताव के आधार पर सरकार ने सन् १९२५ में एक विधेयक उपस्थित किया। भारतीय व्यवसायिक संघ विधेयक सन् १९२६ में स्वीकृत हो गया। और १ जून, १९२७ से लागू किया गया।

फूट और मेल-मिलाप

पहले कहा जा चुका है कि भारत में सर्वप्रथम अखिल भारतीय मजदूर संस्था 'आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस' नाम से १९२१ में बनी, पर धीरे-धीरे कम्यूनिस्ट इस संस्था पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करने लगे और १९२७ ई० में कानपुर सम्मेलन में उन्होंने एक असफल प्रयत्न किया, फिर भी वे हताश न हुए। १९२८ ई० में सम्मेलन झरिया में हुआ। वहाँ कम्यूनिस्टों ने बड़ी तनातनी पैदा की, जिसका विस्फोट १९२९ ई० में नागपुर सम्मेलन में हुआ, जिसके सभापति पं० जवाहर लाल नेहरू थे। नागपुर सम्मेलन में ए० आई० टी० यू० सी० में फूट पड़ गई और १९३०-३१ में इंडियन ट्रेड यूनियन फेडरेशन, रेड ट्रेड यूनियन कांग्रेस तथा आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस इन तीन संस्थाओं का जन्म हुआ। यह अवस्था करीब ८ या ९ वर्षों तक चलती रही। कुछ मजदूर नेता बराबर यह प्रयत्न करते रहे कि भारत के सभी मजदूर एक झण्डे के नीचे लाये जायें और अन्त में सफल भी हुए।

आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस का अधिवेशन १९३९ ई० में नागपुर में बुलाया गया, जहाँ १० वर्ष पूर्व हुआ आपसी मत भेद दूर हो गया। इस प्रकार १९३९ ई० में पुनः भारतवर्ष की एकमात्र संस्था आल इण्डिया ट्रेड यूनिनन काँग्रेस हो गयी, पर एकता अधिक दिनों तक नहीं चल सकी। ए० आई० टी० यू० सी० में जैसे ही एकता हुई, वैसे ही श्री एम० एन० राय ने 'इण्डियन लेबर फेडरेशन' नाम से दूसरी मजदूर संस्था बना कर खड़ी कर दी। ये दोनों संस्थाएं १९४६ तक चलती रहीं।

राष्ट्रीय मज़दूर काँग्रेस का जन्म

१९४६ में काँग्रेस के लोग वर्षों के बाद कारावास से मुक्त हुए। गाँधी जी के दबे हुये विचार कॉग्रेस वालों के मुक्त होने पर वायुमंडल में फिर से मँडराने लगे। देश के सामने प्रश्न उठा कि मजदूरों का संगठन क्या वर्ग-संघर्ष के आधार पर पर ही हो सकता है या कोई अन्य मार्ग भी है। वर्ग-द्वेष और वर्ग-संघर्ष से देश में बड़ी कटुता बढ़ गई थी। मज़दूरों का अनुशासन भंग होने लगा था। देश का

उत्पादन घट रहा था। औद्योगिक सम्बन्ध उत्तरोत्तर कटु होते जा रहे थे, अतः औद्योगिक शांति की स्थापना के मार्गों की खोज होने लगी। प्रेम और सहकारिता के द्वारा ही यह संभव प्रतीत हुआ। गांधी-वाद के इन मूल मन्त्रों को लेकर राष्ट्रीय मजदूर काँग्रेस बनी। श्री हरिहर नाथ शास्त्री इस संस्था के प्रथम अध्यक्ष हुए। राष्ट्रीय मजदूर काँग्रेस के बनने से मजदूरों की विचार-धारा बदली। रचनात्मक तरीकों पर उनका विश्वास बढ़ा। व्यर्थ की हड़तालों से मजदूरों की रुचि धीरे-धीरे कम होने लगी। इस सत्य की सफल साक्षी प्रथम पंचवर्षीय योजना की सफलता है। मजदूरों ने कितनी संलग्नता से योजना के कार्यान्वय में साथ दिया, यह पूरा देश जानता है। आई० एन० टी० यू० सी० ने देश के मजदूरों की कितनी सेवा की है, यहाँ बताना संभव नहीं है। इतना ही कहना यहाँ केवल पर्याप्त है कि पिछले दश वर्षों में जो भी मजदूर कानून बने हैं, जैसे इंडस्ट्रियल डिस्प्यूट्स ऐक्ट, इंडस्ट्रियल इम्प्लायमेंट (स्टैंडिंग आर्डर्स) ऐक्ट, ..प्स एण्ड कमर्शियल इस्टैब्लिशमेंट्स ऐक्ट, १६४८, फैक्ट्रीज ऐक्ट, स्टेट इन्श्योरेन्स ऐक्ट तथा प्राविडेण्ट फंड ऐक्ट आदि का निर्माण उसके ही प्रयत्नों का फल है।

भारत में इस समय ४ मुख्य अखिल भारतीय संस्थाएँ हैं, जिनमें सबसे बड़ी मजदूर संस्था राष्ट्रीय मजदूर काँग्रेस है।

हिन्द मजदूर सभा एवं अन्य संस्थाएँ

दूसरी संस्था १९४८ ई० में बनी। उसे सोशलिस्ट विचार-धारा के लोगों ने बनाया। .ह संस्था हिन्द मजदूर सभा है। इससे सम्बंधित यूनियनें सोशलिस्ट पार्टी की नीति के अनुसार मजदूर क्षेत्र में काम करती हैं तीसरी अखिल भारतीय मजदूर संस्था यूनाइटेड ट्रेड यूनियन काँग्रेस है, जिसके जन्मदाता श्री मृणालकांति बोस हैं, जिनमें स्वतन्त्र, आर० एस० पी०, आर० एस० पी० आई० और बोलशेविक आदि दलों के लोग सम्मिलित हैं। इसका उद्देश्य है मजदूर संस्थाओं को राजनैतिक पार्टी से अलग रखा जाय और इस क्षेत्र में स्वतन्त्र रूप से काम हो।

चौथी संस्था आल इण्डिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस है, जिस पर कम्यूनिस्टों का पूरा अधिकार है और उसकी नीति कम्यूनिस्ट पार्टी की नीति की अनुगामिनी है।

मजदूर-संघों का आशातीत विकास

भारतीय मजदूर आंदोलन के इतिहास की रूपरेखा प्रस्तुत करने के बाद मैं संक्षेप में उसके विकास क्रम की भी कुछ चर्चा कर देना आवश्यक है। सन् १९२६ ई० के पहले कितनी मजदूर संस्थाएँ थीं, उनकी संख्या निश्चित रूप से बताना संभव नहीं, क्यों कि १९२६ में ही संघों के रजिस्ट्रेशन का प्रबन्ध हुआ। १९२६ के बाद मजदूर संघों की संख्या तेजी से बढ़ी। १९२७-२८ में संघों की संख्या २९ थी और उनके सदस्यों की संख्या १,००,६१९ थी। दस वर्षों में बढ़ते-बढ़ते वह संख्या १९३८-३९ में ५२६ हुई और उनके ३,९९,१५९ सदस्य थे। १९४४-४५ में देश में ८६५ मजदूर संघ थे। उनके सदस्यों की संख्या ८,८९,३८८ थी। १९५३-५४ में भारत वर्ष के अन्दर ३८६२ मजदूर संघ थे। इस प्रकार आप देखेंगे कि २७ वर्षों में किस प्रकार मजदूर संघों की संख्या २९ से बढ़ कर ३८६२ हो गई।

इस प्रकार इस देश में तेजी के साथ बढ़ती हुई मजदूर-संस्थाओं की संख्या इस बात को सिद्ध करती है कि मजदूरों में दिन प्रतिदिन जागृति बढ़ती जा रही है और वे अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए कटिबद्ध हैं। उद्योगपति भी इस एकान्त सत्य को महसूस करने लगे हैं।

———

तृतीय सोपान

पूंजी, साहस और संचालन

(Capital, Interprise, & Organization)

भूमि और श्रम के अतिरिक्त मशीन उद्योग के संचालन में "पूंजी" "साहस" और संचालन क्षमता इन तीन तत्वों की और आवश्यकता होती है।

पूँजी

मशीनों से चलनेवाले कारखाने घरेलू उद्योग के कारखानों की तरह छोटे २ मकानों में नहीं बनाये जासकते उनके लिए बड़ी २ इमारतों और लम्बी चौड़ी जमीनों की जरूरत होती है। इन जमीनों और इमारतों के लिए पहले लाखों रुपयों की पूंजी लगाना पड़ती है, उसके पश्चात् उनमें लगाने के लिए जो मशीनरियां आती हैं उनमें भी लाखों रुपये लगानापड़ते हैं। फिर कर्मचारियों और मजदूरों के रहने के लिए क्वार्टर्स, स्कूल, अस्पताल इत्यादि के बनाने में भी बहुत अधिक पैसा लगता है और जब तक उत्पादन चालू न हो तब तक बीच के समय में कर्मचारियों और मजदूरों को वेतन देने के लिये भी पैसे की आवश्यकता होती है।

इन सब कार्य्यों के लिये जब कोई कारखाना लगाया जाता है तो पहले ही लाखों या करोड़ों रुपयों की पूंजी की व्यवस्था करनी पड़ती है। बिना इस पूंजी की व्यवस्था के किसी कारखाने को स्थापित करने की कल्पना हवा में किले बनाने की कल्पना की तरह व्यर्थ हो जाती है।

इसलिये भूमि और श्रम के बाद "पूंजी" वह तत्व होता है जिसकी मशीन उद्योग के निर्माण में अनिवार्य्य आवश्यकता होती है।

जो लोग इस प्रकार के कारखानों के निर्माण में पूंजी लगाते हैं वे "पूंजीपति" कहे जाते हैं।

साहस (Enterprise)

प्रत्येक प्रकार के उद्योग में चाहे उसका कोई भी आकार या प्रकार क्यों न हो कुछ न कुछ जोखिम अवश्य होती है। प्रत्येक उद्योगपति को इश बात का अनुमान लगाना पड़ता है कि निकट भविष्य में बाजार में किस माल की किस मात्रा में मांग होगी और उसे उस मात्रा के अनुरूप ही माल उत्पन्न करना पड़ता है। संसार के भिन्न २ बाजारों के उतार चढ़ाव, भिन्न २ देशों के उद्योग धन्धों से होने वाली प्रतिस्पर्द्धा, कच्चे माल की लागत, मजदूरी, ब्याज की दर इत्यादि प्रत्येक बारीक से बारीक बात का उसे

अध्ययन रखना पड़ता है। यदि उसका अध्ययन कहीं भी गलत या भ्रमपूर्ण हुआ अथवा कच्चे माल की दर, मजदूरी की दर या ब्याज की दर एकाएक अनुमानित दरों से अधिक हो गई तो सारे उद्योग को भयंकर हानि और अर्थ संकट का सामना करना पड़ता है और कभी आशा से अधिक अनुकूल परिस्थितियां पैदा होगई तो उनमें लाखों रुपयों का लाभ भी हो सकता है। मतलब यह कि स्पष्टतया व्यवसाय में अनिश्चितता का तत्व होता है इसी अनिश्चितता या जोखिम को अर्थ शास्त्र में Enterprise कहते हैं। जो व्यक्ति जोखिम उठाता है या इस अनिश्चितता को झेलता है वह साहसी या जोखिम झेलने वाला समझा जाता है।

मतलब यह कि "जोखिम" वह चौथा तत्व है जिस की मशीन उद्योग के क्षेत्र में अनिवार्य आवश्यकता होती है।

संगठन—Organization.

अब तक हमने भूमि, श्रम, पूंजी तथा साहस, उत्पत्ति के इन चार साधनों की चर्चा की है। अब हम उन रीतियों का विचार करेंगे जिनके द्वारा आधुनिक काल में उत्पत्ति संगठित होती है। अभी तक एक यन्त्र के विभिन्न अंगों का और उन अंगों के स्वभाव का अध्ययन किया गया है पर अब हम यहां पर इन अंगों को एकत्रित करने की रीतियों पर प्रकाश डालेंगे और साथ ही यह बतलाने की चेष्टा करेंगे कि उस यन्त्र का परिचालन कैसे होता है।

उत्पादन का आकार प्रकार चाहे जैसा हो पर यह आवश्यक है कि वह सुसंठित हो। उत्पत्ति की कार्य क्षमता बहुत बड़ी सीमा तक संगठन पर निर्भर करती है। अस्तु उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में अधिकतम प्रभावपूर्ण सहकारिता स्थापित करने को संगठन करते हैं और जो उत्पत्ति का नेतृत्व कर सब उत्पादन के साधनों का इस प्रकार उपयोग करता है कि उनसे अधिकतम उत्पादन प्राप्त हो सके उस प्रबन्धक को संगठन कर्ता कहते हैं।

संगठन कर्ता के कर्तव्य—उत्पादन का चाहे जो भी स्वरूप हो, उसके प्रारम्भिक सोपान से निर्मित माल की बिक्री के अन्तिम सोपान तक संगठन कर्ता की कार्य क्षमता पर ही व्यापार की सफलता अथवा विफलता निर्भर होती है। संगठन कर्ता के प्रमुख कार्य निम्न लिखित है—

(१) उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में सहयोग स्थापित करना;
(२) श्रम को संगठित करना;
(३) आवश्यक औजार और यन्त्र देना;
(४) माल के प्रकार और मात्रा का निर्णय करना;
(५) माल की बिक्री करना;
(६) अन्य छोटे मोटे सभी कार्य।

(१) संगठन कर्ता भूमि, श्रम, पूंजी और साइस को उत्पत्ति के उद्देश्य से एक स्थान पर लाभप्रद अनुपात में एकत्रित करता है। प्रारम्भ में उसे इस बात का विश्चय करना पड़ता है कि उत्पत्ति के विनियोग (Inbestment) का कौन सा स्वरूप अधिकतम लाभ प्रदान करेगा। इसके पश्चात् उसे एक ऐसा व्यक्ति खोज निकालना पड़ता है जो उत्पत्ति की जोखिम झेलने के लिए तैयार हो। अर्थात् संगठन कर्ता पूंजीपतियों को भी पूंजी लगाने के लिए प्रस्तुत रखता है। इसके अनन्तर उसे उपयुक्त श्रमिक और आवश्यक कच्चा माल भी एकत्रित करना पड़ता है। यह सब प्रारम्भिक काम जो वास्तविक उत्पत्ति के आरम्भ के पूर्व ही करना पड़ता है संगठन कर्ता ही करता है।

(२) संगठन कर्ता का दूसरा काम श्रम का संगठन करना है। वह श्रमिकों को उनकी बुद्धिमानी श्रमशक्ति, चतुरता और स्वभाव के अनुकूल विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कर देता है और प्रत्येक श्रेणी को उपयुक्त काम पर लगा देता है। उसे वह भी देखना पड़ता है कि कोई श्रमिक बेकार न रहे और न किसी श्रमिक के पास बहुत काम हो जाय। उसे उत्पत्ति का प्रबन्ध इस प्रकार करना पड़ता है कि जैसे ही कोई श्रमिक एक वस्तु का काम समाप्त करे वैसे ही दूसरी वस्तु उस श्रमिक के सामने आ जाय। संगठन कर्ता को श्रमिकों और उनके श्रम पर समुचित निगरानी रखने का प्रबन्ध भी करना पड़ता है। उसे इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि परिश्रमी और कार्य कुशल श्रमिकों को उचित पुरष्कार मिले और आलसी तथा अकुशल मजदूरों को कम पारिश्रमिक मिले।

(३) संगठय जर्ता श्रमिकों को उपयुक्त औजार तथा यन्त्र देता है। ऐसा करते समय उसे यह भी देखना पड़ता है कि वे औजार और यन्त्र केवल मजदूरों के ही लिए उपयुक्त नहीं है प्रत्युत कच्चे माल के भी उपयुक्त हैं। उत्पत्ति के आकार प्रकार को देखते हुए ही उसे आवश्यक औजारों और यन्त्रों का चुनाव करना पड़ता है। यन्त्रों में आधुनिकतम सुधार सम्पन्न यन्त्र ही प्रयोग किये जांय इसका ध्यान भी उसे ही रखना पड़ता है। अस्तु संगठन कर्ता को अपने व्यवसाय में जो यान्त्रिक आविष्कार समय समय पर होते रहते हैं उन सब पूर्ण परिचित रहना पड़ता है। अधिक और श्रेष्ट उत्पादव कम श्रम, स्वल्प चातुरी तथा न्यूनतम समय में करने वाले आधुनिकतम यन्त्र सुलभ करना उसका लक्ष्य होता है: उसे यह भी देखना पड़ता है कि यन्त्र से पूरा पूरा काम लिया जाता है, उसमें चालक शक्ति पर्याप्त हैं और उसके उपयोग से श्रमिकों में श्रम सम्बन्धी कुशलता बनी रहती है।

(४) संगठन कर्ता उत्पत्ति का प्रकार और उसकी मात्रा का भी निर्धारण करता है। माल विक्री के लिये उत्पन्न किया जाता है। उत्पन्न किये गये माल को लाभ पर बेचने से ही व्यापारी को सफलता प्राप्त हो सकती है। अतः यह आवश्यक है कि माल इस प्रकारसे और इतनी मात्रा में निर्मित किया जाय कि उसकी विक्री सरलता से और लाभ पर की जा सके। इस काम को सम्यक रूप से सफलता पूर्वक सम्पन्न करने के लिये संगठन कर्ता को विक्री-केन्द्रों के सम्पर्क में रहना पड़ता है कि किन किन वस्तुओं की बाजार में कैसे

मांग होगी और उस मांग का अंश वह अधिकृत कर सकता है। भावी मांग का अनुमान लगाते समय संगठन कर्ता को फैशन अथवा पसंदगी में परिवर्तन हो जाने की सम्भावना का यथेष्ट ध्यान रखना पड़ता है।

(५) उत्पन्न किये हुए माल की बिक्री की समस्या भी संगठन कर्ता को ही सुलझानी पड़ती है। इसका उद्देश्य यह होता है कि निर्मित माल की बिक्री शीघ्र ही और अधितम लाभ पर हो। अस्तु संगठन कर्ता को उन सभी बाजारों से भलीभांति परिचित रहना होता है जिसमें उसका निर्मित माल बिक सकता है और साथ ही उसे इस बात की भी जानकारी रखनी पड़ती है कि उन बाजारों में उसके प्रतिस्पर्द्धी किस मूल्य पर वही माल बेच रहे हैं या बेच सकते हैं। इस प्रकार की सुव्यवस्थित जाँच पड़ताल पर ही संगठन कर्ता की सफलता निर्भर होती है।

(६) उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त संगठन कर्ता को छोटे मोटे अनेक कार्य सम्पन्न करने पड़ते हैं। उसे प्रतिस्थापन के नियमों का पालन करना पड़ता है और सीमान्त उपज के बढ़ने, घटने और स्थिर रहने के नियमों का आशय समझना पड़ता है तथा ध्यान के रखना पड़ता है। इन सब बातों का उत्पत्ति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अतः यह मानना ही पड़ेगा कि संगठन की योग्यता पांचवा महत्पूर्ण और मौलिक तत्व है जिसकी मशीन उद्योग के संचालन में अनिवार्य्य आवश्यकता होती है।

पूंजी, जोखिम और संगठन यद्यपि ये तीनों मौलिकतत्व बिलकुल भिन्न २ हैं पर अभी तक मशीन युग के ऊपर पूंजी का एकान्त प्रभाव होने की वजह से पूंजी के अधिकारियों ने ही शेष दोनों तत्वोंपर अपना अधिकार कर रखा हैं। जो कारखाने मैनेजिंग एजण्ट या डॉयरेक्टर होते हैं कारखाने के शेयरों का बहुत बड़ा हिस्सा उन्हीं के पास होता है अतः वे ही उसके जोखिमदार भी हो जाते हैं। और कारखाने के संगठन कर्त्ताओं और बड़ी २ तनखाहें पानेवाले की जगह पर भी वे अपने भाई बेटों या नाते रिस्तेदारों को रख देते हैं जिससे संगठन पर भी उनका पूरा २ अधिकार रहता है।

इस प्रकार पांच मौलिक तत्वों के होते हुए भी मशीन उद्योग के क्षेत्र में ये पांचों तत्व दो ग्रूपों में बने हुए हैं एक किसान और मजदूरों का और दूसरा पूंजी और संगठन का। पहला वर्ग आजके पहले तक शोषित वर्ग के रूप में और दूसरा वर्ग शोषक वर्ग के रूप में मशीन युग के इतिहास में अपना पार्ट अदा करता आया है और इन दोनों वर्गों का संघर्ष ही मशीन युग का सच्चा इतिहास है।

पूँजी और संगठन के यूनियन

मजदूरों के संगठनों की तरह ही पूंजी पतियों के भी संसार में कई अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय संगठन बने हुये हैं।

इन्टर नेशनल चेम्बर आफ कामर्स पेरिस

यह संसार के उद्योगपतियों का एक विशाल संगठन है जिसमें संसार के सभी प्रसिद्ध औद्योगिक देशों के उद्योगपतियां के चेम्बर्स सदस्यता करते हैं। ब्रिटिश राज्य के समय में इस चेम्बर में अंग्रेज लोग भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए जाते थे। मगर सन् १६२८ में बिड़ला ब्रदर्स के बाबू देवी प्रसाद खेताननें वहां जाकर अंग्रेज प्रतिनिधित्व को हटाया और फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स के सहयोग से उक्त चेम्बर की एक शाखा भारत वर्ष में खुलवाई जिसका नाम "इण्डियन नेशनल कमेटी" है।

फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज

(भारतीय व्यापार उद्योग संघ)

फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज की स्थापना भारत के औद्योगिक इतिहास में एक एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और चमत्कारिक घटना है। इसने भारतीय व्यापार और उद्योग को एक नया जीवन दिया और उसे उन्नति के पथपर अग्रसर किया। क्या राष्ट्रहित की दृष्टि से, क्या आर्थिक नीति के निर्माण में, क्या औद्योगिक विकास के क्षेत्र में फेडरेशन ने अपना जो महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया है वह भारत के औद्योगिक इतिहास में एक उज्वल पृष्ठ की तरह देदीप्यमान है।

सन् १९२६ में भारत के सुप्रसिद्ध व्यवसायी सर पुरुषोत्तम दास ठाकुर दास, श्री घनश्यामदास बिड़ला तथा श्री देवी प्रसाद खेतान के बीच देश के समस्त व्यसायिक चेम्बरों का एक अखिल भारतीय संगठन बनाने के सम्बन्ध में विचार विमर्श हुआ और कुछ समय पश्चात् ही जब "भारतीय व्यापार और उद्योग कांग्रेस" का अधिवेशन दिल्ली में चल रहा था तो उसमें ऐसा अखिल भारतीय फेडरेशन बनाने के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास हुआ। इसके अनुसार फेडरेशन का विधान तैयार करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की गई।

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास



श्री घनश्यामदास बिड़ला

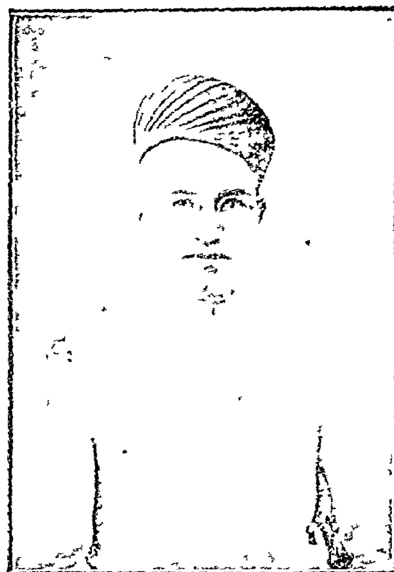
भारतीय व्यापार और उद्योग कांग्रेस का अगला अधिवेशन कलकत्ते में सन् १९२७ में हुआ और उसमें इस फेडरेशन का विधान स्वीकृत हुआ। और उसी वर्ष फेडरेशन का जन्म हुआ।

फैडरेशन की स्थापना ऐसे समय में हुई थी जब कि प्रथम महायुद्ध के पश्चात् भारत अपना औद्योगिक निर्माण करने में तीव्रगति से व्यस्त था। उस समय करों का निर्धारण और रुपयों की विनिमय दर तीव्र वादविवाद का विषय बनी हुई थी। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् भारतीय मुद्रा के इतिहास में जो उथल-पुथल हुई उसको व्यापारी संसार अभी भी भूला नहीं है। केन्द्रीय मुद्रा-संघ की स्थापना का प्रश्न उस समय चर्चा का प्रधान विषय बना हुआ था और बैंकिंग जांच समिति शीघ्र ही नियुक्त की जानेवाली थी।

इन्हीं दिनों राजनैतिक क्षेत्र में महात्मा गांधी का सविनय अवज्ञा आन्दोलन यहां की जनता की

राजनैतिक चेतना को जाग्रत कर रहा था। भारत के नये विधान का ढांचा तैय्यार करने के लिए राउण्ड टेबिल कान्फ्रेन्स चल रही थी। इन सभी जटिल समास्याओं के हल करने में फ़ेडरेशन अपना महत्व पूर्ण सहयोग अदा कर रहा थ।

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, श्री घनश्याम दास बिड़ला, श्री देवीप्रसाद खेतान, सर श्रीराम, श्री कस्तूर भाई लालभाई आदि फ़ैडरेशनके प्रधान निर्माण कर्त्ता उद्योगपति भारत की आर्थिक समस्याओं के सम्बन्ध मे राष्ट्रीय मत के प्रवक्ता भी थे।


श्री देवीप्रमाद खेतान

फैडरेशन की आर्थिक विचारा धारा उस समय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचार धारा के अनुकूल थी। फैडरेशन ने व्यापारी वर्ग के प्रतिनिधि के रूपमे स्वतंत्रता के संग्राम में राष्ट्रीय आन्दोलन का पूरा पूरा साथ दिया। सन् १९३० में फैडरेशन ने एक प्रस्ताव पास करके यह स्पष्ट कर दिया कि जब तक स्वतंत्र व्यक्ति के रूप में महात्मा गांधी राउण्टेबिल कान्फेन्स में सम्मिलित न होंगे इस प्रकार की कान्फेन्स कभी सफल नहीं हो सकती और तब तक भारतीय व्यापारी वर्ग का कोई प्रतिनिधि भी इस कान्फ्रेन्स में सम्मिलित नहीं होगा।

सन् १९३१ मे फैडरेशन के चौथे वार्षिक अधिवेशन का उद्घाटन स्वयं महात्मा गांधी ने किया था इससे भी फैडरेशन की राष्ट्रीय भावनाओं का सहज अनुमान किया जासकता है। गाधी-इरविन समझौते के पश्चात् दूसरी राउण्डटेबिल कान्फेन्स में भाग लेने के लिए फेडरेशन ने सर पुरुपोत्तमदास ठाकुरदास, श्री घनश्याम दास बिड़ला और एम० जमाल मोहम्मद सद्दिक को अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा।

फ़ेडरेशन को आरम्भ से ही चार विभिन्न क्षेत्रों में मोर्चा लेना पड़ा। राजनैतिक स्वतंत्रता के संग्राम में इसने पूरा भाग लिया। उन दिनों अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों मे तत्कालीन भारत सरकार राष्ट्रीय विचारों के व्यक्तियों को न भेज कर अपने पिट्ठुओं को भेजा करती थी। फेडरेशन ने इसके लिए उग्र आन्दोलन करके अन्तर्राष्ट्रीय समम्मेलनों में राष्ट्रीय विचार धारा के लोगों का प्रतिनिधित्व सम्भव किया। विदेशों में रहने वाले भारतीयों के हितों की रक्षा के लिए भी फेडरेशन को लड़ना पड़ा। इसके अतिरिक्त भारतीय व्यापार, वाणिज्य और उद्योग का विस्तार करने के लिए वह निरन्तर सरकार पर दबाव डालता रहा।

साइमन कमीशन को फेडरेशन ने मान्यता नहीं दी, फेडरेशन के अध्यक्ष श्री घनश्याम दास बिड़ला ने सन् १९२९ में लेजिस्लेटिव असेम्बली में पब्लिक सेफटी बिल का डट कर विरोध किया।

सन् १९४२ में महात्मा गांधी तथा अन्य राष्ट्रीय नेता पकड़ लिए गये उस समय फ़ैडरेशनने सरकार की इस नीति का तीव्र विरोध किया। चर्चिल ने एक बार कहा था कि भारतीय कांग्रेसके पीछे उद्योग पतियों का हाथ है इसका मुँह तोड़ उत्तर देते हुए फेडरेशन के तत्कालीन प्रेसिडेण्ट श्री जी० एल० मेहता ने ने कहा था कि भारत का व्यापारी वर्ग यहाँ के राष्ट्रीय आन्दोलन का एक अविभाज्य अंग है और कांग्रेस की पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग का वह पूर्ण समर्थन करता है।

भारत में अंग्रेजी राज्य के समय यह आम चर्चा का विषय था कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत की ओर से जो प्रतिनिधि मण्डल जाता था उसमें अंग्रेज ही अधिक संख्या में होते थे। १९२० की इम्पीरियल कान्फ्रेंस में कई ऐसे आर्थिक प्रश्नों पर विचार होना था जिनका भारत से घनिष्ट सम्बन्ध था, फिर भ व्यापारी-वर्ग का दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के लिए उसमें कोई भारतीय नहीं भेजा गया। १९३२ में ओटावा में इम्पीरियल इकोनामिक कान्फ्रेंस होने वाली थी और उसमें भारत और ब्रिटेन के बीच तटकर के प्रश्न पर विचार होना था। उस समय फेडरेशन ने यह साफ साफ कह दिया कि फेडरेशन की मान्यता प्राप्त किये बिना यदि कोई व्यक्ति इस सम्मेलन में भारत की ओर से भाग लेगा तो वह उसे स्वीकार नहीं होगा। सरकार ने इस चेतावनी को ठुकरा दिया। ओटावा में उस समय जो समझौता हुआ वह भारत के लिए बहुत हानिकारक था। फेडरेशन की ओर से कहा गया कि ब्रिटेन के उद्योग अब अमेरीका, जापान आदि देशों का मुकाबला करने में असमर्थ हैं, अतः वे तटकर की रियायती दरों के सहारे भारत के उद्योगों को कुचलना चाहते हैं।

१९३३ में विश्व आर्थिक सम्मेलन हो रहा था। उसमें पिछड़े हुए देशों के आर्थिक विकास के प्रश्न पर विचार होना था। फेडरेशन के इस प्रस्ताव के बावजूद कि इस सम्मेलन में उसी व्यक्ति को भारत का प्रतिनिधि बनाकर भेजा जाये जिसे भारत के व्यापारी वर्ग का विश्वास प्राप्त हो, सम्मेलन में ऐसा कोई भारतीय नहीं भेजा गया। सर पुरुषोत्तम दास ठाकुरदास ने सेक्रेटरी आफ स्टेट को विरोध पत्र भेजते हुए कहा कि हम भारतीय यह अनुभव करते हैं कि इस कार्यवाही से संसार की निगाह में भारत को गिराया गया है।

१९३७ में भारत की इस मांग को ठुकरा दिया कि साम्राज्यकी जहाजी समिति में भारत के हितों का भी प्रतिनिधित्व होना चाहिए। फेडरेशन के प्रेसीडेंट ने तार द्वारा कहा कि सरकार यह कार्यवाही आपत्ति-जनक ही नहीं है बल्कि इससे भारत के हितों पर कुठाराघात हुआ है। किन्तु अंग्रेजी सरकार की भारत विरोधी नीति चरम सीमा को उस समय पहुँच गयी जब उसने, विधान सभा के मत की अवहेलना करके यह नीति निर्धारित रक्खी कि आगामी पाँच वर्षों तक भारत, बरमा को छोड़ कर, किसी देश को चीनी का निर्यात न करे।

चाहे कम्पनी कानून का संशोधन हो या आयकर कानून का, चाहे बैंकिंग जांच कमीशन की रिपोर्ट पर विचार करना हो या तटकरनिर्धारण कमीशन की रिपोर्ट पर—फेडरेशन ने भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करने में कभी आगा पीछा नहीं किया। भारत सरकार के वार्षिक बजट पर, फेडरेशन की ओर से समालोचना की गई, उस पर विधान सभा के सदस्य उचित और पर्याप्त ध्यान देते रहे। फेडरेशन सदा इस बात से जागरूक था कि वह एक विदेशी सरकार के समक्ष अपने विचार और मांगें प्रस्तुत कर रहा है तथा इसने इस बात को कभी अपनी आँखों से ओझल नहीं होने दिया कि राजनीतिक स्वतन्त्रता से ही देश को आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकती है।

विदेशी सरकार साधारणतः फेडरेशन के विचारों की अवहेलना ही करती रही, क्यों कि ये विचार उसकी शोषण नीति के अनुकूल नहीं पड़ते थे। किन्तु अब स्थिति बदल गयी है। देश स्वतन्त्र है। अब फेडरेशन का काम सरकारी नीति का विरोध करने के बजाय सरकार को सलाह देना है। आर्थिक प्रगति और औद्योगिक विकास के हितों की रक्षा के लिए अब फेडरेशन को एक सजग प्रहरी का काम करना है। यह प्रसन्नता की बात है कि फेडरेशन ने कार्य्य पद्धति को स्थिति के अनुकूल बना दिया है।

व्यापार में लाभ की भावना सब के अन्दर होती है। किन्तु साथ ही यह भी समझा जाना चाहिए कि स्थायी लाभ तभी मिल सकता है जब जनता की आवश्यकताएं सुलभ मूल्य पर पूरी की जाने की भावना हो। सेवा के बिना स्थायी लाभ नहीं मिल सकता।

योरुप और अमेरिका के व्यापारी बहुत दूर तक सोचते हैं। वे दीर्घ कालीन योजना बनाते हैं। उनका उद्देश्य उत्पादन व्यय कम करके वस्तु को सस्ता बेचना होता है। इस प्रकार वे उपभोक्ता के हितों का ध्यान रखते हैं। इसी कारण आज अमरीका इतना समृद्धिशाली देश बन गया है।

प्रसन्नता की बात है कि फेडरेशन इन सभी समस्याओं पर ध्यान दे रहा है। अभीतक इसने क्रमिक प्रगति की है। अब इसके सदस्यों की संख्या अठगुनी से अधिक हो गई है। प्रारम्भके वर्षों में फेडरेशन का कार्यालय प्रेजीडेंट के साथ रहता था। अब इसे स्थायी रूप से दिल्ली में स्थापित कर दिया गया है। २८, फिरोजशाह रोड पर डेढ एकड़ का प्लाट लाला श्रीराम की उदारता से इसे प्राप्त हो गया है। भवन का शिलान्यास अप्रैल १९५१ में राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के कर कमलों द्वारा हुआ था।

तीन वर्ष पहले फेडरेशन अपनी रजत जयन्ती मना चुका है। उस समय बधाई का आदेश-भेजते हुए राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद ने कहा था :—'मुझे प्रसन्नता है कि वाणिज्य और उद्योग मंडल का संघ अपने उपयोगी जीवन के २५ वर्ष पूरे कर चुका है और अब रजत-जयन्ती मना रहा है। पिछले २५ वर्षों में देश की आर्थिक और औद्योगिक प्रगति में फेडरेशन ने बहुत सहायता की है। स्वतन्त्रता की प्राप्ति के बाद फेडरेशन को अपने कार्य में विस्तार करने का सुअवसर मिल गया है। उद्योगपतियों को अब और भी अधिक काम करना है। मुझे इस में सन्देह नहीं कि ये लोग देश के विकास में पूरा सहयोग देंगे। मैं फेडरेशन की सफलता की कामना करता हूँ। ("भविष्य" में प्रकाशित एक लेख के आधार पर)

चतुर्थ सोपान

मशीनयुग और वर्ग संघर्ष

मशीन युग के जिन पांच मौलिक तत्वों का हम ऊपर वर्णन कर आये हैं। समाज की विषम अवस्था के कारण वे दो भागों में विभक्त हो गये। एक विभाग में वे लोग हुए जिनके पास पूंजी तथा बौद्धिक योग्यता का अभाव था, जो केवल कड़ी शारीरिक मेहनत करके समाज का उत्पादन बढ़ाने में सहायता देते हैं। किसान और मजदूर इस वर्ग में शामिल हैं, दूसरा वर्ग उन लोगों का बना जिनके पास पूंजी है, बौद्धिक योग्यता है और संचालन की बुद्धि है और जो कम परिश्रम करके, एअर कण्डिशन कमरों में बैठकर अपनी बुद्धि के द्वारा अपने विस्तृत उद्योग का संचालन करते हैं और बौद्धिक योग्यता और शोषक प्रवृत्ति से सब प्रकार के ऐश, आराम और वैभव का उपभोग करते हैं।

समाज में पहला वर्ग शोषित वर्ग और दूसरा वर्ग शोषक वर्ग के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

मशीन युग का आरम्भ होने के पश्चात् कुछ समय तक तो शोषित वर्ग को अपनी आत्म-चिन्ता का ज्ञान नहीं हुआ और वे अत्याचार की चक्की में पिसते रहे। आधा पेट खाकर और हड्डियों का नर कंकाल लेकर के अपने मालिकों के ऐश आराम के साधन बढ़ाते रहे, मगर धीरे २ संगठित रूप से काम करते २ उनमें आत्म-चिंता और अपने अधिकारों का ज्ञान होने लगा। धीरे २ उनके स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बने, जिनका विवेचन हम ऊपर कर आये हैं।

मजदूरों के इन संगठनों ने औद्योगिक जगत् में एक दुर्दमनीय वर्ग संघर्ष छेड़ दिया। इन संगठनों ने मजदूरों के हृदयों में उद्योगपतियों के विरुद्ध एक स्थायी विष-वृक्ष के पौधे का बीजारोपण कर दिया।

वितरण की समस्या

इस संघर्ष का मूल कारण औद्योगिक-उत्पादन के वितरण की समस्या थी। उद्योगपति-वर्ग अपने बुद्धि-कौशल से उत्पादन का अधिकांश भाग भिन्न २ प्रकार के कमीशनों के रूप में स्वयं हड़प जाता था और किसानों तथा मजदूरों को दिनरात कड़ा परिश्रम करके भी भूखे, नंगे रहकर छोटे २ झोपड़ों में अपनी जिन्दगी बितानी पड़ती थी।

वितरण की यह विषमता (Wrong Distribution) ही संसार में उत्पन्न हुई महान् मजदूर क्रान्तिकी जनक है और इसी महान्-क्रान्ति की जड़ में से कम्युनिज्म, सोशलिज्म के समान नवीन समाज व्यवस्थाओं का जन्म हुआ जिन्होंने समाज में स्थापित पूंजी वाद और उसके समर्थक साम्राज्य वाद के खिलाफ बगावत छेड़ दी।

जब शोषक वर्ग ने इस महान् मजदूर-क्रान्ति की प्रचण्ड शक्ति को देखा तो उसका दिल दहल गया। इसका सामना करने के लिए एक ओर तो उसने अपने भी विशाल संगठन बनाये दूसरी ओर मजदूरों के जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के लिए भी उन्होंने औद्योगिक क्षेत्र में मजदूरों के लिए हर प्रकार की सुख, सुविधा, शिक्षा और चिकित्सा की व्यवस्था की।

मगर शोषित वर्ग के हृदय में शोषक वर्ग के प्रति जो प्रति हिंसा की आग जाग्रत हो गई है वह इन सब सुविधाओं से शान्त नहीं हुई और वे हर तरह से उद्योगपतियों का अस्तित्व समाप्त करने पर कटिबद्ध हो गये और सबसे पहले रूस में इस क्रान्ति का प्रारम्भ हुआ जहाँ जारशाही को उलट कर लेनिन ने कम्यूनिज्म की स्थापना की।

भारत वर्ष के औद्योगिक क्षेत्र में भी इस क्रान्ति के बीज प्रस्फुटित हुए। ब्रिटिश साम्राज्य वाद के समय में सरकार इस आन्दोलन को दबाती रहती थी, फिर भी प्रतिहिंसा की जो आग मजदूरों के हृदय जाग्रत हो चुकी थी वह बुझाई नहीं जा सकी।

देशके स्वाधीन होने के पश्चात् गण-तंत्र भारत की सरकार ने मजदूरों के हितों पर पूरा ध्यान देना प्रारम्भ किया। मगर इस बात का पूरा ध्यान रक्खा कि हिंसा और रक्तपात का वातावरण यहां पर पैदा न होने पावे। महात्मा गांधीने अहिंसा के जो बीज यहाँ के वातावरण में बो दिये थे वे आज भी बराबर विद्यमान हैं और जिस आश्चर्य जनक ढङ्ग से बिना खून की एक बून्द बहाये यहां के बड़े २ राजा, जागीरदार और जमीदार राष्ट्रीय स्वार्थ त्याग की भावनाओं के ऊपर खुशी २ समाप्त कर दिये गये उसी प्रकार यहां की सरकार बिना हिंसा और रक्तपात के पूंजी वाद के तत्वों को भी समाप्त कर देना चाहती है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारा देश और हमारी सरकार जिस मौलिकता और जिस खूबी के साथ बिना रक्तपात के पूंजी वाद की भावनाओं को समाप्त कर रही है वह सारे संसार के लिए अनुकरणीय होगा और विश्वके समाज-वाद के इतिहास में अपना एक नया और मौलिक पृष्ठ जोड़ेगा।

हमारे यहाँकी लड़ाई पूंजी वाद के विषम तत्वों के खिलाफ है न कि पूंजीवादियोंके खिलाफ। आज के पूजी वादी भी यदि कल आनेवाली समाजवादी समाजव्यवस्थामें हमारा और हमारी सरकार का हाथ बंटाने को तैयार है तो उनका भी स्वागत किया जावेगा और हमें यह देखकर प्रसन्नता होती है कि इस देश के उद्योगपति इस बात को भली प्रकार महसूस करने लग गये हैं कि अब इस आनेवाले युगको संसार की कोई शक्ति रोक नहीं सकती और अब इसके विरुद्ध संघर्ष करने से कोई लाभ नहीं है और इसीसे हम यह स्पष्ट देख रहे हैं कि आने वाले युग की स्थापना करने के लिए वे सारे राष्ट्र के साथ कन्धे से कन्धा मिला कर चलने को तैयार हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हम बीमा कम्पनियों के राष्ट्रीय करण के समय जो कि इस दिशामें सरकार का पहला कदम था देख चुके हैं। कुछ थोड़े से सैद्धान्तिक मतभेदों के अलावा इसके विरोध में कोई भी संगठित प्रदर्शन नहीं हुआ इसी प्रकार धीरे २ सरकार अपनी शक्ति

और संगठन के अनुसार राष्ट्रीयकरण की दिशा में जो कदम उठावेगी, पूंजीपतियों की तरफ से उसका कोई संगठित विरोध नहीं होगा और धीरे २ राष्ट्र की सारी उद्योग-व्यवस्था समाज वाद के ढांचे में ढल जावेगी।

ऐसी स्थिति में जब शान्त और व्यवस्थित वातावरण में हम अपने निर्धारित लक्ष्य की ओर क्रमशः आगे बढ़ रहे हैं तो फिर व्यर्थ में इसके लिए हिंसा और रक्तपात का सहारा लेने से कोई लाभ नहीं होगा।

हड़ताल का रोग

"हड़ताल" यह शब्द इन दिनों इतना व्यापक और परिचित हो गया है कि इस शब्द को सुनते ही भान हो जाता है कि इसका किसी मिल, कारखाने या फैक्टरी से सम्बन्ध है। प्रथम विश्व युद्ध के पहले तक यह शब्द इतना व्यापक नहीं था। बल्कि लोग इसके भाव को भी पूरी तरह नहीं समझते थे। इन पच्चीस-तीस वर्षों में ही यह इतना व्यापक हो गई है।

खासकर इस द्वीतीय महायुद्ध के समय में और उसके बाद तो वह रोग संक्रामक बीमारी की तरह चारों ओर फैल गया है। जिस प्रकार महात्मा गांधी के "उपवास" तत्व का लोगों ने जगह २ दुरुपयोग करना शुरू किया, उसी प्रकार इस हड़ताल तत्व का भी आज स्थान २ पर सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों होता हुआ दिखलाई दे रहा है।

हम इस बात को मानते हैं कि आज के इस युग में जब कि प्राचीन और नवीन भावनाओं के बीच जोरदार संघर्ष चल रहा है, इस "हड़ताल" तत्व की कभी २ आवश्यकता होती है। पूंजीपति लोग अपने स्वार्थ में ऐसे बेभान हो रहे हैं कि अगर इस भाँति की कोई भी चीज सामने न हो तो मजदूरों की वाजिब मांगों को भी वे बेरहमी से ठुकरा देते हैं और मजदूरों के पास बेबसी के सिवा दूसरा चारा नहीं रहता इसलिए ऐसे समय में मजदूरों के पास यह "हड़ताल" अस्त्र ही ऐसा रह जाता है कि जिसके बल पर वे सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यहां तक तो इसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में किसी को मतभेद नहीं हो सकता।

मगर यही उपयोगी चीज उस समय रोग का रूप धारण कर लेती है, जब इसका उपयोग बिना सोचे-समझे विघ्न-सन्तोषी और उत्तरदायित्वहीन लोगों के द्वारा होता है। इस प्रकार के स्वयंभू नेताओं के नाद में लगने से मजदूरों को बहुत कष्ट और तकलीफें उठानी पड़ती हैं और उसके परिणाम भी अच्छे नहीं होते हैं।

इस जगत में सफलता प्राप्त करने के दो ही मार्ग हैं। (१) समझौता और (२) संघर्ष। समझौते का मार्ग उत्तम है और संघर्ष का मध्यम। मनुष्य का या समुदाय का कर्तव्य होता है कि वह पहले अपनी आवश्यकताएं पूर्ण करवाने के लिए समझौते के उत्तम मार्ग को ग्रहण करे। मगर यदि इस मार्ग से पूरे प्रयत्न करने के बाद भी उसे सफलता न मिले तो फिर वह पूरी ताकत से संघर्ष के मार्ग को अपना कर अपनी आवश्यकताओं को पूरी करने का प्रयत्न करे।

हड़ताल यह विशुद्ध संघर्ष का मार्ग है। इसकी उपयोगिता तभी होती है जब हम समझौते के सब तरीकों से काम करके असफल हो चुके हों। फर्ज कीजिये, मजदूर यह चाहते हैं कि उनका काम करने का दिन नौ घण्टे से आठ घण्टे का हो जाय, या उनके वेतन, भत्ते अथवा बोनस में वृद्धि की जायं। इसके लिए सबसे पहले तो उन्हें अपनी मांगों के औचित्य पर स्वयं विचार कर लेना चाहिये। उसके पश्चात् उन्हें अपनी मांगें ऐसे विचारशील लोगों को दिखलाना चाहिये जो झगड़ालू प्रकृति के न हों। जब उनकी माँगों को पूरा समर्थन मिल जाय तब वे मागें मिल मालिकों और सम्बन्धित अफसरों के सन्मुख रखना चाहिये कि इन न्यायपूर्ण मांगों का निपटारा बहुत शीघ्र होना आवश्यक है। अगर उन लोगों की तरफ से इन मांगों पर विचार करने का या उनका निपटारा एक निश्चित समय में कर देने का वचन मिल जाता है तो ऐसी हालत उन्हें उत्तेजित न होकर धीरज के साथ प्रतीक्षा करनी चाहिए। अगर फिर भी फैसला होने में विलम्ब दिखलाई दे तो दूसरी और तीसरी नोटिस देनी चाहिए और उसके पश्चात् सब तरफ से निराशा होने पर भी हड़ताल का कदम योग्य और जिम्मेदार नेताओं के नेतृत्व में बढ़ाना चाहिए।

ऐसे विवेकपूर्ण ढंग से प्रारम्भ की हुई हड़ताल को सारी जनता का नैतिक समर्थन प्राप्त होता है, ऐसी हड़ताल में मजदूरों का हृदय भी नीति के प्रकाश से प्रकाशित रहता है और उन्हे अपने प्रयत्न में पूरी कामयाबी मिलती है।

मगर मजदूरों के बीच में अनेक नेता ऐसे होते हैं जो सहयोग के तत्व पर विश्वास ही नहीं करते। उनका स्वभाव ही विघ्न-संतोषी और संघर्षपूर्ण होता है। मजदूरों का हित हो या न हो "बन्दे को फजीते में मजा" यही उनका धर्म होता है। इसी प्रकार के नेताओं के उकसाने में आकर मजदूर समय बेसमय में हड़ताल करने के आदी हो गये हैं और इसलिये इस हड़ताल ने रोग का रूप धारण कर लिया है। मजदूरों को चाहिये कि वे इस हताल के रोग को अपने में से निकाल दें और विशुद्ध हड़ताल के तत्व को ग्रहण करें।

"हड़ताल" के इस रोग को फैलाने की जिम्मेदारी मिल-मालिकों पर भी कम नहीं है। हमें यह देख कर बड़ा दुःख होता है कि अपनी सम्पत्ति के मद में वे लोग जमाने के बदलते हुए प्रवाह से आंखें बन्द करके चल रहे हैं। उन्हें सोच लेना चाहिये कि इसका परिणाम उन्हीं के लिए बहुत खतरनाक होगा। उन्हें आंखें खोलकर युग-परिवर्तन की इस आवाज को ध्यान से सुनना चाहिए। मजदूरों की आवश्यकताएं पूरी करने की, उनको शिक्षित और इन्सान बनाने की और उनके रहन-सहन को ऊंचा उठाने की सारी जवाबदारी उन पर है। वे यह समझना छोड़ दें कि मजदूर तत्व अलग है और पूंजीपति अलग। इस चीज को समझें कि दोनों तत्व एक ही हैं। दोनों के स्वार्थ एक हैं, एक के सुखमें दूसरे का सुख है। अगर एक मजदूर सीलदार झोपड़ी में बीमारी से कराह रहा है तो उनका विशाल राजमहल में रहने का कोई अर्थ नहीं है। ये ही वे बातें हैं जो पारस्परिक घृणा, प्रतिस्पर्द्धा और संघर्ष की भावनाओं को जन्म देतीं हैं।

अगर मिल मालिक और मजदूर दोनों ही इन्सानियत की भावनाओं को तरजीह देंगे तो "हड़ताल" का यह रोग आसानी से मिट सकता है।

———

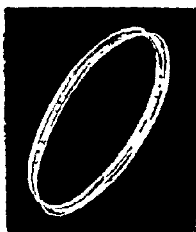
BUY SWADESHI

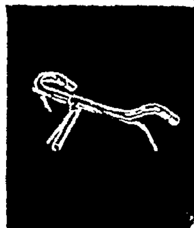


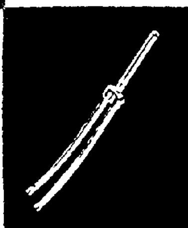
BUY **Hind**

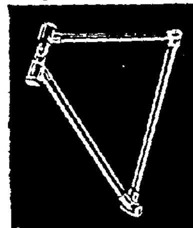
अपने सब पुरजों सहित
स्वदेश में निर्मित—

'हिन्द सायकल'

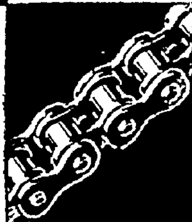


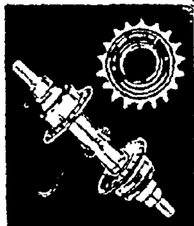




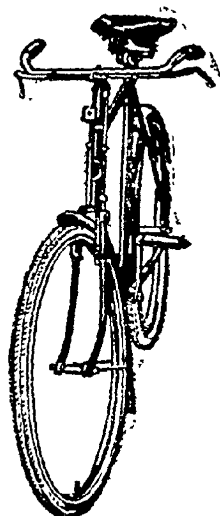












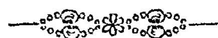
भारतवर्ष की प्रत्येक
तीन साइकलों में एक

हिन्द सायकल है

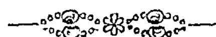
हिन्द सायकल लिमिटेड, बम्बई

भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



स्वाधीन गणतंत्र भारत का उदय



गणतंत्र भारतमें औद्योगिक विकास

सन् १९४७–५६

स्वाधीन गणतंत्र भारत का उदय

१५ अगस्त सन् १९४७ का दिन भारत के इतिहास में एक महान ऐतिहासिक दिन था। इसी दिन इस विशाल देशने अपनी एक हजार वर्षों की गुलामी की बेड़ियां काट कर स्वाधीनता देवी के मन्दिर में अपनी पहली पूजा अर्पित की। इसी दिन गणतंत्र भारत की पहली राष्ट्रीय सरकार कीस्थापना हुई।

स्वाधीन होते ही इस महान राष्ट्रने अपनी ऐतिहासिक परम्परा के अनुकूल सर्वतो-मुखी उन्नति करना प्रारम्भ किया। देखते २ जादूगर के डण्डे की तरह सैकड़ों वर्ष से मस्तक ऊंचाकरके चलनेवाले बड़े २ राज्य सिंहासन बिना रक्त की एक बून्द बहाए उलट गये, बड़ी २ जागिरियां और जमींदारियां समाप्त होगई। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में इस महान् राष्ट्र की कीर्ति सारे संसार में जगमगा उठी।

राष्ट्र के निर्माण के लिए, गरीबी और बेकारी को दूर करने के लिए, देशका उत्पा-दन बढ़ाने के लिए बड़ी २ योजनाओं का निर्माण हुआ। करोड़ों और अरबों रुपयों के खर्च से पहली और दूसरी पंचवर्षीय योजनाएं बनी। पहली पंचवर्षीय योजना सफलता पूर्वक समाप्त हुई और दूसरी योजना का प्रारम्भ हुआ।

विशाल पैमाने पर जल विद्युतशक्ति और सिंचाई करने के लिए बड़ी २ विशाल नदियों पर बांध निर्माण कार्य्य प्रारम्भ हुए, रेलवे के इञ्जिनों को बनाने के लिए चित्तरंजन कारखाने का विस्तार किया गया. रेलवे के डिब्बों को बनाने के लिए पैराम्बूर में विशाल कारखाना खोला गया। इसी प्रकार कृत्रिम खाद, न्यूजप्रिण्ट पेपर, पेनिसिलिन, डी० डी० टी०, टाइप राइटर इत्यादि चीजों के उत्पादन के लिए बड़े २ कारखानों की स्थापना की गई।

सबसे महत्व पूर्ण कार्य इस देश के वैज्ञानिक क्षेत्र में परमाणु शक्ति के अनुसन्धान के सम्बन्ध में हुआ। गत ४ अगस्त १९५६ को बम्बई के ट्राम्बेद्वीप की परमाणु अनुसन्धान-शाला में अणुशक्ति के एक रियेक्टर संचालक यंत्र का निर्माण हुआ और वह उसी दिन तीसरे पहर पौने चार बजे से काम करने लगा। भारत में ही नहीं एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया इत्यादि समस्त पूर्वी जगत में यह अपने ढङ्ग की पहली घटना है।

इसी प्रकार इस्पात के तीन बड़े २ विशाल कारखानों के निर्माण का काम भी आरम्भ कर दिया गया है जिनके बन जाने पर हमारे यहां साठ लाख टनसे अधिक इस्पात का उत्पादन होने लग जावेगा।

इस प्रकार स्वाधीन होने के पश्चात् यह राष्ट्र अपनी सर्वतोमुखी उन्नति कर रहा है। अवश्य ही योजनाओं का भार उठाने के लिए यहां की जनता को अनेक प्रकार के टैक्सों और महँगाई का त्रास उठाना पड़ रहा है और अनेक कठिनाइयों में से उसे गुजरना पड़ रहा है मगर देश का भविष्य उज्वल है, और जिस दिन हमारी योजनाएं पूरी हो जायँगी हमारा देश सुखी और सम्पन्न राष्ट्रके रूप में हराभरा होकर लहलहाने लगेगा।

औद्योगिक प्रगति के नौ वर्ष

भारत में औद्योगिक उत्पादन की कहानी बराबर वृद्धि की कहानी है। सन् १९४७ में देश के आजाद होते ही हर क्षेत्र में उत्पादन की वृद्धि प्रारम्भ हुई, किन्तु यह वृद्धि प्रथम तीन वर्षों में उतनी नियमित रूप से नहीं हुई जितनी कि सन् १९५० से लेकर सन् १९५५ तक याने प्रथम पंच वर्षीय योजना के समय में हुई। सन् १९५० से सन् १९५५ तक के पांच वर्षों मे अनेक नये नये उद्योग प्रारंभ किये गये और वर्त्तमान उद्योगो का विशाल पैमाने पर विस्तार भी किया गया। नये उद्योगों में टाइपराइटर (टंकन मशीन) पेनीसिलिन, डी० डी० टी०, अखबारी कागज, सूखा दूध तथा पाट की मशीनों का निर्माण विशेषरूप से उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त सन् १९५५ में मोटर साईकिलों तथा स्कूटरों को जोड़ने का काम भी प्रारंभ किया गया।

सूत और कपड़ा

भारत में सबसे बड़ा उद्योग सूत और कपड़ा तैयार करने का है। इस उद्योग को भारत में प्रारम्भ हुए सन् १९५४ में पूरे १०० वर्ष हो गए और जितनी उन्नति इस उद्योग ने सन् १९५० के पश्चात् की है उसका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि प्रथम पंचवर्षीय योजना के निर्धारित लक्ष्य को योजना के समाप्त होने के २ वर्ष पूर्व ही पूरा कर लिया गया और सन् १९५४-५५ का उत्पादन निर्धारित आँकड़ो से काफी आगे निकल गया।

सन् १९४७ में भारत में ४०९ कपड़ा मिलें थीं और उनमें ३७,७०० लाख गज कपड़ा तैयार किया गया था, किन्तु सन् १९५५ में ५४,९४० लाख गज कपड़ा तैय्यार किया गया। सन् १९४७ में जबकि केवल १३,९६० लाख पौंड सूत तैय्यार किया गया था तब सन् १९५५ में इसका उत्पादन बढ़कर १६२५० लाख पौंड तक पहुँच गया। सूत का उत्पादन बढ़ने के साथ करघों पर बनने वाले कपड़े का का उत्पादन भी बढ़ गया। सन् १९४७ में हाथ करघों पर मिलमें तैय्यार हुए सूत से १२,२०० लाख गज कपड़ा तैयार किया गया था किन्तु सन् १९५५ में यह उत्पादन १३८०० लाख गज तक पहुँच गया।

बहुत ही आश्चर्य की बात तो यह है कि सन् १९५१ के पश्चात् भारत में एक भी नये कपड़े मिल की स्थापना नहीं की गई फिर भी उत्पादन दिन प्रति दिन बढ़ता ही जा रहा है। सन् १९०४ में भारत मे केवल १९१ ही कपड़ा मिल थे जब कि सन् १९५१ में इन मिलों की संख्या बढ़कर ४४५ हो गई। अब भारत सरकार की यह नीति है कि मिलों की संखया में वृद्धि न करके इन्हीं मिलों की कार्य क्षमता बढ़ाकर उत्पादन में वृद्धि की जाय।

लोहा और इस्पात

लोहा और इस्पात का उत्पादन भी काफी तेजी से बढ़ रहा है। सन् १९५१ में लग भग १० लाख टन इस्पात तैयार किया गया था, किन्तु सन् १९५५ में यह उत्पादन १२,६३,७८२ टन तक पहुँच गया। अब तीन नये इस्पात के कारखाने बन रहे हैं और आशा की जाती है कि द्वितीय पंच वर्षीय योजना के अंत तक इस्पात का उत्पादन ६० लाख टन तक हो जावेगा।

इस्पात के तीन नये कारखाने रूरकेला, भिलाई तथा दुर्गापुर में बन रहे हैं। रूरकेला का कारखाना जर्मन फर्म के सहयोग से, भिलाई का कारखाना रूस के सहयोग से तथा दुर्गापुर का कारखाना कई सुप्रसिद्ध ब्रिटिश फर्मों के सहयोग से बन रहा है। ये तीनों कारखाने सरकारी कारखाने होंगे और सन् १९५८-५९ तक उत्पादन शुरू कर देंगे। जब इन तीनों कारखानों में उत्पादन प्रारंभ हो जावेगा तब भारत प्रति वर्ष २ अरब रुपये विदेशी मुद्रा के रूप में बचाया करेगा।

कोयला और उद्योग

कोयला उद्योग ने भी प्रथम पंच वर्षीय योजना-काल में सराहनीय प्रगति की है। सन् १९५१ में कोयले का उत्पादन ३ करोड़ ४० लाख टन से बढ़कर सन् १९५५ में ३ करोड़ ८० लाख टन तक पहुंच गया। द्वितीय पंच वर्षीय योजना-काल के अंत तक कोयले का उत्पादन ६ करोड़ टन तक पहुँच जाने का अनुमान किया जाता है।

कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के प्रश्न पर काफी मतभेद पैदा हो गया है। एसोसियेटेड चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष ने चेतावनी दी है कि अगर सरकार ने कोयला उद्योग का राष्ट्रीय करण किया तो इससे राष्ट्र की हानि होगी और नौकर शाही के जाल में फंसकर कोयले का उत्पादन कम हो जावेगा।

चीनी उद्योग

चीनी उद्योग ने सन् १९५६ में जितनी चीनी तैय्यार की उतनी आज तक कभी नहीं की थी। इस वर्ष लगभग १८ लाख ५४ हजार टन चीनी का उत्पादन हुआ जो सन १९४५ के उत्पादन से ठीक डेढ़ गुना था।

चीनी का उत्पादन

वर्ष	कारखानों की संख्या	उत्पादन
१९३२	५७	६,४५,००० टन
१९४०	१४०	१,२७१,९०० ,,
१९४७	१३५	१,००१,८०० ,,
१९५०	१३९	१,१५४,४०० ,,
१९५२	१३८	१,३३७,००० ,,
१९५५	१४०	१,६००,००० ,,
१९५६		१८,५४००० ,,

सन् १९५६ में सरकारने ३५ चीनी के नये कारखाने खोलने की अनुमति दी है, इससे उत्पादन और अधिक बढ़ने की आशा है। द्वितीय योजना में चीनी उत्पादन का लक्ष्य २२ लाख टन प्रति वर्ष रखा जा रहा है।

चीनी उद्योग की उन्नति के साथ साथ हमारे देश में आधुनिक ढंग की मिठाइयाँ बनाने का उद्योग भी बढ़ता जा रहा है। आज स्थिति यह है कि मीठी गोलियाँ आदि आधुनिक ढंग की मिठाइयों का उत्पादन देश में ५०,००० टन होने लगा हैं किन्तु इनकी खपत बहुत कम है। शेष मिठाइयाँ विदेशों को विशेषकर वर्मा, लंका, मलाया, हांगकांग, मरिशस, अदन, गोल्डकोस्ट तथा पूर्वी अफ्रीका के समस्त देशों को भेजी जाती है।

इञ्जिनियरिङ्ग उद्योग

सबसे अधिक उन्नति इञ्जिनियरिंग उद्योगों में हुई है। सन् १९४७ में भारत में डिजल इंजनों का उत्पादन नहीं के बराबर होता था किन्तु सन् १९५५ में इनके उत्पादन की संख्या १० हजार तक पहुँच गई। अनुमान है कि डिजल तथा बिजली से चलने वाले इञ्जनों का निर्माण अगले पञ्चवर्षीय योजनाकाल में इतना होने लगेगा कि देश की आवश्यकता पूरा करके भारत निर्यात भी करने लगेगा।

सन् १९५५ में २२,५२८ मोटर गाड़ियाँ और ट्रक तथा ४,८०,००० साइकिलें बनाई गई। सिलाई मशीनों का उद्योग दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है। सन् १९५५ में एक लाख सिलाई की मशीनें बनाई गई। हजामत की ब्लेडों का उत्पादन सन् १९५४ की अपेक्षा सन् १९५५ में एक दम चौगुना हो गया जबकि १८ करोड़ १४ लाख ब्लेड भारत में बनाये गये।

सन् १९५५ में ७५,०४३, बिजली पानी के मीटर, २,५१,८८२ और बिजली के पंखे २,८०,००० तैयार हो गये।

पाट और सिमेंट

भारत में पाट और सिमेंट का उद्योग भी काफी बढ़ा है। सन् १९५१ में पाट का उत्पादन ...००० टन हुआ था जबकि सन् १९५५ में वह ९,७१,००० टन तक पहुँच गया।

सीमेंट का उद्योग सन् १९१३ में भारत में प्रारम्भ हुआ था और पहले वर्ष ४०,००० टन सीमेंट तैयार हुआ था; किन्तु सन् १९५५ में २५ से ३० लाख टन तक प्रतिवर्ष होने लगा।

कागज उद्योग:—आजकल देश में कागज के २० कारखाने हैं और पढ़ाई लिखाई का ८० प्रतिशत कागज भारत में ही तैय्यार होने लगा है। १९५५ देश में २,११,९०० टन कागज तैयार किया गया था। नये कारखानों में आगामी कुछ वर्षों में १,०६,५०० टन और अधिक कागज तैयार होने लगेगा।

औद्योगिक उत्पादन का सूचितांक

(आधार १९४७-१००)

वर्ष	कपड़ा	जूट	कोयला	चीनी	सीमेंट	कागज	लोहा	डीजल इञ्जन
(१) १९४७	९६	९९.६	१०३.९	९७.६	९३.८	८७	६७	१४४.८
(२) १९४८	११९.०	१००.२	१०३.०	११६.०	१००.७	९२	६७	२१६.७
(३) १९४९	९९.९	८४.८	१०८.६	१०८.४	१३६.३	९७.४	१०४.८	८३८.६
(४) १९५०	९३.८	७६.८	११०.८	१२०.८	१६६.५	१०२.७	११२.२	६७१.७
(५) १९५१	१०४.३	८०.४	११८.८	१२०.८	२०७.२	१२४.४	११२.३	१५३१.९
(६) १९५२	११७.७	८७.४	१२५.४	१६१.९	२२९.३	१२४.४	११६.४	८७९.२
(७) १९५३	१२४.८	७२.८	१२४.८	१३९.९	२४५.१	१३१.८	११७.२	७८५.६
(८) १९५५	१२७.६	८५.२	१२७.३	१०९.२	२८५.१	१४६.५	१३०.२	१८२९.६
(९) १९५५	१२८.६	९३.३	१३२.०	१७१.०	२९१.०	१६०.०	१३४.०	२१०५५

द्वितीय सोपान

भारत सरकार की उद्योग नीति

शान्ति और सुव्यवस्थाके साथ क्रमशः देश में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करना और वितरण की विषम स्थिति जो सामाजिक दरिद्रता और अशान्ति की मूल जननी है उसको मिटाकर समानताके तत्वपर समाज को लाना यह भारत सरकार की उद्योग नीति का मूलभूत तत्व रहा है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को अच्छा खाना, अच्छा कपड़ा और रहने को साफ सुथरा मकान प्राप्त हो, उनके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और नागरिक जीवन बिताने के सभी साधन सुलभ हों, कोई भी व्यक्ति बेकारी से तंग न रहे, तथा ऊंची २ अट्टालिकाओं और फूस की झोपड़ियों के बीच बनी हुई विषमता की दीवार समाज की शान्ति के मार्ग में रोड़े न अटकाने पावे इन सब बातों को मद्‌दे नजर रखकर ही भारत सरकार धीरे २ मगर दृढ़ता के साथ अपने कदम आगे बढ़ा रही है।

मगर समाजवादी व्यवस्था की ओर अग्रसर होने में हमारे तरीके बिलकुल मौलिक और नवीन हैं। हिंसा और रक्तपात के सहारे जिन देशों ने अपने यहां समाजवादी समाज की स्थापना की है और समाज

के किसी विशेष वर्ग के प्रति प्रतिहिंसा की भावना रखकर उस वर्ग को नष्ट करने का प्रयत्न किया है उनका अनुकरण हमारी सरकार नहीं करना चाहती। हमारे देश की ऐतिहासिक परम्परा के अनुसार हम किसी की नकल पर अपनी समाज व्यवस्था का निर्माण करना पसन्द नहीं करते बल्कि अपने देश की परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए बिलकुल मौलिक रूप से एक नई दिशा में कदम बढ़ाते हुए सारी मानव जाति को नेतृत्व प्रदान करना चाहते हैं। यही कार्य्य इस देश के इतिहास में महात्मा गांधी ने किया और उन्हीं के पदचिन्हों पर चल कर यही कार्य हमारे आज के महान् नेता पं० जवाहरलाल नेहरू भी कर रहे हैं।

समाजवादी समाज व्यवस्था के मार्ग में अग्रसर होते समय न तो हमारे मन में किसी वर्ग विशेष के प्रति किसी प्रकार की प्रतिहिंसा की भावना है और न हमारे उस मार्ग में हिंसा और रक्तपात को ही कोई स्थान है। हमारा ध्येय है इस व्यवस्था में आगे बढ़ते समय देश के प्रत्येक नागरिक से फिर चाहे वह उद्योगपति हों, चाहे किसान, चाहे मजदूर, चाहे जागीरदार, चाहे जमींदार सबसे सहयोग प्राप्त करें। हमारी लड़ाई विषमता के सिद्धान्तों से है उन विषमता के सिद्धान्तों पर आचरण करने वाले व्यक्तियों से नहीं। यदि ऐसे लोग विषमता के सिद्धान्तों पर आचरण करना छोड़ कर समाजवादी समाज की स्थापना में हमारा सहयोग करते हैं तो हम उनका भी स्वागत ही करेंगे।

इन उदार और मौलिक सिद्धान्तों को लेकर हमारा देश एक नई समाज व्यवस्था की स्थापना में आवडी काँग्रेस के बाद से अग्रसर हो रहा है और यह बात इस देश के इतिहास के पृष्ठों में बड़े गर्व के साथ लिखी जावेगी कि अपने राष्ट्र के निर्माण के महान् सिद्धान्त को ध्यान में रखकर जिस प्रकार बड़े २ राजाओं ने बिना किसी विरोध के अपने राज्य सिंहासन छोड़ दिए, जागीरदारों ने अपनी जागीरें और जमीदारों ने अपनी जमीदारियां छोड़ दीं उसी प्रकार हमारे देश के उद्योगपति भी क्रमशः राष्ट्र निर्माण की वेदी पर अपना सभी कुछ बलिदान करने को हंसते २ तैय्यार हो जावेंगे और जिस समाजवादी समाज की रचना में हम लोग आगे बढ़ रहे हैं उसके मार्ग में वे बाधक न होकर साधक रूप में ही अग्रसर होंगे और "सर्वजन हिताय सर्व जन सुखाय" के सिद्धान्त पर अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को विशेष महत्त्व न देंगे। ये लक्षण अब दिखलाई भी देने लग गये हैं और जमाने की हवा को पहचानने में वे किसी से पीछे नहीं हैं।

इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर हमारे देश के प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू ने ३० अप्रैल सन् १९५६ को लोक सभा में भारत सरकार की नई औद्योगिक नीति की घोषणा की। इस नीति के अनुसार औद्योगीकरण की गति तीव्र करके—विशेषतः भारी उद्योगों और मशीन निर्माण के उद्योगों के—विकास के द्वारा—आर्थिक प्रगति अधिक तेजी से की जा सकेगी। इसलिए सरकार धीरे २ नये औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना तथा यातायात की सुविधा के लिए महत्वपूर्ण तथा प्रत्यक्ष दायित्व ग्रहण करेगी। इसके साथ ही सरकार ने किसी भी प्रकार का औद्योगिक उत्पादन अपने हाथ में लेने का दायित्व सुरक्षित रखा है।

सामान्यतः भावी विकास के उद्देश्य से उद्योगों को तीन वर्गों में बांट दिया गया है। प्रथम वर्ग के उद्योगों का दायित्व पूर्णतः सरकार पर होगा। द्वितीय वर्ग के उद्योगों पर सरकार उत्तरोत्तर अधिकार करेगी। इस वर्ग में उन उद्योगों को रखा गया है जिनके नये प्रतिष्ठानों की स्थापना का कार्य सामान्यतः सरकार करेगी, किन्तु सरकारी प्रयत्नों में गैर सरकारी उद्यम के सहयोग की भी अपेक्षा की जाएगी। तृतीय वर्ग में वे उद्योग हैं जो पूर्णतः व्यक्तिगत क्षेत्र के अन्तर्गत रहेंगे।

सरकार की औद्योगिक नीति में राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के विकास के लिए कुटीर, ग्राम और लघु उद्योगों के महत्व पर भी बल दिया गया है। इसमें औद्योगिक नीति के अन्य अनेक अंगों—उदाहरणार्थ एक विस्तृत और विकासशील सहकारी क्षेत्र के निर्माण, उद्योगों के लिए शैल्पिक यथा वित्तीय सहायता की व्यवस्था, देश के विभिन्न प्रदेशों के संतुलित एवं समायोजित विकास, औद्योगिक क्षेत्र में शान्ति बनाए रखने आदि—पर भी प्रकाश डाला गया है।

आधारभूत सिद्धान्त

भारत के संविधान की प्रस्तावना में यह घोषणा की गयी है कि इस संविधान का लक्ष्य अपने समस्त नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय; विचार, अभिव्यक्ति, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता और प्रतिष्ठा तथा अवसर की समता प्राप्त करना तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बन्धुता बढ़ाना है।

राज्य-नीति के नैदेशिक सिद्धान्तों में यह कहा गया है कि "राज्य ऐसी सामाजिक व्यवस्था की, जिसमे सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुप्राणित करे, भरसक कार्य-साधक रूप में स्थापना और संरक्षण करके लोक-कल्याण की उन्नति का प्रयास करेगा।"

और यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि—"राज्य अपनी नीति का विशेषतया ऐसा संचालन करेगा कि सुनिश्चित रूप से—

(क) समान रूप से नर और नारी, सभी नागरिकों को जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार हो;

(ख) समुदाय की भौतिक सम्पत्ति का स्वामित्व और नियन्त्रण इस प्रकार बंटा हो कि जिससे सामूहिक हित का सर्वोत्तम रूप से साधन हो;

(ग) आर्थिक व्यवस्था इस प्रकार चले कि जिससे धन और उत्पादन-साधनों का सर्व साधारण के लिए अहितकारी केन्द्रण न हो;

(घ) पुरुषों और स्त्रियों दोनों का समान कार्य के लिए समान वेतन हो;

(ङ) श्रमिक पुरुषों और स्त्रियों के स्वास्थ्य, शक्ति तथा बालकों की सुकुमार अवस्था का दुरुपयोग न हो तथा आर्थिक आवश्यकता से विवश हो कर नागरिकों को ऐसे रोजगारों में न जाना पड़े जो उनकी आयु या शक्ति के अनुकूल न हो;

(च) शैशव और किशोर अवस्था का शोषण से तथा नैतिक और आर्थिक परित्याग से संरक्षण हो।

दिसम्बर १९५४ में संसद ने, समाजवादी ढंग के समाज की आर्थिक और सामाजिक नीति का लक्ष्य निर्धारित करके, इन मूलभूत और सामान्य सिद्धान्तों को एक अधिक सुनिश्चित दिशा प्रदान की। अतः, अन्य नीतियों की भांति औद्योगिक नीति का नियन्त्रण भी इन्हीं सिद्धान्तों के अनुसार होना चाहिए।

प्रमुख आवश्यकताएं

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि आर्थिक विकासकी गति तीव्र की जाय, औद्योगीकरण तेजी के साथ किया जाए, भारी और मशीन-निर्माण-उद्योगों का विशेष रूपसे विकास किया जाए, गैर सरकारी क्षेत्र का विस्तार हो और एक विस्तृत तथा विकासशील सहकारी क्षेत्र का निर्माण हो। लाभदायक नियोजन के अवसर बढ़ाने और जनसाधारण के जीवन-स्तर और काम करने की स्थितियों में सुधार करने के लिए—ये बातें आर्थिक आधारशिलाओं का कार्य करेंगी। व्यक्तिगत एकाधिकारों को रोकने और विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक सत्ता कुछ गिने चुने लोगों के हाथ में केन्द्रित न होने देने के लिए आय और सम्पत्ति की जो विषमताएं आज मौजूद हैं, उन्हे शीघ्रातिशीघ्र कम करना भी उतना ही आवश्यक है। अतएव राज्य नये औद्योगिक प्रतिष्ठानों की स्थापना और परिवहन की सुविधाएं बढ़ाने में धीरे-धीरे अधिकाधिक प्रमुख और प्रत्यक्ष दायित्व ग्रहण करेगा। वह अधिकाधिक पैमाने पर राजकीय व्यापार भी अपने हाथ में लेगा। इसके साथ ही देश की विकासोन्मुखी अर्थ-व्यस्था के प्रसंग में आयोजित राष्ट्रीय विकास के एक माध्यम के रूप में गैर सरकारी क्षेत्र को भी विस्तृत और विकसित होने का अवसर दिया जायगा। यथासम्भव सहकारिता के सिद्धान्त का भी प्रयोग करना चाहिए और धीरे-धीरे निजी क्षेत्र के कार्य-व्यापारों का अधिकाधिक विकास सहकारिता के आधार पर होना चाहिए।

समाजवादी ढंग के समाज को राष्ट्रीय लक्ष्य मान लेने और आयोजित एवं द्रुत विकास की आवश्यकता के कारण यह आवश्यक हैं कि वे समस्त उद्योग सरकारी क्षेत्र में रखे जाएं जिनका आधारभूत अथवा सैनिक महत्व है अथवा जो सार्वजनिक उपयोगी सेवाओं के ढंग के हैं। अन्य ऐसे उद्योग भी सरकारी क्षेत्र में ही रहने चाहिए जो अनिवार्य हैं और जिनके लिए इतने बड़े पैमाने पर पूंजी की आवश्यकता होती है जिसको वर्तमान परिस्थितियों में केवल राज्य द्वारा ही जुटायी जा सकती है। अतः राज्य को एक अधिक व्यापक क्षेत्र में उद्योगों के भावी विकास का प्रत्यक्ष दायित्व अपने ऊपर लेना होगा। तथापि ऐसी कुछ सीमाएं हैं जिनके कारण यह आवश्यक हो गया है कि राज्य इस अवसर पर उस क्षेत्र की स्पष्ट परिभाषा कर दे जिसमें वह भावी विकास का सम्पूर्ण दायित्व अपने ऊपर लेगा और उन उद्योगों का भी चुनाव कर लिया जाए जिनके विकास में राज्य प्रमुख रूप से भाग लेगा। इस समस्या के समस्त पहलुओं पर विचार करके और योजना-आयोग से परामर्श ले कर भारत सरकार ने उद्योगों को तीन वर्गों में विभाजित

करने का निश्चय किया है। राज्य किस उद्योग में कितना भाग लेगा इसी आधार पर यह वर्गीकरण किया गया है। अनिवार्यतः किसी सीमा तक एक वर्ग के उद्योग दूसरे वर्ग के उद्योगों में सम्मिलित होंगे और इस वर्गीकरण की आवश्यकता से अधिक पाबंदी करने से उस लक्ष्य को भी क्षति पहुंचने का भय है जहां तक हम पहुँचना चाहते हैं किन्तु आधारभूत सिद्धान्त और लक्ष्य सदैव सम्मुख रखने होंगे और जो सामान्य निर्देश यहां दिए जा रहे हैं उनका पालन करना होगा। यह भी याद रखना चाहिए कि राज्य को किसी प्रकार का औद्योगिक उत्पादन अपने हाथ में ले लेने की सदैव स्वाधीनता होगी।

उद्योगों का वर्गीकरण

प्रथम वर्ग में वे उद्योग होंगे जिनके भावी विकास का दायित्व केवल राज्य पर होगा। द्वितीय वर्ग में वे उद्योग होंगे जिन पर राज्य का स्वामित्व क्रमशः होगा और जिनमें नए प्रतिष्ठानों की स्थापना का भार तो सामान्यतः राज्य पर होगा किन्तु इनमें राज्य के प्रयत्नों में गैर सरकारी उद्योग के सहयोग की भी अपेक्षा की जाएगी। तृतीय वर्ग में शेष समस्त उद्योगों का समावेश होगा और समान्यतः इन उद्योगों का भावी विकास गैर सरकारी क्षेत्र के प्रयत्नों तथा उद्यम पर छोड़ दिया जावेगा।

प्रथम वर्ग के उद्योग इस प्रकार हैं :—

(१) अस्त्र-शस्त्र और सुरक्षा के अन्य सामान (२) अणुशक्ति (३) लोहा और इस्पात (४) हेवी कन्स्ट्रक्शन के माल (५) खनिज उद्योग, मशीन निर्माण और इसी प्रकार के अन्य उद्योग (६) बड़े-बड़े विद्युत् प्लाण्ट (७) कोयला और लिग्नाइट (८) खनिज तेल (९) कच्चा लोहा, मैंगनीज, जिप्सम, गन्धक, सोना और हीरा (१०) तांबा, रांगा, जस्ता, टीन (११) अणुशक्ति आदेश (१९५३) में वर्णित खनिज पदार्थ (१२) वायुयान (१३) हवाई यातायात (१४) रेलवे यातायात (१५) जहाज निर्माण (१६) टेलीफोन और उसके तार, टेलीग्राफ, बेतार का तार (रेडियो को छोड़ कर) (१७) बिजली-उत्पादन और वितरण।

इन उद्योगों के नए कारखानों की स्थापना केवल राज्य द्वारा की जाएगी। गैर सरकारी क्षेत्र में ऐसे जिन कारखानों की स्थापना के लिए पहले ही अनुमति दी जा चुकी है, वे इस नियम के अपवाद होंगे। इसका अर्थ यह नहीं है कि वर्तमान गैर सरकारी कारखानों का विस्तार नहीं किया जा सकता अथवा, राष्ट्रीय हित में, राज्य नये कारखाने स्थापित करते समय गैर सरकारी उद्योग का सहयोग प्राप्त नहीं कर सकता। रेल तथा वायु-परिवहन, अस्त्र-शस्त्र और अणु-शक्ति का विकास केन्द्रीय सरकार के एकाधिकारों के रूप में किया जायगा। जब भी गैर सरकारी उद्यम के सहयोग की आवश्यकता होगी तो राज्य—पूंजी में बहु संख्यक सहयोग द्वारा अथवा अन्यथा—यह सुनिश्चित कर लेगा कि उसे उक्त प्रतिष्ठान की नीति का निर्धारण और उसकी प्रक्रियाओं का नियन्त्रण करने के अभीष्ट अधिकार प्राप्त हैं।

द्वितीय वर्ग के उद्योग इस प्रकार हैं:—

(१) मिनेरल्स कन्शेशन रूल्स (१६४६) के भाग ३ के अन्तर्गत जिन छोटे-छोटे रासायनिक पदार्थों का उल्लेख किया गया है उनके अतिरिक्त अन्य सभी रासायनिक पदार्थ (२) प्रथम वर्ग में जिन धातुओं का उल्लेख हुआ है उनके अतिरिक्त अन्य सभी लोहेतर धातुएं तथा अलूमीनियम (३) मशीन निर्माण उद्योग (४) लौह मिश्रण तथा औजार बनाने के काम में आने वाला स्टील (५) औषधियों, रंगों तथा प्लास्टिक का उत्पादन करने के प्रसंग में काम में आने वाले आधारभूत तथा मध्यवर्ती माल (६) एण्टीबायटिक तथा अन्य आवश्यक औषधियां (७) रासायनिक खाद (८) नकली रबर (९) कोयले से कार्बन गैस का उत्पादन (१०) रासायनिक लुगदी (११) सड़क-परिवहन (१२) समुद्री यातायात ।

इस वर्ग के उद्योगों का भावी विकास द्रुत गति से करने के उद्देश्य से राज्य इन उद्योगों के अधिकाधिक प्रतिष्ठान स्थापित करेगा । इसके साथ-साथ इस क्षेत्र में गैर सरकारी उद्यम को भी, स्वाधीनता पूर्वक अथवा राज्य के सहयोग से, विकास करने का अवसर दिया जायगा ।

तृतीय वर्ग में शेष सब उद्योग सम्मिलित हैं । उनके सम्बन्ध में यह आशा की जाती है कि इनका विकास सामान्यतया गैर सरकारी क्षेत्र के प्रयत्न और उद्यम पर निर्भर रहेगा तथापि राज्य को इस वर्ग का कोई उद्योग स्वयं भी चलाने की छूट होगी । राज्य की यह नीति रहेगी कि वह, उत्तरोत्तर पंचवर्षीय योजनाओं में निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार परिवहन, शक्ति और अन्य सेवाओं का आश्वासन दिला कर और समुचित वित्तीय तथा अन्य उपायों द्वारा इन उद्योगों के विकास में सुविधा और प्रोत्साहन प्रदान करे । राज्य अन्य संथाओं को इस बात के लिए उत्साहित करता रहेगा कि वे इन उद्योगों को वित्तीय सहायता दें और औद्योगिक अथवा कृषि सम्बन्धी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सहकारिता के आधार पर संगठित किये जाने वाले प्रतिष्ठानों को विशेष रूप में सहायता दी जायगी । उपयुक्त मामलों में राज्य गैर सरकारी क्षेत्र को भी वित्तीय सहायता दे सकता है । इस प्रकार की सहायता—विशेषतः जब वह उल्लेखनीय रकम की हो—साम्य पूंजी (Equity Capital) में हाथ बटा कर करना अधिक अच्छा रहेगा यद्यपि यह अंशतः ऋण-पत्र पूंजी (Debenture Capital) के रूप में भी हो सकती है ।

गैर सरकारी औद्योगिक प्रतिष्ठान

गैर सरकारी क्षेत्र के औद्यगिक प्रतिष्ठानों को अनिवार्य रूप से राज्य की सामाजिक एवं आर्थिक नीति के अनुकूल होना होगा और उन्हें उद्योग (विकास तथा नियमन) अधिनियम तथा अन्य सम्बद्ध कानूनों के नियन्त्रण एवं नियमन में रहना होगा । भारत सरकार यह अवश्य स्वीकार करती है कि सामान्यतः यह उचित होगा कि इस प्रकार के प्रतिष्ठानों के विकास के लिए यथासम्भव उतनी स्वतन्त्रता दे दी जाए जो राष्ट्रीय योजना के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को ध्यान में रख कर दी जा सकती हो । यदि एक ही उद्योग में सरकारी और गैर सरकारी दोनों प्रकार के कारखाने होंगे तो राज्य इसी नीति का अवलम्बन करता रहेगा कि दोनों के साथ अच्छा और निष्पक्ष व्यवहार किया जाए ।

उद्योगों को अलग-अलग वर्गों में बांट देने का अर्थ यह नहीं कि एक वर्ग का उद्योग दूसरे वर्ग में आ ही नहीं सकता। विशेषतः उद्योग अपने अपने वर्ग की सीमाओं का उल्लंघन नहीं करेंगे, अपितु सरकारी क्षेत्रों के उद्योगों के बीच बहुत अधिक परस्परानुबन्धन भी होगा। आयोजन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अथवा अन्य महत्वपूर्ण कारणों से राज्य ऐसा कोई उद्योग चला सकेगा जिसकी गणना प्रथम अथवा द्वितीय वर्ग में नहीं की गई है। समुचित स्थितियों में गैर सरकारी कारखानों को अपनी आवश्यकताएं पूरी करने के लिए अथवा उत्पादन के रूप में ऐसी वस्तु का उत्पादन करने की अनुमति दी जा सकती है जिसकी गणना प्रथम वर्ग, में की गई है। समान्यत छोटे निजी कारखानों द्वारा छोटे और हल्के जहाज बनाने, स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बिजली पैदा करने और छोटे पैमाने पर खनन कार्य करने में कोई रुकावट न होगी। इसके अतिरिक्त सरकारी क्षेत्र के भारी उद्योग अपने कुछ हल के पुर्जों की आवश्यकता गैर सरकारी क्षेत्र की सहायता से पूरी कर सकते हैं और उधर गैर सरकारी क्षेत्र अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकारी क्षेत्र पर निर्भर रहेगा। यही सिद्धान्त और भी अधिक शक्तिपूर्वक बड़े और छोटे पैमाने के उद्योगों के पारस्परिक सम्बन्ध पर लागू होगा।

कुटीर, ग्राम और लघु उद्योग

इस सम्बन्ध में भारत सरकार राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था के विकास में कुटीर, ग्राम और लघु उद्योगों का महत्व स्वीकार करती है। कुछ ऐसी समस्याओं के सम्बन्ध में, जिनका तत्काल समाधान आवश्यक है, इस प्रकार के उद्योगों की कुछ स्पष्ट विशेषताएं हैं। इन उद्योगों द्वारा तत्काल बहुत से आदमियों को काम मिल जाता है इनके द्वारा राष्ट्रीय आय के अधिक समानतापूर्ण वितरण का एक तरीका प्राप्त हो जाता है और इनकी सहायता से पूंजी तथा योग्यता के उन स्रोतों के समुचित प्रयोग में भी सुविधा मिल जाती है जो अन्यथा अप्रयुक्त ही रह जाते। यदि औद्योगिक उत्पादन के छोटे-छोटे केन्द्र देश भर में स्थापित कर दिए जाएं तो ऐसी कुछ समस्याओं से भी बचा जा सकता है जो किसी प्रकार की योजना बनाए बिना नगर बसाने के कारण उत्पन्न हो जाती हैं।

राज्य, छोटे और बड़े पैमाने के उद्योगों पर भिन्न-भिन्न कर लगा कर अथवा लघु उद्योगों को प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता देकर, बड़े पैमाने के उद्योगों के उत्पादन का परिमाण सीमित करके कुटीर, ग्राम और लघु उद्योगों को सहारा देने की नीति पर चल रहा है। इस प्रकार के कदम तो भविष्य में भी उठाए जाते रहेंगे किन्तु आवश्यकता पड़ने पर राज्य की नीति का लक्ष्य यह बात सुनिश्चित करना होगा कि विकेन्द्रित क्षेत्र पर्याप्त शक्ति एवं सामर्थ्य अर्जित कर ले ताकि वह आत्म-निर्भर हो सकें और उनका विकास बड़े पैमाने के उद्योगों के विकास के साथ एकीकृत हो सके। अतः राज्य ऐसे उपायों का अवलम्बन करेगा जिनसे छोटे पैमाने के उत्पादक की प्रतिस्पर्धा करने की शक्ति बढ़ सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये

यह आवश्यक है कि उत्पादन का तरीका धीरे-धीरे सुधारा जाय और उसे आधुनिक ढंग का बनाया जाए और इस परिवर्तन की गति का नियमन इस प्रकार हो जिससे यथासम्भव शैल्पिक बेकारी से बचा जा सके। छोटे पैमाने के उत्पादकों की कुछ मुख्य कठिनाइयां ये हैं:—शैल्पिक तथा वित्तीय सहायता का अभाव, काम करने के लिए उपयुक्त स्थान प्राप्त न होना और मरम्मत की सुविधाओं का अभाव। औद्योगिक बस्तियों और देहाती सामुदायिक कारखानों की स्थापना द्वारा इन अभावों की पूर्ति करने का आरम्भ किया जा चुका है। गांवों में बिजली पहुंचाने और कारीगरों को ऐसे मूल्यों पर जिनका भुगतान वे कर सकते हैं। बिजली की शक्ति उपलब्ध करने से भी इस काम में पर्याप्त सहायता मिल सकती है औद्योगिक सहकारी संस्थाओं की स्थापना और संगठन द्वारा छोटे पैमाने के उत्पादन से सम्बद्ध अनेक कार्यों को बहुत सहायता पहुंचायी जा सकती है। इस प्रकार की सहकारी संस्थाओं को सब प्रकार प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए और राज्य को कुटीर, ग्राम तथा लघु उद्योगों के विकास की ओर लगातार ध्यान देना चाहिए।

विकास-स्तरों में समानता

औद्योगीकरण को सम्पूर्ण देशकी अर्थ-व्यवस्था के लिये हितकर बनाने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि विभिन्न क्षेत्रों के विकास-स्तरों के बीच दिखायी देने वाली विषमताएं धीरे-धीरे कम की जायँ। देश के विभिन्न भागों में उद्योगों की कमी प्रायः आवश्यक कच्चे माल अथवा प्राकृतिक साधनों के अभाव के कारण होती है। विशेष इलाकों में उद्योगों की बहुलता उन स्थानों में विकसित शक्ति, जल और परिवहन सम्बन्धी सुविधाओं की सुलभ उपलब्धि पर निर्भर रहती है। अन्तर्राष्ट्रीय आयोजन का एक उद्देश्य यह भी है कि धीरे-धीरे उन इलाकों में भी सुविधाएं उपलब्ध की जांय जो इस समय औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, अथवा (वह स्थान और सब बातों की दृष्टि से उपयुक्त होने पर) जहां नियोजन के अवसर जुटाने की अधिक आवश्यकता है। औद्योगिक और कृषि सम्बन्धी अर्थ-व्यवस्था के संतुलित और समेकित विकास द्वारा ही सम्पूर्ण देश उच्च जीवन-स्तरों तक पहुँच सकता है।

औद्योगिक विकास के इस कार्यक्रम के लिए देश में अनेक शिल्पियों और व्यवस्थापकों की भारी आवश्यकता होगी। सरकारी क्षेत्र के विस्तार और ग्राम तथा लघु उद्योगों के विकास के लिए बराबर बढ़ने वाली इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए सार्वजनिक सेवाओं में व्यवस्थापकों और शिल्पियों के समुचित वर्गों की स्थापना की जा रही है। निरीक्षकों की कमी दूर करने, सरकारी तथा गैर सरकारी उद्यमों में बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण सम्बन्धी योजनाओं की व्यवस्था करने और विश्वविद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं में व्यापारिक व्यवस्था का प्रशिक्षण देने की सुविधाओं का विस्तार करने के लिए भी कदम उठाये जा रहे हैं।

समुचित प्रोत्साहन की आवश्यकता

यह आवश्यक है कि जो लोग उद्योग में लगे हैं उन्हें समुचित सुविधाएं एवं प्रोत्साहन प्राप्त हों;

कामगरों का रहन-सहन और काम करने की परिस्थितियों में सुधार होना चाहिए और उनकी योग्यता का स्तर भी ऊंचा उठाया जाना चाहिए। औद्योगिक प्रगति के लिए उद्योग-धन्धों में शान्ति तथा सद्भावना बनाए रखना अत्यन्त आवश्यक है। समाजवादी जनतन्त्र में श्रमिक, विकास के सार्वजनिक कार्य में एक भागीदार होता है अतः उसे पूरे उत्साह के साथ इस कार्य में भाग लेना चाहिए। श्रमिकों तथा उद्योगपतियों के पारस्परिक सम्बन्ध निर्धारित करने के लिए कुछ कानून बनाये जा चुके हैं और श्रमिक तथा व्यवस्थापक, दोनों के दायित्वों का अधिकाधिक अनुभव कियाजाने के फलस्वरूप इस कार्य के लिये एक व्यापक दिशा निर्धारित कर ली गई है। इसके लिए पारस्परिक विचार-विनिमय किया जाना चाहिए और कारीगरों और शिल्पियों को यथासम्भव धीरे-धीरे कार्य-व्यवस्था में सम्मिलित किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में सरकारी क्षेत्र के उद्यमों को आदर्श उपस्थित करना होगा।

कार्य-प्रणाली का महत्व

उद्योग और व्यापार में राज्य का सहयोग अधिकाधिक बढ़ने के साथ-साथ इस प्रश्न का महत्व भी बढ़ता जा रहा है कि सब कार्य किस प्रकार किए जाएं और इनकी व्यवस्था किस प्रकार की जाय। इन प्रयत्नों की सफलता के लिए यह अनिवार्य है कि फैसले जल्दी किये जांय और दायित्व अपने ऊपर लेने के लिए तैयार रहा जाय। इस कार्य के लिए यथासम्भव अधिकार अथवा सत्ता का विकेन्द्रीकरण होना चाहिए और सम्पूर्ण व्यवस्था व्यावसायिक आधार पर हो जानी चाहिए। आशा है कि सरकारी प्रतिष्ठान राज्य की आय में वृद्धि करेंगे और इस प्रकार नये क्षेत्रों में और अधिक विकास करने के साधन उपलब्ध हो सकेंगे। किन्तु इन प्रतिष्ठानों में कभी-कभी हानि भी हो सकती है। अतः सरकारी प्रतिष्ठानों का परीक्षण उनके कुल परिणामों के आधार पर किया जाना चाहिए और उन्हें अपनी कार्य-प्रणाली में यथासम्भव अधिकतम स्वाधीनता दी जानी चाहिए।

अन्य-विषय

१९४८ के औद्योगिक नीति सम्बन्धी प्रस्ताव में ऐसे अनेक विषयों को स्थान दिया गया था जिनके लिए अब या तो समुचित कानून बनाये जा चुके हैं अथवा नीति सम्बन्धी अधिकार युक्त वक्तव्य दिये जा चुके हैं। केन्द्रीय सरकार और राज्यों के बीच उद्योगों के सम्बन्ध में उत्तरदायित्वों का जो विभाजन किया गया है उसका विवरण उद्योग (विकास तथा नियमन) अधिनियम में दिया गया है।

भारत सरकार का विश्वास है कि जनता के समस्त वर्ग औद्योगिक नीति सम्बन्धी इस नवीन वक्तव्य का समर्थन करेंगे और इस प्रकार वे देश के द्रुत औद्योगीकरण में सहायक होंगे। *

---

* भारत सरकार के उद्योग विभाग द्वारा प्रकाशित "उद्योग-व्यापार पत्रिका" से संकलित।

तृतीय सोपान

गणतंत्र भारत की प्रथम पंच वर्षीय-योजना

(First Five Years Plan)

देश के स्वाधीन होने के पश्चात् यहां के राष्ट्रनायकों का ध्यान आर्थिक दृष्टि से देश के पुनर्निर्माण की ओर गया और इस कार्य्य के लिए उन्होंने शीघ्र ही एक पंच वर्षीय विकास-योजना के रूप को बनाने का कार्य्य अपने हाथ में लिया।

उन्होंने देखा कि पंचवर्षीय योजनाओं के सम्बन्ध में रूस का उदाहरण बहुत प्रेरणाप्रद सिद्ध हो सकता है। इन योजनाओं के सहारे रूस ने बीस वर्षों में जो प्रगति की, उतनी कई राष्ट्र एक सदी में भी न कर सके।

सोवियट रूस की पहली पंच वर्षीय योजना सर्वथा कृषि प्रधान थी। रूस को भी कभी हमारी तरह अरबों रुपयों का अनाज बाहर से मंगवाना पड़ता था और वस्त्र के लिए भी उसे दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता था। सन् १९२८ की पहली योजना के दो ही वर्षों की अवधि में रूस अन्न की दृष्टि से स्वावलम्बी बन गया और कपास के उत्पादन को भी काफी बढ़ाकर वस्त्र की आवश्यकता को भी उसने कुछ ही वर्षों में पूरा कर लिया।

हमारे देश की भी प्रथम पंचवर्षीय योजना प्रधान रूप से कृषि-प्रधान बनाई गई। द्वितीय महा युद्ध और उसके पश्चात् के वर्षों में हमारे देश की जनताने जिस भयङ्कर अन्न संकट का सामना किया उससे हमारे राष्ट्र-नायक पूर्णतया परिचित थे और ऐसे संकट का सामना फिर से देश को न करना पड़े इस सम्बन्ध में वे सजग थे। इसलिए पहली योजना का सर्व प्रधान लक्ष्य उन्होंने देश की कृषि का विकास कर अन्न के सम्बन्ध में देश को स्वावलम्बी बनाने का रक्खा।

इस लिए इस योजना के कुल अनुमानिक व्यय करीब २१ अरब रुपयों में करीब आठ अरब रुपये केवल कृषि के विकास तथा सिंचाई और सिंचाई तथा शक्ति के साधनों के लिए रक्खे गये।

सारे देश में कुंओं को बनाने के लिए, ट्यूबवेलों के निर्माण के लिए, पुराने कुंओं की मरम्मत के लिए, किसानों को करोड़ों रुपये तकावी में बांटे गये। नदियों पर विशाल बांधों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। सारे देश में कृषि का विकास करने की एक प्रकार से होड़ लग गई।

और योजना के प्रारम्भिक चार वर्षों तक यह मालूम होने लगा कि देश अन्न, दाल और तिलहन पदार्थों के लिए स्वावलम्बी हो गया है। यहां तक कि इन वस्तुओं का कुछ भाग वह बाहर निर्यात करने में भी समर्थ हो गया। खाद्य-विभाग की तरफ से इस सम्बन्ध में समय २ पर जो आंकड़े प्रकाशित किये जाते थे, वे भी काफी उत्साह वर्द्धक थे और सन् १९५५ के प्रारम्भ में खाद्यान्नों की तेजी से गिरती

हुई कीमतें भी इन आंकड़ों का समर्थन करती थीं। यहां तक कि जब गेहूँ के भाव दस रुपये मनसे भी नीचे जाने लगे तब सरकार को इन गिरते हुए भावों को रोकने के लिए, दस रुपये मन के भाव में गेंहूँ खरीदने का एहलान करना पड़ा।

मगर सन् १९५५ के अन्त से परिस्थिति एकदम बदल गई। सारे देश में चारों ओर अन्न के भावों में एकदम तेजी आने लगी। सरकार अनेक प्रयत्न करके भी इस तेजी के प्रवाह को न रोक सकी। और तब यह अनुभव होने लगा कि खाद्य-उत्पादन के सम्बन्ध में जो अङ्क अभी तक प्रकाशित होते थे उनमें कहीं न कहीं त्रुटि थी और देश अभी तक खाद्य के मामले में स्वावलम्बी नहीं हो पाया है और यही कारण है कि यहां के खाद्य-विभाग को फिर से लाखों टन अन्न का आर्डर विदेशों को देने के लिए मजबूर होना पड़ा।

फिर भी अन्न की समस्या पूर्णतः हल न होने पर भी दूसरे क्षेत्रों में प्रथम पञ्चवर्षीय योजना ने पर्याप्त उन्नति की। इस योजना से हमारी राष्ट्रीय आय में, बढ़ती का जो ११ प्रतिशत का लक्ष्य रक्खा था वह तीन ही वर्षों में पूरा हो गया और पांचवें वर्ष के अन्त में हमारी राष्ट्रीय आय में १८ प्रतिशत की वृद्धि हो गई जो कि इस योजना की चरम सफलता को सिद्ध कर रही है।

राष्ट्रीय योजना का उद्देश्य

भारत की इस प्रथम पञ्च वर्षीय योजना का उद्देश्य है:—राष्ट्र की विशाल जनशक्ति और प्राकृतिक वैभव जन्य अनेकानेक प्रकार के असंख्य साधनों का समुचित उपयोग कर अत्याधिक मात्रा में उपयोग की वस्तुओं का उत्पादन करना तथा राष्ट्र की आय और सम्पत्ति की विषमता दूर कर अपने नागरिकों के लिये बहु मुखी उन्नति के समान सुअवसर सहज में सुलभ करना।

गण तंत्र भारत की वर्तमान जन-संख्या लगभग ३६ करोड़ की है जो कि १-२५ प्रतिशत की वार्षिक गति से बढ़ रही है। विगत सन् १९५०-५१ ई० में जब इस पञ्च-वर्षीय योजना की रुप रेखा का निर्माण किया गया था उस समय गण तंत भारत की आय ९००० करोड़ रुपये वार्षिक अथवा २९५) रु० प्रति व्यक्ति वार्षिक थी।

कोष की व्यवस्था

इस प्रकार की आर्थिक स्थिति में गण-तंत्र भारत के रहन सहन का स्तर ऊँचा करने के लिये राष्ट्रीय योजना को कार्य का स्वरुप देना अत्याधिक आवश्यक हो गया। किन्तु इस प्रकार की विशाल रचनात्मक योजना को सफलता पूर्वक कार्यान्वित करने के लिये विपुल धन राशि आपेक्षित है। अब यह असाधारण पूँजी कहाँ से और किस प्रकार प्राप्त की जाय गणतंत्र भारत की राष्ट्रीय सरकार के लिये एक कठिन समस्या बन गयी। इतनी अधिक पूँजी पातो ऋण लेकर संग्रह की जाय या अपनी स्वयं की आय से कुछ बचत करके पूरी की जाय-यही दो मार्ग सरकार के सामने थे। इतनी बड़ी इस राष्ट्रीय योजना को ऋण लेकर चलाया जाय यह उपाय अनेक प्रकार की विघ्न-बाधाओं से सबविधि आक्रान्त समझा गया

क्यों कि अनेक प्रकार के खतरों में से अनेक बलिदानों के बरदान स्वरूप प्राप्त गणतंत्र भारत की इस स्वाधीनता के खो जाने का भय प्रधान था अतः गणतन्त्र भारत ने अपनी आय की बचत से ही पूंजी संग्रह कर इस राष्ट्रीय योजना को चलाने का संकल्प किया।

योजना कमीशनने यह अनुमान किया की इस योजनामें बीस अरब उनहत्तर करोड़ रुपया खर्च होगा। इनमें में बारह अरब अठावन करोड़ रुपया सरकारी बजट द्वारा मंजूर हो गया है तथा एक अरब छप्पन करोड़ रुपया बाहरी साधनों से जैसे अन्तर्राष्ट्रीय बैंक, उत्तरी अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि देशों से मिल चुका है। शेष छ अरब पचपन करोड़ रुपया या तो कर बढ़ा कर, या बाहरी देशों से उधार लेकर प्राप्त किया जा सकेगा।

योजना के खर्च का वितरण

इस योजना को सफल बनाने के लिए निश्चित की गई खर्च की रकम को इस प्रकार विभाजित किया गया।

	करोड़	प्रतिशत
कृषि तथा समाज विकास के लिए	३६१	१६-५
सिंचाई के लिए	१६८	८-१
सिंचाई तथा शक्ति के कई प्रकार के उपयोगों के लिए	२६६	१२-९
शक्ति	१२७	६-१
यातायात तथा तार टेलीफोन	४६७	२४-०
उद्योग-विकास	१७३	८-४
समाज सेवा	३४०	१६-४
पुनर्निवास	८५	४-१
अन्य	५२	२-५
	२०६९	१००

योजना का लक्ष्य

इस योजना का लक्ष्य देश में खाद्य उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन को बढ़ाने का रक्खा गया। इसके लिये कृषि, सिंचाई और सिंचाई की शक्ति के लिए सात सो पचानवे करोड़ रुपये का खर्च रखा गया। कृषि उत्पादन का लक्ष्य इस प्रकार स्थिर किया गया।

	१९५०-५१	१९५५-५६	बृद्धि प्रतिशत
खाने का अनाज	५२७ लाख टन	६१६ लाख टन	१४ प्रतिशत
रूई	२९-७ लाख गांठे	४२-२ लाख गांठे	४२ „
जूट	३३ लाख गांठे	५३-९ लाख गांठे	६३ प्रतिशत

	१६५०-५१	१६५५-५६	वृद्धि प्रतिशत
गन्ना	५६ लाख टन	६३ लाख टन	१२ ,,
तिलहन	५१ लाख टन	५५ लाख टन	८ ,,

औद्योगिक उत्पादन का लक्ष्य

इस योजना के अन्तर्गत उद्योगों को बढ़ाने में आर्थिक मदद ३२७ करोड़ रुपयों की रखी गई ऐसा अंदाज है इसमें से २३३ करोड़ रुपये तो प्राइवेट विभाग के लिए और ९४ करोड़ रुपये प्रजा के विभाग में लगाने को स्वीकृत किए गये। इसके अलावा पहले की मशीनें हटाकर इनकी जगह नई मशीनें लगाने में १,५००,०००,००० रुपये खर्च करने की योजना बनाई गई।

उत्पादन का लक्ष्य:—उपरोक्त खर्चों पर आधारित होकर उत्पादन का जो लक्ष्य बनाया गया था वह इस प्रकार है।

	उत्पादन सन् १६५०-५१ में	उत्पादन का लक्ष्य सन् १६५५-५६
खान का लोहा	१४·७ लाख टन	१९.५ लाख टन
इस्पात	९·८ ,,	१२.८ ,,
सीमेंट	२६-९ ,,	४५ ,,
एल्युमिनियम	३-७ ,,	१२ ,,
अमोनियम सल्फेट	४६,५०० टन	४५०००० टन
सुपर फासफेट	५८१०० टन	१८४००० टन
लोको मोटिव इञ्जिन इत्यादि	—	१७०
मशीन के औजार	११००	४६००
पेट्रोल	—	४०३० लाख गैलन
बिटुमन	—	३७५०० टन
सूत	११७६० लाख पाउन्ड	१६४०० लाख पाउन्ड
मिल का कपड़ा	३७१०० लाख गज	४७००० लाख गज
हाथ का कपड़ा	८१०० ,,	१७००० ,,
जूट का उत्पादन	८६२००० टन	१,२००,००० टन
पम्प (कृषि के लिये मशीनें)	३४३००	८५०००
डिजल एञ्जिन	५५००	५००००
सायकल	१०१,०००	५३०,०००
एल्कोहल	४७ लाख गैलन	१८० लाख गैलन

ग्राम्य उद्योग

इस बात की ओर ध्यान आकर्षित किया गया कि जहाँ पर बड़े पैमाने पर चलने वाले उद्योगो के साथ साथ छोटे पैमाने पर चलने वाले उद्योग भी हो वहां एक मध्यय मार्ग की उत्पादन नीति का बनाया जाना आवश्यक है। इसका मतलब यह हुआ कि सरकार के द्वारा एक नियंत्रण का कदम खास तौर से संगठित उद्योगों की ओर बढ़ाना चाहिए। इस विषय में कमीशन ने निम्नलिखित सिफारिशें की हैं।

(अ) हाथ से बुने हुए कपड़े के उद्योग का सीमित क्षेत्र बढ़ाना। (ब) खाने योग्य तैलों का उत्पादन ग्राम्य उद्योगों तक ही सीमित रखना चाहिए तथा जो खाने योग्य तेल नहीं है उनका उत्पादन मिलों द्वारा करवाना चाहिए (स) बड़े पैमाने पर चलने वाले उद्योगों की उत्पादन शक्ति नहीं बढ़ाना चाहिए सिर्फ कुछ खास अनिवार्य हालतों को छोड़कर (द) हुलर टाइप चांवल की मिलों को धीरे धीरे हटाना (इ) मिल के कपड़े तथा मिल के तेल पर कुछ कर लगा देना चाहिए जिससे कि ग्राम्य उद्योग कुछ उन्नति कर सकें। ग्राम्य उद्योग तथा छोटे पैमाने के उद्योगों की उन्नति के लिये १,५०,०००,००० रुपयों का खर्च करना निश्चित किया गया।

इसी प्रकार रेलवे उद्योग, जहाज उद्योग, बन्दरगाह, प्रधान सड़कों का विकास, हवाई यातायात, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि सभी आवश्यक वस्तुओं के विकास के लिए इस योजना में बड़ी बड़ी रकमें रक्खी गई।

इस प्रकार हमारे राष्ट्रीय विकास की प्रथम सीढी के रूप में इस प्रथम पंचवर्षीय योजना का निर्माण हुआ।

——:※:——

प्रथम पञ्चवर्षीय योजना में राष्ट्रीय उद्योगों का विकास

भारतीय रेलवे उद्योग का नव-निर्माण

समस्त भारत के रेलवे क्षेत्र में बड़े २ स्टेशनों का नवनिर्माण, विशाल मुसाफिर खानों का निर्माण; तृतीय श्रेणी के नवीन बनने वाले डिब्बों की कला पूर्ण सजावट, पंखें, छोटे २ स्टेशनों पर बनने वाले विशाल प्लेट फार्म, नई २ बनने वाली रेलवे लाईनें, तृतीय श्रेणी के मुसाफिरों के लिए प्रति दिन बढ़ाई जाने वाली सुविधाएं हमारे रेल-विभाग की तूफानी प्रगति की घोषणा कर रही हैं।

फिर भी भारतीय रेलवेज के खिलाफ आलोचकों के द्वारा यह दोष मढ़ा जाता है कि जब कि दूसरे देशों में Rolling stock का बहुत उपयोग किया जा सकता है और जिससे सवारी गाड़ियों तथा माल गाड़ियों का बहुत समय बचाया जाता है तब हमारे यहां कुछ विकास नहीं हुआ है। यह हमको स्वीकार करना ही होगा कि इस देश में साधन बहुत ही सीमित है और देश में हमको जो भी साधन उपलब्ध हो सकते हैं उनसे उन्नति का प्रत्येक प्रयास किया जा रहा हैं।

अपनी आवश्यकता के अनुसार स्वदेश में बने हुए हिस्सों का अधिक से अधिक उपयोग करने का भारतीय रेलवे सबसे अधिक प्रयास कर रही हैं। आधुनिकतम तरीकों को अपनाने में हमें बेरोजगारी के बीच में एक सन्तुलन रखना होगा क्योंकि बहुत से यान्त्रिक (Michanical) तरीकों से बेरोजगारी अधिक फैलती है। तीसरा यह कि देश की सीमित तथा विकसित होती जा रही अर्थ व्यवस्था में नियम से हमको रेलवे पद्धति के विकास तथा सुधार में धन को विभाजित करना होगा।

रेलवे के सुगमता से चलने वाले रास्ते

भूमि के विषय का ज्ञान जो कि यांत्रिक विज्ञान में नया विकास है उससे रेलवेज में बहुत सुधार हो गये हैं जिससे कि अच्छी तथा सुगम रेलवे लाईनें बनाई जा सकतीं हैं। इस बात का भी प्रयास किया जा रहा है कि नई रेलवे लाईनों के लिये पुल इत्यादि बनाने के लिए भूमि की यन्त्र कला की तरकीब को काम में लिया जावेगा।

कई स्थानों पर भारी तथा तेज गति के चलने वाली रेलों के लिए भारी रेलवे लाईन डालने का कार्यक्रम भी चल रहा है। जहां पर कि वजन दार पटरियां और अधिक घनत्व वाले स्लीपर लगाये जावेगें। रेलवे की पटरियों में सबसे कमजोर स्थान याने जोड़ों को वेल्डिंग करके (Welding) उसकी कमजोरी क भी हटा दिया है।

ऐसी रेल की पटरियां बनाई जा रहीं हैं जो कि अधिक मजबूत होगीं तथा जिनमें धातु का समन्वय एक सरीखा होगा। दिन प्रति दिन बढ़ती हुई स्लीपरों की मांग की समस्या को लोहे, इस्पात तथा लकड़ी का अधिक से अधिक उपयोग करके क्रमशः हल किया जा रहा है। भारतीय रेलवे ने लोहे के सन्तोषप्रद

नमूने के स्लीपर बनाकर एक गौरव पूर्ण कार्य किया है जिनको कि आजकल प्रचुरता से उपयोग में लिया जा रहा है। लकड़ी के स्लीपर बनाने के कारखानों की संख्या क्रमशः बढ़ती जा रही है, और हाल ही में क्लटरबकगंज में एक नया कारखाना डाला गया है जिसकी कि दो पालियों की उत्पादन क्षमता १६ लाख स्लीपर प्रति वर्ष की है।

रेलवे के कितने ही बड़े बड़े आंगन (Yard) नये ढंग से बनाये जा चुके हैं और कितने ही बनाये जा रहे हैं जिनसे की जल्दी जल्दी रेलवे के डिब्बों को बदलने की सुविधा हो सके। वृत्ताकार स्वीचेस (Switches) और लम्बे क्रासिंगज जो—कि यात्रा को सुगम बनाने में सहायक होगें।—के तरीके हाल ही में अख्तियार किये गये हैं।

पुल और ढाँचे:— इस्पात के पुल तथा ढाचों में मुख्य विकास यह हुआ है कि उनको कीलों से जोड़ने की बजाय अब उनको गलाकर जोड़ना (Welding) प्रारम्भ हो गया है। इसके परिणाम स्वरूप इस्पात के उपयोग में काफी बचत होने लग गई है। कितने ही प्रकार के हल्के ढाँचों में गलाकर जोड़ने की क्रिया ६० फीट लम्बे गरडर्स (Girders) तक सफलता पूर्वक काम में ली गई है। एक नये प्रकार के कठोर फ्रेम का नमूना निकाला गया है जो कि रेलवे के पुलों के काम में लिया जाता है। सीमेंट कांक्रीट का उपयोग बढ़ गया है और नमूनों तथा बनाने के तरीकों में काफी सुधार हो गया है। कांक्रीट स्लीपर का भी प्रयोग किया जा रहा है। छतों के लिए मजबूत ढाँचे भी बनाये जा रहे हैं और उनसे मकान भी बनाये जा रहे हैं।

भारतीय रेलवे हमेशा ही भारत की बाढ़ आने वाली नदियों के नियन्त्रण के लिए प्रसिद्ध हैं और गाइड बैंक (Gwide bank) की पद्धति सबसे पहले भारतमें ही खोजी गई थी और उसमें बहुत विकास कर दिये गये हैं।

दर्रों का निर्माण करने में भारत में सबसे पहले ऐसी व्यवस्था की गई है कि कांक्रीट इस चतुराई से लगाई जाती है कि जिससे हवा का पूर्ण प्रबन्ध रह सके।

रेलों का नियंत्रण, संकेत (Signalling) *और तार सूचना विभाग:*—आधुनिक ढंग से संकेत करना (Signalling) जैसे स्वतः चालित संकेत, अन्य प्रकार के संकेत तथा शक्ति द्वारा चालित संकेत कितने ही व्यस्त स्टेशनों पर लगा दिये गये हैं। केन्द्रित रुप से यातायात नियंत्रक संकेत लगाने का प्रश्न जो कि अमेरिका में प्रचलित है भारत में भी विचाराधीन है। कितने ही स्टेशनों पर संकेत के साधन एक दम आधुनिक ढंग के कर दिये गये हैं जो कि बहुत अधिक सुरक्षित हैं और उसके साथ ही साथ ये रेलों की अनावश्यक देरी को भी कम करते हैं। कितने ही स्टेशनों पर दो तार के संकेत भी लगाये गये हैं। बेतार के तार का रेलवे के प्रधान दफ्तर और उनके जिलों तथा क्षेत्रीय प्रधान दफ्तरों में आपस में बहुत उपयोग होने लग गया है।

विद्युती करण:—(Electrification) जल-विद्युत के बांधों के क्षेत्रों में जहां पर कि याता-

यात का घनत्व बहुत अधिक है या उन क्षेत्रों में जहां पर कि कोयला पहुँचाना बहुत कठिन तथा मंहगा पड़ता है वहाँ पर रेलवे अधिक से अधिक बिजली से चलने वाली रेलों का प्रबन्ध कर रही है। हावड़ा के उपनगरों से लेकर बर्द्धमान तक बिजली से रेलों के चलने का कार्य चालू है तथा हाल ही में मद्रास क्षेत्र में भी ऐसा ही प्रबन्ध करने की स्वीकृति दे दी गई है। सियाल्दा (कलकत्ता) के उपनगरों के क्षेत्र की रेलवे को बिजली से चलाने की योजना तथा हावड़ा के उपनगरों से लेकर मुगलसराय तक बिजली की रेलें कर देने की योजना-क्योंकि यहां पर यातायात का घनत्व बहुत है-अभी विचाराधीन है।

अन्वेषण तथा विकास:—भारतीय रेलवेज के आधुनिक दृष्टिकोण का मुख्य प्रमाण यह है कि दो वर्ष पूर्व लखनऊ में "रेलवे टेस्टिंग एण्ड रिसर्च सेन्टर" का प्रधान दफ्तर स्थापित किया गया जिसके कि चितरंजन तथा लोनावाला में दो उपकेन्द्र हैं।

आज यह गवेषण करने का संगठन (Resaearch Orgenisation), बहुत सी समितियों की सहायता से निरन्तर रूप से भारतीय रेलवेज़ में आधुनिक ढंग से रेलवे के कार्य को चलाने का अथक प्रयास कर रहा हैं।

प्रामाणिक (Standard) *लोकोमोटिव्ज़*:—देश की बढ़ती हुई यातायात की समस्या को हल करने के लिए भारतीय रेलवेज ने बड़ी लाईन, छोटी लाईन (मीटरगेज) तथा सकड़ी लाईन (नेरोगेज) के लिए लड़ाई के पश्चात् तथा उसी समय में एक नई प्रकार के भाप प्रमाणिक एञ्जिनों को निकाला और मुख्य जाति के एञ्जिन जो कि इस समय काम में लिए जा रहे हैं वे निम्नलिखित हैं।

(१) डबल्यू. पी. (W. P)—ब्राड गेज स्टेन्डर्ड पेसेन्जर लोकोमोटिव
(२) डबल्यू. जी (W. G)—ब्राड गेज़ स्टेन्डर्ड गुड्स लोकोमोटिव
(३) डबल्यू. एम. (W. M)—ब्राड गेज़ स्टेन्डर्ड सबर्न सर्विस एण्ड शंटिंग लोकोमोटिव
(४) वाय. पी. (Y. P)—मीटर गेज़ स्टेन्डर्ड पेसेन्जर लोकोमोटिव
(५) वाय. जी. (Y. G)—मीटर गेज़ स्टेन्डर्ड गुड्स लोकोमोटिव
(६) व्हाय. एल (Y. L)—मीटर गेज़ स्टेन्डर्ड लाइट पेसेन्जर लोकोमोटिव

डबल्यू. पी. और व्हाय. पी. जाति के लोको मोटिव देश में मुख्य २ रेलों को खींचते हुए दिखेगें।

रेलवेज़ के ऊपर बढ़ती हुई मात्रा में हल्के दर्जे के कोयले को खपाने के दबाव से जिससे कि अच्छे दर्जे का कोयला धातुओं को तैयार करने के लिये बचाया जा सके ऐसे नमूने के लोकोमोटिव बाइलर बनाये गये हैं जो कि इस कोयले से भी कुशलता के साथ कार्य कर सके। बाइलर तथा सिलिन्डर का पारस्परिक सम्बन्ध इस समय गवेषणा का विषय बना हुआ है और लोको मोटिव के जितने तत्व-ताप की कार्य कुशलता को बढ़ाते हैं इकट्ठे कर लिये गये हैं।

स्वदेशी सामान के उपयुक्त मशीनों को बनाने की आवश्यकता निरन्तर ध्यान में रहती है जिसका कि एक बहुत ही सुन्दर उदाहरण अग्नि की सन्दूक (Firebox) का है जो कि तांबे की मोटी चद्दरों की बजाय इस्पात की मोटी चद्दरों का बनाया जाता है तथा जिसको कि पहले विदेशों से आयात किया जाता था।

संसार के अन्य स्थानों की विकास की प्रगति के साथ-साथ शंटिंग के उपयोग के लिए तथा डीसा-कांडला रेलवे की मुख्य लाईन पर जहाँ पर कि पानी की बहुत कठिनाई है डिजल तेल से चलने वाले एंजिन लगा दिये गये हैं और रेलवे की भविष्य की नीति डिजल और भाफ़ के एंजिनों के विषय में आने वाली तुलनात्मक दृष्टि से आर्थिक बचत और डिजल तथा कोयले की उपलब्धता की रिपोर्ट पर निर्भर रहेगी।

वर्त्तमान विद्युत् विभाग के अतिरिक्त पूर्वीय रेलवे के हावड़ा-मुगलसराय विभाग को पूर्णतया विद्युतीकरण करने की योजना बनाई गई है जिसके लिये विद्युत् शक्ति दामोदर व्हेली कार्पोरेशन और थर्मल स्टेशनों से ली जावेगी।

आधुनिक ढंग की लोको (Loco) का कार्यः—रेलों को चलाने में गवेषणा करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है, और रेलों की रुकावट (Train resistances), एञ्जिन तथा बाइलर का कार्य, कोयले का जलना, एंजिन की क्वालिटीज इत्यादि के विषय में आँकड़े इकट्ठे करने का कार्य्य कितने ही वर्षों से चल रहा है। इनके लिये मुख्य साधन ब्राडगेज डायनोमीटर कार, ऑसिलोग्राफ कार (Oscillograph Car) और जलने वाले पदार्थों के परिक्षण करने की कॉर (Fuel Test Car) की आवश्यकता होती है।

एंजिनों के बनाने के कारखाने चितरंजन और टेल्को (Telco) ये दोनों संसार के किसी भ स्थान के कारखानों से नवीन हैं तथा ये आधुनिकतम मशीनों और सामान को काम में लेने के साधनों से पूर्णतथा सम्पन्न हैं। इन कारखानों की आधुनिकता को प्रदर्शित करने वाली, आटोमेटिक आर्क वेल्डिंग मशीन, फ्लैश बट वेल्डिंग मशीन, स्पेशल डाइसिंकरस, एक्सरे के साधन, जुड़ाई इत्यादि का परिक्षण करने के लिये और अल्ट्रासोनिक एपरेटस जिनसे कि अन्य वस्तुओं की खराबी तथा दरारें वगैरह का परीक्षण किया जा सकता है, इत्यादि मशीनें लगी हुई हैं। इन कारखानों में उत्पादन करने की योजना और लागत कीमतों के हिसाब की पद्धति वैसी ही है जैसी कि विदेशों में इस प्रकार के कारखानों में होती है।

कदाचिद् इस कारखाने की सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि यहां पर चतुर तथा योग्य व्यक्तियों को शिक्षा दी जाती है। इस उद्देश्य को पूर्ण रूप से हॉसिल करने के लिए एक दम आधुनिक ढंग पर बना हुआ कला कौशल का शिक्षण केन्द्र कार्य्य कर रहा है जो कि शिक्षित तथा कला और यांत्रिक शिक्षा में निपुण व्यक्तियों से सम्पन्न है।

रेलगाड़ी के डिब्बेः—प्रगतिशील कलाओं और रेलों की यात्रा के परिवर्तनशील विचारों ने सम्मिलित होकर अधिक सुविधा पूर्ण एवं सुरक्षित डिब्बों का उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया है। भारतीय रेलवेज ने बड़ी लाईन के पूर्ण धातु के हल्के तीसरे दर्जे के डिब्बों में दी गई सुविधा को प्रमाणित कर दिया है जिन्होंने पहले दी गई सुविधाओं को पीछे रख दिया है। आधुनिक ढंग के डिब्बों में उच्च-कोटि की व्यवस्था, पंखे, अधिक संख्या में संडास, अच्छे प्रकाश के साधन हल्की धातु के खिड़कियां बन्द करने के दरवाजे तथा आकर्षणकारी रंगों से रंगी हुई दीवालें इत्यादि सुविधायें हैं।

इन डिब्बों की अन्य स्मरणीय चीजें यह है कि एक तो इनकी लकड़ी के डिब्बों के मुकाबले में दुर्घटना के समय टूटने की कम सम्भावना रहती है तथा सारा का सारा ही डिब्बा जोड़ा (Weld) हुआ रहता है तथा इसमें ऐसी व्यवस्था होती है जिससे गर्मी के दिनों में यात्रियों को अधिक की असुविधा न हो। ये डिब्बे हाइड्रोलिक शॉक एबजार्बर (Hydrawlic shock abserber) के द्वारा फिर किये जाते हैं।

पेराम्बूर का डिब्बों का कारखानाः—मद्रास के पेराम्बूर नामक ग्राम में एक कारखाने का निर्माण किया गया है जो कि बड़ी लाईन के हल्की धातु के प्रतिवर्ष ३५० डिब्बों का उत्पादन करने लगा। इस कारखाने को एकदम आधुनिकतम साधनों एवं मशीनों से सम्पन्न किया गया है। इस कारखाने की स्थापना आगे चलकर भारत को आधुनिक ढंग के पूर्ण धातु के हलके डिब्बों के उत्पादन में स्वयं पूर्ण बना देगा।

इन उपरोक्त जाति के डिब्बों के अतिरिक्त प्रामाणिक ढांचों पर तीसरे दर्जे के पूर्ण इस्पात के डिब्बों को स्वदेशी उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया है। ये डिब्बे यद्यपि अन्य धातु के डिब्बों से भारी हैं परन्तु ये उपरोक्त डिब्बों के सरीखे ही सुविधा पूर्ण तथा सुरक्षित हैं। सन् १६४९ से अब तक बड़ी लाईन के ५०० से अधिक डिब्बे बनाए जा चुके हैं और दूसरी फर्म ३० डिब्बे प्रति माह की रफ्तार से मीटर गेज (छोटी लाईन) के डिब्बे बना रही है जो कि रेलवे के कारखाने में सजाये जाते हैं।

समस्त तीसरे दर्जे के यात्रियों की यात्रा करने की हालत में सुधार करने के हेतु भारतीय रेलवेज ने बड़ी लाईन तथा छोटी लाईन में सोने के डिब्बों (Sleeping Car) की व्यवस्था चालू कर दी है।

धनाढ्य तथा उच्च श्रेणी की जनता के लिए जो कि रेलवे के अधिक किरायों को बर्दाश्त कर सकते हैं उनके लिए भारतीय रेलवेज ने पुराने प्रथम श्रेणी के डिब्बों को हटाकर बड़ी तथा छोटी लाईनों में एयर-कण्डिशन (Air conditions) डिब्बों की व्यवस्था कर दी है। एयर-कंडिशन का पूरे डिब्बे में बरामदा होता है तथा खाने के डिब्बे से सटा हुआ क्रम में रहता है।

सर्व प्रथम सन् १९५१ में यह आधुनिक ढंग के बने हुए हल्के धातु के डिब्बे बम्बई क्षेत्र की उपनगरीय विद्युत् द्वारा चालित रेलवे में लगाए गए और यहां पर और डिब्बों को बढ़ाने की तथा मद्रास और तम्बारम् के बीच की छोटी लाईन में भी ऐसे डिब्बों को सप्लाय करने की योजना बनाई जा रही है। उपनगरीय रेलवे की बढ़ती हुई मांग को दृष्टि में रखते हुए, कलकत्ता के आसपास के क्षेत्र को विद्युतीकरण करने का निश्चय कर लिया है और यह योजनायें शीघ्र ही कार्यान्वित की जा रही हैं। जब विद्युतीकरण का कार्य समाप्त हो जावेगा उस समय उपनगरों में रहने वाली जनता एकदम आधुनिक ढंग के यातायात के साधनों का उपभोग करेगी।

भारतीय रेलवेज ने डिजल रेलकार को बड़ी तथा छोटी लाइन पर चलाने की योजना बनाई है जिससे कि भारतीय हालतों में इस तरह के यातायात के साधन का अनुभव प्राप्त किया जा सके। इस प्रकार की छोटी लाईन की रेलकार का प्रथम जहाज भारत में पहुँच गया है और यह दक्षिणी भारत में बहुत ही शीघ्र चलने लग जावेगीं ऐसी आशा की जाती है। बड़ी लाईन की रेलकारें इस वर्ष में चल जावेगीं ऐसी भी आशा की जाती है।

गत दसवर्षों में बड़ी, छोटी तथा सकड़ी लाइन के धातु के डब्बों का भारत में उत्पादन करने के लिए स्तर निर्धारित कर दिया गया है। यह दावा किया जा सकता है कि जिस स्तरके डिब्बे यहां पर बनाये गये हैं वे अन्य देशों के मुकाबले में बहुत अच्छे हैं। भारतीय माल गाड़ी के डिब्बों में इस बात की विशेषता है कि वे बहुत मजबूत हैं तथा कैसे भी उपयोग से खराब नहीं होते हैं।

माल गाड़ी के डिब्बों के समुदाय में एक विशेष प्रकार के डिब्बें हैं जिनको क्षमता १३० टन की है जो कि सब जुड़े हुए (Welded) हैं जो कि खास तौर से बिजली की बड़ी मशीनों को बन्दरगाहों से लाने के काम में आते हैं।

बिना वजन लदे हुए डिब्बे का वजन बहुत कुछ यूरोपिय डिब्बों से मेल खाता है। और यह प्रयास किया जारहा है जिससे कि किसी प्रकार इन डिब्बों का वजन कम से कम कर दिया जावे जितना कि ढोने के लिए अत्यन्त आवश्यक हो।

चित्तरंजन लोकोमेटिव वर्क्स

२६ जनवरी सन् १६५० के जिस शुभ दिन में हमारा देश सार्वभौम प्रजातन्त्र घोषित किया गया उसी दिन चितरंजन के कारखाने ने अपना उत्पादन-कार्य आरम्भ किया। इस कारखानेके कार्य प्रारंभ करने से भारत में औद्योगिक तथा यांत्रिक विकास के नये युग का अभ्युदय हुआ। पाँच वर्ष से भी अधिक व्यतीत हो चुके हैं और अब हम और भी बड़ी-बड़ी चीजों को कामयाब करने के संगम पर खड़े हुए हैं— जैसे द्वितीय पंच वर्षीय योजना का उद्‌घाटन इत्यादि। इसलिये यह समय, अपने पिछले कार्यों को आँकने के लिये, तथा भविष्य के लिये ऐसी योजना बनाने के लिये, जिससे हम हमारी हमेशा बढ़ती हुई आवश्यकताओं के साथ गति रख सकें, सबसे अधिक उपयुक्त है।

इस योजना को कार्यान्वित करने की सचाई हमारे देश के विचित्र रेलवे प्रबन्ध से सिद्ध होती है। हमारे देश की राष्ट्रीयकरण की हुई रेलवे पटरियाँ लगभग ३८००० मील लम्बी हैं जिसमें यातायात तथा माल को लगातार समस्त देश में गतिवान् रखने के लिए लगभग ८५०० इंजिनों की आवश्यकता लगेगी। एक भाप के इंजिन की जिन्दगी करीब करीब ४० वर्ष की होती है और इन सब एंजिनों को काम करने की स्थिति में रखने के लिए हमको लगभग ९ करोड़ रुपये की लागत के २०० एंजिनों की प्रति वर्ष आवश्यकता लगेगी।

उन दिनों जब कि भारतीय रेलों का प्रबन्ध कम्पनियों द्वारा किया जाता था, उस समय वे उनकी छोटी-छोटी आवश्यक चीजों को इग्लैंड तथा यूरोप से आयात करके पूरा करते थे, मगर अब रेलों के राष्ट्रीय करण हो जाने के पश्चात् सारी स्थिति में विशाल परिवर्तन हो गया है।

प्रारम्भिक आवश्यकता:—आर्थिक मसलों के अतिरिक्त लोको (Loco) वर्कशाप बनाने की प्रारम्भिक आवश्यकता को अधिकारियों ने बहुत पहले से ही महसूस कर लिया था। दोनों विश्व युद्धों के समय में भी एंजिनों का आयात बन्द हो गया था जब कि देश की रेलों पर नागरिक एवं सैन्य समुदाय के लिये बराबर यातायात का प्रबन्ध रखने के कारण कार्य भार बहुत ज्यादा हो गया था।

सन् १९२१ में 'दी पेनीन्शुलर लोकोमोटिव कम्पनी' (The Peninsular Locomotive Co.) प्रारम्भ की गई थी परन्तु सरकार की ओर से पर्याप्त उत्साह नहीं मिलने से इसको सन् १६२५ में करना पड़ा। भारतीय विधान सभा के सदस्यों ने लोकोमोटिव उद्योग की स्थापना के लिए लिये अपनी माँगका बराबर आग्रह किया और सन् १६४० में हम्फ्रेरी-श्री निवासन रिपोर्ट ने कन्चरपाड़ा (Kanchra-para) के कलपूर्जों एवं मशीनों के सुधारने के कारखाने को एक ऐसे कारखाने में परिवर्तित करने की सिफारिश की जिसकी कि वार्षिक कार्य क्षमता ७० बड़ी लाईन के एंजिन और उनके साथ ७० अधिक (Extra) बाइलर तैयार करने की हो।

द्वितीय महायुद्ध के प्रारम्भ हो जाने से इस सुझाव को सन् १९४५ तक त्यागना पड़ा। लड़ाई के समाप्त होते ही भाफ के एंजिनों (लोकोमोटिव) के उत्पादन के लिए "टाटा लोकोमोटिव एण्ड इंजिनियरिंग कं० लि०" के साथ सरकार का १६ वर्ष के लिए ठेका हो गया। इस दरमियान में कञ्चनपारा के विषय में सब कुछ निश्चित कर लिया गया परन्तु देश का विभाजन होने से एक बार फिर से इस योजना को त्यागना पड़ा। बहुत जांच करने के पश्चात् मिहिजम (Mihijam) नामक स्थान को चुना गया जिसका कि बाद में चितरंजन नाम रक्खा गया तथा जो कि पश्चिमि बंगाल बिहार की सीमा पर स्थित है।

इसकी वर्तमान स्थिति में चित्तरंजन यह कारखाना ११.०२ लाख वर्गफुट जगह में फैला हुआ है। जिसमें से ८.८० लाख वर्ग फुट क्षेत्र ढका हुआ है। यह कारखाना तीन मुख्य विभागों में बंटा हुआ है याने—

(१) पेटर्न शॉप (Pattern shop) या ढलाई का कारखाना—जहां पर पीतल और लोहे की ढलाई काम होता है।

(२) लुहारी तथा छुड़ाई का कारखाना (Forge Smithy) बड़ी मशीनों तथा पहियों का कारखाना, छोटी मशीनों का कारखाना तथा कल पूर्जों का कमरा।

(३) बाइलर—पानी की गाड़ी और एञ्जिन को मिलाने का स्थान।

आधुनिक ढंग की मशीनें

यह कारखाना एक दम आधुनिक ढंग की मशीनों से सम्पन्न है और यहां पर एकदम आधुनिक ढंग की मेकेनिकल एवं यांत्रिक चतुराई से काम किया जाता है। इस कारखाने के लिए चतुर कर्मचारियों को समस्त भारत के रेलवे के कारखानों के योग्य एवं अनुभवी तथा बाहरी बहुत योग्य व्यक्तियों में से चुना जाता है। चुने हुए व्यक्तियों के समूह को विदेशी सहायता से एवं यहां से विदेशों की यात्रा के लिये भेजने से चित्तरंन को बहुत ही योग्य कर्मचारी प्राप्त हुए हैं। इन मुद्दों के अतिरिक्त उत्पादन के नियन्त्रण के विशेष तरीकों और कठोर निरीक्षण से चित्तरंजन का माल बहुत ही ऊँची श्रेणी का बनता है।

कच्चे माल की आवश्यकता

बड़ी लाइन के रेल का एञ्जिन जिस तरह का कि वर्तमान में चित्तरंजन के अन्दर बनाया जाता है उसमें साधारणतया निम्नलिखित कच्चे माल की आवश्यकता होती है।

(१) इस्पात का विभाग तश्तरियों सहित	....	७४ टन
(२) इस्पात की ढलाई	....	२३ ,,
(३) लोहा	....	१५ ,,
(४) नॉन फेरस धातु का साँचा	....	२.५ ,,

(५) बाइलर ट्यूब्स···· ··· ··· ··· २-५ टन
(६) मिश्रण जैसे टिम्बर, रबर इत्यादि ···· ···· १-५ ,,

कुछ वस्तुएं जैसे बिजली का सम्मान, रोलर बेरिंग्ज, मापक यन्त्र, एसवेस्टोज इत्यादि का विदेशों से आयात करना होता है क्योंकि भारत में अभी तक ऐसे पदार्थ उत्पादन करने वाले कारखानों की स्थापना नहीं की गई है। रेल के एंजिन प्रायः पूर्ण रूप से इस्पात के बने हुए रहते है और इनके लिये जितने इस्पात की आवश्यकता होती है वह लगभग स्वदेशी कारखानों से ही पूरी की जाती है। सिवाय कुछ विभागों एवं तश्तरियों के जो कि उनकी उत्पादन क्षमता के बाहर हैं।

चित्तरंजन एवं टेल्को (Telco) लोकोमोटिव कारखानों में से, भारत अब २०० रेल के एंजिनों से अधिक प्रति वर्ष बनाता है याने केवल यही उद्योग भारत के इस्पात के उत्पादन का २% हिस्सा काम में ले लेता है। इस्पात को तैयार करने के नये कारखाने खुलने के परिणाम स्वरूप रेलवेज को अधिक इस्पात मिलने से यह आशा की जाती है कि यह इस्पात की बढ़ौतरी इस कारखाने को एंजिनों में सब स्वदेशी वस्तुएं लगाने के योग्य बनावेगी।

स्तर को निर्धारित करने की आवश्यकता

दी सेण्ट्रल स्टेण्डर्ड्स ऑफिस, लोको ब्राञ्च जो कि रेल के एंजिनों के नये नये नमूने निकालने के लिए जिम्मेदार हैं और जो कि अभिनवीकरण करने की योजना पर बहुत ध्यान से सोच रहा है वह एंजिनों के उत्पादन तथा नये नमूनों के बीच में अधिक से अधिक सहायता दे सकें इस वजह से चितरंजन में ही स्थित किया गया हैं।

डब्ल्यू० जी० श्रेणी के एंजिनों के फायदे

डब्ल्यू० जी० श्रेणीके एञ्जिन जो कि कई वर्षों के प्रयोगों के पश्चात् बनाये गये है वह बड़ी लाईन पर भारी वजन खींचने के लिए सबसे अधिक उपयुक्त सिद्ध हुआ है। कार्य करने तथा वजन के अनुपात में ९८ डब्ल्यू० जी० एंजिन १२० दूसरे साधारण एंजिनों के मुकाबले में हैं। सम्पूर्ण डब्ल्यू० जी० एंजिन का वजन लगभग १७५ टन होता है तथा उसकी बफर-टु-बफर लम्बाई ७८' ४" होती है। यह दो सिलिण्डर का एंजिन होता है जिसमें २-८-२ पहियों का प्रबन्ध होता है। इसका बाइलर डब्ल्यू० पी० जाति के एंजिन से बदला जा सकता है। यह एंजिन ८५% दबाव पर ३९००० पौंड खींचने की शक्ति पैदा कर सकता है।

चितरंजन में सबसे पहले सन् १९५० में रेल का एंजिन तैयार किया गया था तब से अभी तक ३०० से अधिक एंजिन तैयार किये जा चुके हैं। यह आशा की जाती है कि इस प्रकार की कार्य करने की गतिर रेलवे की प्रारम्भिक माँगों को शीघ्र ही तृप्त कर देगी। देशमें उद्योगीकरण के बढ़नेके साथ साथ उसके परिणाम स्वरूप यातायात में काफी वृद्धिजावेगी इस लिए यह महसूस किया गया है कि इन प्रारम्भिक अनुमानित

आंकड़ों को दोहराना आवश्यकता है। इसके परिणाम स्वरूप जबकि चितरंजन अपने प्रारम्भिक उत्पादन के लक्ष्यों को पूर्ण करने में व्यस्त हैं तब उसी के साथ साथ कारखाने के विकास की योजना को भी हाथ में ले लिया गया है।

सामान्यतया, यह अनुमान लगाया जाता है कि अगले पाँच वर्षों में भारतीय रेलों में सवारी गाड़ी में यातायात लगभग तीन प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से बढ़ेगा तथा ५% से माल गाड़ियों में बढ़ेगा जिसके लिये बहुत से डिब्बों तथा अधिक पटरियों की आवश्यकता लगेगी।

इस मांग को पूरा करने के लिए बहुत ही व्यस्त क्षेत्रों को बिजली से सम्पन्न करने की योजना बनाई गई है। यह मानकर चलने से कि यह बिजली लगाने की योजनायें तथा विकास योजनायें लाभदायक सिद्ध होंगी अगले पांच वर्षों के लिये एंजिनों को बदलने तथा और रेलवे बढ़ाने के लिये लगभग २००० भाप के लोकोमोटिव की आवश्यकता लगेगी।

चितरंजन लोकोमोटिव कम्पनी का विकास योजना का कार्यक्रम अगले दो वर्षों में पूर्ण होने की आशा है। इन विकास योजनाओं के पूर्ण होने पर यह आशा की जाती है कि इस कारखाने की कार्य क्षमता बहुत अधिक बढ़ जावेगी। अभी तक बनने वाले इञ्जिनोंके ८०% से अधिक पूर्जों के हिस्से भारतमें बने हुए हैं। बहुत शीघ्र ही यह आंकड़े बढ़कर १००% तक पहुँच जावेगें जब कि इस कारखाने में इस्पात की ढलाई का काम प्रारंभ हो जावेगा, जो कि बहुत जटिल एंव विशाल इस्पात के ढले हुए ढांचों को सप्लाय करेगा जोकि इस समय विदेशों से आयात किये जाते हैं। सन् १९५३ तक पूर्ण लोकोमोटिव का उत्पादन १०० एंजिन प्रति वर्ष तक पहुँच जावेगा।

टाटा लोकोमोटिव एण्ड इञ्जिनियरिंग कम्पनी लिमिटेड

भारत के बिहार राज्यान्तर्गत संसार मुख्यात औद्योगिक केन्द्र टाटानगर में यह विशाल कारखाना स्थिति है। इसकी पूंजी की धन-राशि का आंशिक भाग सरकारी पूंजी का है और समस्त पूंजी स्वयं उस प्रतिष्ठान द्वारा ही लगायी गयी है। सन् १९५० ई० के अन्त तक ४-५ करोड़ रुपये की पूंजी इस कारखाने में लग चुकी थी और इसके अतिरिक्त २-५ करोड़ रुपया लगा कर यह कारखाना पूर्णरीति से तैयार हुआ है। लगभग ४५०० श्रमिक यहां काम करते हैं। यहां पर सन् १९५२ ई० के अप्रेल मास तक १४८ लोकोमोटिव बोयलर्स निर्माण किये गये और जहां सन् १९५१ ई० में १० रेलवे इंजिनों का निर्माण हुआ था वहां सन् १९५२-५३ ई० यहां पर ३० इंजिन निर्मित हुए। लेकिन सन् १९५३-५४ ई० में केवल २२ ही बने। जहाँ एक बारी से काम करते हुये ५० इंजिन प्रतिवर्ष निर्माण करने का लक्ष्य स्थिर किया गया था वहां अब व्यवस्था बनायी गयी हैं कि यहां ४ इंजिन प्रतिमास निर्माण किये जांय। स्मरण रहे हमारे यहां रेलवे इंजिनों की माँग का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि सन् १९५१-५६ ई० के बीच २३ करोड़ ८० लाख की विशाल धन राशि लगा कर ६ सौ रेलवे इंजिन विदेश से आयात करने पड़ेगे-अतः हमारे देश में इस उद्योग की उन्नति करने के लिये पर्याप्त क्षेत्र है।

'वैगन' निर्माण

वैगन अर्थात् मालगाड़ी के डब्बों के निर्माण का उद्योग हमारे देश में ३०।३५ वर्ष पुराना है और स्वदेश में निर्मित मालगाड़ी के डब्बे अपनी श्रेष्ठता में संसार के किसी भी उत्पादन के माल से प्रतियोगिता करने में सफल हैं। वर्तमान समय में मेसर्स दी इण्डियन स्टैण्डर्ड वैगन्स लिमिटेड (बर्नपुर), मेसर्स जेसप एण्ड को० कलकत्ता, मेसर्स बर्न एण्ड को० हवड़ा तथा मेसर्स ब्रेथवेट एण्ड को कलकत्ता नामक ४ औद्योगिक प्रतिष्ठान व्यवस्थित रूप से इस प्रकार के निर्माण उद्योग में संलग्न हैं और इसके अतिरिक्त यदि आवश्यक हुआ तो किसी भी आकार प्रकार के मालगाड़ी के डब्बे रेलवे शिल्प शालाओं निर्मित किये जा सकते हैं। मेसर्स आर्थर बटलर्स वर्क्स—मुजफ्फर पुर, मेसर्स टेक्सटाइल मैशीनरी कार्पोरेशन, बेलघुरिया (प० बंगाल), पंजाब सरकार वर्कशाप, अमृतसर, कुमार धुबा इंजनियरिंग वर्क्स, कुलार धुआँ, तथा मेसर्स मेकंजी आफ बाम्बे ये सब प्रतिष्ठान भी इस ओर लगे हुए हैं।

ऊपर कही गयी प्रथम ४ फर्मों के कारखानों की उत्पादन शक्ति ६ हजार वैगन प्रतिवर्ष निर्माण करने की है जो २० से २५ प्रतिशत तक क्रमानुसार बढ़ायी जा सकती है। प्रस्तावित इस पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत मालगाड़ी के डब्बों के भारतीय उत्पादकों ने सराहनीय प्रगति की है। इस अवधि काल में ३० हजार वैगन निर्माण करने का उत्पादन लक्ष्य स्थिर किया गया था जिसके अनुसार इस ओर अच्छी प्रगति हुई और सन् १९५२–५३ ई० में ६४६३ तथा सन् १९५३-५४ ई० में ३८९२ वैगन निर्माण किये गये। माल की माँग अधिक होने से कितने ही उत्पादक अपने यहाँ की उत्पादन व्यवस्था में विस्तार का आयोजन कर रहे हैं और कुछ नवीन औद्योगिक प्रतिष्ठान इस क्षेत्र में उत्पादन कार्य करने के लिये प्रवेश करने की सोच रहे हैं। यदि ऐसा हुआ तो उत्पादन बढ़ कर १० हजार वैगन वार्षिक हो जायगा और बहुत सम्भव है कि वह सन् १९५५-५६ ई० के अन्त तक १२ हजार वैगन प्रति वर्ष हो जाय।

सवारी गाड़ी के डिब्बों का निर्माण

सवारी गाड़ी के डिब्बों के सम्बन्ध का प्राय सभी प्रकार का निर्माण कार्य रेलवे कम्पनियां अपनी शिल्प-शालाओं के अन्तर्गत स्वदेश में ही किया करती थीं। हां कुछ विशेष भाग जैसे पहिये, धुरे आदि विदेश से आयात किये जाते थे। परन्तु विगत विश्व युद्ध के आरम्भ से यह सामान भी किसी आकार प्रकार में भारत में ही बहुत से अंशों में निर्माण किया जाने लगा। मेसर्स हिन्दुस्तान एअर क्रैफ्ट लि०, इण्डियन स्टैण्डर्ड वैगन कम्पनी लि० तथा ब्रेथवेट एण्ड को लि० के समान औद्योगिक प्रतिष्ठान अब सवारी गाड़ी के डब्बों का निर्माण करने लगे हैं। इन फर्मों में से बैंगलोर की मेसर्स हिन्दुस्तान एअर क्रैफ्ट लि० ने अपने यहां के कारखाने के विस्तार की योजना बनाकर १०० से १८० डब्बे प्रतिवर्ष निर्माण करने का विचार किया है। यदि अनुकूलता उपलब्ध होना सम्भव हुआ तो अन्य फर्में सम्मिलित रूप से २५० डब्बे तक प्रति वर्ष निर्माण कर सकती हैं। इनके अतिरिक्त रेलवे शिल्प-शालायें ५०० डब्बे प्रतिवर्ष निर्माण करने की उत्पादन-सामर्थ्य रखती हैं। इसी प्रकार टाटा लोकोमोटिव

एण्ड इंजिनियरिंग वर्क्स ४००० डब्बों के आधार चौकठे बनाने की शक्ति रखते हैं। हमारी प्रथम पञ्च-वर्षीय योजना की अवधि काल में अनुमान किया गया है कि सवारी गाड़ी के ४३८० डब्बे स्वदेश में निर्माण करने होंगे और १२९४ डब्बे विदेश से आयात किये जायगे। इसी योजना के अन्तर्गत पेराम्बूर (द० भारत) में सवारी गाड़ी के डब्बों का निर्माण करने के लिए एक विशाल सरकारी कारखाने के निर्माण का आरम्भ सन् १९५२ ई० के फरवरी मास में किया गया था और यह निर्माण कार्य ९२ लाख रुपया व्यय कर सन् १९५३-५४ ई० चलता रहा। आशा की जाती थी कि सन् १९५५ ई० से यह कारखाना चालू हो जायगा और सवारी गाड़ी के डब्बे निर्माण किये जाने लगेंगे। इस कारखाने में विगत सन् १९५४ ई० के मार्च मास से निर्माण कार्य के विशेषत स्वदेश में तैयार करने के लिए विद्यार्थियों को शिक्षा देने का कार्यारम्भ हो चुका है। यहां पर प्रतिवर्ष ६ सौ टेकनिशियन तैयार करने का लक्ष्य स्थिर हुआ है। यह कारखाना सरकारी है और ७.५ करोड़ रुपये की पूंजी लगाने का निश्चय किया गया है। सवारी गाड़ी के डब्बों का निर्माण कार्य हमारे देश में सन्तोषप्रद प्रगति करता हुआ उन्नति कर रहा है।

जल-यान निर्माण

संसार की कतिपय अग्रगण्य राष्ट्रों की समुद्र सम्बन्धी प्रभुता तथा समुद्री सामरिक शामर्थ्य का एक मात्र कारण उनका जलपान निर्माण की कला में कौशश पूर्ण रीति से कुशल होना हैं। जहां समुद्री बेड़ा युद्धकाल में अपने देश के समुद्र तट की रक्षा करता है वहां सामान्य जलपान माल और यात्रियों को इधर से उधर ले जाकर विदेशी मुद्रा उत्पादन का महत्व पूर्ण स्रोत सिद्ध होते हैं। सामुहिक सुरक्षा की दृष्टि के अतिरिक्त समुद्रीय तट के व्यापार को राष्ट्रीय पाता के अन्तर्गत लाते हुए विदेशी व्यापार से भारत की राष्ट्रीय जलयान व्यवस्था को समुचित लाभ उठाने का संयोग उपस्थित करने के लिये जल-पान निर्माण के उद्योग को भारत में सुदृढ़ आधार पर स्थायी रूप से समुन्नत करना गण-तंत्र भारत की आज प्रथम आवश्यकता हो रही है। इस ओर सुख्यात भारतीय प्रतिष्ठान सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी ने सर्व प्रथम साहस किया और जल-यान निर्माण करने के उद्देश्य से सन् १९४१ ई० के जून मास में विजगा पट्टम नामक बंदरगाह में एक सुव्यवस्थित विशाल कारखाने की आधार शिला रक्खी और इस प्रतिष्ठान का स्वदेश निर्मित प्रथम जल-यान सन् १९४६ ई० में तैयार हुआ। उस समय से सन् १९५२ई० के बीच में इस कारखाने ने ८ माल ढोने वाले व्यापारिक जल-यान, ४ जलयान अपने निजी जहाजी बेड़े के लिये और ४ बड़े जहाज सरकारी आदेशनुसार सरकार के लिये निर्माण किये।

विजगापट्टम का जल-यान निर्माण-केन्द्र

यह कारखाना ५५ एकड़ भूमि के विस्तार में स्थित है। यहां पर ३२० से ५५० फीट की लम्बाई तक के और ५५,०० टन वजन तक के जल-यान निर्माण किये जा सकते हैं। यहां सब प्रकार की आधुनिक सुविधाओं की समुचित व्यवस्था कुशलपूर्वक की गयी है। इस में सन् १९५० ई० तक ४-३४ करोड़ रुपये की

पूंजी लगायी जा चुकी थी। यहां पर ३८०० श्रमिक काम करते हैं जिन में ५० प्रतिशत निर्माण कलाके कौशल में कुशल और निपुण हैं। कम्पनी ने यहां के श्रमिक शिविर को समुन्नत करने में ७५ लाख रुपये व्यय किये हैं। इस पृष्ठ भूमि में हमारी प्रथम पंचवर्षीय योजना का सूत्र पात हुआ।

जल-यान निर्माण जैसे उद्योग के लिए विपुल धन राशि आपेक्षित है अतः जब सिन्धियां स्टीम नेवीगेशन कम्पनी ने अपने आपको अधिक पूंजी लगाने में सब तरह से असमर्थ समझा तो गण-तन्त्र भारत की सरकार ने अपने हाथ में उसके कारखाने को ले लिया और उक्त औद्योगिक प्रतिष्ठान की भागीदारी में कारखाने की नवीन नाम "दी हिन्दुस्तान शिप-यार्ड लि०" के नाम से रजिष्ट्री करा के उसे चालू किया।

दी हिन्दुस्तान शिप-यार्ड (जलयान निर्माणकारी कारखाना)

विजगपट्टम स्थित सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन कम्पनी के जलयान निर्माण करने वाले कारखाने को भारत सरकार ने अपने हाथ में लेकर इस नाम से दिनांक १ मार्च सन् १९५२ ई० से कार्यारम्भ किया। सन् १९५१-५२ ई० में सरकार ने इस पर २३१·६ लाख व्यय किये। स्वामित्व का हस्तान्तरण हो जाने के बाद इस कारखाने के उत्पादन के सम्बन्ध में सन् १९५२-५३ ई० और १९५६-५७ ई० के लिए पञ्च-वर्षीय योजना स्वतन्त्र रूप से स्थिर की गई। इस नवीन आयोजन के अनुसार भावी ४ वर्षों के अन्तर्गत सन् १९५५-५६ ई० के अन्त तक सरकार को ११·७७ करोड़ रुपये व्यय करता था।

दी हिन्दुस्तान शिप-यार्ड लि० ने जलयान निर्माण कार्य में सुख्यात संसार प्रसिद्ध एक फ्रान्सीसी औद्योगिक फर्म❀ से टेकनिकल सहायता प्राप्त करनेके लिए शन् १९५२ ई० की १५ जुलाईको एक पञ्चवर्षीय सन्धि स्थापिता करली है जिसके अनुसार उक्त फ्रांसीसी फर्म इसे संगठन, विकास और व्यवस्था के सम्बन्ध में यांत्रिक सलाह देगी, साथही भिन्न भिन्न आकार, प्रकार और उपयोग के जलयान निर्माण में आपेक्षित सामान निर्माण करने का प्रबन्ध चलावेगी। देश विदेश से आवश्यक उत्पादन सामग्री के प्राप्त करने की व्यवस्था करेगी। यह फर्म अपने फ्रान्स स्थित कारखाने में भारतीयों को शिक्षा देकर इस सम्बन्ध के विशेषज्ञों का निपुण दल तैयार करेगी जो हमारे इस प्रतिष्ठान का संचालन करने में सब विधि चतुर सिद्ध होगा। वर्त्तमान में इस कारखाने की उत्पादन प्रगति सन्तोष प्रद चल रही है और अनुमान है कि अपने भावी उत्पादन लक्ष्य में ७० प्रतिशत सफल सिद्ध होगा।



सिंधरी का खाद का कारखाना

पैदावार में वृद्धि करने वाले पदार्थ तथा खाद, खाद्य उत्पादन में शीघ्र ही वृद्धि करने के साधन हैं। पौधों तथा अन्न के विकास के लिए जिस सामग्री की आवश्यकता होती है वह इन पदार्थों से प्राप्त की जा सकती है। नाइट्रोजन, फासफोरस और पोटाश यह तीनों पदार्थ ही विशेष रूप से पौधों की वृद्धि के लिये आवश्यक हैं। इनमें से भारतीय भूमि के लिये नाइट्रोजन अकसर अमोनियम सल्फेट के द्वारा तथा फासफोरस, सुपर फासफेट के द्वा सहाय की जाती।

❀ La Societe Anonyme des Ataliers et Chantiers de la Loire de Paris.

भारत वर्ष में भूतकाल में किसी भी प्रकार का कृत्रिम खाद बहुत कम तैयार किया जाता था। यह द्वितीय महायुद्धकी बात है जब कि सर्व प्रथम सन् १६४३ में "त्रावनकोन फर्टिलाइजरस एण्ड केमिकल्स लि०" की स्थापनाकी गई जिसने कि सन् १६४७ में उत्पादन करना प्रारम्भ कर दिया जिसकी कि ४५००० टन अमोनियम सल्फेट और ५९००० टन अमोनियम फासफेट की उत्पादन क्षमता थी। लगभग ३६००० टन अमोनियम सल्फेट बिहार और बंगाल के कारखानों से तैयार किया जाता है। देश की बढ़ती हुई माँग को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने सिंधरी में एक कारखाने की स्थापना की जिसकी कि ३५०,००० टन अमोनियम सल्फेट तैय्यार करने की उत्पादन क्षमता है। इस कारखाने ने सन् १९५१ में उत्पादन करना प्रारम्भ कर दिया है। इस कारखाने का प्रति दिन का उत्पादन ७०० टन है। सितम्बर और अक्टूबर सन् १९५५ मे कारखाने का उत्पादन एक दम ७०० टन से बढ़कर ९६० टन तक पहुँच गया था। तो भी यह उत्पादन भारत की ७५% माँग को भी पूरा नहीं करता है और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि बाँधो, नहरों इत्यादि की योजनाओं से खेती ज्यादा की जावेगी तो उस समय और भी खाद की आवश्यकता बढ़ेगी ऐसी स्थिति में हमको इस कारखाने की उत्पादन क्षमता को और भी अधिक बढ़ाना होगा।

सिंधरी, धनबाद से १६ मील दक्षिण में एक छोटा सा गाँव है। यद्यपि यह स्थान खड़िया मिट्टी (Gypsum) के ढेरों से काफी दूरी पर है जिसकी प्रतिदिन १५०० या २०१० टन की आवश्यकता लगती है फिर भी यह स्थान दामोदर नदी के किनारे पर होने से और कोयले की खदानों के पास होने से कॉफी सुविधाएं रखता है। इस कारखानेमें ८४०० टन कोयला, ६०० टन कोक और १०० या १२० लाख गैलन पानी को प्रति दिन आवश्यकता लगती है।

इस कारखाने के आकार तथा विस्तार का इन बातों से अनुमान लगाया जा सकता है कि इसमें कमी हुई पाइप लाइन जिसका कि आकार २" से लेकर ७२" का है उसकी लम्बाई लगभग ८० मील है; बिजली के लगे हुए तारों की लम्बाई १७० मील है और रेलवे की पटरियों की लम्बाई १२ मील है। एक विशाल अनुवृत्तिक गोदाम (Silo) जो कि अपनी तरह का समस्त एशिया मे सबसे बड़ा है जिसकी कि एक लाख टन अमोनियम सल्फेट रखने की क्षमता है। यह सारा गोदाम एयर-कंडिशन है और माल को निकालने तथा रखने के लिये मजदूरों की आवश्यकता नहीं होती है। यह कारखाना अपनी तरह का संसार में सबसे विशाल है जो कि २३ करोड़ रुपयों की लागत से बना है। अमोनियम सल्फेट विक्रय मूल्य २७५) प्रति टन जो कि संसार के उत्तम उत्पादकों से भी भलीभांति मुकाबला जर इकता है।

इसी प्रकार डी० डी० टी०, पेनिसिलिन, न्यूज प्रिण्ट इत्यादि के विशाल कारखाने भी गणतंत्र भारत की सरकार के देखरेख में चलना प्रारम्भ हो गये हैं।



भारत में अणु शक्ति का उत्पादन

अणु शक्ति या 'एटामिक पावर' की पहली जानकारी दुनियां को अचानक ही १९४५ की अगस्त में मिली जब कि इस शक्ति से चलने वाले दो बमों ने जापान के एक विशाल खंड को बरबाद क्या, खत्म ही कर दिया। इस घटना ने १९३९ में शुरू हुई लड़ाई को भी समाप्त कर दिया। दुनियां कांप उठी कि इस तरह अगर अणु-शस्त्रों से आगे लड़ाई हुई तो मानव-जाति का नाम-निशान ही मिट जायेगा।

लेकिन यह अणु-शक्ति जहां संहारक बम बना सकती है वहां अनेक तरह के रचनात्मक यंत्र व सामग्री भी बना सकती है। इस शक्ति की रचनात्मक संभावनाएं कहीं ज्यादा उत्साहजनक और आशाप्रद है। उन्हीं को देखते हुए हमारे प्रधानमंत्री ने स्वराज्य प्राप्ति के एक साल बाद ही देश के अन्दर एक आणविक शक्ति आयोग (एटामिक एनर्जी कमीशन) स्थापित किया। इसके तीन साल पहले ही टाटा इन्स्टीस्यूट आफ फन्डामेन्टल रिसर्च नाम की वैज्ञानिक अनुसंधान संस्था टाटा बन्धुओं ने कायम कर दी थी। उस संस्था के कारण आणविक शक्ति आयोग (एटामिक एनर्जी कमीशन) को काम करने में बहुत सहूलियत रही। अणु-शक्ति सम्बन्धी देश में कुछ काम हो, उसके संगठन की खातिर १९५४ में भारत सरकार ने उसका एक विभाग भी (डिपार्टमैंट आफ एटामिक एनर्जी) खोल दिया। फिर पिछले साल, १९५५ में 'एटामिक एनर्जी इस्टाब्लिशमैन्ट् नामकी एक संस्था सरकार ने स्थापित की जिसे अणु-शक्ति सम्बन्धी तमाम प्रवृत्तियों का सूत्रधार बनाया। इसका केन्द्र बम्बई नगर में है और लगभग दो सौ वैज्ञानिक इसमें काम करते हैं। इसके अध्यक्ष सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डा० होमी भाभा हैं।

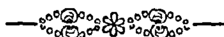
इस 'एटामिक इनर्जी इस्टैब्लिशमैन्ट' ने गत चौथी अगस्त १९५६ को अपनी सफलता प्राप्त की। वह यह कि बम्बई के ट्राम्बे नाम के स्थान में अणु-शक्ति के एक रियेक्टर (संचालक यन्त्र) का निर्माण हुआ और वह उस दिन तीसरे पहर पौने चार बजे से काम करने लगा। भारतमें ही नहीं एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि पूर्वी जगत् में यह अपने ढंग की पहली घटना है।

यह रियेक्टर तैरने के तालाबके आकार का है। जिस हालमें यह रखा है वह १०० फुट लम्बा, ५० फुट चौड़ा और ७० फुट ऊंचा है। जिस तालाब में रिएक्टर घूमता है वह २८ फुट लम्बा, १० फुट चौड़ा और २८ फुट ही गहरा है। उसकी दीवारें कान्क्रीट की हैं, साढ़े आठ फुट मोटी। इसमें पानी भरा रहता है और इसी में रियेक्टर घूमता है। इस रियेक्टर को बनाने का निर्णय एटामिक एनर्जी कमीशन ने १५ मार्च १९५५ को किया। जुलाई १९५५ में इसका डिजाइन तैयार हुआ। सोमवार ३० जुलाई १९५६ से इस रियेक्टर को भरना शुरू किया गया, और रातो-दिन काम करके चौथी अगस्त को यह चालू हो गया। पचास वैज्ञानिक और इञ्जीनियर इसमें जी-जान से लगे रहे।

इस रियेक्टर की तैयारी में लगभग पचीस-तीस लाख रुपये का खर्च पड़ा। इससे लगभग एक हजार किलोवाट के बराबर शक्ति पैदा की जा सकेगी। इस तरह का एक दूसरा रियेक्टर कनाडा की मदद से बन रहा है जो १९५८ में तैयार होगा, उसमें सात करोड़ रुपया लगेगा और लगभग तीस हजार किलोवाट शक्ति उससे पैदा होगी। रेडियम अणु शक्ति के लिए आवश्यक सामग्री जैसे कोरियम, ग्रैफाइट आदि अपने देश में पैदा होते हैं। ट्रावनकोर में समुद्रतट के आसपास जो बालू है उसमें मोनाडाइट होता है जो इस शक्ति के लिये अत्यन्त लाभ दायक व अनिवार्य पदार्थ है। आलवा में उसके लिए एक कारखाना खुला है। इधर ट्राम्बे (बम्बई) में यूरे नियम परिष्करण-शाला बन रही है। उधर पंजाब में नांगल नामक स्थान पर 'भारी पानी' और नाइट्रोजिनस खाद बनाने की योजना है। इस प्रकार कुछ अरसे में भारत में अणु शक्ति का समुचित विकास होगा।

पर यह ध्यान देने की बात है कि अभी जो रियेक्ट चला है उसके लिए ईंधन तत्व इंगलैण्ड से आये हैं। स्पष्ट है कि बाहर से ईंधन लाकर जो चीज तैयार होगी उसमें परावलम्बन रहेगा। लेकिन डा० भाभा ने आश्वासन दिया है कि निकट भविष्य में ईंधन-पदार्थ भी यहीं तैयार कर लेंगे और अणु-शक्ति के शान्तिमय उपयोग के लिये भारत स्वावलम्बी हो सकेगा।

डा० भाभा ने यह भी कहा कि अणु क्षेत्र में भारत की कामना कोई शस्त्र बनाने की नहीं है, बल्कि हम उसे शान्ति के कामों में ही इस्तेमाल करना चाहते हैं। इससे हम बिजली पैदा करेंगे, और खेती उद्योग व दवादारू में काम-काज के लिये रेडियो आइसोट्रोप्स तैयार करेंगे। इसलिए उनकी योजना है कि आगामी दस साल में सारे देश में जगह जगह अणु-शक्ति के बिजलीघर खुल जायें।



जल विद्युत् शक्ति और सिंचाई की महान् योजनाएं

देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् देश का पुनर्निर्माण करने के लिए जिन विशाल योजनाओं की तरफ हमारे राष्ट्र नायकों का ध्यान गया उनमें बड़ी २ नदियों से बहने वाली अनन्त जल राशि से महान् शक्ति प्राप्त करने की योजनाएं सर्व प्रधान हैं।

प्रायः हम हर साल देखते हैं कि बरसात में भारत वर्ष की सभी बड़ी २ नदियों में बाढ़ों से सर्वनाश का दृश्य उपस्थित हो जाता है और यह विशाल जल राशि मार्ग में पड़ने वाले समस्त जनपदों का संहार करती हुई बिना किसी उपयोग के समुद्र में चली जाती है और गर्मी के दिनों में फिर हमारे यहां जलका अभाव हो जाता है जिसके परिणाम स्वरूप हम अपनी जमीनों से केवल एक ही फसल लेने पाते हैं।

इस व्यर्थ में जाती हुई विशाल जलराशिसे महान् शक्ति उत्पन्न करने की ओर सबसे पहले यहां के प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० श्री जमशेद नसरवान टाटाका ध्यान गया और उन्होंने पश्चिमी घाटमें बहनेवाले पानी

पर एक बांध बांध कर उससे शक्ति उत्पन्न करने की योजना बनाई जो बाद में टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रिक वर्क्स के नाम से प्रसिद्ध हुई।

देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् तो हमारे देश के राष्ट्र निर्माताओं का ध्यान देश में बहने वाली विभिन्न नदियों की ओर गया और करोड़ों, अरबों रुपये की लागत से देश की अनेक नदियों पर विशाल बांध बांध कर उनसे विद्युत शक्ति और सिंचाई की शक्ति प्राप्त करने की योजनाएं बनाई गईं।

अभी करीब २ ये सभी योजनाएं अपनी निर्माण अवस्था में हैं इसलिए भविष्य में इनसे होने वाले लाभों से जनता परिचित नहीं हो पाई है।

मगर जिस दिन ये सब बांध तैयार होकर देश में लाखों किलोवाट बिजली और लाखों एकड़ नवीन भूमि का सिंचन करने लगेंगे और जब देश के छोटे २ देहात भी सस्ती बिजली के प्रकाश से जग मगाने लगेंगे और सूखी पड़ी हुई जमीनें हरी भरी होकर लह लहाने लगेंगी तब हमारे देश को इनकी उपयोगिता का ज्ञान होगा और तभी इनमें लगाई हुई अरबों रुपयों की पूंजी की सार्थकता का हमें पता लगेगा।

नीचे उनमें से कुछ मुख्य २ बांधों का परिचय अत्यन्त संक्षिप्त में दिया जा रहा है।

भाखरा-नांगल योजना (पंजाब, पेप्सु और राजस्थान)

पंजाब के रूपार नामक गांव से ५० मील ऊपर की ओर सतलज नदी के पानी को रोकने के लिए यह ६८० फीट लम्बा बांध तैयार हो रहा है। इस बांध के द्वारा बरसात का पानी रोक लिया जावेगा। उसके बाद उसे विभिन्न नहरों में विभक्त करके सिंचाई के उपयोग में लिया जावेगा और उसकी सहायता से विशाल जल विद्युत शक्ति उत्पन्न की जावेगी। इस बांध के पीछे एकत्रित जल भण्डार की लम्बाई ५० मील की होगी। इस भण्डार में ५६ लाख एकड़ फीट नदी का जल इकट्ठा रहेगा। इस बांध से आठ मील नीचे नांगाल के पास एक दूसरे बांध का काम लगभग पूरा हो चुका है। इस बांध से नीचे लिखी आवश्यकताएं पूरी होंगी।

(१) भाखरा पॉवर प्लाण्ट की ओर से आने वाले पानी की कमी या अधिकता को नियन्त्रण में रखकर प्रतिदिन की जल प्राप्ति को सप्रमाण रक्खेगा।

(२) सतलज के पानी को नांगल की नहर में मोड़ देगा जहां विद्युत शक्ति उत्पादन में उसका उपयोग किया जावेगा।

(३) भाखरा की नहरों में जल पूर्ति करेगा।

इस बांध के पश्चात् नांगल केनाल पर चार पॉवर स्टेशन रहेंगे। पाँच वर्ष के समय में इसमें दो स्टेशनों में से प्रत्येक पर दो दो चौबीस हजार किलोवाट बिजली पैदा करने वाले जरनेटर लगाये जावेंगे। अन्त में इस विकास योजना के द्वारा कुल चार लाख किलोवाट बिजली उत्पन्न होगी। इसके पश्चात् भी मांग बढ़ने पर इस उत्पादन शक्ति में क्रमशः वृद्धि की जावेगी। इस पॉवर स्टेशन के साथ २००० मील लम्बी विद्युत वाहिनी तार व्यवस्था जुड़ी हुई है।

नागल की नहर और उसके आगे जानेवाली शाखाएं और भाखरा नहर इनको लाइन बद्ध करदी जावेगी। इन नहरों की शाखाएं तथा उपशाखाएं ३०० मील लम्बी होंगी और इनके द्वारा पंजाब, पेप्सु और राजस्थान में कुल छत्तीस लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होगी। इसके लिए बहुत तेजी से यह निर्माण कार्य्य चल रहा है।

अभी के अनुमानके अनुसार इस निर्माण कार्य्यमें कुल १३३ करोड़ रुपये का खर्च आंका जाता है।

दामोदर वेली प्राजेक्ट

दामोदर नदी और उसकी शाखाओं के बहुसूत्री विकास के लिए आठ जल बांध बांधने की योजना निश्चित की गई है। प्रत्येक जल बांध के साथ हाइड्रो इलेक्ट्रिक स्टेशन भी बनाया जावेगा। उसके पश्चात् दो लाख किलोवाट पॉवर का एक स्टीम पॉवर स्टेशन भी बनेगा जो हाइड्रो इलेक्ट्रिक शक्ति में होने वाली कमी या अधिकता को नियन्त्रण में रक्खेगा और विद्युत् शक्ति की नियमित प्राप्ति की गारण्टी देगा। इन सबके साथ विद्युत वाहिनी ग्रीड योजना भी रहेगी।

सिंचाई के लिए बनने वाली मुख्य नहर और उसकी शाखाओं की लम्बाई कुल मिलकर १५०० मील होगी तथा ९० मील लम्बी नौका यातायात और सिंचाई के लिए एक नहर बनाई जावेगी।

सींदरी खाद उत्पादन फैक्टरीमें बने हुए थर्मल (२५००० किलोवाट) स्टेशनसे बनी हुई विद्युतशक्ति को दामोदर वेली कारपोर्शन की व्यवस्था में मिला लिया जावेगा।

इस प्रकार थर्मल (अग्नि यन्त्र) और हाइड्रो इलेक्ट्रिक (जलयन्त्र) विद्युत पद्धतियों की संयुक्त शक्ति के द्वारा ६० प्रतिशत "लोड फैक्टर" के साथ तीन लाख किलोवाट की माँग को पूरी किया जावेगा। इस बाध की नहरों के द्वारा लगभग दस लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होगी।

इस योजना की पहली मंजिल का खर्च ७५ करोड़ अनुमान किया गया ही जिसमें ५५ करोड़ का खर्च पहली पञ्चवर्षीय योजना में होने का अनुमान लगाया गया था।

हीराकुण्ड प्रॉजेक्ट

उड़ीसा में महानदी के विस्तार में निर्माण की जाने वाली तीन विकास योजनाओं में एक हीराकुण्ड प्रोजेक्ट है। उड़ीसा में सम्भलपुर से नौ माईल ऊपर महानदीके पानी को रोकने के लिये एक विशाल बाँध का निर्माण हो रहा है। इस बाँध के दोनों तरफ दो विशाल नहरें निकाली जावेंगी। उन पर दो पॉवर स्टेशन भी बनाये जावेंगे। एक मुख्य बाँध के ऊपर और दूसरा उससे १७ मील नीचे। हीराकुण्ड जलाशय का पानी नहरों के द्वारा सम्भलपुर जिले के ऊपरी भागों और "नारज वीअर" के नीचे वाले डेल्टे के विस्तार तक पहुँचेगा। इस योजना से अठारह लाख एकड़ भूमि की सिंचाई होगी और कुल मिला कर १९८००० किलोवाट बिजली पैदा होगी। जिसमें से निकट भविष्य में ८५००० किलोवाट बिजली प्राप्त होने लगेगी।

इस बाँध के प्रथम हिस्से का निर्माण खर्च ६३ करोड़ रुपया अनुमान किया गया है। इसमें ५५ करोड़ रुपया प्रथम पञ्चवर्षीय योजना से मिलेगा।

चम्बल घाटी योजना

मध्य भारत तथा राजस्थान में वैसे तो अनेक नदियां हैं, परन्तु उनमें जल के अटूट भंडारवाली तथा अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण चम्बल नदी है। जिसे मध्य भारत एवं राजस्थान की बरद कामधेनु कहा जा सकता है। यह कामधेनु अभी तक निष्फल सिद्ध हो रही थी परन्तु अब उसका लाभ उठाने के हेतु उक्त विशाल योजना बनाई गई है।

इस योजना के अनुसार विद्युत उत्पादन केन्द्रों सहित तीन बांध और एक पाला या सिंचाई बांध का निर्माण किया जा रहा है। साथ में कुछ आवश्यक नहरों का भी निर्माण होगा। जिनके द्वारा सिंचाई के उपयोग के लिये विभिन्न क्षेत्रों में सुविधापूर्वक पानी पहुचाया जा सकेगा और इस योजना क्षेत्र के अन्तर्गत कृषि करने वाले लोग पर्याप्त लाभ उठा सकेंगे।

इस प्रकार जो तीन बांध तथा एक सिंचाई बांध बनाये जा रहे हैं, उनमें प्रथम गांधी सागर बांध है। यह बांध कोटा से दक्षिण चालीस मील, भानपुरा से बीस मील और चौरासी गढ़ किले से पांच मील दूर नदी के नीचे प्रवाह पर स्थित है। इसके निर्माण में लगभग ८०।९० करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान लगाया गया है और इसमें ६८ लाख ५० हजार एकड फुट पानी २६५ वर्गमील के घेरे में संग्रहीत किया जायगा। इसकी पानी संग्रह करने की शक्ति को देखते हुए, यह दुनियां में सबसे सस्ता बांध रहेगा। इसका निर्माण मध्य भारत सरकार की देखरेख हो रहा है।

दूसरा बांधः—इस बांध का नाम मेवाड़ के महान यशस्वी राणा प्रताप के नाम पर राणा प्रताप सागर बांध होगा और यह प्रथम बांध से २० मील नीचे राजस्थान के एक ग्राम रावत भट्टा के समीप बनेगा। यह उस चूलिया प्रपात से कुछ ऊपर होगा जहां ४० फीट की ऊँचाई से पानी गिरता है। यह बांध ६० वर्ग मील के घेरे में बनेगा और इसमें ३२ लाख ५० हजार एकड़ फीट पानी संग्रह किया जा सकेगा। इसके निर्माण में ३२.६६ करोड़ रुपया व्यय होगा।

तीसरा बांध—'कोटाबांध' होगा जो कोटा से लगभग १० मील दूर नदी के ऊपरी प्रवाह पर स्थित होगा। इसमें एक लाख चालीस हजार एकड़ फीट पानी इकट्ठा किया जा सकेगा।

इन तीनों बांधों के अतिरिक्त जिस पाले : सिंचाई बांध के : निर्माण का जिक्र ऊपर किया गया है, वह भी अपना विशेष महत्त्व रखता है। यह पाला कोटा में नदी के उपरी प्रवाह पर आधे मील की दूरी पर होगा। इससे दो नहरें निकलेगी। एक दाहिने किनारे पर और दूसरी बाएं किनारे पर। इनका पानी राजस्थान की १९ और मध्यभारत की १२ तहसीलों में कुल १४ लाख एकड़ भूमि की प्रतिवर्ष सिंचाई करेगी।

विद्युत शक्तिः—गांधी सागर बांध के समीप जो विद्युतगृह बनाया जावेगा उससे १५,०००

किलोवाट बिजली पैदा होगी और भार अंक ६० प्रतिशत होगा। राणाप्रताप सागर बांधके समीप बननेवाला भूपाल विद्युत् केन्द्र ६०,००० किलोवाट तथा कोटा विद्युत केन्द्र ४५,००० किलोवाट बिजली पैदा करेगा। जिसका भार अंश ६० प्रतिशत होगा। इन विद्युत केन्द्रों से प्राप्त बिजली की मात्रा तो अधिक होगी, वह सस्ती भी पड़ेगी उसकी दर ०.८ पाई प्रति यूनिट अनुमानित की गई है जिससे देश के इस भाग की औद्योगिक प्रगति में पर्याप्त सहायता प्राप्त होगी।

प्रगति का क्रमः—चम्बल घाटी उन्नति योजना तीन क्रमों में विभाजित है। प्रथम क्रममें गांधीसागर बांध और उसका विद्युत उत्पादन केन्द्र तथा नहरों से युक्त पाला आता है, जिससे सिंचाई कार्य में प्रगति होगी। इस योजना को विशेष प्रधानता दी गई है, क्योंकि इससे अधिक अनाज उत्पादनके लक्ष्यमें सफलता प्राप्त होगी विद्युत प्रसार की व्यापक योजना को भी इसमें स्थान दिया गया है। कार्य के इस प्रथम खण्ड में ४८.०३ करोड़ रुपया व्यय होगा।

दूसरा क्रम राणा प्रतापसागर बांध और भूपाल विद्युत केन्द्र का होगा। उसमें १३.६६ करोड़ रुपया व्यय होने का अनुमान लगाया गया है। इस क्रम में अन्तिम स्थान कोटा के बांध और विद्युत केन्द्र को प्राप्त होगा जिस पर १० करोड़ रुपया व्यय होने का अनुमान है।

इस योजना से १४ लाख एकड़ भूमि की जो सिंचाई होगी उससे केवल अनाज ही ४,७५,००० टन अधिक पैदा होगा। इस योजना से इस क्षेत्र की कृषि का रंग ढंग ही बदल जायगा। मध्य भारत का जो क्षेत्र इस योजना से लाभ उठाने वाला है, उसमें योजना के बनने पर अकाल का भय दूर हो जावेगा वह अक्सर अकाल का शिकार होता रहता है।

इन योजनाओं के अतिरिक्त और अनेक नदियों पर बांध बांधने की योजनएं केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों के सहयोग से सारे देश में चल रही हैं।



गणतंत्र भारत की द्वितीय पंच वर्षीय योजना

Second Five Years Plan

भारी उद्योगों के विकास पर अधिक जोर

प्रथम पंच वर्षीय योजना के समाप्त होते ही गणतंत्र भारत की सरकार ने दूसरी पंचवर्षीय योजना का प्रारुप प्रकाशित करदिया। इस योजनाकी पूर्तिमें कुल ७१०० करोड़ रुपयेका खर्च अनुमानित किया गया है। जिसमें ४८०० करोड़ रुपये सरकारी क्षेत्रसे और २३०० करोड़ रुपये गैर सरकारी क्षेत्रसे खर्च किये जायेंगे

आयोजना का मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय आयमें लगभग २५.६ प्रतिशत तथा प्रति व्यक्ति पीछे औसत आमदनी में १८ प्रतिशत की वृद्धि करना है। अनुमान है कि राष्ट्रीय आय १९५५-५६ की आय ६६४५ करोड़ रुपये से बढ़कर १९६०-६१ में १२,०२० करोड़ रुपये तक पहुंच जायगी और प्रति व्यक्ति पीछे औसत आमदनी बढ़कर २९६ रुपया वार्षिक हो जायगी जो १६५५-५६ में २५१ रुपये है। इस आयोजना में ८० लाख बेकारोंको रोजगारपर लगानेकी व्यवस्था है। सरकारी क्षेत्रमें ४८०० करोड़ रुपया तथा निजी क्षेत्र में २३०० करोड़ रुपया व्यय होनेका अनुमान है। द्वितीय आयोजना १९५६ के अप्रैलसे आरम्भ होगई।

आयोजना की अवधिमें कुल जितना व्यय होगा, उसका लगभग ५० प्रतिशत भाग उद्योगों, खनिजों, परिवहन तथा संचार की मदों पर खर्च होगा। कृषि तथा सिंचाई का भी प्रमुख स्थान है, जिनपर २० प्रतिशत से भी अधिक व्यय होगा। इसमें से बाढ़ नियन्त्रण तथा सिंचाई के कार्य क्रमोंपर लगभग ६ प्रतिशत तथा सामुदायिक विकास, राष्ट्रीय विस्तार सेवाओं को मिलाकर कृषिपर लगभग १२ प्रतिशत खर्च होगा। आयोजना के कुल प्रस्तावित व्यय का २० प्रतिशत समाज सेवाओंपर व्यय होगा। इस मदमें आवास तथा विस्थापितों का पुनसंस्थापन भी शामिल है।

उद्योगों पर व्यय

इस आयोजना में उद्योगों के विकास के खर्चमें काफी वृद्धि कर दी गयी है। लगभग ७०० करोड़ रुपया बड़े उद्योगों तथा खनिजों के विकास पर तथा लगभग २०० करोड़ रुपया छोटे तथा ग्राम उद्योगोंपर व्यय करने का विचार है, जिसमें राष्ट्रीय औद्योगिक विकास निगम तथा अन्य वित्तनिगमोंके लिए व्यवस्थाएं भी सम्मिलित हैं।

पहली आयोजना की अपेक्षा दूसरी आयोजनामें उत्पादन तथा सेवा में जितनी वृद्धि होगी, उसका अनुमान इस प्रकार है—उद्योग तथा सम्बद्ध क्षेत्र १८ प्रतिशत (कुल मूल्य ४८०० करोड़ रुपता) खनिज ५६ प्रतिशत (१३५ करोड़ रुपया) बड़े कारखाने—६२ प्रतिशत (१४०० करोड़ रुपया) छोटे उद्योग—३१ प्रतिशत (७६५ करोड़ रुपया). निर्माण—३३ प्रतिशत (५२० करोड़), वाणिज्य, परिवहन तथा संचार—२६ प्रतिशत (२,४२५ करोड़ रुपया), अन्य सेवाएं—१५ प्रतिशत (२,००० करोड़ रुपया) कुल राष्ट्रीय उत्पादन-२५.६ प्रतिशत (१२,१२० करोड़ रुपया)।

कृषि-उपज में वृद्धि

अनुमान है कि कृषि उपजमें १९५६ से १९६१ के बीच १८ प्रतिशत की वृद्धि होगी। अनाज की उपज में १ करोड़ टन या १५ प्रतिशत तथा अन्य कृषि वस्तुओंकी उपज में इससे भी कुछ अधिक वृद्धि होने की आशा है। कपास, चीनी तथा तेलहन के उत्पादन में क्रमशः ३१, २९ तथा २७ प्रतिशत वृद्धि होने का अनुमान है।

शिक्षा और स्वास्थ्य

१९६१ तक ६ से ११ सालतक के ६० प्रतिशत बच्चों और ११ से १४ सालतक के २० प्रति

शत बच्चोंको अनिवार्य शिक्षा मिलने लगेगी। प्रशिक्षित अध्यापक भी काफी संख्यामें तैयार हो जायंगे और प्राथमिक तथा माध्मिक शिक्षा की व्यवस्था में भी आमूल सुधार हो जायगा।

आयोजना के लिए आवश्यक प्राविधिक कर्मचारियोंके प्रशिक्षण की सुविधाएं बढ़ जायंगी। आशा है कि १९६० में ४,८०० प्राविधिक शिक्षाप्राप्त स्नातक और इंजीनियरोंका डिप्लोमा पानेवाले ७,९२५ व्यक्ति विकासकार्य के लिए मिल सकेंगे।

८० लाख व्यक्तियों को काम

दूसरी आयोजना में ८० लाख व्यक्तियों को काम देने की जो व्यवस्था की गयी है उसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रके रोजगारका अनुपात ४७/५३ होगा। इस प्रकार ऐसा मालूम होता है कि शहरी क्षेत्रमें जितने नये काम चाहनेवाले बढ़ेंगे उनको शहरों में ही काम मिल जायगा।

आयोजना में होनेवाले कामों से कृषिके अलावा अन्य क्षेत्रोंमें ५२ लाख व्यक्तियों को काम मिलने का अनुमान है। इसके अलावा आयोजना से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपमें २६ लाख लोगोंको और काम मिल सकता है। विविध सेवाओं इत्यादि के विस्तार के कारण कृषिके अलावा अन्य क्षेत्रोंमें प्राय: ८० लाख लोगों को काम मिलनेकी आशा है। ग्रामीण क्षेत्रोंमें भी रोजगार इतनी मात्रा में बढ़ जायगा कि वर्तमान बेरोजगार व्यक्ति और आगे रोजगार चाहनेवालों को काम मिल सके।

केन्द्र तथा राज्यों की योजनाओं की जांचसे पता चलता है कि मोटे तौर से १० लाख से अधिक शिक्षित लोग सरकारी कामों में खप जायगे। इसके अलावा व्यापार, वाणिज्य आदिमें तथा निजी उद्योगों में जो २७ लाख जगहें होंगी, उनमें से भी कुछ शिक्षित व्यक्तियों के हिस्से में आयेंगी।

साधन

जिस नमूनेकी रूपरेखा इस आयोजना के लिए बनायी गयी है, उसके लिए आवश्यक है कि इसको कार्यान्वित करने के हर काम में जनता अपना पूरा योग दे। लोगों को अपने समस्त साधन जुटाकर १२०० करोड़ रुपये अर्थात् आयोजना के कुल खर्च का २५ प्रतिशत कर्ज के रूप में देना होगा। वर्तमान दरपर राजस्वसे ३५० करोड़ रुपया प्राप्त होगा और ४५.० करोड़ रुपया उगाहने के लिए नये कर लगाने होंगे। रेलों से १५.० करोड़ रुपया और प्राविडेण्ट फण्ड जैसी मदोंसे २५० करोड़ रुपया मिलेगा।

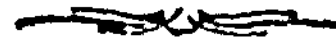
केन्द्र और राज्यों के विकास कार्यक्रम

द्वितीय पञ्चवर्षीय आयोजना में केन्द्रीय तथा राज्य सरकारें विशाल विकासात्मक कार्य अपने हाथ में लेगी। आयोजना में, २ करोड़ १० लाख एकड़ अतिरिक्त जमीन के लिए सिंचाई की सुविधा उपलब्ध करने का विचार है। प्रथम आयोजना के अन्त में पैदा की जानेवाली ३५ लाख किलोवाट बिजली के मुकाबले द्वितीत आयोजनावधि के अन्त में ६८ लाख किलोवाट बिजली तैयार होने लगेगी। रेलों द्वारा यात्रियों के यातायात में १५ प्र० श० तथा माल की ढुलाई में ३४ प्र० श० वृद्धि होने का अनुमान है, यद्यपि आवश्यकता यह होगी कि इससे भी अधिक वृद्धि की जाय। इसके लिए यह आवश्यकता है कि इञ्जनों, सवारी-डब्बों और माल-डब्बों की संख्या बढ़ायी जाय, कुछ नयी पटरियां बिछाय जायं, लाइनों की सामर्थ्य में वृद्धि की जाय, रेलों के कुछ सेक्शनों में बिजली से गाड़ियां चलायी जायं तथा विभिन्न प्रकार के निर्माण-कार्यों का विस्तार किया जाय। सामूहिक विकास के कार्यक्रम के अंतर्गत ३,८००० राष्ट्रीय विस्तार खंडों तथा १,१२० सामूहिक योजना खण्डों में भरपूर करने की व्यवस्थाकी गयी है। भारी उद्योगों, कोयला तथा तेलकी खोज संबंधी विकास-कार्यक्रमोंको बढ़ाने तथा अणु-शक्तिके विकासकी दिशामें कार्य आरम्भ करने की व्यवस्थाकी गई है। दूसरी आयोजना की गतिशीलता काफी हदतक इन्हीं नये कार्यक्रमों पर निर्भर है।



भारतका औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



भारतमें वस्त्र उद्योगका विकास



Development of Textile Industries in India



मशीन युगके पूर्व भारतका वस्त्र-व्यवसाय।

बम्बईमें वस्त्र-उद्योगका विकास।

अहमदाबादमें वस्त्र उद्योगका विकास।

बंगालमें वस्त्र उद्योगका विकास।

मद्रासमें वस्त्र-उद्योगका विकास।

मध्यभारतमें वस्त्र उद्योगका विकास।

प्रथम महायुद्ध और वस्त्र-उद्योग।

द्वितीय महायुद्ध और वस्त्र-उद्योग।

स्वाधीनता प्राप्तिके बाद वस्त्र-उद्योगका विकास।

वस्त्र-उद्योग और भारत सरकार।

अभिनवीकरण या राशनेलाइजेशनपर एक दृष्टि।

सन् १९५५—वस्त्र-उद्योगके विकासका क्रांतिकारी वर्ष।

वस्त्र-उद्योगका उज्ज्वल भविष्य।

भारतके कपड़ा मिलोंकी सूची।

भारतमें कपड़ा उद्योगका विकास

वस्त्र उत्पादन का उद्योग भारतका एक अत्यन्त प्राचीन उद्योग है और कहा जाता है कि विश्वमें इस उद्योगका सर्वप्रथम विकास भारतमें ही हुआ था। प्राचीन समयमें संसारके विभिन्न देशोंके वैभवशाली सम्राट् भारतके बने हुए वस्त्रोंसे ही अपनेको अलंकृत करनेमें गौरव समझते थे। प्राचीन समय ही क्यों मध्यवर्त्ती कालमें ढाकाकी मशहूर मलमलने संसारका ध्यान अपनी ओर आकर्पित किया था तथा आधुनिक युगमें भी बनारस, मदुरा तथा चन्देरीका कलापूर्ण कपड़ा संसार भरका ध्यान अपनी ओर आकर्पित करता है।

प्राचीन और मध्यकालीन हस्त कौशलके युग की तरह आजके इस वैज्ञानिक मशीन युगमें भी संसारके औद्योगिक इतिहासमें, भारतीय कपड़ा उद्योगके विकासका इतिहास कम विस्मय कारक नहीं है।

सन् १८५४ के अन्तर्गत सिर्फ एक या दो वस्त्र उत्पादनकी मिलोंको चालू कर इस विशाल देशने अपने वस्त्र उद्योगको प्रारम्भ किया था। उसके पश्चात् अनेक उत्थान और पतन की चट्टानोंसे टकराता हुआ, अनेक रंग-बिरंगी स्थितियोंको पार करता हुआ यह उद्योग आज भारत वर्पमें राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय महत्वका सबसे बड़ा उद्योग है।

सन् १८५४ की दो मिलोंकी जगह सन् १९५४ में भारतवर्पमें ४५७ कपड़े की मिलें दिन रात धुंआधार प्रगतिसे वस्त्रोंका उत्पादन करती हैं। इस उद्योगमें इस देशके लगभग १०४ करोड़ रुपये लगे हुए हैं और करीब ४०० करोड़ रुपयों का वार्पिक ट्रान्जेक्शन इस उद्योगके द्वारा इस देशमें होता है।

सन् १९०० से सन् १९५२ तक इस उद्योग की उन्नतिका तुलनात्मक अध्ययन नीचेके अंकोंसे किया जा सकता है—

	सन् १९००	सन् १९५२
	स्पिण्डल्स	स्पिण्डल्स
भारत	४९,४५,७८३	१,१७,२१,०००
उत्तरी अमेरिका	१,९४,७२,२३२	२,३०,७०,०००
ब्रिटेन	४,५६०००,००	३,३९,७०,०००
जापान	१२,७४०००	७४,५१,९१७
	लूम्स	लूम्स
भारत	४०१२४	२०७०००
उत्तरी अमेरिका	,४३९,३६५	५,१४६५०
ब्रिटेन	६,४८,८२०	३,५४,३००
जापान	४ ,४५०	७०,२५१

विशेप कर इस उद्योगने इस देशमें गत तीस वर्पोंसे नियमित रूपसे क्रमागत उन्नति की है। सन् १९२३ में जहाँ इस देशकी मिलोंमें २१,५१,६९८ रूई की गाँठोंकी खपत होती थी वहाँ सन् १९५२ में ४१,३२,६३२ गाँठोंकी खपत होने लगी और जहाँ सन् १९२३ में करीब पौने दो अरब गज कपड़ेका उत्पादन होता था वहाँ सन् १९५२ में करीब पाँच अरब चार करोड़ गज कपड़ेका उत्पादन हुआ है।

इस भारतीय वस्त्र उद्योगका इतिहास सुन्दर भूत, उत्साहपूर्ण वर्तमान और सुनहले भविष्यको सामने रखते हुए तीव्र-गतिसे उन्नतिके पथपर अग्रसर हो रहा है।

भारतीय वस्त्र उद्योगका विकास

प्रथमसोपान

मशीनयुगके पूर्व

जब तक संसारमें शक्ति युगका प्रादुर्भाव नहीं हुआ था और मशीनोंसे उत्पादन करनेकी कलाका ज्ञान मनुष्यको नहीं था तबतक हस्तकौशलके द्वारा ही मनुष्यकी सारी आवश्यकतायें पूरी की जाती थीं।

इतिहास इस बातका साक्षी है कि हस्तकौशलके द्वारा कलात्मक उत्पादनके लिए भारतवर्ष संसारमें सबसे आगे था। यहाँके कारीगर अपनी कलात्मक कृतियोंके उत्पादनके लिये सारे संसारमें प्रसिद्ध थे।

मोहनजोदड़ोंकी खुदाईसे जो वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनसे यह सिद्ध होता है कि भारतवर्षमें सुमेरियन सभ्यताके समय अर्थात् आजसे पांच हजार वर्ष पहले कपड़ेके लिए रूईका उपयोग किया जाता था। कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें भी बंगालके बने हुए बढ़िया कपड़ेका उल्लेख मिलता है और यह आमतौरसे विश्वास किया जाता है कि मिश्रकी ममीज बंगाली मलमलमें ही लपेटी हुई पाई गई है।

प्लाइनी, अरबी यात्री सुलेमान, मार्कोपोलो और अंग्रेज यात्री राल्फ फिंच और अबुलफजलने बंगालके कपड़ेके उद्योगकी बहुत प्रशंसा की है। कई लेखोंसे यह पता चलता है कि सन् १६७९-८० में ढाकाकी मलमल सारे संसारमें अपनी प्रसिद्धि पा चुकी थी।

सन् १८३५ में बैन्स (Baines) ने रूईके उत्पादनके इतिहासमें लिखा है कि भारतके कुछ मलमलोंके विषयमें ऐसा सोचा जाता है जैसे यह मनुष्योंके द्वारा नहीं बल्कि परियोंके द्वारा बनाई हुई हैं। टैवर्नियर (Tavernier) ने सन् १६६० में लिखा है कि एक पौंड रूईका लगभग २५० मील लम्बा सूत काता जाता था और ५०० काउण्ट तकके धागेकी मलमल बनाई जाती थी। इसी कारण इसकी

उत्कृष्टता साबित करनेवाले इसके कई नाम रक्खे गये थे। जैसे दौड़ता पानी (Running water) हवासे बनी हुई (Bakt Hawa) शबनम शामकी ओस (Evening dew) इत्यादि।

खासतौरसे बंगालमें चार प्रकारकी मलमल बनाई जाती थी। (१) मलमल (२) डोरिया (३) चारखाना (४) जामदानी।

ढाकाका कपड़ा सुन्दरता तथा उत्कृष्टताके लिए संसारके सब कपड़ेको मात देता था जिसके लिये कवि मैथिलीशरणने लिखा है—

रक्खा नलीमें बांसकी जो थान कपड़ेका नया।
आश्चर्य अम्बाड़ी सहित हाथी उसीसे ढक गया।

भारतीय हस्त कौशलके कपड़ेका निर्यात—

सन् १६५७ में भारत, इंग्लैण्ड, हालैण्ड तथा फ्रांसको बढ़िया वस्त्रका बहुत बड़ी तादादमें निर्यात करता था। इङ्गलैण्डमें सबसे पहले ढाकाकी मलमल सन् १६६६ में भेजी गई और सन् १६७५ तक तो वहाँ यह कपड़ा बहुत प्रचलित हो गया था। मगर कुछ समय बाद वहाँ स्वदेशीका आन्दोलन उठा और सन् १७२० के करीब वहाँ भारतीय मालका आयात एकदम बन्द कर दिया गया। सन् १७५८ से फ्रांस तथा हालैण्डमें भी इस कपड़ेका जाना कम हो गया।

मगर इस उद्योगको सबसे बड़ा धक्का तो तब लगा जबकि अंग्रेजोंने बहुत ही चतुराईसे बंगालके हाथ करघेके इस कलात्मक उद्योगपर भारी कर लगा दिये। इन करोंकी विशालताका तभी अनुमान लगाया जा सकता है जब हम तीस वर्षोंमें वसूल किये गये करके रुपयोंकी संख्या २२,२८,३६,१५० पर दृष्टिपात करें।

अठारहवीं शताब्दीमें भारतीय कपड़ेका आयात बन्द करनेके लिये इंगलैंडमें कानून पास किये गये। एच० एच० विलसन नामक इतिहासकारने लिखा है कि भारतीय मालपर इंगलैण्डमें सत्तर और अस्सी रुपया प्रति सैकड़ा कर लिया जाता था। और अगर वे ऐसा नहीं करते तो मैनचेस्टर और पेसले की सब मिलोंको बन्द करना पड़ता। इसके अतिरिक्त उसने यह भी लिखा है कि भारत चूँकि अंग्रेजोंका गुलाम देश था इसलिए उन्होंने अपने देशके बने हुए मालसे इस देशको पाट दिया और उस प्रतिस्पर्धा में बंगालका यह महान कलापूर्ण उद्योग खतम हो गया।

बंगाल ही की तरह बनारसका कलापूर्ण साड़ी उद्योग आज भी विश्वकी कलाकृतियोंमें अपनी जोड़ नहीं रखता। यहाँके बने हुए कीमखाब तथा दूसरे कपड़ेकी आज भी संसारके बाजारोंमें बड़ी प्रतिष्ठा उठा है। इसके अतिरिक्त, मदुरा, महेश्वर, चन्देरी इत्यादि स्थान भी हस्तकौशलके कपड़ेके लिये बहुत प्रसिद्ध हैं।

मशीन युगका प्रारम्भ

भारतमें अंग्रेजोंके शासनका प्रारम्भ होनेके साथ ही साथ इस देशमें मशीन युगका सूत्रपात होने लगा। हाथसे तैयार किये हुए महंगे कपड़ेका स्थान मिलसे बना हुआ सस्ता कपड़ा धीरे-धीरे लेने लगा। इस परिवर्तनको बारीक दृष्टिसे अध्ययन करनेवाले कुछ अनुभवी पूँजीपतियोंका ध्यान धीरे-धीरे इस उद्योगकी तरफ आकर्षित होने लगा।

सबसे पहले सन् १८५४ में अहमदाबादके प्रसिद्ध व्यवसायी रायबहादुर रण छोड़लाल छोटालालने अपने अंग्रेज मित्र मेजर फुल्लजेम्सके साथ सलाह करके अहमदाबादमें एक मिल डालनेकी योजना बनाई। मगर आर्थिक कठिनाइयोंके कारण वह पूरी न हो सकी।

बम्बईमें कपड़ा उद्योगका विकास

इसी दरमियान सन् १८५४ में बम्बईके एक पारसी पूँजीपति श्री कावसजी नानाभाई दावरने बम्बईमें एक कपड़ेकी मिल स्थापित की। इसके पूर्व सन् १८१८ में बंगालमें भी एक कपड़ेकी मिल चालूकी गई थी। मगर उसका इतिहास बहुत धूमिल और अस्पष्ट है और वास्तवमें भारतीय वस्त्र उत्पादन उद्योगका प्रारम्भ सन् १८५४ से ही माना जाता है।

इसके पश्चात् सन् १८५८ में मि० लांडन नामक एक अंग्रेज उद्योगपतिने भरौंचमें एक सूत कातनेकी मिल खोली और इसके पश्चात् सन् १८५६ में रायबहादुर रणछोड़ लालने भी २५०० स्पिण्डल्सकी एक सूत कातनेकी मिल अहमदाबादमें स्थापित कर दी। इन मिलोंकी सफलताओंको देखकर बम्बई, अहमदाबाद तथा दूसरे स्थानोंके व्यवसाइयोंका ध्यान भी वस्त्र उद्योगकी ओर आकर्षित हुआ।



सर जे० एन० टाटा

शुरू-शुरूमें जो मिलें कातनेका काम करती थीं वे बुननेका नहीं करती थीं। मगर कुछ समयके पश्चात् ऐसी मिलें खुलने लगीं जिनमें कातने और बुननेके दोनों विभाग रहने लगे।

सन् १८५४ से १८६६ तक इस देशका कपड़ा उद्योग साधारणगतिमें अपनी उन्नति कर रहा। मगर सन् १८६३ में इस उद्योगके अन्तर्गत भारतीय उद्योगके पिता सर जमशेद नसरवान् ताताने प्रवेश किया।

लंकाशायरमें चार वर्षतक कपड़ा उद्योगकी व्यवहारिक तालीम लेकर सन् १८६६ में सर जम-

शेद ताता अपने देशको लौटे और इसी वर्ष चिन्चपोकली (बम्बई) में इन्होंने एक तैल मिलको खरीद कर उसमें सूत कातने और कपड़ा बुननेकी मशीनें लगा कर उसे स्पिनिंग और वीविंग मिलके रूपमें परिवर्तित कर दिया। जो कि बहुत थोड़े समयमें ही पश्चिमी भारतकी सबसे बढ़िया उत्पादन करनेवाली मिल बन गयी और सर ताताने उसे अच्छा मुनाफा लेकर बेच दिया।

इसके पश्चात् सर जमशेद ताताका दूसरा साहस सेन्ट्रल इण्डिया वीविंग एण्ड स्पिनिंग कम्पनीके रूपमें प्रकट हुआ। इस कम्पनीके संगठनमें तथा इसकी उत्पादन वृद्धिमें सर जमशेद ताताकी संगठन शक्ति, निपुणता, कार्य्यक्षमता तथा योग्य कार्य्यकर्ताओंके चुनावकी पद्धतिसे बहुत सफलता प्राप्त हो रही थी। कुछ समय पश्चात् इस उद्योगकी व्यवस्था के लिए एक नये व्यक्ति श्री बेज्जोनजी दादाभाईको चुना गया। कुछ ही समयमें यह मिल उसके शेअर होल्डरोंके लिए सोनेकी खदान साबित हुई। यह सर जमशेद ताताकी चतुरता तथा आदर्शोंका व्यापारिक क्षेत्रमें प्रथम प्रयास था। वास्तवमें इस प्रयाससे ताताके भाग्य तथा प्रसिद्धिकी नींव जम गई।

मिल उद्योगकी क्रमागत वृद्धिके साथ-साथ मिलमें काम करनेवाले मजदूरोंकी सुख सुविधाका प्रश्न भी सामने आया। सर जमशेद टाटा भारतमें सबसे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मुनाफेमें मजदूरोंकी हिस्सेदारीके सिद्धान्तको स्वीकार किया। मजदूरोंके लिए बोनस, प्राविडेण्ड फण्ड, उनके आमोद प्रमोद के लिए खेलके मैदान, पढ़नेके लिए स्कूल और पुस्तकालय तथा चिकित्साके लिए अस्पताल इत्यादि साधन शुरू करनेवाले भारतमें सबसे पहले व्यक्ति सर जमशेद नसरवान ताता ही थे।

मिल व्यवसायमें एजेन्सी प्रथाका जन्म

मिलोंके अन्दर प्रबन्ध संचालनके लिए एजेन्सी प्रथाका जन्म सन् १८६० में हुआ। तबसे यह प्रथा बराबर कार्य्य करती आ रही है। सबसे प्रथम कुछ व्यवसायियोंका एक संचालक मण्डल बनाया गया था। इसके सदस्य (१) श्री डब्ल्यू० एफ० हण्टर, (२) पी० स्कावेल (३) माणेकजी पेटिट (४) बेहरामजी जीजीभाई (५) इलियस डेविड सासून (६) बरजीवनदास माधवदास और (७) अरदेशर खुरशेद दादी थे। इस मण्डलके प्रथम अध्यक्ष श्री करसेल एण्ड कामा तथा जनरल मैनेजर मक्खनजी फ्रामजी बनाये गये।

मिल व्यवसायके प्रधान प्रवर्तक

कपड़ा मिल उद्योगके प्रधान प्रवर्तकोंमें श्री कावस नानाभाई दावर, रायबहादुर रणछोड़लाल छोटालाल तथा सर जमशेद ताताका उल्लेख हम पहले कर चुके हैं। इनके अतिरिक्त जिन लोगों ने उस कालमें इस उद्योगके विकासमें सक्रिय सहयोग दिया और नये नये मिलोंकी स्थापनाकी उनमें (१) श्री माणिक पेटिट, (२) मेरवान पाण्डया (३) सर दीनशा पेटिट, (४) नसरवान पेटिट, (५) वामन वाड़िया, (६) धरमसी पूंजाभाई, (७) तापीदास व्रजदास, (८) केशव नाईक, (९) खटाऊ

मकनजी, (१०) सर मंगलदास नाथू भाई, (११) जेम्सग्रीव्स, (१२) सर जार्ज कॉटन, (१३) मुरारजी गोकुलदास, (१४) मूलजी जेठा इत्यादि उद्योगपतियोंके नाम विशेष उल्लेनीय हैं।

जापानी प्रतियोगिताका प्रारम्भ

सन् १८५४ में बम्बईमें पहली कपड़ेकी मिल खुली उसके पश्चात् धीरे-धीरे इस उद्योगकी क्रमागत उन्नति होने लगी।

मगर सन् १८६५ में अमेरिकन गृह युद्धके एकाएक बन्द हो जानेसे बम्बईके व्यवसायिक और औद्योगिक जगतमें एक भारी भूकम्प आया, और बम्बईके सुप्रसिद्ध व्यवसायी प्रेमचन्द रायचन्दका पलड़ा उलट जानेसे बम्बईका सारा व्यवसायिक जगत् एक भयंकर खतरेके बीच जा पड़ा। पहली जुलाई सन् १८६५ का दिन बम्बई नगरके इतिहासमें सबसे भयंकर दुर्भाग्यका दिन था। उस एकही दिनमें कई बड़ी बड़ी फर्मोंके तख्ते उलट गये। जिसकी वजहसे क्रमशः बढ़ते हुए कपड़ा उद्योगको भी बहुत बड़ा धक्का लगा। फिर भी सन् १८९५ तक भारतके कपड़ा उद्योगमें बराबर तरक्की होती गई। मगर इसके बाद भारतके कपड़ा उद्योगमें धीरे धीरे शिथिलता आने लगी। इसका प्रधान कारण एक ओरसे समस्त भारतमें बढ़नेवाला प्लेगकी महामारीका व्यापक प्रचार था, और दूसरे इन मिलोंका जापानी प्रतियोगिताके अखाड़ेमें उतरना था।

सन् १८९५ के पश्चात् जापानके अन्दर नवीन जीवन और प्रबल उत्साहके साथ कई नये-नये कारखाने खोले गये। इस प्रकार वायु वेगसे प्रबल उत्साहके साथ काम करनेवाले जापानी कारखानोंकी प्रतियोगितामें भारतके कपड़ा उद्योगको बहुत धक्का पहुँचा। जापानने अपने सूतके साथ भारतीय सूतकी प्रतियोगिता करनेके लिए, चीनका बाजार बहुत उपयुक्त समझा। इस प्रतियोगिताके फलस्वरूप भारतके कपड़ा उद्योगको बहुत धक्का पहुँचा जिसकी वजहसे यहाँकी कई मिलें फेल होगईं, कई मिलें लिक्विडेशनमें जाकर फिरसे नवीन रूपमें प्रकट हुईं।

सन् १८५४ से १९२७ तक बम्बईमें ९७ मिलें कपड़ोंकी खुलीं। इनमेंसे ४५ मिलोंने लिक्विडेशनमें जाकर नवीन नाम धारण करके फिर अपना काम शुरू किया। १२ मिलें जलकर नष्ट हो गईं और १६ मिलोंने अपनी एजेन्सियाँ दूसरोंको दे दीं।

प्रथम महायुद्ध और कपड़ा उद्योग

सन् १९१४ में प्रथम यूरोपीय महायुद्धका प्रारम्भ हुआ जिसके फलस्वरूप भारतके बाजारोंमें विदेशी कपड़ेका आयात बन्द होजानेसे कपड़ेके भाव और उसकी खपत बहुत अधिक होगई। इस घटनाने यहाँके कपड़ा उद्योगके भाग्यको चमका दिया। सौ-सौ रुपयेके शेयर हजार-हजार रुपयेके होगये। जिसके फल स्वरूप बम्बई, अहमदाबाद, इन्दौर, उज्जैन, ग्वालियर इत्यादि कई स्थानों पर नवीन नवीन मिलोंकी स्थापना हुई।

मगर प्रथम महायुद्धके समाप्त होजानेके पश्चात् सन् १९२४से १९३७ तक यहाँके कपड़ा उद्योगपर जापानी प्रतियोगिताके फल स्वरूप एक भयङ्कर संकट कालका प्रादुर्भाव हुआ और यह खयाल किया जाने लगा कि अगर शीघ्रही स्थिति न संभली तो बहुतसी कपड़ा मिलोंका भविष्य अंधकारपूर्ण होजावेगा। इसी शिथिलताके समयमें बहुतसी बड़ी-बड़ी मिलोंकी मैनेजिंग एजन्सियां पारसी और गुजराती व्यापारियोंके हाथसे निकलकर मारवाड़ी व्यापारियोंके हाथमें आगई।

अहमदाबादमें कपड़ा उद्योगका विकास

कपड़ा उद्योगके विशाल केन्द्र अहमदाबादमें मिल उद्योगका प्रारम्भ सन् १८५९ में सबसे पहले रायबहादुर रणछोड़लाल छोटालालके द्वारा एक सूत कातने की मिलकी स्थापनाके द्वारा हुआ। रेलवे लाइनके न होनेसे इस मिलकी सारी मशीनरी खम्भातकी खाड़ीसे गाड़ियोंके द्वारा लाई गई।

इस मिलकी सफलताने दूसरे सेठों जैसे सेठ बेचरदास लशकरी, सेठ करमचंद प्रेमचंद, सेठ मनसुखभाई भागूभाई और अन्यों को सन् १८७८ में और मिलोंको खोलनेके लिये प्रेरित किया। सन् १९०० तक यहाँ पर २७ मिलें होगई। लगभग सभी मिलें सूत काततीं थीं कपड़ा कोई नहीं बनाती थीं। इस समय चीनही भारतीय सूतका खास बाजार था और अहमदाबाद वहाँ पर बहुत माल भेजा करता था तथा बाकीका सूत हेण्डलूमके उद्योगोंको बेच दिया जाता था। कुछ मिलोंने कपड़ा बनाना भी प्रारंभ कर दिया था तथा कपड़े धोनेके विभागभी खोल दिये थे। बीसवीं शताब्दीके प्रारंभमें सेठ लालभाई दलपत भाई, मोतीलाल हीराभाई, बालाभाई दामोदर दास, जीवन लाल गिरधारीलाल, मफतलाल गागलभाई और जेशीन्ग भाई अजामशीने कितनीही मिलें लगाई और सन् १९१० तक कुल मिलें लगभग ५२ हो गई। सन् १९२३ में एक मिलने बढ़िया कपड़ा बनाना प्रारंभ कर दिया जो कि उच्च तथा मध्यम श्रेणीके लोगोंके लिये उपयुक्त था। इस प्रारंभिक साहसके पश्चात् तो बहुतसी मिलोंने बढ़िया कपड़ा बनाना प्रारम्भ कर दिया जिससे कि ब्रिटेन से कपड़ा मँगाने की आवश्यकता नहीं रही। यहाँ पर कितनीही प्रकारका कपड़ा बनाया जाता है और यह सुनिश्चित रूपसे कहा जा सकता है कि भारतमें एकभी ऐसा केन्द्र नहीं है जो कि अहमदाबादके भिन्न भिन्न भाँतिके कपड़ोंसे स्पर्धा कर सके।

प्रारंभिक युग

जैसा कि ऊपर बतलाया गया है प्रथम चालीस वर्षोंके समयमें हेन्डलूमके उद्योग तथा चीन की सूत की माँगने इस उद्योगको सहारा दिया। बीसवीं सदीके प्रारंभिक बीस वर्षोंमें बंगालके हिस्से होनेके कारण इस उद्योगको भारतमें स्वदेशी भावनाके फैलनेसे बहुत सहायता मिली। इस भावनाको दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी तथा कांग्रेससे बहुत सहारा मिला जिससे कि इस उद्योगको बहुत लाभ पहुँचा। प्रथम विश्व युद्धने भी इस उद्योगके विकासमें बहुत सहायता दी क्योंकि इस समय विदेशोंसे माल आना बंद हो गया था जिससे कि यहाँ कि सारी जरूरतोंको यहींके मिलोंसे पूरा करना

पड़ा। उस समय मिलोंको दो पालियों चलानी पड़ी और तभीसे दो पालीकी प्रथा प्रचलित हुई। १९२० तथा १९३० में महात्मा गांधी तथा कांग्रेसका बहुत प्रभाव बढ़ गया, जिससे भी इस उद्योगको बहुत सहायता मिली और १९३० में संरक्षणकी माँगको भी सरकारके स्वीकार करनेसे कॉफी मदद रही। द्वितीय विश्वयुद्धके समय भारतही पूर्वी देशोंका शस्त्रगृह था इसलिये इस उद्योगको सेनाके लिये बहुत-सा कपड़ा देना पड़ता था। इस उद्योग को लड़ाईके कुछ समय तक तो अपने उत्पादनका २/५ भाग सेनाको देना होता था जिससेकि नागरिकोंके लिये कपड़ेकी कमी आ गई क्योंकि इस समय जापान तथा ब्रिटेनसे माल आना एकदम बंद होगया था। रहन सहनकी मँहगाईके साथ कपड़ेकी कमीने सबको कीमतोंमें वृद्धि होनेके लिये अग्रसर किया। यह उद्योग कितनेही उतार चढावके बीचमेंसे गुजरा, लेकिन दोनों विश्व-युद्धोंने इसकी उन्नति करनेमें काफी मददकी और यह उद्योग दिन पर दिन उन्नति करता गया।

आज अहमदाबाद ६५० लाखगज कपड़ेका प्रतिमास उत्पादन करता है जो सारे भारतवर्षके उत्पादनका चौथा हिस्सा है। कुल मिलाकर यहां इस उद्योगमें ५०००० रुईकी गांठोंकी प्रतिमास खपत होती है। एक लाख तीस हजार मजदूर इस उद्योगमें यहाँपर लगे हुए हैं। जिनका वेतन कमसे कम १४० रु० प्रतिमास पड़ता है।

अहमदाबादके कपड़ा मिल-मालिकोंकी संगठन शक्तिकी भी सब दूर प्रशंसा है। ये लोग बड़े परिश्रमी और अपने कामकी खुद देखभाल करने वाले हैं। देश और विदेशमें किस प्रकारके मालकी आवश्यकता है इसकी जांच करनेमें वे बड़े निपुण हैं और उसी रुचिके अनुसार वे अपने यहां कपड़ेका उत्पादन करवाते हैं।

अहमदाबादके मिल उद्योगको उपयुक्त कलानिपुण कारीगर प्रारम्भसे ही उपलब्ध रहे हैं। पहले यह कार्य यूरोपियन लोगोंके द्वारा होता था। परन्तु स्वतंत्रताके बाद इन विदेशियोंकी संख्या बहुत कम होगई और उनके स्थानपर अब यहींके कलाशास्त्री रक्खे जाते हैं। कलाशास्त्री तैयार करनेके लिए यहां शिक्षणकेन्द्र भी बने हुए हैं जो सरकार और मिलमालिकोंकी सहायता से चलते हैं।

अहमदाबादकी कपड़ेकी बिक्रीकी पद्धति भी अनूठी है और दूसरे केन्द्रोंके लिए उदाहरण रूप है। यहां पर मस्कती क्लॉथ एसोसिएशन, तथा पंचकुवा क्लॉथ एसोसिएशन नामक दो कपड़ेके व्यापारकी एजेन्सियां बनी हुई हैं। इन्हीं एजेन्सियोंके द्वारा बाहर कपड़ा भेजा जाता है, विदेशोंमें इन एजेन्सियोंकी काफी इज्जत है। प्रत्येक व्यावारिक झगड़ा पंचोंके द्वारा सुलझाया जाता है। सन् १९४३ में कपड़े पर कण्ट्रोल होजानेके बाद एक मस्कती संघ ही रह गया जो सब दूर माल भेजता था और इसने बहुत योग्यताके साथ इस कठिनाईको हल किया।

मजदूरोंकी कठिनाइयोंको दूर करनेके लिए सन् १९१८ से यहांपर मिल मजदूरसंघ बना हुआ है। अहदाबादके मिल मालिक संघ और मिल मजदूर संघने सब झगड़ोंको आपसमें बैठकर निपटानेके

सिद्धान्तको स्वीकार किया और बहुतसे झगड़े इन पंचायतोंके द्वारा निपटाये गये। सन् १६३७ तथा १६४८ के कानूनोंके अनुसार मालिकों तथा मजदूरोंके झगड़ोंका निपटारा औद्योगिक न्यायालयोंमें होने लगा। पर सन् १६५२ में इन दोनों संघोंने स्वेच्छासे पंचायती निर्णय करनेका समझौता कर लिया।

सन् १९५३ की प्रथम जनवरीको अहमदाबादमें ६७ कपड़ेकी मिलें काम कर रही हैं। जिनमें १६,८६ ६४८ स्पिण्डल्स और ४१,२६४ लूम्स लगे हुए हैं और जिनका वार्षिक उत्पादन १००० लाख गज प्रति वर्ष है।

बंगालके कपड़ा उद्योगका विकास

पश्चिमी बंगालमें सबसे पहले सन् १८१८ में ग्लोस्टर कॉनर मिलकी स्थापना हुई। इसके पश्चात् इस प्रान्तमें धीरे धीरे इस उद्योगका विकास हुआ। इस समय वहाँपर सोलह बुनने और कातने की मिलें, छ सिर्फ कातनेकी मिलें तथा सत्ताइस पावर लूम फैक्टरियाँ काम कर रही हैं। इन सब फैक्टरियोंमें चार लाख पचास हजार स्पींडलस और दस हजार लूम्स लगे हुए हैं। इनके अतिरिक्त एक लाख पचीस हजार हैण्डलूम्स भी वस्त्र उत्पादनका कार्य कर रहे हैं। मिलोंमें लगभग ३५,००० मजदूर और हैण्डलूम उद्योगमें ३ लाख मजदूर काम कर रहे हैं। इस कार्यके लिए पश्चिमी बंगालको लगभग १ लाख ४० हजार रूईकी गाँठोंकी प्रतिवर्ष आवश्यकता होती है।

मिलोंमें १७ सौ लाख गज कपड़ा तथा ४ सौ लाख पौण्ड सूत प्रतिवर्ष बनाया जाता है और लगभग ५ सौ लाख गज कपड़ा हैण्डलूमोंमें बनता है। पावर लूमोंसे करीब १५० लाख कपड़ा तैयार होता है। इस प्रकार बंगालके कपड़ा उद्योगसे २३५२ लाख गजके आस पास प्रतिवर्ष कपड़ेका उत्पादन होता है।

सन् १६५१ की जन गणनाके अनुसार पश्चिमी बंगालकी जन संख्या २ करोड़ ४८ लाख है। और अगर वस्त्रके उद्योगका विभाजन किया जाय तो प्रति व्यक्ति १० गज कपड़ा भी कठिनाईसे उपलब्ध होता है जो कि आवश्यकतासे बहुत कम है। अगर प्रति व्यक्तिको औसत १५ गज कपड़ेकी आवश्यकता समझी जाय तो करीब १४ सौ लाख गज कपड़ेकी कमी पड़ती है। इसका मतलब यह हुआ कि इस कपड़ेकी पूर्ति दूसरे प्रान्तोंसे की जाती है।

इस चीजको अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि बंगालमें कपड़ेकी मिलोंकी कार्य क्षमता संतोष प्रद नहीं है। इसलिए इस उद्योगके विकासके लिए इस प्रान्तमें बहुत बड़ा क्षेत्र है। इसके अलावा यहांका उद्योग पूर्वी पाकिस्तान वर्मा, मलाया और दूसरे पूर्वी देशोंको बहुत माल निर्यात कर सकता है।

स्वदेशी हलचल जिसका कि बीजारोपण सर्व प्रथम बंगालमें हुआ था। उसने इस उद्योगके विकासमें बहुत सहायता पहुँचाई। इस उद्योगकी लगातार उन्नतिके लिए जनताकी स्वदेशी भावनाको श्रेय अर्पित करना चाहिए।

बंगाल प्रान्तके अन्दर वस्त्र उद्योगके विकासमें कई सुविधाएँ हैं और कई कठिनाइयाँ भी। कलकत्तेके पासही कोयलेकी खदानोंके होनेसे इसको कम खर्चमें कोयला प्राप्त होता है। जिससे कि सभी प्रकारकी शक्ति प्राप्त की जा सकती है। बंगालका तर वातावरण तथा अच्छी आबहवा भी इस उद्योगके विकासके लिए बहुत सहायक है। सस्ते मजदूरों कीबहुतायतने भी यहाँ इस उद्योगको लाभ पहुँचाया है।

मगर इन सुविधाओंके साथ हमें उन कठिनाइयोंको नहीं भूल जाना चाहिए जो कि इस उद्योग की उन्नतिमें यहाँ बाधक हैं। पहली बाधा बंगालका रूईके उत्पादन करनेवालेसे प्रांतोंसे बहुत दूरीपर होना है। इससे दूसरे प्रान्तोंसे रूई मँगानेमें ब्याज, किराया तथा बीमेंका अधिक खर्च लगता है और रूई महँगी पड़ती है। अमेरिकासे जो रूई आती है। वह भी बम्बईमें उतारी जाती है। जिससे ५०) पचास रुपये प्रति केन्डी अधिक खर्च आता है।

दूसरी कठिनाई बंगालके कपड़ा मिलोंका विकास दूसरे प्रान्तोंके मुकाबिलेमें तुलनात्मक दृष्टिसे कम हो पाया है यद्यपि भारतवर्षमें सबसे पहली कपड़ेकी मिल यहीं स्थापितकी गई, फिर भी विकासकी दृष्टिसे जूट प्रधान भूमि होनेके कारण कपड़ा उद्योगका यहां पूरा विकास न हो सका। यहाँ कि मिलोंको नई-नई मशीनें मँगवा कर लगानेमें सफलता न हुई। जिसकी वजहसे ये मिलें अमितव्ययी, तथा असंतुलित हो गई है।

यह एक आश्चर्यकी बात है कि एक मिलको छोड़ कर सारे बंगालकी मिलोंमें रंगने, धोने, छापने, और सफाई लानेकी मशीनें नहीं हैं, जो कि निर्यात करने लायक कपड़ेके लिए बहुत ही आवश्यक है। इसके अतिरिक्त बंगालके वस्त्र उद्योगके मजदूर भी कार्य करनेकी क्षमता भी दूसरे केन्द्रोंके मुकाबलेमें बहुत कम है और इससे भी उत्पादनके उपर बहुत असर पड़ता है।

उन्नतिके लिए सुझाव

लड़ाईकेपश्चात मिलोंकी योजना बनानेवाली समितिने यह सुझाव रक्खा कि कमसे कम २७ हजार स्पीण्डल्स तथा ६ सौ लूमवाली मिल एक मितव्ययी मिल समझी जासकती हैं। इस दृष्टिसे देखा जाय तो बंगालमें केवल ४ मिलें ही मितव्ययी हैं। इनमें भी नई मशीनें लगानेकी अत्यन्त आवश्यकता है। संतुलित विकास तथा नियमित उन्नतिके लिए बंगालकी अमितव्ययी मिलोंको मितव्ययी मिलोके रूपमें बदलना होगा। उन मिलोंको मित व्ययी मिलोंमें बदलनेके लिए तथा इनमें नई मशीने लगानेके लिए करीब २ सौ या ३ सौ करोड़ रुपयोंकी आवश्यकता है यह अर्थ समस्या सबसे कठिन समस्या है जिसकी वजहसे इसकी उन्नतिमें रुकावट पड़ रही है। जब तक सरकार और बंगालके उद्योगपति इस समस्याको हल नहीं कर पाते तब तक यहाँके वस्त्र उद्योगकी नींव मजबूत पायोंपर जमना कठिन है।

दूसरी आवश्यक चीज इस उद्योगके लिए यह है कि अधिक और सस्ता उत्पादन करनेके लिए विचारपूर्ण विश्लेषणकी योजना बनाना तथा मजदूरोंकी कमाईके साधन बढ़ाना। यह बड़े अफसोसकी बात

है कि संचालकों तथा मजदूरोंके बीच इस विषयमें कोई समझौता नहीं होता जो कि इस उद्योगकी उन्नति के लिए बहुत ही आवश्यक है। बंगालके लिए दूसरे केन्द्रोंसे मुकाबला करना बहुत ही कठिन होगा जब तक वहाँके मजदूरोंकी काम करनेकी क्षमतामें वृद्धि न हो।

फिर भी यह कहा जा सकता है कि यदि अनुकूल परिस्थिति रही तो इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं कि बंगालका यह उद्योग देश तथा विदेशमें भली भाँति मुकाबला कर सकता है और अपने भविष्य का उज्वल बना सकता है सन् १९४७ से सन् ५२ तकके आँकड़ोंको देखनेसे इस उद्योगको उन्नतिका पता लगता है।

विभाजन पश्चात् बंगालमें इस उद्योगकी स्थिति इस प्रकार है।

वर्ष	मिलोंकी संख्या	लागतपूँजी	लूमोंकी सं०	स्पीन्डलों की संख्या	कपड़ेका उत्पादन गजमें
१९४७-४८	२९	३७६३११२६	८९०९	३८९७२६	१५७६ लाख
१९४८-४९	२६	४१,१५४१८७	९०७०	३९३९०८	१७४१ लाख
१९४९-५०	३६	४२९००५४५	९११८	३९४५३६	१४६६ लाख
१९५०-५१	३३	५,३४,६६,४७५	९३६२	४३२६३५	१४५१ लाख
१९५१-५२	३६	५,६३,८१,६८०	९८६२	४६६८३०	१६०० लाख

दक्षिणी भारतमें कपड़ेके उद्योगका विकास

दक्षिणी भारत में इस समय ११४ मिलें कार्य कर रही हैं जिनमें २४ लाख स्पिन्डल्स तथा १४२३० लूम लगे हुए हैं तथा इनमें औसतन ७५००० मजदूरों से अधिक प्रतिदिन कार्य करते हैं। कुल १८½ करोड़ रुपये की पूँजी इन पर लगी हुई हैं। दक्षिणी भारत की उत्पादन क्षमता कुल भारतकी उत्पादन क्षमताका पाँचवा हिस्सा है परन्तु इस हिस्सेमें इस उद्योगका विस्तार हाल ही में हुआ है और आश्चर्यकी बात तो यह है कि इसका सबसे अधिक विकास सन् १९३०-३३ में हुआ जब कि चारों ओर भाव गिरे हुए थे।

यद्यपि जैसा कि ऊपर कहा गया है इस उद्योग की अधिक उन्नति १९३० से ही प्रारंभ हुई फिर भी इसके पहले कुछ मिलें चल रहीं थीं। इन मिलोंके निर्माण करने वालोंके अनुभव और चतुर व्यवस्थापन कार्यकी वजहसे ही बादके वर्षोंमें इस उद्योगका विकास हुआ तथा सफलता प्राप्त हुई।

मद्रासके दक्षिणमें प्रथम मिल

सन् १८८३ में सबसे पहले मद्रासके दक्षिणमें टिन्नेवेली मिल्स, कं० लि० का निर्माण दो भाई एण्ड्र्यू और फ्रेन्क हार्वेने किया जिन्होंने कि १८८० में A & F. Harvey (ए. एण्ड एफ हार्वे) नामक फर्म खोली थी। ये इस समय भारतीय रूईको इंग्लैंड वगैरह भेजते थे और इस व्यापारमें इनकी काफी इज्जत होगई थी। इसके पश्चात् इन्होंने दक्षिणकी रूईको विदेश भेजनेके बजाय यहीं पर खपानेकी

सम्भावना पर विचार किया। इस तरह ये इस उद्योगमें अगुआ रहे। और उन्होंने भारतमें पूँजी प्राप्त करनेके लिये भी बहुत बड़ी कठिनाईका सामना किया और जिसको कि इन्होंने भारतीय धनसे सहायता देनेकी सोची थी उसको अन्तमें फिर बहुत कठिनाईके साथ ब्रिटिश धनसे सहारा देना पड़ा।

सन् १८८० के प्रारंभमें रेलवे लाइन इस मिलसे तीस मीलकी दूरी परही समाप्त होगई थी जो कि पश्चिमके जंगलों में स्थित था। इस मिलको जल-चक्कीसे चलानेका प्रस्ताव रक्खा गया जो कि उस समयके इन्जिनियरिंगके ज्ञानके अनुसार बहुतही खतरनाक कार्य समझा जाता था। मशीनरीका हर एक हिस्सा इग्लैंडसे जहाजोंके द्वारा मँगवाया गया और टुटीकोरिनकी खाड़ीमें उतारा गया, क्योंकि उस समय बन्दरगाहोंकी किसी प्रकारकी सहुलियतें नहीं थीं, और वहाँसे टिन्नेवली तक रेलमें भेजा गया तथा वहाँसे बैलगाड़ियोंमें टेढ़ेमेढ़े रास्तोंसे लाया गया। सन् १८८५ में १०००० स्पीन्डल कार्य करने लगे इसके पहले रिंग स्पीन्डल लगे हुए थे जिनके ऊपरकी अभीभी कोई खोज नहीं हुई है। वह इनके साहस तथा भावना का प्रतीक है।

दी मदुरा मिल्स कम्पनी

उपरोक्त मिलके मालिकोंका एकही मिलसे उत्साह समाप्त नहीं हुआ तथा उन्होंने दो वर्षसे पहलेही टुटिकोरिनमें नये मिलका निर्माण करना प्रारंभ कर दिया और अगले तीन वर्षोंके दरमियानमें मदुराईमें मदुरा मिल्स् कम्पनीका निर्माण कर दिया। इस प्रकारसे दस वर्षके समयमें एन्ड्रयू और फ्रेन्क हार्वेके अधिकारमें तीन मिलें कार्य करने लगीं जो कि सन् १६२६ के आस पास एक मिलमें सम्मिलित कर दी गईं और जो कि आज मदुरा मिल्स् कम्पनी लिमिटेडके नामसे प्रसिद्ध है।

जबकि हमने मद्रासमें सबसे पहले मिलोंके निर्माण करनेवाले अगुओंकी कठिनाईयोंको खास मिल खोलनेमें जो अनुभव हुए वे बतलाये तो हमको यह उम्मीद करना चाहिये कि वैसा ही तथा कदाचित् और भी कठिन समस्याओंका, बकिंघम तथा कर्नाटक मिल्स, मलाबार स्पीनींग एण्ड वीवींग मिल और बंगलोर उलन कॉटन मिलका निर्माण करनेमें मेसर्स बिनी एण्ड कं० को सन् १८६४ में, सामना करना पड़ा होगा।

इस प्रकार प्रारंभ होनेके पश्चात् सन् १६३० तक धीरे-धीरे तथा नियमित रूपसे इस उद्योगकी उन्नति तथा विस्तार होता रहा परन्तु इसके पश्चात् इसके विस्तारके कोई चिन्ह नजर नहीं आये जब तक कि बादमें कोयम्बेटोर स्पीनींग एण्ड वीवींग क० लि०, कालीस्वरार मिल्स् लि०, कम्बोडिया मिल्स् लि०, बसन्त मिल्स् लि० इत्यादि कोयम्बेटोरमें प्रारंभ हुए तथा बकिंघम एण्ड कर्नाटिक कं० लि० मद्रासमें शुरू की गई तथा कोयल पत्तीमें लायल मिल्स् और मदुराईमें श्री मीनाक्षी और महालक्ष्मी मिल प्रारंभ किये गये।

दक्षिण भारतके चार जिले कोयम्बेटोर, मदुराई, रामनद और टिन्नेवलीमें मिलों तथा जीनींग फैक्टरियोंके जालकी तरह फैल जानेसे वहाँके मनुष्योंकी आर्थिक स्थितिपर क्या प्रभाव पड़ा उसके विषयमें

इस भाँति-भाँतिसे विचार कर सकते हैं। आज केवल मजदूरही ऐसे नहीं है जो कि अपनी जीविकाके लिये मिलों तथा जीनींग फैक्टरियोंकी उन्नति पर निर्भर हैं बल्कि हजारों किसान जोकि रूई पैदा करते हैं, जुलाहे जोकि मिलके सूत पर निर्भर रहते हैं और व्यापारी तथा मध्यम श्रेणीके लोगभी अपनी जीविकाके लिये इस उद्योगकी उन्नति पर निर्भर रहते हैं। यह बहुतही गर्वकी बात है कि जो सूत कातनेके मिल हैं, वे केवल रंगीन सूतही कातते हैं और जुलाहे तथा रंगरेजोंसे मुकाबला नहीं करते जो कि भारतमें कितनी पीढ़ियोंसे अस्तित्व रखते हुए आये हैं और जो कि भारतकी आर्थिक नीति पर कितनेही आनेवाले वर्षों तक प्रभाव डालते रहेंगे।

प्रारंभिक कठिनाइयाँ

तो भी इस उद्योगका विकास तथा विस्तार होना किसी भी हालतमें सरल नहीं था। प्रारंभिक वर्ष कठिनाइयोंसे परिपूर्ण थे क्योंकि सब मजदूर जोकि गाँवोंसे लाये गये थे उनके लिये यह कार्य एकदम नया था और इस वजहसे व्यवस्थापकोंके कार्यमें काफी कठिनाई आई क्योंकि दुर्घटनायें बहुत होतीं थीं। इसके अलावाभी जापान तथा लंकाशायरके कपड़ेसेभी बहुत मुकबला चलता था और जबतक कम्बोडिया का तरीका अख्तियार नहीं किया तब तक बहुत कठिनाईका समय गुजरा और इसके पश्चात् जितने भी मिल खुले उनको इन पिछले अनुभवोंका बहुत लाभ हुआ। आज कम्बोडियाकी रूई भारतकी रूईका सबसे बढ़िया नमूना है और अधिकतर मदुराई तथा कोयम्बेटोरके जिलेमें पैदा की जाती है और इसी वजहसे कोयम्बेटोरमें सब मिलें एकत्रित सी होरहीं हैं।

जल विद्युत् शक्ति की उपलब्धता

मद्रास सरकारके द्वारा पाइकारा तथा मेट्टुरमें जल विद्युत् शक्तिका पैदा करना तथा उसको सस्ते भावों में देना दक्षिणमें इस उद्योगकी उन्नतिके लिये दूसरा कदम था। सन् १९३० तक दक्षिणमें दस मिलोंसे भी कम थीं परन्तु सन् १९३८ तक लगभग ५० मिलें सारे मद्रास प्रान्तमें प्रारंभ होगईं। सिर्फ कोयम्बेटोरमें ही इस समयमें २७ मिलें स्थापित की गईं। कितनेही कारणोंसे कोयम्बेटोर इस उद्योगके लिये बहुतही उपयुक्त तथा आदर्श स्थान साबित हुआ क्योंकि कम्बोडियाकी रूई यहीं पैदा की जाती है, कताई के लिये यहांकी आबहवा बहुत सुन्दर है तथा स्थानीय मजदूर बहुतायतसे प्राप्त हो सकते हैं। सरकारने सस्ते भावोंपर बिजली दी तथा सिंचाईके साधन बढ़ाये जिससेकी बेकार पड़ी हुई जमीन भी काममें आने लग गईं। जल विद्युत शक्ति पैदा की तथा इसको काममें लेनेके लिये मालिकोंको बिजलीके सामान खरीदनेके लिये आर्थिक सहायताभी दी। चारों ओर भावोंमें कमी होगई थी जिससेकी रूईकी कीमतभी बहुत गिर गई थी परन्तु सस्ती मशीनों तथा सरकारकी ओरसे सस्ती बिजलीने सबको ऐसी स्थितिमें भी नई योजनायें बनाने के लिये प्रोत्साहित किया। वास्तवमें वे मनुष्य बहुतही साहसी तथा दूरदर्शी होंगे जिन्होंने ऐसी स्थितिमें भी अपनी पूँजीको खतरेमें डाली और कितनेही वर्षों तक वे अपनी लागत पूँजीका अच्छी तरह लाभ न उठा सके।

वास्तव में यह उद्योग सन् १६२६ से १६३६ तक बहुतही खतरनाक समयमेंसे गुजरा। ब्रिटेन, जापान तथा चीनके साथ बहुत मुकाबला चल रहा था और खास तौरसे चीन और जापान, इस समय इस उद्योगकी रक्षाके लिये हलचल होरही थी। स्पीन्डलोंकी वृद्धिसे तथा हेन्डलूमका निर्यात बंद होजानेसे रूई सूतमें अन्दरूनी प्रतिस्पर्धाभी बहुत चल रही थी। इस अन्दरूनी प्रतिस्पर्धाके साथ-साथ सन् १६३२ में ब्रिटेन, जापान तथा चीनका सूत इतना आने लग गया था कि यहाँ की मिलोंको २० काउन्टका सूत तैय्यार करना तो लगभग बंद करना पड़ा और ४० या इससे अधिक काउन्टका सूत बनानेमें अपने आपको व्यस्त करना पड़ा। इस उद्योगने अपने सूतके लिए विदेशोंमें बाजार बढ़ानेके लिये प्रयास किया और सन् १६२८, से १६३३ तक मिस्र, अरब, टर्की, परशिया, एबीसीनिया, अलबीनिया, साइप्रस, पेलेस्टाइन, रूमानिया इत्यादिमें अपने प्रतिनिधि भेजे, परन्तु जापानी प्रतिस्पर्धा इसकी उन्नतिमें बहुत घातक सिद्ध हुई।

विशेष चुंगी निर्धारित करने वाली सभा

भारत सरकारने सन् १६३२ और १६३५ में विदेशी सूत तथा कपड़ेपर संरक्षण कर लगानेके प्रश्न पर विचार करनेके लिये एक विशेष चुंगी निर्धारित करनेवाली कमेटीकी स्थापनाकी परन्तु दुर्भाग्यसे इस कमेटीके द्वारा सूत कातनेवाले मिलोंका अस्तित्व स्वीकार ही नहीं किया गया जबकि प्रत्येक मिलके लिये संरक्षणकी आवश्यकता थी इसके फलस्वरूप कुछ मिलोंका सिर्फ लूम लगानेकी ही ओर झुकाव रहा जिससे हेन्ड लूमके जुलाहोंपर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा।

कुछ मिलोंने भिन्न भिन्न भाँतिका उत्पादन करनेके प्रयासमें बनियायिन, मोजे इत्यादि होजियरी सामान तथा कुछने विशेष कार्यके लिये सूत तैयार करके भेजना भी प्रारम्भ कर दिया।

सन् १६३८ में चीन जापान युद्ध तथा १६३६ में द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होनेसे सब विदेशोंका माल आना बन्द सा ही हो गया। इस विस्फोटसे भारतीय उद्योगको शांति मिली। सेना तथा लड़ाईकी कपड़ेकी माँगको पूरा करनेके लिये मिलोंको दो-दो तीन-तीन पालियाँ चलानी पड़ी। इससे सूत तथा कपड़ेकी बहुत कमी हो गई यहाँ तक कि मिल स्वदेशी माँगको पूरा न कर सके और कपड़ेके भाव बहुत ऊँचे हो गये।

हेण्ड लूमके जुलाहोंका भविष्य

हेन्डलूमके जुलाहोंकी स्थिति मिलके मजदूरोंसे तुलनात्मक दृष्टिसे खराब है। मिलके सूतकी कीमत बढ़नेसे तथा मिलके कपड़ेसे प्रतिस्पर्धा होनेसे इनके लाभकी गुंजाइश बहुत कम रह गई है। मिलके कपड़ेके मुकाबलेमें इनका सारा करीब करीब धन्धा समाप्त हो गया। यह अनुमान किया जाता है दक्षिण भारतमें १२ लाख जुलाहे हेन्डलूमके उद्योगमें कार्य करते हैं जबकि मिलोंमें इसके चौथाई मजदूर भी

नहीं हैं। तो भी मिलके मजदूर इनसे अधिक अच्छे ढंगसे अपनी जिन्दगी बसर कर रहें हैं तथा ८०, प्रतिशत जुलाहे जो कि पूरे समय तक इसका कार्य करते हैं वे बहुत ही गरीबीसे अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इन वर्षोंमें लगातार अनावृष्टिके कारण खाद्य पदार्थोंकी कीमते अधिक हो गई हैं और इसके फलस्वरूप विद्युत् शक्ति सिर्फ सूतके उत्पादन तक ही सीमित करदी गई है जिससे कि इनके जीविका चलाने के साधन सीमित हो गये हैं। इन दिनोंमें इन जुलाहोंको पर्याप्त मात्रामें सूत मिलना मुश्किल हो गया था और इनकी समस्या वास्तवमें जटिल बन गई थी।

सब प्रकारके प्रति बन्धोंके हटानेके बाद यह उद्योग प्रथम पंचवर्षिय योजनामें १६४० लाख पौंडके योजित लक्ष्यका पूरा करनेमें तत्पर है। हैन्डलूमके जुलाहेको अब पर्याप्त मात्रामें सूत मिलनेकी प्रत्येक सम्भावना नजर आती है। वास्तवमें माल अधिक होनेकी सम्भावना हैं ऐसे आसार नजर आ रहे हैं कि जापान फिरसे अपने विदेशी बाजारोंको हथियानेका प्रयत्न कर रहा है और जैसी स्थिति १९३०-३५ में देखी गई थी वैसी फिरसे प्रचलित हो जावेगी अगर केन्द्रीय सरकार अपनी वर्त्तमान सूतको निर्यातन करनेकी नीति पर अटल रहेगी। इस उद्योगको अपने उत्पादनका कुछ हिस्सा निर्यात करनेकी आज्ञा मिलनी चाहिये जिससे कि यह अपना बाकीका उत्पादन हेन्डलूमके जुलाहोंको सस्ते भावोंमें दे सकें।

इस उद्योगका भविष्य ऐसी छोटी छोटी बातोंपर निर्भर है फिर भी इसकी उन्नति सम्भव हो सकेगी अगर मजबूत आर्थिक नीति पर आधारित धीरे धीरे नियमित रूपसे उन्नतिकी जावे।

मध्यभारतमें वस्त्र उद्योगका विकास

भारतवर्षमें मध्य भारत एक महत्वपूर्ण रुईकी पैदावार करनेवाला प्रदेश है। इसलिए कच्चेमाल की सरलतासे प्राप्ति तथा सरकारके सहयोगने बहुतसे व्यापारियोंको वस्त्र उद्योगके लिए आकर्षित किया।

सबसे पहले सन् १८६६ में इन्दौरके महाराजा सरतुकोजी राव द्वीतीयने इन्दौरमें स्टेट मिलकी स्थापना की। इससे पता चलता है कि सुदूर अतीतसे ही, जबकि समग्र भारतमें दस बारहसे अधिक कपड़ेकी मिलें नहीं थीं इस प्रान्तमें मिल उद्योगका श्रीगणेश हो चुका था। उसके पश्चात् सन् १८६६ में सेठ नजर अलीने उज्जैनमें नजर अली मिलकी स्थापना की।

मगर वास्तविक उन्नतिका श्रीगणेश सन् १९०९ से हुआ जबकि इन्दौरके रावराजा सरसेठ हुकुम चन्द और बम्बईके सेठ करीमभाई इब्राहीमने मिलकर इन्दौरमें मालवा यूनाइटेण्ड मिलकी स्थापना की।

इसके पश्चात् सन् १९१२ में उज्जैनमें महाराज माधवराज सेंधियाके सहयोगसे झालरा पाटन के सेठ विनोदी राम बालचन्दने दी विनोद मिल्स लि० की स्थापनाकी और सेठ हुकुमचन्दने सन् १९१४ में दी हुकुमचन्द मिल्सकी स्थापना की।

उधर ग्वालियरमें सन् १९२१ में भारतके सुप्रसिद्ध उद्योग पति मेसर्स बिड़ला ब्रदर्सने "जयाजी राव कॉटन मिल्स" के नामसे एक विशाल कॉटन मिलकी स्थापना करके मध्य भारतमें इस उद्योगको चार चान्द लगा दिये। आज यह मध्यभारतमें सबसे बड़ी और समग्र भारतकी प्रमुख कपड़ा मिलोंमेंसे एक है। जिसमें १५५५ लूम्स तथा ५६१८४ स्पिण्डल्स लगेहुए हैं और ७००० मजदूर प्रतिदिन काम करते हैं।

सन् १९२५ में इन्दौरके प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० रायबहादुर कन्हैयालाल भण्डारीने दी नन्दलाल भण्डारी मिल्सकी स्थापना की।

इस प्रकार क्रमागत उन्ननि करते हुए मध्यभारतने आज समग्र भारतमें लूल्सकी संख्यामें तीसरा स्थान और स्पिण्डल्सकी संख्यामें पांचवां स्थान ग्रहण कर लिया है।

आज सारे मध्यभारत और भोपालमें १८ कपड़ेकी मिलें दिनरात काम कर रही हैं जिनमें ४३६१५८ स्पिण्डल्स और ११३०५ लूम्स अपना उत्पादन कर रहे हैं। इस उद्योग पर कुल आठ करोड़ रुपयेकी पूँजी लगी हुई है और चालीस हजार मनुष्य पूर्णतया इस उद्योगपर निर्भर हैं। इससे यह प्रतीत होता है कि इस उद्योगकी वजहसे ही यह राज्य प्रगति शील है।

चिन्ताजनक समस्याएँ

फिर भी यह महसूस किया जा रहा है सन् १९४७ से मध्यभारतमें इस उद्योगकी स्थिति चिन्ताजनक होती जा रही है। यद्यपि युद्ध कालमें यहाँकी मिलोंने काफी धन कमाया पर सन् १९४७ से रूईकी दर बहुत ऊँची चली जानेसे तथा मजदूरोंकी मजदूरी बढ़ने और उनकी कार्य्यक्षमता कम होजानेसे यहाँकी स्थिति चिन्ता जनक होगई। चुंगी निर्धारित करनेवाली कमेटी जो कि उस समय कीमतोंका नियंत्रण करनेके लिए बनाई गई थी उसने भी इस घटनाका अनुमोदन किया। इस समितिकी रिपोर्ट आनेके पश्चात् यद्यपि रुईकी कीमतों पर नियन्त्रण कियागया, फिर भी सरकार द्वारा नियन्त्रितकी हुई ऊँचीसे ऊँची दरोंपर भी मार्केटमें रुईका मिलना कठिन हो गया और मिलोंको चालू रखनेके लिए नियन्त्रित दरसे भी ऊँची दरमें रुईको खरीदना अनिवार्य होगया। रुईकी ऊँची दरोंके अनुपातसे कपड़े तथा सूतकी दरोंको बढ़ानेकी सरकारसे प्रार्थनाकी गई मगर वह मंजूर न हुई। मोटे तथा मध्यम श्रेणीके कपड़ेके निर्यातपर प्रतिबन्ध लगा दिये गये इसके फलस्वरूप मध्यभारतके कपड़ेके लिए पंजाब तथा उत्तर पश्चिमी जिलेके सब बाजार समाप्त हो गये।

विदेशोंसे मध्यभारतकी मिलोंका सीधा सम्बन्ध न था इसलिए उसको निर्यातके लिए बम्बईके निर्यातकों (Exporters) पर निर्भर रहना पड़ता था। जो कि यातायातकी कठिनाइयोंकी वजहसे मध्य भारतके बजाय बम्बई और अहमदाबादके कपड़ेका निर्यात करना ज्यादा पसन्द करते थे। इस प्रकार सन् १९४७ के पश्चात् मध्य भारतके वस्त्र उद्योगको कई रुकावटोंका सामना करना पड़ा।

मजदूर समस्या

दिन-दिन बढ़ने वाली मजदूर समस्या भी इस उद्योगमें रुकावट डाल रही है। यहांके मजदूर बम्बई और अहमदाबादके मजदूरोंके बराबर वेतनकी मांग करते हैं मगर उनकी कार्य्य क्षमता बम्बई अहमदाबादके मजदूरोंसे बहुत कम है। सन् १९३८ में बम्बईने मजदूरकी कार्य क्षमताका जो माप बनाया था उसपर आज भी मध्य भारतका मजदूर नहीं पहुँच पाया है। बम्बई तथा अहमदाबादमें सूत कातनेके विभागमें प्रति १००० स्पिण्डलसपर १२ मजदूर लगते हैं जब कि मध्य भारतमें इसी कामके लिए १८ मजदूरोंकी आवश्यकता होती है, यही हालत बुननेके विभागमें भी है।

दूसरे प्रान्तोंकी तुलनामें मध्यभारतमें आनेवाली कपड़ेकी लागत (चुंगी निर्धारक समितिकी जांचके अनुसार)

लागतकी मदें

	तनख्वाह,	कोयला तथा बिजली,	इकट्ठा करनेके स्थान
बम्बई	४०	४	१०
अहमदाबाद	५०	१५	१५
दक्षिण भारत	३५	५	१०
इन्दौर	६५	२२	१४

इससे मध्यभारतमें कपड़ा उत्पादनपर आनेवाली लागतका सहज ही अनुमान किया जा सकता है।

मजदूरोंको पूरी मजदूरी मिले, उनका जीवन स्तर और रहन-सहन ऊँचा हो, मनुष्यत्वसे जीने योग्य सभी सुख सुविधा उन्हें मिले, इन चीजोंसे किसीको मत भेद नहीं हो सकता। मगर इसके साथ ही उनकी कार्य्य- क्षमता भी बढ़े, उनकी मजदूरी उत्पादनपर भार स्वरूप न हो, देश विदेशमें आने वाली लागतसे यहांपर आनेवाली लागत काफी कम पड़े इन बातोंका भी यदि ध्यान रक्खा जाय और मजदूर भी इस उद्योगमें अपनी जिम्मेदारीको महसूस करने लगें तो समस्या आसानीसे सुलझ सकती है।

कपड़ेके व्यापारकी स्थिति बहुत कुछ बदल चुकी है। भावोंमें धीरे-धीरे होने वाली कमीने लेने वालोंके बाजारोंको बेचने वालोंमें परिवर्त्तित कर दिया है। दिन प्रति दिन विदेशोंकी प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। दिन दिन होनेवाले वैज्ञानिक विकासोंने दूसरे स्थानोंपर कमखर्चमें कपड़ेका उत्पादन प्रारम्भ कर दिया है जबकि मध्यभारतमें पुरानी मशीनोंपर ही काम हो रहा है। ये सब समस्याएं हैं जो आज मध्य भारतके वस्त्र-उद्योगको कठिनाईमें डाल रही हैं।

द्वितीय सोपान

द्वितीय महायुद्ध और भारतका वस्त्र उद्योग

सन् १६४१ से १६४७ तक द्वितीय विश्वयुद्धका समय भारतीय वस्त्र उद्योगके लिए एक सुनहला समय लेकर आया। सन् १६२६ से १६३६ के संकट कालमें जो वस्त्र उद्योग मृतककी तरह हो रहा था और यह दिखलाई देने लगा था कि यदि यही संकट कुछ समयतक और चलता रहा तो कई कपड़ा-मिलोंकी अन्त्येष्टि हो जावेगी ठीक उसी समय जापान-युद्धने प्रकट होकर मानों इस मुरझाते हुए पौधेमें नई जान फूँक दी।

भारतीय वस्त्र-उद्योगके इतिहासमें ये छः वर्ष हमेशा छः गोलाकार बिन्दुओंकी तरह चमकते रहेंगे जिसमें इन मिलोंने और इन मिलोंका माल बेचनेवाले व्यवसाइयोंने इतना द्रव्य कमाया जो शायद उन्होंने जीवन भरमें नहीं कमाया। द्रव्य कमाते हुए भी यदि वे अपनी महत्वाकांक्षाओंको कुछ बसमें रखते और अपने स्वार्थके साथ अपने देशके सुख दुखका भी कुछ ध्यान रखते तो उन दिनों सारे देशके निवासियोंने जो भयङ्कर कष्ट उठाया वह भी न उठाना पड़ता और इन उद्योगपतियोंकी सेवाएँ इतिहासमें अंकित हो जाती। मगर दुःख है कि भारत कपड़ा उद्योगके उद्योगपतियों और व्यवसाइयोंने अपने स्वार्थके सम्मुख देश हितका बिलकुल ध्यान न दिया जिसके फलस्वरूप भारतीय कपड़ा-उद्योगके इतिहासमें एक काला पृष्ठ हमेशाके लिए अंकित हो गया।

इस विषयपर माननीय खण्डूभाई देसाईने उन्हीं दिनों सन् १६४७ एक लेख हरिजन सेवकमें प्रकाशित किया था उसमें उन्होंने इस विषयपर प्रकाश डाला है। उसका सार हम नीचे दे रहे हैं—

भारतीय वस्त्र व्यवसायका मूलधन

"देशकी कपड़ेकी मिलोंके समूचे उद्योगमें चुकाई हुई पूँजीकी शक्लमें करीब ५० करोड़ रुपये लगे हुए हैं, और इसके हिस्सेदारोंने इतनी ही जोखिम अपने सिर ली है। यह बात गौर करने लायक है कि इस चुकाई हुई पूँजीका ज्यादातर हिस्सा देशकी करीब १५० मैनेजिंग एजेण्टोंकी फर्मों या पेढ़ियोंके हाथमें है, और इस तरह ये डेढ़ सौ मिल-मालिक ही देशके इस जबर्दस्त उद्योगके मालिक हैं, वे ही इसपर काबू रखते हैं, और इस उद्योगकी पैदावारका इस्तेमाल करनेवाले करोड़ोंके हितकी जरा भी परवाह किये बिना अपना निजी मतलब गाँठनेमें उससे बेजा फायदा उठाते हैं।"

"इस उद्योगके पास मकान और मशीनोंकी शक्लमें करीब १०० करोड़ या एक अरब रुपयोंकी कायम पूँजी है। यहाँ इस बातका ख्याल रखना चाहिए कि इस कीमतका कुछ हिस्सा खासकर बम्बई

में, पहली बड़ी लड़ाईके वक्त फिरसे थांका जाकर बनावटी तरीकेसे बनाया गया है। इस उद्योगमें करीब २ लाख करघे और १ करोड़ तकुवे हैं। पिछली लड़ाईके पहिले इसमें चार अरब बीस करोड़ गज कपड़ा तैयार होता था, और करीब ५ लाख मजदूर इस काममें लगे हुए थे। दूसरी लड़ाई शुरू होनेके बाद रातपाली शुरू होनेकी वजहसे इसमें काम करनेवाले मजदूरोंकी तादाद बढ़कर ७ लाख हो गई, मगर उसी हिसाबसे मालकी पैदावारमें बढ़ती नहीं हुई। रातपालीका काम बढ़ जानेपर भी मालकी पैदावारका न बढ़ना जरा अजीब-सा मालूम होता है। मगर इस उद्योगसे नजदीक ताल्लुक रखनेवाले देख सकते हैं कि चूँकि मिल-मालिकोंने सरकारकी मददसे अपने लिये खासा अच्छा मुनाफा कर लिया है, इसलिये वे लापरवाह, अकुशल और सुस्त बन गये हैं।"

लड़ाईके जमानेका मुनाफा

"मिल-मजदूरोंसे सम्बन्ध रखनेवाले अपने कामके सिलसिलेमें इस उद्योगके करीब तीन-चौथाई हिस्सेके बैलेन्स शीटों या आंकड़ोंपर गौर करनेका मुझे मौका मिला है।"

"देशके इस पूरे उद्योगका लड़ाईसे पहिलेका कुल नफा करीब पांच से छह करोड़ रुपयेका था। कपड़ा सूत वगैरा तैयार मालकी कीमत करीब ६० करोड़ रुपयेकी थी। जिसमें मालका बटवारा करनेवाले बीचके व्यापारियों और आढ़तियोंके मुनाफेकी २० फी सैकड़ा रकम और जोड़ देनेपर कपड़ेका इस्तेमाल करनेवाले लोगोंको यह कपड़ा और सूत ७२ करोड़ रुपयेमें पड़ता था। कुछ कपड़ा देशसे बाहर भी भेजा गया था, मगर वह इतना थोड़ा था कि आम नतीजेपर पहुँचनेके लिये हम उसे छोड़ भी दें, तो कोई हर्ज नहीं।"

"जनवरी सन् १९४१ के बादसे कपड़ेकी कीमतें बढ़ने लगीं। सन् १९४२ के अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बरमें कीमतें एकाएक बहुत ही ऊँची चढ़ गईं, और १९४३ के मई महीनेमें तो वे आखिरी छोरपर जा पहुँची। इस वक्त कपड़ेकी कीमत लड़ाईके पहिलेकी कीमतसे साढ़े पाँच गुनी बढ़ गई। उसी बीच काले बाजार भी शुरू हो चुके थे, इसलिए आम लोगोंको तो इन दामों भी कपड़ा नहीं मिलता था और उन्हें ऊपर दिये गए दामोंसे ५० वा १०० फी सैकड़ा ज्यादा दाम देकर माल खरीदना पड़ता था। बादमें सन् १९४३ के बीचके महीनोंमें सरकारने आम लोगोंके फायदेके लिये खुद दखल देनेकी कोशिश की, मगर इसके लिये जो कार्रवाई की, वह इतनी मामूली थी कि उससे जनताको कोई फायदा न हुआ, उलटे काले बाजार और भी बढ़ गये, और मिल मालिकोंके हाथों होनेवाले जनताके शोषणको न सिर्फ जायज और अधिकारपूर्ण ठहराया गया, बल्कि उसे बढ़ावा दिया गया और उसपर प्रामाणिक धन्धेकी मुहर लगा दी गई। इसके लिए क्लाथ कण्ट्रोल बोर्डके नामसे जो कमेटी कायम की गई थी, उस कमेटीसे अच्छी उम्मीद कोई कर भी न सकता था, क्योंकि इस बोर्डमें उन्हीं मिल-मालिकोंका बोलबाला था, जिनसे जनता अपनी हिफाजत चाहती थी। जनतापर डाली हुई इस मोहिनीका नतीजा नीचे दिये हुए आंकड़ोंसे मालूम हो जायगा।"

हिन्दुस्थानका वस्त्र-व्यवसाय

[लड़ाईके जमानेका मुनाफा करोड़में]

कमीशन [ऐक्स-मील] चुकाई हुई कीमत लड़ाईसे पहिलेके सालोंमें।

साल	कुल नफा	एजेण्टोंका	मालकी कीमत	ग्राहकोंको देना पड़ा
१९३८	५ करोड़	१ करोड़	६० करोड़	७२ करोड़
१९३९	५ ,,	१ ,,	६० ,,	७२ ,,
१९४०	७ ,,	१ ,,	७० ,,	८४ ,,
१९४१	२३ ,,	३ ,,	१०० ,,	१२० ,,
१९४२	४६ ,,	५ ,,	१५० ,,	२५० ,,
१९४३	१०९ ,,	१० ,,	२७० ,,	४८० ,,
१९४४	८५ ,,	६ ,,	२१० ,,	३७० ,,
१९४५	६१ ,,	७ ,,	१८० ,,	३२४ ,,
१९४६ [अन्दाजन]	४१ ,,	५ ,,	१७० ,,	३०६ ,,
जोड़	३७२ ,,	४० ,,	११५० ,,	१९३ ,,

"यह बात सभी जानते हैं कि टैक्सोंके जरिये सरकारने इसमेंसे करोड़ों रुपये लिये हैं, और इस टैक्सकी वसूलीके लिये मिल-मालिकोंने सरकारके अढ़तियोंका काम किया है। लड़ाईके दरमियान इस टैक्सने कपड़ेका इस्तेमाल करनेवाले हर एक मर्द, औरत और बच्चेके लिये जजियाकी शक्लें अख्तियार कर ली थी। ऊपरके आंकड़ोंसे यह देखा जा सकता है कि लड़ाई शुरू होनेसे पहिले जहाँ लोग हर साल फी आदमी कपड़ेकी मदमें रु० २-१२-० देते थे, वहां लड़ाईके सालोंमें उन्हें रु० ६-१२-० देने पड़े। यहां यह बतला देना जरूरी है कि स्थापित हितों और सरकारी तिजोरीके स्वार्थका ख्याल करके ही इस देशमें जान-बूझकर कपड़ेकी कीमतें इस हदतक बढ़ने दी गईं, जबकि इंग्लेण्ड, अमेरिका, आस्ट्रेलिया या कनाडा इत्यादि देशोंके लड़ाईमें सीधी तरह शामिल होनेपर भी वहाँ कपड़ेकी कीमतें ३० फीसदीसे ज्यादा नहीं बढ़ने पाईं। लड़ाईसे पहिलेके सालोंमें मिलोंमें तैयार हुए मालकी मामूली 'एक्स-मिल' कीमत सिर्फ ६० करोड़ रुपये थी, जबकि इन सात सालोंमें वही औसतन् १६४ करोड़ रुपये हो गई है। यहाँ यह बात खास तौरपर गौर करने लायक है कि लड़ाईके पहले तो ग्राहक इस कीमतपर कपड़ा पा भी जाता था, मगर यहाँ काला बाजार शुरू हो जानेकी वजहसे लड़ाईके दिनोंमें और उसके बाद अपना कपड़ा खरीदनेके लिये उसे कमसे कम ५० फी सैकड़ा ज्यादा दाम चुकाने पड़ते हैं। क्या शहरोंमें और क्या गाँवोंमें, सरकार द्वारा ठहरायी गई कीमतपर कपड़ा पा जाना मामूली ग्राहकके लिये नामुमकिन है। इसलिये सन् १९४२ के बाद की कीमत मैंने बढ़ाकर लिखी है क्योंकि इस सालसे कालाबाजार बड़े पैमानेपर शुरू हो गये थे जिनकी वजहसे ग्राहकोंको यह कीमत चुकानी पड़ती थी। अगर हम ऊपर दिये

गये मुनाफेके आंकड़ोंको मिलाकर देखें तो हमें दंग रह जाना पड़ेगा। जिस उद्योगमें सिर्फ ५० करोड़ रुपयोंकी पूंजी लगी है और जिसकी कायम पूंजी १०० करोड़ रुपयोंसे ज्यादा नहीं है और लड़ाईसे पहले जिसकी पैदावारकी सालाना कीमत सिर्फ ६० करोड़ रुपये थी, उसे एक ही सालमें १४६ करोड़ रुपयोंका और सात सालके दरमियान औसतन् ५३ करोड़ रुपये सालानाका मुनाफा उठाने दिया गया। इस तरह सिर्फ एक सालका औसत मुनाफा लड़ाईसे पहलेकी सालाना पैदावारकी कीमतके ७५ फीसदी से भी ज्यादा हुआ। सन् १९४२ से १९४५ के दरमियान इस उद्योगका सालाना औसत मुनाफा करीब करीब उसकी कायम पूंजीके बराबर ही था। यानी इन तीन वर्षोंमें मिल मालिकोंने आम लोगोंसे सिर्फ मुनाफेकी शकलमें अपने कारखानोंकी अढ़ाई गुनी कीमत वसूल करली—यानी कपड़ेकी मांग पूरी करने के लिये खड़े किये गये कारखानोंकी कीमतसे कई गुनी ज्यादा रकम देशके ४० करोड़ ग्राहक लड़ाईके इन दिनोंमें उन्हें दे चुके हैं। इसलिए न्यायकी नीति और आर्थिक दृष्टिसे भी अब यह उद्योग देशकी मिलकियत माना जा सकता है और वाजिब तौरपर देखा जाय तो अब किसी भी किस्मका हरजाना या मुआवजा लिये बिना, यह उद्योग राज्यके सिपुर्द कर दिया जाना चाहिये। क्योंकि ४२० मिलोंकी कुल कीमतसे कहीं ज्यादा रकम देनेके लिये आम जनताको मजबूर किया गया है। अगर मैनेजिंग एजेण्टोंको मिलने वाले कमीशनपर एक सरसरी नजर डाली जाय, तो पता चलेगा कि उन्होंने जो रकम ली है, वह पूरे उद्योग के मामूली मुनाफेसे बहुत ज्यादा है। मिल-उद्योगकी जो सेवा वे करते कहे जाते हैं और उसके लिये मामूली वक्तमें उनको जो कमीशन दिया जाता था, उससे इस लड़ाईके दिनोंमें दी हुई कमीशनकी रकम दस गुनी ज्यादा होती है। किसी भी तरीकेसे देखनेपर मालूम होगा कि अपना एक किस्मका गुट बना लेने वाली इन १५० फर्मोंने अपने करोड़ों ग्राहकोंको नुकसानमें रखकर यानी देशको नुकसान पहुँचा कर, खुद फायदा उठाया है। कोई भी सुधरी हुई सरकार आम-जनताका ऐसा खुला शोषण नहीं होने देगी। इसपर हिन्दुस्तान जैसे गरीब मुल्कमें होनेवाला यह शोषण तो हर तरह बुरा और बेरहमीसे भरा हुआ था।"

छिपे हुए मुनाफे

ऊपर जिन मुनाफोंका जिक्र और छान-बीन कीगई है, वे बैलेंस शीटमें बताये हुए मुनाफे हैं। यहाँ हमें यह भूलना न चाहिए कि पिछले सात बरसमें करीब करीब सभी मिलोंने कपड़ेका और करोड़ों की कीमतकी दूसरी चीजोंका गुप्त संग्रह किया है, और उसे जनतासे छिपाकर रखा है। मैनेजिंग एजेण्ट, उनके दोस्त और साथियोंने कच्चा माल व मिलके लिये जरूरी सामान वगैरा खरीदनेमें और मिलका बना कपड़ा व सूत वगैरा बेचनेमें जो बेजा और पोशीदा नफा कमाया है, वह उस नफेके अलावा है, जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है अगर इसका हिसाब लगाया जाय, तो बेजा मुनाफेकी यह रकम करोड़ोंकी निकले। मगर इसका कोई हिसाब-किताब न कभी रखा गया है, और न कभी रखा जायगा।

ग्राहकों और कपास पैदा करने वालोंके हितोंकी कुरबानी

'अपने निजी मुनाफेके लिए मिल मालिकोंका यह गुट कपास पैदा करनेवाले किसानोंके पेटपर पाँव रखने पर भी नहीं हिचकिचाया। अधिकारियोंके साथ उनके ताल्लुकात इतने गहरे और उनपर उनका असर इतना भारी था कि अपने मुनाफेकी मात्रा बढ़ानेके लिए उन्होंने कपासकी यानी अपनी जरूरतके खास कच्चे मालकी कीमतें जितनी उनसे बन सकीं, उतनी कम रखवाई। इसकी वजहसे कुदरतन ही उन्होंने कपास पैदा करनेवालोंको नुकसान पहुँचाकर अपने नफेका हिस्सा और भी बढ़ा लिया। बेचारे गरीब किसानोंको, जो कपड़ेके खरीददार भी है दुतरफा मार सहनी पड़ी। एक तरफ उन्हें अपनी जरूरतका कपड़ा बहुत ऊँचे दामोंमें खरीदना पड़ा और इसके मुकाबलेमें दूसरी तरफ उन्हें अपनी खास पैदावार कपासके दाम कम मिले। लड़ाईसे पहलेके सालमें कपासकी कीमतका जो इन्डेक्स १०० था, मुकाबले लड़ाईके दिनों वही बढ़कर २१७ हो गयाथा जब कि लड़ाइसे पहलेके सालमें कपड़ेकी कीमतका जो इण्डेक्स १०० था वह लड़ाईके दिनोंमें २७३ हो गया था। यहाँ मुझे यह बतला देना चाहिये कि कपास पैदा करनेवालोंके लगातार आन्दोलन करते रहनेसे अभी पिछले सालसे ही कपासकी कीमतें कुछ ऊँची चढ़ती हुई मालूम होती हैं। अगर यह न हुआ होता, तो कपास और कपड़ेकी कीमतके इण्डेक्सका फर्क इससे भी ज्यादा खटकनेवाला होता। बम्बईमें लोगोंके गुजारेके खर्चका जो इण्डेक्स बनाया गया है, उससे भी पता चलता है कि रोजमर्राकी कामकी दूसरी चीजोंके दामोंके मुकाबले कपड़ेकी कीमत बहुत ज्यादा है। यह इन्डेक्स तैयार करनेमें रोजमर्राके काममें आनेवाली सभी चीजें शामिल कर ली गई थी। लड़ाईसे पहलेके सालमें इसे १०० मानें, तो लड़ाईके दिनोंमें यह १८१ हो गया था। अगर इसमें कपड़ा शामिल न किया जाता, तो यह आँकड़ा इससे भी कम होता।"

लड़ाईके दिनोंमें हुए मुनाफेमें व्यापारियोंका हिस्सा

"देशमें कपड़ेके थोकके व्यापारियोंने जो मुनाफा कमाया, उसका किस्सा भी मजेदार है। सारे मुल्कमें इस किस्मके व्यापारियोंकी तादाद ४०० से ज्यादा नहीं है। सरकार और मिल मालिक दोनोंने उन्हें अपने विश्वासमें लिया था, और अपनी सामूहिक लूटमें उन्हें मुनासिब हिस्सा दिया था। मौजूदा क्लाथ-कन्ट्रोल-बोर्डमें मिल मालिकों, और कपड़ेके थोक व्यापारियोंके अलावा कुछ इने गिने लोग ऐसे भी हैं, जिनके बारेमें यह कहा जाता है कि कपड़ेके उद्योगमें उनका कोई स्वार्थ नहीं। एक तो ऐसे लोगोंकी तादाद बहुत थोड़ी है, तिसपर अगर कभी वे कोई आवाज उठाते भी हैं, तो ये करोड़पति उनका मुँह बन्द करनेके लिये अपने खास तरीके काम में लाते हैं। कपड़ेका बँटवारा करके समाजकी सेवा करने वाले कपड़ेके थोक व्यापारीको कपड़े और सूतकी बिक्री कीमतपर औसतन् १ फीसदी कमीशन मिलता था। यह कमीशन या दलाली अहमदाबादमें ½ प्रतिशत, बम्बईमें १½ प्र० श० और दूसरे केन्द्रोंमें ½ प्र० श० से १½ प्र० श० तक थी। इसलिए मैंने अपने कामके लिये १ फीसदीका वाजिब औसत लिया है। कपड़ेके थोक व्यापारियोंको ६० करोड़ रुपयेकी कुल बिक्रीपर ६० लाख रुपये देकर

उनकी सेवाका बदला चुकाया जाता था। क्लॉथ-कन्ट्रोल बोर्डने अपनी जबरदस्त होशियारी दिखाते हुए इस दलालीको बढ़ाकर बिक्रीकी कुल कीमतपर ३ फीसदी कर दिया। इस तरह इन दलालोंकी दलाली तिगुनी हो गई, मगर कपड़ेकी बढ़ी हुई कीमतोंका ख्याल करें, तो पता चलेगा कि सन् १९४४ में इन व्यापारियोंको ६० लाख रुपयेके बदले ६ करोड़ रुपये मिले। यह रकम मामूली वक्तमें उन्हें मिलनेवाली रकमसे दस गुनी ज्यादा है। यहाँ हमें इस बातका ख्याल करना चाहिए कि इसमें थोक व्यापारीको न तो कोई जोखिम उठानी पड़ती थी न पूंजी लगानी पड़ती थी। लड़ाईसे पहलेके दिनोंमें समस्त मिल-उद्योगके मुनाफेकी बराबरी करनेवाली ६ करोड़की यह जबर्दस्त रकम सिर्फ उनका मुँह बन्द करनेके लिये उन्हें दी जाती थी। क्योंकि कपड़ेकी पैदावार और इनके बँटवारेके करीब २ पूरे सवालको आपसी समझौतेसे हल करनेवाले मिल मालिकों और सरकार के एजेण्टोंके काले कारनामोंको देशमें दूसरे किसीके बनिस्पत वे व्यापारी ही ज्यादा जानते हैं। क्लॉथ-कण्ट्रोल महकमें यानी कपड़ेके बंटवारे और उसकी कीमतों का नियमन करनेवाले महकमेमें हजारों नौकर हैं और उन्हें बड़ी २ तनाख्वाहें मिलती हैं। इसके सिवा गैरकानूनी तौरपर, रिश्वत वगैरहकी शकलमें, उन्हें जो कुछ मिलता है, सो अलग ही है—क्योंकि आज यह बात किसीसे छिपी नहीं है। अगर क्लांथ-कन्ट्रोलके इस कामकी गहराई के साथ जांचकी जाय तो जांच करनेवालेको इस बातका पूरा यकीन हो जाय कि सरकारकी हुकूमत और शानकी आड़में आम लोगोंको ठगनेकी यह एक सुसंयोजित और सोच-समझकर की गई धोकेबाजी ही-थी। मेरी यह राय है कि यह धोखेबाजी अब एक दिन भी न चलना चाहिये, और यह सारा महकमा ही फौरन बन्द कर दिया जाना चाहिये।"

आजकी तंगीके लिये मिल-उद्योगका स्वार्थ जिम्मेदार है

"जनवरी, १९४४ मे छपे अपने एक बयानमें मैने यह कहा था कि आम लोगोंकी मौजूदा माली तंगी और मुसीबतोंके लिये खास तौरपर कपड़ेका उद्योग ही जिम्मेदार है। पहले इस उद्योगने ही कीमतें बढ़ानी शुरू कीं और कुदरतन् दूसरी चीजोंपर भी उसका असर पड़ा। अगस्त सन् १९४२ के बाद चीजोंकी कीमतोंके रुखपर गौर किया जाय तो मालूम होगा कि पहले कपड़ेकी कीमतें बढ़ने लगीं, और उसके कुछ महीनों बाद दूसरी चीजोंके भाव बढ़े। इस तरह जाहिर है कि कपड़ेके उद्योगसे जो अनर्थ-परम्परा शुरू हुई, उसने देशकी माली हालतके संतुलनको उलटनेमें खासा हिस्सा लिया है। अगर कागजी सिक्कोंके प्रसार या फैलावके आंकड़ोंपर भी गौर किया जाय तो पता चलेगा कि सिक्कों का यह प्रसार भी सन् १९४१ से कपड़ेकी बढ़ती हुई कीमतके साथ ही साथ बढ़ता गया है। और जब सन् १९४२ के आखिरी ६ महीनेमें और १९४६ के पहले ६ महीनेमें कपड़ेकी कीमतें एकदम बढ़ गयीं तो उन्हीं दिनों सिक्कोंका प्रसार भी अधिक बढ़ गया। मगर सिक्कोंका इतना फैलाव हो जानेपर भी दूसरी चीजोंके, और खासकर कपास व अनाजके भाव उसी हिसाबसे नहीं बढ़ पाये। इसलिये हम इस नतीजेपर पहुँच सकते हैं कि

कपड़ेके उद्योगमें दिलचस्पी रखनेवालोंने अपना मतलब साधनेके लिये सारी अर्थ व्यवस्थाको कुछ ऐसा घुमाव दे दिया जिससे देशके दूसरे तबके के लोगोंको नुकसान पहुँचाकर ये फायदेमें रह सकें।''

''मुझे लगता है कि आज मुल्कमें जो काले बाजार, रिश्वतखोरीकी बुराई और पैसेकी तंगी पाई जाती है, वह बहुत हद तक कपड़ेकी मिलोंके उद्योगसे ताल्लुक रखनेवाले मिल मालिकों, कपड़ेके व्यापारियों और मिलोंके लिये कच्चा और दूसरी तरहका जरूरी माल मुहैया करनेवाले सौदागरोंके हाथ में गैरमामूली तौरपर मनमाना रुपया आजानेकी वजहसे है। और, यह कहनेके लिये हमारे पास कारण भी मौजूद है। खुराकके बाद इन्सानकी दूसरी खास जरूरत कपड़ेकी है। इसे ध्यानमें रखकर उस वक्त की सरकारने, आम लोगोंके हितकी परवाह किये बिना, कपड़ेके खुद गरज कारखानेदारोंकी मददसे इन जरूरतोंका बेजा फायदा उठाया। इसलिये आम लोगोंके फायदेके खयालसे जब तक इस उद्योग को पूरी तरह और पुरअसर तरीकेसे नियमित नहीं किया जाता, तब तक जाहिर है कि फिरसे मामूली हालत पैदा करनेके लिये दूसरी दिशाओंमें की गई हमारी सारी कोशिशें नाकामयाब साबित होंगी, और जिन नतीजों तक हम सब पहुँचना चाहते हैं, उन तक पहुँच न सकेंगे।''

मजदूरोंके हितोंकी भी कुर्बानी की गई

''ऊपर यह बताया जा चुका है कि मिल-मालिकोंने अपना मतलब गांठनेके लिए आम लोगोंके हितको जानबूझ कर नुकसान पहुँचाया है। अब जरा हम देखें कि उन्होंने मजदूरोंके साथ भी वाजिब और इन्साफका बर्ताव किया है या नहीं। इस उद्योगमें काम करनेवाले मजदूरोंके साथ भी बेजा बर्ताव हुआ है, और खानगी हितोंकी वेदीपर उनके हितोंका भी खून किया गया है। मामूली तौरपर उन्हें इतना मेहनताना नहीं दिया गया, जिससे वह मंहगाईका पूरी तरह सामना कर सकें। बढ़ी हुई कीमतों-की भरपाईके तौरपर उनको दिया जानेवाला मँहगाई भत्ता ५० से ७५ फीसदी तक ही दिया गया है। सिर्फ एक अहमदाबादमें संगठित लड़ाई लड़नेके कारण वहाँके मजदूर १०० फी सदी मँहगाई भत्ता पा सके हैं। मगर इन्साफकी इस एक ही मिसालको भी मिल-मालिकोंके बीच होनेवाले झगड़ोंको निपटाने-वाली अदालतके एक फैसलेने बेकार कर दिया है। अदालतने इस बिना पर मजदूरोंका मँहगाई भत्ता १०० से ७५ फीसदी कर दिया कि इस उद्योगके दूसरे मरकजोंमें वहाँके मजदूरोंको अपनी रहन-सहनका दरजा कम करके काम करना पड़ता था। वे लड़ाईमें पहलेके दिनोंके अपने रहन-सहनके दरजोंको न टिका सके। जिन्दगीके लिये जरूरी रोजके इस्तेमालकी चीजोंके दाम और उन्हें मिलनेवाली मजदूरीको देखें, तो साफ मालूम होता है कि उनकी मजदूरीकी दरें कम हो गई हैं, यानी दर असल जो मजदूरी उन्हें मिलनी चाहिए थी, उससे १५ से २५ फीसदी तक मजदूरी उन्हें कम मिलती है।'

निरखबन्दी

''मजदूरोंसे ताल्लुक रखनेवाले सवालोंके अपने अभ्यासके सिलसिलेमें, कानूनकी निगाहसे क्लाथ-कण्ट्रोल बोर्ड द्वारा, मगर दरअसल मिल-मालिकों द्वारा तैयार की गई मालकी ऊँचीसे ऊँची कीमतोंकी

फेहरिस्तें देखनेका मौका मुझे कई बार मिला है। इस निर्खनामेको बारीकीसे जांच की जाय, तो पता चलेगा कि फैन्सी और रंगीन कपड़ोंकी दरोंके मुकाबिले जो इजाफा किया गया है, वह खुली या दिन-दहाड़ेकी लूटके सिवाय और कुछ नहीं है। मिलोंमें कपड़ा बनानेमें बढ़ी हुई मजदूरी, जरूरी चीजोंकी बढ़ी हुई कीमतों या पैदावारकी कमी वगैरहकी वजहसे जो ज्यादा खर्च लगता है, उसके मुकाबले तैयार मालकी कीमतोंमें किया गया इजाफा कहीं ज्यादा है। थोड़ेमें, मिल मालिकोंने दिखावा तो यही किया कि वे आम जनताके हितकी हिफाजत कर रहे हैं, मगर दरअसल उन्होंने 'कण्ट्रोल बोर्ड' में हर तरीकेसे अपना मुनाफा बढ़ानेकी पूरी २ कोशिश की।"

तृतीय सोपान

स्वाधीनताके पश्चात्

जैसाकि हम पहले बतला चुके हैं प्रथम महायुद्धके पहले भारतका वस्त्र-उद्योग बहुत छोटा उद्योग था और अपनी डगमगाती हुई नैय्याको लेकर एक तूफानको पार कर रहा था। प्रथम महायुद्धसे इस उद्योगको बहुत प्रेरणा मिली और सन् १९२१ से १९३१ के बीच यहाँके कपड़ा मिलोंकी संख्या २५७ से बढ़कर ३३९ हो गई मगर उसके पश्चात् संसारव्यापी मन्दी और जापानी प्रतिस्पर्द्धाके कारण फिरसे इस उद्योगकी नौका भँवरमें पड़ गई जो सन् १९४१ तक इसी प्रकार डगमगाती रही।

सन् १९४१ में जापानी-युद्धने प्रकट होकर इस उद्योगमें एकाएक नया जीवन फूँक दिया और ४१ से ४६ तक इस उद्योगकी जड़ें बहुत गहरी पैठकर अत्यन्त मजबूत हो गई। अभीतक हमारा देश रूईका निर्यात करनेवाला और कपड़ेका आयात करनेवाला देश था मगर इस महायुद्धने हमें बदलकर रूईके आयातक और कपड़ेके निर्यातकके रूपमें बदल दिया और देश अपनी वस्त्र समस्याके बारेमें स्वावलम्बी हो गया।

वस्त्र उद्योगका क्रान्तिकारी वर्ष सन् १९५५

वस्त्र उद्योगके आजतकके इतिहासमें सन् १९५५ का वर्ष सबसे अधिक क्रांतिकारी रहा है। इस वर्षने वस्त्र उद्योगके सब पिछले रेकार्डको तोड़ दिया है। इस वर्ष कपड़ेका उत्पादन इस देशमें ५ अरब ४ करोड़ ६४ लाख गज हुआ जबकि पहलेका अधिकतम उत्पादन ४ अरब ९९ करोड़ ७७ लाख गज-का था। इसी प्रकार सूतका उत्पादन भी इस वर्ष १ अरब ६२ करोड़ १५ लाख पौण्ड हुआ जो पहलेके अधिकतम अङ्कोंसे ६ करोड़ पौण्ड अधिक है। हाथ करघेके कपड़ोंका उत्पादन भी इस वर्ष १ अरब ३७ करोड़ गज हुआ जो पिछले उत्पादनसे पाँच करोड़ गज अधिक है।

इसके साथ ही साथ सन् १९४७ के १५ अगस्तका दिन इस देशके इतिहासका वह सुवर्ण-प्रभात था जिसदिन हजारों वर्षकी गुलामीके बन्धनोंको छिन्न-भिन्न कर यह देश सार्वभौम स्वतन्त्र

देश हो गया और ब्रिटिश झण्डेके स्थानपर इस देशकी स्वाधीनताका प्रतीक तिरंगा झण्डा इस देशके मस्तकपर लहराने लगा।

देशके स्वाधीन होनेके साथ ही साथ इस देशका वस्त्र-उद्योग भी दिनपर दिन हरा-भरा होकर लहलहाने लगा और हमारे यहाँका बना हुआ कपड़ा विदेशोंके बाजारमें अपना प्रभाव जमाने लगा। जो नीचे लिखे नक्शेसे मालूम होगा।

गणतंत्र भारतसे सूत तथा सूती कपड़ेका विदेशोंको निर्यात।

वर्षका अन्त अप्रैल-मार्च	बटा हुआ और सादा सूत		सूती कपड़ा	
	वजन पौण्ड	मूल्य रुपया	मात्रा गज	मूल्य रुपया
१९४७-४८	४२०००	५६०००	१९२४२२०००	१८०२७६०००
१९४८-४९	७४०८०००	१२८९३०००	३४०८६५०००	३६२३८८०००
१९४९-५०	६२,२१,३०००	११,२६,७२०००	६८,९९,७३०००	५७५८८३ ००
१९५०-५१	७४,४६,२०००	१७,०६८,२०००	१२०,९८,८५०००	१०,५७,९१५०००
१९५१-५२	६१७४०००	१९७२६०००	३८३७०२०००	४२५०२८०००
१९५२-५३	१७८६९०००	४३८१४०००	५६०८९८०००	५२७२६२०००
१९५३-५४	२२२२२०००	४६९४००००	७०२०६२०००	५३२०४२०००

उपरोक्त अंकोंसे पता चलता है कि सन् १९५०-५१ में यहांके निर्यातका अङ्क सबसे ऊँचा चला गया था मगर इस बढ़े हुए निर्यातसे हमारे देशमें कपड़ेका मूल्य बहुत बढ़ने लगा और यहाँके वस्त्र उपभोक्ताओंको बड़ा कष्ट होने लगा तब सरकारको यहाँकी निर्यात नीतिपर कुछ प्रतिबन्ध लगाना पड़ा और मोटे तथा मध्यम श्रेणीके मालपर २५% निर्यात-कर लगा दिया गया। जिसकी वजहसे सन् ५१-५२ में हमारे निर्यातका अङ्क एकदम घटकर एक तिहाईके करीब हो गया।

मगर सन् १९५२ के प्रारम्भिक महीनोंमें भावोंके गिर जानेसे और बाहरके बाजारोंमें विदेशी प्रतिस्पर्द्धाके बढ़ जानेसे भारत सरकारको वस्त्र-निर्यातपर लगाये हुए नियंत्रण हटाने पड़े और निर्यात-कर भी कम करना पड़ा। कई प्रकारके कपड़ोंपरसे एकदम कर हटाना पड़ा। इसके फलस्वरूप सन् १९५३ और १९५४ में फिर हमारे वस्त्र निर्यातके अङ्क बढ़ने लगे।

इसी प्रकार यहाँसे रूईका निर्यात जो पहले बहुत बड़ी तादादमें होता था क्रमशः कम होता जा रहा है और बाहरसे आयात होनेवाली रूईकी तादाद बढ़ रही है तथा कपड़ेके आयातका परिमाण कम होता जा रहा है। यह सब बातें इस उद्योगके उज्वल भविष्यका संकेत कर रही हैं।

नीचे दी हुई तालिकाओंसे इस उद्योगके सम्बन्धमें पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है :-

भारतीय सूती मिल उद्योगका विहंगावलोकन

(सन् १९४७-४८ से ५३-५४ तक)

(१) गण-तन्त्र भारत के सूती मिलोंकी प्रगति सन् १९४८ से ५३ ई० तक :—

वर्षान्त ३१ अगस्त	मिलों की संख्या	तकुओं की संख्या	करघों की संख्या	श्रमिकों की संख्या	रुई की खपत गाँठ
१९४८	४०८	१०३६६०००	१९७०००	४६६०००	४२००००००
१९४९	४१६	१०५३४०००	१९८०००	४६३०००	४३२५०००
१९५०	४२५	१०८४९०००	२००००००	४३४०००	३७८९०००
१९५१	४४५	११२४१०००	२०१०००	४२५०००	३६८७०००
१९५२	४५३	११४२७०००	२०४०००	४३३०००	४१३३०००
१९५३	४५७	११७२१०००	२०७०००	४३५०००	४५५१०००

रुईकी ३९२ पौण्ड वजन की एक गाँठ होती है।

(२) गण-तन्त्र भारतकी कपासकी उपज सन् १९४८ से ५४ ई० तक :—

फसल	कपासकी खेती हुई एकड़	उपज रुई गाँठों में
१९४७–४८	१०९३२०००	२११६०००
१९४८–४९	११२९३०००	१७६७०००
१९४९–५०	१२१७३०००	२१६५०००
१९५०–५१	१३८५९०००	३३३२०००
१९५१–५२	१६२११०००	३८९३०००
१९५२–५३	१५६६३०००	३१३१०००
१९५३–५४	१७०२७०००	४५३५०००

उपज ४०० पौण्ड वजन की १ गाँठ से है।

(३) गणतंत्र भारतमें कपासका विदेशोंसे आयात् सन् १९४८ से ५४ ई० तक :—

वर्षान्त अप्रैल मार्च	संयुक्तराज्य अमेरिकासे टन	मूल्य हजार रुपयेमें	मिश्र से टन	मूल्य हजार रुपयेमें	कीनिया से टन	मूल्य हजार रुपयेमें	कुल मात्रा टनमें	कुल मूल्य हजार रुपये की संख्यामें
१९४७-४८	६२६	१७७२	५९५८९	१८९५३५	३१२५२	७२०५६	११२,८९४	३११७१७
१९४८-४९	४१३८	१८६४९	५१२६२	२८८,४३५	२१७८२	८१०६८	१६१७०२	६४२३.१४
१९४९-५०	३६६४	१५२९८	७६२४६	३४०६२०	१३६४७	१३७४०९	१५८६४२	६३२४६०
१९५०-५१	१००८५८	४०५,६४८	४९२३१	३२३५२९	४१२०१	१६३७९४	२१४,८९५	१००७६७२
१९५१-५२	१२४१०८	६३२१९८	३९७४१	३९८४१३	२८८१८	१६६४६०	२१३२३३	१३७१२८५
१९५२-५३	७३६२८	३७२७५१	२५३९७	१५९४५०	२७९०९	१८१५७०	१३८३९७	७६६,७१३
१९५३-५४	७०८४	४१०९४	५६१९०	२७४,७९३	३२१५६	१३१४४०	११६२०५	५२७०७९

(४) गण-तंत्र भारत से भारतीय कपासका विदेशोंको निर्यात् सन् १६४८-५४ ई० तक :—

वर्षान्त अप्रैल-मार्च	ग्रेट ब्रिटेनको मात्रा टन	ग्रेट ब्रिटेनको मूल्य हजार रुपये	जापानको मात्रा टन	जापानको मूल्य हजार रुपये	कुल मात्रा टन	कुल मूल्य हजार रुपये
१६४७-४८	२६७८४	४२७४१	—	—	२०१३०७	२४७१२६
१६४८-४६	७७८३	१२६२५	१३६६६	३२६४८	७६०८०	१४००१२
१६४६-५०	१३६५	२५७३	१७४३८	३६७६५	५७६६४	१०५६६५
१६५०-५१	३८६५	१३१३५	१३५६	३०६८	१४६६३	४३४४१
१६५१-५२	२८६३	१६३४६	८५८२	५५३३७	२२६७७	१३६७५७
१६५२-५३	३६६५	६७५८	३८५५०	११४२०	७०८३६	१६३२०३
१६५३-५४	३३७६	८८६२	१६३३६	४६३०६	३४:४६	६३६७०

(५) गण तन्त्र भारतमें रुईके प्रकार भेदानुसार भारतीय सूती मिलोंकी रूईकी वार्षिक खपत सन् १६४८ से ५३ तक :—

सभी अंक हजारकी संख्यामें रुईकी गाँठोंका संकेत देते हैं।

वर्षान्त ३१ जुलाई	भारतीय	अमेरिकन	मिस्रकी	अन्य प्रकारकी	कुल रुई
११४८	३४५६०००	२	१७७	३१८	३६५३०००
१६४६	३५४७	७	२१६	२८०	४०५००००
१६५०	२५८७	१११	२३६	३३४	३२७१०००
१६५१	२३१७	३८३	१७५	३१०	३१८५०००
१६५२	२८०६	३८०	१०६	४०२	३६६७०००
११५३	३४८३	२४३	१०५	३६०	४१६५०००

(७) गण तन्त्र भारतमें सूती कपड़ेका विदेशोंसे आयात सन् १६४८ से ५४ ई० तक :—

(अंकोंको हजारकी संख्यामें पढ़ें)

वर्षान्त अप्रैल मार्च	ग्रेट ब्रिटेन मात्रा पौण्ड	ग्रेट ब्रिटेन मूल्य रुपये	जापान मात्रा पौण्ड	जापान मूल्य रुपये	कुल (सब देशोंका आयात) मात्रा पौण्ड	कुल (सब देशोंका आयात) मूल्य रुपया
१६४७-४८	१०५७१	१६७६६	—	—	२६५३७	४२४०५
१६४८-४६	३७०६२	७७२४६	१३८८	१०६६	४४६·५	६०१६५
१६४६-५०	४००२६	७६३१६	२६६३८	१६६५१	७३०७१	१०६७४८
१६५०-५१	३३६२	८००५	११७	६५	५७३४	१३०४१
१६५१-५२	५३६२	१६८०२	१५	१६	७८७८	२३६५६
१६५२-५३	३७१७	१०२०७	—	—	४५५१	१२४५३
१६५३-५४	४२७८	८५७१	—	—	५१६३	१०२१७

(८) गण-तंत्र भारतसे सूत और सूती कपड़ेका विदेशोंको निर्यात् सन् १६४७-५४ ई० तक

(अंकोंको हजारकी संख्यामें पढ़ें)

वर्षका अन्त अप्रैल मार्च	बटा और सादा सूत		सूती कपड़ा	
	मात्रा पौण्ड (वजन)	मूल्य रुपया	मात्रा गज	मूल्य रुपया
१६४७ ४८	४२	५६	१६२४२२	१८०२७६
१६४८-४६	७४०८	१२८६३	३४०८६५	३६२३८८
१६४६-५०	६२२६३	११२६७२	६८६६७३	५७५८८३
१६५०-५१	७४४६२	१७०६८२	१२०६८८५	१०५७६१५
१६५१-५२	६१७४	१६७२६	३८३७०२	४२५०२८
१६५२-५३	१७८६६	४३८१४	५६०८६८	५२७२६२
१६५३-५४	२२२२२	४६६४०	७०२०६२	५३२०४२

(६) गण-तंत्र भारतमें भारतीय सूती मिलों द्वारा कते सूत और बुने सूती कपड़ेका परिमाण सन् १६४८ ५४ तक।

(अंकोंको हजारकी संख्यामें पढ़ें)

वर्षका अन्त अप्रैल मार्च	सूत पोण्ड वजन	सूती कपड़ा गज
१६४७-४८	१३२६,७७६	३,७७०,०१७
१६४८ ४६	१४७५,१६३	४३८०,३८४
१६४९-५०	१२६०,३३८	३,८५०,३६४
१६५०-५१	११६१ ८८५	३६७५ ३५६
१६५१-५२	१३२५ ०४५	४२६६,६२२
१६५२-५३	१४७७ १०७	४७६१ ४४१
१६५३-५४	१५१६ ३५१	४८६५,२२७

(१३) गण-तन्त्र भारत स्थित भारतीय सूती मिलों द्वारा काते गये सूत और बुने गये कपड़ेका स्थानीय उत्पादन केन्द्रोंके अनुसार सन् १९५३ ई० का विवरण। (अंकोंकी संख्या हजारमें पढ़ें)

उत्पादन केन्द्र	सूत पौण्ड वजन	कपड़ा	
		पौण्ड वजन	गज
बम्बई			
(अ) अहमदाबाद नगर	२०४,५३९	१९७९६५	१,११६,१३८
(ब) बम्बई नगर	४२५,८०८	३८०६११	१ ३६४,८७१
(स) बम्बई राज्य शेष	१३३,७५२	१०९१९३	५०७,३९०
सौराष्ट्र	२२९७८	२८५६०	८५,०४९
मध्यभारत	९०३९८	८५२२२	३३०,८६३
भूपाल	४६८७	५०३५	१८,२५०
अजमेर	१२२१०	७४५४	२६९८६
राजस्थान	१८६१७	११४०३	३४७२७
पेप्सू	५२०४	५६३०	२०९१०
पंजाब	७६५५	६९५७	३२७९५
दिल्ली	४८०३९	३३८९४	१२३,१३१
उत्तरप्रदेश	११८४८१	८८७७२	३४९१९८
बिहार	२२५७	२३४८	९७८०
पश्चिम बंगाल	५८७९५	४६३१९	२१६७२४
उड़ीसा	१०२८०	८३२८	३१५०३
मध्यप्रदेश	५९०५६	४०५२४	१३८४२८
हैदराबाद	३०,२२५	२६६२५	८६७७७
मद्रास	२०,३,६२२	३९६९७	१२४९०२
मैसूर	३३२,२२३	१७-८५	५२७९४
केरल	१०५०५	१९४९	७३५८
आन्ध्र	५६७८	—	—
कच्छ	१८९	—	—

(१४) गण-तन्त्र भारत स्थित सूती उद्योगमें लगे हुए सूती मिलों, करघों और तकुओंकी संख्या का विवरण सन्१९५३ ई० की प्रथम जनवरीके दिनका।

उत्पादन केन्द्र	संख्या मिलन	संख्या तकुआ (चरखा)	संख्या करघा
बम्बई			
(अ) अहमदाबाद नग	६७	१ ९८६ ६४८	४१,२६४
(ब) बम्बई नगर	६३	२९६२,६८२	६५५४६
(स) बम्बई राज्य शेष	५०	१२६२९६०	२३५१५
सौराष्ट्र	११	१५४००८	३०८८
कच्छ	१	५३३६	—
मध्यभारत	१६	४३४२६४	११९७३
भूपाल	१	१५००४	४००
अजमेर	४	६५८१८	१७५५
राजस्थान	७	९१३३४	१४९९
पेप्सू	१	१७८१६	४४६
पंजाब	३	४०४०४	७८४
दिल्ली	३	१४११८०	३१०५
उत्तरप्रदेश	२४	७९६३००	१२६९३
बिहार	२	२८४६८	७४५
पश्चिम बंगाल	२४	४७२४०७	८७६९
उड़ीसा	१	४७७२८	८६४
मध्यप्रदेश	११	३७२२०२	७२०८
हैदराबाद	६	१४७८८८	३११६
मद्रास	७८	१९८३३९२	८१३०
मैसूर	८	२२०५२०	२८९३
केरल	९	१३२२९२	७१६
आन्ध्र	६	४४१३२	—

अन्तर्राष्ट्रीय सूती-वस्त्र-उत्पादनकी वास्तविक स्थिति

विश्वके प्रमुख वस्त्र-उत्पादकोंमेंसे वस्त्रका निर्यात करनेवाले प्रभावशाली देशोंके वस्त्र निर्यात अंक १० लाख गजकी संख्यामें इस प्रकार रहे :—

वस्त्र निर्यात करनेवाले उत्पादक	१९५२	१९५३	बक्सटन कांफ्रेन्स द्वारा स्थिर निर्यात लक्ष्य
जापान	७५२·५	६१४·६	१,१००,०
ग्रेटब्रिटेन	७१०·८	७०८·०	१,३५०,०
गणतंत्र भारत	५६१·६	७०१·३	१०००,०
संयुक्तराज्य अमेरिका	७७३·५	६२६·२	७२५·०
फ्रान्स	५४०·४	३४५.५	
हालैंड	२४२·२	२०६·६	
जर्मनी	२७२·७	२०७·७	
बेलजियम	१७६·२	१६२·८	
हांगकांग	१६५·०	१६८·७	
इटली	१७०·१	१२६·५	

विश्वके प्रमुख वस्त्र-उत्पादकों द्वारा उत्पादित सूत और वस्त्र

(अंक हजार मैट्रिक टनमें पढ़ें)

उत्पादक देश	सूत		वस्त्र	
	१९५२	१९५३	१९५२	१९५३
आस्ट्रिया	१७४०	१६८०	१२००	११६२
बेलजियम	६१२४	८८६२	६१६२	६७०८
कनाडा	६८८८	७०५२	२२०८०	२२६२०
फ्रान्स	२५६८०	२७०००	१८२४०	१६२००
पश्चिमी जर्मनी	२६२४४	३४३२०	१८०८०	२३६८०
गणतंत्र भारत	६५६४०	६८२८०	४२००००	४४७६६०
इटली	१७२८०	१६२२०	१११४८	१०७८८
जापान	३५२८०	४१४००	१८७२००	२३४६६०
नीदरलैण्ड	५६०४	६४५६	उपलब्ध नहीं	उवलब्ध नहीं
पाकिस्तान	६१२	५२७६	१५[illegible]२४	२१७४४
स्पेन	६३६०	५६७४	३· नहीं	३· नहीं
ग्रेटब्रिटेन	२६७६०	३१४४०	१५४८००	१७०४००
संयुक्तराज्य अमेरिका	३·नहीं	३· नहीं	८७००००	६३१२००
यूगोस्लाविया	२५६२	२७७२	१११६६	१२८७६

भारतमें कपासकी वास्तविक स्थिति

विश्वके कपास उत्पादन तथा रुईकी खपतके मानचित्रमें गण-तन्त्र भारतका अनन्त महत्वशाली स्थान है। अमेरिका और रूसको छोड़कर विश्वके समस्त देशोंमें कपासके उत्पादकके रूपमें गण तन्त्र भारतका स्थान जहाँ प्रमुख है वहाँ रुईके उपभोक्ताके रूपमें संयुक्त राज्य अमेरिकाके बाद ही भारत का स्थान है।

गणतन्त्र भारतमें कई प्रकारकी कपास उत्पन्नकी जाती है जिनमेंसे निम्नलिखित सन् १९५२-५३ ई० के कतिपय अंकोंसे अनुमान किया जा सकता है।

कपासका उत्पादन

कपासके प्रकार	उत्पादन लाख गाँठ	बोनेका समय	चुननेका समय	बिक्रीका समय
धुलेरा	२·६	जुलाईसे अगस्त तक	जनवरीसे अप्रैल तक	जनवरीसे अगस्त तक
भंडोंच	१·२	जूनसे जुलाई तक	जनवरीसे अप्रैल तक	फरवरीसे जुलाई तक
उमरा	७·३	जूनसे जुलाई तक	अक्टूबरसेजनवरीतक	अक्टूबरसे अगस्त तक
कुम्पटा	२·७	अगस्तसे सितम्बर तक	मार्चसे मई तक	अप्रैलसे अगस्त तक
धारवाड़ अमेरिकन	२·६	अगस्तसे सितम्बर तक	फरवरीसे अप्रैल तक	अक्टूबरसे जुलाई तक
पंछाही	२·५	अगस्तसे सितम्बर तक	फरवरीसे अप्रैल तक	जनवरीसे अगस्त तक
बंगाली	४·२	अप्रैलसे जुलाई तक	सितम्बरसेजनवरी तक	अक्टूबरसे जुलाई तक
कारुंगनी	१·३	अक्टूबरसेदिसम्बर तक	अप्रैलसे जुलाई तक	अप्रैलसे दिसम्बर तक
कम्बोडिया	२·७	सितम्बरसे अक्टूबरतक	अप्रैलसे जुलाई तक	मईसे जनवरी तक
टिनेवैली	३·०	अक्टूबरसे नवम्बर तक	मार्चसे अगस्त तक	अप्रैलसे दिसम्बर तक

सन् १९५२–५३ में गण-तन्त्र भारतका उत्पादन विभिन्न प्रकारकी कपासका २०·५ लाख गाँठ का माना जाता है। प्रत्येक गाँठ ३६२ पौण्ड वजनकी होती है। कपासके उत्पादनमें वृद्धि हो और वह भी उत्कृष्ट कोटिकी हो-इस ओर प्रयत्न किया जा रहा है।

चतुर्थ-सोपान

वस्त्र उद्योग और भारत सरकार

सन् १९४७ की पन्द्रह अगस्तको गणतंत्र भारतकी पहली नवीन सरकारकी स्थापना हुई। युद्ध-जनित संकटके कारण उस समय यह देश अन्न और वस्त्रके भयङ्कर संकटमेंसे गुजर रहा था। वस्त्रके उद्योगपति करोड़ों रुपया कमा रहे थे मगर जनताको कपड़ा नसीब नहीं हो रहा था।

कुछ वर्षों तकतो विभाजन जनित संकटोंका मुकाबिला करनेमें तथा दूसरी आकस्मिक समस्याओंका हल करनेमें तथा अपनी स्थिति सुदृढ़ करनेमें भारत सरकार व्यस्त रही। पर सन् १९५० से उसने भारतीय उद्योगोंको सुव्यवस्थित करने और उन उद्योगोंका लाभ जनताको पहुँचानेके लिए सक्रिय कदम उठाना प्रारम्भ किया। भारतीय उद्योगोंका विकास करने और उन्हें क्रमशः समाजवादी ढांचेमें ढालनेके लिये उसने एक सुनिश्चित नीति निर्धारित की। युद्ध कालके संकट और अनुभव उसके सामने थे। उसने देख लिया था कि अपनी आवश्यकताओंके लिए दूसरे देशों पर निर्भर रहनेवाले देशको कितने भयङ्कर संकटोंका सामना करना पड़ता है, इसलिए उसके आगे सबसे पहला प्रश्न था अपनी आवश्यकताओंके सम्बन्धमें, खासकर अन्न और वस्त्रके सम्बन्धमें देशको पूर्ण स्वावलम्बी बनाना और यही लक्ष्य उसने अपनी पहली पंचवर्षीय योजनामें रक्खा।

दूसरी समस्या विदेशी बाजारोंमें दूसरे देशोंकी प्रतिस्पर्द्धामें भारतीय वस्त्र उद्योगकी स्थितिको मजबूत करनेकी थी, यह तभी हो सकता था जब यहांका कपड़ा क्वालिटीमें दूसरे देशोंके कपड़ेसे मुकाबिला कर सके।

इंग्लैण्डसे तो इस विषयमें पहलेही मुकाबिला चल रहा था मगर जापानके भी इस मुकाबिलेमें उतर जानेसे हम लोगोंको यह सोचनेके लिए मजबूर कर दिया कि हम किस प्रकार वास्तविक स्थितिका सामना करें और जब बरमाकी सरकारने भी भारतीय मालको महत्व देना छोड़ दिया तो इस घटनाने उन लोगोंको भी एक और धक्का दिया जो कि अभीतक सन्तुष्ट नजर आते थे।

इन घटनाओंने निर्यातके महत्त्व तथा इस क्षेत्रकी प्रतिस्पर्द्धामें टिकनेके विषयमें हमलोगोंकी राष्ट्रीय चेतनाको जागृत कर दिया। नकारात्मक (Negetive) दृष्टिसे नहीं कि कपड़ेके निर्यात परसे प्रतिबन्ध या कर कम कर दिये जावें बल्कि सकारात्मक (Posetive) दृष्टिसे कि कपड़ेकी क्वालिटीमें उन्नत की जावे तथा सेवायें बढ़ाई जांय।

इसके परिणामस्वरूप अपनी गलतियोंकी कड़ी परीक्षा करने और देशी तथा विदेशी ग्राहकोंके द्वारा कपड़ेकी क्वालिटी तथा बहुतसे मालके लिए जो शिकायतें आती थी उनको गंभीर चेतावनी समझकर उनपर ध्यान देना आवश्यक समझा गया और यह महसूस किया गया कि उन लोगोंकी आलोचनामें सत्यका बहुत कुछ अंश है, और हमारे कपड़ा उद्योगके क्षेत्रमें सुधार करनेकी बहुत कुछ गुञ्जाइश है।

इस परिवर्त्तित विचारधाराके वातावरणमें निर्यातमें उन्नति करनेकी दिशामें वास्तविकताको लेकर कदम बढ़ाना अनिवार्य हो गया। और कॉटन टैक्सटाइल फण्डको उचित दिशामें उपयोग करनेका मार्ग निकल आया।

दी कॉटन टैक्सटाइल फण्ड

सन् १९४४ में तत्कालीन भारत सरकारने जो भारतीय कपड़ा या सूत विदेशोंको भेजा जाता था उसकी मिलसे निकलनेके पश्चात् अधिकतम कीमतपर ३०% प्रतिशत टैक्स लगाकर कॉटन टैक्सटाइल फण्डकी स्थापना की। यह टैक्स सिर्फ कुछ परिमित समयके लिए लगाया गया था जो अक्टूबर सन् १९४४ से प्रारम्भ होकर नवम्बर सन् १९४७ में समाप्त कर दिया गया। इस फण्डमें कुल २,३३,५००००० रुपया इकट्ठा हुआ। इस फण्डका उद्देश्य यह था कि इसका धन कपड़ा उद्योगमें नये अन्वेषण करने तथा निर्यातकी उन्नतिमें खर्च किया जावे।

इस फण्डका नियन्त्रण करनेके लिए जो कमेटी बनायी गयी थी उसकी बैठकें समय समयपर होती रहती थीं। मगर सन् १९४७ तक इस क्षेत्रमें कोई महत्त्वपूर्ण प्रगति न हो सकी। सन्१९४७ में इस कमेटीने अहमदाबाद टैक्सटाइलके अन्वेषण संगठनको, कपड़ा उद्योग अन्वेषण केन्द्र स्थापित करनेके लिए आर्थिक सहायता देना निश्चित किया।

श्री टी० टी० कृष्णमचारीने केन्द्रमें उद्योगमन्त्री होने पश्चात् इस विषयपर सक्रियरूपसे ध्यान देना प्रारम्भ किया। उन्होंने महसूस किया कि निर्यातकी उन्नतिके लिए एक सुदृढ़ संगठनका स्थापित करना आवश्यक है। कोई भी व्यक्तिगत या समूहगत संगठन, जो कितने ही प्रकारके स्वार्थोंमें फँसा हुआ हो वह किसी विशेष मालके लिए विज्ञापन या प्रचार नहीं करसकेगा। निर्यात होनेवाले तमाम कपड़ेको अखिल भारतीय कपड़ेके ट्रेडमार्कके साथ विदेशी बाजारोंमें भेजना होगा और स्वाभाविक ही उस ट्रेडमार्कके साथ मालकी उत्तम क्वालिटीका विश्वास दिलाना आवश्यक होगा।

इस विचारसे प्रेरित होकर श्रीकृष्णमचारीने कॉटनटैक्सटाइल फण्ड समितिके सामने यह प्रस्ताव रक्खा कि "हमको अखिल भारतीय कपड़ेकी क्वालिटीको प्रदर्शित करनेवाला एक ट्रेडमार्क निश्चित कर लेना चाहिए और उसको सन् १६५२ के कानूनके अन्तर्गत रजिस्टर्ड करवाकर एक सार्टीफिकेट प्राप्त कर लेना चाहिए। किसी भी ऐसे ट्रेडमार्कको प्रसिद्ध करना कठिन न होगा जो कि भारतीय कपड़ेकी क्वालिटी को बतलाता हो। इसके अतिरिक्त विदेशी बाजारोंमें हमारे जो प्रतिनिधि हों और वे जो सूचनाएँ वहाँके बाजारोंकी प्रकृति और आवश्यकताके अनुसार, हमें दें उनके ऊपर हमें पूरा ध्यान देना होगा और अपने कपड़ेकी क्वालिटीमें उसीके अनुसार परिवर्तन करना होगा जिससे हम दूसरे देशोंकी प्रतिस्पर्द्धामें सफल हो सकें।'

"ये प्रयत्न अगर हमको कुछ लाभ पहुँचाते हैं तो इसका मतलब अवश्य ही यह होगा कि हम अपने निर्यातके दस हजार लाख गजके लक्ष्यको पानेमें सफल होंगे। इस विषयमें जो कार्य्य हमारे सामने है उसमें बहुत ही लगन, धैर्य्य तथा देशभक्तिकी आवश्यकता पड़ेगी। यह कार्य्य सिर्फ व्यक्तिगत अथवा कुछ विशिष्ट मिलसमूह या व्यापरीसमूहके लाभके लिए नहीं है बल्कि समग्रदेशके स्थायी लाभके लिए है। जिसप्रकारसे यह कार्य्य प्रारम्भ किया गया है उससे मुझे विश्वास होता है कि हम इस कार्य्यको सफलता-पूर्वक इसके परिणामपर पहुँचा सकेंगे और निर्यातकी उन्नतिका हमारा संगठन एक घटना बन जावेगी तथा देशके लिए एक गर्वकी वस्तु हो जावेगी और शीघ्र ही हम भारतीय कपड़ेकी क्वालिटीकी प्रतिष्ठा विदेशोंके बाजारमें प्राप्त कर सकेंगे। भाग्यसे यह इज्जत कुछ भारतीय मिलोंके कपड़े निभा भी रहे हैं।

कपड़ा उद्योगमें अन्वेषण (Research) कार्यकी प्रगति

कपड़ेकी क्वालिटीमें समयकी आवश्यकताके अनुसार दिन प्रतिदिन उन्नति करनेके लिए नये २ अन्वेषण होते रहना अत्यन्त आवश्यक है तभी हम कपड़ेके निर्माणमें दूसरे देशोंका मुकाबिला कर सकेंगे। इन अन्वेषणोंके लिए अहमदाबादमें एक अन्वेषण संगठन पहलेसे बना हुआ है। सन् १९४७ में कॉटन टैक्स टाइल फण्ड समितिने उपरोक्त संगठनके अधिकारमें अन्वेषण केन्द्र स्थापित करनेके लिए आर्थिक सहायता देना मंजूर किया।

इसके पश्चात् कॉटन टैक्स टाइल फण्ड समितिने कुछ समय पूर्व यह निश्चित किया कि बम्बई और तथा कोयम्बटूरमें कपड़ेके अन्वेषणके लिए नवीन प्रयोग शालाएं स्थापित की जावें।

इस विषय पर वक्तव्य देते हुए भारतके उद्योग मंत्री टी० टी० कृष्णमचारीने कहा कि "मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि कपड़ेका एक अन्वेषण केन्द्र बम्बईमें बहुत शीघ्र खोला जा रहा है। प्रारम्भमें ये संस्थाएं अपना कार्य स्थानीय उद्योगके चन्देसे चलावेंगी और इसी आधार पर इन्हें चालू किया गया है। इसके पश्चात् ये संस्थाएं कॉटन टैक्सटाइल फण्डसे भी आर्थिक सहायताकी आशा कर सकती हैं।"

उद्योग मंत्रीने आगे कहा कि—"अनेक टैक्सटाइलके अन्वेषणोंके होनेका यह मतलब नहीं कि एक ही प्रकारका कार्य हर एक केन्द्रमें किया जावे। जिससे चतुर व्यक्तियों और उपलब्ध साधनोंका दुरुपयोग हो। कुछ खास मौलिक सिद्धान्तोंमें सभी अन्वेषण केन्द्र कार्य्य करनेकी समानतासे बच नहीं सकते। परन्तु जिस प्रकार मूल वृक्ष एक होनेपर भी उसकी शाखाएं अलग२ होती हैं उसी प्रकार अन्वेषणका क्षेत्र भी बहुत विस्तृत और अनेक शाखा प्रशाखाओंसे परिपूर्ण है। उदाहरणके तौरपर A.T.I. R.A. ने कुछ अलग ही दिशामें अन्वेषण करना प्रारम्भ किया है इसलिए जो नये केन्द्र खोले गये हैं उनके लिए बुद्धिमानीका कार्य्य होगा कि जो कार्य्य A.T.I.R.A. में हो रहा हो उसको दोहराया न जाय। यह हो सकता है कि जो दो या तीन केन्द्र बम्बईमें है तथा जहांपर कुछ अन्वेषण किये जा रहे हैं वे टैक्स टाइल अन्वेषणोंके ही समान हैं तथा उनके सहायक हैं। अब जो नयेकेन्द्र खोले जांय उनके लिए जो कार्य्य-क्रम बनाए जाँय वह कार्य्य-क्रम इन केन्द्रोंमें होनेवाले कार्य्य क्रमसे नवीन ढगके होना आवश्यक है। उन वैज्ञानिकोंसे जो इन केन्द्रोंके अधिकारी हो निश्चय ही यह आशाकी जा सकती है कि प्रतिष्ठा, गौरव इत्यादि संकीर्ण विचारोंसे अपने आपको ऊँचा उठाकर इन केन्द्रोंके खोलनेके मूल उद्देश्य को ध्यानमें रखकर टैक्सटाइल क्षेत्रमें नये २ आविष्कार और नई २ विचार धाराओंको जन्म देनेका प्रयास करें, जबकि यह महसूस किया जा रहा है कि भारतमें टैक्स टाइल अन्वेषण करनेके लिए बहुत विस्तृत क्षेत्र है।"

इस प्रकार सरकार और उद्योग पतियोंके सहयोगसे देशका कपड़ा-उद्योग प्रथम पंचवर्षीय योजनाकी समाप्तिके पूर्व ही अपने नियोजित लक्ष्यपर पहुँच रहा है। उसका उत्पादन सन् १९५५ में पाँच अरब चार करोड़ गजपर पहुँच गया है और उसका निर्यात भी काफी उन्नति कर गया है। इसके साथ ही देशमें टैक्सटाइल-सम्बन्धी नये-नये अन्वेषणोंका कार्य भी तेजीसे आगे बढ़ रहा है।

पंचम सोपान

कपड़ा मिल उद्योग में अभिनवीकरण

(RATIONALISATION)

आधुनिक वैज्ञानिक युगमें प्रत्येक क्षेत्रमें कम परिश्रममें अधिक उत्पादन करनेके लिए नित्य प्रति नये २ अन्वेषण हो रहे हैं। नई २ मशीनोंके आविष्कारने मनुष्यको कम परिश्रममें अधिक उत्पादन करने में समर्थ बना दिया है। कहना न होगा कि कपड़ा उद्योगका क्षेत्र भी इन नवीन अन्वेषणोंसे वंचित नहीं है। इस उद्योगमें भी कई ऐसी स्वतः चालित मशीनोंका आविष्कार हो चुका है जिन पर एक २ मजदूर दस २ मजदूरोंके बराबर उत्पादन करनेमें समर्थ है। पुरानी मशीनों पर जहां एक मजदूर कपड़ा बुननेके सिर्फ दो लूम सम्हालता है वहां आधुनिक मशीनोंसे सुसज्जित मिलोंमें वही मजदूर पचास २ लूमोंको सम्हालता है। कहीं २ तो अस्सी लूमको एकही आदमी सम्हालता हुआ देखा गया है।

अमेरिका और जापान की मिलें आधुनिक स्वतः चालित मशीनोंसे सुसज्जित हैं और लंका शायर भी इस दिशामें आगे बढ़नेका प्रयत्न कर रहा है। मगर हमारे देशमें अभी तक पुरानी मशीनोंसे ही काम लिया जा रहा है। एक विशेषज्ञने जो कि अमेरिका गये थे इस विषय पर अपनी रिपोर्ट देते हुए लिखा है कि 'साउथ केरोलिना की एक मिलमें ७२,७६८ स्पिण्डल्स और १६०० लूम्स पर तीन पालियोंमें सिर्फ ८२६ मजदूरोंकी आवश्यकता होती है जब कि हमारे यहां उतनेही काम और उतनेही घंटोंके लिए ७००० मजदूरोंकी आवश्यकता होती है।"

इससे यह स्पष्ट है कि जिन कारखानोंमें इस प्रकारकी मशीनें लगी हुई हैं वहां पर बननेवाले कपड़ेका उत्पादन व्यय हमारे यहांके उत्पादन व्ययसे बहुत कम आता होगा और यह भी स्पष्ट हैं कि संसारके बाजारोंमें वह कपड़ा हमारे यहाके कपड़े की प्रतिस्पर्द्धामें सस्ते मूल्य पर उपलब्ध होगा और हम उस प्रतिस्पर्द्धामें ठहर नहीं सकेंगे। दूसरे हमारे देशके उपभोक्ताओंको भी हमारे देशका कपड़ा महंगे मूल्यपर प्राप्त होगा और उससे हमारे देशका आर्थिक संतुलन भी स्वाभाविक नहीं हो सकेगा। ऐसी स्थितिमें संसारकी आर्थिक प्रतिस्पर्द्धामें ठहरनेके लिए तथा देशके आर्थिक संतुलको बनाये रखनेके लिए हमारे लिए भी यह आवश्यक है कि हम भी हमारे कारखानोंमें आधुनिक मशीनरीके द्वारा अभिनवी करण (Rationsalisation) करें।

मगर इस विचारधाराका एक दूसरा पहलू भी है जिसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते और जिसकी ओर कुछ उपेक्षा वृत्ति रखनेसे कानपूरके मिलउद्योगको एक बहुत बड़ी और लम्बी मजदूर हड़तालका

सामना करना पड़ा था। वह दूसरा पहलू इस अभिनवी करणका हमारे यहांके मजदूर वर्ग पर पड़नेवाला प्रभाव है। जो मजदूर इस उद्योगके द्वारा इस देशमें अपनी जीविका प्राप्त कर रहे हैं, सारे देशमें नई मशीनें लग जानेपर उनमेंसे दो तिहाई मजदूर बेकार हो जावेंगे और वे लोग कभी यह पसन्द न करेंगे कि उनकी जीविकापर प्रहार कर हमारे देशकी मिलें सस्ता उत्पादन करें और वास्तवमें यह बेकारी हमारे देशके लिए एक भयङ्कर खतरा पैदा करदेगी। इसी दृष्टिकोणको सामने रखकर कानपूरके वामपक्षी नेताओंने उस व्यापक हड़तालका संचालन किया था।

यह मानते हुए भी कि मजदूरोंकी बेकारीकी यह समस्या बहुत महत्व पूर्ण है फिर भी इतना तो स्पष्ट हैं संसारमें चलनेवाली औद्योगिक घुड़दौड़में, यह दलील हमारी कोई सहायता नहीं कर सकती। यह हमारी एक घरेलू समस्या है जिसका हमें घरेलू तरीकेसेही हल करना पड़ेगा। संसारके दूसरे देशोंने इस समस्याको किस प्रकार हल किया है उनका अनुकरण करके ही हमें भी इसका हल करना पड़ेगा। यह तो बढ़ते हुए मशीन युगका अवश्यम्भावी परिणाम है जिसका मुकाबिला हमें करना अवश्यम्भावी है। इसी समस्याके दूरवर्ती परिणामोंको देखकरही हमारे राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जीवन भर मशीन युगके विरोधमें अपनी आवाज उठाते रहे और हाथ उद्योगपर बल देते रहे।

मगर चूंकि जब सारा विश्व धुंआधार गतिसे मशीन युगकी ओर बढ़ता जा रहा हैं और मानव-सभ्यता ही मशीन युग-सभ्यता हो गई है तब उस सभ्यताके झोंकेसे अकेले हमारा देश ही बचा रहे यह सम्भव नहीं हो सकता। इसलिए इस युगके अच्छे और बुरे सभी प्रकारके परिणामोंको हमें भुगतनाही होगा और इस युगकी समस्याओंका इसी युगके दृष्टिकोणसे ही हल करना होगा।

फिर दूसरे देशोंके मुकाबिलेमें तो हम इन समस्याओंको विशेष आसानीसे हल कर सकते हैं। क्योंकि हमारा देश एक विशाल देश है, हमारे यहां की जन संख्या छत्तीस करोड़ है। अभी हमारे यहां प्रति व्यक्ति केवल १४ गज कपड़ा उपलब्ध है जब कि उन्नतिशील देशके नागरिकको ४५ गज कपड़ा प्रति व्यक्ति उपलब्ध होता है। यदि साधारणतया एक नागरिकके जीवनके लिए ३० गज कपड़ा भी समझ लिया जाय तो हमारे देशके छत्तीस करोड़ नागरिकोंके लिए ग्यारह अरब गज कपड़ेकी आवश्यकता होती है इसके अतिरिक्त निर्यात करनेके लिए कमसे कम हम दस हजार लाख गज अर्थात् एक अरब गज कपड़ा रक्खें तो यह आवश्यकता बारह अरब गज पर जा पहुँचती है जब कि इस समयका हमारा अधिकतम उत्पादन पाँच अरब गजका है। इससे मालूम होता है कि इस वैज्ञानिक युगमें नागरिक आवश्यकताओं की पूर्तिके लिए आवश्यक वस्त्र उत्पादनके लिए हमें अपने वस्त्र उत्पादनको अभी भी ढाईगुना बढानेकी आवश्यकता हैं।

ऐसी स्थितिमें अगर हमारे कारखाने मजदूरों की छटनी करनेकी दृष्टिसे नहीं बल्कि अधिक उत्पादन, और सस्ते उत्पादनकी दृष्टिसे राशनेलाइजेशन करते हैं तो मजदूरोंकी बेकारीका प्रश्नही न रहेगा और विश्वकी प्रति योगितामें हम अपनी मजबूत स्थितिको प्राप्त करलें।

मिल उत्पादित वस्त्रके विक्रय केन्द्रोंमें विश्वव्यापी प्रतिद्वन्द्विताका आतंक क्रमशः बढ़ता जा रहा है। विशाल विश्वके विक्रय-केन्द्रोंमें यह निष्ठुर अन्ध प्रतियोगिता अपना दानवी ताण्डव कर रही है। ऐसी विषम परिस्थितिमें जहाँ हमें अपने श्रमिक वर्गकी बेकारीका भयंकर चित्र सदा सम्मुख रखना है वहां मिल उद्योगकी अन्नपूर्णा स्वरूप सम्यक उन्नतिका यथेष्ट ध्यान भी रखना परमावश्यक है। अतः इन तीनों ही बातोंको दृष्टिमें रख कर आधुनिकतम अभिनवीकरणके गम्भीर प्रश्नपर विचार करना होगा। इस अप्रिय सत्यको अस्वीकार नहीं किया जा सकता है कि मिल उत्पादित वस्त्रके विक्रय-केन्द्र क्रमशः संकुचित होते जा रहे हैं। जिस अनुपातसे उत्पादन सामर्थ्यमें वृद्धि हो रही है उस अनुपातसे विक्रम-केन्द्रोंका विस्तार नहीं हो रहा है। अस्तु स्वहित संरक्षणार्थ इन विक्रय-केन्द्रोंके प्रत्येक मोर्चेपर हमें जीवनोत्सर्गकारी भयंकर प्रतियोगितामें घुटने टेक कर डटना होगा। इतना ही क्यों। विश्वके विभिन्न विक्रय-केन्द्रोंके जिन अनेक क्षेत्रोंको गण-तन्त्र भारतने अधिकृत कर लिया है उनको अपना उत्पादन व्यय कमसे कम करके भी अपने अधिकारमें सदाके लिये सार्वविधि सुरक्षित रखना होगा। निर्यात् उद्योगको यदि हमें सर्वविधि स्वस्थ रूपसे जिवित रखना इस्ट है तो हमें अपने उत्पादन व्ययको कमसे कम करनेके लिये सर्वविधि सतर्क और सावधान रह प्रयत्नशील होना पड़ेगा। ऐसी जागरुकता रखनेपर ही हम अपने विक्रय-केन्द्रोंको अपने अधिकारमें रख सकेंगे। रही बेकारीकी बात इसके सम्बन्धमें केवल इतना ही कहना पर्याप्त है कि इस युगमें पुराने रंग ढंगसे काम करते रहना ही बेकारीका एक मात्र और प्रधान* कारण है। इसके अतिरिक्त आधुनिकतम अभिनवीकरण अधिक समय और अधिक धन आपेक्षित होनेके कारण भारतीय वस्त्र उद्योगकी आर्थिक सामर्थ्यके लिये तत्काल सम्भव भी नहीं है। इसके अनुकूल निर्णय कर यदि अपनी नीति स्थिर कर हम इस ओर कार्य भी आरम्भ कर देते हैं तो भी इसे सम्पन्न करनेमें बहुत अधिक समय लगेगा। बेकारीकी समस्याका फल उठ खड़ा होना सम्भव भी नहीं है। उत्पादनका व्यय कमसे कम करना मुख्यतया उत्पादनकी वृद्धिपर अवलम्बित है और उत्पादनमें असाधारण वृद्धि बिना आधुनिकतम अभिनवीकरणके कभी भी सम्भव नहीं है। आशा है सरकार इस महत्वपूर्ण प्रश्नपर उचित गम्भीरतासे विचार कर अपनी रीति नीतिमें आपेक्षित अनुकूल परिवर्तन शीघ्र करेगी।

गणतन्त्र भारतके इस विशाल उद्योगका आधुनिकतम अभिनवीकरण व्यापक और सुस्तृत रूपसे करनेके लिये स्वयं इस उद्योगके पास आपेक्षित आर्थिक साधनोंका नितान्त अभाव है। आज नवीन

*देखिये 'International Planning Team of the Ford Foundation in 1954.' कीरिपोर्ट:—" Without rationalisation the natural talents of Indian workers are being wasted in a hopeless race against modern Technology. Perpetuation of inefficient out-dated methods has more drastically reduced employment than any modernisation could have done."

पूँजीकी व्यवस्था करना हमारे लिये टेढ़ी खीर है। फिर भी इस परम प्रयोजनीय कार्यको सम्पन्न करने के लिये पूँजी प्राप्त करनेकी जटिल समस्याको अत्यन्त शीघ्र सुलझाना ही पड़ेगा। आजके इस प्रगतिशील युगमें जहां आधुनिकतम अभिनवीकरण करनेमें संसारका प्रत्येक देश ट तूपूर्वक तल्लीन है वहाँ गण तन्त्र भारत अपनी आर्थिक व्यवस्थाको असाधारण धक्का लगाये बिना निश्चेष्टा खड़ा नहीं रह सकता।

आर्थिक व्यवस्थाका सूत्रपात करना चाहिये।

गण-तन्त्र भारतके वस्त्र उत्पादन उद्योगका वर्तमान समुन्नत स्वरुप वास्तवमें अनेक ऐतिहासिक प्रेरणाओंका परिणाम और स्वाधीनता संग्राममें यशस्वी होनेके पुरस्कारका प्रतीक है। अपनी अनेक विशेषताओंके कारण देशके औद्योगिक क्षेत्रमें इस उद्योगका स्थान प्रमुख है। सूती मिलोंमें लगी हुई यांत्रिक सामग्रीकी दृष्टिसे समस्त विश्वके औद्योगिक क्षेत्रमें हमारा तीसरा नम्बर है और रुईकी वार्षिक खपतकी दृष्टिसे सारे संसारमें हम दूसरे नम्बर पर आते हैं। देशके इस विशाल उद्योगमें अनुमान तया ६००० लाख रुपयेकी पूँजीका हस्तान्तरण होता है अतः देशकी सम्पत्तिमें इस उद्योगने अपनी उपरोक्त पूँजी सम्मिलित कर राष्ट्रीय अधिकोषणके मर्मस्थलको अनुपम बल प्रदान किया है। इस उद्योगने ७ लाख ५० हजार भारतीय श्रमिकोंको दैनिक काममें लगाकर गण-तन्त्र भारतमें उत्पन्न होनेवाली रुईकी ३९ लाख गांठोंकी खपत करनेकी व्यवस्था स्वदेशमें ही कर दी है। इसके अतिरिक्त हाथ करघा वस्त्र उद्योगने करीब एक करोड़ जुलाहोंकी जीविकाका भार ले रक्खा है। यह उद्योग, पत्थरका कठिन कोयला, और मुलायम कोयला, लकड़ीका कोयला तथा लकड़ी आदिके रुपमें व्यवहृत सभी प्रकार का ठोस ईंधन जहां २० लाख टन खपत करता है वहां ५०० लाख गैलन तेल जैसा तरल ईंधन तथा ६०० K. W. H. बिजलकी खपत करता है। इस उद्योगने बाबिन, तकुये, हील्डस, रीड, स्टार्च जैसे नाना प्रकारके आपेक्षित उपकरणोंके निर्माणका काम करनेवाले अनेक सहकारी और आश्रित उद्योगोंको जन्म दे, उनका लालन पालन कर सपुष्ट कर दिया है। यातायातमें लगे हुए बहुसंख्यक श्रमिकोंको जहाँ यह उद्योग आजीविका उपार्जन करनेका संयोग उपस्थित करता है वहाँ यातायात, बीमा तथा बैंक जैसे अनेक प्रकारके व्यवसायिक प्रतिष्ठानोंको आश्रय देता है। यह उद्योग अपने तकुओंको चलाकर २० लाख हाथ करघोंको सूत देकर वस्त्र उत्पादन करनेमें लगाये हुए हैं।

छठा सोपान

भारतमें रेयन उद्योगका विकास

मनुष्य अपने वस्त्रकी आवश्यकता पूर्तिके लिए बहुत प्राचीन समयसे रूई, रेशम तथा ऊनके धागोंका उपयोग करता आ रहा है।

मगर उन्नीसवीं शताब्दीके मध्यकालमें संसारमें "रेयन" नामक एक नवीन रेशेदार वस्तुका आविष्कार सन् १८७० में फ्रांसके एक वैज्ञानिकने किया यह एक प्रकारके कृत्रिम कपाससे बनाया जाता है। बीसवीं सदीके प्रारम्भमें "रेयन" के रेशोंके विकासके लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रयत्न किये गये। ये कृत्रिम रेशे विशुद्ध रूपसे कपड़ा बनाने तथा रेशम, सूत और ऊनमें मिलावट करनेके काममें आते हैं। इन रेशोंसे तैयार किया हुआ कपड़ा रेशमसे अधिक चमकीला, रंग बिरंगा और बहुत सुन्दर तथा आकर्षक और सस्ता होता है। हालांकि रेशमके समान वह मजबूत और धोने काबिल नहीं होता।

सन् १९४९में सारी दुनियाके रेयनका उत्पादन करीब २७००० लाख पौण्ड था और इस चीजको स्वीकार करनेमें किसी प्रकारकी दुविधा नहीं हो सकती कि मनुष्य रेयनके बने हुए कपड़ेकी तरफ दिन-प्रतिदिन आकर्षित होता जा रहा है क्योंकि यह बहुत सस्ता और सुन्दर होता है।

भारतवर्षमें सन् १९३३ में सबसे पहले रेयनसे कपड़ा बुननेका उद्योग स्थापित किया गया और तबसे यह उद्योग यहाँ बराबर उन्नति करता जा रहा है। दूसरा महायुद्ध छिड़ जानेपर जब विदेशोंसे रेयनका कपड़ा आना बिलकुल बन्द हो गया तब यहाँके देशी उद्योगको बहुत प्रोत्साहन मिला जिसके परिणाम स्वरूप आज इस देशमें ३७००० पॉवरलूम्स और ७५००० हैण्डलूम्स रेयनका कपड़ा बनानेमें लगे हुए हैं। इस सारे उद्योगमें १५ करोड़ रुपयेसे अधिककी पूँजी लगी हुई है तथा करीब ५०००० आदमियोंके लिए यह जीविकाका साधन बना हुआ है।

स्वदेशी रेयनकी मिलोंका कुल वार्षिक उत्पादन इस समय ३५०० लाख गजका है इसमेंसे २४०० लाख गज कपड़ा तो हमारे देशकी आवश्यकताकी पूरी करनेमें खप जाता है और बाकी माल

विदेशोंके बाजारोंमें जाता है। विदेशोंके अन्तर्गत एशिया और अफ्रिकाके खास खास बाजारोंमें इसकी अच्छी खपत है। सन् १९४८-४९ में भारतवर्षसे २४४'८ लाख गज रेयनका कपड़ा विदेशोंको भेजा गया था जिसका मूल्य करीब ५१६ लाख रुपये था। इन अंकोंसे पता लगता है भारतीय मालने विदेशोंके बाजारमें कितनी इज्जत प्राप्त कर ली है। जो उन्नति इस उद्योगने इतने कम समयमें कर ली है वह आकर्षक है।

पाकिस्तान भी कुछ समयतक हमारे रेयन-वस्त्रका बहुत बड़ा ग्राहक रहा और कुछ समयतक तो हमारे कुल निर्यातका ९९% माल पाकिस्तानको जाने लगा। मगर १९४९ में भारतसे आनेवाले मालपर चुंगी लगा देनेके कारण पाकिस्तानके बाजारोंसे भारतीय मालके पैर उखड़ गये जिसके फलस्वरूप सन् १९४९-५० में हमारे यहाँका निर्यात २४५ लाख गजकी जगह सिर्फ १२२ लाख गज रह गया।

पाकिस्तानके बाजार हाथसे निकल जाने पर भारतने अरब, जंजीबार, सीलोन इत्यादि देशोंमें इस मालके बाजार ढूंढना प्रारम्भ किये। हालांकि इन देशोंमें रेयन वस्त्रोंकी काफी खपत है मगर दूसरे देशोंसे अधिक और सस्ता माल आनेके कारण वहाँ भी भारतीय माल मुकाबिला न कर सका जिसके फलस्वरूप प्रति वर्ष वह अपने बाजारोंको खोता जा रहा है और सन् १९५४-५५ में उसके निर्यातका अङ्क सिर्फ ३१ लाख गज रह गया।

प्लानिंग कमीशनने सन् १९५२-५३ के लिए ५० लाख गज और सन् १९५५-५६ के लिए १०० लाख गज रेयनका कपड़ा निर्यात करनेका लक्ष्य बनाया था मगर विदेशी प्रतिस्पर्द्धाके कारण वह लक्ष्य भी पूरा न हो सका।

फिर भी इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भारतीय माल पर अच्छी तरह ध्यान दिया जावे तो विदेशोंमें निश्चितही इसकी मांग बढ सकती है क्योंकि भारतीय माल क्वालिटीमें किसी प्रकार भी कम नहीं है।

पर भारतीय माल पर लागत विदेशोंमें आनेवाली लागतसे अधिक आती है। क्योंकि विदेशी कारखानोंको कच्चा माल वहीं पर मिल जाता है और वहाँ मशीनें भी आधुनिक ढङ्ग की लगी हुई हैं जो कम खर्चमें अधिक माल तैय्यार करती हैं।

बुननेके उद्योगकी वर्तमान उत्पादन शक्तिके आधार पर इस उद्योगको लगभग ४५० लाख पौण्ड फिलामेंट यार्न (सूत) की आवश्यकता होती है। अबतक हमको इस यार्नके लिए विदेशों पर ही निर्भर रहना पड़ता था। मगर इस समय हमारे देशमें तीन चार कारखाने नकली रेशमका उत्पादन करनेवाले खुल गये हैं। इनमेंसे (१) ट्रावनकोर रेयनस लि० पेराम्बूर (२) नेशनल रेयन कारपोरेशन लि० बम्बईने विस्कोजके तरीकेसे रेयनका उत्पादन सन् १९५०-५१ में चालू किया। (३) दी सर सिल्क मिल्स लि० हैदराबादने एसिटेट प्रोसेससे रेयनका उत्पादन शुरू किया।

सन् १९५१ में विरला ग्राम नागदामें भारतके मशहूर उद्योगपति मेसर्स विरला ब्रदर्सने दी ग्वालियर रेयन मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनीके स्टेपल फ्रायवर डिवीजनकी स्थापनाकी। यह मिल सम्पूर्ण भारतवर्षमें अपने ढङ्ग की एकही है। इसमें स्टेवक फ्रायवरका निर्माण सम्पूर्ण यांत्रिक पद्धतिसे होता है। तथा सब मशीनें स्वचालित हैं। मिलकी उत्पादन शक्ति १५ टन प्रतिदिन है जो शीघ्रही बढ़ाकर २८ टन प्रतिदिन करनेकी योजना है।

उपरोक्त कारखानोंमें फिलामेंट यार्नका उत्पादन २२० लाख पौण्ड तक पहुँच जावेगा।

रेयन कपड़ेका निर्यात

वर्ष	गजोंमें संख्या	मूल्य रुपयोंमें
१९४२-४३	४६,२७,२३२	३८,३८,६६५
१९४३ ४४	१,४५,६३२	५,२७,६३०
१९४४-४५	२४,४६२	२०,२४०
१९४७-४८	१९७४५१८	३७५८७७३
११४८-४९	२,४४,७९,९९७	५,१९,११,६३७
१९४९-५०	१,२२,२६,६०७	१,४८,६८,५१८
१९५०-५१	६९,६०,३४०	९६,७२,८०१
१९५१-५२	८४,१४,२६६	१,१६,६८,३५३
१९५२ ५३	३५,५०,६२९	५०,३८,८६९
१९५३-५४	३१,७२०१०	४८,५५,७३१
१९५४-५५	३४,५३०१८	५७,६५,९९५

इसके अतिरिक्त इस उद्योगमें पल्प, कास्टिक सोडा, गंधकका तेजाब और कारबन डाई सल्फाइड ये चीजें और लगती हैं। इनमेंसे पल्प तथा कास्टिक सोडा विदेशोंसे मंगाया जाता है। रेयनके उद्योगको मजबूत बनानेके लिए इन चीजोंका भी यहाँ पर उत्पादन किया जाना आवश्यक है जिसके लिए रेयन सिल्क उत्पादन करनेवाले कुछ कारखाने इन चीजोंका उत्पादन यहीं करनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

यह आशा की जाती है कि सरकार समय २ पर इस उद्योगकी उन्नतिके लिए समुचित सहायता देती रहेगी और यह उद्योग दिन प्रतिदिन उन्नति करता जावेगा।

सप्तम सोपान

भारतीय वस्त्र उद्योग का भविष्य

सन् १९५४ में भारतीय वस्त्र-उद्योग के जन्म के सौ वर्ष पूरे हुए और बड़े उत्साह के साथ इस उद्योग ने अपना शताब्दी उत्सव मनाया।

इन सौ वर्षों में इस महान् उद्योग ने भारत के औद्योगिक विकास में अपना एक रोचक अध्याय जोड़ दिया है सन् १८५४ में इस देश में सेठ कावसजी दावर ने कपड़े की सबसे पहली मिल स्थापित की जब कि सौ वर्ष बाद सन् १९५४ में इस विशाल देश में ४५७ कपड़े की मिलें धुँआधार गति से दिन रात उत्पादन के कार्य में लगी हुई हैं।

सन् १९१२-१३ में भारतवर्ष अपनी जनता के कपड़े की आवश्यकता पूरी करने के लिए ३०००० लाख अर्थात् ३ अरब गज कपड़ा विदेशों से मंगवाता था मगर आज यह देश अपनी ३७ करोड़ जनता के वस्त्र की आवश्यकता को स्वयं पूरा करने में समर्थ है इतना ही नहीं बल्कि अपनी जरूरत पूरी करने के बाद ५०००लाख से ११०००लाख गज तक कपड़ा विदेशों को देने में भी समर्थ है। सन् १९५५ में इस देश ने मिल उद्योग और हाथ करघों से मिलाकर ६ अरब ४१ करोड़ गज कपड़े का उत्पादन किया जो कि पिछले सौ वर्ष के तुलनात्मक इतिहास में सबसे अधिक है।

उन्नति के ये अंक कम उत्साहवर्द्धक नहीं है और इस उद्योग के उज्वल भविष्यकी ओर स्पष्ट संकेत कर रहे हैं। अभी हमारे यहाँ इस उद्योग की उन्नति के लिए क्षेत्र भी बहुत विस्तृत है। इस उन्नतिशील समयमें भी एक अरब गज कपड़ेके निर्यातको निकाल देनेके बाद हमारे देशवासियोंके लिए सिर्फ साढ़े पाँच अरब गजसे कुछ कम कपड़ा ही बचता है जिससे हमारे देशके प्रत्येक नागरिकके हिस्से में पूरा पन्द्रह गज कपड़ा आता है। एक वर्षकी जरूरत पूरी करनेके लिए एक सभ्य नागरिकके लिए यह कपड़ा बहुत ही कम है। जापान सरीखे देश जहाँकी आर्थिक स्थिति हमारे देशसे बहुत ज्यादा अच्छी नहीं है वहाँ पर ३२ से ३४ गज कपड़ा औसतन प्रति व्यक्ति के पीछे खपत है और अमेरिका तथा इंगलैंड सरीखे देशोंमें तो कपड़ेकी खपतका यह अंक ४५ गज तक पहुँचता है।

ऐसी स्थितिमें यह निश्चित है कि ज्यों २ भारत उन्नति करेगा और हमारे यहाँ सस्ते भावपर कपड़ा उपलब्ध होने लगेगा, त्यों २ यहां की खपत बढ़ते-बढ़ते कमसे कम दूनी तो अवश्यही हो जावेगी

ऐसी हालतमें दूसरे देशोंकी तरह हमे अपने उत्पादनको खपानेके लिए दूसरे बाजारोंकी तरफ भी अधिक नहीं ताकना पड़ेगा, हमारे देशके घरेलू बाजारही हमारे उत्पादन और खपतके सन्तुलनको बनाए रखनेमें समर्थ हो सकेंगे पर इसके लिए सबसे बड़ी आवश्यक बात इस उद्योगके सामने यह है कि वह अपने उत्पादनको सस्ते मूल्यपर बाजारोमें मुहैय्या करे, जिससे इस देशकी गरीब जनता आसानीसे आवश्यक वस्त्रका उपयोग कर सके।

विश्व युद्धके समयमें तथा उसके पश्चात् रुईकी कीमत, शक्तिकी कीमत, और मजदूरीकी दर बढ़नेके साथ २, रूईके ऊपर आयात कर, बिक्रीकर, नगरपालिका कर इत्यादि कई प्रकारके करोंके बोझने इस उद्योगके उत्पादन पर आनेवाले खर्चको बहुत अधिक बढ़ादिया है जिससे बाजारोंमें आनेवाला कपड़ा जनताको बहुत महंगे मूल्यपर उपलब्ध होता है।

दूसरी बात हमारे देशके मिलोमें लगी हुई पुराने ढङ्गकी मशीनरीके कारण भी हमारे देशमें कपड़े पर उत्पादन व्यय बहुत अधिक आता है। साधारणतया ब्रिटेनमें एक मजदूर जहां चार या छः लूमोंको सम्हालता है, अमेरिकामें वही मजदूर ३२ से लेकर ३८ तक स्वतः चालित लूमोंको सम्हालता है तथा जापानमें वही मजदूर ४८ लूमोंको सम्हालता है, जब कि भारतमें वही मजदूर सिर्फ दो लूमोंको सम्हालता है। इंग्लैण्ड, अमेरिका तथा जापानमें चक्राकार कपड़े ताननेके यंत्रपर एक मजदूर क्रमशः बारह सौ, सोलह सौ, और चौबीस सौ स्पिण्डल्सको सम्हालता है जब कि भारतमें एक मजदूर केवल ३८० स्पिण्डल्स-को सम्हाल पाता है। इसलिए विदेशी प्रतियोगितामें सफल होनेके लिए तथा कपड़ेकी कीमत कम करने के लिए हमारे लिए यह आवश्यक है कि नये ढङ्ग की मशीनरी लगाकर हम अपने यहांके मजदूरकी उत्पादन शक्तिको बढ़ावें।

कपड़ा उद्योगकी मशीनरी

कपड़ेकी मिलोंके लिए कल पुर्जों तथा मशीनोंके लिए भारतवर्षको अभीतक बहुत कुछ विदेशों पर निर्भर करना पड़ता है। सन् १९५० में इस देशने चौदह करोड़से कुछ अधिक रुपयोंकी कपड़ा—मशीनरी विदेशोंसे आयात की थी।

मगर उसके पश्चात्‌के वर्षोंमें मशीनरीका यह आयात कम होने लगा और अब प्रतिवर्ष करीब सात आठ करोड़ रुपयोंकी मशीनरीका आयात होने लगा है। इसका कारण यह है कि अब इस देशके उद्योगपतियोंका ध्यान भी कपड़ा मशीनरीके निर्माणकी ओर आकृष्ट होने लगा है। इस देशमें भारतके प्रसिद्ध उद्योगपति मेसर्स बिड़ला ब्रदर्सने एक 'टैक्समेको" बेलगढियामें तथा एक टैक्समेको ग्वालियरमें चला रक्खे हैं जो कपड़ा मशीनरीका उत्पादन करते हैं। और भी एक दो कारखाने इन कल पुर्जों का उत्पादन करने लगे हैं। ये कारखाने उन्हीं मशीनोंका उत्पादन करते हैं जो मशीनें हमारे यहाँ लगी हुई हैं। विशेष प्रकार की नवीन मशीनरीका उत्पादन इन कारखानोंमें नहीं होता जो कि विशेष कलापूर्ण खोजके पश्चात् विदेशोंमें तैयार की गई हैं।

कपड़ा उद्योग का पुनर्निर्माण

कपड़े-उद्योगको समयके साथ रखनेके लिए विशेष प्रकारकी आधुनिक मशीनोंको लगाकर उसका पुनर्निर्माण करना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त हमारे देशमें अभी बहुत सी मिलें ऐसी हैं जिनमें दूसरी मशीनोंकी कमीकी वजह से लूमोंको पर्याप्त कार्य्य नहीं मिलता जिसके फलस्वरूप वे अमितव्ययी हो गई हैं। पश्चिमी बंगालमें एक मिलको छोड़कर शेष सब मिलोंमें रंगने, धोने, छापने और सफाई करनेकी मशीनें नहीं हैं जो कि निर्यातका माल तैय्यार करनेके लिए तथा धोती साड़ीको छोड़कर दूसरा कपड़ा बनानेके लिए आजके युगमें अत्यन्त आवश्यक है। इसके अतिरिक्त बंगालकी चौबीस मिलोंमें से बीस मिलें योजना कमेटीके बनायें हुए पैमानेकी (२७००० स्पिण्डल्स और ६०० लूम की मिल–मितव्ययी मिल) दृष्टिसे अमितव्ययी हैं। ऐसी सभी मिलोंको मितव्ययी बनाना आवश्यक है। अथवा ऐसी अमितव्ययी मिलोंका कुछ कार्यदक्ष मजबूत तथा मितव्ययी मिलोंमें समावेश कर दिया जाय।

कलापूर्ण कपड़ा उत्पादन करनेके लिए तथा प्रतिस्पर्धा रखनेवाले देशोंके मुकाबिलेमें आनेके लिए यह आवश्यक है कि भारतमें भी वैसी ही मशीनें लगाई जायं जैसी अमेरिका, जापान तथा दूसरे उन्नतिशील देशोंमें लगी हुई हैं। भारतवर्षमें लगभग ६०% लूम तो लंकाशायरके तरीकेके हैं। जो कपड़ा उनसे बनता है वह त्रुटियोंसे मुक्त नहीं रहता। इसलिए भारतीय उद्योगको विदेशोंके स्तर पर पहुँचानेके लिए यह आवश्यक है कि इस उद्योगमें ऐसी मशीनें लगाई जावें जिनपर बना हुआ कपड़ा सस्ता और दोषरहित हों।

भारत सरकार द्वारा निर्धारित करोंकी वर्तमान नीति इस उद्योगपर बहुत भार डालती है। जिससे कि कपड़ा महंगा पड़ता है इसके अतिरिक्त पुरानी मशीनोंको बदलकर नई मशीनें लगानेके लिए भी प्रतिबन्धको ढीला करना चाहिए। बल्कि जो लोग आर्थिक कठिनाइयोंकी वजहसे नवीन मशीनें लगानेमें कठिनाई अनुभव करते हैं उन्हें उदार शर्तोंपर कर्ज भी दिया जाना चाहिए। इस प्रकार अगर समयके साथ इस उद्योगका पुनर्निर्माण होता रहा तो यह उद्योग अवश्य ही अपने महान् भविष्यका निर्माण करनेमें सफल होगा।

हैण्डलूम उद्योगका पुनर्निर्माण

मिल उद्योग ही की तरह कपड़ेके हैण्डलूम उद्योगका भी पुनर्निर्माण करना आवश्यक है जिसके आधारपर आज इस देशमें एक करोड़ व्यक्ति अपनी जीविका उपार्जन कर रहे हैं। इसके लिए हैण्डलूमके मालकी बिक्रीके लिए इस देशमें तथा विदेशोंमें सहकारी संस्थाओंका निर्माण करना, सूत, रंग तथा रासायनिक पदार्थोंको बुनकर लोगोंके पास उचित रूपमें पहुँचानेकी व्यवस्था करना, नये नये डिजाइनोंका अन्वेषण करना, और भिन्न २ प्रदेशोंमें केन्द्रीय संगठनोंका निर्माण करके उनके द्वारा रंगने छापने और सफाई करनेके बारेमें कलापूर्ण सहायता देना, लूमोंकी कमसे कम कीमतमें मरम्मत करना और उन्हें सुलभ मूल्य पर सूत प्राप्त होने की व्यवस्था करना इत्यादि कार्य्य ऐसे हैं जो हैण्डलूम उद्योगके पुनर्निर्माण के लिए योग्य संगठनों के द्वारा किये जाने की आवश्यकता है।

गणतंत्र भारतके सूती मिलोंका विवरण

बम्बई नगर और द्वीप स्थित सूती मिलोंकी विवरण-तालिका

मिलका नाम और उसका पूरा पता	मिल एजेण्ट अथवा मालिक और उनके आफिसका पूरा पता	लगे हुए तकुओंकी कुल संख्या	लगे हुए करघोंकी कुलसंख्या	७८४ रतलकी खंडीके हिसाब से मिल द्वारा की जानेवाली रूईकी वार्षिक खपत
१	२	३	४	५
१—अपालो मिल्स लि० डिलाइल रोड, चिंचपोकली बम्बई।	मेसर्स दि राजपुताना टेक्सटाइल्स (एजेन्सीज) लि० मिलमें ही आफिस है।	३३२००	८९८	५००३
२—बिहारी लाल रामचरन काटन मिल्स लि०—पूर्व नाम मेयर मिल्स लि०, फर्गुसन रोड, लोअर परैल बम्बई।	मेसर्स बी० आर० सन्स लि०, इम्पायर हाउस, हार्नबी रोड, बम्बई।	५०८२८	१०२१	७५२१
३—बाम्बे डाइङ्ग एण्ड मैन्यू-फैक्चरिंग कम्पनी लि० (पूर्व स्प्रिङ्ग मिल्स) नयागाम रोड, दादर, बम्बई।	मेसर्स नवरोजजी वाडिया एण्ड सन्स लि०, नेविले हाउस, ग्राहम रोड, बैलार्ड इस्टेट, बम्बई।	१२१५८४	३२२४	१६१४३
४—बाम्बे डाइंग एण्ड मैन्यू-फैक्चरिंग कम्पनी लि० (पूर्व टेक्सटाइल मिल्स) एलफिंस्टन रोड, परैल, बम्बई।	,, ,, ,,	७१६३६	१६३१	१८१८२
५—ब्रैडबरी मिल्स लि०, रिपन रोड, जेकब-सरकल बम्बई।	मेसर्स रामनारायण सन्स लि० इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग्स, बैंक स्ट्रीट फोर्ट बम्बई।	३८२०८	८६०	६०५३
६—सेञ्चरी स्पिनिङ्ग एण्ड मैन्यू-फैक्चरिंग कम्पनी लि० (सेञ्चरी मिल्स) ग्लोव मिल पैसेज, वरली, बम्बई।	मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, क्वींस मैनशन, प्रेस काट रोड, फोर्ट बम्बई।	१२५६३६	२७०६	२८६४३

१	२	३	४	५
७—सेञ्चरी स्पिनिङ्ग एण्ड मैन्यू-फैक्चरिंग कम्पनी लि० (झीनिथ मिल) ग्लोब मिल पैसेज, वर्ली, बम्बई।	मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, क्वींस मैनशन, प्रेस काट रोड, फोर्ट बम्बई।	१२५६३६	२७०६	२८६४३
८—कोलावा लैण्ड एण्ड मिल कम्पनी लि०, (पुराना मिल) विक्टोरिया बंदर, कोलावा।	प्रबन्ध संचालन-डायरेक्टरों का एक बोर्ड इन मिलोंका प्रबन्ध संचालन करता है और इनका आफिस मिलमें ही है।	३६४०:	७६८	६३१७
९—कोलवा लैण्ड एण्ड मिल कम्पनी लि० (जहांगीर वाडिया मिल) विक्टोरिया बंदर कोलावा।				
१०—कुर्ला स्पिनिङ्ग कम्पनी लि० कुर्ला बम्बई	मेसर्स कावस जी जहाँगीर एण्ड को० लि०, रेडीमनी मैनशन, वीर नारीमन रोड फोर्ट बम्बई	३०८१२	६८०	७६३२
११—क्राउन स्पिनिङ्ग एण्ड मैन्यू फैक्चरिङ्ग कम्पनी लि० (पूर्व धुन मिल्स) गोखले रोड परैल (दक्षिण) बम्बई	मेसर्स पुरुषोत्तम विट्ठलदास एण्ड को०-सर विट्ठलदास चैम्बर्स, अपालो स्ट्रीट फोर्ट बम्बई।	५६५००	११०६	८६१५
१२—डान मिल्स कम्पनी लि० फर्गुसन रोड, लोअर परैल बम्बई	मेसर्स रामनरायन सन्स लि०-इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग, बैंक स्ट्रीट फोर्ट बम्बई।	३६६८४ १३२०		४६६४
१३—धनराज मिल्स लि० (पूर्व में असुर वीरजी मिल्स लि०) सन मिल रोड, लोअर परैल	मेसर्स रामगोपाल गनपत राय एण्ड सन्स लि०-मैनेजिंग एजेन्ट का आफिस मिल में ही है।	३६७०८ १३८४	७८६	७०६२
१४—दिग्विजय स्पिनिङ्ग एक वीविङ्ग कम्पनी लि० (पूर्व में दीनशा पेटिट मिल्स) लालबाग परैल- बम्बई	जेठाभाई खटाई एण्ड को० (एजेन्सीज) लि०—आफिस मिल में ही है	४५१६२	११७७	८११६
१५– एडवर्ड टेक्स टाइल्स लि० (पूर्व में एडवर्ड सासुन मिल्स लि०) फर्गुसन रोड लोअर परैल	मेसर्स पूरन मल राधा किशन एण्ड को०—इन्दु हाउस, १५ डूगल रोड बैलार्ड इस्टेट, फोर्ट, बम्बई	३७५१६ १२५८०	६२८	१४२३६

१	२	३	४	५
१६—एलफिस्टन स्पिनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग मिल्स कम्पनी० लि०—एलफिस्टन रोड परैल, बम्बई	प्रबन्ध संचालन-डायरेक्टरों का एक बोर्ड करता है जिसका आफिस कमानी चेम्बर्स, ३२ निकोल रोड, बैलार्ड इस्टेट, बम्बई	३६२०० ४१७६	८८६	६७८८
१७—फिनले मिल्स लि०—गवर्नमेन्ट गेट, रोड, परैल, बम्बई	मेसर्स जेम्स फिनले एण्ड को० लि०, चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग फोर्ट बम्बई	४६०७२	७८४	४४६७
१८—गोल्ड मुहर मिल्स लि०-मेन रोड, दादर, बम्बई	ऐजेन्टस „ „ „ „ „ „ „	४०२३२	१०२०	५५६८
१९—हिन्द मिल्स लि०—(पूर्व में डेविड मिल्स को० लि०) (मिल नं० १) कैरोल रोड, परैल बम्बई	हिन्द ऐजेन्टस लि०—इन्दु हाउस, १५ डूगल रोड वैलार्ड इस्टेट, फोर्ट, बम्बई			
२०—हिन्द मिल्स लि०—(पूर्व में डेविड मिल्स को० लि०) (मिल्स नं० २) करैल रोड परैल बम्बई	„ „ „ „ „	७१६०८	१३१९	१८७६२
२१—हिन्दुस्तान स्पिनिङ्ग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०-रिपन रोड, जेकब सर्किल बम्बई,	मेसर्स थैकर्सी मूलजी एण्ड को०, सर विट्ठल चैम्बर्स, अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई,	५०५१२	११२६	१३२७६
२२ हीरा जी मिल्स लि०—(पूर्व में प्रेसीडेन्सी को० लि०) फर्गुसन रोड, लोअर परैल, बम्बई	प्रबन्ध संचालन डायरेक्टरों का एक बोर्ड करता है जिसका आफिस मिल में ही है।	४७८४४	८८४	१००१६
२३—इण्डियन मैन्यू फैक्चरिंग को० लि० लमिङ्गटन रोड नार्थ, जैकब सर्किल बम्बई	मेसर्स दामोदर थैकर्सी मूल जी एण्ड को० सर विट्ठल दास चैम्बर्स, अपालो स्ट्रीट फोर्ट बम्बई	५५७०४	११६१	११०६१
२४—इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि०-न० १ मिल (पूर्व में जेकर्ड मिल्स) सुपारी बाग रोड परैल	मेसर्स अग्रवाल एण्ड को० इन्दु हाउस, डूगल रोड, बैलार्ड इस्टेट, बम्बई,	६०६०० ६१६०	२२२८	२११६८

१	२	३	४	५
२५—इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि०-नं० २ मिल (पूर्व में अलेक्जेण्ड्र मिल) घुड़पदेव रोड, चिंचपोकली बम्बई	मेसर्स अग्रवाल एण्ड को० इन्दु हाउस, डूगल रोड, बैलार्ड इस्ट्रीट, बम्बई,	३५८८०	७४२	} २६८६६
२६—इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि० नं० ३ मिल (पूर्व में ई० डी० मिल) घुड़पदेव रोड चिंचपोकली बम्बई	,, ,,	७१०६० ५३६०	७५२	
२७—इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि०-नं० ४ मिल (पूर्व में रिचेल मिल) चिंचपोकली रोड बम्बई	,, ,,		१८७२	
२८—इण्डिया यूनाइटेड मिल्स लि०-नं० ५ मिल (पूर्व में मैंनचेस्टर मिल) चिंचपोकली क्रासलेन, काला चौकी, बम्बई	,, ,,	२८६४०	६८४	४८४३
२६—जाम मैन्यूफैक्चरिङ्ग को० लि० मिल नं० १ लाल बाग परैल बम्बई	मेसर्स ट्रीकमदास वन्द्रवान एण्ड को० लाल बाग परैल, बम्बई।	३०६४०	६१०	५२०१
३०—जाम मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० मिल नं० २ पूर्व में बिडला मिल्स लि० नं० २) टीकर्सी जीवराज रोड, सेवरी, बम्बई	,, ,,	२३१७६	५७४	११७१
३१—जुबिली मिल्स लि०-टोकर्सी जीवराज रोड सिवरी बम्बई	मेसर्स चमन लाल मेहता एण्ड को०लि० भारत हाउस, अपालो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई	३५३२८	७४८	५४८२
३२—कमला मिल्स लि० (पूर्व में इब्राहिम भाई पवानी मिल्स) तुलसी पाइप लाइन रोड आफ डिलाइल रोड, बम्बई	प्रबन्ध संचालन-डायरेक्टरों का बोर्ड करता है किलाचंद देवचंद बिल्डिंग ४५।४७ अपालो स्ट्रीट फोर्ट बम्बई	५०४६६	१०५५	१०३०४

१	२	३	४	५
३३ – खटाउ मकन जी स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० हेन्स रोड, भाईखाला, बम्बई	मेसर्स खटाउ मकनजी एण्ड को० लि०–लक्ष्मी बिल्डिंगस ६ वैलार्ड पियर फोर्ट बम्बई	८४६०४	१५१७	६६७३
३४—कोहिनूर मिल्स को० लि०–(नं० १ और २ मिल्स) नयगाम क्रास रोड दादर, बम्बई	ऐजेन्टस-मेसर्स किलिक्स इण्डस्ट्रीज लि० किलिक बिल्डिंग, होम स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई,	११६६८८	१५५२	२५८६१
३५—कोहिनूर मिल्स को० लि०–(नं० ३ मिल) लेडी जमशेद रोड, दादर, बम्बई	,, ,,		२९४	
३६—माडर्न मिल्स लि०–मिल नं० (पूर्व में मैसूर स्पिनिंग मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० मिल नं० २) एलफिस्टन रोड, परैल, बम्बई	मेसर्स एन० सिरुर एण्ड को० लि०–७० फार्बेस स्ट्रीट फोर्ट, बम्बई	२१७६० ३७२०		} १०४३३
३७—माडर्न मिल्स लि० मिल नं० २ (पूर्व में बंमन जी पोर्टेट मिल्स) महालक्ष्मी बम्बई	,, ,,	२१८८८	६४४	
३८—मून मिल्स लि०-न्यू-सिवड़ी रोड बम्बई	मेसर्स एशियाटिक टेक्सटाइल को० लि०-७० जेनरल मसुरैन्स बिल्डिंग हार्नवी रोड, फोर्ड बम्बई		८७५	
३९—मोरार जी गोकुलदास स्पिनिङ्ग एण्ड वीविंग कम्पनी लि०–सुपारी बाग रोड परैल बम्बई	ऐजेन्टस मेसर्स पीरामल गंगाधर मिल में ही आफिस है	६४९०४	१६५२	१६७३२
४०—न्यू चाइना मिल्स लि० (पूर्वमें चाइना मिल) सिवरी बम्बई	मेसर्स नवीनचन्द्र मफतलाल, २९ वीर नारी मैन रोड फोर्ट बम्बई	४२७९२	७७६	५२९८
४१—न्यू सिटी आफ मैन्यू-फैक्चरिंग को० लि० ६३ चिंचपोकली रोड परैल बम्बई	मेंसर्स डब्लू० यच० ब्रैडी एण्ड को० लि० रायल इन्सुरेन्स बिल्डिंग १२।१४ वीर नारीमैन रोड फोर्ट बम्बई	४५९४४	४३२	६७२५

१	२	३	४	५
४२—न्यू ग्रेट ईस्टर्न स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० विक्टोरिया गार्डन रोड, चिंचपोकली बम्बई।	मेसर्स डब्लू० यच० ब्रैडी एण्ड को० लि० रोयल इन्सुरेन्स बिल्डिंग १२।१४ वीर नारीमैन-रोड फोर्ट बम्बई।	३४४६२ १४५२०	१०१८	१११३१
४३—न्यू कैशरे हिन्द स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०—घुड़-पदेव रोड, चिंचपोकली, बम्बई।	मैनेजिंग डायरेक्टर—लाल कैलाशपत सिंघानियां, जे० के० बिल्डिंग डूगल रोड बैलार्ड इस्टेट, बम्बई।	५४०५२	१२६६	११४२६
४४—न्यू प्रल्हाद मिल्स लि०—(पूर्वमें प्रल्हाद मिल्स) फर्गुशन रोड परैल।	मालिक—अमृत वनस्पति को० लि०, ईस्ट एण्ड वेस्ट बिल्डिंग, अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई।	४२१५६	१००३	१४६२६
४५—न्यू यूनियन मिल्स लि०, (पूर्वमें यूनियन मिल्स) डिलाइल रोड लोअर परैल।	मेसर्स मफतलाल चन्दूलाल एण्ड को० (बंबई) लि०, १२७ महात्मागांधी रोड फोर्ट बंबई।	३४१००	८७३	११२६८
४६—फोनिक्स मिल्स लि०, (पूर्वमें ब्रिटैनिया मिल्स) तुलसी पाइप लाइन रोड लोअर परैल बम्बई।	मेसर्स रामनरायन सन्स लि० इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग, बैंक स्ट्रीट, फोर्ट बंबई।	५५१२८	११६०	७८२८
४७—पोतदार मिल्स लि०, (पूर्वमें टोपो पोतदार काटन मिल्स लि०) डिलाइल रोड बम्बई।	मेसर्स पोतदार सन्स लि०, पोतदार चैंबर्स, पारसी बाजार स्ट्रीट फोर्ट बंबई।	३१६००	६३०	१२१२५
४८—प्रकाश काटन मिल्स लि०, (पूर्वमें सेक्सेरिया काटन मिल्स नं० २) फर्गुसन रोड बम्बई।	मेसर्स सेक्सेरिया इण्डस्ट्रीज लि०, सेक्सेरिया चेम्बर्स १३६ मेडोज स्ट्रीट फोर्ट बंबई।	२५६७६	५३६	७४११
४९—रघुवंशी मिल्स लि०, (पूर्वमें किलाचन्द मिल्स लि०) ११-१२ हेन्स रोड, महालक्ष्मी, बम्बई।	मेसर्स रवीन्द्र मगनलाल एण्ड को० लि० आफिस मिलमें ही है।	३३१६०	१६७	४६५३
५०—रूबी मिल्स लि०, (पूर्वमें सोराब मिल्स) लेडी जमशेदजी रोड, दादर, बम्बई।	मेसर्स चुन्नीलाल जीवनदास एण्ड को० ४६।५५ अपालो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई।	२०३७६	४३०	३६८५

१	२	३	४	५
५१—सासून स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० माउण्ट स्टेट, घोरुपदेव, मझगाँव, बम्बई।	मेसर्स यम० जी० इनवेस्टमेण्ट कार्पोरेशन लि०, १३७ महात्मा गांधी रोड, फोर्ट बंबई।	५९६२४	१२५४	१७५४७
५२—सेक्सेरिया काटन मिल्स लि०, (पूर्वमें करीम भाई मोहम्मद भाई मिल्स) तुलसी पाइप लाइन, डिलाइल रोड, बम्बई।	मेसर्स सेक्सेरिया सन्स लि० १३६, मेडोज स्ट्रीट, फोर्ट बंबई।	७२७६६	१०६८	१२७७१
५३—श्रीमाधव मिल्स लि०, (पूर्वमें माधवजी धर्मसी मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) फारेस रोड बम्बई नं० ८।	मेसर्स पूरनमल राधा कृष्ण एंड को० इन्दु हाउस, डूगल रोड बैलार्ड स्टेट, बंबई।	३६११२	८३८	१०४३४
५४—श्रीमधुसूदन मिल्स (पूर्वमें मधुसूदन मिल्स लि०) डिलाइल रोड, बम्बई।	मालिक—मेसर्स हाल एण्ड अण्डरसन लि० श्री निवास हाउस, बबुदबाई रोड, फोर्ट बंबई।	६१५१६	१६६४	१५४११
५५—श्रीनिवास काटन मिल्स लि०, (पूर्वमें फजल भाई मिल्स लि०, डिलाइल रोड, बम्बई।	मेसर्स मारवाड़ टेक्सटाइल्स (एजेन्सीज) लि०, श्रीनिवास हाउस, बबुदबाई रोड फोर्ट बंबई।	६६८३६	१६४०	१११०७
५६—श्रीराम मिल्स लि०, (पूर्वमें क्रेसेण्ट मिल्स लि०) फर्गुसन रोड, वर्ली, लोअर परैल बंबई।	मेसर्स भोगीलाल मेघराज एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	६४१४०	६५२	५३२६
५७—श्री सीताराम मिल्स लि०, (पूर्वमें सरसापुर जी भरुचा मिल्स) (कनाट मिल्स०) डिलाइलरोड।	मैनेजिंग एजेण्टस मेसर्स मोर एण्ड को० लि०, १५ A एलफिस्टन सर्किल, फोर्ट, बंबई।	६५५२८ १८७२	१०१२	१४३६५
५८—श्री सीताराम मिल्स लि० (न्यू इम्प्रेस मिल) डिलाइल रोड चिंचपोकली बम्बई।	,, ,, ,,			

१	२	३	४	५
५९—सिम्प्लेक्स मिल्स कंपनी लि०, क्लर्क रोड, जेकब सर्किल, भाईखला, बंबई।	मेसर्स फार्बेस फार्बेस कैम्प बेल एण्ड को० लि०, फार्बेस बिल्डिंग, होम स्ट्रीट, फोर्ट बंबई।	३५१८० ९३६	१२७३	१२८६०
६०—स्टैण्डर्ड मिल्स को० लि० न्यू परभादेवी रोड, लोअर परैल।	मेसर्स मफतलाल गगल भाई एण्ड सन्स, रुस्तम बिल्डिंग, २९ वीर नारीमैन रोड फोर्ट बंबई।	५३८९२	१६३३	१२५३२
६१—स्वदेशी मिल्स कंपनी लि०, कुर्ली, बंबई।	मेसर्स टाटा इंडस्ट्रीज लि०, बाम्बे हाउस, २४ ब्रूस स्ट्रीट, फोर्ट बंबई।	७४६०८	२०००	१५२०३
६२—स्वान मिल्स लि०, न्यू सिवरी रोड बंबई।	मेसर्स जेम्स फिनले एण्ड को० लि०, चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग, फोर्ट बंबई।	३५८०४	५५२	७०६२
६३—टाटा मिल्स लि०, दादर रोड, परैल बंबई।	मेसर्स टाटा इंडस्ट्रीज लि०, बांबे हाउस, २४ ब्रूस स्ट्रीट फोर्ट बंबई।	५९०४८	१८००	१७१३१
६४—विक्टोरिया मिल्स लि०, (पुराना सत्य मिल) ग्लोब मिल लेन, आफ डिलाइल रोड बंबई।	मंत्री कोषाध्यक्ष और एजेण्ट्स मेसर्स मंगलदास मेहता एण्ड को० लि०, भारत हाउस, अपालो स्ट्रीट फोर्ट बंबई।	५००५६	६५८	८८६९
६५—वेस्टर्न इण्डिया स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग, को० लि०, काला चौकी रोड, चिंच पोकली बंबई।	मेसर्स थैकर्सी मूलजी सन्स एण्ड को० सर बिट्ठलदास चैंबर्स, अपालो स्ट्रीट, फोर्ट बंबई।	५४२२४	११७६	११५६६
(उपरोक्त सभी सूती मिल बम्बई नगर में स्थित हैं)	कुल	२९६४७६९१ ५२२५८	६५६२८	६२११९४९

अहमदाबाद की सूती मिल्स

१—अहमदाबाद एडवान्स मिल्स लि० दिल्ली दरवाजे के बाहर-अहमदाबाद।	मेसर्स टाटा इण्डस्ट्रीज लि०, २४ ब्रूस स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई	४८६५२	१०१६	९३६२

१	२	३	४	५
२—अहमदाबाद काटन मैन्यू-फैक्चरिंग को० लि० (बगीचा मिल्स) सारंगपुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	अमृतलाल हरगोवन दास एण्ड ब्रदर्स लि०—मिल में ही आफिस है।	२४२००	५१६	२८१६
३—अहमदाबाद जय भारत काटन मिल्स लि०, (पूर्व में भारत लक्ष्मी काटन मिल्स लि०) कनकैरिया रेलवे साइडिंग के उस पार मीठीपुर-अहमदाबाद।	मेसर्स पारख फैब्रिक्स—लि०; २८ अपालो स्ट्रीट फोर्ट बम्बई	४१६८८	८८४	४४५४
४—अहमदाबाद जुपिटर स्पिनिंग, वीविंग एण्ड मैन्यू-फैक्चरिंग कम्पनी लि०, दूधेश्वर रोड अहमदाबाद	मेसर्स एम० पारख एण्ड को० लि०; २८ अपालो स्ट्रीट फोर्ट बम्बई।	२६५०८	६६७	४२१२
५—अहमदाबाद कैसरे-हिन्द मिल्स को० लि०, (पूर्व में अहमदाबाद मर्चेण्ट्स स्पिनिंग मिल्स को० लि०) रायपुर दरवाजे के बाहर अहमदाबाद।	मेसर्स रमनलाल कन्हैयालाल एण्ड को० लि०—मिल में ही आफिस भी है।	२१६२४	४९०	४०३२
६—अहमदाबाद लक्ष्मी काटन मिल्स को० लि०, रायपुर दरवाजे के बाहर अहमदाबाद।	मेसर्स हरिप्रसाद जयन्तीलाल एण्ड को० लि०—पोस्ट बक्स नं० ४२, अहमदाबाद	२८६०४	५६२	६३५३
७—अहमदाबाद मैन्यूफैक्चरिंग एण्ड कैलिको प्रिन्टिंग कं० लि० (कैलिको मिल्स), जमालपुर दरवाजा बाहर—अहमदाबाद।	मेसर्स करमचन्द प्रेमचन्द लि०—पोस्ट बाक्स नं० १२ अहमदाबाद।	१३६१२०	२३७०	१५४१६
८—अहमदाबाद मैन्यूफैक्चरिंग एण्ड कैलिको प्रिन्टिंग कं० लि० (जुबिली मिल्स)—दरियापुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	,, ,, ,,			

१	२	३	४	५
९—अहमदाबाद न्यू काटन मिल्स को० लि०, खोकरा मेह-मेदाबादके समीप-अहमदाबाद।	मेसर्स नरोत्तम चन्दूलाल एण्ड को० लि०, मिल में ही आफिस है।	२०११६	४४८	५२९७
१०—अहमदाबाद न्यू टेक्सटाइल मिल्स को० लि० नं० १, रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद।	मेसर्स नरायनलाल जीवनलाल एण्ड को० लि०, मिलमें ही आफिस है।	३७६६०	९०२	३५१७
११—अहमदाबाद न्यू टेक्सटाइल्स मिल्स को० लि० नं० २ (पूर्वनाम जवेरी स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) रायपुर दरवाजा बाहर-अहमदाबाद।	,, ,, ,,			
१२—अहमदाबाद सारंगपुर मिल्स को० लि०, रायपुर दरवाजा बाहर-अहमदाबाद।	मेसर्स हिम्मतलाल मोतीलाल एण्ड को० लि०-मिलमें ही आफिस है।	३१००४	५९०	५३८०
१३—अहमदाबाद श्रीराम कृष्ण मिल्स को० लि०, गोमतीपुर रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स चिमनलाल मानिकलाल एण्ड को० लि०—मिलमें ही आफिस है।	२८७५२	५०४	२६७१
१४—अजित मिल्स लि० रखियाल रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स चीनूभाई नरायन भाई एंड को० लि०—मिल में ही आफिस है।	२३८६८	५१३	४८१५
१५—अनन्त मिल्स लि० रखियाल रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स जयन्ती लाल अमृतलाल लि०—मिलमें ही आफिस है।	१९२०८	४५०	४०७२
१६—अरुण मिल्स लि० नरोदा रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स पी० एम० हट्टी सिंह एण्ड सन्स लि०—पो० बाक्स नं ५७ अहमदाबाद।	४२७६८	९१२	५३४३
१७—अरविन्द मिल्स लि० नरोदा रोड अहमदाबाद।	मेसर्स नरोत्तम लाल भाई एण्ड को०, नाका पानकोर, अहमदाबाद।	६२४४८	१२१६	७८७७

१	२	३	४	५
१८—आर्योदय स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० नं० १ असर्वा रोड, अहमदाबाद। १९—आर्योदय स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० नं० २ असर्वा रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स मंगलदास एण्ड बाला भाई एण्ड को० लि०, पो० बाक्स नं० १४६ अहमदाबाद।	४६६२०	६२०	६१४४
२०—आर्योदय जिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० (पूर्व नाम अहमदाबाद व्यापार उत्तेजक स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) असर्वा रोड अहमदाबाद।	मेसर्स मंगलदास एण्ड ब्रदर्स लि० मिल में ही आफिस है।	३५८८४	८८४	६२६३
२१—असर्वा मिल्स लि०, नं० १ असर्वा रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स छोटाभाई पटेल एण्ड को० लि०, कोडक हाउस, हार्नवी रोड, फोर्ट, बम्बई	२७८३६	५६४	४२५०
२२—असर्वा मिल्स लि०, नं० २—(पूर्व नाम श्रीनगर मिल्स लि०) रेलवे पुरा पोस्ट, अहमदाबाद।	,, ,, ,,	१८८१२	४३६	३८२७
२३—अशोक मिल्स लि०, नरोदा रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स लालभाई दलपत भाई एण्ड को०, मिलमें ही आफिस है।	३७३६८	६१४	६०३३
२४—बेचरदास स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०, रखियाल रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स दुर्गा प्रसाद, एस० लस्करी एण्ड को० लि०, मिलमें ही आफिस है।	१६३२०	४५६	४४१६
२५—भालकिया मिल्स को० लि०, कनकरिया रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स चन्दूलाल एण्ड को० लि० मिलमें ही आफिस है।			
२६—भारत खण्ड टेक्सटाइल मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० नं० १ कैम्प रोड, अहमदाबाद। २७—भारत खण्ड टेक्सटाइल मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० नं० २ कैम्प रोड, अहमदाबाद	मेसर्स जीवनलाल गिरधरलाल एण्ड को० लि०, पो० बाक्स नं० ३० अहमदाबाद ,, ,, ,,	३६०२४	६१४	४५०५

१	२	३	४	५
२८—भारत स्वरोदय मिल्स को० लि० (पूर्व नाम इण्डिया स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० कनकरिया रोड, रेलवे पुरा, अहमदाबाद ।	मेसर्स चतुर्भुज दास के० एम० एण्ड को०, पो० बाक्स नं० १२५ अहमदाबाद ।	१६४६४	४१२	३२७४
२९—बिहारी मिल्स लि०, समीप खोकरा मेहमेदाबाद, अहमदाबाद ।	मेसर्स मोतीलाल हरीलाल एण्ड को० लि०, पो० बाक्स नं० ४ अहमदाबाद ।	१८२४०	४४०	३६५१
३०—सिटी आफ अहमदाबाद स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, कनकरिया रोड अहमदाबाद ।	मेसर्स चमन लाल मंगलदास एण्ड सन्स, लाल दरवाजा, अहमदाबाद ।	२५८३६	३६७	४२४८
३१—कमर्शियल अहमदाबाद मिल्स को० लि०, प्रेम दरवाजा बाहर अहमदाबाद ।	मेसर्स धनजी भाई एण्ड टीकम लाल एण्ड को० लि०, मिलमें ही आफिस है ।	३०२६४	६१८	४२३८
३२—फाइन निटिंग कंपनी लि०, चामुण्डा माताके समीप असर्वा रोड, अहमदाबाद ।	मेसर्स एच० केशव लाल एण्ड को०; आफिस मिलमें ही स्थित है ।	६०००		१४८६
३३—गिरधर दास हरि वल्लभ दास मिल्स लि० (पूर्व नाम राजनगर मिल्स नं०२ ईदगाह दरवाजेके समीप अहमदाबाद ।	मेसर्स चमन लाल मंगलदास एण्ड को०, पोस्ट बाक्स नं० १२४ अहमदाबाद ।	२१८०८		२६३४
३४—गुजरात जिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० प्रेम दरवाजा बाहर, अहमदाबाद ।	मेसर्स जमना भाई मनसुखभाई आफिस मिलमें ही है ।	२५२३२	६४४	अंक उपलब्ध नहीं
३५—गुजरात होजरी फैक्ट्री-रखियाल रोड अहमदाबाद ।	मालिक—मेसर्स सी० सी० दलाल एण्ड को० आफिस मिलमें ही है ।	१०६२०		६०६
३६—हरिवल्लभदास मूलचंद मिल्स को० लि०, दरियापुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद ।	मेसर्स गिरधरलाल हरीलाल एण्ड को० आफिस मिलमें ही है ।	१६४७६	४३०	३८५०

१	२	३	४	५
३७—हठीसिंह मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, सरसपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद।	मेसर्स मानेकलाल मनसुखभाई एण्ड को० पो० बक्स नं० २ रेलवेपुरा अहमदाबाद।	१३८८८		३८०१
३८—हिमा भाई मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, सरसपुर दरवाजा समीप अहमदाबाद।	मेसर्स धीरजलाल खुशालदास एण्ड ब्रदर्स आफिस मिलमें ही है।	१८७६०	४३६	१६७३
३९—जहांगीर वकील मिल्स को० लि०, दिल्ली दरवाजा बाहर, अहमदाबाद।	मेसर्स रुस्तमजी मंगलदास एण्ड को० लि०, आफिस मिल में ही है।	३७०९२	७६१	६०७५
४०—जितेन्द्र मिल्स लि०, (पूर्व नाम अस्टोडिया मिल्स) अस्टोडिया दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	अवैतनिक लिक्वीडेटर मिस्टर यन० के० जवेरी २९७२, रतन पोल, अहमदाबाद।	३६०००		
४१—कल्यान मिल्स लि०, (दीपक टेक्सटाइल इण्डस्ट्रीज लि०, लेसीज) नरोदा रोड अहमदाबाद।	डायरेक्टर इनचार्ज मिस्टर यच० ए० मेहता आफिस मिल में ही है।	१४४४८	३९३	६३३१
४२—लालभाई ट्रीकमलाल मिल्स लि०, रखियाल रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स चीनू भाई लाल भाई एण्ड ब्रदर्स आफिस मिलमें ही है।	२९९३६	७८४	३६३३
४३—महेश्वरी मिल्स लि०, (पूर्वनाम अहमदाबाद काटन एण्ड वेस्ट मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) शाहीबाग रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स धीरजलाल खुशालदास एण्ड को०, पो० बाक्स नं० ७६ अहमदाबाद।	२१०३२	५९८	१६६२
४४—मानेक चौक एण्ड अहमदाबाद मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, नं० १ और नं० २ दरियापुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	मेसर्स हीरालाल ट्रीकमलाल एण्ड सन्स आफिस मिल में ही है।	३११२८	८३२	६७२८
४५—मानेकलाल, हीरालाल स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, सरसपुर, अहमदाबाद।	मेसर्स हरीलाल हरि वल्लभदास एण्ड को० लि०—आफिस मिलमें ही है।	३६८३६	७५०	६९४२

१	२	३	४	५
४६—मार्सडेन स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, रखियाल, अहमदाबाद।	मेसर्स मार्सडेन ब्रदर्स एण्ड को० लि० आफिस मिलमें ही है।	२२२४४	४८२	६८३८
४७—मोनोग्राम मिल्स को० लि०, रखियाल, अहमदाबाद।	मेसर्स मंनीलाल मार्सडेन एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	२४८७२	५२८	७२४१
४८—नागरी मिल्स को० लि०, राजपुर, गोमतीपुर रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स पोपटलाल चिमनलाल एण्ड को०, पो० बाक्स नं० ३६, अहमदाबाद।	२२६३६	५००	४३६२
४६—नेशनल मिल्स को० लि० गोमतीपुर रोड, अहमदाबाद।	मैसर्स हिमाभाई मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० अहमदाबादने अभी हालमें ही इसे खरीदा है।	१६७१२	४६६	
५०—न्यू कमर्शियल मिल्स को० लि०, नरोदा-रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स ट्रीकमलाल भोगीलाल एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	४६१६०	८६७	५८८७
५१—न्यू गुजरात काटन मिल्स को०, (पूर्वनाम गुजरात काटन मिल्स) नरोदा रोड, अहमदाबाद।	डायरेक्टरों का बोर्ड इस मिलका प्रबन्ध संचालन करता है और आफिस मिलमें ही है।	३०५६०	६०६	
५२—न्यू मानेक चौक स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०, दरियापुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद	मेसर्स लालभाई टीकमलाल पोस्ट असर्वा अहमदाबाद।	२६६५६	६२८	४८६३
५३—न्यू नेशनल मिल्स लि० रखियाल रोड अहमदाबाद।	मेसर्स ट्रीकमलाल भोगीलाल सन्स एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	२२६८०	४७४	२६५०
५४—न्यू राजपुर मिल्स को० लि० (पूर्वनाम राजपुर मिल लि०) गोमतीपुर रोड अहमदाबाद।	मेसर्स भीखाभाई जीवाभाई एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	२६७८४	५२४	२६३०
५५—न्यू स्वदेशी मिल्स आफ अहमदाबाद लि० (पूर्व नाम अहमदाबाद स्वदेशी स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) नरोदा रोड अहमदाबाद।	मेसर्स दि काटन एजेण्टस लि०, इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग्स, बैंक स्ट्रीट, फोर्ट बंबई।	३८२४०	८४८	१३३८७

१	२	३	४	५
५६—नूतन मिल्स लि०, अनिल रोड, वाया बोरस रोजा-अहमदाबाद।	मेसर्स जगभाई-मोगीलाल नानावटी एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	२४८४०	५४६	५७८२
५७—पटेल मिल्स को० लि० (पूर्व नाम गोमतीपुर स्पिनिंग, विविंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) गोमतीपुर रोड अहमदाबाद।	मेसर्स धीरजलाल चुनीलाल एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१३८२४	३५६	१२४५
५८—राजपुर मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, सरसपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद।	मेसर्स लालभाई दलपतभाई एण्ड को०-आफिस मिलमें ही है।	२११२०	६३६	३५८०
५९—रामकुमार मिल्स लि०, (पूर्व नाम श्री आनन्द काटन मिल्स लि० सरसपुर दरवाजा अहमदाबाद।	मेसर्स यदलम ब्रदर्स लि० धनलक्ष्मी बिल्डिंग, ऐवेन्यू रोड बैंगलोर २।	१९७४०	४२०	२७२५
६०—राजनगर स्पिनिंग, वीविंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० नं० १ ईदगाह दरवाजा समीप अहमदाबाद।	मेसर्स मंगलदास गिरधरदास पारिख लि०, पोस्ट बक्स नं० १२४ अहमदाबाद	१७६४८	४९५	७१२६ (६० व ६१ संयुक्त)
६१—राजनगर स्पिनिंग, वीविंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० नं० २ ईदगाह दरवाजा समीप अहमदाबाद।	” ” ”	२७९२०	६००	
६२—रोहित मिल्स लि०, मीठीपुर अहमदाबाद।	मेसर्स लल्लू भाई गोवर्धनदास लि०, फोखरा, मेहमदाबाद, मीठीपुर, अहमदाबाद	३३१५६	६४८	५३३३
६३—रुस्तम जहाँगीर वकील मिल्स को० लि०, दिल्ली दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	मेसर्स कान्तीलाल शान्तीलाल एण्ड को०, मिलमें ही आफिस है	२२७०८	४०६	२२३७
६४—सारंगपुर काटन मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० नं० १ रायपुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	मेसर्स शंकरलाल बालाभाई एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	६४५०४ (६४ व ६५ संयुक्त)	१४७३ (६४ व ६५ संयुक्त)	९२४४ (६४ व ६५ संयुक्त)
६५—सारंगपुर काटन मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० नं० २ रायपुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	” ” ”			

१	२	३	४	५
६६—सरसपुर मिल्स लि० (पूर्वनाम सरसपुर मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) सरसपुर रोड अहमदाबाद।	मेसर्स लाल भाई दलपत भाई सन्स एण्ड को० आफिस मिलमें ही है	३५१६६	८०८	७५१६
६७—शोर्राक स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, असर्वा रोड अहमदाबाद।	मेसर्स मफतलाल चंदूलाल एण्डको० (अहमदाबाद) लि०, आफिस मिलमें ही है	३६६२४	७२०	५३६३
६८—श्रीविवेकानंद मिल्स लि०, रेलवेपुरा राखियाल रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स नानू भाई मानेक लाल एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	२३५३६	४५६	३३८२
६६—श्री अंबिका मिल्स लि०, नं० १ कांकरिया लोको साइडिंग, रेलवेपुरा, अहमदाबाद।	मेसर्स हरिवल्लभदास कालीदास एण्ड को०—पोस्ट बक्स ११२ अहमदाबाद।	} ७३७६६	१३२५	६७०७
७०—श्री अंबिका मिल्स लि०, नं० २ (पूर्व नाम चन्द्रकान्त मिल्स लि०) सुरकर लेक समीप, अहमदाबाद।	,, ,, ,,			
७१—सिलवर काटन मिल्स को० लि०, काकरिया रोड, अहमदाबाद।	मेसर्स गोपाल भाई वाला भाई एण्ड को०—पोस्ट बक्स नं० २७ अहमदाबाद।	२३५६२	५०६	४४११
७२—तरुण कमर्शियल मिल्स लि०, (पूर्व नाम गुजरात, स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०,) कालूपुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	डायरेक्टरोंका एक बोर्ड मिलका प्रबन्ध संचालन करता है और आफिस मिलमें ही है।	२८७६२	६७२	२२८०
७३—विजय मिल्स को० लि०, नरोदा रोड अहमदाबाद।	मेसर्स हरिदास अचरतलाल एण्ड को० लि०, मिलमें ही आफिस भी है।	३४५७६	७७६	५५७१
७४—विक्रम मिल्स लि०, सरसपुर दरवाजा बाहर अहमदाबाद।	मेसर्स रमनलाल लल्लूभाई लि०, आफिस मिलमें ही है।	३५३४०	८९६	५६६०
	कुल	२०५५७१०	४२५७८	३१६७३०

बम्बई राज्यान्तर्गत स्थित अन्य सूती मिल्स

१	२	३	४	५
१—अब्दुल समद हाजी लाल मोहम्मद वीविंग फैक्ट्री, भिवण्डी (जिला थाना)।	मालिक—साहिब अब्दुल समद हाजी लालमोहम्मद, आफिस मिलमें ही है।		२४६	
२—बड़ोदा स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०, पानी दरवाजा, बड़ोदा।	मेसर्स जवेरचंद लक्ष्मीचंद एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	३४६७२	६५८	६१३६
३—बारसी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, बारसी टाउन (जिला शोलापुर)।	मेसर्स देसाई सन्स एण्ड को०, भारत हाउस, १०४ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट बम्बई।	१३३००	२८८	३२४३
४—भारत स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० नं० १ (पूर्व नाम हुब्ली मिल्स लि०) हुब्ली।	मेसर्स पुरुषोत्तम गोविंद एण्ड को०, गुल मैनशन, होमजी स्ट्रीट फोर्ट बंबई।	२१६२ ५०८	६०४	५६६४
५—भारत स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०, नं० २ (पूर्व नाम हुब्ली मिल्स लि०) हुब्ली।	,, ,, ,, ,,	२६२०४		
६—भारत विजय मिल्स लि० (पूर्वनाम कलोल कपैडिया स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०) कलोल (उत्तर गुजरात)।	मेसर्स रमनलाल चम्पकलाल एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१६८२४	३२०	२७८३
७—भड़ोच फाइन काउण्ट स्पिनिंग एण्ड वीविंग एण्ड को० (पूर्व नाम भड़ोच इण्डस्ट्रियल काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०) स्टेशन रोड भड़ोच।	मेसर्स बृजलाल विलासराय एण्ड को० आगाखान बिल्डिंग्स, दलाल स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।	२८८४८	५४२	

१	२	३	४	५
८—चालिस गाँव श्री लक्ष्मी नारायन मिल्स को० लि०, लिक्विडेशन की स्थिति में है) (पूर्व नाम श्री लक्ष्मी नारायण मिल्स) चालिस गांव (पूर्व खानदेश ।	लेवी—मेसर्स कोटक एण्ड को० आफिस मिल में ही है।	२३२२०	५८६	५६४६
९- छोटालाल मिल्स लि०, (पूर्व नाम कलोल काटन मिल्स को० लि०,) स्टेशन रोड, कलोल (उत्तर गुजरात)।	मेसर्स छोटालाल हीराचंद एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	२०३३१	४५६	४१२३
१०—गायकवाड़ मिल्स लि०, विलिमोरा।	मेसर्स यच० यम० मेहता एण्ड को०लि०, आफिस मिलमें ही है।	२८१०८	६६०	३७१२
११—गेन्दालाल मिल्स लि०, (पूर्व नाम भागीरथ स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०,) जलगांव (पूर्व खान देश)।	मेसर्स सूरजमल गेन्दा लाल बड़जात्या, आफिस मिलमेंही है।	१६१२८	३६८	३८५५
१२—गोकाक मिल्स लि०, (पूर्व नाम गोकाक वाटर पावर एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०,) गोकाक प्रपात, जिला वेलगाम यस० यम० सी०।	मेसर्स फार्वेस, कैम्पवेल एण्ड को० लि०, फार्वेस विल्डिंग होम स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।	७२६६०	२"	१२२५२
१३—गोपाल मिल्स को० लि०, (पूर्व नाम ह्विटले स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०,) मिल नं० १, महात्मागांधी रोड, भड़ोच।				
१४—गोपाल मिल्स को० लि० (पूर्व नाम ह्विटले स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०,) मिल नं० २, महात्मा-गांधी रोड भड़ोच।	मेसर्स नन्ददास हरिदास एण्ड को० C/o दि विजय मिल्स को० लि० नरोदा रोड अहमदाबाद।	२२१००	६५२	५९७९
१५—गोपाल मिल्स को० लि०, (पूर्व नाम ह्विटले स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) मिल नं० ३, महात्मा-गान्धी रोड भड़ोच।				

१	२	३	४	५
१६—जाम श्री रणजीतसिंह स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०, स्टेशन रोड शोलापुर।	मेसर्स लालजी नरायन एण्ड को०— ११ बैंक स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।	१६६५२ ८६८	५११	४५०१
१७—जनता स्पिनिंग मिल्स लि०, सांगली।	मेसर्स बी० आर० वेलनकर एण्ड सन्स लि०, आफिस मिल में ही है।	४३००		४०१
१८—जयशंकर मिल्स, बारसी लि०।	झाड़बुके एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	११८४०		२७११
१९—केशव मिल्स को० लि० स्थान पेटलाद वाया आनन्द।	मेसर्स चन्दूलाल केशवलाल एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	२४६५६	४००	२८३४
२०—खान देश स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी लि०, जलगांव, पूर्व खान देश।	मेसर्स इन्द्रसिंह एण्ड सन्स लि० इरोज थियटर बिल्डिंग, जमशेदजी टाटा रोड, बम्बई।	२३०१२	४६५	२०५०
२१—लक्ष्मी काटन मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि०, शोलापुर।	मेसर्स दि बाम्बे को० लि०, ६ वालेस स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।	५१६७२	१२१६	६६६६
२२—लोकमान्य मिल्स, बारसी लि०, आरन गांव रोड, बारसी टाउन।	मेसर्स सुलाखे एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१२५०४		२७३९
२३—माधव नगर काटन मिल्स लि०, पोस्ट आफिस माधव नगर, बुधगांव- (यम० यस० यम०)।	मेसर्स बुधगांव ट्रेडिंग कम्पनी लि०, आफिस मिलमें ही है।	१२६२८	६३	६६२
२४—मफतलाल फाइन स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, वेजलपुर रोड-नवसारी।	मेसर्स नवीनचन्द्र पुरुषोत्तमदास एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	४७२६०	८६६	५४६६
२५—महेन्द्र मिल्स लि०, कलोल (उत्तर गुजरात)।	मेसर्स जे० आर० पटैल एण्ड सन्स लि०, आफिस मिलमें ही है।	५०४०		३२५

१	२	३	४	५
२६—मराठे टेक्स टाइल मिल्स, रेलवे स्टेशनके समीप स्थान मिरज (S. M. C.)।	मालिक—मेसर्स वी० के० मराठे एण्ड सन्स आफिस मिल-में ही है।	५२१६		७८६
२७—नरायनदास चुनीलाल काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, (पूर्वनाम गडग काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स) स्थान गडग-धाखाड़ (पश्चिम)।	मेसर्स विजयकुमार मोतीलाल हीरा खानवाला, ३६ रिज रोड, मालबार हिल्स बम्बई।	१३१६४	२१४	
२८—नरसिंह गिरजी मैन्यू-फैक्चरिंग को० लि० स्टेशन रोड,शोलापुर।	मेसर्स धनराज गिरराजा नरसिंह गिरजी, धनराज महल, अपालो पिअर रोड, बम्बई।	५५४८८	११७०	१३६८१
२६—नवजीवन मिल्स लि०, पूर्वनाम-कलोल स्वदेशी मिल्स को० लि०) कलोल उत्तर गुजरात।	मेसर्स रुस्तमजी मंगल दास एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	२५१८०	५१०	२८१७
३०—नवसारी काटन एण्ड सिल्क मिल्स लि०, पूर्वनाम न्यूदरबांगा मिल्स) बीजलपुर रोड, नवसारी।	मेसर्स यम०यम० मेहता एण्ड सन्स लि०, नवसारी।	१८५२०	४३५	२७३७
३१—न्यू छोटालाल मिल्स लि०, (पूर्वनाम खादी लक्ष्मी काटन मिल्स को० लि०) काडी।	मेसर्स छोटालाल हीराचन्द एण्ड सन्स, आफिस मिलमें ही है।	२०७३६	४१८	४१३४
३२—न्यू इण्डिया इण्डस्ट्रीज लि०, जेतलपुर रोड बड़ोदा।	मेसर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स (बड़ोदा) लि० आफिस मिलमें ही है।	१२६६६		७४५
३३—न्यू प्रताप स्पिनिंग वीविंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०,स्थान धूलिया-पश्चिम खान देश।	मेसर्स मोतीलाल मानेकचन्द एण्ड सन्स, आफिस मिलमें ही है।	४६६२८	१०५८	६०६२
३४—न्यू शोरॉक स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०, पूर्वनाम नड़ियाद स्वदेशी स्पिनिंग, वीविंग एण्ड मैन्यू-फैक्चरिंग को० लि०, नड़ियाद जि० कैरा।	मेसर्स मफतलाल चन्दूलाल एण्ड को० लि०, असर्वा रोड, रेलवेपुरा पोस्ट, अहमदाबाद।	४७६५२	८६४	५००७

१	२	३	४	५
३५—निरंजन मिल्स लि०, पूर्वनाम टिकायराम मिल्स-फालसावड़ी सूरत।	मेसर्स शापुरजी एण्डको आफिस मिलमें ही है।	६०८८	३२०	१७४८
३६—पेट्लाद बुलाखीदास मिल्स को० लि०, स्टेशन रोड के सामने पेट्लाद (ह्वाया आनन्द)।	मेसर्स मोतीलाल कशनदास एण्ड को० स्टेशन रोडके सामने पेटलाद।	१८२५६		४४०२
३७—प्रभा मिल्स पूर्वनाम वीरमगाम मिल्स लि०, फूलवाड़ी रोड वीरम गाँव—	यह मिल बम्बई हाईकोर्ट द्वारा नियुक्त रिसीवरके अधिकार में है।	२३६८८	५५८	२१७४
३८—प्रताप स्पिनिंग, वीविंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग नं० १ व, २, अमलनेर पूर्व खानदेश	मेसर्स मोतीलाल मानेकचन्द एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	४८६५२	१०८४	६४७३
३९—राजा बहादुर मोतीलाल पूना मिल्स लि० (पूर्व नाम पूना काटन एण्ड सिल्क मैन्यू-फैक्चरिंग को० लि०, ५ कैनेडी रोड, पूना १।	मेसर्स मुकुन्दलाल बंशीलाल एण्ड सन्स, हम्माम हाउस, हम्माम स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई।	१८४५६	५६७	४६७५
४०—राजा रघुनाथ राव मिल्स, भोर।	मेसर्स महाराष्ट्र टेक्सटाइल्स लि०, आफिस मिलमें ही है।	८५२	४१	
४१—राजरत्न नरायन भाई मिल्स को० लि० पेटलाद।	मेसर्स रमनलाल केशवलाल एण्ड को० आफिस मिल में ही है।	२५५५२	४१४	४३४७
४२—सिकन्दर साड़ी मिल्स, सोवदगर मोहल्ला, भिवण्डी (जि० थाना)।	श्रीयुत अब्दुल कादिर सिकन्दर पटेल, आफिस मिलमें ही है।		१२५	
४३—शाह स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स, (पूर्वनाम अंजर स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०,) अंजर (कच्छ)	श्रीयुत पी० डी० शाह आफिस मिल के अन्दर ही है।	५३१२		७७४
४४—शोलापुर स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०, स्टेशन रोड, शोलापुर।	डायरेक्टरोंके एक बोर्ड द्वारा प्रबन्ध संचालन होता है। आफिस स्टैण्डर्ड बिल्डिंग फोर्ट बम्बई।	८६०४८	२२३४	१२६११

१	२	३	४	५
४५—श्री बालाजी स्पिनिंग, वीविंग एण्ड आइल मिल्स शिवाजी नगर, साँगली।	मैनेजिंग पार्टनर, श्रीयुत भवरलाल चोगालाल लड्ढा— आफिस मिलमें ही है।	५४७६	६६	७३६
४६—श्री सयाजी जुबिली काटन एण्ड जूट मिल्स को० लि०, रेलवे स्टेशन के सामने सिद्धपुर (R. M. Ry)।	मेसर्स प्रह्लादजी सेवकराम एण्ड को० लि०, रेलवे स्टेशन के सामने सिद्धपुर।	१४४१२	३२०	३६७७
४७—श्री शुभ लक्ष्मी मिल्स लि०, (पूर्वनाम श्री विजय लक्ष्मी काटन मिल्स लि०) स्टेशन रोड कैम्बे (जि० कैरा)।	मेसर्स श्री गोविंद काटन को० लि०, आफिस मिल ही में है।	२०१३२	३४०	३६७७
४८—श्री यमुना मिल्स कम्पनी लि०, (पूर्वनाम न्यू बड़ोदा मिल्स को० लि०) प्रतापनगर-बड़ोदा।	मेसर्स जवेरचन्द लक्ष्मीचन्द ब्रदर्स एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	२७४६६	६०८	३३३६
४९—श्री गजानन वीविंग मिल्स, सुदामा पुरी, साँगली S. M. C.।	मालिक श्रीयुत डी० आर० वेलनकर, आफिस मिलमें ही है।		१३५	
५०—श्री जगदीश मिल्स लि० (पूर्वनाम महाराजा मिल्स को० लि०) पादरा रोड, बड़ोदा।	मेसर्स जगदीश (ऐजेन्सी) लि० आफिस मिलमें ही है।	२०३२०	४०८	३२३३
५१—श्री लक्ष्मी टैक्सटाइ मिल्स लि० भाटवार (जि० पूना)।	मेसर्स भोर मर्केन्टाइल ऐजेन्सी लि० मिलके अन्दर ही आफिस भी है।	४१७६		
५२—श्री नारायन वीविंग मिल्स इचल करंजी S. M. C.	मेसर्स साँगले ब्रदर्स-आफिस मिलमें ही है।		६२	
५३—श्री सयाजी मिल्स को० लि०, रेलवे स्टेशनके समीप बड़ोदा।	मेसर्स वाड़ीलाल लल्लू भाई एण्ड को० लि०, आफिस मिल-में ही है।	३६००४	६००	५६६८
५४—श्री शाहू छत्रपति मिल्स, शाहूपुरी, कोल्हापुर (S. M. C.)।	मेसर्स जेम्स फिनले एण्ड को० लि० चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग, फोर्ट, बम्बई।	१५६८८	३२०	४०१६

१	२	३	४	५
५५—सिद्धपुर मिल्स को० लि०, बिन्दु सरोवर रोडके समीप सिद्धपुर।	मेसर्स मगनलाल प्रभूदास एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	२७७६०	३०६	४६४३
५६—सूरत काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० नवाब वाड़ी, सूरत	श्रीयुत नवीनचन्द मफतलाल २६ वीर नारीमन रोड, फोर्ट, बम्बई।	२५३०८	४७६	३११६
५७—सूरत टेक्सटाइल मिल्स लि०, वार्छा रोड, सूरत।	मेसर्स कंचनलाल कपैडिया एण्ड को० लि०, आफिस मिल-में है।	६६००		१२७५
५८—टिकेकर टेक्सटाइल मिल्स लि०, टिकेकर, वाडी, जिला शोलापुर।	मेसर्स नाइक एण्ड कम्पनी आफिस मिलमें है।		६०	
५९—वैङ्कटेश रङ्ग तन्तु मिल्स इचलकरञ्जी जिला कोल्हापुर।	श्रीयुत यस० के० दातार, ए० डी० दातार, डी० बाई० दातार और यम डी दातार, आफिस मिलमें है।		५६	
६०—हीनस टेक्सटाइल मिल्स लि० डेगम—(स्वेच्छासे लिकु-इडेशन गया है)	मेसर्स टी० भोगीलाल एण्ड सन्स लि० आफिस मिलमें ही है।	३४५२		
६१—विष्णु काटन मिल्स लि०, शोलापुर।	मेसर्स दि बाम्बे को० लि०, ६ वालेस स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई।	५४२८०	१४८३	१४४६६
	कुल	१२६५१६४ १५७६	२४२४८	२०६०६६

सौराष्ट्र प्रदेश स्थित सूती मिल्स का संक्षिप्त विवरण

१—हर्षद टेक्सटाइल मिल्स लि०, (पूर्व नाम श्री हर्षद टेक्सटाइल मिल)—रंजीत सागर रोड, जामनगर।	श्रीयुत पुरुषोत्तम के० वद्यानी, प्रताप मैनशन, १० लबर्नम रोड, गाम देवी बम्बई।	१०००००	२६२	
२—कान्ति काटन मिल्स लि०, (पूर्व नाम बधवान कैम्प मिल्स) सुरेन्द्र नगर बधवान कैम्प।	मेसर्स चन्दूलाल रतीलाल एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	१६३०८	३१६	४०८०

१	२	३	४	५
३—कृष्ण कुमार मिल्स को० लि० महूवा।	मेसर्स सुरेन्द्रनाथ मगनलाल एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	८४९६		२१४०
४—महालक्ष्मी मिल्स लि०, चावड़ी फाटकके समीप भावनगर।	हरगोवनदास जीवनदास एण्ड सन्स लि०, आफिस मिलमें ही है।	१९६९२	४८०	६५४४
५—महाराना मिल्स लि०, पोरबन्दर।	मेसर्स श्री नानजी भाई कालीदास मेहता, स्वस्तिक भुवन, यूगैण्डा रोड, पोरबन्दर।	२३७८०	५८६	६२९०
६—न्यू जहाँगीर वकील मि० को० लि०, पूर्व नाम वेणीशंकर लक्ष्मीशंकर काटन मि० को० लि०, नीलम बाग रोड, भावनगर।	मेसर्स रुस्तम जी मंगलदास एण्ड को० भावनगर आफिस मिलमें ही है।	३१९००	७१४	६१६०
७—राजकोट स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि० लि०, कर्ण सिंहजी क्रास रोड, राजकोट।	मेसर्स शापुर जी पालन जी एण्ड को० (राजकोट) लि०, आफिस मिलमें ही है।	१०८७२	२३५	२८६८
८—सन्तोक बाई स्पिनिंग एण्ड वीविंग फैक्ट्री, नरी रोड, भावनगर।	सर्वश्री गोविन्दलाल गण्डालाल आफिस मिलमें ही है।	३२७२		
९—श्री दिग्विजय सिंहजी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि० लि०, वेदेश्वर, जामनगर।	मेसर्स चैतन्यकुमार मंगलदास एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	१५०००	३७२	२०८६
१०—श्री रमेश काटन मि० लि०, पूर्व नाम मोरबी काटन मि० लि०, मोरबी।	मेसर्स दि मोरवी एण्ड स्ट्रीट लि०, आफिस मिल में ही है।	१५७१६	३२४	३१३३
११—श्री अमरसिंह जी मि० लि०, बिकानेर।	मेसर्स जयन्तीलाल अमृतलाल एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	१२६२४	३२०	३१९०
	कुल	१६७६६०	३६३९	३६५२१

राजस्थान, अजमेर एण्ड पेप्सू प्रदेश स्थित सूती मिल्स

१	२	३	४	५
१—एडवर्ड मिल्स को० लि० ब्यावर।	मैनेजिंग डाइरेक्टर, रायसाहब सेठ मोतीलाल रानीवाला-डिग्गेस्ट्रीट, ब्यावर।	२०८४०	३७६	५९३४
२—जगत जीत काटन टेक्सटाइल मि० लि०, जी० टी०रोड फागवारा (पेप्सू)	मेसर्स करमचंद थापर एण्ड ब्रदर्स लि०, ५ रोयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता।	१७८५६	४८०	७३३६
३—जयपुर स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि० लि०, पावरहाउस रोड-जयपुर	मेसर्स श्री लक्ष्मी ट्रेडर्स लि० स्टेशन रोड जयपुर।	१५५७६		४८६५
४—कोटा टेक्सटाइल्स लि०, भीमगंज कोटा जंक्शन।	मेसर्स सेठ मोती राम छंगोमल रुपानी, आफिस मिलमें है।	७५६०	१६०	
५—कृष्णा मि० लि०, बिआवर	मेसर्स ठाकुर दास खिन्वराज एण्ड को०, बिआवर।	१५६४० २६४०	६३६	७४८१
६—महालक्ष्मी मि० को०लि०, बिआवर।	सेठ लालचंद जी कोठारी-बिआवर।	१३७२८	४१६	३९२७
७—महाराज किशनगढ़ मि० लि० मदनगंज, किशनगढ़।	मेसर्स सोनी इण्डस्ट्रियल एजेन्सीज लि०, आफिस मिलमें ही है।	११४८४	३१२	११६७
८—महाराज श्री उमेद मि० लि०, पाली मारवाड़।	मेसर्स दि श्रीकृष्ण एजेन्सी लि० आफिस मिलमें ही है।	१९७२४	४४२	१४०८३
९—मेवाड़ टेक्सटाइल मि० लि०, भीलवाड़ा (राजस्थान)।	मेसर्स सौभाग्य एजेन्सीज लि०—आफिस मिलमें ही है।	१०८६०	३००	६२७१
१०—श्री विजय काटन मि० लि०, (पूर्वनाम विजयलक्ष्मी क्लाथ मि० को०) विजयनगर।	मालिक सेठ रघुनाथ सिंह मानसिंह का आफिस मिलमें ही है	१३७२०	३१०	४२९१
११—श्री महादेव काटन मि० लि०, भीलवाड़ा (राजस्थान)।	सेठ सनवारमल मानसिंह का आफिस मिलमें ही है।	३२६० १२८०	४५	
१२—श्री सादुल टेक्सटाइ० लि०,श्री गंगानगर (राजस्थान)	मेसर्स जे० पी० श्रीवास्तव एण्ड सन्स (बीकानेर) लि०, आफिस मिलमें है।	१५२९६	३२०	२६३२
	कुल	१६५५७४ ३९२०	३८७७	५८१६७

मध्य प्रदेश स्थित सूती मिल्स

१	२	३	४	५
१—बंगाल, नागपुर काटन मिल्स लि० राज नांद गाँव।	मेसर्स शा० वालेस एण्ड को० ४ बैंकसहाल स्ट्रीट, कलकत्ता।	२६६३६	७८२	६२००
२—बरार मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० बदनेरा।	मेसर्स कस्तूरचन्द दादा भाई एण्ड को० २४ बी० राजाबहादुर मैन्स०, हम्माम स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई।	२१३८४	३६६	३६८८
३—बुढ़ानपुर ताप्ती मिल्स लि०, बुढ़ानपुर।	मेसर्स पी० यन० मेहता एण्ड सन्स कुक्स बिल्डिंग, ३२४ हार्नबी रोड, फोर्ट बम्बई।	२६५१२	७३०	६१८३
४—सेन्ट्रल इण्डिया स्पिनिंग, वीविंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० (इम्प्रेस मि०) नागपुर।	मेसर्स टाटा इण्डस्ट्रीज, लि० बाम्बे हाउस, २४ ब्रूस स्ट्रीट फोर्ट बम्बई।	११५१८८	२०६२	२३२२३
५—माडेल मि० नागपुर लि० नागपुर।	मेसर्स वंशीलाल अबीरचन्द दादा भाई एण्ड को०, इलै को० हाउस, सर फीरोज शाह मेहता रोड, फोर्ट बम्बई।	४७५६०	६५२	१२२७३
६—पुलगांव काटन मि० लि०, (पूर्वनाम पुलगांव काटन स्पिनिंग, वीविंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०) पुलगांव जि० वर्धा।	मेसर्स हरदयाल सन्स, ५० अपालो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई।	२१६४०	४३१	६३८४
७—राय बहादुर वंशीलाल अबीर चन्द स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि०, हिंगन घाट जिला वर्धा।	मालिक श्रीमती सोद्रा देवी यन० डागा तथा अन्य भद्र, आफिस मिलमें ही है,	३१६००	३६६	४६०७
८—राय साहिब रेखचन्द मोहता स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि० लि०, हिगन घाट जिला वर्धा।	मैनेजिंग डायरेक्टर—सेठ मथुरादास मोहता, हिंगनघाट लि० वर्धा।	२३१४४ ४४२	४१३	५८६७

१	२	३	४	५
९—राय साहिब रेखचन्द गोपालदास मोहता स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि० लि०, पूर्व-नाम अकोला काटन मि० लि०) अकोला ।	मेसर्स बुलाकीदास मोहता एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	२१४०८ ४६८	४६६	६६५०
१०—सवतराम रामप्रसाद मि० को० लि० तेजन पेठ, अकोला।	मेसर्स सवतराम सन्स लि० अकोला ।	१३०६६	३१७	४०५३
११—विदर्भ मि०, बरार लि०, इलेचपुर जि० अमरावती ।	मेसर्स देशमुख एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है ।	१२४४४	३४७	३०८८
	कुल	३६६६१२ ६१०	७१६५	८५५४६

बिहार और उड़ीसा प्रदेश स्थित सूती मिल्स

१—बिहार काटन मि० लि०, फुलवारी शरीफ पटना ।	मेसर्स काशीनाथ एण्ड को० लि०, फुलवारी शरीफ, पटना।	८०००	१५६	१४४४
२—गया काटन एण्ड जूट मि० लि०, गया ।	डायरेक्टरोंका बोर्ड प्रबन्धक, आफिस मिलमें ही है ।	१९७४४ ११८८	५८८	१४३४
३—उड़ीसा टेक्सटाइल मि० लि० चौद्वार, कटक ।	मेसर्स बी० पटनायक एण्ड को० आफिस मिलमें ही है ।	४७७२८	८६४	१४७३५
	कुल	७५४७२ ११८८	१६११	१७६१३

हैदराबाद राज्यान्तर्गत सूती मिल्स

१—औरंगा बाद मि० लि०, औरंगाबाद ।	मेसर्स गुप्ता एण्ड सन्स, मिलमें आफिस है ।	१२६४०	२७१	२६२६
२—आजम शाही मि० लि०, बारंगाल ।	हैदराबाद सरकारका इण्डस्ट्रियल ट्रस्ट फण्ड, १५९ गनफाउन्ड्री रोड, हैदराबाद (दक्षिण)	३६१३६	६६५	११५८२
३—दीवान बहादुर रामगोपाल मि० लि० एलची गुडा सिकन्दराबाद (दक्षिण)।	मेसर्स लक्ष्मी नारायन रामगोपाल एण्ड सन्स लि०, पो० बक्स न० ५ सिकंदराबाद (दक्षिण)।	२४४१६	५०३	५३४९

१	२	३	४	५
४—हैदराबाद (दक्षिण) स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०, एलची गुडा, सिकंदराबाद (दक्षिण)।	मेसर्स महबूब शाही कुलवर्गा मि० को० लि०, वेगम पेठ हैदराबाद (दक्षिण)।	११६६०	२४१	३०५४
५—जीवन टेक्सटाइल्स मि०, मीर अली टैंक रोड, हैदराबाद (दक्षिण)।	आर० आर० जीवन लाल, पत्थर घाटी हैदराबाद (दक्षिण)।		५६	
६—महबूब शाही कुलवर्गा मि० को० लि०, गुलबर्गा।	मेसर्स दयाराम सूरजमल लाहोटी वेगम पेठ हैदराबाद (दक्षिण)।	२७७६४	६०६	७१७६
७—उस्मान शाही मि० लि०, नांदेड़।	हैदराबाद सरकारका इण्डस्टियल ट्रस्ट फण्ड १५६ गनफाउन्ड्री रोड, हैदराबाद (दक्षिण)।	३७७८८	६०२	१४०६०
	कुल	१५०७०४	३२४४	४३८४७

मध्य भारत और भूपाल प्रदेश स्थित सूती मिल्स

१—विनोद मिल्स को० लि०, (विनोद मिल्स) उज्जैन।	मेसर्स विनोदीराम बालचन्द लि०, आफिस मिलमें है।	३७१६४	८६०	} १४७६१
२—विनोद मिल्स को० लि०, (दीपचन्द मिल्स पूर्वमें सिप्रा काटन मिल्स) उज्जैन।	,, ,,	२०८३०	४८०	
३—हीरा मिल्स लि०,उज्जैन।	मेसर्स सरस्वरूपचन्दजी हुकुमचन्द एण्ड को० शीशमहल, शीतला माता बाजार इन्दौर।	२७५४०	८६४	६८४७
४—हुकुमचन्द मिल्स लि०, इन्दौर।	मेसर्स सर हुकुमचन्द एण्ड मन्नालाल को०, आफिस मिल में है।	४३६२० ४६८	१४३८	१६६६५
५—इन्दौर मालवा यूनाइटेड मिल्स लि०, (पुराना मिल) ३३ न्यू देवास रोड, इन्दौर सिटी ६—इन्दौर मालवा यूनाइटेड मिल्स लि० (नये मिल) ३३ न्यू देवास रोड, इन्दौर सिटी।	} मेसर्स गोविन्दराम सेकसरिया (इन्दौर) १३६ मेडोज स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई।	५११८०	१४२०	१७२८१

१	२	३	४	४
७—ज़ियाजी राव काटन मिल्स लि०, बिड़लानगर, ग्वालियर।	मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स (ग्वालियर) लि०, आफिस मिलमें ही है।	५४३४४	१५५५	२४७५३
८—कल्यानमल मिल्स लि०, १४ शीलनाथ कैम्प, इन्दौर।	मेसर्स तिलोकचन्द कल्यानमल एण्ड को०, शीतला माता बाजार, इन्दौर।	३६४१२	६५६	१२१७७
९—के० एस० नजरअली मिल्स, उज्जैन।	के० एस० नजरअली अली-बख्श, निजातपुरा, उज्जैन।	१७२८८	३७६	२६६२
१०—महारानी श्री महलसा-बाई काटन मिल्स को० लि०, देवास (छोटा)।	डायरेक्टरोंका एक बोर्ड, २१ वीर नारीमन रोड, फोर्ट बम्बई।	१२०४०	१९२	३७८६
११—मदसौर टेक्सटाइल मिल्स, मंदसौर।	मालिक श्रीयुत लक्ष्मीनाराय-णजी, आफिस मिलमें ही है।	१००४८	११०	
१२—मोतीलाल अग्रवाल मिल्स लि० औद्योगिक क्षेत्र, रेलवे स्टेशन बिड़लानगर के समीप, ग्वालियर।	श्रीयुत लाल वंशीधर जी बंसल आफिस मिलमें ही है।	१२८४४ ५८०		२७७४
१३—नन्दलाल भण्डारी मिल्स लि० इन्दौर।	मन्त्री, कोषाध्यक्ष, मेसर्स नन्द-लाल भण्डारी एण्ड सन्स लि०, आफिस मिलमें ही है।	२७४२८	७७१	८८४६
१४—न्यू भूपाल टेक्सटाइल्स लि० (पूर्वमें भूपाल टेक्सटा-इल्स) चंदवार, भूपाल।	मेसर्स सर जे० पी० श्रीवास्तव एण्ड सन्स (रामपुर) लि०, निशात मञ्जिल भूपाल।	१४११२	४००	७४५२
१५—रायबहादुर कन्हैयालाल भण्डारी मिल्स लि० (पूर्वमें महराजा मिल) इन्दौर।	मेसर्स नन्दलाल भण्डारी एण्ड सन्स आफिस मिलमें ही है।	१५६६६	३५१	
१६—राजकुमार मिल्स लि० इन्दौर।	सर स्वरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	२२७५६	६०६	८२११
१७—श्री सज्जन मिल्स लि० (पूर्वमें रतलाम बाम्बे यूनाइटेड स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०) रतलाम।	मेसर्स गोपालदास लीलाधर एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें है।	१५८२४	४४०	५१६५
१८—स्वदेशी काटन एण्ड फ्लोर मिल्स लि०, शीलनाथ कैम्प इन्दौर सिटी।	मेसर्स जगन्नाथ नारायण एण्ड को०, संयोगितागंज इन्दौर।	२४६८८	५५८	७४४८
	कुल	४४४४१४ १०४८	११३८३	१४२१६१

१	२	३	४	५
पश्चिम बंगाल प्रदेशान्तर्गत सूती मिल्स				
१—भारती काटन मिल्स लि०, दसांझार, हबड़ा।	मेसर्सदास ब्रदर्स २६ स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता।	१३०००	२००	१६१०
२—बंग श्री काटन मिल्स लि०, सोदेपुर, पोस्ट आफिस सुकचार (२४ परगना)।	मेसर्स शाह चौधरी एण्ड को० लि०, आफिस मिल में ही है।	१५२६०	३६६	२०४५
३—बंगेश्वरी काटन मिल्स लि०, सेरामपुर हुगली।	श्रीयुत डाक्टर नरेन्द्रनाथ ला, ६३ राधाबाजार, कलकत्ता।	२२१५२	५१६	३४७६
४—बंगोदय काटन मिल्स लि०, पानीहट्टी, जिला २४ परगना।	मेसर्स रंजीत लि०, आफिस मिल में ही है।		३४०	
५—वासन्ती काटन मिल्स लि०, बारकपुर, ट्रंकरोड, पानी हट्टी २४ परगना।	मेसर्स कलकत्ता ऐजेन्सीज लि० २४ नेताजी सुभापरोड कलकत्ता	१३०४४	३५६	१७९३
६—बंगाल वेल्टिंग वर्क्स लि० बोसपुरा लेन, सेरामपुर।	श्री युत यस० सी०डे० २ डल-हौजी स्कायर ईस्ट, कलकत्ता।	२२४०	१०४	७१९
७—बंगाल फाइन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, कोननगर हुगली।	मेसर्स बी० सी० नान एण्ड ब्रदर्स लि०, ७ बहू बाजार स्ट्रीट कलकत्ता।	१३६८०		२७५१
८—बंगाल लक्ष्मी काटन मिल्स लि०, सेरामपुर जिला हुगली।	मेसर्स दि बंगाल टेक्सटाइल ऐजेंसी ७ चौरंगीरोड कलकत्ता।	३१०८०	६३६	५६३०
९—बौरीह काटन मिल्स कंपनी लि०, बौरीह, जिला हबड़ा।	मेसर्स केटलेवेल बुलेन एण्डको० लि० २१ स्ट्रैण्डरोड कलकत्ता।	४२८७२	८४१	५५२८
१०—ढाकेश्वरी काटन मिल्स लि०, नं० ३ (मिल नं० १ और नं० २ पूर्वी पाकिस्तानमें हैं) सूर्यनगर पोस्ट आफिस बर्नपुर जिला बर्दवान।	मेसर्स स्वदेशी इण्टर प्राइज कनक विल्डिंग, ४१ चौरंगी रोड कलकत्ता।	१५१३४	४०४	७०६
११—दनवार मिल्स लि० नं० १, शामनगर जि०, २४परगना। १२—दनवार मिल्स लि० नं० २ शामनगर, जि०२४परगना। १३—दनवार मिल्स लि० नं० ३ शामनगर जि० २४ परगना। १४—दनवार मिल्स लि० नं० ४ शामनगर जि० २४ परगना।	मेसर्स केटलेवेल बुलेन एण्ड को० लि०, २१ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता।	४२९४४	५१८	६०१५

१	२	३	४	५
१५—ईस्टइण्डिया कार्पोरेशन लि० यूनिट नं० १ मौरी ग्राम, जिला हवड़ा ।	डायरेक्टरों का बोर्ड १८ नेताजी सुभाष रोड कलकत्ता ।		१२०	
१६—ईस्ट इण्डिया कार्पोरेशन लि०, यूनिट नं०२, ३४।१ बनबिहारी बोस रोड, हवड़ा ।				
१७—हिन्दुस्तान काटन मिल्स लि० वेलगुरिया, २४ परगना ।	प्रबन्ध संचालक डायरेक्टरोंका बोर्ड ५ क्लाइवरो कलकत्ता ।		१२०	
१८—हुगली काटन मिल्स सेरामपुर ।	मालिक श्रीयुत ए० के० सेन सेरामपुर ।		५३	
१९—हवड़ा काटन मिल्स लि०, वेलगथिया हवड़ा ।	मेसर्स ए० के० मण्डल एण्ड सन्स, १४६ वेलीलियोज रोड, हवड़ा ।	६०००	१००	५१८
२०—ज्योति वीविंग फैक्ट्री, एस० के० देव रोड, दमदम (२४ परगना) ।	मेसर्स श्री० सी० जी वर्मा तथा अन्य भद्रजन-आफिस ३८ आर्मेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता ।		७२	
२१—कल्यान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, विर्थी, दमदम (२४ परगना) ।	मेसर्स ए० के० चौधरी एण्ड को० लि० फोल्डटोला स्ट्रीट कलकत्ता ।	१२१२८		१६३०
२२—केशवराम काटन मिल्स लि०, (पूर्वमें अलाइड काटन एण्ड डाईवर्क्स लि०) गार्डन रीच रोड कलकत्ता ।	मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता ।	६१३५२	१९९०	२७८९६
२३—लक्ष्मीनारायण काटन मिल्स लि० रिश्रा हुगली	मेसर्स ढाका नेशनल ऐजेन्सी लि० ४ बी० ग्रैस्टिन प्लेस कलकत्ता ।	९९४०		१२६४
२४—महालक्ष्मी काटन मिल्स लि० पाल्टा २४ परगना ।	मैनेजिंग डायरेक्टर्स सर्वश्री के० सी० डे० तथा नथूराम पोद्दार, १३५ केनिंग स्ट्रीट कलकत्ता ।	६१५६	१७१	१३२७
२५—मणीद्र मिल्स लि०, कासिम बाजार, मुर्शिदाबाद पश्चिम बङ्गाल ।	मेसर्स चौधरी राय एण्ड को० लि०, पी० ४१ बी० के० पाल ऐवेन्यू (सी० आई० टी०) कलकत्ता ।		१८२	

१	२	३	४	५
२६—मोहिनी मिल्स लि० (मिल नं० १ वेलगुरिया २४ परगना (मिल नं० २ पूर्वी पाकिस्तानमें है।)	मेसर्स चक्रवर्ती सन्स एण्ड को० २२ केनिंग स्ट्रीट कलकत्ता।	२३४८४	४४२	४२२८
२७—रामपुरिया काटन मिल्स लि०, (पूर्वमें श्री नृसिंह काटन मिल्स) सेरामपुर E. I. R. बंगाल।	मेसर्स हजारीमल हीरालाल १४८ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।	२३०३६	७६५	५६४३
२८—श्री हनुमान काटन मिल्स को०, (पूर्वमें न्यू रिंग मिल को० लि० (फूलेश्वर P. O. ऊलूवेरिया जिला हवड़ा।	डायरेक्टरों का बोर्ड आफिस मिल में ही है।	२४१६६		४४४५
२६—श्री राधाकृष्ण काटन मिल्स लि० मिल नं० १ (पूर्व-में गूजरी काटन मिल्स) (लिक्वि-डेशनमें है) १२२ पुराना घूसरी रोड, हवड़ा।	मेसर्स साधूराम तुलाराम, २६ ए०, सर हरीराम गोय-नका स्ट्रीट कलकत्ता।	४१६६४ (२६ तथा ३० के लिए)	५६४	२३७४
३०—श्री राधाकृष्ण काटन मिल्स लि०, मिल नं० २ (पूर्वमें जाजोदिया काटन मि० लि०) १७५ गिरीश घोष रोड, वेलूर, जिला हवड़ा।	,, ,,			
३१—श्री राधेश्याम मिल्स लि० (पूर्वमें भारत अभ्युदय काटन मिल्स लि०) २२० नस्कर पारा रोड, घुसरी, हवड़ा।	मेसर्स शोभाराम केशवदेव १३५ केनिंग स्ट्रीट कलकत्ता।	३०५१२ १४७७४	४१७	४६३१
३२—सिद्धेश्वरी काटन मि०, अनन्तपुर हवड़ा।	मेसर्स मन्ना मण्डल एण्ड मल्लिक आफिस मिलमें ही है।		११२	
३३—सोदेपुर काटन मि० लि०, सोदेपुर २४ परगना।	मेसर्स चौधरी टेक्सटाइल्स लि०, १६ शोभा बाजार स्ट्रीट, कल-कत्ता।	५२००		
३४—श्री अन्नपूर्णा काटन मिल्स लि०, श्यामनगर, २४ परगना।	मेसर्स चक्रवर्ती मुकर्जी एण्ड को०, २१४ क्रास स्ट्रीट कल-कत्ता।	६१८४	१५१	२३०३

१	२	३	४	५
३५—श्री दुर्गा काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, कोननगर (E.I. Ry)	मेसर्स चौधरी एण्ड को० लि० १३५ केनिंग स्ट्रीट कलकत्ता।	६२२८	२२०	१३२५
३६—स्वदेशी इण्डस्ट्रीज लि०, पानीहट्टी।	मेसर्स आनन्दराम गजादर ३३ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।		१५१	
३७—विक्टोरिया काटन मिल्स, घूसरी, सल्किया, P. O. जिला हवड़ा।	डायरेक्टरों का बोर्ड ३७० अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।	१२३०४		२४८७
३८—विद्यासागर काटन मिल्स लि०, सोदेपुर जिला २४ परगना।	मेसर्स यूनाइटेड कमर्शियल एजेन्सी लि०, ११ कोलूटोला स्ट्रीट कलकत्ता।		१५६	
	कुल	४६११७० १४७७४	१०४२७	६०६४४

पूर्व पंजाब तथा दिल्ली प्रदेश स्थित सूती मिल्स।

१—बिड़ला काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, (पूर्व नाम हनुमान एण्ड महादेव स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स) बिड़ला लाइन्स P.O. दिल्ली।	मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।	३६८६६	६६८	१३३७५
२—दयालबाग स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, (पूर्वनाम वेंकटेश्वर काटन मिल्स लि०), पुतली घर, जी० टी० रोड, अमृतसर।	श्री साहेब महाराज मिल्स लि०, आफिस मिल में ही है।	३६४८ ८२००	२५२	

१	२	३	४	५
३—दिल्ली क्लाथ एण्ड जेनरल मिल्स को० लि०, मिल नं० १—बड़ा हिन्दू रोड, दिल्ली।	मेसर्स भरतराम चरतराम एण्ड को० लि० पोस्ट बाक्स नं० १०३६ दिल्ली।	७५६०४	१७८५	३३८८२
४—दिल्ली क्लाथ एण्ड जेनरल मिल्स को० लि० मिल नं० २—बड़ा हिन्दू रोड, दिल्ली।	,, ,,			
५—दि क्लाथ एण्ड जेनरल मिल्स को० लि० मिल नं० ३—बड़ा हिन्दू रोड, दिल्ली।				
६—दिल्ली स्वतन्त्र भारत मिल्स, नजफगढ़ रोड, दिल्ली।	मेसर्स भरतराम चरतराम एण्ड को० लि० पोस्ट बाक्स नं० १०३६ दिल्ली।	२५६८०	६७२	१६५०१
७—गोयनका काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि० ग्रैण्ड ट्रङ्क रोड, दिल्ली।	मेसर्स परसराम हरनन्दराय कटरा तम्बाकू, खारी बावली, दिल्ली।		३०७	
८—लक्ष्मीचन्द जैपुरिया मिल्स (महावीर काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०, लीज होल्डर्स हैं। सब्जी मण्डी दिल्ली।	राय साहब सेठ रामकुमार जैपुरिया आफिस मिल में ही है।	१४७१२ ४७८८	२२६	१२६६
९—पञ्जाब क्लाथ मिल्स लि०, भिवानी।	मेसर्स राधाकृष्ण पूरनमल, २०, ताराचन्द दत्त, स्ट्रीट, कलकत्ता।	११०००	२७५	२७८४
१०—सेठ स्पिनिंग लि०, (पूर्व नाम अमृतसर स्पिनिंग मिल्स) जी० टी० रोड, अमृतसर।	मेसर्स चुन्नीलाल सेठ एण्ड ब्रदर्स लि०, आफिस मिल में ही है।	४६४८	३९	२२४
११—टेकनालोजिकल इन्स्टीट्यूट आफ टेक्सटाइल्स, (पूर्व नाम भिवानी क्लाथ मिल्स लि०) बिड़ला कालोनी, भिवानी।	बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट आफिस मिल में ही है।	२४७५६	५७८	७७६८
	कुल जोड़	२००२४४ १२९८८	५१३२	७८८३३

१	२	३	४	५
उत्तर प्रदेश स्थित सूती मिलें				
१—अथर्टन मिल्स, अनवरगञ्ज कानपुर।	मालिक—मेसर्स अथर्टन वेस्ट एण्ड को० लि० पोस्ट बक्स नं० ६७ कानपुर।	४२३५२	८६८	७६३६
२—बनारस काटन एण्ड सिल्क मि० लि०, चौकाघाट, बनारस छावनी।	प्रबन्ध संचालक—डायरेक्टरों का एक बोर्ड, आफिस मिल में है।	२२१०८ ६८०	५०२	३५०८
३—बिजली काटन मिल्स लि०, हाथरस-(पूर्वनाम तुलसीदास तेजपाल मि० लि०) ससनी फाटक, मेंडू रोड, हाथरस सिटी	मेसर्स यन० के० लि०, आफिस मिल में है।	१६५२०	२०	५७१८
४—कानपुर काटन मि० को० (सी० सी० यम) कोपड़ गंज कानपुर।	मालिक—मेसर्स दि ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन लि०, पोस्ट बक्स नं० ५ कानपुर।	३७०४० ७२००	६७२	१६६३३
५—कानपुर काटन मिल्स को० (जुही), जुही, कानपुर।	,, ,, ,,	२६३५२	५६१	७२२१
६—कानपुर टेक्सटाइल्स लि०, कूपरगंज, कानपुर।	मेसर्स बेग सदर लैण्ड एण्ड को० लि०, सदर लैण्ड हाउस कानपुर।	२८७९६	७२	
७—दयालबाग टेक्सटाइल्स मिल्स लि०, दयालबाग, आगरा।	मेसर्स सोशल सेक्योरिटी एण्ड सर्विस कार्पोरेशन दयाल बाग आगरा।			
८—एलगिन मिल्स को० लि०, सिविल लाइन्स, कानपुर।	मेसर्स बेग सदरलैण्ड एण्ड को० लि०, सदरलैण्ड हाउस कानपुर।	४२२५२ १०५६०	११६८	१७७५५
९—इन्द्र स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स (पूर्वनाम आगरा स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०,) जेवनी की मण्डी, आगरा।	सेठ सुगन चंद जी आफिस मिल में ही है।	१२०० १२७२०		१८०३

१	२	३	४	५
१०—जान्स मिल्स को०, (पूर्व नाम जान्स कार्पोरेशन स्पिनिंग मिल्स) जेवनी की मण्डी, आगरा।	अधिकृत प्रबन्ध संचालन नियंत्रक—श्रीयुत एम० एल० मेहरा, आफिस मिलमें ही है।	५१३६०		४१३५
११—जान्स मिल्स को०, (पूर्व नाम जान्स प्रिन्स आफ वेल्स स्पिनिंग मिल) जेवनी की मंडी, आगरा।	,, ,,			
१२—जान्स मिल्स को०, (पूर्व नाम जान्स स्पिनिंग मिल्स) जेवनी की मंडी आगरा।	,, ,,			
१३—जे० के० काटन मैन्यूफैक्चरर्स लि०, कालपी रोड, कानपुर।	मेसर्स जे० के० कमर्शियल कार्पोरेशन लि०, कमला टावर कानपुर।	२२४००	३०	८५४३
१४—जुग्गीलाल कमलापति काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को०, लि०, कालपी रोड, कानपुर।	सर पद्मपति सिंघानिया, कमला टावर कानपुर।	४४६६४	६०७	८६२२
१५—कन्नौज डाइङ्ग एण्ड वीविंग मिल्स, कन्नौज, यू० पी०।	मालिक—श्रीयुत यल० मन्नी लाल वेनी माधव, आफिस मिल में है।		५८	
१६—लक्ष्मीरतन काटन मिल्स को० लि०, कालपी रोड, कानपुर।	मेसर्स बी० आर० सन्स, बिहारी निवास, कानपुर।	३६३४० १०८०	८०१	७३६४
१७—लल्लामल हरदेव दास काटन स्पिनिंग मिल को०, सादावाद फाटक, हाथरस सिटी जिला अलीगढ़।	प्रबन्ध संचालन नियंत्रक श्रीयुत शिव प्रसाद जी, आफिस मिल में है।	७२२४ ४५००		३५८५
१८—मोदी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, मोदीनगर (मेरठ)।	मेसर्स आर० बी० गूजर मल मोदी एण्ड ब्रदर्स आफिस मिल मिल में है।	२००००	५०५	६४६८
१९—मुरादाबाद स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०, कुन्दन पुर, मुरादाबाद।	श्रीयुत लाला हरिराजस्वरूप आफिस मिल में है।	५३६६ ८४००	अंक उपलब्ध नहीं	अंक उपलब्ध नहीं

१	२	३	४	५
२०—म्योर मिल्स को० लि०, सिविल लाइन्स, कानपुर।	मेसर्स इण्डियन टेक्सटाइल्स सेण्डीकेट लि० ५५।११५ जेनरल गंज, कानपुर।	६६६८८ २१६७२	१८३४	१६६६६
२१—नारायण काटन मिल्स, बांसमण्डी, कानपुर।	मालिक—यच, वेविस एण्ड को०, पोस्ट बाक्स नं० २६ कानपुर।	१५०००	३००	
२२—न्यू विक्टोरिया मिल्स को० लि०, ४-१ सिविल लाइन्स कानपुर।	सेक्रेटरीज-जे० पी० श्री वास्तव एण्ड सन्स लि० पोस्ट बक्स नं० ४६, कानपुर।	४१६६६	११६८	१५३७७
२३—प्रेम स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०, उझियानी जला बदायूँ।	मंत्री—लाला कैलाश चंद्रसोनी, उझियानी, जि० बदायूँ।	१७३००		३२०६
२४—रामचन्द्र स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, (पूर्वनाम न्यू रामचन्द्र काटन मिल्स) हाथरस सिटी, जि० अलीगढ़।	मालिक—मेसर्स हीरालाल गुलाबचंद एण्ड को० मुरसान द्वार, हाथरस सिटी।	१६४८० ३५४०	१७१	१३३८
२५—रजा टेक्सटाइल्स लि०, ज्वालानगर रामपुर।	सर, जे० पी० श्रीवास्तव एण्ड सन्स (रामपुर) पोस्ट आफिस ज्वालानगर, रामपुर।	३३६८४	६००	६८३६
२६—सचेण्डी काटन मिल्स, सचेण्डी।	मालिक—मेसर्स राम नरायन गर्ग एण्ड सन्स, गर्ग भवन, सिविल लाइन्स, कानपुर।	८०० २६४०	अंक नहीं	अंक नहीं
२७—श्री राधाकृष्ण मिल्स, (पूर्वनाम मिर्जापुर काटन मिल्स) नारघाट, मिर्जापुर	मेसर्स सेकसेरिया ब्रदर्स लि०, १५, विवेकानन्द रोड, कलकत्ता ७।	अंक नहीं	७४	अंक नहीं
२८—श्री विक्रम काटन मिल्स लि०, (पूर्वनाम आर० जी० काटन मिल्स को० लि०) तालकटोरा, लखनऊ।	मेसर्स रंजीत सिंह एण्ड सन्स लि०, तालकटोरा, लखनऊ।	१८४०८	४२३	३४०६
२९—स्वदेशी काटन मिल्स को० लि०, जुही, कानपुर।	मेसर्स जैपुरिया ब्रदर्स लि० जेनरल गंज कानपुर।	११२२१३	२०१७	३१४५८
	कुल जोड़	६६०७२४ १५०७०४	१३२३१	१८१४८३

मद्रास राज्य स्थित सूती मिलें

१	२	३	४	५
१-अरोन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० पापीनेसेरी, उत्तर मालाबार।	मैनेजिंग डायरेक्टर—श्रीयुत सी० सैमुअल अरोन—आफिस मिलमें है।	१२३००	३७४	१८२४
२—ऐडोनी काटन मिल्स लि०, अलूर रोड, ऐडोनी (S-Rly)	मेसर्स वेम्ब्रू सन्स एण्ड को० २२ वेल बिल्डिंग, सर० पी० यम० रोड बम्बई।	२०००		४१५
३—असेर टेक्सटाइल्स लि०, अवनाशी रोड, तिरुपुर।	मेसर्स टेक्सटाइल कार्पोरेशन लि० आफिस मिलमें है।	२००००		१६००
४—बालकृष्ण मिल्स लि०-४७, चेयरमैन, मूचू रामियर रोड, मथुराई।	मेसर्स ए० यच० यस० रामास्वामी ऐय्यर एण्ड सन्स—आफिस मिलमें ही है।		८३	
५—बकिङ्घम एण्ड कर्नाटिक को० लि० (पूर्वनाम बकिङ्घम मिल) फारेन्स रोड, पेराम्बुर, मद्रास।	मेसर्स बिनी एण्ड को० (मद्रास) लि०—७ अर्मेनियन स्ट्रीट, मद्रास।	११८३००	२५८१	३४००४
६—बकिङ्घम एण्ड कर्नाटिक को० लि० (पूर्वनाम कर्नाटिक मिल्स) फारेन्स रोड पेराम्बुर बैराक्स, मद्रास।				
७—कम्बोडिया मिल्स लि०—इरुगुर गांव, सिंगानालूर, कोयम्बटूर।	मेसर्स पियर्स लेस्ली एण्ड को० लि०, रेसकोर्स, कोयम्बटूर।	३७५३६		७८१६
८—कैनानोर स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० का०, कैनानोर।	मेसर्स मलाबार इण्डस्ट्रियल सिण्डीकेट—आफिस मिल में ही है।	१६८००		४०६८
९—कावेरी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० कावेरीनगर, पोस्ट आफिस, वेलानूर।	यूनाइटेड इण्डस्ट्रीज (पुदूकोटाई) लि०—आफिस मिलमें ही है।	११६१६		६१७
१०—कोयम्बटूर काटन मि० लि० सिंगानालूर, कोयम्बटूर।	मेसर्स आर० बीमा नायडू एण्ड को०—आफिस मिलमें ही है	२८८६४		३५४३

१	२	३	४	५
११—कोयम्बटूर कमला मिल्स लि० सिंगनालूर, कोयम्बटूर।	मेसर्स आर० ह्वी० लक्ष्मय्या नायडू एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१७२६४		१५३५
१२—कोयम्बटूर मूरुगन मिल्स लि०, मेट्टूपलायम रोड, कोयम्बटूर।	मेसर्स टी० ए० रामालिंगम चेटियर सन्स एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१६४६०	१००	२१७०
१३—कोयम्बटूर पायोनियर मिल्स लि०, पीलामेंडू, कोयम्बटूर।	मेसर्स टी० आर० नारायण स्वामी नायडू एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१६७६८		१३१५
१४—कोयम्बटूर स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि०, मिल रोड कोयम्बटूर।	मेसर्स आर० जी० एस० नायडू एण्ड को० पोस्ट बाक्स नं० २४ कोयम्बटूर।	७२१८८	४०७	६५३४
१५—कामनवेल्थ वीविंग फैक्टरी, कैनानोर मालाबार।	दि कामनवेल्थ ट्रस्ट लि०, कोझीकोड, मालाबार।		३१२	
१६—धनलक्ष्मी मिल्स लि०, उथूकुली रोड, मलाबार।	मेसर्स यम० नानजप्पा चेटियर एण्ड सन्स तेरुपुर।	३२१६४	२०१	३५७०
१७—ज्ञानाम्बिकाई मिल्स लि०, वेलाकिनार, कोयम्बटूर।	मेसर्स ह्वी० सी० वेलिङ्गिरि गाउण्डर एण्ड ब्रदर्स, वेलाकिनार हाउस वेलाकिनार पोस्ट कोयम्बटूर।	१४६५६		१३२६
१८—हेमलता टेक्सटाइल्स लि०, पेडाकाकानी, गन्तूर जिला।	मेसर्स सुदर्शनम् लि०, राली हाउस ३२० लिंगी चेट्टी स्ट्रीट मद्रास।	१२०००		२८८६.
१९—जानकीराम मिल्स लि०, श्री विलीपूथुर रोड राजा पलायम।	मेसर्स शक्ति लि०, आफिस मिलमें ही है।	३०००	९९	१५९
२०—जनार्दन मिल्स लि०, उप्पीलीपलायम सिगनालूर।	मेसर्स जी० वेंकट स्वामी नायडू एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	२३७८४		२२३७
२१—जवाहर मिल्स लि०, सेवापेठ. सुरमङ्गलम् मेन रोड, सलेम जंक्शन।	मेसर्स उमायाम्बिका एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	३३४७२		२६०७

१	२	३	४	५
२२—जयलक्ष्मी मिल्स लि०, उप्पलीपलायम सिंगनाल्लूर।	श्रीयुत आर० वेंकट स्वामी नायडू, आफिस मिलमें ही है।	६६३६		६६१
२३—जयन्ती रामचन्द्रप्पा सेट्टी मिल्स लि०, रायादुग, बेलारी जिला।	श्रीयुत जे० वेंक्टर रमनप्पा सेट्टी—आफिस मिलमें ही है।		१२६	
२४ जयराम मिल्स लि०, राजापलायम रामानन्द जिला।	मेसर्स राम को० मैनेजमेंट लि० आफिस मिलमें ही है।		८१	
२५—ज्योती मिल्स लि०, पेरियानाइकिनपलायम पोस्ट आफिस कोयम्बटूर।	मेसर्स रामकृष्ण इण्डस्ट्रीज लि०, पीलामेडू।	२८००		
२६—काद्री मिल्स (C. B. E.) लि०, ओड्डुरपलायम सिंगनाल्लूर।	मेसर्स जी० कृष्ण एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	२०५२०		२१७६
२७—कालेस्वरार मिल्स लि०, अन्नुपेरपलायम कोयम्बटूर।	मेसर्स ए० एल० ए० आर० अरुणाचलम चेट्टियर तथा दीवान बहादुर पी० सोमासुन्दरम चेट्टियर आफिस मिलमें ही है।	५०३०४	३२५	५५०६
२८—कन्दन टेक्सटाइल्स लि०, थीरुहोट्टियूर हाई रोड मद्रास।	मेसर्स सी० यस एण्ड को० ८ सेकण्ड लाइन बीच, मद्रास।		६०	
२९—कार्तिकेयन मिल्स लि०, वीरावनाल्लूर, तिरुनेलवेली जिला।				
३०—कारुर मिल्स लि०, थनथोनी, कारुर।	मेसर्स मीनाक्षी एण्ड को०, इकार स्ट्रीट कारुर।	६०६४		३७६
३१—कस्थूरी मिल्स लि०, इरीगुरगांव सिंगनाल्लूर, कोयम्बटूर।	मेसर्स सी० यन० वेंकटपथी नायडू एण्ड को० लि०, आफिस मिलमें ही है।	१४३२०		६८०
३२—कोठारी टेक्सटाइल्स लि०, सिंगनाल्लूर कोयम्बटूर।	मेसर्स कोठारी एण्ड सन्स ओरियण्टल बिल्डिंग, आर्मेनियन स्ट्रीट मद्रास।	२८६४४	२००	२०१८

१	२	३	४	५
३३–कुलापुरम स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० (पूर्वनाम-कुलापुरम वीविंग इस्टैब्लिसमेंट) पोस्ट आफिस मण्डूर ह्वाया पयंगडी) उत्तर मलावार।	मेसर्स वेस्ले० सी०अरोन आफिस मिलमें ही है।		७२	
३४–कुमारन मिल्स लि०–पुद्दूप्पलायम, ईदीगराई पोस्ट कोयम्बटूर ।	मेसर्स एन० अप्पूस्वामी नायडू एण्ड को० पीलमेडू, कोयम्बटूर।	११६०४		५८६
३५–लक्ष्मी मिल्स को० लि० नं० १ मिल पप्पानाइकेन पलायम,अवनाशी रोड,कोयम्बटूर।	मेसर्स जी० कुप्पूस्वामी नायडू एण्ड को० आफिस मिलमें हो है।	५१०४०	२००	५६०७
३६–लक्ष्मी मिल्स को० लि० मिल नं० २ कोइल पट्टी।	,, ,,	२५६२०		४६४०
३७–लोटस मिल्स लि०, सुन्दरापुरम, पोडानूर।	लोट्स एजेन्सी लि०, आफिस मिलमें है।	१८०४०		२२६९
३८–लोयल टेक्सटाइल मिल्स लि०–पूर्वनाम-लोयल मि० लि० कोविलपट्टी, टीनेवेली जिला।	मेसर्स सदर्न एजेन्सीज लि०, २।२१ फर्स्टलाइन, बीच, मद्रास।	२४२४२	२२४	४६०३
३९–मद्रास स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि०, (पूर्वनाम मद्रास यूनाइटेड स्पिनिंग वीविंग मिल्स) मद्रास।	मेसर्स खानदेश स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स को० लि० खम्भारा विल्डिंग। ४२ किन्स रोड, फोर्ट बम्बई।	४०१६४	७७४	
४०–मदुरा मिल्स को० लि०, (पुराना तथा नया) मदुरा।	मेसर्स ए० एण्ड० एफ० हार्वे लि० मथुराई।	२३२५१२		४२०६०
४१–मदुरा मिल्स को० लि०, तूतीकोरिन (पूर्वनाम कोरल मिल्स को० लि०) तूतीकोरिन।	,, ,,	६०३८०		१८४६८
४२–मदुरा मिल्स को० लि०, अम्बासमुद्रम (पूर्वनाम टीनेवेली मिल्स को० लि०) अम्बासमुद्रम।	,, ,,	१४०७३६		३१६८७
४३–मदुरा मिल्स को० लि०, (पण्डेन मिल्स) मदुरा पूर्व।	,, ,,	३३३०४		७४६७

१	२	३	४	५
४४—महालक्ष्मी टेक्सटाइल मिल्स लि० मथुराई।	मेसर्स यस० यस० यन० लक्ष्मण चेट्टियर एण्ड को०, पसुमालाई पोस्ट आफिस मथुराई।	२२२१२		३३२०
४५—मलाबार स्पिनिंग एण्ड वीविंग को० लि० कल्लाई, मालाबार।	मेसर्स ए० आई० ए० आर० सोमनाथान चेट्टियर, श्रीमती यस० सिथाई आची एण्ड ए० के० टी० के० यम० नारायण, नाम्बूद्रीपद, कल्लाई।	२२,६२		२३५१
४६—मेच्चूर इण्डस्ट्रीज लि०, मेच्चूर डैम।	मेसर्स डब्लू० ए० बियर्डसेल एण्ड को० लि०, पोस्ट बाक्स नं० ७ मद्रास।	२४७२०	६०३	४५६०
४७—पलानी अण्डावर मिल्स लि०,धाली रोड,उदामाल पेट।	मेसर्स भाग्यलक्ष्मी एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	२५२००		३८७६
४८—पलार मिल्स लि०, वलाजाबाद, चिंगलेपुर जिला।	मेसर्स इण्डस्ट्रियल ऐजेन्सीज एण्ड मैनेजमेण्ट लि० ८ सेकण्ड लाइन, बीच, मद्रास।	१३६६०		५०७
४९—पङ्कज मिल्स लि०, पुलियाकुलम, कोयम्बटूर।	मेसर्स सी० यस० रत्न सबपथी मुदालिअर एण्ड सन्स, P. B. No १५० कोयम्बटूर।	२७६८०		३६२८
५०—पोलाची भाग्यलक्ष्मी मिल्स लि०, पोलाची (S. Rly) कोयम्बटूर जिला।	श्रीयुत यस० आर० यम रामास्वामी चेट्टिअर, यस० आर० यम० एथप्पा चेट्टिअर ४० बाल गोपालापुरम, पोलाची।	८४२४		८१०
५१—प्रीमियर मिल्स (C. B. E.) लि०, पुलंकिनार पोस्ट आफिस उदमालपेट।	मेसर्स के० नारायण स्वामी नायडू एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	१७२८०		२७५६
५२—पद्दूकोटा टेक्सटाइल्स लि० नमनसमुद्रम (S. Rly.)	मेसर्स यमसेटा एण्ड सन्स (पद्दूकोटा) लि०, पूर्वमेन स्ट्रीट पद्दूकोटाई।	१२०६०	१२६	१४२६
५३—पुलीकार मि० लि०, तिरुचेनगोदे, सालेम जिला।	मेसर्स वी० वी० सी० आर० वियापुरी मुदालिअर एण्ड सन्स तिरुचेनगोदे।	१२६००		१५३६

१	२	३	४	५
५४—राधाकृष्ण मि० लि०, पीलामेडू, कोयम्बटूर।	मेसर्स ए० जी० गुरुस्वामी नायडू एण्ड को० आफिस मिल में है।	३८८६४	३०१	५०७४
५५—राजा मि० मथुराई।	श्रीयुत यम० ह्वी० पी० काना-गह्वेल नादर आफिस मिल में ही है।	८०८०		११७३
५६—राजपालायम मिल्स लि० समू सिंगापुरम रोड राजपाला-यम, रामनद जिला।	मेसर्स राम को ऐजेन्सीज लि० पोस्ट बाक्स नं० १ राजपला-यम।	१८०२०		२३८६
५७—राजलक्ष्मी मिल्स लि०, तिरुची रोड, सिंगानाल्लूर पोस्ट आफिस कोयम्बटूर।	मेसर्स बी० रंगास्वामी नायडू एण्ड सन्स, आफिस मिलमें ही है।	२५८६६		२७६६
५८—राजेश्वरी मि० लि०, रेलवे स्टेशन रोड गुडियाट्टम	मेसर्स गुडियट्टम टेक्सटाइल्स लि०, आफिस मिलमें ही है।	८४००	१२	१०४४
५९—रयलासीमा मि० लि०, थुंगभद्रा रोड अडोनी P. O. वेलारी जिला।	मेसर्स रयलासीमा डेवलमेंट को०, आफिस मिल में ही है।	१२०००		३६५१
६०—शंकर मि०, चद्रम, पुद्दूकुलम, तिरुनेलवेली तिन्नी-वेली जिला।	मेसर्स यस० यस० पिल्लाई एण्ड सन्स मदा स्ट्रीट, तिरुनेल वेली टाउन।		१०१	
६१—सरोज मि० लि०, सिंग-नाल्लूर, कोयम्बटूर।	मेसर्स थियगराज चेट्टी एण्ड संस लि० आफिस मिलमें ही है।	१४२५६		१६५४
६२—श्री वेंकटेश मिल्स लि०, पिलानी रोड उदमाल पेट, जि० कोयम्बटूर।	मेसर्स जी० ह्वी० गोबिंद स्वामी नायडू एण्ड को० आफिस मिल में ही है।	३८६६०	२६८	३४४०
६३—शिवानन्द मिल्स लि० श्रवणमपट्टी P.O. कोटाम्बटूर	मेसर्स यस० आर० पी० पुन्नू स्वामी चेट्टी एण्ड सन्स आफिस मिलमें ही है।	६२७२		१७७
६४—सोमसुन्दरम् मिल्स लि० (पूर्वनाम कोयम्बटूर माल मिल्स) २७० मिल रोड, कोय-म्बटूर।	श्रीयुत यस० लक्ष्मणन चेट्टियर P. Box No. १३४ कोय-म्बटूर।	२४१४०	३८२	२२३३
६५—सौदर्य्य राज मिल्स लि० पावर हाउस रोड, डिंडिगुल	मेसर्स लक्ष्मिनन्ना एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१३६००		१२२७

१	२	३	४	५
६६ – श्री मीनाक्षी मिल्स लि०, थिरुप्पारंकुन्द्रम रोड मथुराई।	मेसर्स थियागराज चेट्टी एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	३६४४४	१४४	१०८५५
६७—श्री राजेन्द्र मिल्स लि० (पूर्वनाम सालेम राजेन्द्र मि० लि०) गान्धीनगर, सलेम।	मेसर्स थियागराज चेट्टी एण्ड को०, लि० मीनाक्षी निलयम, तिरुप्पारंकुन्द्रम रोड मथुराई।	१७२००		२६१६
६८—श्री शुंमुगर मिल्स लि०, राजापलायम,रामानन्द जिला।	मेसर्स श्री अलगाई लि० आफिस मिल में ही है।	५४२४		१०६२
६६—श्री सूर्यनारायण स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स पण्डलापाका, पूर्व गोदावरी जिला।	श्रीयुत बाँका रमन्ना आफिस मिलमें ही है।	५५८४		५५१
७०—श्री गनपथी मिल्स को० लि०, चत्रम पुद्कुलम, तिरुनेलवेली।	मेसर्स यस० यस० पिल्लाई एण्ड सन्स लि०, ३६ पूर्व कार स्ट्रीट, तिरुनेलवेली।	६४००		१४७८
७१—श्री बालासुब्रह्मण्या मिल्स लि० सिंगनालूर, कोयम्बटूर।	के० कृष्ण स्वामी नायडू एण्ड ब्रदर्स—आफिस मिलमें ही है।	१७६६६		६५२
७२—श्री कन्नापिरन मिल्स लि० सोवरीपलायम कोयम्बटूर।	मेसर्स के० वेंकट स्वामी नायडू एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१२७७२		६१६
७३ - श्री कार्तिकेय स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० उप्पीली पलायम, सिंगनाल्लूर।	श्रीयुत जी० रामास्वामी नायडू, आफिस मिल में ही है।	१०६१२		७६०
७४—श्री कोथन्द्रम मिल्स (वीविंग) वेंकट पट्टी आयंगार स्ट्रीट, रामनन्द रोड, पहलीपट्टी, मथुराई।	मेसर्स यस० यस० रामुदू अय्यर एण्ड ब्रदर्स, २७२ रामनद रोड, मथुराई।		८२	
७५—श्री कोथन्द्रम मिल्स (स्पिनिंग) रामनन्द रोड महली पट्टी, मथुराई।	,, ,,	४०००		७१६
७६—श्री नरेशन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० १४७-४८ पेरुन्दुराई रोड, P. O. Box ६ इरोद।	मेसर्स शिवराज इण्डस्ट्रीज लि० आफिस मिलमें ही है।	१४८८		७५

१	२	३	४	५
७७—श्री पलमलाई रंगनाथन मि० लि०, पेरियानाइकेन पलायम, P. O. कोयम्बटूर जिला।	श्री आर० रामकृष्ण नायडू आफिस मिल में ही है।	८५००		४८६
७८—श्री महागनपती स्पिनिंग मि० लि०, (पूर्वनाम दाउद मि० लि०) त्रिची रोड, पुदूकोटाई।	श्रीयुत जी० ह्वी० मुथूस्वामी नायडू ४ रेडफिल्स,कोयम्बटूर।	५३३२		२३०
७९—श्री रामचन्द्र स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि० पण्डलापाका, पूर्व गोदावरी जिला।	सर्व श्री डी० सुब्बीरेडी, के० भमीरेड्डी, तथा यू० चेल्लामा आफिस मिलमें ही है।	७०४४		११७७
८०-श्री रामकृष्ण मिल्स (कोयम्बटूर) लि०, गनपथी रोड, कोयम्बटूर।	मेसर्स यस० यन० रंगस्वामी नायडू एण्ड सन्स सीथापुथुर, कोयम्बटूर।	६१६०		४३२
८१—श्री रामलिंग चूडाम्बिकाई मिल्स लि० ऊथूकुली रोड, तीरुपुर।	मेसर्स यस० कुल्ली चेट्टिअर एण्ड ब्रदर्स ६० १० उथ्थूकुली रोड, तीरुपुर।	१८३२४		१४८८
८२—श्री शारदा मिल्स लि०, लोगनाथापुरम पोदानूर, कोयम्बटूर।	मेसर्स ह्वी० एस० सेन गोदैय्या एण्ड ब्रदर्स, बक्थी विलास, जेल रोड, कोयम्बटूर।	२०४७२	२००	१६८१
८३—श्री रंगविलास जिनिंग, स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० पीलामेडू, कोयम्बटूर।	मेसर्स पी० एस० गोविन्दस्वामी नायडू एण्ड सन्स आफिस मिल में ही है।	२६०९६	८८	२७८७
८४—श्री सत्यनारायण स्पिनिंग मिल्स, राजमुन्द्री गोदावरी जिला।	राव साहित वल्लभनेनी वपय्या चौदरी राजमुन्द्री।	५५०४		४७४
८५—थाईकेसर अलाई–(श्री मीनाक्षी मिल्स लि० मथुराई की शाखा) कोयलपट्टी रोड, मानापराई P. O.	मेसर्स श्री मीनाक्षी मिल्स लि०, P. B. N0 1 मथुराई।	२१६००		३१५२
८६—थीरुमागल मिल्स लि०, कतपदी रोड गुडीयाट्टम उत्तर आरकट।	मेसर्स थीरुमल एण्ड को० लि० आफिस मिलमें ही है।	१५४००		१३५८

१	२	३	४	५
८७—त्रिमूर्ति मिल्स लि० बोडीपट्टी, उदमालपेट कोयम्बटूर जिला।	श्रीयुत जी० रामास्वामी नायडू आफिस मिलमें ही है।	१०८००		१८४३
८८—त्रिचनापल्ली मिल्स लि०, रामजीनगर, मनाप्पराई रोड, त्रिचनापल्ली।	मेसर्स मूलजी रामजी एण्ड सन्स रामजीनगर त्रिचनापल्ली।	१६०००		११२३
८९—तूतीकोरिन स्पिनिंग मिल्स लि०, पलायम कोट्टाई रोड, तूतीकोरिन।	श्रीयुत ए० एम० एम० सिन्नामनी आफिस मिलमें ही है।	६०००		८७५
९०—वसन्त मिल्स लि० सिंगनाल्लूर, कोयम्बटूर।	मेसर्स आर० के० सम्मुखम चेट्टी एण्ड ब्रदर्स, रेस कोर्स, कोयम्बटूर।	३३७०४	२१०	४५४६
९१—विजय कुमार मिल्स लि० कल्यामपुथुर, पालनी (S. Rly)	मेसर्स आर० गुरुस्वामी नायडू एण्ड को० आफिस मिलमें ही है।	१६०३२		१८४५
९२—विजय लक्ष्मी मिल्स लि०, (पूर्वनाम वैश्य मिल्स लि०), कुनियामुथुर गाँव, कोयम्बटूर।	मेसर्स गुप्ता एण्ड को० लि० पोस्ट बाक्स नं० ११ कोयम्बटूर।	१६३१२		२३२६
९३—विरुधूनगर टेक्सटाइल्स मिल्स लि०, सुलकराई, विरुधूनगर के समीप, रामनाथापुरम जिला।	मेसर्स सदर्न एजेन्सीज लि० २।२१ फर्स्ट लेन, बीच मद्रास।		१९९	
	कुल जोड़	२०३४८६४	६१९५	३०५७२३

ट्रावनकोर तथा कोचीन प्रदेश स्थित सूती मिलें

१—ए० डी० काटन मिल्स लि०, क्विलोन।	मेसर्स गिरधरलाल अमृतलाल एण्ड को०, आफिस मिलमें ही है।	१२१९६	३००	१७१८
२—अलगप्पा टेक्सटाइल्स (कोचीन) लि०, पूर्वनाम अलगप्पा टेक्सटाइल्स अलगप्पा नगर, (कोचीन राज्य)।	मेसर्स रमल एण्ड को० लि० "कृष्णा विलास" ६७ लाडर्स गेट, रोड, वेपेरी, मद्रास ७	५००००		४१३६
३—अलगप्पा टेक्सटाइल्स (कोचीन) लि०, पूर्वनाम कोचीन टेक्सटाइल्स, अलगप्पा नगर (कोचीन राज्य)।	" "			

१	२	३	४	५
४--अशोक टेक्सटाइल्स लि० ईरुमथलाई, अलवटो।	डायरेक्टरों का एक बोर्ड पोस्ट बाक्स नं० १७ अलवटो।	१३३६६		३६०५
५--बालाराम वर्मा टेक्सटाइल्स लि०, शेलकोट्टइ।	मेसर्स कार्यालदार एण्ड रंग स्वामी नायडू सन्स को०, आफिस मिलमें है।	११६०४		१७२६
६--कोचीन महालक्ष्मी काटन मिल्स लि०, मुलाकुन्ना थूकाड्डू त्रिचूरके समीप (कोचीन राज्य)।	मेसर्स कोचीन ऐजेन्सीज एण्ड इण्डस्ट्रीज लि०, आफिस मिल में ही है।	५०००		४०६
७--कथाई काटन मिल्स लि० (पूर्वनाम अलवये टेक्सटाइल्स लि०) पेरमपड्डूर रोड, अलवये।	श्रीयुत श्री ह्वी० एस० सुब्रह्मन्य अय्यर, आफिस मिल में ही है।	४८९६		११२
८--सीताराम स्पिनिंग एण्ड वीविंग मि० लि०, पुष्पगिरि, त्रिचूर, कोचीन राज्य।	जेनरल मैनेजर श्रीयुत ए० कुंजू कृष्णापिल्लाई, आफिस मिलमें ही है।	१८४१६	४१३	३०६८
९--वनज टेक्सटाइल्स लि०, विलवत्तम गाँव, रामवर्मापुरम, P. O. त्रिचूर।	मेसर्स मयूरा को० लि०, उमालयम, कुरुप्पम रोड, त्रिचूर।	८४००		६४५
१०--विजयमोहिनी मिल्स लि०, थीरुमला, पूजापुरा ट्रिवैण्ड्रम।	मेसर्स बिनसुरम एण्ड को० लि० आफिस मिलमें ही है।	६३६०		१६०६
	कुल जोड़	१३३५६८	७१६	१७३२८

मैसूर राज्य स्थित सूती मिलें

१--बैंगलोर उलन, काटन एंड सिल्क मिल्स को० अग्रारम रोड, बैंगलोर सिटी।	मेसर्स बिन्नी एण्ड को०(मद्रास) लि०, ७ अर्मेनियन स्ट्रीट, मद्रास।	४००६८	१०८५	१०६४०
२--दवाँगिरे काटन मि० लि०, दवाँगिरे।	मेसर्स आर० हनुमनथप्पा एंड सन्स, हनुमनथप्पा बिल्डिंग, चित्तलद्रुग रोड, दवाँगेरे।	२१७२८		४४८५
३--कपिल टेक्सटाइल्स मिल्स लि०, ननजनगुंड टाउन।	मेसर्स सी० पी० एण्ड को० गांधी स्क्वायर मैसूर।	१५१८४		१४०

१	२	३	४	५
४ मिनर्वा मिल्स लि०, मगदी रोड, बैंगलोर सिटी।	मेसर्स यन० सिरुर एण्ड को० लि० टेम्पल बार-बिल्डिंग, ७० फार्वेस स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।	३६४१६	७०४	६४६२
५—मैसूर स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग को० लि० वेंकट रंगाय्यंगर रोड, मल्लेश्वरम, वैंगलोर सिटी।	,, ,, ,,	४६४६८	५००	११६६४
६—श्री गनेशर टेक्सटाइल मिल्स लि०, दवँगेरे।	मेसर्स जी महादेवप्पा एण्ड सन्स आफिस मिल में ही है।	१७२६६		३३४३
७—श्री कृष्णराजेन्द्र मि० लि० बैंगलोर रोड, मैसूर।	श्रीयुत एच० एन० पालेंगर, चेयरमैन, आफिस मिलमें ही है।	२६२००	२६२	५७४०
८—श्री कृष्णा स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, सुब्रामन्यापुरा बैंगलोर दक्षिण।	मेसर्स यादलम सुब्बियर सेट्टी एण्ड सन्स P. B. २४ बैंगलोर सिटी।		१८०	
९—श्री शंकर टेक्सटाइल मि० लि०, हरिहर रोड दवेंगेरे।	मेसर्स मुरुघ राजेन्द्र एण्ड कम्पनी पोस्ट बाक्स नं० २, दवेंगेरे।	१७८००	१०	२५५७
१०—श्री सूर्योदय मिल्स-पूर्व नाम बैंगलोर स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल यशवन्तुर, बैंगलोर सिटी।	श्रीयुत आर० रामा सेट्टी आफिस मिल में है।		१०५	
११—टी० आर० मिल्स, चाम राजपेट, बैंगलोर सिटी।	श्रीयुत डी० आर० माधव कृष्णेया आफिस मिलमें ही है।		२०८	
	कुल जोड़	२२३१६०	३०८४	४७८६१

पाण्डीचेरी प्रदेश स्थित सूती मिलें

१- ऐंग्लो फ्रेंच टेक्सटाइल को० लि० (रेडियर मिल) पाण्डीचेरी।	मेसर्स वेस्ट एण्ड को० (पाण्डीचेरी) लि०, आफिस मिलमें ही है।	४४२५६	१०००	६२२८

१	२	३	४	५
२—'सावन" सोसाइटे अनोनिमे डी फिलेचर एट टिस्सेज मैकैनिक, सावन (इण्डे-फ्रेंकाइज) पाण्डीचेरी।	श्रीयुत मार्सेल ह्लैलोट आफिस मिल में ही है।	२३०००	६७१	२३५६
३—श्री भारती मिल्स S. A. (पूर्वनाम स्टैब्लिशमेन्ट टेक्सटाइल डिमोडेलिअर पेट S. A) मोडेलिअर पेट पाण्डीचेरी।	मेसर्स स्टैब्लिशमेन्ट टेक्सटाइल डि मोडेलि अरपेठ P. O. Box No. 10 पाण्डीचेरी।	१४५५६	३१७	२६२
	कुल जोड़	८१८१२	१६६२	८८७६
सर्वतन्त्र स्वतन्त्र गणतन्त्र भारतकी समस्त सूती मिलोंका	महान जोड़	११४८१६७३ २३६१६६	२०७२५०	२२५६३५१

गणतन्त्र भारतके अन्तर्गत जिन नवीन सूती मिलोंका निर्माण कार्य सन् १६५३ ई० से आरम्भ हो चुका है उनका संक्षिप्त विवरण

राजस्थान—१—श्री भवानी आनन्द काटन मिल्स लि०, भवानी मण्डी राजस्थान।

मध्यप्रदेश—१—नर्मदा काटन मिल्स लि०, जबलपुर।

मध्यभारत—१—पद्मावती राजे काटन मिल्स लि०, बिड़ला ग्राम, नागदा जिला उज्जैन।

पश्चिम बंगाल—१—आदर्श काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० नं० २ सूर्यनगर आसनसोल, पोस्ट आफिस बीरनपुर।

२—बंगाल टेक्सटाइल्स मिल्स लि० कलकत्ता।

३—विजय काटन मिल्स लि०, कलकत्ता।

४—धालेश्वरी टेक्सटाइल्स लि०, आसनसोलके पास पश्चिम बंगाल।

५—डी० एन० चौधरी काटन मिल्स लि० हट खोला।

६—ईस्टर्न काटन मिल्स लि०, त्रिपुरा।

७—इमिर्ल्ड काटन मिल्स लि० शामनगर (B. A. Rly) २४ परगना।

मद्रास राज्य—१—मद्रास को-आपरेटिव स्पि- निंग मिल्स लि० तिम्मनचेर्ला पो० आ०, अनन्तपुर जिला।

२—मधुरा श्रीनिवास मिल्स लि० तीरुप्परन कुन्द्रम रोड, पसूमलाई पोस्ट।

३—मुरुगन टेक्सटाइल्स लि० (पूर्व नाम मूरुगनान्द मिल्स लि०) पेटाई, टिनेवेली टाउन।

४—रामलिंग मिल्स लि०, मेला चावल, तिरुनेलवेली जिला।

५—श्री पद्म मिल्स कलपट्टी।

६—वर्धराज टेक्सटाइल्स लि०।

मैसूर राज्य—१—तुंगभद्रा टेक्सटाइल्स लि०, हरिहर, मैसूर राज्य।

भारतका औद्योगिक-विकास

Industrial Development of India



भारतमें शक्कर-उद्योगका विकास



Development of Sugar Industries in India



भारतवर्षका शक्कर-उद्योग

शक्करका उद्योग भारतवर्षका एक महान् उद्योग है। समस्त संसारमें भारतवर्ष ही एक ऐसा देश है जहाँपर सबसे अधिक भूमिमें गन्नेकी पैदावार की जाती है। करीब ४० लाख एकड़ भूमि गन्नेकी फसलके लिए काममें ली जाती है। भारतवर्षमें कपड़ेके उद्योग के बाद शक्करका उद्योग ही सबसे बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारतकी शक्कर, गुड़ तथा खाँड़सारीका कुल उत्पादन समस्त विश्वके उत्पादनका पाचवाँ हिस्सा होता है जिसकी कीमत लगभग तीन सौ करोड़ रुपये होती है। गन्नेकी पैदावार करोड़ों स्त्री-पुरुषोंको रोजगार व आमदनी देती है। गुड़ और खाँड़सारीका उत्पादन जनताके लिए एक बहुत ही बहुमूल्य गृह-उद्योग है।

इस देशमें शक्करके कारखानोंकी कुल संख्या १५८ है जो कि दानेदार शक्करका उत्पादन करती है। उन कारखानोंकी गन्ना पेरनेकी शक्ति १ लाख ३७ हजार टन प्रतिदिन है। २ करोड़ आदमी इस उद्योगमें कामपर लगे हुए हैं। १ लाख ४० हजार दक्ष कर्मचारी और ३५०० युनिवर्सीटियोंके ग्रेजुएट इस उद्योगमें काम कर रहे हैं। पिछले २० वर्षोमें इस उद्योग ने उत्पादन शुल्कके रूपमें केन्द्रीय सरकारको १२२ करोड़ रुपये और गन्नेके उपकरके रूपमें ५२ करोड़ रुपये दिये हैं।

वर्त्तमान स्थितिमें भारत संसारमें चीनीके उत्पादन करनेवाले मुख्य देशोंमेंसे एक है। संसार में जितनी चीनी का उत्पादन होता है उसका २६% हिस्सा भारतमें होता है और क्यूबाके बाद यह समस्त विश्वका सबसे बड़ा चीनी बनानेवाला देश है।

प्रथम पंचवर्षीय योजनामें गणतन्त्र भारतकी सरकारने देशमें १५ लाख टन चीनी उत्पादन करनेका लक्ष्य रक्खा था मगर योजनाके ५ वें वर्षमें अर्थात् सन् १९५४-५५ में हमारे देशकी चीनीका उत्पादन उस लक्ष्यसे भी आगे बढ़कर १५ लाख ९० हजार टनपर पहुँच गया। अब अगली पंचवर्षीय योजनामें २२.५ लाख टन चीनी उत्पादन करनेका लक्ष्य रक्खा गया है। चीनी-उद्योगकी प्रगति इस बातका संकेत कर रही है कि हमारा वह लक्ष्य भी पूरा होगा।

भारतवर्षमें शक्कर उद्योगका विकास

प्रथम सोपान

पूर्व इतिहास*

भारतवर्षमें गन्ना और गन्नेसे बनी हुई वस्तुओंका उपयोग सुदूरवर्त्ती अतीत अर्थात् वैदिक युगसे ही होता रहा है। संसारके इतिहासमें गन्नेका सर्वप्रथम उल्लेख अथर्ववेदमें मिलता है जिसका रचना काल ईसासे करीब पांच हजार वर्ष पूर्व माना जाता है। ईसाके पूर्व लिखे हुए अन्य दूसरे ग्रन्थोंमें भी खेती बाड़ीकी चीजोंमें गन्नेका उल्लेख मिलता है। उस युगमें गन्नेकी अनेक किस्मोंका उत्पादन होता था। आयुर्वेदके चरक सुश्रुत इत्यादि प्राचीन ग्रन्थोंमें भी कई प्रकारकी ईख और ईखसे बननेवाले पदार्थ गुड़, राब इत्यादिके गुण दोषोंका विस्तारपूर्वक उल्लेख मिलता है इसी प्रकार सुश्रुत् सहितामें शुद्ध शक्करका उल्लेख भी पाया जाता है। इससे पता चलता है कि आजसे करीब सात हजार वर्ष पहले तक इस देशके लोग गन्नेके व्यवहार और उसके गुणोंसे परिचित थे जबकि संसारके दूसरे देश शहदके सिवा किसी अन्य मीठे पदार्थके अस्तित्वसे भी परिचित न थे।

शक्करका उल्लेख सबसे पहले बौद्ध आचारके ग्रन्थ "प्रति मोक्ष" में मिलता है जिसका रचना काल ईसासे पांच सौ वर्ष पहलेका माना जाता है। उस युगमें भी शक्कर गृहस्थोंके घरमें नित्य प्रति व्यवहारमें आनेवाली वस्तु थी। कौटिल्यके अर्थशास्त्रमें भी शक्करका कई स्थानोंपर उल्लेख पाया जाता है। ईसाके तीन सौ वर्ष पूर्व इस देशकी यात्रा करनेवाले सुप्रसिद्ध यात्री मेगास्थनीजके यात्रा विवरणमें भी गन्ना और शक्करका उल्लेख मिलता है। इन सभी बातोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतमें ईसा युगके पूर्व गन्ने और शक्करका उत्पादन होता था और यहांकी व्यापारिक वस्तुओं में शक्करका स्थान था। ईसासे चार सौ वर्ष पूर्वसे लगाकर ईसाकी तेरहवीं शताब्दी तक चीन, मिश्र और भारतके बीच गन्ना और गन्नेसे बननेवाली चीजोंकी जानकारीका आदान-प्रदान होता था। सन् ६२७ से ६५० के बीच ताइतुंग सम्राट्ने मगधमें अपना आदमी भेजकर शक्कर बनानेकी विधि जानना चाही थी।

* कृषि मंत्रालयके चीनी निर्देशक श्री के० पी० जैनके एक लेखके आधार पर।

मध्ययुग—

मध्ययुगके अन्दर भारतवर्षमें चीनी उद्योग बहुत उन्नति पर था और यहाँसे बाहर भी चीनी भेजी जाती थी। सन् १२६० में मार्कोपोलोने अपने यात्रा विवरणमें इसका उल्लेख किया है। सन् १४६८ में जब वास्कोडिगामा इस देशमें आया तो उसने यहाँके बाजारोंमें ढेरके ढेर चीनीके देखे थे। इटालियन यात्री लोदोविक डी वर्थनाने अरबके विवितमें भारतीय चीनीको प्रचुर मात्रामें देखा था।

अबुल फजलकी आईने-अकबरीमें भी गन्नेकी खेती, विभिन्न प्रकारकी चीनी तथा गन्नेसे तैयार किये गये आसवका उल्लेख पाया जाता है।

ईस्ट इण्डिया कम्पनीके जमानेमें सत्रहवीं सदीमें इंग्लैण्डको भारतवर्षसे चीनी भेजी जाती थी। इस बातके प्रमाण इतिहासके अन्दर पाये जाते हैं। सन् १८३६ से सन् १८४७ तक प्रतिवर्ष साठ हजार टन चीनी इंग्लैण्डको भारतवर्षसे भेजी जाती थी इस बातका पता हाफस ऑफ कामन्सकी रिपोर्टसे लगता है। मगर सन् १८५१ में इंग्लैण्डने कानून बनाकर भारतीय शक्करको दी हुई सुविधाएँ रद्द कर दीं। जिससे भारतवर्षके चीनीके गृह-उद्योगको बहुत धक्का लगा।

उन दिनों भारतवर्षमें चीनीका उद्योग गृह उद्योगके रूपमें होता था। बनारस, बलिया इत्यादि चीनी उत्पादनके मुख्य केन्द्र थे। यहांकी बनी हुई चीनी एकदम सफेद, साफ और मीठी होती थी।

मगर जब जावा, मारीशस इत्यादि द्वीपोंमें आधुनिक ढङ्गकी मशीनरीके कारखाने चीनीका उत्पादन करने लगे और वहांकी चीनी यहाँ आकर सस्ते दामोंमें बिकने लगी तब यहाँके शक्करके गृह उद्योगको बहुत धक्का लगा। फिरभी यहाँके लोगोंमें धार्मिक भावना प्रधान होनेसे और जावाकी चीनीमें अपवित्रताका सन्देह होनेसे इस देशमें चीनीका गृह उद्योग चलता रहा।

चीनीके मिल उद्योगका प्रारम्भ

आधुनिक ढङ्गके यन्त्र सज्जित कारखानोंके द्वारा चीनी उद्योगके प्रारम्भ होनेका प्रमाण यहाँ सन् १८७५ से पाया जाता है। जबकि भारतवर्षमें ब्यू एण्ड कम्पनी लि० की रजिस्ट्री हुई जिसकी मैनेजिंग एजेण्ट लॉयल मार्शल एण्ड को० नामक विलायती कम्पनी थी। इस कम्पनीकी एक सूगर फैक्टरी शाहजहाँपुरके रोजा नामक स्थानपर खोली गई। इस फैक्टरीकी क्रशिंग केपेसिटी अर्थात् गन्ना पेरनेकी शक्ति ६५० टन प्रतिदिन थी। इसी कम्पनीने एक और चीनी मिल बंगालके अन्दर दरसाना नामक स्थानपर लगाया जिसकी क्रशिंग केपेसिटी १००० टन प्रतिदिन थी। इस मिलके पास दस हजार एकड़ अपनी निजकी भूमि थी जिसमें गन्नेकी खेती होती थी।

सन् १८६४ में कानपूर शूगर वर्क्स लि० नामक कम्पनीकी स्थापना हुई जिसकी मैनेजिंग एजेण्ट वेग सदरलैण्ड एण्ड कम्पनी थी इसकी एक फैक्टरी मरहोवरा जिला सारन बिहारमें खोली गई, जिसकी क्रशिंग केपेसिटी ६५० टन प्रति दिन थी। इसी कम्पनीकी एक दूसरी फैक्टरी गौरी बाजार जिला गोरखपुरमें खोली गई। जिसकी गन्ना पेरनेकी शक्ति ७०० टन प्रतिदिन थी।

सन् १८६७ में दक्षिणी भारतके अन्तर्गत डेकन सूगर एण्ड आबकारी कम्पनी लि० की स्थापना हुई। इसकी मैनेजिंग एजेण्ट्स "पेरी एण्ड कम्पनी लि०" मद्रास थी। इस कम्पनीकी एक सूगर मिल गोदावरी जिलेमें समल कोट नामक स्थान पर और एक सूगर मिल त्रिचनापल्ली जिलेके पुगालुर नामक स्थान पर खोली गई।

इसी वर्ष अर्थात् सन् १८६७ में दक्षिणी भारतमें ईस्ट इण्डिया डिस्टीलरीज एण्ड सूगर फैक्टरी नामक कम्पनीकी स्थापना हुई। इस कम्पनीकी रजिस्ट्री इंग्लैण्डमें हुई। भारतके लिए इसकी मैनेजिंग एजेण्ट् पेरी एण्ड कम्पनी लि० हुई। इस कम्पनीकी एक मिल नेलीकुप्पम मद्रासमें खोली गई जिसकी गन्ना पेरनेकी शक्ति २००० टन प्रतिदिन थी।

उपरोक्त विवेचनसे पता चलता है कि उन्नीसवीं सदीके अन्त और बीसवीं सदीके प्रथम दशक तक भारतवर्षमें जो दस पांच चीनीकी मिलें थीं उन सब पर विदेशी कम्पनियोंका अधिकार था।

चीनी उद्योगमें भारतीय उद्योग पतियोंका प्रवेश

ऐसा मालूम होता है कि भारतीय उद्योग पतियोंमें चीनी उद्योगकी तरफ सबसे पहले कानपूरके सेठ बैजनाथ बालमुकुन्द सिंहानियाका ध्यान आकर्षित हुआ। जिन्होंने गुटैया सूगर मिलके नामसे चीनी मिलकी स्थापना की।

सन् १६१४ में जब पहला महा युद्ध छिड़ा तब तक देशमें और कई कारखाने स्थापित हो चुके थे। परन्तु देशी गन्नेमें प्रति एकड़ केव १'०७ टन चीनीका उत्पादन होनेसे और जावाके चीनी उद्योगसे प्रतिस्पर्द्धा चलनेके कारण इस देशमें चीनी उद्योगका पूरा विकास न हो सका। जहाँ पहले भारतसे चीनीका निर्यात किया जाता था वहाँ अब बड़े परिमाणमें विदेशोंसे चीनीका आयात होने लगा। सन् १६१२ के आसपासके पांच वर्षोंमें प्रतिवर्ष औसतन ५,६७००० टन चीनी विदेशोंसे भारतमें आती थी।

देशके तत्कालीन नेताओंने चीनीके इस बड़े आयातपर रोक लगाने और देशमें चीनीका उत्पादन बढ़ानेके लिए तथा देशके चीनी उद्योगको विदेशी प्रतिस्पर्द्धाके संकटसे बचानेके लिए केन्द्रीय धारा सभामें आवाज उठाई। जिसके फल स्वरूप सन् १६१२ में केन्द्रीय सरकारने कोयम्बटूरमें गन्ना सम्बन्धी शोध कार्यके लिए एक संस्थाकी स्थापना की। इस संस्थामें गन्नेकी विभिन्न किस्मोंका परीक्षण किया गया और कुछ ही समयमें अधिक परिमाणमें चीनी देनेवाले गन्नेकी किस्मोंका विकास किया गया।

सफेद चीनीका उद्योग

प्रथम महायुद्धके पश्चात् सन् १६१६ में भारत सरकारने देशमें सफेद चीनी उद्योगके विकासकी जांचके लिए भारतीय चीनी समितिकी नियुक्ति की। इस समितिकी रिपोर्टने देशमें गन्ना-चीनी उद्योगके भावी विकासका मार्ग प्रशस्त किया।

संयोगसे इसी समय कोयम्बटूरके गन्नेकी किस्मसे चीनी उत्पादनके उद्योगको उत्तर प्रदेशमें बहुत प्रेरणा मिली और सन् १९२९-३० तक देशमें गन्ना-चीनी उत्पादनके कारखानोंकी संख्या २९ हो गई और चीनीका उत्पादन बढ़कर ९०००० टन हो गया। सन् १९२९ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्ने देशमें आधुनिक किस्मकी सफेद चीनीके उद्योगको स्थापित करनेके विषयमें सरकारके सम्मुख एक प्रस्ताव पेश किया।

इसके फलस्वरूप सन् १९३० में भारत सरकारने चीनी उद्योगको तटकर संरक्षण देनेके प्रश्नकी जांचके लिए चीनी तट कर बोर्डकी स्थापनाकी। बोर्डने संरक्षण देनेकी सिफारिश की। इसके अनुसार विदेशी चीनीके आयातपर सात रुपये चौदह आना प्रति हण्डरवेट संरक्षण टैक्स तथा एक रुपया तेरह आना प्रति हण्डर वेट राजस्व शुल्क लगा दिया गया।

इसके पश्चात् तो शक्करके उद्योगमें सारे भारतवर्षके अन्तर्गत जीवनकी एक लहर सी दौड़ गई और भारतवर्षके समस्त उद्योग पतियोंका ध्यान इस उद्योगकी ओर आकर्षित हुआ। इन उद्योग पतियों में डालमिया एण्ड जैन, कमलापत मोतीलाल, बिड़लाब्रदर्स, मोदी एण्ड कम्पनी, सूरजमल नागरमल, जयपुरिया ब्रदर्स इत्यादि उद्योगपतियोंके नाम उल्लेखनीय हैं। मध्यभारतमें जावरा निवासी मेसर्स कालूराम गोविन्द रामने इस क्षेत्रमें सक्रिय कदम उठाकर जावरा और महिदपुरमें शक्करकी मिलें स्थापित कीं।

इस जागृतिके आनेका परिणाम यह हुआ कि सन् १९२९ में जहां इस देशमें केवल २९ चीनीकी मिलें थीं वहां सन् १९४० में इस देशमें १४० सूगर मिलें धुंवाधार गतिसे शक्करका उत्पादन करने लगी और जहां सन् १९२९-३० में यहां शक्करका उत्पादन १५९,५८० टन था वहां सन् १९४०-४१ में यह उत्पादन बढ़कर १०,४६,८०० टन हो गया। सन् १९३१-३२ में जहां विदेशी शक्करका ५,८६००० टन आयात होता था। वहां सन् १९३९-४० में यह आयात सिर्फ ३०,४२१ टनका रह गया।

सन् १९५५ में गणतन्त्र भारतमें कुल १५९ केन फैक्टरीज और ७ रिफाइनरी फैक्टरीज हैं। सन् १९५४-५५ में गणतंत्र भारतने १५९०००० टन चीनीका उत्पादन करके पिछले चीनीके सारे रिकार्ड-को तोड़ दिया है। इस समय देशमें ४० लाख एकड़ भूमिमें गन्नेकी खेतीकी जाती है और दो करोड़ आदमी इस उद्योगमें लगे हुए हैं। एक लाख चालीस हजार दक्ष कर्मचारी और ३५०० युनिवर्सिटियोंके ग्रेज्यूएट्स इस उद्योगमें काम कर रहे हैं। पिछले बीस वर्षोंमें इस उद्योगने उत्पादन शुल्कके रूपमें केन्द्रीय सरकारको १२२ करोड़ रुपये और गन्नेके उप-करके रूपमें राज्य सरकारोंको ५२ करोड़ रुपये दिये हैं।

चीनी उद्योगकी महत्ताको देखते हुए यहाँकी गणतन्त्र सरकारने अगली पंचवर्षीय योजनामें इस उद्योगका और भी विस्तार किया है। २२·५ लाख टन तक वार्षिक उत्पादन बढ़ानेका लक्ष्य रक्खा गया है। इस उद्योगको प्रेरणा देनेके लिए भारत सरकारने ४० नये कारखाने खोलने और ४२ वर्तमान कारखानोंको बढ़नेकी अनुमति दी है।

शक्कर उद्योगके विस्तृत क्षेत्रको देखते हुए इस उद्योगको प्रेरणा देना उचित ही है। हमारे यहां का उत्पादन सोलह लाख टनका हो जानेपर भी अभी इस देशकी जनताको वर्ष भरमें सिर्फ १० पौण्ड शक्कर ही प्रति नागरिक हिस्सेमें आती है जो दूसरे देशोंमें होनेवाली प्रति नागरिककी खपतसे बहुत कम है। इंग्लैण्ड और अमेरिकामें जहां चीनी की खपत प्रति व्यक्ति ६४ और ८९ पौण्ड है वहां भारतमें एक व्यक्ति के पीछे १० पौण्ड बहुत कम है।

इससे पता चलता है कि जीवनका स्तर जब संतुलनपर आवेगा तब हमारे यहां प्रति नागरिक प्रति वर्ष २० पौण्ड शक्करका खर्च अवश्य ही हो जावेगा। यह स्थिति आनेपर हमारे देशकी खपत बत्तीस लाख टनसे कुछ ऊपर ही हो जावेगी।

यह तो गनीमत है कि हमारे देशमें गुड़ खानेका रिवाज ज्यादा होनेसे बहुतसे आदमी गुड़ खाकर अपना निर्वाह कर लेते हैं। फिर भी शक्करका अभाव बहुत स्पष्ट है जो गत महा युद्धके समयमें बहुत ही विकराल रूपमें हमारे सामने आया था जबकि इस देशके लोगोंने ब्लेक मार्केटसे २॥ रुपया और तीन रुपया सेरकी शक्कर खरीद कर अपनी जरुरतोंको पूरी किया था।

सारी बातोंको देखते हुए भारतके चीनी उद्योगका भविष्य बहुत उज्वल है।



द्वितीय सोपान

भारतका शक्कर-उद्योग

समस्त संसारमें भारतवर्ष ही ऐसा देश है जहांपरकी सबसे अधिक क्षेत्रमें गन्नेकी पैदावारकी जाती है। इसकी पैदावारके लिये लगभग ४० लाख एकड़ भूमि काममें ली जाती है। इस पैदावारका ६० प्र० हिस्सेसे अधिक हिस्सा तो गुड़ तथा खाण्डसारीके उत्पदानके काममें ले लिया जाता है जबकि केवल २५ प्र० हिस्सा दानेदार शक्करके उत्पादनके काममें आता है। भारतकी शक्कर, गुड़ तथा खाण्ड-सारीका कुल उत्पादन समस्त विश्वकी शक्करके उत्पादनका २० वाँ हिस्सा होता है जिसकी कि कीमत लगभग ३०० करोड़ रुपया होती है। गन्नेकी पैदावार लाखों स्त्री पुरुषोंको रोजगार तथा आमदनी देती है जबकि गुड़ तथा खाण्डसारीका उत्पादन ग्रामीण जनताके लिये बहुत ही बहुमूल्य गृह उद्योग है। शक्करके कारखानोंकी कुल संख्या १५६ है जोकि दानेदार शक्करका उत्पादन करते हैं जिनमेंसे इस समय केवल १३५ ही काम कर रहे हैं। तो भी भारतीय शक्करका उद्योग भारतके बड़ेसे बड़े उद्योगोंमें द्वितीय स्थान ग्रहण करता है और केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारोंको बहुत धन करोंके रूपमें देनेके अलावा क़रोड़ों रुपया गन्नेकी पैदावार करनेवाले काश्तकारोंको गन्नेकी कीमतके रूपमें देता है। इस लिये भारतका शक्करका उद्योग देशकी अर्थ-व्यवस्थाके लिये बहुत ही महत्वका है।

गत कितने ही वर्षोंसे शक्करके विषयमें खबरें आती रहीं। गत महायुद्धके समयमें तथा उसके पश्चात् ही कारखानोंमें जो गन्ना दिया जाता था उसकी कीमतोंपर तथा शक्करके उत्पादनपर कठोर नियन्त्रण था और सब प्रान्तोंमें विक्रीपर नियन्त्रण लगा दिया था। नियन्त्रणकी कठोरता तथा शक्करके भावोंकी कमीको निश्चित करनेसे इसके उत्पादनमें भारी कमी आ गई। सन् १९४३-४४ में जबकि १२ लाख टनका उत्पादन था वह लगातार तीन वर्षोंमें गिरकर केवल ९ लाख टन रह गया। इसके पश्चात्के दो वर्षोंमें उत्पादन १० लाख टनसे अधिक हो गया मगर सन् १९४७-५० में गिरकर फिर १० लाख टनसे कम हो गया। इस प्रकारकी कम उत्पादन करनेकी प्रवृत्तिसे घबड़ाकर तथा शक्करकी चोर बाजारीकी शिकायतोंको सुनकर सरकारने सन् १९५०-५१में चुनिन्दा नियन्त्रणकी नीतिको आरम्भ किया जिसके अनुसार कारखानों-को कुछ निश्चित्‌मात्राके अतिरिक्त जो भी अधिक माल हो उसको बाजारोंमें स्वतन्त्र रूपसे वेचनेकी आज्ञा

दी गई। इस नीतिने सात वर्षोंके समयके पश्चात् सर्वप्रथम कारखानोंको ११ लाख टनसे भी अधिक उत्पादन करनेके योग्य बनाया। इस नीतिको प्रारम्भ रखनेके परिणामस्वरूप ही सन् १९५५ में चीनीका १५ लाख ९० हजार टनका स्मरणीय उत्पादन हुआ जिसने सरकारको सब प्रकारके नियन्त्रण हटानेके योग्य बना दिया तथा कारखानोंको निश्चित् मात्राके अतिरिक्त सब माल बेचनेकी स्वतन्त्रा देदी। सन् १९५२ के समाप्त होते होते कारखानोंने इतना उत्पादन किया कि यह भय होने लगा कि आर्थिक समस्याओंको हल करनेके लिये सम्भवतः शक्करका निर्यात करना होगा। मगर बहुत शीघ्र ही परिस्थितियोंमें भारी परिवर्तन हुआ जिससे कि शक्करकी खपत स्वतन्त्र बाजारोंकी हालतमें ११ से १७ लाख टन तक पहुँच गई। इसके परिणाम स्वरूप सन् १९५३ में शक्करका आयात करना पड़ा और वह अभी तक प्रारम्भ ही है।

शक्करके उत्पादनका वृद्धि पूर्ण लक्ष्य

प्रथम पंच-वर्षिय योजनामें शक्करके उत्पादनका लक्ष्य १५ लाख टनका निश्चित किया गया था। यह महसूस किया गया कि इस अधिक उत्पादनको प्राप्त करना तब ही सम्भव हो सकता है जबकि गन्नेकी शक्कर देनेकी शक्तिको बढ़ाई जाय, कार्यके समयकी अवधिको बढ़ाकर एक व्यवस्थित ढंगसे योजित किया जाय जिससे कि जल्दी तथा देरसे पकनेवाले विभिन्न जातिके गन्नोंको उत्पदानके कार्यमें लिया जा सके तथा अनपयुक्त स्थानोंपर स्थित कारखानोंको उपयुक्त स्थानोंपर स्थित किया जाय। नियंत्रण हटानेके पश्चात् शक्कर की खपतकी प्रवृत्तिने किसी प्रकार शक्करके उद्योगको विस्तृत करनेकी आवश्यताको प्रगट कर दिया। इसलिये सरकारके द्वार निश्चित उत्पादन क्षमताको ४-५ लाख टनसे बढ़ानेका निश्चय किया गया। इस नीतिका अनुसरण करनेके परिणाम स्वरूप ३२ नये कारखानोंको लायसेंस दिया गया तथा ३४ कारखानोंको उत्पादन क्षमता बढ़ाने की आज्ञा दी गई। शक्करके उद्योगकी विकास कौंसिलने यह अनुमान किया कि द्वितीय पंच-वर्षीय योजनाके अन्त तक याने सन् १९६०-६१ तक दानेदार शक्करकी खपत बढ़कर २२·५ लाख टन हो जावेगी। यह दृष्टिकोण स्वीकार करलिया गया तथा द्वितीय योजनामें समिल्लित कर लिया गया जिससे भारतके शक्कर उद्योगकी कुल उत्पादन क्षमता सम्भवतः बढ़कर २४ या २५ लाख टन हो जावेगी, जिससे कि सन् १९६०-६१ के अन्त तक औसतन २२·५ लाख टन शक्करका भरोसा हो जावेगा।

गन्नेके क्षेत्रोंकी अस्थिर प्रकृति

इस उद्योगके विस्तारके लिये आज्ञा दी जा चुकी है और इसके अनुसार किया हुआ चीनीका उत्पादन न केवल विदेशोंसे आयात शक्करकी आवश्यकताको हटा देगा बल्कि भारत की आर्थिक स्थितिको अच्छी कर देगा। इस उद्योगकी सबसे बड़ी समस्या है तो वह यह है कि गन्नेके क्षेत्रोंकी अस्थिर प्रकृति और उसके परिणाम स्वरूप नियमित ढंगसे एकड़ोंकी वृद्धि करनेकी योजना बनानेकी कठिनाई। चूँकि गुड़का भाव अनियंत्रित है जब कि कारखानोंको दिये जानेवाले गन्नों का कमसे कम भाव मुकर्रर है, यदि किसी वर्ष अधिक गुड़के उत्पादन हो जानेसे

उसका भाव गिर जाता है तो ऐसी स्थितिमें काश्तकार अपनी गन्ना पैदा करनेका क्षेत्र कम कर देते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप गुड़का उत्पादन कम होता है जिससे दूसरे वर्ष गुड़का भाव बढ़ जाता है और जो कि अप्रत्यक्ष रूपसे दानेदार शक्करके उत्पादनपर प्रभाव डालता है। किन्हीं वर्षोंमें जब गुड़का उत्पादन बहुत अधिक होता है, तब दानेदार शक्करका उत्पादन भी बहुत होता है और जब कि किसी वर्ष कम गुड़ पैदा होता है तो बिलकुल इसके विपरीत परिणाम होते हैं। अगर किसी प्रकार मार्केटिंग-बोर्डके कानूनके जरिये गुड़के भावोंपर नियंत्रण सम्भव भी हो जाय तो भी अन्य मसले जैसे वर्षा, बाढ़ तथा अनावृष्टिके ऊपर नियंत्रण करना दुर्लभ है। इन उपरोक्त कारणोंकी वजहसे वर्त्तमान स्थितिमें भारतमें शक्करका उत्पादन केवल टेढ़ी-मेढ़ी रेखाके अनुसार ही होगा। यह अत्यन्त हर्षका विषय है कि जब कि भारतीय-संघमें सन् १९४१-४२ से १९४५-४६ के पाँच वर्षके समयमें शक्करका औसतन उत्पादन ९·७ लाख टन था और वह दूसरे पाँच वर्षके समयमें बढ़कर १०·२ लाख टन हो गया था, तब प्रथम पंच वर्षीय योजनाके प्रथम चार वर्षोंमें यह औसत उत्पादन बढ़कर १३ लाख टन हो गया। और पांचवे वर्षमें सोलह लाख टनके करीब हो गया।

प्रति एकड़ गन्ने की मात्रामें वृद्धि करनेकी आवश्यकता:—भारतमें प्रतिवर्ष प्रति एकड़ गन्नेकी मात्रामें कमी आना एक रोजमर्राकी समस्या बन गई है। भारतमें सन् १९४१-४२ से पाँच वर्षों की अवधिमें औसतन प्रति एकड़ १३·७ टन गन्नोंकी खेती होती थी मगर अगले पाँचवर्षोंमें यह औसत गिरकर १३·२ ही टन रह गई। यह मात्रा और भी गिर जाती अगर सन्१९४८-४९ में गन्नोंकी विकास-योजना चालू नहीं कर दी गई होती जो कि प्रथम पंच वर्षिय योजनामें भी चालू रक्खी गई। योजनाके प्रथम चार वर्षोंके समयके दरमियान गन्नोंकी पैदावारकी औसतन मात्रा बढ़कर १३·४ टन हो गई यद्यपि विकास योजनाने कुल क्षेत्रके ⅙ हिस्सेमें ही प्रयोग चालू किया। विकसित क्षेत्रोंमें, जैसे उत्तर प्रदेशमें यह औसत १२·७ टनसे बढ़कर १७·३ टन हो गई, बिहारमें १२ टनसे १६ टन हो गई, बम्बईमें ३१ टनसे ४२·१ टन हो गई, मद्रासमें २५ टनसे ३५·३ टन हो गई, पंजाबमें १२·९ टनसे २०.७ टन हो गई तथा पश्चिमीय बंगालमें १६·१ टनसे १९·८ टन हो गई। अगर जहाँ जहाँ पर गन्नोंकी खेती होती है वह सारा क्षेत्र द्वितीय पंचवर्षीय योजनाकी विकास योजनामें ले लिया जाय तो शक्कर तथा गुड़की बढ़ती हुई माँगको बिना गन्नेकी भूमिमें वृद्धि किये पूरा करना सम्भव हो जावेगा।

सिंचाई तथा अच्छी सड़कोंकी सहूलियत होना आवश्यक:—फिर भी किसी प्रकार इस उद्देश्यको प्राप्त करनेके लिये दो खास अड़चनें इस रास्तेमें आती हैं। सिंचाईके लिये सहूलियतें दी जानी चाहिये जहाँ जहाँ पर उनकी वर्तमानमें कमी हो तथा अच्छी सड़कें गन्नेके कारखानोंमें भेजनेके लिये तथा गुड़को बाजारोंमें भेजनेके लिये बनवाना चाहिये। शक्कर तथा गुड़के यातायातके लिये रेलवेके डिब्बोंको पानेकी भी कठिन समस्या है और उत्तरी बिहारकी तो सारे देशमें सबसे खराब स्थिति है जहाँ

पर कि सिर्फ छोटी लाइन है। इन कठिनाइयोंपर सफलता पानेके अतिरिक्त गुड़के भावोंके लिये कुछ विश्वास होना चाहिये जिससे कि भाव आर्थिक स्तरसे नीचे नहीं गिरने दिये जांय। केवल इन्हीं स्थितियोंमें काश्तकारोंका गन्नोंकी विकास योजनाका फायदा उठानेके लिये पीछा किया जा सकता है और मजदूरी तथा गन्नेके उत्पादन पर अधिक धन व्यय किया जा सकता है।

गन्नेके विकासके अतिरिक्त इस उद्योगको कई समस्याओंका सामना करना पड़ता है। अनुपयुक्त स्थानोंपर स्थित कारखानोंको उपयुक्त स्थानोंपर हटानेके कार्यने सन्तोष जनक उन्नति नहीं की है। यद्यपि हमारे कारखानोंकी कलापूर्ण कार्य दक्षता किसी अन्य विदेशोंके कारखानोंसे घटिया नहीं हैं फिर भी आधुनिक तरीकोंसे उसमें सुधार किया जा सकता है। सहायक उद्योगके विकासका भी बहुत विस्तृत क्षेत्र है जो कि शक्करके उद्योगके दूसरे पदार्थोंपर निर्भर हो सकते हैं। शक्करके बढ़ियापनमें भी सुधार किया जा सकता है तथा कारखानोंकी रासायनिक नियन्त्रणकी पद्धति का भी स्तर निश्चित करना होगा। इस उद्योगकी विकास समिति पहलेसे ही इन समस्याओंको हल करनेका प्रयास कर रही है और अगले दो या तीन वर्षोंमें कुछ उन्नतिकी आशाकी जा सकती है।

गुड़का उत्पादन

गुड़का उत्पादन एक महत्वपूर्ण गृह उद्योग है जिसके ऊपर अभी तक उपयुक्त ध्यान नहीं दिया गया है। उन्नतिशील कोल्हू 'KOLHUS' के आरम्भ करनेके परिणाम स्वरूप प्रति घण्टेके उत्पादनमें भी सुधार हो गया है परन्तु नये कोल्हू पुराने ढंगके कोल्हूको अभीतक पूर्णतया बदलनेमें सफल नहीं हो पाये हैं। गुड़की क्वालिटी में भी सुधार किया जा सकता है। चूंकि भारतमें गुड़की खपत शक्करकी खपतसे दूनी है। इसलिए इस उद्योग में सुधार करने का महत्व स्पष्ट ही है। इण्यिडन सेन्ट्रल शुगरकेन कमेटी (भारत की केन्द्रीय गन्ने की समिति) कुछ समयसे इस समस्याको हल करनेमें व्यस्त है परन्तु अभी तक कोई उन्नति नहीं हुई। इस समितिको यह समस्या गम्भीर समझ कर लेना चाहिये तथा अपने प्रयत्नोंको दूने कर देना चाहिये तो द्वितीय पंचवर्षीय योजनामें पूर्ण सफलता हासिल हो जायगी।

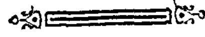
शक्करका उद्योग एक दृष्टिमें

वर्ष नवम्बर से अक्टूबर	गन्नेकी कुल खेती एकड़ोंमें '०००एकड़	प्रतिएकड़गन्ने का औसतन उत्पादनटनोंमें	गन्नें में से शक्कर की प्र० प्राप्ति	कारखानोंका कुल उत्पादन '००० टनोंमें	कार्य करने वाली मिलोंकी संख्या	एक नवम्बर को बचा हुआ स्टाक '००० टनों में
१९४९–५०	३,६२४	१३ ६	९'८८	०,९७९	१३९	४५
१९५०–५१	५,२१४	१३ ३	९'९९	१,१००	१३८	८८
१९५१–५२	४,७९२	१२'६	९'५७	१,४८६	१३९	१८०
१९५२–५३	४,२७२	११·७	९'९६	१,२९७	१३४	५०३
१९५३–५४	३,५९८	१२·८	१०'०७	१,००१	१३४	१९६
१९५४–५५	३,६१७	१३·१	१०'००	१,५९०	१३६	९७
१९५५–५६	—	—	—	—	—	५८० (अनुमानित)

* शक्कर का आयात कच्चा माल जो यहाँ शुद्ध किया जाता है उसको मिलाकर।

—समाप्त—

तीसरा सोपान



चीनी उद्योगके विकासके लिए अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय समितियाँ

गन्ना विशेषज्ञोंकी अन्तर्राष्ट्रीय समिति

गन्ना विशेषज्ञों का अन्तरराष्ट्रीय समिति की स्थापना लगभग ३१ वर्ष पहले होनोलुलू (हवाई) में हुई थी।

सन् १९२४ में पान-पेसिफिक यूनियनने जिसके नेता श्री एलेक्जेंडर ह्यूम थे और जिसका उद्देश्य प्रशांत क्षेत्रके लोगोंमें मैत्री भाव बढ़ाना था, होनोलुलूमें एक खाद्य संरक्षण सम्मेलन किया। इस सम्मेलन का आयोजन करने वाले वैज्ञानिक दलके नेता श्री हेमिल्टन पी० एगीके सुझावपर इसमें एक चीनी विषयक विभाग भी शामिल कर लिया गया। इसमें एक खास बात यह हुई कि केवल प्रशांत क्षेत्रके देशों के ही नहीं वरन् गन्नेसे चीनी बनानेवाले अन्य देशोंके प्रतिनिधि भी इसमें सम्मिलित हुए।

स्थायी संगठन

ना चानो उत्पादनसे सम्बन्ध रखने वाले लगभग १५० व्यक्ति उसमें आमन्त्रित किये गये। जब सम्मेलन आरम्भ हुआ तो उसमें गन्ना उपजाने वाले १२ क्षेत्रोंका प्रतिनिधित्व था। विभागीय बैठकोंमें जो विचार- विमर्श हुआ वह इतना महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ कि गन्ना विषयक एक अलग संगठन की स्थापना का निश्चय किया गया।

गन्ना विशेषज्ञोंकी इस अन्तर राष्ट्रीय समितिके पहले अध्यक्ष श्री एगी हुए और इसकी पहली बैठक मार्च, १९२७ में हवानामें हुई। तदुपरान्त द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ने तक हर तीन साल बाद उसकी बैठकें होती रहीं। ब्रिसबेन, आस्ट्रेलियामें १९५० में फिर बैठक हुई और तबसे त्रिवर्षीय बैठकोंका क्रम पुनः आरम्भ हो गया। ब्रिसबेनकी बैठक औद्योगिक दृष्टिसे बहुत ही उपयोगी रही।

हवाई (१९२४), क्यूबा (१९२७) जावा (१९२९), प्योरटोरिको (१९३२), आस्ट्रेलिया (१९३५) लूसियाना (१९३८), आस्ट्रेलिया (१९५०), तथा ब्रिटिश वेस्ट इंडीज (१९५३) में समितिकी बैठकोंमें बड़ी संख्यामें भारतीय विशेषज्ञों और चीनी मिल मालिकोंने भाग लिया। इन बैठकोंमें पारस्परिक सम्पर्कसे तथा उन देशोंके गवेषणा-फारम तथा चीनी कारखाने देखकर भारतीय प्रतिनिधि बहुत प्रभावित हुए।

भारत सरकार १९३८ से यह प्रयत्न करती रही है कि इस समिति की बैठक भारतमें हो किन्तु द्वितीय विश्वयुद्धने रुकावट डाल दी। तब १९५३ में भारतने यह अनुरोध किया कि समितिका नौवां अधिवेशन भारतमें ही हो। वह निमन्त्रण स्वीकार कर लिया गया और उसीके परिणामस्वरूप नौवाँ अधिवेशन नयी दिल्लीमें २५ जनवरी १९५५ से प्रारम्भ हुआ।

समितिके उद्देश्य

संक्षेपमें समितिके उद्देश्य ये हैं:—

(१) यथासम्भव त्रिवर्षीय अधिवेशनों द्वारा गन्ना तथा चीनी उत्पादनकी औद्योगिक समस्याओं पर विचार-विमर्शको प्रोत्साहन देना तथा (२) प्रकाशनों एवं अन्य माध्यमों द्वारा औद्योगिक जानकारियों के आदान-प्रदानको बढ़ावा देना। जो व्यक्ति किसी देशके चीनी उद्योगकी प्रगतिमें सहायक हो या रहा हो, वह इस समितिका सदस्य बन सकता है। समितिका प्रधान सचिव तथा कोषाध्यक्ष उस देशका व्यक्ति होता है जहाँ आगामी अधिवेशन होने वाला हो।

नौवां अधिवेशन आरम्भ होनेसे पहले, इसमें आए हुए प्रतिनिधियोंको नौ चीनीके कारखाने, कई गन्ना गवेषणा केन्द्र तथा वैज्ञानिक संस्थाएँ दिखाई गयी। इस दौरेमें प्रतिनिधि गण ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्वके स्थान भी देखने गये।

समितिका मुख्य अधिवेशन २५ जनवरी से २ फरवरी तक दिल्लीमें हुआ। गन्ने तथा चीनी संबंधी लगभग १५० लेख इस अधिवेशनमें पढ़े गये। गन्नेके रसकी सफाई तथा गन्नेकी कीमतकी अदायगीके विषयमें एक गोष्ठी हुई। पिछले सभी अधिवेशनोंकी तुलनामें इसमें अधिक लेख पढ़े गये। प्रतिनिधियोंमें आपसमें संपर्क बढ़ानेके लिए एक परिचयात्मक सूची तैयारकी गई। इसके अतिरिक्त प्रतिनिधियोंको खास-खास देशोंके चीनी उद्योगके विषयमें जानकारी भी प्रदान की जा रही है।

भारतीय चीनी उद्योगके लिए इस अधिवेशनका विशेष महत्व है, क्योंकि यह ऐसे समयमें हो रहा है जब भारतमें चीनीका उत्पादन लगभग दूना करनेका कार्यक्रम बन रहा है। इस दृष्टिसे विदेशों से आए हुए प्रतिनिधियों का परामर्श बहुत मूल्यवान होगा।

कोयम्बटूर गन्ना उत्पादन संस्था

कोयम्बटूरकी यह संस्था सन् १९१२ में स्थापितकी गयी थी। इस संस्थाका उद्देश्य गन्नेकी ऐसी नयी नस्लें तैयार करना है, जिनकी भारतके समस्त भागोंमें अच्छी पैदावार हो सके। स्थापित होनेके बाद जल्दी ही इस संस्थाने गन्नेकी विभिन्न किस्मोंके बारेमें जाँच शुरू कर दी। इसी संस्थामें प्रथमबार जंगली काश इक्षु (साकचरम स्पोनटैनियम) का गन्नेके साथ संकरण (क्रासिंग) किया गया। बादमें जावामें भी यह प्रणाली अपनायी गयी। इस संकरणसे जो गन्ने की नस्ल तैयार हुई वह कड़ी होती है और उस पर पालेका कोई असर नहीं होता।

गन्नेकी जड़ोंके बारेमें भी पहली बार यहीं पर जांच की गयी। गन्नेकी वर्णसंकर जातियां (गन्ने की कई किस्में मिलाकर नयी किस्म तैयार करना) भी सबसे पहले यहीं पैदा की गयीं। सोरघम और केनबैम्बूका संकरण इस दिशामें बहुत महत्वपूर्ण कदम है।

लगातार कई परीक्षणोंके बाद यह संस्था भारतकी विभिन्न किस्मोंकी जमीनों और जलवायुके अनुकूल गन्नेकी कई नस्लें तैयार कर चुकी हैं। जो चीनी और गुड़ उद्योग की आवश्यकताओंको पूरा करती है। आजकल देशके जितने क्षेत्रमें गन्ना उगाया जाता है उसके ९५ प्रतिशत क्षेत्रमें कोयम्बटूरकी नस्लें बोयी जाती हैं। यहां तैयारकी गयी कुछ नस्लें तो विदेशोंमें भी बोयी जाने लगी हैं।

संस्थाके मुख्य काम

इस संस्थाके मुख्म काम हैः—

(१) देशके सब क्षेत्रोंके अनुकूल अच्छी नस्लके गन्नेके बीज तैयार करना (२) गन्ना विज्ञानके बारेमें बुनियादी गवेषणा करना और (३) गन्नेके बारेमें स्नातकोत्तर प्रशिक्षण देना।

यह संस्था भारत सरकारके केन्द्रीय कृषि और खाद्य मन्त्रालयके अन्तर्गत काम करती है। गन्ना सम्बन्धी वैज्ञानिक विषयोंके अतिरिक्त संस्था में सांख्यिकी (स्टैटिस्टीकल) और ऋतु (मीटयारालीजिकल) विभाग भी हैं। देशके अर्ध उष्ण क्षेत्रोंके लिए करनाल (पंजाब) में इस संस्थाका एक उपकेन्द्र भी स्थापित किया गया है।

गन्ना विशेषज्ञोंकी अन्तर्राष्ट्रीय सोसायटीके तीसरे और आठवें सम्मेलनमें प्रस्तावित और समर्थित प्रस्तावके अनुसार भारत सरकारने इस संस्थामें संसारके ६५० किस्मके गन्ने उगा रखे हैं। अगले दो वर्षके भीतर ही अमेरिकामें ६०० किस्मके कृत्तक (क्लोन) और आनेकी आशा है।

लखनऊ संस्था

लखनऊकी भारतीय गन्ना गवेषणा संस्थाकी स्थापना १९५२ में हुई थी। इसके मुख्य काम हैं:— (१) गन्नेकी खेतीके सब पहलुओंके बारेमें बुनियादी गवेषणा करना और (२) देशके विभिन्न भागोंमें स्थापित गन्ना गवेषणके केन्द्रोंकी खोजोंमें तालमेल स्थापित करना।

इस संस्थामें इन समस्याओंका अध्ययन किया जाता है:—

(क) अच्छी किस्मके गन्नोंके लिए खाद और जलकी आवश्यकताओंका अध्ययन,

(ख) गन्नेकी बीमारियों और कीड़ोंकी जांच,

(ग) गन्नेकी बढ़िया किस्मोंपर नये रोगोंका प्रभाव,

(घ) गन्नेकी खेतीके लिये बैलोंसे चलनेवाले सस्ते और अच्छे खेती यन्त्रोंका निर्माण और

(ङ) गुड़ और खाण्डसारी बनानेके नये ढंग निकालना, जिनमें उत्पादन व्यय कम होता हो।

कानपुर संस्था

कानपुरकी भारतीय चीनी प्राविधिक संस्था भारत सरकारने १६३६ में अपने हाथमें ली थी। पहले इसे उत्तर प्रदेशकी सरकार चलाती थी। तब इसका नाम हरकोर्ट बटलर इंन्स्टीट्यूट था। यहां पर प्राविधिक प्रशिक्षण दिया जाता है। यह संस्था भारत भरकी आधुनिक चीनी मिलोंको प्राविधिक परामर्श भी देती है।

इस संस्थामें एसोशियेट एड फेलोशिप इन शुगर टेक्नोलोजी, एसोशियेटशिप इन शुगर इंजीनियरिंग, सर्टिफिकेट इन शुगर बायलिंग आदिके प्रमाण पत्र दिये जाते हैं। विदेशी सरकारें भी अपने विद्यार्थी यहां पढ़नेके लिए भेज सकती है।

केन्द्रीय गन्ना समिति

भारतकी केन्द्रीय गन्ना समितिकी स्थापना भारत सरकारने १६४४ में की थी। इसका प्रधान कार्यालय नयी दिल्लीमें है। गन्ना विकास परिषदकी स्थापनाके कारण समितिका दोबारा संगठन किया गया। अब इसके अन्तर्गत केवल गन्नेकी पैदावार, गवेषणा, बिक्री और विकास तथा गुड़ और खांडसारी ही रह गये और चीनीसे इसका कोई सम्बन्ध नहीं रहा। कुछ समयके बाद गुड़ और खांडके विकास का काम भी अखिल भारतीय ग्रामोद्योग और खादी मण्डलको सौंप दिया गया और समितिके पास केवल गवेषणा कार्य्य रह गया।

आजकल यह समिति देशके विभिन्नि राज्योमें चलनेवाली गन्ना गवेषणा और विकास सम्बन्धी ४८ योजनाओंकी सहायता कर रही हैं। गन्ना, गुड़ और खांडसारी सम्बन्धी गवेषणाके लिये सरकार प्रतिवर्ष ८ लाख रुपये अनुदान देती है। चालू वर्षमें विभिन्न राज्योंकी गन्ना विकास योजनाओंपर समितिने १२ लाख ६० हजार रुपये व्यय किया था। यह रकम भी उसे सरकारसे अनुदानके रूपमें प्राप्त हुई थी।

कृषि गवेषणा कार्य

इस समितिके तत्वावधानमें देशके विभिन्न क्षेत्रोंमें आजकल कई गवेषणा केन्द्र और उपकेन्द्र चल रहे हैं। इन केन्द्रोंमें खाद, कृषिकी उन्नति, सिंचाई, कृषि विज्ञान, माइकोलोजिकल और भूमि सर्वेक्षण आदि विषयोंपर गवेषणा हो रही है।

गन्नेकी फसलको कीड़ों और बीमारी आदिसे बहुत अधिक हानि होती है। इसलिये समिति उत्तर प्रदेश, बिहार, पंजाब, बम्बई, मद्रास, आंध्र, पश्चिम बंगाल और हैदराबादमें गन्नेकी बीमारियों पर नियन्त्रण करनेके लिये एक संयुक्त योजनाके अनुसार कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त विभिन्न केन्द्रोंमें कृषि सम्बन्धी गवेषणा भी चल रही है।

गन्नेका गांवोंकी अर्थव्यवस्थामें बहुत महत्त्व है। यह एक आमदनीकी फसल है। गन्नेकी कीमतें तय करनेका प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसलिये समिति आजकल गन्नेकी पैदावार पर होनेवाले असली खर्चेका अनुमान लगा रही है। उत्तरप्रदेश, बिहार, पंजाब, बम्बई, मद्रास और आंध्रमें यह काम किया जा रहा है।

गन्नेकी प्रति एकड़ उपज बढ़ाने और इसकी किस्म सुधारनेके लिये की गई गवेषणाके परिणाम किसानों तक पहुँच सकें, इसके लिये समितिने १६ योजनाओंकी स्वीकृति दी है। १६४८-४६ से ये योजनाएं उत्तरप्रदेश, बिहार, मद्रास, आंध्र पंजाब, मैसूर, पश्चिम बंगाल, अजमेर, पटियाला, भोपाल, हैदराबाद, तिरुवांकुर कोचीन और मध्यभारतके राज्योंके चीनी मिल क्षेत्रोंमें जारी है। इन योजनाओंमें मुख्य काम इस प्रकार है।

(१) अधिक उपज वाले, बढ़िया किस्मके रोग मुक्त बीज तैयार करना (२) खाद और रसायन पदार्थोंकी उचित मात्रामें पूर्ति (३) फसलको कीड़ों और बीमारियोंसे बचानेके लिये समुचित प्रबन्ध (४) क्षेत्रीय केन्द्र (५) मिश्रित खादका निर्माण और (६) फसल प्रतियोगिताएं।

इन योजनाओंके कारण उत्तरप्रदेश, बिहार और पंजाबके मिल क्षेत्रोंमें गन्नेकी उपजमें ४५ से ५० प्रतिशत०, आंध्र और मैसूरमें २० प्रतिशत, पश्चिम बंगालमें ३० प्रतिशत और बम्बईमें १० प्रतिशत वृद्धि हुई।

खाद आन्दोलन

विदेशी चीनीका निर्यात रोकनेके उद्देश्यसे गन्नेकी उपज बढ़ानेके प्रयत्न किये गये हैं। मई १९५४ में उत्तरप्रदेश, बिहार और पजाबमें अधिक खादके प्रयोगका आन्दोलन चलाया गया। २·२ लाख एकड़ भूमिमेंसे १.७६ लाख एकड़ भूमिमें अमोनियम सल्फेटका प्रयोग किया गया। इस आंदोलन-का परिणाम अत्यन्त उत्साहवर्धक सिद्ध हुआ। इसलिये १९५५ में यह आंदोलन दस लाख एकड़ भूमि-में चलानेका निश्चय किया गया था।

द्वितीय आयोजनामें चालू योजनाओंके अतिरिक्त देशके विभिन्न क्षेत्रोंमें गुड़ बनानेके विकसित उपायोंके सम्बन्धमें भी गवेषणाकी जायगी। गुड़ और खांडसारी क्षेत्रोको भी चीनी क्षेत्रोंके साथ मिला कर गन्ना विकास योजनाओंका और भी विस्तार किया जायगा ताकि गन्नेकी उपज और गुड़, खांडसारी और चीनीका कुल उत्पादन बढ़ सके।

चीनी विकास परिषद्

चीनी उद्योगके लिये विकास परिषद की स्थापना १९५४ के शुरूमें १९५१ के उद्योग (विकास और नियमन) अधिनियमके अन्तर्गत हुई थी।

इस परिषद के २२ सदस्य हैं, जो चीनी मिलोंके मालिक, व्यापारी, मजदूर, चीनी विशेषज्ञ, उपभोक्ता आदिका प्रतिनिधित्व करते हैं।

परिषदके मुख्य कार्योंमें से कुछ ये हैं:—उत्पादन लक्ष्यके बारेमें सिफारिश करना, उत्पादन कार्यक्रममें सामंजस्य लाना, कार्य कुशलताका स्तर निश्चित करना तथा मालकी किस्म सुधारना, उत्पादन व्ययमें कमी, उद्योगकी क्षमताका पूरा उपयोग, प्रतिमान-निर्धारण, बिक्रीमें सुधार, उद्योगसे संबंधित व्यक्तियोंका प्रशिक्षण, वैज्ञानिक और औद्योगिक गवेषणा और प्रति व्यक्ति उत्पादन वृद्धि आदिके नये उपाय सुझाना।

अब तक इस परिषदकी तीन बैठकें हो चुकी हैं। इनमें गन्ने के विकाससे संबंधित कई महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार हुआ है। उद्योग की विशेष समस्याओं पर विस्तारपूर्वक विचार करनेके लिये परिषदने अब तक १४ समितियां नियुक्तकी हैं।

देशकी वर्तमान अवस्थाको देखते हुए परिषदने द्वितीय आयोजनामें चीनीके उत्पादनका लक्ष्य २२·५ लाख टन निश्चित किया है। इस लक्ष्यको प्राप्त करनेके लिये चीनी मिलोंकी उत्पादन क्षमता २० लाख टनसे बढ़ाकर २५ लाख टन करनी पड़ेगी। परिषद कच्ची खाड़को साफ करनेके कारखाने खोलनेके पक्षमें नहीं है। द्वितीय आयोजना कालमें चीनी उद्योगके विकास कार्यक्रम पर विचार करनेके लिये चीनी विकास परिषद और भारतीय केन्द्रीय गन्ना विकास समितिकी एक संयुक्त समिति भी बनायी गयी है।

उत्पादन क्षमताका पूरा उपयोग हो सके इसके लिये भी एक विशेषज्ञ समिति नियुक्तकी गयी है। यह समिति ऐसी चीनी मिलोंकी समस्या पर विचार करेगी जो या तो उचित इलाकोंमें स्थापित नहीं हैं या पिछले कुछ वर्षोंसे कम गन्ना मिलनेके कारण बेकार पड़ी है।

परिषदने भिन्न-भिन्न किस्मकी चीनीके मूल्योंको एक संशोधित सूची तैयारकी है और किस्मोंको भी ठीक तरह निश्चित करनेका सुझाव दिया है।

चीनी व्यापारकी अड़चनोंको दूर करनेके उद्देश्यसे परिषदने खरीद और बिक्रीके ठेकेका एक नया फार्म तैयार करनेके लिये एक विशेषज्ञ समिति नियुक्त की थी। इस समितिने यह फार्म तैयार कर लिया है व्यापारियों और उद्योगपतियोंने इसे स्वीकार भी कर लिया है।

प्राविधिक कुशलता

मिलोंकी प्राविधिक कुशलता बढ़ानेके लिये परिषदने सरकारसे जल्दी ही एक विस्तार सेवा स्थापित करनेकी मांगकी है। यह विस्तार सेवा समय पर कारखानोंको परामर्श दिया करेगी।

परिषदने चीनी मिलोंमें रासायनिक और प्राविधिक एकरूपता लानेके लिये कानून बनानेकी भी सिफारिश की है।

परिषदने गवेषणा करनेके उद्देश्यसे कानपुरके चीनी विशेषज्ञ संघको ५,००० रु० वार्षिक, सरय्या डिस्टीलरीको ६१,००० रु० और डा० एस० एन० रावको २४ ६०० रू० देने की सिफारिश की है।

परिषद आजकल इन विषयोंपर भी विचार कर रही है:—

(क) किस्मके आधारपर गन्नेकी कीमतें तय करना (ख) चीनी उद्योगके सह-उत्पादनोंका उपयोग (ग) उत्पादन व्यय मालूम करनेके तरीकोंमें एकरूपता लाना और (घ) विशेषज्ञोंको प्रोत्साहित करना।

भारतका मिठाई उद्योग

ईख की खेती पहले भारतमें ही शुरू हुई। निर्यात भी संसारमें सबसे पहले इसी देश से आरम्भ हुआ। भारतमें हलवाई और उनका पेशा उतना ही पुराना है जितनी यहाँ की सभ्यता। यहांके बच्चोंमें देशी मिठाईयों के प्रति विशेष रुचि है और हर भोज या त्यौहारमें उनका विशेष स्थान रहता है। परन्तु यह सब होते हुए भी मीठी गोलियाँ आदि आधुनिक ढंगकी मिठाई बनानेका उद्योग इस देशमें अपेक्षाकृत नया है।

चीनीकी आधुनिक मिठाई बनानेका पहला कारखाना भारतमें आजसे लगभग ४० वर्ष पहले खुला। उस समय इस देशमें प्रति वर्ष ३,००० टन मिठाईका आयात होता था। लेकिन इस उद्योगकी शीघ्र उन्नति हुई और सन् १९२९ तक यह उद्योग देशकी ६५ प्रतिशत आवश्यकताकी पूर्ति करने लगा। इतना ही नहीं भारतमें बनी मिठाइयां विदेशोंके मालकी प्रतियोगिताके बावजूद लंका, बर्मा और सुदूरपूर्वके देशोंकोभी पर्याप्त मात्रामें भेजी जाने लगीं।

यद्यपि भारतमें बनने वाली मिठाइयोंकी किस्म अच्छी थी लेकिन इस क्षेत्रमें अधिकतर छोटे उद्योगपति लगे हुए थे जो थोड़ी पूँजीसे पुराने ढंग पर उत्पादन करते थे और आधुनिक तरीकोंसे बेखबर थे। उनमें प्रतियोगिताकी अनुचित भावना थी। उपभोक्ताओंमें भी ऐसी रुचिका अभाव था कि केवल अच्छी किस्म की साफ सुथरे ढंगसे बनी मिठाइयोंका ही प्रयोग करें। इन सब कारणोंसे, इस उद्योगका प्रगतिशील ढंग पर विकास असम्भव हो गया।

आकस्मिक विकास

इतनी असंतोषजनक स्थितिके बावजूद इस उद्योगके अच्छे दिन दूर नहीं थे। दूसरा विश्व-महायुद्ध छिड़ा और अन्य वस्तुओंके साथ मिठाइयोंका आयात भी बन्द हो गया। सेनाकी मिठाइयोंकी मांग बढ़ गई। जनताकी क्रय-शक्ति भी बढी। दूसरी संतोषप्रद बात यह हुई कि यातायातकी असुविधाओंके कारण आसपासके देशोंमें विदेशी माल आना कम हो गया और भारतीय मिठाइयोंकी मांग बढ़ गई।

साथ ही, इस उद्योगमें लगे हुए सभी लोगोंने यह अनुभव किया कि देशके विकासमें इस उद्योगके विकासका भी बड़ा महत्त्व है। इसकी एक वजह यह भी थी कि चीनी देशकी आवश्यकतासे अधिक बनने लगी थी। उसकी खपतके लिए सहायक उद्योगोंको प्रोत्साहन देनेकी आवश्यकताकी ओर लोगोंका ध्यान गया। तट-कर संरक्षण बोर्ड (टैरिफ बोर्ड) १९३७ ने भी चीनी उद्योगको सुदृढ़ बनानेके लिए इसके सहायक उद्योगोंको प्रोत्साहन देनेकी आवश्यकताको स्वीकार किया।

इस प्रकारके अनुकूल वातावरणमें इस उद्योगका आकस्मिक प्रसार हुआ। बहुत सारे नये कार-

खाने खुले, कई पुराने कारखानों की उत्पादनशक्ति बढ़ाई गई और उनमें आधुनिक प्रणालीसे उत्पादन आरम्भ हुआ। इस उद्योगका विकास करने वाले कारखानोंको सरकारकी ओरसे भी प्रोत्साहन मिला क्योंकि इनके द्वारा इस उद्योगका कम खर्चसे और प्रगतिशील ढंग पर विकास किया जाना सम्भव था।

आयातके आंकड़े

नीचेकी तालिकामें लड़ाईसे पहले, लड़ाईके साल और लड़ाईके बादके सालोंमें इन मिठाइयों के आयातके आंकड़े प्रस्तुत किये गये हैं।

वर्ष	तौल (हण्डरवेट्समें)	मूल्य (रुपयोंमें)
१६३५–३६	३३,६६०	२१,५३,६७०
१९३८–३६	२३,७७२	१६,७०,७३६
१६३१–३२	७,६३७	८,४७,६८४
१६४४–४५	१,०१५	१,४०,५६७
१०४५–४६	२,८०६	२,६३,८२८
१६४६–४७	४,६५७	३,६६,७७८
१६४७–४८	१८,७८६	२०,५८,३२८
१६४८–४६	१०,६६६	२२,९६,४६७
१६४६–५०	२,७६४	५,६८,१३३
१६५०–५१	७६२	१,२७,३८६
१६५१–५२	६६३	२,२२,४३६

यद्यपि चीनी मिठाइयों की बढ़ती हुई मांगके साथ-साथ उत्पादन भी बढ़ रहा था लेकिन बादमें जब सरकारने चीनी कोटेसे देनी शुरू कर दी तो उत्पादन घट गया। इधर लड़ाई समाप्त होनेके बादके कुछ वर्षोंमें इस उद्योगको पुनः विदेशी मालसे प्रतियोगिता करानी पड़ी। हालांकि सरकारने विदेशी माल का आयात काफी सीमितकर दिया था।

विकासकी गुंजाइश

आजकल, अच्छी किस्मकी मिठाइयोंका उत्पादनकरने वाले कारखानोंकी उत्पादन-क्षमता, यदि उनमें आठ घंटे प्रतिदिन कार्य हो,तो ५०,००० टन है। इसके विपरीत अच्छी किस्म की मिठाईयोंकी खपत गिरकर केवल ८,००० टन रह गई है और अनुमान है कि द्वितीय पंचवर्षीय आयोजना कि अवधि में भी यह १०,००० टनसे अधिक नहीं बढ़ सकेगी।

भारतमें चीनीकी प्रति व्यक्ति औसत खपत ८ पौंड है। गुड़की खपत भी शामिल कर ली जाए। तो यह औसत लगभग ३० पौंड पड़ेगा। अच्छे भोजन-स्तर वाले अन्य देशोंमें यह औसत १०० पौंडसे भी अधिक पड़ता है।

इसलिए मिठाइयोंके उद्योगके विकास की अभी बहुत गुंजाइश है। परन्तु इस क्षेत्रमें प्रगति तभी हो सकेगी जब लोगोंको क्रय शक्तिमें वृद्धि हो और सरकार इस उद्योग की कठिनाइयोंको दूर करनेमें सहायता करे।

यद्यपि भारतमें इस उद्योगको आरम्भ हुए अभी बहुत दिन नहीं बीते, फिर भी यहाँ विदेशी माल के मुकाबले का माल तैयार होने लगा है। भारतीय मिठाई उत्पादक संघने आरम्भसे ही अच्छी किस्मके मालके उत्पादनकी और विशेष ध्यान दिया है। इस संस्थाके मालकी किस्म तथा सफाईके न्यूनतम स्तर नियत कर दिये हैं। सन् १९५४ में सरकारने खाद्योंमें मिलावट निरोधक कानून बनाया। यह एक ऐसा कदम है जिससे अच्छी किस्म की खाद्य सामग्री उपलब्ध हो सकेगी तथा जनताका स्वास्थ्य सुरक्षित रह सकेगा। नकली या मिलावट वाला उत्पादन करने वाले उत्पादकोंको अपना सुधार करना होगा ऐसा नहीं करनेसे वे टिक नहीं सकेंगे।

सरकारी सहायताकी आवश्यकता

देशमें मिठाइयों की खपतमें वृद्धि करनेके लिये उनके मूल्यमें कमी करना आवश्यक है। इन मिठाइयोंमें किस्मके अनुसार २० से ६० प्रतिशत तक चीनी होती है। इसलिए यदि भारत सरकार मिठाईमें लगी चीनीका उत्पादनशुल्क और प्रांतीय सरकारें इस चीनीपर लगा गन्ना उत्पादन कर हटा दे तो इस उद्योगको बहुत प्रोत्साहन मिलेगा।

इस उद्योग वाले मिठाईके आयातको बिल्कुल रोकनेकी मांग कर रहे हैं। सरकार नकली या मिलावटी मालपर रोक लगाकर भी इस उद्योगकी यथेष्ट सहायता कर सकती है।

दूसरे विश्वयुद्धके पहले भारतने बर्मा, लंका, स्ट्रेट सेटलमेण्ट्स, मलाया, हांगकांग, मारिशस, अदन, बहरियन द्वीप समूह, गोल्ड कोस्ट, जंजीबार, केनिया तथा टनगानियिका आदि पड़ोसी देशोंमें अपना अच्छा बाजार बना लिया था। भारतीय मिठाइयोंके निर्माणके आंकड़े नीचे दिये जा रहे हैं:—

वर्ष	तौल (हंडरवेटोंमें)	मूल्य (रुपयोंमें)
१९३८–३९	४,५६७	१,८२,९५२
१९३९–४०	६,६५८	२,७३,०२५
१९४०–४१	६,०९७	२,४५,६८६
१९४१–४२	१३,१०४	५,४५,६८६
१९४२–४३	१८,८१८	५,४१,७०३
१९४३–४४	१५,७७८	१२,८४,२१०
१९४४–४५	१६८	११,५२,४८९
१९४५–४६	१५१	१७,५३२

१९४६–४७	१०५	१८,१७६
१९४७–४८	४	१०,६००
१९४८–४९	११,४२३	११,७२,२३०
१९४९–५०	७६४	९८,४९९
१९५०–५१	१४४	१९,१३०
१९५१–५२	२९५	४१,४४४
१९५२–५३	७४३	८५,७३०

संघकी सिफारिशें

मिठाइयोंके निर्माणका बाजार बढ़ानेके लिये भारतीय मिठाई उत्पादन संघने सरकारके पास निम्नलिखित सिफारिशें की हैं:—

(१) विदेशोंको निर्यातकी जानेवाली मिठाइयोंमें लगी चीनीपर लगनेवाले उत्पादन शुल्कको वापिस करनेकी पद्धतिका सरल बनाना।

(२) १९५३ के समुद्र तटकर (संशोधन) कानूनके अनुसार कच्चे मालपर लगने वाले आयात करका हटाना या इस कानूनकी, धाराओंको लागू करनेकी पद्धतिका सरलीकरण।

(३) निर्यातके लिए बननेवाली मिठाईके काम आनेवाली चीनीको सरकारी सहायता देना जिससे इसका मूल्य प्रतियोगी देशोंके मालके मूल्यकी बराबरी कर सके।

इसके अतिरिक्त संघने यह भी सिफारिशकी है कि मिठाईमें लगने वाले रंगोंकी संख्यामें वृद्धि की जाय। इस समय भारत सरकार द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धोंके अनुसार मिठाइयोंके बनानेमें केवल ५ रंगोंका ही उपयोग किया जा सकता है। इसके विपरीत अमेरिकामें आजकल १८ और इंगलैण्डमें ३२ रंगोंका उपयोग किया जाता है। संघकी सिफारिश है कि भारतमें भी रंगोंकी संख्या इंगलैण्डके बराबर कर दी जाए।

आँकड़ोंका विभाग

संख्या शास्त्रीय सारणियाँ

सारणी अनुक्रम संख्या १

भारतीय संघमें कार्य करनेवाले कारखानों की संख्या, शक्कर का उत्पादन, गन्ने के कारखानों, गुड़ को शुद्ध करने के कारखानों तथा खांडसारी का उत्पादन, तथा गत २३ वर्षों में विदेशोंसे आयात कुल शक्कर की तुलनात्मक सारणी।

वर्ष नवम्बर-अक्टूबर	भारतीय संघ में कार्य करने वाले गन्नेके कारखाने	गन्ने के कारखानोंका उत्पादन नवम्बर अक्टूबर	गुड़से शुद्ध की हुई शक्कर जनवरी-दिस.	अनुमानित खांड़सारी का उत्पादन नवंबर-अक्टू.	भारतमें शक्कर कुल उत्पादन	भारतमेंविदेशी शक्करका कुल आयात नवंबर-अक्टू०
		टन	टन	टन	टन	टन
१९३१–३२	३२	१५९,५८०	६२,०००	२५०,०००	४७१,०००	५८६,०००
१९३२–३३	५७	२९०,०००	८०,०००	२७५,०००	६४५,०००	३८९,७३०
१९३३–३४	११२	४५४,०००	६४,९००	२००,०००	७१८,९००	३१०,४६०
१९३४–३५	१३०	५७८,१००	४३,५००	१५०,०००	७७१,६००	३११,१३९
१९३५–३६	१३७	९३२,१००	४७,९००	१२५,०००	१,१०५,०००	१४२,१८०
१९३६–३७	१३७	१,१११,४००	२५,६१०	१००,०००	१,२३७,०००	२४,७३०
१९३७–३८	१३१	९१४,६००	१७,२००	११५,२००	१,०४७,०००	२१,६४८
१९३८–३९	१३२	६४२,२००	१४,७००	९२ १००	७४९,०००	३३१,४००
१९३९–४०	१३८	१,२०७,८००	२६,५००	११४,५००	१,३४८,८००	६६ ८३६
१९४०–४१	१४०	१,०४६,८००	४२,०००	१८३,८००	१,२७१,९००	४३,२१७
१९४१–४२	१४१	७५१,४००	१९,९००	९१,५००	८६२,८००	३०,४५१
१९४२–४३	१४१	१,०५१,८००	७,८००	१९५,९००	१,२५५,५००	८
१९४३–४४	१४५	१,२००,७००	७,७००	१३७,३००	१,३४५,७००	१४
१९४४–४५	१३६	९४२,२००	६,४००	११४,७००	१,०६३,३००	३०
१९४५–४६	१३८	९२२,९००	४,१००	१०६,८००	१,०३३,८००	—
१९४६–४७	१३५	९०१,१००	४,०००	९६,७००	१,००१,८००	—
१९४७–४८	१३४	१,०७४,८००	५,४००	१०५,०००	१,१८५,२००	१४,३८९
१९४८–४९	१३६	१,००७,६००	४,४००	११३,०००	१,१२५,०००	५
१९४९–५०	१३९	९७८,६००	४,०००	१७५,०००	१,१५४ ४००	—
१९५०–५१	१३८	१,१००,५००	६००	१२५,०००	१,२२६,१००	६०,९५०
१९५१–५२	१३९	१,४८३,१००	६००	१००,०००	१,५८३,७००	—
१९५२–५३	१३४	१,३१६,३००	६००	९०,०००	१,४०६,९००	१३७,०००
१९५३–५४	१३४	१,०००,०००	६००	१००,०००	१,०३९,७००	५००,०००
१९५४–५५	१३४	१,१००,०००	६००	१००,०००	१,२००,६००	७५०,०००

सारणी क्रमांक २

भारतीय संघ में सन् १९४६-४७ से १९५३-५४ तक शक्कर तथा गुड़ के उत्पादन का कुल वार्षिक मूल्य।

वर्ष	लाख टनोंमें उत्पादन		शक्करकी कारखानेसे शक्कर निकते समय की कीमत		गुड़का औसत मूल्य		करोड़ों में कुल मूल्य		
	शक्कर	गुड़	प्रतिमन	प्रतिटन	प्रतिमन	प्रतिटन	शक्कर	गुड़	गुड़ तथा शक्कर का कुल मूल्य
			रु० आ० पा०	रु०	रु० आ पा०				
१९४६–४७	९·०१	३१·७८	२२-११-०	६१३	१७- ९-६	४७६	५५	१५२	२०७
१९४७–४८	१०·७	३५·०३	३५- ७-०	९५७	११- ९ ९	३१४	१०२	११०	२१२
१९४८–४९	१०·०७	२७·६४	२८ ८-०	७६९	१५-१२-६	४२७	७७	१२०	१९७
१९४९–५०	९·७८	२७·४३	२८- ८-०	७६९	२७-१३-०	७५१	७६	२०९	२८५
१९५०=५१	११·०	३२·५४	२९-१२ ०	८०३	१९- १-०	५१५	८८	१७०	२५८
१९५१–५२	१४·८	३२·४०	२९-१२·०	८०३	१५-१०-०	४३७	११८	१४३	२६१
१९५२–५३	१३·२	२८·७७	२७- ०-०	७५०	२२- ८-०	६००	९९	१८२	२८१
१९५३–५४	९·९	३१·००	२९- ८-०	८००	३० १४-०	८४०	७९	२६०	३३९

सारणी क्रमांक ३

संसारके भिन्न भिन्न देशोंमें गन्ने तथा शक्कर की प्रति एकड़ प्राप्ति तथा गन्नेसे शक्करकी प्रतिशत प्राप्ति।

देश	गन्नेकी प्रति एकड़ पैदावार		गन्नेसे प्रतिशत शक्करकी प्राप्ति	शक्करकी प्रति एकड़ प्राप्ति	
	टन	मन		टन	मन
(१) क्यूबा	१७·१२	४६५·९	१२·२५	२·०९५	५७·०३
(२) लाऊईसीयाना (Loúsiana)	१९·८४	५३९·८	८·०६	१·६०२	४३·५८
(३) पुयर्टो रिको (Puerto Rico)	२४·१६	६५७·७	१२·२३	२·९५६	८०·४४
(४) हवाई	६२·०५	१६८९·०	१०·४६	६·४८९	१७६·६
(५) मेक्सिको	१९·५४	५३१·८	९·२	१·८१७	४९·४४
(६) मार्टिनीक (Martinique)	१७·९३	४८७·८	८·१३	१·४५८	३९·६८
(७) अर्जेन्टायना	१३·०५	३५५·१	९·८९	१·२९०	३५·१३
(८) ब्राजील	१५·६८	४२६·८	४.९७	०·७४१	१९·७१
(९) पीरू	४१·१४	१११९·०	१२·३३	५·०७६	१३८·१०
(१०) मिस्र	३०·४२	८२७·९	९·९७	३·०३२	८२·५०
(११) मौरीटीयस (Mauritius)	१९·६३	५३४·३	१२·०८	२·३७०	६४·५१
(१२) दक्षिण अफ्रीका	२२·३६	६०८·४	१०·९०	२·४३९	६६·३६

(१५) रियूनियन (Reunion)	१३·२०	३५६·२	१०·६३	१·३६०	३७·८४
(१६) जावा	५६·२०	१५३०·०	११·४६	६·४४	१७५·३६
(१७) भारत	१४·७	३६६·६	६·५	१·३६४	३७·६५
(१८) फिलीपाइन्स	२७·०८	७३७·०	८·४५	२·२८७	६२·२३
(१९) जापान और फारमूसा	२८.२७	७६६·३	१२·६३	३·६५७	६६·५१
(२०) आस्ट्रेलिया	२१·३४	५८०·६	१४·३३	३·०६०	८३·०८

सारणी क्रमांक ४

भारत में शक्कर तथा गुड़ की प्रति मनुष्य सन् १९३२-३३ से १९५४-५५ तक अनुमानित खपत।

वर्ष नवम्बर से अक्टूबर	शक्कर की खपत टन	अनुमानित जन संख्या (लाख में)	गुड़ की खपत टन	प्रति मनुष्य खपत: प्रतिमनुष्य शक्कर पौंड में	प्रति मनुष्य खपत: प्रतिमनुष्य गुड़ पौंड में	कुल गुड़ तथा शक्कर पौंड में
१९३२—३३	१,००६,०००	३८१०·०	३,२४०,०००	६·३	२०·२	२६·५
१९३३—३४	९९६,०००	ःद२५.०	३,४८६,०००	६·१	२१·५	२७·६
१९३४—३५	१,०५९ ०००	३९३२·०	३,७०१,०००	६·५	२२·६	२९·१
१९३५—३६	१,०७४,०००	३९३६·०	४,१०१,०००	६·५	२४·८	३१·३
१९३६—३७	१,१६७,०००	३८४०·०	४,२६८,०००	७·३	२६·७	३४
१९३७—३८	१,१५१,०००	३८४०·०	४,३६४,०००	७·२	२०·१	२८·१
१९३८—३९	१,०७३,०००	३८४८·०	२,१८६,०००	६·६	१३·१	१९·७
१९३९—४०	१,०७४,१००	३९५०·०	१,९९९,०००	६·४	१८·०	२४·४
१९४०—४१	१,३७६,०००	३१९०·०	२,८१७,०००	८·५	२०·६	२७·३
१९४१—४२	१,१३२,०००	३२२१·९	२,१७२,०००	७·०	१८·५	२५·१
१९४२—४३	१,२२८,०००	३२५२·८	२,३४२,०००	८·९६	१८·१	२४·०
१९४३—४४	१,२३८,०००	३२८३·७	२,८३३,०००	६·५	२३·८	३०·३
१९४४—४५	१,२३६,०००	३३१४·६	२,८२८,०००	८·०	२२·१	३०·१
१९४५—४६	१,०४८,०००	३३४५·५	२,७१२,०००	६·०	२२·०	२८·०
१९४६—४७	९७२,०००	३३७६·४	३,०५८,०००	५·९	२०·०	२७·९
१९४७—४८	१,०४५,०००	३४०७·३	३,४९२,०००	७·५	२२·२	२९·५
१९४८—४९	१,१८२,०००	३४३८·२	२,८३७,०००	८·९६	१७·५	२६·५
१९४९—५०	१,१८४,४००	३४७०·०	२,७१४,०००	७·०	१७·२	२४·२
१९५०—५१	१,१९५,०००	३५७०·०	३,१३२,०००	७·६	१९·४	२७·०
१९५१—५२	१,२००,०००	३६१०·०	३,२४०,०००	७·८	२३·५	३१·०
१९५२—५३	१,६००,०००	३६५०·०	२,८७७,०००	११	१५	२६·०
१९५३—५४ (अनुमानित)	१,९००,०००	३६९०·०	३,१००,०००	१०	१६	२६·०
१९५४—५५ (अनुमानित)	१६०००००	३७३०·०	३,१००,०००	१०	१६	२६·०

* सन् १९३९-४० के पश्चात् के सब आँकड़े केवल भारतीय संघ हैं।

सारणी क्रमांक ५

भारतीय संघके प्रान्तों तथा रियासतोंमें सन् १९३७-३८ से सन् १९५३-५४ तक केन्द्रीय शक्कर के कारखानोंके द्वारा कुल शक्करका उत्पादन।

(संख्या टनोंमें)

वर्ष	उत्तरप्रदेश	बिहार	पूर्वी पंजाब	मद्रास	प० बंगाल	बम्बई	अन्य रियासतें
१९३७-३८	५३१,३००	२२५,३००	७,८००	२०,७००	७,६००	४०,७००	८१,२००
१९३८-३९	३२०,३००	१६१,६००	४,३००	२३,०००	४,५००	५२,२००	७६,२००
१९३९-४०	६५६,५००	३२२,१००	८,४००	३१,३००	१२,१००	६६,३००	१०५,१००
१९४०-४१	५१३,३००	२४६,१००	९,३००	४४,१००	१५,२००	८४,८००	१३३,३००
१९४१-४२	३८२,६००	११७,३००	७,६००	३०,८००	८,३००	८५,०००	११६,२००
१९४२-४३	६१२,५००	२३७,४००	५,६००	२७,५००	३,८००	७७,६००	८७,१००
१९४३-४४	७२७,१००	२१२,४००	११,२००	३६,२००	४,०६०	८१,२००	१२५,५००
१९४४-४५	५२८,२००	१६६,६००	८,२००	४६,५००	४,८००	७४,६००	१००,०००
१९४५-४६	५१५,६००	१७६,६००	६,७००	४६,२००	४,४००	७२,४००	६७,७००
१९४६-४७	५२५,८००	१४८,२००	८,०००	४८,७००	४,४००	६५,४००	१००,६००
१९४७-४८	५६६,६००	१६८,५००	१२,३००	५६,३००	५,२००	८६,६००	१४०,०००
१९४८-४९	५४३,५००	१४८,६००	६,७००	५५,०००	४,४००	११२,७००	१३३,४००
१९४९-५०	५०८,६००	२२२,१००	६,३००	६१,७००	३,४००	१११,०००	६२,५००
१९५०-५१	५६२,१४०	२२५,१०८	११,१४६	६०,८६४	३,५६७	१२१,३६६	५६,३००
१९५१-५२	८३४,०००	२२४,०००	२०,१००	८८,६००	७,२००	१५७,८००	१४१,१००
१९५२-५३	६१६,८००	२७२,८००	१६,१००	८०,६००	८,०००	१३८,८००	१००,२००
१९५३-५४	५५२,३००	१४६,३००	१६,७००	७१,७००	५,२००	१२२,८००	७८,१००

सारणी क्रमांक ६

संसार के कुछ महत्त्वपूर्ण देशों में शक्करकी प्रति मनुष्य खपत तथा बिक्री का मूल्य।

सब आँकड़े पौंड में

देशों के नाम	प्रति मनुष्य खपत पौण्डमें				प्रति पौंडकी आनोंमें कीमत (बिक्री) सितम्बर १६५१
	१६३७–३८	१६४८–४६	१६४६–५०	१६५१ (सितम्बर)	
(१) बेल्जियम	७०	६६	७३	६८·१	६·६
(२) अर्जनटाईना	७०	८०	७७	७८·१	७·७
(३) आस्ट्रेलिया	११७	१३०	१४३	१२९·६	४·१
(४) ब्राजील	५२	७०	७१	६३·६	६·६
(५) क्यूबा	८०	१६८	१४०·१	१२६·६	४·१
(६) जेकोस्लोवाकिया	५६	६८	७०	८६·६	१०·५
(७) डेनमार्क	१२१	६६·०	११२·०	६६·६	३·५
(८) मिश्र	२१	२६·०	३०·०	३०·२	५·६
(९) फ्रान्स	५५	५५	६०·०	५९·५	६·६
(१०) हंगरी	२६	४६	४८	...	...
(११) भारत *	७·३	८·६६	७·०	७·८	७·१
(१२) इटली	२०	२८	२८	२६·५	१४·६
(१३) न्यूजीलैंड	...	११६·०	१३८·०	१०८·३	७·६
(१४) नार्वे	७४	६०	६२·०	...	...
(१५) पौलैंड	२६	४६	५०	४३·४	१५·२
(१६) स्पेन	२०	१६	१९	...	...
(१७) स्वीजर लैंड	६३	६०	९५	६३·३	६·३
(१८) साऊथ अफ्रीकन संघ	६१	६६	९५	१०१·७	३·६
(१९) इग्लैंड	१११	६०	६२	८६·६	४·५
(२०) संयुक्तराष्ट्र अमेरिका	६५	११५	१०६	१०३·३	७·८
(२१) जापान	२४	८	६	१३·६	११·०
(२२) जर्मनी	५६	४४	५४	७१·४	६·४
(२३) कनाडा	१०१	१०१	११२	१००·३	६ ०
(२४) पाकिस्तान	...	...	२४·३	५·१	८·८
(२५) आस्ट्रीया	६१	४१	४४	६१·७	१०·६
(२६) हालैंड	६४	६६	१०८	...	...
(२७) मेक्सिको	३३	५६	५७	५४·०	३·६
(२८) स्वीडन	१०६	१०२	११६	...	...
(२९) रूस	३१	२६	२६	...	...
(३०) पुर्तगाल	२०	२६	२६	...	...
(३१) आयरलैंड	६०	८५	६५	११६·०	५·४

* भारतमें शक्करकी खपतमें गुड़की खपत नहीं जोड़ी गई है। गुड़की खपत जोड़ने पर सन् १६५१ में यहांकी खपत ३१ पौण्ड प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष रही थी।

सारणी क्रमांक ७

सन् १९४६–१९४७ से १९५३–५४ तक प्रांतों में कुचली गई गन्नेकी मात्रा। (सब आँकड़े हजार टन में)

प्रांत	१९४६–४७	१९४७–४८	१९४८–४९	१९४९–५०	१९५०–५१	१९५१–५२	१९५२–५३	१९५३–५४
(१) पंजाब (पूर्वार्ध)	७९	१२५	९९	९५	११४	२१३	१५८	१६५
(२) उत्तरप्रदेश	५,४८८	५,४७६	५,४७६	५,२७८	६,०३८	८,९९९	७,१७४	५,६१५
(३) बिहार	१,४७०	१,६०६	१,७८७	२,२४१	२,१९४	२,१७०	२,७२१	१,४५४
(४) मद्रास	५९६	६८६	५८७	६४८	९७२	१,१४७	८६०	६५०
(५) बम्बई	७७७	९९१	१,०२४	९३७	१,०४५	१,४२५	१,२०७	१,०५७
(६) पश्चिमी बंगाल	४६	४८	४१	३२	३२	६६	७१	५१
(७) उड़ीसा	२२	३५	३३	२१	२६	२९	२९	३३
(८) भोपाल	३७	५३	५८	५३	४५	४१	....	४१
(९) मध्यभारत	१३०	१८१	२०३	१२६	९५	१९४	८०	१२४
(१०) मैसूर	१५८	१८९	३१८	१७६	२५	३२०	२४६	११३
(११) पेप्सू	९०	२३०	१४१	४२	११५	३२२	१८३	१२८
(१२) राजस्थान	३४	५४	९३	३५	१९	८८	६	५८
(१३) हैदराबाद	१७९	२२८	२३६	१९२	२५२	४०३	४०५	३७२
समस्त भारतवर्ष	९,११७	१०,९११	१०,११७	९,६०१	११,०१६	१५,४९६	१३,१६७	९,६०२

सारणी क्रमांक ८

सन् १९३२-३३ से १९५३-५४ तक शक्करके कारखानोंके द्वारा गन्नेके किसानों तथा मजदूरोंको दिया हुआ अनुमानित धन।

सब अङ्क हजारकी संख्यामें

मौसम	उत्तर प्रदेश तथा बिहारमें गन्नेकी प्रतिमन अनुमानित औसत मूल्य			कारखानोंके द्वारा गन्नोंके लिये दिया हुआ अनुमानित धन	कारखानोंमें अकलापूर्ण मजदूरोंकी संख्या	अकला निपुण मजदूरोंको दिया हुआ अनुमानित धन
	रु०	आ०	पा०	अङ्क हजार की संख्या में रु०	आंकड़े हजार की संख्यामें	अङ्क हजार की संख्या में रु०
१९३२—३३	—	५	६	३,१४,८९	२६	१,७७८
१९३३—३४	—	५	६	४,८३,९८	६७	४,०३२
१९३४—३५	—	५	३	५,६७,६६	७८	४,६८०
१९३५—३६	—	५	३	८,८१,०३	८२	४,९३२
१९३६—३७	—	४	५	८,६२,१६	१००	६,०००
१९३७—३८	—	५	१	१,५७,५३	१००	६,०००
१९३८—३९	—	६	१०	८,११,००	१००	६,०००
१९३९—४०	—	८	५	१८,८१,०९	१००	७,०००
१९४०—४१	—	४	८	८,६६,४०	१००	५,६५०
१९४१—४२	—	७	—	६,१५,००	१००	४,०००
१९४२—४३	—	१०	—	१३,००,००	१००	५,०००
१९४३—४४	—	१२	—	१८,००,००	१००	५,५००
१९४४—४५	—	१४	—	२३,००,००	९०	६,२००
१९४५—४६	—	१५	—	२४,५६,००	१००	६,६००
१९४६—४७	१	४	—	३३,००,००	१३०	९,०००
१९४७—४८	२	०	—	६१,००,००	१३०	११,०००
१९४८—४९	१	११	६	५०,००,००	१३०	१२,०००
१९४९—५०	१	११	—	४५,३६,६८	१३०	१३,०००
१९५०—५१	१	१२	—	५१,७०,००	१३०	१३,०००
१९५१—५२	१	१२	—	५१,४८,००	१३०	१४,०००
१९५२—५३	१	५	—	३४,६५,००	१३०	१४,०००
१९५३—५४	१	७	—	३९,५०,००	१३०	१४,०००

सारणी क्रमांक ६

समस्त संसार के शकर के विषय में आँकड़े—२२ वर्ष का रेकार्ड [छोटे (Short ton) हजार टनों में, कच्ची कीमत (Raw Value)] ।

फसलका वर्ष	फसलके शुरूमें स्टाक	उत्पादन	खपत	फसलके वर्षके अन्तमें स्टाक	शकरकी औसत कीमत (ब)	यू.एस.बी.एल.एस०का थोक कीमतोंकासूचीपत्र १९४७–४८ =१००	शकर की कीमतें जो कि सूचीपत्र से कम हो गई
१९२२–२३	५,३१२	१९,७१६	२०,४०५	४,६२३	४·८९९	६५·४	७·४९
१९२३–२४	४,६२३	२१,३०४	२०,४७६	५,४६१	४·००	६३·८	६·२७
१९२४–२५	५,४६१	२६,०३४	२४,०२८	७,४५७	२·५०८	६७·३	३·७३
१९२५–२६	७,४५७	२६,२४४	२५,४३१	८,२७०	२·५२८	६५·०	३·८९
१९२६–२७	८,२७०	२५,६६९	२५,७८८	८,१५१	२·९४२	६२·०	४·७५
१९२७–२८	८,१५१	२७,९८२	२७,४११	८,७२३	२·३८८	६२·९	३·८०
१९२८–२९	८,७२३	२९,४५३	२८,३०५	९,८७१	१·८१३	६१·९	२·९३
१९२९–३०	९,८७१	२९,३७३	२७,५९५	११,६४९	१·२५७	५६·१	२·२४
१९३०–३१	११,६४९	३०,४३६	२८,३८८	१४,०९७	१·१५२	४७·४	२·४३
१९३१–३२	१४,०९७	२७,५२३	२७,६९१	१३,९२९	०·७७६	४२·१	१·८४
१९३२–३३	१३,९२९	२५,४२२	२६,५६४	१२,७८७	०·८४०	४२·८	१·९६
१९३३–३४	१२,७८७	२६,४२१	२६,८२२	१२,३८६	०·८९७	४८·७	१·८४
१९३४–३५	१२,३८६	२६,८०४	२६,०६७	११,१२३	०·८५८	५२·०	१·६५
१९३५–३६	११,१२३	२९,५५१	३०,१६४	१०,५१०	०·८८६	५२·५	१·६९
१९३६–३७	१०,५१०	३१,६९४	३१,९०७	१०,२९७	१·१५९	५६·७	२·०७
१९३७–३८	१०,२९७	३१,९८८	३०,६७७	११,६०९	१·०३५	५२·५	१·९७
१९३८–३९	११,६०९	३१,१४३	३१,१६३	११,५८९	१·१९६	४९·८	२·४०
१९४९–५०	७,९००	३२,४६९(अ)	३३,१०७	७,७९६	४·५२३	९९·४	४·५५
१९५०–५१	७,७९६	३६,५१२(ब)	३४,७१०	९,७३९	५·८५७	११३·३	५·१७
१९५१–५२	९,७३९	३८,९५८(अ)	३६,१६७	१२,४८६	४·५५१	११२·६	४·०४
१९५२–५३	१२,४८६	३६,९५५(अ)	३७,१७०	१२,२७१	३·६९५	११०·२(इ)	३·३५(इ)
१९५३–५४	...	३८,८८१	...	...	....	....	...

यू० एस० बी० एल० यस० U. S. B. L. S.—United States Bureau of Lahour Statistics.

सारणी क्रमांक १०

भारतमें प्रान्तीय आधार पर सन् १९३२-३३ से सन् १९५३-५४ तक शकरके कारखानोंमें शकरकी गन्ने से औसतन् तथा अधिक से अधिक प्रतिशत प्राप्ति ।

वर्ष	समस्त भारत की औसत	उत्तर-प्रदेश की औसत	बिहार की औसत	बम्बई की औसत	पूर्वीय पंजाब की औसत	मद्रास की औसत	उड़ीसा की औसत	पश्चिमी बंगाल की औसत	मैसूर की औसत	बम्बई प्रान्तकी औसत	आन्ध्र की औसत	मध्य भारत की औसत	पेप्सूकी औसत	राजस्थान की औसत	हैदराबादकी औसत	त्रावनकोर की औसत	चीफ कमिश्नरके प्रान्तोंकी औसत	भारतमें अधिकसे अधिक प्राप्ती
१९३२—३३	८·६६	८·५५	८·६०	१०·००	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	१०
१९३३—३४	८·८०	९·०८	८·८२	१०·००	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	१०
१९३४—३५	८·६६	८·५६	८·७९	१०·३७	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	११·१०
१९३५—३६	९·२९	९·६०	८·९३	१०·४७	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	११·३४
१९३६—३७	९·५०	९·६५	९·२०	१०·६८	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	११·४३
१९३७—३८	९·३८	९·१८	९·५८	००·९७	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	११·६३
१९३८—३९	९·२९	६·१४	९·००	११·२९	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	...	१२·२५
१९३९—४०	९·४७	९·३७	९·२९	१०·९७	८·८०	९·१२	८·३९	९·३६	१०·२२	११·४१	...	...	...	...	...	...	...	१२·३१
१९४०—४१	९·७६	९·८७	९·८६	९·९४	९·७०	९·१५	८·७७	८·२९	९·११	१०·७४	...	...	...	...	...	...	...	११·१५
१९४१—४२	९·७७	९·८७	१०·३५	९·८७	९·१६	८·७४	९·४३	७·७०	८·३५	११·३९	...	...	...	...	...	...	...	१२·४५
१९४२—४३	१०·३१	१०·२६	१०·९३	१०·६४	९·१४	९·४५	९·९५	७·७४	९·७१	११·८९	...	...	...	...	...	...	...	१३·३५
१९४३—४४	१०·०६	९·९२	१०·५३	१०·९८	१०·१४	९·३२	९·६६	९·५१	१०·३३	११·८	...	...	...	...	...	...	...	१२·८४
१९४४—४५	१०·२२	१०·२०	१०·६९	१०·७९	१०·४७	९·११	१०·६६	१०·३४	९·७४	११·१७	...	...	...	...	...	...	...	११·८४
१९४५—४६	१०·१३	१०·०९	१०·४९	१०·९७	१०·१२	८·९६	१०·०५	१०·३३	१०·८५	११·१६	...	...	...	...	...	...	...	१२·२८
१९४६—४७	९·८८	१०·०३	१०·०८	१०·३०	१०·१७	८·१७	१०·३७	९·६१	१०·२०	१०·८७	...	...	...	...	...	...	...	१३·४६
१९४७—४८	९·८५	९·८०	१०·४९	११·०५	९·८६	८·६५	९·७०	१०·८४	९·१८	११·००	...	...	...	...	...	...	...	११·९३
१९४८—४९	९·९७	९·९३	१०·३४	१०·८३	९·७६	९·४०	१०·४४	१०·६९	८·५७	...	...	९·२९	८·३१	८·८१	९·००	७·३७	८·८३	१२·५३
१९४९—५०	९·८९	९·६३	९·११	११·८४	९·७३	९·६०	९·२२	१०·५५	९·५४	...	...	९·०६	५·९३	८·७३	१०·३६	९·९४	८·९६	१३·१०
१९५०—५१	१०·०३	९·८१	१०·२६	११·६१	९·७७	९·३५	९·७५	११·२३	११·३६	...	...	९·२३	८·१६	८·११	९·५९	८·२१	९·५३	१३·३४
१९५१—५२	९·५७	९·२७	१०·३२	११·०८	९·४१	८·६५	९·०२	१०·८७	१०·६२	...	...	९·३१	८·६८	८·५०	९·६८	६·५८	८·४१	१२·४५
१९५२—५३	९·९८	९·७५	१०·०३	११·५१	१०·२१	८·८४	८·१४	१०·३३	११·१३	...	९·६६	९·३३	८·२२	९·७३	१०·६०	७·३२	...	१२·९७
१९५३—५४	१०·०८	९·८७	१०·०६	११·६२	१०·०६	९·२०	८·२५	१०·०५	१०·२०	...	९·४३	९·४७	८·६६	९·२१	१०·८२	७·१२	९·४५	...

गणतंत्र भारतमें शक्करकी मिलोंकी विस्तृत सूची

"एस"—सल्फीनेशन, "डी० एस"-डबल सल्फीनेशन "सी"–कार्बोनेशन "डी० सी" डबल कार्बोनेशन
† ये मिलें सन् १९५२-५३ में बंद रही थी।

मिलोंके पूरे नाम तथा मैनेजिंग एजेण्टके पते	स्थापन	जिला	तारका पता	रोजाना गन्नेको कुचलनेकी शक्ति	
	पश्चिमी बंगाल				
(१) †श्री राधाकृष्ण शुगर मिल्स, लि० ए०—लेसीस बंगाल पायोनियर एग्रीकल्चर फार्म लि० १३८ हरिसन रोड, कलकत्ता।	बेलडांगा Beldanga	मुर्शिदाबाद	Sugar Sweet Calcutta	७५०	D.S.
(२) दी रामनगर केन एण्ड शुगर कम्पनी लि०, मैनेजिंग एजेन्ट एण्डरसन राइट लि०, ७ वेलेजली प्लेस; कलकत्ता।	प्लासी पो० आ०	नदिया	Amasis Calcutta	५०० / ७००	D.S.
(३)† राजलक्ष्मी शुगर मिल्स, कार्तिक बोस एण्ड सन्स डा० बोसस् लेबोरेटरी, लि०, ४५ एमहर्स्ट स्ट्रीट, कलकत्ता।	मित्र बागान बसीरहाट	२४ परगना		७५	S.
(४) ऑल इण्डिया शुगर मिल्स लि०; चक्रवर्ती रॉय एण्ड कम्पनी लि० १ ब्रिटिश इण्डियन स्ट्रीट, कलकत्ता।	हाबड़ा Habra	२४ परगना		६००	
	दक्षिणी बिहार				
(१)† गया शुगर मिल्स लि०, लाला गुरु शरण लाल, सी० आई० ई० पो० आ० गुसारू मिल्स।	गुसारू पो० आ० गुसारू मिल्स	गया	Sugarmills Gaya	८५०	D.S.
(२) दी साउथ बिहार शुगर मिल्स, लि०, एन० के० जैन एण्ड कं० लि० २-३ क्लाइव रोड, कलकत्ता।	बिहटा	पटना	Sugar Bihar	१२००	D.S.
(३)† मोहनी शुगर मिल्स, लि०, मेसर्स करम चंद थेपर एण्ड ब्रदर्स लि०, ५ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।	वारसलीगंज	गया	Spiritual	७००	D.S.

(४) रोहतास इण्डस्ट्रीज लि०, साहु जैन लि०, पो० आ० डालमियानगर (शाहाबाद)।	डालमिया नगर	शाहाबाद	Sahujain Dalmia-Nagar	१८००	D.C. / D.S.
(५) गंगा देशी सुगर फैक्टरी लि०, मि० बिहारीलाल, बक्सर।	पो० आ० बक्सर	शाहाबाद	Sugar Baxar	१००	S.
उत्तरी बिहार					
(१) सकरी शुगर वर्क्स आफ दी दरभंगा शुगर कम्पनी लि०, रजिस्टर्ड आफिस--लोहाट पो० आ० जिला दरभंगा।	सकरी पो० आ०	दरभंगा	Sugar Lohat	७५०	D.S.
(२) लोहाट शुगर वर्क्स आफ दी दरभंगा शुगर कम्पनी लि०, रजिस्टर्ड आफिस—लोहाट पो० आ०।	लोहाट पो० आ०	दरभंगा	Sugar Lohat	१३००	D.S.
(३) रहयाम शुगर कम्पनी लि०, बेग सदरलैंड एण्ड कं० लि०, पो० आ० बाक्स नं० २१ कानपुर (यू० पी०)।	रहयाम फैक्टरी पो० आ०	दरभंगा	Ryam Factory Rysuco	७७६	C.
(४) समस्तीपुर सेण्ट्रल शुगर कम्पनी लि०, बेग सदरलैंड एण्ड कं० लि०, पो० आ० बाक्स नं० २१, कानपुर। (यू० पी०)	समस्तीपुर	दरभंगा	Begg Kanpur	७६५	S.
(५) न्यू इण्डिया शुगर मिल्स लि०, कॉटन एजेंट लि०,८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता।	हसनपुर रोड पो०आ०हस० शुगर मिल	दरभंगा	Cotagent Calcutta	११०० / १३००	D.S.
(६) दी मोतीपुर शुगर फैक्टरी लि०, अब्दुल रहिम ओस्मान एण्ड कं० इण्डिया लि०।	मोतीपुर	मुजफ्फरपुर	Muslim Calcutta	१२००	D.S.
(७) राजमोहन स्ट्रीट, कलकत्ता १ वेल सुण्ड शुगर कम्पनी लि०, बांगुर ब्रदर्स लि० १४ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।	रीघा, पो० आफिस	मुजफ्फरपुर	Welsugar Calcutta	८५०	D.S.
(८) चम्पारन शुगर कम्पनी लि०, बरराह फैक्टरी, बेग सदरलेंड एण्ड कं० लि०, पो० आ० बाक्स नं० २१ कानपुर (यू० पी०)।	पोस्ट आफिस बारा चकिया	चम्पारन	Begg Kanpur	६३२	D.C.
(९) श्री हनुमान शुगर मिल्स लि०, श्री हनुमान इण्डस्ट्रीज कम्पनी लि०, १५८ हरीसन रोड, कलकत्ता।	इण्डस्ट्रीज (India) मोतीहारी	चम्पारन	Migatly-holy Calcutta	८५०	D.C.
(१०) दी सुगौली शुगर वर्क्स लि०, मिस्टर मोहम्मद हनीफ एण्ड हाजी अशरफ अली ३ एण्ड ५, राजा मोहन स्ट्रीट, कलकत्ता।	सुगौली	चम्पारन	Taj Sugauli	६००	D.C.

(११) मोतीलाल पदमपत शुगर मिल कम्पनी लि०, हेड आफिस—कमला टॉवर, कानपुर।	मझौलिया	चम्पारन	Motipat Kanpur	१०००	D.S.
(१२) चम्पारन शुगर कम्पनी लि०, चेनपाटिया फैक्टरी, बेग सदरलैंड एण्ड कम्पनी लि०, पोस्ट बाक्स नं० २१ कानपुर (यू० पी०)।	चेनपाटिया	चम्पारन	Begg Kanpur	८७०	S.
(१३) एस० के० जी० शुगर मिल्स लि०, साहु जैन लि०, डालमिया नगर, शाहाबाद।	लौरिया	चम्पारन	Sahujain Dalmia Nagar	१२००	D.S.
(१४) दी न्यू स्वदेशी शुगर मिल्स लि०, कॉटन एजेंट लिमिटेड (१) ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता (२) इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग बैंक स्ट्रीट, बम्बई।	नरकटिया गंज	चम्पारन	Cotagent Calcutta	१०००	D.S.
(१५) हरीनगर शुगर मिल्स लि०, नारायन लाल बंसीलाल २०७ कालबा देवी रोड, बम्बई २।	पोस्ट आफिस हरीनगर	चम्पारन	Cryssugar Bombay	१६०० १७००	D.S.
(१६) नार्थ बिहार शुगर मिल्स लि०, कनौडिया कम्पनी लि०, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।	बगाह	चम्पारन	Norbisugar Calcutta	६५०	D.S.
(१७) सितलपुर शुगर वर्क्स लि०, मेसर्स डी० पी० घोष एण्ड आर० एम० दत्त, (१) ६३ ए, धरमतल्ला स्ट्रीट, कलकत्ता (२) इण्डियन प्रेस बिल्डिंग, इलाहाबाद।	गारौल	मुजफ्फरपुर	Kamla Garaul	८००	D.S.
(१८) कानपुर शुगर वर्क्स, लि०, मरहावरा फैक्टरी, बेग सदर लैंड एण्ड कं० लि०, पोस्ट बाक्स नं० २१ कानपुर।	Marhowrah मरहावरा	सारन Saran	Begg Kanpur	६३०	D.S.
(१९) दी बिहार शुगर वर्क्स आफ दी इण्डस्ट्रियल कारपोरेशन लि०, साराभाई सन्स लि०, पोस्ट बाक्स २८, अहमदाबाद हेड आफिस—शाहीबाग हाउस, विहेट रोड वेलर्ड एस्टेट, बम्बई।	पचरूखी	सारन	Indus Ahmedabad	११००	D.C.
(२०) न्यू सेवान शुगर एण्ड गुड़ रीफानिंग कम्पनी लि०, लेसीस दी स्टैण्डर्ड रिफाइनरी एण्ड डिस्टीलरी लि०, सेक्रेटरी—मेसर्स करमचन्द थेपर एण्ड ब्रदर्स लि०, ५ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।	सिवान	सारन	Spiritule Calcutta	६००	D.C.

(२१) इण्डियन शुगर वर्क्स, लेसीस—शेख खुदाबख्श पो० आ० सिवान।	सिवान	सारन	Deen Siwan	७००	D.S.
(२२) भारत शुगर मिल्स लि०, काटन एजेंटस लि० ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता।	सिध्वालिया	सारन	Cotagent Calcutta	६५०	D.S.
(२३) सासा मुसा शुगर वर्क्स लि०, मोसेल एण्ड कं० लि०, पोस्ट बाक्स २१६४, कलकत्ता।	सासामुसा	सारन	Sugar manuf. Calcutta	६५०	D.S.
(२४) दी विष्णु शुगर मिल्स लि०, बिलास-राय बनारसी लाल एण्ड कं० फेमस साइन बिल्डिंग, २० हैन्स रोड, बम्बई ११।	गोपाल गंज	सारन	Brijbilas Bombay	८००	D.S.
(२५) एस० के० जी० शुगर लिमिटेड, साहु जैन एण्ड कं० लि०, पोस्ट आफिस डालमिया नगर जिला शाहबाद।	हथुआ पो० आ० मीरगंज	सारन	Sahujain Dalmia Nagar	१४०० / १५००	D.S.

पूर्वीय उत्तर प्रदेश

(१) प्रतापपुर कम्पनी लिमिटेड, बेग सदरलैंड एण्ड कं० लि०, पोस्ट बाक्स नं २१ कानपुर।	मैरवा Mairwa	देवरिया	Begg Kanpur	७८४	D C
(२) † नूरी शुगर वर्क्स, प्रोपराइटर नूरी-मियां एण्ड कम्पनी भटनी।	भटनी	देवरिया	Noori Bhatni	७२६	D.S.
(३) श्रीसीताराम शुगर कम्पनी लि०, करमचन्द थेपर एण्ड ब्रदर्स लि०, ५ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।	बैतालपुर	देवरिया	Spritual Calcutta	६००	D.S.
(४) कानपुर शुगर वर्क्स लि० गौरी फैक्टरी, बेग सदरलैंड एण्ड कं० लि० पोस्ट आफिस बाक्स नं० २१ कानपुर।	पोस्ट आफिस गौरी बाजार	देवरिया	Begg Kanpur	७३८	D.S.
(५) देवरिया शुगर मिल्स लि०, करमचन्द थेपर एण्ड ब्रदर्स, लि०, ५ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता।	देवरिया	देवरिया	Spiritual Calcutta	६००	D.S.
(६) † देवरिया बैतालपुर सिन्धी शुगर मिल्स, लिमिटेड, प्रो० मेसर्स श्रीसीताराम शुगर कं० लि०, एण्ड मेसर्स न्यू सावन शुगर एण्ड गुड़ रिफाइनिंग कम्पनी लिमिटेड मेसर्स करमचन्द थेपर एण्ड ब्रदर्स लिमिटेड, ५ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता।	देवरिया	देवरिया	Spritual Calcutta	३५१	D.S.

(७) सरैया शुगर फैक्टरी, सीनीयर मैनेजिंग पार्टनर, सरदार सर सुरेन्द्र सिंह मजीथिया नाईट, सरदार नगर।	सरदारनगर	गोरखपुर	Maoithias Sardar Nagar	११२६	D S.
(८) डायमण्ड शुगर मिल्स लि०, मुरारका एण्ड सन्स लि०, ४—ई डलहौजी स्क्वेयर स्टीफन हाउस कलकत्ता।	पिपराइच	गोरखपुर	Canesugar Calcutta	७०० / ८००	D.S.
(९) दी शंकर शुगर मिल्स लि०, इंद्रचंद हरीराम २ दोयेहट्टा स्ट्रीट, कलकत्ता।	कैप्टनगंज	देवरिया	Chinimil Calcutta	६५५	D.S.
(१०) दी पंजाब शुगर मिल्स कम्पनी लि०, मेसर्स नारंग ब्रदर्स एण्ड कं०, लि०,३ केवेलरी लाइन्स, दिल्ली।	घुघली	गोरखपुर	Factory Ghughali	१२२	D.S.
(११) महावीर शुगर मिल्स लि०, द्वारकादास बैजनाथ, सिस्वा बाजार।	सिसुआबाजार	गोरखपुर	Mahabirji Siswabazar	६६७	D.S.
(१२) दी विष्णु प्रताप शुगर वर्क्स, राजा अनिरुद्ध प्रताप नारायण सिंह पडरौना राज।	खड्डा Khadda	देवरिया	Sugar Rajabazar Khadda	७६१	D S.
(१३) दी लक्ष्मी देवी शुगर मिल्स, लि०, मेसर्स अग्रवाल एण्ड कं० पोस्ट आफिस छितौनी, टेलीफोन-पडरौन ४४।	छितौनी	देवरिया		७०० / ७५०	D.S.
(१४, ईश्वरी खेतान शुगर मिल्स लि०, देवीदत्त सूरजमल, पडरौना देवरिया।	लक्ष्मीगंज	देवरिया	Khetan Padrauna	७३२	D.S.
(१५) दी रामकोला शुगर मिल्स कं० लि०, चेयरमैन लाला बालमुकुन्द शाह सावने हेड आफिस डी० ब्लाक० ओडेन बिल्डिंग कनाट प्लेस न्यू देहली।	रामकोला	देवरिया	Tirestate New-Delhi	११०५	D.S.
(१६) महेश्वरी खेतान शुगर मिल्स लि०, मेसर्स देवीदत्त चतुर्भुज पोस्ट आफिस रामकोला, देवरिया।	रामकोला	देवरिया	Khetan Ramkola	७७६	D.S.
(१७) दी पडरौना राजकृष्ण शुगर मिल्स वर्क्स लिमिटेड, रायबहादुर कुँवर रूद्र प्रताप नारायणसिंह जगदीशगढ़ स्टेट, पडरौना।	पडरौना	देवरिया	Krishna Padrauna	१०४८	D.S.
(१८) जगदीश शुगर मिल्स लि०, सेठ मंगतूराम जयपुरिया अँथेराइज्ड कण्ट्रोलर स्वदेशी हाउस कानपुर।	कैथकुईयान	देवरिया	Jagdish Padrauna	६५०	D.S.

(१९) दी युनाइटेड प्रोविंसेस शुगर कंपनी लिमिटेड, जेम्स फिनले एण्ड कं० लि०, २ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।	स्योराही पोस्ट आफिस	देवरिया	Marcator Calcutta	६२५	D.S.
(२०) गणेश शुगर मिल्स लिमिटेड, पोद्दार जयपुरिया एण्ड कम्पनी ३३ नेताजी सुभाष रोड कलकत्ता।	पोस्ट आफिस आनन्द नगर	गोरखपुर	Jaipuria Calcutta	८३२	D.S.
(२१)† श्रीसरदार शुगर मिल्स कम्पनी, प्रो० चम्पालाल धनपतसिंह हेड आफिस—११ आर्मेनियन स्ट्रीट कलकत्ता।	रामचन्द्री	गोरखपुर		८०	D.S.
(२२) दी माधो कन्हैया महेश गौरी शुगर मिल्स लिमिटेड।	मण्डरवा	बस्ती	Jagdish Munderwa	७०० / ८००	D.S.
(२३) बस्ती फैक्टरी आफ दी बस्ती शुगर मिल्स कम्पनी लि०, नारंग ब्रदर्स एण्ड कं० लि०, रजिस्टर्ड आफिस—कपूर बिल्डिंग हाथी गेट—अमृतसर, व्यवस्थापन कार्यालय ३ केवेलरी लाइन्स, दिल्ली।	बस्ती	बस्ती	Factory Basti	६०० / १०००	D.C.
(२४) वाल्टरगंज फैक्टरी आफ दी बस्ती शुगर मिल्स कम्पनी लि०, नारंग ब्रदर्स एण्ड कं० लि०, कपूर बिल्डिग, हाथीगेट अमृतसर दिल्ली कार्यालय—३ केवेलरी लाइन्स दिल्ली।	वाल्टरगंज	बस्ती	Sugar Walter-gang	८०० / ६००	D.S.
(२५) श्री आनन्द शुगर मिल्स लिमिटेड अग्रवाल शुगर एजेंट्स लि०, जयपुरिया कंसर्न ३३ नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता।	खलीलाबाद	बस्ती	Jaipuria Calcutta	५५०	D.S.
(२६) दी सेकसरिया शुगर मिल्स लि०, गोविन्दराम ब्रदर्स लि० सेकसरिया चेम्बर्स १३६ मेडोज स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।	बभनान	गोंडा	Fairtrade Bombay	८००	D.S.
(२७) नवाबगंज शुगर मिल्स कम्पनी लि०, नारंग ब्रदर्स एण्ड कं० लि०, कपूर बिल्डिंग हाथीगेट अमृतसर आपरेटिंग आफिस —३ केवेलरी लाइन्स दिल्ली।	नवाबगंज	गोंडा	Narangbro Delhi	१८५०	D.S.
(२८) बलरामपुर शुगर कम्पनी लि०, बलरामपुर फैक्टरी, बेग सदरलैंड एण्ड कम्पनी लि० पोस्ट आफिस बाक्स नं० २१ कानपुर (यू० पी०)।	बलरामपुर	गोंडा	Begg Kanpur	७६८	D.S.

(२९) बलरामपुर शुगर कम्पनी लि०, तुलसीपुर फैक्टरी, बेग सदर लैंड एण्ड कं० लि०, पोस्ट बाक्स नम्बर २१ कानपुर।	तुलसीपुर	गोंडा	Begg Kanpur	७४६	D.S.
(३० रायबहादुर लक्ष्मनदास शुगर एण्ड जनरल मिल्स लि , मित्तल एजेंसी ११, ए० पी० सेन रोड, लखनऊ।	पोस्ट आफिस जरवालरोड	बहराइच	Luxaman Sons Lucknow	८६५	D.S.
(३१) दी बरवाल शुगर मिल्स कम्पनी लि०, (१) पण्डित दुर्गाशंकर दीक्षित, (२) लाला दयाराम, ५४।१४ केनाल रेञ्ज, कानपुर।	बरवाल	बाराबंकी	Basumills Kanpur	६५०	D.S.
(३२) सेठ रामचन्द्र एण्ड सन्स शुगर मिल्स लिमिटेड डायरेक्टर्स—(१) सेठ रोशनलाल (२) सेठ पुरुषोत्तमदास (३) सेठ जुगलकिशोर (४) सेठ रामस्वरूप, बाराबंकी।	बाराबंकी	बाराबंकी	Malaco Barabanki	९८४	D.S.
(३३) रतन शुगर मिल्स कम्पनी लि० रतन एजेंट्स सीण्डिकेट १०७ स्ट्रीट फील्ड रोड बनारस सिटी।	शाहगंज	जुनापुर	Ratan Banaras	६६६	D.S.
(३४) श्रीकृष्णा देशी शुगर वर्क्स लेसीस, जयनारायण प्रसाद एण्ड कम्पनी झूसी (अलाहाबाद)।	झूसी	इलाहाबाद	Sugar Mills Jhusi	६००	D.S.
(३५) † त्रिवेनी देशी शुगर वर्क्स लेसीस एल॰ जयनारायण प्रसाद अग्रवाल नैनी	नैनी	इलाहाबाद	Madho Naini	३००	S.
(३६) दी सेकसरिया बिस्वान शुगर फैक्टरी दी सेकसरिया इण्डस्ट्रीज लिमिटेड सेकसरिया चेम्बर्स, १३६ मेंडोज स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई।	बिस्वान	सीतापुर	Factory Biswan	१२७०	S.
(३७) कमलापत मोतीलाल शुगर मिल्स, प्रोपराइटर मेसर्स कमलापत मोतीलाल पोस्टबाक्स ६६, कानपुर।	मोतीनगर	फैजाबाद	Lalmoti Kanpur	केन ११०० गुड़१००	D.S

पश्चिमी उत्तर प्रदेश

(१) दी लक्ष्मी शुगर मिल्स एण्ड ओइल मिल्स लिमिटेड हेड आफिस—हरदोई, राय बहादुर वंशीधर एण्ड कम्पनी	हरदोई	हरदोई	Laxmi Hardoi	१५७२	D.S.

(२) दी अवध शुगर मिल्स लि०, कॉटन एजेंटस् [१] इण्डस्ट्री बिल्डिंग बम्बई [२] ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता	हरगांव	सीतापुर	Cotagents Calcutta Lucky Bombay	१६२५	D.S.
(३) दी लक्ष्मीजी शुगर मिल्स कम्पनी लि०, सेठ किशोरीलाल साहेब, महोली (सीतापुर)	महोली	सीतापुर	Laxmi Maholi	१२५०	C..
(४) गोविन्द शुगर मिल्स लिमिटेड, कॉटन एजेंटस् लि०, (अ) इण्डस्ट्री हाउस १५६ चर्चगेट बम्बई (ब) ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता।	खमारिया पण्डित पोस्ट आफिस आयरा स्टेट	लखीमपुर खेरी	Cotagent Calcutta Lucky Bombay	८००	D.S.
(५) दी हिन्दुस्तान शुगर मिल्स, लि०, बघराज एण्ड कम्पनी जहाँगीर वाडिया बिल्डिंग ५१ महात्मा गांधी रोड फोर्ट, बम्बई।	गोलागोकरन्नाथ	खेरी	Shree Bombay	२१२३	"
(६) रोजाशुगर वर्क्स एण्ड डिस्टीलरी आफ कॅरव (Carew) एण्ड कं० लि०, ग्लेडस्टन ल्याल एण्ड कं० लि०, ४ फेयरलाइ प्लेस कलकत्ता।	रोजा	शाहजहाँपुर	Ghat Calcutta	७६२	"
(७) एच आर शुगर फैक्टी, लि०, साहु मुरली मनोहर, १३ सिविल लाइन्स, बरेली।	बरेली	बरेली	Sugar Bareilly	६०२	"
(८) दी केसर शुगर वर्क्स लिमिटेड, किलाचंद देवचंद एण्ड कं० ४५/४७ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई।	बहेरी	बरेली	Kesuworks Bombay	१२८०	"
(९) एल० एच० शुगर फैक्टरीज एण्ड ऑइल मिल्स लिमिटेड, राजा राधारमन पीलीभीत।	पीलीभीत	पीलीभीत	Crystal Pilibh't	१८०४	"
(१०) अपर गेंजेस् शुगर मिल्स लि०, कॉटन एजेंटस् लि०, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।	सिहोरा	बिजनौर	Cotagents Calcutta	२५७५	"
(११) शिवप्रसाद बनारसीदास शुगर मिल्स, लेसीस सेठ कुन्दन लाल।	बिजनौर	बिजनौर	Sugarmills Bijnor	११००/१२००	"
(१२) दी धामपुर शुगर मिल्स, लि०, कुँवर मुरली मनोहर साहेब १३ सिविल लाइन्स, बरेली।	धामपुर	बिजनौर	Sugarmills Dhampur	६६४	"
(१३ श्री जानकी शुगर मिल्स एण्ड कम्पनी (१) सेठ सुन्दरलाल छोईवाला हवेलीवाला (२) सेठ मदन लाल हवेलीवाला (३) सेठ सरजूप्रसाद हवेलीवाला न्यू गणेशगंज लखनऊ	दोईवाला	देहरादून	Sugar Doiwala	६५०	D.C./D.S.

(१४) दी गंगा शुगर कार्पोरेशन लिमिटेड, ऑफिस-ओडियन बिल्डिंगज, कॅनाट प्लेस, न्यू देहली चेयरमैन—राय बहादुर एल० ईश्वरदास एम० ए० एल० एल० बी० दी महालक्ष्मी शुगर मिल्स, कं लि०, हमीरा (कपूरथला स्टेट) जिला जलन्धर।	देवबन्द	सहारनपुर	Sugar Deoband	१०२१	D.C. / D.S.
(१५) राय बहादुर नारायण सिंह शुगर मिल्स लिमिटेड, सरदार राजदेव सिंह २ कर्जनरोड. न्यू देहली।	लक्सर	सहारनपुर	Sugar Lhaksar	१२५०	D.C.
(१६) दी लार्ड कृष्णा शुगर मिल्स, लि० रजिस्टर्ड ऑफिस, रूपर-पूर्वी पंजाब, सेट शिव प्रसाद इकबालपुर सहारनपुर।	इकबालपुर	सहारनपुर	Sugar Saharanpur	१२५०	D.S.
(१७) महालक्ष्मी सूगर मिल्स लि० इकबाल पुर।	इकबालपुर	सहारनपुर			
(१८) सर शादीलाल शुगर एण्ड जनरल मिल्स लिमिटेड, मेसर्स हरीराज स्वरूप एण्ड ब्रदर्स-मुजफ्फर नगर।	मनसुरपुर	मुजफ्फरनगर	Swesugmill Mansurpur	११०० / १२००	D.C.
(१९) अपर इण्डिया शुगर मिल्स लिमिटेड सेक्रेटरी:—श्री पी० श्री कृष्णदेव भार्गव, मेसर्स मित्र मण्डल लि०।	खतौली	मुजफ्फरनगर	Sugar Khatauli	११४६ / १४००	D.C. / D.S.
(२०) अमृतसर शुगर मिल्स कं० लि०, मेसर्स अमरसिंह एण्ड कं. अमृतसर(पंजाब)।	रोहनकलां	मुजफ्फरनगर	Refiners Amritsar	१२०८	D.C.
(२१) अपर दोआब शुगर मिल्स लि०, मेसर्स हरीराज स्वरूप, राजेन्द्रलाल देवी प्रसाद एण्ड ब्रदर्स, शामली।	शामली	मुजफ्फरनगर	Sugarmill Shamli	१४२६	D.S.
(२२) दीवान शुगर एण्ड जनरल मिल्स, लिमिटेड, मेसर्स विरमानी एण्ड कम्पनी ६६ नजफ गढ़ रोड, न्यू देहली।	दीवाननगर पोस्ट शाखोटाडा	मेरठ	Dhandiwan NewDelhi	७१६	D.S.
(२३) दोराला शुगर वर्क्स, प्रोप्राइटर्स, दी देहली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि० देहली, भरतराम चरतराम एण्ड कम्पनी लिमिटेड।	दोराला	मेरठ	Yarn Delhi	१४००	D.C. / D.S.
(२४) जसवंत शुगर मिल्स लिमिटेड, मेरठ सिटी मेरठ।	मेरठ सिटी	मेरठ	Godeearins Meerut	११०० / १२००	D.S.

(२५) राम लक्ष्मण शुगर मिल्स, मैनेजिंग प्रोप्राइटरर्स:–[१] मेसर्स दीनानाथ नानकचंद चावड़ी बाजार देहली। [२] आर० एस० चिरञ्जीलाल एण्ड सन्स सदर बाजार, देहली।	मोहीउद्दीन पुर	मेरठ	Sugar mills Modi udd n Pur	६८६	D.S.
(२६) दी मोदीनगर शुगर मिल्स लि०, राय बहादुर मुल्तानीमल एण्ड सन्स लि०,	मोदीनगर	मेरठ	Modisugar Modinagar	१०००	D.C.
(२७) मावान शुगर वर्क्स, प्रोप्राइटरर्स, दी देहली क्लाथ एण्ड जनरल मिल्स कं० लि०, देहली।	मावाना	मेरठ	Yarn Delhi	८०० / १०००	D.S.
(२८) सिम्भौली शुगर मिल्स, लि०, मैनेजिंग डायरेक्ट एण्ड चेयरमैन सरदार रघुवीरसिंह साहिब सन्धान वालिया, सी० आई० ई०, ओ० बी० ई०।	सिम्भौली	मेरठ	Sandhan Wala Simbholi	९०५	”
(२९) एल० एच० शुगर फैक्टरीज एण्ड ऑइल मिल्स लि० काशीपुर डायरेक्टर-इन-चार्ज श्री माधव प्रसाद काशीपुर।	काशीपुर	नैनीताल	Crystal Kashipur	६५०	”
(३०) दी नवेली शुगर फैक्टरी, प्रोप्राइटर दी कॉमार्शयाल इण्डस्ट्रीयाल कारपोरेशन २८ साउथ रोड इलाहाबाद।	मानपुर नागरिया पो० नवेली	एटा Etah	Shervani Allahabad	८६५	”
(३१) एक्सपेरीमेण्टल शुगर फैक्टरी, इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ शुगर टेकनालाजी।	कानपुर	कानपुर		३४	
(३२) कुन्दन शुगर मिल्स. मैनेजिंग पार्टनर सेठ कुन्दनलाल हेड-ऑफिस ओल्ड लेसली हाउस १६ B. चौरंगी रोड, कलकत्ता।	अमरोहा	मुरादाबाद	Crysugar Calcutta	१२०० / १३ ०	”
(३३) दी अयोध्या शुगर मिल्स, प्रोपराइटर लक्ष्मीजी शुगर मिल्स कम्पनी लिमिटेड ५.३ रीगल बिल्डिंग, न्यू देहली।	पो० राजाका साहसपुर	मुरादाबाद	Saiskel New-Delhi	१३०५	”
(३४) रोझा शुगर कम्पनी लिमिटेड मैनेजिंग एजेंट गोवन ब्रदर्स लि० रामपुर।	रामपुर	रामपुर	Rozaco Rampur	११५०	D.C. / D.S
(३५) बुलन्द शुगर कम्पनी लि०, मैनेजिंग एजेंट गोवन ब्रदर्स, लि०,	रामपुर	रामपुर	Buland Rampur	११५०	D.C. / D.S

(३६) पन्नीजी शुगर एण्ड सेण्ट्रल मिल्स को० मैनेजिंग एजेण्ट सेठ कुन्दन लाल बुलन्द शहर पूरनचन्द राजेन्द्र लाल।	पन्नी नगर	बुलन्द शहर	Pannjee Buland Shahar		

पंजाब

(१) सरस्वती शुगर मिल्स, मैनेजिंग डायरेक्टर, मिस्टर डी० डी० पुरी प्रोपराइटरः–दी सरस्वती शुगर सिण्डिकेट लिमिटेड।	पो० जामनगर	अम्बाला	Sarswati Yamuna Nagar	१०००	D.C. and D.S.

उड़ीसा

(१)† उड़ीसा शुगर, डिस्टीलरी एण्ड टिम्बर मिल्स लिमिटेड, मैनेजिंग डायरेक्टर श्री भगवान साहू मैनेजर–एल जग्गाराव नायडू,	आस्का	गनजाम	Kaling Aska	१०० / १२०	
(२) जीपुर शुगर कम्पनी लि०, मैनेजिंग एजेंट मेसर्स आर० एस० इण्डस्ट्रीयल कार्पोरेशन लि०, ५५ पीटरस रोड, केथेड्रल, पो० मद्रास, श्री पी पुनैह बी० ए० रायगढ़।	रायगढ़	कोरापुर	Veysuco Rayagada	२५०	D.S.

आन्ध्र

(१) श्री विजगापट्टम शुगर एण्ड रिफाइनरी, लि०, अनाकापल्ले, मेसर्स कान्तीलाल एण्ड को० लि०, १४ न्यू क्वीन्स रोड, बम्बई।	अनाकापल्ले टेलेग्राम "Sugar" Anakapalle	विजगापट्टम	विजगापट्टम	४५० / गुड़–३०	D.S.
(२) एटीकोप्पाका शुगर फैक्टरी नं० १ प्रोप्राइटरर्सः–दी एटीकोप्पाका कोआपरेटिव, एग्रीकलचर एण्ड इंडस्ट्रीयल सोसायटी, लि०,	एटीकोप्पाका Tel."Sugar Factory" Etikoppaka, yellamanchili	विजगापट्टम	विजगापट्टम	७५	D.S.
(३)† एटीकोप्पाका शुगर फैक्टरी नं० २, प्रोप्राइटरर्सः–दी एटीकोप्पाका कोआपरेटिव एग्रीकलचर इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, लि०।	दार्लापुदी Tel."Sugar Factory" Etikoppaka, yellamanchili	विजगापट्टम	विजगापट्टम	६००	D.S.
(४) श्रीराम शुगर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज लि०, प्रोप्राइटरः–राजा ऑफ बोबिली, राजा ऑफ वेंकटागिरी एण्ड अदर्स, बोबिली।	बोबिली Tel.'Sugar Bobbili	श्रीकाकुलम	विजगापट्टम	४५०	D.S.

(५) श्रीराम शुगर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, लि०, प्रो०—राजा ऑफ बोबिली, राजा ऑफ वेंकटागिरी एण्ड अदर्स, सीता नगरम्।	सीतानगरम् Tel.'Sugar, Bobbili	श्रीकाकुलम	विजगापट्टम	३००	D.S.
(६) दी के० सी० पी० लिमिटेड, मे, ए० मेसर्स व्ही० रामकृष्ण सन्स लि०	वुरयुरू Vuyyuru Tel. "Krishna" Vuyyuru	किस्तना	...	१८००	D.S.
(७) दी डकन शुगर एण्ड अकबरी कं० लि० मैनेजिंग एजेंट पेरी एण्ड कम्पनी लि०, पोस्ट बाक्स नं० १२, मद्रास।	सामलकोट Tel– "Deccan" Samalkot	ईस्ट गोदावरी सदर्न रेलवे	काकीनाडा	७००	D.S.
(८) दी किरलामपुदी शुगर मिल्स लि०, मेसर्स कुबेर शुगर मैनेजर्स लि०, रजिस्टर्ड ऑफिस २६ इर्राबालुचेरी स्ट्रीट, मद्रास।	पिथापुरम Tel– "Kubera" Madras	ईस्ट गोदावरी सदर्न रेलवे	काकीनाडा	६००	D.S.
(९)† मेसर्स गोदावरी शुगर्स एण्ड रिफाइनरीज लि०, मैनेजिंग एजेण्ट–मे० एण्ड को० लि० Aidco, ३५ लझचर्च रोड, मैलापुर, मद्रास।	तानुकु Tanuku Tel–' Panchadara" Tanuku Madras	पश्चिमी गोदावरी	...	२००	D.S.

मद्रास

(१०) दी ईस्ट इण्डिया डिस्टीलरीज एण्ड शुगर फैक्टरीज लिमिटेड पैरी एण्ड कम्पनी लिमिटेड पो० बाक्स नं० १२, मद्रास।	नेलीकुप्पम Nelliku-ppam Tel-'Destimulo Nelliku-ppam	साऊथआर्कोट	कुदालोर Cuddalore	२२००	D.S.
(११)† दी कोयम्बेटोर एग्रो इण्डस्ट्रीज लि० मेसर्स बी० सी० बेलिनगरी गौंडर एण्ड कम्पनी।	पोडानूर	कोयम्बटूर	...	५०	
(१२)† मुरूगप्पा शुगर कम्पनी, लि० मेलपट्टी जिला उत्तरी अर्कोट।	मेलपट्टी	उत्तरी अर्कोट	मद्रास	७५	S.
(१३) दी डेकन शुगर एण्ड अबकरी कम्पनी लि० पुगालुर शुगर फैक्टरी, पैरी एण्ड कं० लि०, पो० बाक्स नं० १२, मद्रास, Tel-"Parry" Madras.	पुगालुर शुगर फैक्टरी पो०आ० Tel 'Desuabco' Pugalur	त्रिचनापल्ली	...	८००	D.S.

(१४) दी मदुरा शुगर एण्ड अलाइड प्रोडक्ट्स पांडिया राजन् एण्ड कं० लि० पोस्ट पांडीराजापुरम् Tel–"Sweet" Ammayamayakenur,	पाँडी राजा पुरम्	मदुराइ	...	३१७	D.S.

बम्बई

(१) दी सास्वद माली शुगर फैक्टरी, लि०, हेडआफिस-मालीनगर एच० वी० जीर्मे स्क्वासर बम्बई आफिस—सर विठ्ठल दास चेम्बर्स । अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट, बम्बई Tel—"Malisugar" Bombay.	मालीनगर Tel—'Malisugar' Malinagar	शोलापुर	बम्बई	८००	D.S.
(२) दी विहान महाराष्ट्र शुगर सिण्डीकेट, लि०,सी०वी० अगाशे एण्ड कम्पनी कामनवेल्थ बिल्डिंग, ६८० सदाशिव लक्ष्मी रोड, पूना२, Tele—"Sree" Poona & Aklir	पो० श्रीपुर	शोलापुर	....	१०००	D.S.
(३) बालचन्द नगर इण्डस्ट्रीज लि०, दी प्रीमियर कन्सट्रक्शन कं० लि०, कन्सट्रक्शन हाऊस, वेलर्डस्टेट, बम्बई Tele–"Walsakhar" Bombay.	बालचन्दनगर Tele—Walsakhar Walchand nagar	पूना	बम्बई	१३००	D.S.
(४) दी रावलगाँव शुगर फार्म, लि०, बाल चन्द एण्ड कम्पनी लि०, कन्सट्रक्शनहाऊस वेलर्ड स्टेट, बम्बई Tele–"Basufald" Bombay.	रावलगांव Tele—'Basufald' Raval gaon	नासिक	बम्बई	८५०	D.S.
(५) दी बेलापुर कं० लि०, मैनेजर्स ल्यू० एच० ब्रेडी एण्ड कं० लि०, रॉयलइन्स्योरेंस बिल्डिंग, चर्च गेट, फोर्ट, बम्बई Tele–"Brix" Bombay.	हरीगांव Tele-'Brix' Harigaon	अहमदाबाद	बम्बई	१०००	D.S-
(६) दी महाराष्ट्र शुगर मिल्स लि०, एम० एल० दाहनुकर एण्ड कं० लि०, इण्डस्ट्रियल इन्श्योरेंस बिल्डिंग, ३रा माला चर्च गेट स्टेशन के सामने, फोर्ट बम्बई।	पो.तिलकनगर श्रीरामपुर Tele—Sugarmills Tilaknaga	अहमदाबाद	बम्बई	१०००	D.S.
(७) बेलवण्डी शुगर फार्म लि०, एम० एल० दाहनुकर एण्ड कं० लि० इण्डस्ट्रियल इन्श्योरेंस बिल्डिंग, ३रा माला स्टेशन चर्च गेट के सामने, फोर्ट, बम्बई, Tele–"Design" Bombay.	पो० बेलवण्डी शुगर फार्म-Tele—Sugarfarm Belvandi	अहमदाबाद	बम्बई	२५०/३००	D.S.

(८) गोदावरी शुगर मिल्स लि०, के० जे० सोमैया एण्ड सन्स लिमिटेड फजलभाई बिल्डिंग, महात्मा गाँधी रोड फोर्ट, बम्बई Tele-"Manikaka" Bombay.	सकरवाडी Tele— Sugarmills Kanhe-gaon	अहमदनगर	बम्बई	९०० / १०००	D.S.
(९) दी सोमैया शुगर फैक्टरी, कन्ट्रोल्डबाय गोदावरी शुगर मिल्स, लि०, के० जे० सोमैया एण्ड सन्स लि० फजलभाई, महात्मा गाँधी रोड, फोर्ट बम्बई, Tele-"Manikaka" Bombay.	लक्ष्मी वाड़ी व्हाया:— कोपरगांव Tele—	अहमदनगर	...	७५०	"
(१०) श्री चंगदेव शुगर मिल्स, लि०, मेसर्स ए० एच० डी० भीवण्डीवाला एण्ड कं० ३२ अपोलो स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई Tele-"Jaysugar" Bombay.	पो० चंगदेव नगर Tele-Sugarmills' Puntamba	अहमदनगर	बम्बई	५००	"
(११) श्री फाल्टन शुगर वर्क्स लि०, मफत लाल, आप्टे एण्ड कान्तीलाल, लि०, साखरवाड़ी, सतारा।	साखरवाड़ी Tele "Sakhar" Sakhar-wadi	उत्तरी सतारा	बम्बई	७५०	"
(१२) दी कोल्हापुर शुगर मिल्स, दी युनाइटेड एजेंसीज लि०, पोस्ट आफिस-न्यू पैलेस Tele "Sugar Mills" Kolhapur	कसाबा बवडा कोल्हापुर	कोल्हापुर	बम्बई	८५० / ९००	"
(१३) कृष्णा शुगर मिल्स लि०, के० एम० गिरी लि०, कृष्णा कित्तुर, जि० वेलगांव Tele. "Krisu Mills" Kudchi।	कृष्णा कित्तुर	वेलगाम व्हाया कुडची	बम्बई	२००	"
(१४) दी उगर शुगर वर्क्स लिमिटेड, मेसर्स शिवगांव कर ब्रदर्स कोल्हापुर—शाहपुरी।	उगर खुर्द	वेलगाम	मारमा गोआ हारबर	५००	"
(१५) दी प्रावरा सहकारी साखर कारखाना लिमिटेड।	प्रावर नगर	अहमद नगर	...	५००	S.

चीफ कमिश्नरों की रियासतें

(१) भोपाल शुगर इण्डस्ट्रीज लि०, मेसर्स ए० एच० भीखण्डीवाला एण्ड कं० लि०। सिहोर।	सिंहोर	भोपाल	बम्बई	७५०	D.S.
(२) श्री विजय शुगर मिल्स, लि०, रघुनाथ सिंह, मानसिंह का विजय नगर।	विजय नगर	अजमेर	...	३५०	D.S.

भारत का औद्योगिक विकास



Devolepment of Indian Industries



चाय उद्योग का विकास

चाय

इतिहास -

ऐतिहासिक दृष्टि से चाय का विवेचन करते समय स्वीकार करना पड़ेगा कि इसका प्राचीन इतिहास भी एक प्रकार से आधार हीन ही है। फिर भी जो कुछ लिखा जा सकता है वह केवल प्रचलित दन्त कथाओं के आधार पर ही। इतना होते हुए भी संसार में चाय की ख्याति सबसे प्रथम चीन से हुई माननी पड़ेगी। चीन के प्राचीन पुस्तकालयों में प्रवेश कर यथेष्ट अनुसन्धान के बाद सम्भव है कि भविष्य में इस ऐतिहासिक रहस्य पर कुछ प्रकाश डाला जा सके। योरोपीय विद्वान ब्रेट्स-चनेडियर का मत है कि चीनी भाषा के प्राचीन कोष ढ़-य (Rh-ya) में चाय के पौधे की चर्चा आयी है। उस ग्रन्थ में उसे 'किया और क' उ-टू (Kia and k'u-tu) कह कर सम्बोधित किया गया है। चीनी भाषा में क-उ के अर्थ कड़वे के होते हैं। आपका कहना है कि चीनी भाषा का आधुनिक 'च' अक्षर वहाँ के प्राचीन चीनी साहित्य में व्यवहृत ट' + उ के उच्चारण में गड़बड़ हो जाने से ही उत्पन्न हुआ है। अर्थात् पुराने टू (ट' + उ) (T'u) का उच्चारण बिगड़ कर वर्तमान च' + अ (Ch'a) के समान बोला जाता है। उच्चारण की यह गड़बड़ी* सम्भवतः २०२ वर्ष सन् ईस्वी से पूर्व और २५ वर्ष सन् ईस्वी के बाद के युग में हुई मानी जाती है। फिर भी इस उच्चारण का व्यवहारिक प्रयोग साधारणतया ७वीं और ८वीं शताब्दी से ही होने लग गया था। इसी प्रकार चीनी भाषा में चाय के पौधे के लिए 'मिङ्ग' शब्द का प्रयोग होता है। मसीह सन् से पूर्व लिखे गये चीनी भाषा के ग्रन्थों में चाय के साग की चर्चा भी मिलती है जिसे 'मिङ्ग ट' + साई' कह कर सम्बोधित किया गया है। चाय के † साग में कोई अधिक विशेषता नहीं है क्योंकि इस युग में भी शाम और बर्मा के निवासी चाय की गिरी हुई पत्तियों को संग्रह कर साग बनाकर खाते हैं। ऐसी दशा में यह भी संभव है कि उस युग में चीन वाले भी चाय की पत्ती का साग बनाकर खाते रहे हों।

चीन के पुराणों में सम्राट चीनङ्ग की चर्चा आयी है और ग्रन्थकारों ने उन्हें कृषि शास्त्र तथा वनस्पति शास्त्र का जनक माना है। सम्राट चीनङ्ग का काल पुराणों के अनुसार मसीह सन् से २७३७ वर्ष पूर्व का माना जाता है। पुराने चीनी ग्रन्थों के अनुसार स्थिर किया जा सकता है कि इन्हें चाय के चमत्कार का पूर्ण रूपेण अनुभव हुआ था। इसके अतिरिक्त चीनी भाषा के काव्य ग्रन्थों में जिनका सम्पादन कनफ्यूशस ने मसीह सन् से ५५० वर्ष पूर्व किया था चाय की चर्चा पायी जाती है। चीन का

---

* देखिये सन् १८९२ ई० का प्रकाशित Botanical Sineusis vol ii page 20 and 130।

† देखिये Commercial products af India by Sir George watt.

प्राचीन इतिहास बताता है कि मसीह सन् की ४ थी शताब्दी में तत्कालीन सम्राट के श्वसुर वैङ्ग मेङ्ग चाय पीने के बड़े प्रेमी थे। वे अपने मिलने वालों को भी चाय पिलाते थे परन्तु लोग चाय पीने के उतने अभ्यस्त न थे अतः वे कड़वी कह कर उसे थूक देते थे। ब्रेट्स चिनेयडर (Brets-Chne-ider) लिखता है कि १०-वीं और १३ वीं शताब्दी के बीच चीनी भाषा में 'चाय' पर एक निबन्ध प्रकाशित हुआ था जिसमें लिखा गया था कि सम्राट वेन टी[1] (Emperor wen-ti) को शिर की पीड़ा सदा बनी रहती थी। अतः किसी भारतीय बौद्ध भिक्षु ने सम्राट को चाय (मिङ्ग Ming) की पत्ती उबाल-कर पीने की सलाह दी थी। इस प्रकार औषधि के रूप में वहाँ चाय का प्रथम बार व्यवहार किया गया। कैम्फर (Kaempfer) नामक एक विद्वान ने एक स्थान पर उपरोक्त प्रकार की चर्चा करते हुए एक जापानी जनरव का उल्लेख किया। उक्त विवरण से पता चलता है कि जापान में चाय का प्रचार करनेवाला व्यक्ति दर्म नाम के किसी भारतीय नरेश का तीसरा पुत्र था।

उपरोक्त दोनों प्रमाणों से यह तो स्थिर हो ही जाता है कि चीन और जापान में चाय का प्रचार जहाँ अत्यन्त प्राचीन है वहाँ उसके प्रसार में भारतवालों का भी हाथ रहा है। फिर भी १६ वीं शताब्दी की खोज के आधार पर यह सत्य है कि हिमालय के[2] पूर्वीय पार्श्व पर अनादि काल से चाय के पौधे पाये जाते हैं और चीनी भाषा के पुराने ग्रन्थों में चाय के प्रमाणों की चर्चा कर उसे क+टु (K'a-tu) शब्द से सम्बोधित किया गया है जो वास्तव में संस्कृत भाषा के कटु शब्द का ही अर्थ व्यक्त करता है ऐसी दशा में कम से कम यह तो स्वीकार ही करना पड़ेगा कि भारत वाले चाय से प्राचीन काल से ही परिचित थे।

चीन, जापान और भारत के सम्बन्ध को लेकर चाय के विषय में विचार करने पर प्रकट रूप से यही मानना पड़ेगा कि चाय का व्यवहार अत्यन्त प्राचीन है पर प्रथम उसका व्यवहार औषधि के रूप में ही आरम्भ हुआ था। चाय के व्यापक व्यवहार का प्रमाण हमें ८ वीं शताब्दी के पूर्व का नहीं मिलता है। हम देखते हैं कि[3] टैङ्ग राजवंश के शासनकाल में लोयू (Lo-yu) नामक एक इतिहास-कार हो गया है उसने अपने ग्रन्थों में चाय की उपयोगिता की चर्चा की है। ६ वीं शताब्दी में चाय का व्यवहार उतना व्यापक न हो पाया था परन्तु ८ वीं शताब्दी में उसने पूरी उन्नति की। चाय के व्यवहार ने यहाँ तक व्यापक रूप धारण कर लिया कि उसपर चीन सरकार ने[4] कर लगा दिया।

---

१ सम्राट वेन-टीका शासन-काल सन् ५८६ ई० से ६०५ ई० तक माना जाता है।

२ The tea plant must be wild in the Mountainus region which separetes the plains of India from those of China. De Condolle. देखिये Tea नामक ग्रन्थ लेखक A. Ibbetson.

३ इस राजवंश का शासनकाल सन् ६१८—९०६ ई० के बीच का माना जाता है।

४ यह घटना सन्—७९३ ई० की है।

यह घटना चीन सम्राट टिह सुङ्ग के शासनकाल के १४ वें वर्ष की है। अरब के यात्रियों ने भी लिखा है कि ६ वीं शताब्दी के मध्यकाल में चीनवाले चाय के पूरे अभ्यासी हो गये थे। ९ वीं शताब्दी में चीन की यात्रा करनेवाला सुलेमान नामक एक[1] मुसलमान यात्री लिखता है कि 'किसी पेड़ की पत्ती उबाल कर पीने के चीनी लोग बड़े अभ्यस्त हो गये हैं। वे लोग उसे 'साख' कहते हैं। 'मार्को पोलो' को प्रकाशित करते समय रम्यूसियो ने (Ramusio) भूमिका लिखते हुए सन् १५४५ ई० में लिखा था कि 'हाजी मोहम्मद नामक फारस के किसी व्यापारी से मैने चाय पीने की चर्चा सुनी थी।' सन् १५६० ई० में गैसपर डक्रूजने लिखा था कि[2] चीनी लोग अपने मित्रों को चीनी मिट्टी के प्यालों में चाय देते थे। बटेविया निवासी डा० बानटियस सन् १६३१ में लिखते हैं कि[3] चाय कभी-कभी तो इतनी कड़वी हो जाती है कि उसमें शक्कर मिलाने की आवश्यकता पड़ जाती है। गार्सिया डे ओर्ट लिखता है कि[4] 'चाय गर्मागर्म पी जाती है '

जापान—

जापान में चाय का प्रसार कैसे हुआ और कब हुआ यह ठीक नहीं कहा जा सकता। कैम्फर के मतानुसार यह कहा जा सकता है कि जापान को चाय की चाट किसी भारतीय यात्री ने बतायी थी जिसका नाम दर्म था। परन्तु लिखित आधार के अनुसार यह प्रमाणित होता है कि ६ वीं शताब्दी में प्रथम बार पुरोहित मियोये चायके पौधों को चीन से लाये और जापान के दक्षिणी द्वीप कियू-शियू में उसकी खेती करानी आरम्भ कर दी। चाय पीने का व्यापक व्यसन १३ वीं शताब्दी से जापान में आरम्भ होता है।

योरोप—

योरोप में चाय के प्रसार का श्रेय डच लोगो को ही है। जब डच लोग बैन्टम नगर में (जावा) स्थायी रूप से निवास करने लगे तो उनका सम्पर्क चीनी लोगों से हो गया और वे लोग भी चाय पीने के अभ्यस्त हो गये। अतः उन्होंने हालैण्ड मे चाय का प्रसार किया और यहीं से लार्ड

---

१ The people of China are accustomed to use as a beverage an infusion of the plant, which they call Sakh. 'It is considered very wholesome. This plant (leaves) is sold in all cities of the Empire'—देखिये Reinaud का सन् १८४५ ई० में प्रकाशित Ralat. des.voy. baits par (e) Arales et les Persians dans l Inde et a la China vol ipage 40.

२ देखिये Purcha's Pilgrimxs Voliii Page 180.

३ देखिये His. nat. et. Med Ind. 1681.

४ देखिये Linschoten लिखित De Christ Exp In Sinas voli page 68.

'आर्लिङ्गटन, आदि चाय इङ्गलैण्ड ले गये। यह घटना १७ वीं शताब्दी के मध्यकाल की कही जाती है। इसकी चर्चा करते हुए मि० ए० इवेट्सन महाशय अपने 'टी' नामक ग्रन्थ में लिखते हैं कि महारानी एलिजाबेथ के शासनकाल में किसी अंग्रेज दम्पत्ति को इंग्लैंड में कुछ चाय मिल गयी। उन लोगों ने उसे उबाल डाला और उसके पानी को फेंक दिया और उबाली पत्ती को रोटी के साथ खा गये। अर्थात् उस समय इंग्लैंडवाले चाय के व्यवहार से बिलकुल अपरिचित थे। इसीके बाद चाय का व्यवहार वहाँ भी बढ़ चला। यही क्यों चाय के एकमात्र व्यापारी मि० थामस गार्वे चाय पिलाने की दूकान खोलने की चिन्ता करने लगे और सन् १६५६ ई० में आपने एक्सचेंञ्ज ऐले (लंडन) में गर्म चाय बेचने की प्रथम दूकान खोल दी। उस कार्य से चाय के संबंध में इंग्लैंड में एक प्रकार की हलचल सी मच गयी। पेपीज ने ता० २८ सितम्बर सन् १६६० ई० के दिन अपनी डायरी में यह भी लिख दिया कि मैंने चाय का एक प्याला मँगाकर पिया। चाय मैंने अपने जीवन में कभी नहीं पी थी। ब्रिटेन की सरकार ने सन् १६६० ई० में चाय पर कर भी बैठा दिया। यह कर तैयार की गयी चाय पर प्रति गैलन ८ पेन्स के हिसाब से लगाया गया था। भारत में व्यवसाय करनेवाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने सन् १६६४ ईस्वी में ब्रिटेन सम्राट् चार्ल्स द्वितीय को ४० शि० प्रति पौण्डवाली १ पौंड २ औंस चाय भेंट स्वरूप प्रदान की। इसके २ वर्ष बाद अर्थात् १६६६ ई० में २२¾ रतल उत्तम चाय सम्राट् को भेंट की। इस समय इंग्लैण्ड में चाय पीने का प्रचार पर्याप्त हो चुका था फिर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी का चाय के व्यवसाय की ओर अभीतक ध्यान नहीं था। वह तो केवल भेंट करने के लिये कभी कभी विदेश से चाय मँगा लिया करती थी। इंग्लैण्ड में चाय की माँग बढ़ती गयी फिर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी सन् १६७७ ई० तक चुपचाप बैठी रही। इंग्लैण्डवालों की आवश्यकता पूर्ति के लिये जावा में चाय की खरीद होती रही परन्तु सन् १६८६ ई० में जब डच लोगों ने जावा से अंग्रेजों को निकाल बाहर कर दिया तब ईस्ट इण्डिया कम्पनी को चाय का व्यवसाय करने पर बाध्य होना पड़ा। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इंग्लैण्ड की माँग को पूरा करने के लिये सूरत और मद्रास के बाजार से चाय खरीदना आरम्भ किया।

भारत—

भारत में चाय के व्यवहार का वर्तमान प्रचलित ढंग कबसे आरम्भ होता है यह कहना अवश्य ही कठिन है। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार इसका आरम्भ १७ वीं शताब्दी के मध्यकाल से होता है। इस सम्बन्ध की चर्चा का उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि उस समय तक भारत भर में साधारणतया चाय का व्यवहार व्यापक हो गया है। इतना ही नहीं भारत में रहनेवाले अंग्रेज और डच दोनों ही चाय का व्यवहार जोरों से करते थे और यहाँ के रहनेवाले फारस निवासी चाय न पीकर कहवा पीते थे।

भारत में जहाँ चाय का प्रसार आरम्भ हो रहा था वहाँ इंगलैंड में चाय की माँग दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती थी जावा से अंग्रेज निकाले जा चुके थे अतः इंगलैण्ड की माँग पूरी करने के लिये केवल दो ही

बाजार थे सूरत और मद्रास, जहाँ चाय खरीदी जाती थी। ऐसी दशा में भविष्य का विचार कर ब्रिटेन की सरकार चिन्तित थी। उसने भावी अनिष्ट से बचने के उद्देश्य से ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत में चाय की खेती कराने का परामर्श दिया। इस समय कम्पनी के हाथ में यदि कोई लाभ का व्यवसाय था तो वह चाय का था। कम्पनी भारत के सूरत और मद्रास के बाजार में चाय खरीदती और इंगलैण्ड के बाजार में मनमाने लाभपर बेचती थी। ऐसी दशा में कम्पनी ने भी चाय की खेती कराने की ओर ध्यान देने में लाभ समझा। क्योंकि सन् १७८७ ई० में ही उसने भारत के बाजारों से खरीदकर इंग्लैण्ड में २,००,००,००० रतल चाय खपाकर बेशुमार लाभ उठाया था। ब्रिटिश सरकार के आदेशानुसार ईस्ट-इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरों ने भारत में चाय की खेती कराने के कार्य का सन् १७८७ ई० में आरंभ कर दिया और आवश्यक व्यवस्था करने की आज्ञा तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिङ्ग को—दे दी। उसी वर्ष सर जोसेफ बैङ्क्स की देख-रेख में चाय की खेती कराने के सम्बन्ध में एक आयोजना तैयार करायी गयी। इसमें चाय की खेती कराने के लिये आवश्यक सभी पार्श्वों पर पूर्णरूपेण विचार कर प्रकाश डाला गया और साथ ही खेती के उपयुक्त केन्द्रों का भी निर्देश कर दिया गया। इस सम्बन्ध में धीरे-धीरे खोज हो ही रही थी कि सन् १८२० ई० में आसाम के प्रथम कमिश्नर मि० डेविड स्काट ने आसाम से कुछ पत्तियाँ कलकत्ते यह कहकर भेजी कि आसाम वाले इसे जंगली चाय कहते हैं। अतः इसकी जाँच की जाय। उधर सन् १८३४ ई० में उस समय के गवर्नर जेनरल लार्ड वेन्टिक ने जनवरी मास की ता० २४ को प्रस्ताव पासकर चाय की खेती करने का प्रबन्ध भार उठा लिया और मैंचिन्टोश एण्ड कम्पनी नामक फार्म के मि० जी० जे० गार्डन को चीन भेजा तथा डा० एन० वालिच की देख रेख में एक कमेटी बनाई। डा० एन० वालिच ने आसाम कमिश्नर की भेजी हुई पत्तियों के सम्बन्ध में प्रथम ही संदेह किया था और इसी कारण वे लंदन की लीनियन सोसाइटी के पास निर्णय के लिये भेजी जा चुकी थी। उधर चीन से बीज मँगा कर कुमायूँ जिले में प्रयोगात्मक खेती आरम्भ कर दी गयी। इसी बीच लन्दन की सोसाइटी ने निर्णय दे दिया कि वे पत्तियाँ निःसंदेह चाय की ही हैं। फिर क्या था डा० एन० वालिच अपनी कमेटी के साथ जोरों से काम करने लगे और फल यह हुआ कि सन् १८३७ ई० में आपकी कमेटी ने भारत के पूर्वीय भूभाग में चाय के सुविस्तृत क्षेत्र को खोज निकाला। इसका प्रधान श्रेय कमेटी के सदस्य जेनकिन्स और चार्लटन को ही है।

१६ वीं शताब्दी के आरम्भ तक पूर्वीय देशों से चाय का व्यवसाय करने का अधिकार केवल भारत की ईस्ट इण्डिया कम्पनी ही को था। अतः कम्पनी व्यापार से अच्छा लाभ उठा रही थी लेकिन दूसरी कम्पनियों को यह फूटी आँख न भाता था और लोग इसकी स्वतंत्रता के बाधक हो रहे थे। फलतः सन् १८३४ ई० से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से चाय के व्यापार करने की स्वाधीनता छिन गयी। जिससे मुक्तद्वार व्यवसाय के हो जाने के कारण लोग दौड़ पड़े। भारत के पूर्वीय भूभाग में चाय की खेती आरम्भ हो चुकी थी इसके परिणामस्वरूप सन् १८३६ ई० में भारत की १ रतल चाय लन्दन भेजी गयी। सन् १८३७ ई० में भारत की ५ रतल चाय लन्दन के बाजार में गयी सन् १८३८ ई० में इसका

परिणाम इतना बढ़ गया कि १० छोटे बक्सों में भरकर चाय भेजी गयी सन् १८३६ ई० में भारत की चाय के ६५ बक्स भेजे गये और सन् १८४० ई० में भारत की चाय के नीलाम का प्रबन्ध भी नियमित रूप से आरम्भ हो गया।

चाय का पहिला चलान ९५ पेटी का भारत से १८३६ में विलायत पहुँचा और तभी से चाय के उद्योगी करण का इतिहास प्रारम्भ होता है। तभी से यहाँ के गवर्नर जनरल विलियम बैण्टिक की देखरेख में भारत में चाय की खेती करने की योजनायें बनीं। आसाम-बंगाल के समतल जंगलों में इसके योग्य जमीनें खोजी गईं और उस समय के योग्य एवं विश्वासी अंग्रेजो को एवं कम्पनियों को ९९ वर्ष की लीज के पट्टे दिये गये। कुछ कर्मठ व्यक्तियों ने थोड़ी २ खेती १८३५-३७ में ही आरम्भ कर दी थी किन्तु सामूहिक रूप में इसके लिए ५ लाख पौंड की पूँजी लगाकर एक कम्पनी संगठित हुई जिसको १८४० में आसाम के शिवसागर जिले में १३ १४ जगह बड़े बड़े प्लांट भूमि ग्रांट किये गये जिनमें वे चाय के बगीचे लगावें। इस कम्पनी को १८४७ तक बहुत बड़ा घाटा लगा और कई जगह के बगानों में काम बंद कर दिया गया परन्तु बाद में कई प्रतिभाशाली और कर्मठ-व्यक्तियो के विशेष प्रयास से इसकी उन्नति होने लगी और १८५२-५३ में तो इस कम्पनी ने थोड़ा मुनाफा Dividend भी दिया था।

कालान्तर में इस कम्पनी के अधिकारी मि० जार्ज विलियम और विलियम राबर्ट्स ने आगे जाकर Williamson Major & Co. और Begg Dun Lop Co. की सृष्टि की और उसी के आसपास Jorhat Tea Co. का बीजारोपण हुआ। इसके बाद में १८५९-७० ई० दार्जिलिंग तथा १८५१-५७ तक कछार में चाय बगीचे लगाये गये। १८७० के बाद विशेष जोर से काम शुरू हुआ। तब से आज तक भारत में खेती इस प्रकार बनीं।

सन्	क्षेत्र-फल—एकड़ में	उपज—पौंडों में
१८८६-१८९० तक	३१०५९५ एकड़	९०,६०२,०००
१९००	५२४७२० एकड़	२०१,३८६,०००
१९१०	६६३६५४ एकड़	२६३,२६६,०००
१९२०	७०४०५९ एकड़	३४५,३४०,०००
१९३०	८०३५३२ एकड़	३९१,०८१,०००
१९४०	८३३४७८ एकड़	४६३,८८१,०००
१९५०	७७८७७२ एकड़	५८७,०००,०००

(नोट : १९४० तक के अंको में पाकिस्तान सम्मिलित है।)

उत्तर व दक्षिण भारत के उत्पादन में अलग २ किस प्रकार प्रगति हुई वह निम्नलिखित आँकड़ों से व्यक्त है।

नीचे के अंक मिलियन में (१० लाख पौंड) हैं।

प्रांत	सन् १९३६	१९३९	१९४२	१९५१	१९५४
उत्तर भारत	३२३½	३८४¾	४५५¼	५०९	५०८
दक्षिण भारत	६४½	७७¾	९३½	११५	१२८
जोड़	३८८	४३२½	५६८¾	६२४	६३६

९—इस ५० वर्षों में चाय की खेती ने भारत में बहुत बड़ी उन्नति की जिनसे विलायत के बाजार में भारत की चाय का बोलबाला हो गया—चीन की चाय तो प्राय: अपनी ही बन्द हो गई। चीन में यह उद्योग संगठित Industry के स्तर पर नहीं रहा है अतः धीरे २ अवनत हो गया।

भारत के उत्पादन आंकड़े

१०—भारत में चाय की खेती का प्रसार विभिन्न प्रान्तों में निम्न प्रकार से हुआ है—

प्रांतीय उत्पादन २० वर्षों में—

प्रांत का नाम	१९३२ में—		१९५२ में—
	क्षेत्रफल रकबा एकड़	चाय बगान संख्या	क्षेत्रफल-एकड़
आसाम	४२८ १००.	९९८	३८४, ९९२·६८
बंगाल	२०७, ०००·	३९२	१९९, ६४७, ६८
विहार-उड़ीसा	३७००	—	४०६·१८
उत्तर-प्रदेश	१५९००		६४३६·३५
पंजाब (कांगड़ा)			९६०६·९२
हिमांचल प्रदेश	×		१०५९·७३
त्रिपुरा	(बंगाल में सम्मिलित)		११७४२·६७
नेपाल			३००·००
जोड़ उत्तर भारत		१४९६	६१४८४९·५१

मद्रास			८३५०६·०१
कुर्ग			४३१·०८
मैसूर			४२०८·६२
ट्रावनकोर कोचीन			८२८८५·०२
जोड़ दक्षिण भारत	१५३०००	६४३	१७१०३४·७३
जोड़ समग्र भारत	१०७७००	२३५६	७८५०६४·२४

नोट—भारत के १९३२ के क्षेत्रफल में पाकिस्तान का रकबा सम्मिलित है।

११—भारत में प्रान्तीय उत्पादन १९५१-५३ तक निम्नलिखित प्रकार से हुआ है—

प्रांत के नाम	१९५१	१९५२	१९५३
उत्तर भाग			
आसाम	३३१५०९७२८	३३६०००,०००	३१७, २५०, ०००
बंगाल	१७२२२७८२९	१६० ७४०, ०००	१६१, ७५००००
विहार	२४१९५१७		
उत्तर-प्रदेश	१९८७४६४		
ट्रिपुरा	४१२८८८९	८२५०, ०००	८ ५००, ०००
जोड़ उत्तर भारत	५१२, ३५४, ०२७	५०७, ०००, ० ०	४८७, ५२०, ०००
दक्षिण भारत			
मद्रास	५५, ३४१, ८६८		
कूरग	२७० ३८२		
मैसूर	१९२७ २८५		
ट्रैवनकोर-कोचीन	५६ ८२४ ७५५		
जोड़ दक्षिण भारत	११४, ३७४, ३००	११३०००, ०००	११०, ७५०, ०००
कुल जोड़			

१९५४ में उत्तरी भारत में ५०९,०००,००० पौंड एवं दक्षिण भारत में १२८,०००,०००० पौंड होने का अनुमान है।

संसार का चाय उत्पादन

१६३२ का समय १२—भारत के साथ २ अनाथ देशों में भी चाय की खेती प्रायः उसी समय शुरू हो गई थी। विलायत नहीं सभी जगह चाय की लोकप्रियता बढ़ रही थी अतः अंग्रेजों ने सीलोन, जावा देशों में भी अपनी संरक्षणता में इस खेती का सविस्तार प्रचार करना आरम्भ कर दिया था। १६३२ में यह क्षेत्रफल निम्न प्रकार से था।

देश का नाम	क्षेत्रफल	बगानों की संख्या पाकिस्तान सहित
भारत	८०७७००	२३५६
सीलोन	४५३७४०	२६६४
जावा द्वीप समूह	८३६६८	४७ यह क्षेत्रफल अपूर्ण हैं।
	१३४५१०८	५१००

अन्यान्य देशों का क्षेत्रफल प्राप्य नहीं है तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से उनकी विशेष आवश्यकता भी नहीं है। इसके सिवाय तो चीन जापान ही मुख्य देश हैं जहाँ पर जितनी चाय होती है वहीं खप जाती है। International Tea Committee ने चाय उत्पादक मेम्बर देशों का १६५० से निम्न प्रकार से Permissible Aerage स्थिर किया है :—

भारत —	८०६७२८ एकड़
पाकिस्तान —	७६७६८ एकड़
सीलोन —	५८८२२७ एकड़
इन्डोनेशिया —	५३९७७२ एकड़
	२०१४४९५ एकड़

१३—चाय का समूचा उत्पादन प्रायः २ अरब पौंड है। निम्नलिखित आँकड़ों में तो प्रायः वही उत्पादन पकड़ा गया है जो उत्पादन चीन, जापान, फार्मोसा वगैरह से निर्यात होता है। चीन, जापान, फार्मोसा में जो चाय वहीं खपती है उसका हिसाब नहीं मिला है तब भी यह अनुमान किया जाता है कि नीचे लिखे १२०० मिलियन पौंड को छोड़कर प्रायः ८०० मिलियन पौंड चाय वहीं की वहीं खपत होती है, अतः २ अरब पौंड का अनुमान किया जाता है। नीचे लिखे आँकड़ों में World-Supply और उसकी खपत तथा खपत करनेवाले देशों का हिसाब दिया जाता है—

१४—संचार में चाय की उपज १९३४-से-१९५२ तक मिलियन (१० लाख की इकाई) पौंडों में

पैदा करने वाले देश	१९३४-३८ का एवरेज	१९४७	१९४८	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२
उत्पादन (कुल)							
१ भारतवर्ष	} ४१४	५१६	५६८	५८५	६१३	६२९	६२२
२ पाकिस्तान		४१	४४	४७	५३	५३	५३
३ सीलोन	२२९	२९९	३०२	३१०	३१६	३२६	३१७
४ इण्डोनेशिया (जावा द्वीपादि)	} १६५	५	३०	६०	७८	१०२	८१
५ केनीया-युगांडा टेंगानीका }	९	१९	१५	१६	२१	२२	२१
६ न्यासालैंड	८	१३	१४	१३	१५	१६	१५
जोड़	८२५	९३७	९७४	१०३०	१०९७	११४८	११०९
उत्पादन (निर्यात मात्र)							
चीन	९०	२६	२८	१७	२४	२६	२०
फोरमुसा	२२	१०	१०	२८	१७	२५	२०
जापान	३९	७	९	१६	१६	१९	२१
अन्यान्य देश	५	५	५	९	११	११	८
जोड़ (निर्यात)	१५६	४८	५४	७०	६७	८१	६९
कुल जोड़	९८१	९८५	१०२८	११००	११६४	१२२९	११७८

इन आँकड़ों में प्रायः ८०० मिलियन पौंड हम चीन, जापान, फारमुसा की अपनी खपत समझें तो प्रायः २००० मिलियन = २ अरब पौंड उत्पादन होता है।

संसार में चाय की खपत कर हिसाव—१९१४ से लेकर १९५२ तक (मिलियन पौंड में)

चाय पीनेवाले देश	१९३४-३८ का एवरेज	१९४७	१९४८	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२
खपतवाले प्रधान देश							
युनाईटेड किंगडम(विलायत)	४३८	३७४	४०७	४७९	३५९	४४८	४७३
आयरलैंड	२३	२६	२६	१९	२४	३७	१७
नैदरलैंड	२३	१३	१३	१७	१९	१५	१९
रूस	४२	१७	१५	१७	३	१	४

चाय पीने वाले देश	१९३४-३८का एवरेज	१९४७	१९४८	१९४९	१९५०	१९५१	१९५२
योरोप के विभिन्न देश	३०	१३	१६	२४	२६	२१	२३
U. S. A. अमेरिका	८३	६१	८९	९३	११४	८६	९३
कनाडा	३९	४७	३७	४२	५५	४२	४५
अमेरिका के अन्य प्रांत	१२	१३	१३	१२	९	१९	२१
अरब	२	११	११	११	९	११	१६
ईरान	१६	१७	१६	२३	१८	२४	८
ईराक	६	१५	१४	१८	१५	२१	१९
ऐशिया के अन्य प्रदेश	३१	१८	२०	२	२३	३०	३१
इजीस, मिश्र	१५	२८	३०	३५	३५	३५	३६
उत्तर अफ्रिका	३०	२६	२६	३१	३९	४७	४५
दक्षिण अफ्रीका	१४	२३	१८	१९	२०	२१	२४
अफ्रिका के अन्य प्रदेश	११	१०	१०	१६	२१	२१	२६
आस्ट्रेलिया	४६	४९	४८	४७	६०	५९	५३
न्यूजीलैंड और पैसिफिक द्वीप	११	१५	१८	१३	१३	२६	११
जोड़	८७१	७५९	८२८	९२७	८६२	९५४	९६२
पिछला जोड़	८७१	७६९	८२८	९२७	८६२	९५४	९६१
पैदा करनेवाले देशों में निज की खपत							
भारत	८०	२१७	१५८	१५७	१७०	१८२	१८०
पाकिस्तान	×	×	२७	१९	४२	१४	२५
सीलोन	९	१४	१५	१५	१५	१५	१४
इण्डोनेशिया	३७	१	४	७	११	१५	१५
केनीया युगाण्डा टेगांनीका वगैरह	२	६	७	७	८	९	७
न्यासालैंड	०८७	०	०	०	०	०	०
रवुरहा	३	१	०	०	१	१	२
जोड़	११२	२४०	३१२	२०६	२४७	२६३	२४२
कुल खतप	९८२	१००९	१०३७	११३३	११०१	१०२१	१२०४

१६—उपरोक्त आँकड़ों से यह स्पष्ट है कि चाय की विशेष खपत पच्छिमीय देशों में और अधिक विलायत और अमेरीका में ही है। अगर सभी देश चाय का उपयोग पूरी तरह से करें तो चाय खपत का विस्तार बहुत बढ़ सकता है।

विकास-एवं वर्तमान स्थिति

१७—चाय Lndustsy का विकास वैसे तो उत्तरोत्तर बढ़ता से रहा है और Tea crisis उद्योग पतियों को अच्छा मुनाफा भी मिला है परन्तु फिर भी इसकी गति विधि निर्बाध एवं निष्कटक नहीं रही है। प्रथम महायुद्ध के बाद बहुत बड़ा अवसाद trade depression प्रारंभ हो गया था राष्ट्रों ही क्रय-विक्रय शक्ति नष्ट हो गई थी एवं वस्तुओं का मूल्य गिर चुका था इसका असर चाय पर भी पड़ा १९१६ से १९३१ तक चाय उत्पादन करनेवाली कम्पनियाँ एक प्रकार से अस्थिर Unteady सी थीं। कई कपनियों के शेयर गिर गये। ऐसा होते हवाते १९३२ में Industry को एक भयंकर संकट (Crisis) का सामना करना पड़ा। ऐसा मालूम होता था यह Crisis Industry को हड़प जावेगी। चाय का बाजार बहुत घट गया था विलायत में १० d प्रति पौंड एवं भारत में ।)॥ से ।=) प्रति पौंड दाम हो गये थे। प्रायोपांत कम्पनियों को इसमें बहुत बड़ा घाटा था इसी समय Indio Tea Association, चाय के प्रमुख उद्योगपतियों की तीखी सूझ एवं सामयिक कारवाई ने तत्कालीन गोरमेंट की सहायता से १९३३ में एक अन्तर्राष्ट्रीय बन्दोबस्त Inter national agreement बनाया जिसमें भारत, सीलोन एवं जावा तीनों मेम्बर हो गये। (उस वक्त पाकिस्तान का जन्म नहीं हुआ था)। उसी के तत्वावधान में एक Tea control Act १९३३ बनाया गया जिसके द्वारा देश के उत्पादक क्षेत्र फल को एवं उपज के नियाति भाग को, एवं कहिये उपज को ही, नियन्त्रित कर दिया गया। इस महौपधि ने संजीवनी बूटी का सा काम किया एवं १९३२ में ही बाजार ।)॥ ।-) से ॥-) प्रति पौंड हो गया। प्रत्येक बगान के निर्यात के Expertr auota निर्धारित कर दिये गये। अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी ने Bosis निम्न प्रकार से निर्धारित किया—

भारत	३४८,	२४६,	१७०	पौंड
पाकिस्तान	३४,	९९५,	७४५	पौ०
सीलोन	२५१	५८८	०१२	पौ०
इन्डोनेसिया	१७३	५९७,	००००	पौ०
	८०८,	४२७,	९२८	पौ०

१८—सन् १९३३, व १९३४ में इसका ८५—८७ परसेंट कोट। मिला करता था। ज्यों २ खपत बढ़ती गयी यह कोटा Perscentage बढ़ा दी जाती थी इसके बाद १९३३ से १९५० तक Industry की गति ठीक ही रही, उपज एवं निर्यात दोनों ही बनते गये। युद्ध के समय व कुछ बाद तक चाय की मांग अच्छी रही गौरमेंट ने चाय Crntact द्वारा खरीदनी प्रारंभ कर दी। एवं विलायत में इसपर

Rationing control हो गया। १६५०।५१ में विलायत का बाजार फिर खुला Crntr aet द्वारा खरीद बन्द कर दी गई एवं बाद में रेसन कन्ट्रोल भी उठा लिया गया।

१९—१६५२ तक चाय की उपज भी बढ़ गई थी एवं अन्यान्य कई कारणों से एक दूसरे संकट (Crisis) का सामना करना पड़ा। विलायत में स्टाकवेसी था ही तथा बगान वाले ने भी चाय की Quality बहुत न्यून कर दी थी इसलिए बिकने में अड़चन लग गई—विलायत एवं भारत में Vnsold चाय का स्टाक बढ़ गया। विलायत में शि० ६d के दाम हो घये तथा भारत में ||≡)|| |||) प्रति पौंड हो गया। ध्यान रहे कि इन २० वर्षों में चाय का उत्पादन खर्च बहुत बढ़ गया था; इन दामों में कई बगीचेवालो को तो |||) से १) प्रति पौंड तक घाटा था तथा ≡) से ||=) तक तो बहुत को था। १६३२ वाले संकट में नुकसान सिर्फ =) से।) सक था। यह संकट विशेषत छोटे २ बगानों के लिए बहुत घातक था। इतना बड़ा नुकसान बरदास्त करने से अक्षम होकर प्रायः १२५-१५० बगानों ने तो अपने बगीचे बन्द कर दिये। इस संकट से संभलने के लिए उद्योगपति, मजदूर, गौरमेंट सभी ने सहयोग दिया। Industry ने भी उत्पादन को ८ परसेंट कम कर दिया एवं Aualily आशातीत सुधार दी गई। इधर में चाय की खपत सर्वत्र तथा भारत में विशेष बढ़ गई—जिससे चाय की माग फ़िर जाग्रत हो गई और १६५३ के शेष काल से बाजार सुधरा ही नहीं गया अपितु अत्यन्त उंज्ज्वल हो गया। सभी देशों में चाय की मांग तीव्र हो गई और आज चाय का अभाव अनुभव होने लगा है। लन्दन में जहाँ पहिले stock १२५—२०० मिलियन पौं० बना रहता था वह १६५४ के अक्टूबर में प्रायः ६८ मिलियन पर पा चुका। इससे वहाँ के व्यापारियों में घबड़ाहट हो गई और चाय का स्टाक पूर्ण करने के लिए ऊँचे दाम में चाय खरीदने लगे। १६३२ में जो Expcrt Quite ८५-८७ ½ परसेंट का वह १६५४ में १३३४ परसेंट होकर भी विलायत की मांग को पूर्ति नहीं कर सका। भारत में भी चाय की खपत २१४—२१५ मिलियन पौंड हो गई है अतः वर्तमान उत्पादन से पूर्ति नहीं होती है। १६५४ में ४६५ मिलियन का कोटा मिला है किन्तु इससे भी वहाँ का स्टाक अपनी १२५-१३० की मर्यादा में नहीं आने पाया है। भारत की चाय का प्रचार अमेरीका व विलायत में वैसी हुआ है जिसके कारण विदेशों को भारत के समूचे ६३६ मिलियन उत्पादन में से ४६५ मिलियन जाकर देश के निजी खर्च के लिए सिर्फ १७१ मिलियन पौंड बचेगा। यह अपर्याप्त है।

उत्पादन खर्चादि

२०—उत्पादन खर्च—चाय का उत्पादन खर्च सुसंयत है एवं सुज्ञाप्य है। चाय के खर्च में विशेष खर्च मजदूरी का ही है अन्य. कोई भी Industrcy में मजदूरी का इतना बड़ा अंश नहीं है। १६३२-३३ में प्रति पौंड खर्च।=) से ||) तक या छोटे एवं अच्छी उपजवाले बगीचों में तो यह इससे भी कम था। बाद में युद्ध के समय में मजदूरी भी बढ़ी एव Stores चाय बक्स, कोयला, तेल एवं खाद्यानों के भाव बढ़े। इस समय ११५४ में यह मध्यम एवरेज के बगान में १।=) प्रति पौण्ड पड़ता है—

कछार जिले में ≈) कम पड़ता है—दक्षिण में भी कम है किन्तु दार्जिलिंग एवं अत्यन्त पहाड़ी बगानों में यह १॥≈) २) प्रति पौंड तक पड़ता है।

उत्पादन एवं कृषि समीक्षा

२१—Clemata चाय की उत्पादन विधि भी एक कृषि कला है। इस विषय में अंग्रेज कृषिज्ञों की एक विशेष देन है। गत २०।२५ वर्षों में कृषिज्ञों ने अच्छी प्रगति की है उपज का एवरेज प्रायः ३५-४० परसेंट बढ़ गया है। चाय की खेती के लिए नम वायु moistrons एवं वृष्टि पूर्ण ऋतुओं की आवश्यकता है। साधारणतया ८०-९० इञ्च वृष्टि एक प्रकार पर्याप्त है किन्तु १५० २०० इञ्च तक की वृष्टि इसके उत्पादन के प्रतिकूल न होकर लाभदायक ही होती है। इस वृष्टि का विवरण भी विभिन्न महीनों में एक अनुकूल अनुपात में होना विशेष हितकर होता है। जहाँ पर वसन्त एवं ग्रीष्म ऋतुएँ विशेष सूखी होती हैं वहाँ पर उत्पादन कुछ कम होता है; हां अति वृष्टि से चाय की quality खराब होती है।

Soil. इसके लिए दोमट Loamy Allvial भूमि विशेष उपयुक्त है एवं जिन भूमि खंडों में सैकड़ों वर्षों से वृहत् जंगल रहा हो अथवा किसी पहाड़ से जहाँ सड़ी हुई पत्तियों एवं अन्यान्य उद्भिज-पदार्थ सनी हुई मिट्टी बहकर आती रहती हो वह भूमि इसके लिए विशेष उपयुक्त है। बालू प्रधान भूमि में भी बगान अच्छे पनपते हैं किन्तु क्षीण वृष्टि वाले वर्षों में बहुत नुकसान पहुँचता है। वृष्टि एवं सुभूमिका संबल पाकर यह सब जगह पैदा हो सकती है—किन्तु अति शीत एवं अति गरम देश में इसका उत्पादन सफल नहीं हो पाता।

खेती २२—उद्यान की भाँति चाय एक स्थायी खेती है। इसके पौधे ५० से ६० वर्ष तक जीते हैं। अब भी कई जगह ६० वर्ष के पौधे मिलते हैं। इसका यौवन ८-१० वर्ष की उम्र से ही आरंभ हो जाता है और ४५ वर्ष तक कायम रहता है। बाद में भी सुव्यवस्थित सेवा-सुश्रुषा एवं खाद प्रयोग द्वारा ६० वर्ष की आयु तक इससे अच्छा उत्पादन मिल जाता है। बाद में उत्पादन एवं Quality ढलेन लगती है। इसका बीज एक प्रकार से बड़े बगड़ी बेर के समान गोल सा होता है। बीज पैदा करने वाले चाय-वृक्ष अलग होते हैं; उनसे पत्ता नहीं लिया जाता। बीजों के वृक्षों की देख-रेख, कोड़ाई निरानी एवं खाद बहुत समझदारी से की जाती है। बीजों की फसल को कीटजन्य एवं Mycological रोगों से बचाया जाता है। बीजों की फसल अक्टूबर से नवम्बर तक मिल जाती है। बीज घर में लाकर छांट दिया जाता है, बड़े साइज का भारी बीज अच्छा माना जाता है। परीक्षा होने पर यह बीज आर्द्रताहीन (Moistureless) एवं सुरक्षित बक्सों में बन्द करकर खरीददार बगानों में यथाशीघ्र भेज दिया जाता है। बगीचेवाले भी बक्सों को खोलकर बीज की परीक्षा करते हैं और उसके बाद उसको ठंढ़ी एवं सूखी बालू में ठंढी जगह रख देते हैं जिससे बीज सूखने न पावे। नयी उर्वरा जंगल की भूमि इसके उपयुक्त होती है। उस भूमि को २-२॥ मास पहिले से ही जोत कोड़कर, समतल, लसर एवं सुडौल

बना लिया जाता है। उसमें ऊँची क्यारियाँ (Nursery beds) बनायी जाती हैं, इन क्यारियों में ६"×६"×७"×७" या ८"×८" के चतुष्कोण चतुर्कोण अंतर पर ये बीज १।।-२ इञ्च गहरे नवम्बर-दिसम्बर मास में बोये जाते हैं। यह बीज बोते वक्त थोड़ा-थोड़ा फट जाता है एवं अंकुरित भी हो जाता है। कई जगह फटा हुआ बीज विशेष लाभदायक होता है। इस क्यारी को पालंग कहते हैं। चाय पालंग को यथासंभव कीड़े, घास और धूपादि संकटों से बचाने के लिये विशेष सावधानी से काम किया जाता है। ये बीज १।।–२ मास के बाद उगने लग जाते हैं एवं एक वर्ष में ये पौधे प्रायः १५" से ३०" इंच तक हो जाते हैं। इसके बाद इन पौधों को वहां से उठाकर नियत खेत में जगा दिया जाता है। छोटे पौधों को वहां छोड़ दिया जाता है। 'पालंग' में पौधे दो वर्ष तक रखे जा सकते हैं इससे बड़ा पौधा होने पर उठाने और लगाने में असुविधा होती है। चाय के बीज बहुत कीमती होते हैं। आजकल इनका मूल्य २५०), ३००) रुपया प्रतिमन होता है। एक मन बीज में १५००० तक बीज होते हैं जिनमें १२००० पौधे पक्के मिल जाते हैं।

२३–Vegetative Clones (आंख a×b सहित) इधर कई वर्षों से चाय पौधे की साखि टहनी से भी पौधा तैयार किया जाने लगा है जिसको Vegetative Clones कहते हैं। अच्छी जाति के सुन्दर युवा स्वस्थ पौधों में से ये एक-एक पत्ते और उसकी आँख को बचाकर टुकड़े (Cutting) काटे जाते हैं और उनको उसी प्रकार पालंग में लगा दिया जाता है। ये (Cuting) धीरे-धीरे जड़ बनाते हैं और उसी आँख से पौधा पनप जाता है। कई जगह हजारों पौधे पैदा किये गये हैं और उनसे बने हुए गाछ पूर्ण रूप से फसल पैदा कर रहे हैं किन्तु अभी तक यह प्रयोग जाँच निरीक्षण स्तर पर है, आशा है कि धीरे-धीरे इसी प्रकार के पौधों का प्रचार बढ़ जावेगा।

२४—चाय बगीचे में पौधे सुंदर, सीधी लाइन से लगाये जाते हैं। पहिले तो ये पौधे ४"×४" एवं ४।।"×१।।" लगाये जाते थे किन्तु आजकल बड़े-बड़े खेतो में तो Hedge प्रणाली से Single या Double लाइन से पौधे लगाये जाते हैं। Single लाइन में प्राय: ३६०० एवं Double लाइन में ४५०० पौधे लगते है। किंतु ४'×४, से तो सिर्फ २७२२ पौधे लगा करते थे। इन पौधों को अच्छी गोड़ाई, फोड़ाई, निरानी, खाद और कलम द्वारा जल्दी से जल्दी पत्ती देने योग्य बना लिया जाता हैं अनुकूल वातावरण में तीसरे वर्ष से ही ये पत्ती देना आरंभ कर देते हैं। इसके बाद हर साल पत्ती की मात्रा बढ़ती रहती है और पांचवें वर्ष में तो बगान स्वयं-पोषक (Economical) हो जाता है।

२५—पौधों से अच्छी फसल लेने में कलम एवं खाद्य का बहुत बड़ा हाथ है और हर साल कुछ सीमा तक यह फसल बढ़ती रहती है। सुविज्ञ Planter की देख-रेख में अच्छी जाति के पौधों से आठवें-नवें वर्ष में २०-२५ मन प्रति एकड़ चाय पैदा की जा सकती है। कई जगह तो चालीस ४० मन प्रति एकड़ तक फसल प्राप्त हुई किन्तु २०/२२ मन का औसत अच्छा सन्तोषजनक माना जाता है। वैसे तो कई-कई खेतों में २८-३० मन तक औसत हो जाता है।

सुना गया है ऊपर आसाम में मोहन बाड़ी एरोड्रोम के नजदीक के गणेशबाड़ी बगान में वहाँ के मालिक रायसाहब हनुमानबक्स कनोई ने किसी एक क्षेत्र में ४२ मन प्रति एकड़ तक चाय पैदा की है।

२६—दार्जिलिङ्ग, नीलगिरीज, एवं अन्य पहाड़ी मैदानों में चाय की उपज कम होती है। परन्तु क्वालिटि बहुत बढ़िया एवं कीमती होती है। दक्षिण भारत और सीलोन (Ceylon) में तो द्विवर्षा ऋतु होने से साल भर चाय बनती रहती है, किन्तु उत्तर भारत में मार्च मास के मध्य से १५ दिसम्बर तक पत्ती तोड़ी जाती है; तत्पश्चात् पौधों को कलम करकर गोड़ाई व निरानी कर दी जाती है और बीमारी वाले पौधों का यथायोग्य उपचार कर दिया जाता है एवं रामनवमी तक फिर पत्तियाँ टूटनी आरम्भ हो जाती हैं। यही क्रम हर वर्ष रहता है। बड़े सन्त हैं ये पौधे कि इतनी निर्दयता से काटे जाने पर भी वे अपना देने का काम हर वर्ष द्विगुणित उत्साह से चलाते हैं और हँसते हँसाते और बसन्तादि ऋतुओं का राग गाते-गवाते हर सप्ताह पत्ती देते रहते हैं।

भारतवर्ष में सबसे पहले चाय बगान लगाने वाला भारतीय उद्योग पति



रा० सा० हनुमान कनोइ

२७—जैसे उपर कहा गया है कि कृषि-कलाप सुन्दर एवं अच्छे ढंग का हों तो अच्छी फसल मिलती रहती है। परन्तु चाय की क्वालिटी इसकी पत्ती की क्वालिटी पर निर्भर करती है। चाय की पत्ती तोड़ना भी एक प्रकार की सुविज्ञ कला है। पहली २॥--३ पत्ती बहुत कोमल होती है और उसके कोमलांग में कोमल कोमल रोमावली होती है जिनपर रस जम जाने पर सुनहरी टिप (golden tip) पैदा होती है। इस टिप का विशेष अंश होने से चाय बहुत कीमती हो जाती है और उसे Tippy-Tea कहते हैं। तोड़ने के समय इन पत्तियों की बड़ी हिफाजत की जाती है और उन्हें ठण्ढी जगह में रखा जाता है।

२८—पत्तियाँ टूटने के बाद बड़े-बड़े चायघरों में सुखायी जाती है। इसे Wining कहते हैं। इसमें प्रायः १५–२० घंटे लगते हैं। तत्पश्चात् ये पत्तियाँ फैक्टरी में ले जाकर रोलिंग मशीनों (Rolling michines) में बेली जाती है। ये रोलिंग मशीने ६०-६५ प्रति मिनट चाल से चलती है। इसमें ३०।३५ मिनट तक बेलाई होने के बाद इन पत्तियों को बड़े-बड़े चलनों से छाना जाता है इन सब क्रियाओं से पत्ते के भीतर का पका हुआ रस पत्तियों के ऊपर आ जाता है और उस रस में एक प्रकार चिपचिपापन आ जाता है। जितना अधिक चिपचिपापन होता है उतनी ही अधिक पत्तियों की बेलाई अच्छी होती है। चालनों में से छनी हुई नीचे का महीन गुड़ी (guri) माल फरमेन्टेशन (Fermentation) के लिये रंग घर में (Fermenlation room) भेज दिया जाता है। बाकी मोटा माल फिर रौल (Roll) किया जाता है इस रोल का समय पत्ती को क्वालिटी (quality) पर निर्भर करता है किन्तु फिर भी ३०।४० मिनट लगते हैं। इसका भी महीन व मोटा माल रंग घर में गरं उठने के लिये भेजा जाता है। कई जगह तीसरा रोल (Roll) भी देते हैं। रंगघर में ये रोल की हुई

पत्तियाँ प्रायःखूब ठंढी क्यारियों पर या एल्यूमिनियम (Alluminium) की चद्दरों पर १"-१।" इञ्च मोटी तहमें बिछायी जाती है। इससे २॥-३ घंटे के बाद और पहाड़ी बगानों में ३॥-४ घंटे बाद एक प्रकार का ताम्रवर्णी रंग आ जाता है और सुन्दर मनमोहक महक फूटती है। समतल (plains) मैदानों में कई वर्षों से एक सी० टी० सी० (C.T.C.) नाम की मशीन का भी विशेष प्रयोग होने लगा है। यह मशीन रोलिङ्ग को सहयोग देती है एवं पत्ती की बेलाई कर व काटकर बहुत सुन्दर व सुडौल समान साइज की बना देती है। इस प्रयोग से चाय की पत्ती में रंग की सघनता व Strength बढ़ जाती है एवं ऐसा चाय का मूल्य भी अधिक मिलता है।

२९—पत्ती में रंग उठाने के बाद सुखाने की मशीनों (Drying Machines) में एक बहुत गर्म हवाके द्वारा (२००० F°) इन्हें सुखाया जाता है। पहली मशीनमें यह सुखाई कुछ हिस्से तक कर हाथों हाथ दूसरी मशीन में बाकी पूर्ण सुखाई कर ली जाती है। इस सुखाई के बाद चाय का रंग काला (Black) या ब्राउन (Brown) हो जाता है। इस प्रकार सुखायी हुई चाय में भी प्रायः २॥ से ४ प्रतिशत तक जलांश रह ही जाता है। यही चाय सार्टिंग रूम (Sórting Room) में जाकर वहां की मशीनों द्वारा विभिन्न ग्रेड या क्वालिटियों (Qualities) में छांट ली जाती है। छंटाई से इस चाय की रूप-रेखा बढ़िया हो जाती है और ये अलग-अलग ग्रेड्स (grades) की भिन्न--भिन्न साइजों के बक्सों में भरकर चालान कर दी जाती है। इसका विशेष भाग कलकत्ते में बिक जाता है एवं कुछ U. K. चला जाता है। इन ग्रेडों में बढ़िया क्वालिटी B. O. P. (Broken ora-ge Plekao) एवं F. C. p. (Flowery Orange peakoe) होती है। Orange नाम भ्रमात्मक है। कई लोग ऐसा समझते हैं कि इसमें (Drange) का किसी प्रकार से सम्मिश्रण होता है किन्तु ऐसा नहीं है, Orange शब्द विशेषतः लम्बी, सुडौल, पतली बिनी हुई पत्ती का द्योतक है। यह (Orange) साइज प्रथम डेढ़ पत्ती से अधिक बनती है।

(३०) चाय में कोई भी द्विजातीय पदार्थ नहीं मिलाया जाता, इस तरह से यह परम पवित्र है। इधर २।१ वर्षों से बहुत घटिया चाय के विषय में कुछ शिकायतें विजातीय पदार्थ मिलाने की आई हैं। ऐसा कार्य बगीचे वाले नहीं करते। सुना गया है कि व्यापारी लोग चाय का दाम तेज होने से ऐसा काम कर जाते हैं।

चाय बिक्री व्यवस्था

(३१) चाय की बिक्री की व्यवस्था अनुपमेय है। संसार में कोई भी ऐसी दूसरी वस्तु नहीं है जिसमें उत्पादक को बेचने की कोई समस्या ही न हो। अन्यान्य वस्तुओं का बाजार खुला है अनियंत्रित है। उत्पादक हो बेचने का काम यत्र-तत्र अपने अपने साधनों द्वारा करते हैं तथा झंझट भी सहते हैं। लेकिन चाय में ऐसा नहीं है। कलकत्ता कोचीन और लंदन में चाय नीलाम घर बने हुए हैं जहाँ पर

दी ट्रेड आर्गेनिजेशन के तत्वाविधान में निर्धारित दलालों द्वारा यह चाय नीलाम में बेंची जाती है। इसी टी ट्रेट एसोसिएसन के सदस्य चाय पेटियों के समूह को को दलालों की आफिस में या अपने स्थान पर जांच कर देख लेते हैं। और Auetion में अपनी अपनी धारणा से खरीदते हैं। दलालों को उत्पादक एवं खरीददार दोनों की तरफ से १।१ परसेन्ट दलाली मिलती हैं। ये दलाल बिल्टी लेकर माल छुड़ाते हैं और तत्पश्चात तत्सम्बन्धी सारा काम स्वयं करते हैं और उत्पादक को चाय का रुपया व हिसाब ठीक समय पर भेज देते हैं। आज तक एक भी पैसा उत्पादक का कहीं नहीं डूबा है। दलाल-फर्म वाले अच्छे सुविंश चाय परिक्षक रखते हैं और उत्पादकों को चाय की क्वालिटी के विषय में परामर्श देते रहते हैं। लंदन बाजार में सभी उत्पादक देशों से चाय जाकर बिकती है और योरोप के बहुत से प्रदेश वहीं से खरीदते हैं।

(३२)चाय की बिक्री दो तरह से होती है। भारत की प्राय: दो तिहाई चाय बाहर भेजने के लिये बिकती है। अंतर्राष्ट्रीय विधान के अनुसार जितना कोटा भारत को मिलता है उतनी चाय भारत निर्यात करता है। बाकी चाय देश के निजी खर्च के लिये देशी स्टॉल में बेची जाती है। विदेश की मांग और चाय के स्टॉक की गति के हिसाब से निर्यात होने वाली चाय के दाम देशमें बिकनेवाली चाय से अधिक होते हैं, तदनुसार Quota के दाम भी हो जाते हैं। जब विदेश में चाय की खपत या मांग बहुत कम थी तब कोटा (Quota) का दाम सिर्फ १०-१२ पाई प्रतिपौंड का ही था किन्तु अभी गत वर्ष में विदेश की मांग अधिक होने के कारण ये ही दाम ३६५ पाई प्रति पौंड तक हो गये थे। इस वक्त ये दाम ६४-६५ पाई हैं। जैसे ऊपर कहा गया है भारत को इस साल (१९५५) १३३½ पर सेन्ट कोटा (Quota) मिला है जिसके अनुसार भारत प्राय: ४६५०००००० पाउन्ड चाय निर्यात करेगा।

(३३) चाय के दाम बजार में खपत पर तो निर्भर करते ही हैं किन्तु Quality का भी विशेष प्रभाव पड़ता है, इसलिये हर उत्पादक अपनी चाय के नमूने अकसर अपने अपने दलालों के पास भेजते रहते हैं, जिससे वे अपनी Quality सुधारते रहते हैं। चाय की Quality में निम्न प्रकार के गुण होते हैं।

(a) सूखी चाय—(Appear auce) इसका रंग गहरा काला या Brownish होता है, विशेष मटमैला या आभाहीन होना दोष है। पत्ती का साइज सुडौल व समान (Even) होना चाहिये। पत्तियों में Golden Tip होनी चाहिये एवं पतियों में डांठी, कंकर पत्थर व धूली (Dust) नहीं होनी चाहिये।

(B) लिकर—चाय पत्ती की Liquor उबाला हुआ पानी इसका प्रधान अंग है और इसी के गुणों पर ही इसकी कीमत निर्भर करती है। चाय की एक सीमित मात्रा को तदनुसार सीमित खूब उबलते हुए जल में ५ मिनट तक रखने के बाद जो पानी छानकर झार लिया जाता है वही इसकी Liquar है। इस Liquor का रंग गहरा सुन्दर लाल Brown आभा से युक्त

होना चाहिये एवं दूध का संयोग पाते ही यह Amber (हल्का गेरूआ) रंग पकड़ लेता है। इसमें ऐसी सुगन्धि होती है जो चाय में ही मिलती है, इसका किसी दूसरी गन्ध से मिलान नहीं होता।

क्वालिटी यह गुण एक प्रकार से अनुभव गम्य है। मुँह में लेने से इसकी Liquor में एक प्रकार का सुन्दर, सुहावना, किञ्चित कषाय एवं सुपेय का स्वाद होता है। जैसे एक साधारण मादक पेय में पीने वाले अनुभव करते हैं।

स्ट्रेंग्थ चाय में यह गुण होना अत्यावश्यक है। स्ट्रांग चाय का दाम थोड़ा अधिक मिलता है क्योंकि इस चाय से अधिक मात्रा में Liquor बन जाती है जिससे यह सस्ती पड़ती है। इसके अतिरिक्त और भी कितने गुण हैं जिनका वर्णन नहीं हो सकता।

दार्जिलिङ्ग की चाय सुगन्ध प्रधान होती है किन्तु रंग थोड़ा हल्का होता है और कड़वी कम होती है। उसको शौकीन मिजाज वाले अधिक पीते हैं। इसके दाम भी अधिक पड़ते हैं। आसाम की चाय में रंग और Strength अच्छी होती है जिससे यह व्यापारियों को विशेष पसन्द है। कछार जिले की चाय साधारण (Common) होती हैं और सस्ती भी ब्लेण्डस में मिलाने के लिये यह चाय ली जाती हैं।

३४—ब्लेण्ड्स बगीचों से तो चाय पेटियों में भर कर आती है किन्तु खरीददार लोग इस चाय को खोलकर विभिन्न प्रान्तों की भिन्न-भिन्न ग्रेड की चाय लेकर अपने अपने नुक्सों से Blends तैयार करते हैं और उन Blends के पैकेट बनाकर अपना अपना मार्का लगाकर बेचते हैं। प्रायः ७०-७५ परसेन्ट चाय तो Blends द्वारा ही बिकती है। बाकी २५-३० परसेन्ट Loose बिकती हैं। भिन्न-भिन्न प्रान्त व प्रदेश के स्वाद और शौक का ध्यान रखकर Blender लोग Blends तैयार करते हैं। इन Blends द्वारा चाय की मूल्य Quality में कोई असर नहीं पड़ता।

३५—चाय ३-४ प्रकार की होती हैः—(१) काली चाय (Black Tea) (२) हरी चाय (green Tea) (३) इटाँया लड्डू चाय (Brick Tea) (४) उलग चाय (Oolong Tea इसके अतिरिक्त चीन जापान में अन्य भी कई प्रकार की किस्में पैदा होती है। उनका इन देशों में प्रचार नहीं है। इन सबमें Black Tea ही सबसे अधिक अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की हैं। है। Black Tea का मौलिक गुण सर्वग्राही हैं—थोड़ी मादकता का स्वाद, स्फूर्तिप्रधान एवं सुपेयता और यह जल्दी नष्ट नहीं होती।

हरी चाय इसका मौलिक गुण काली चाय से भिन्न हैं। काली चाय में टेनिन का अंश आ जाता हैं किन्तु हरी चाय में यह एक प्रकार बिलकुल ही नहीं पनपता, हरी चाय के निर्माण में Farmentation नहीं होता इसका स्वाद जिलबिला सा होता है, इसका सेवन अफगानिस्तान,

पञ्जाब एवं पहाड़ी देश वाले कुछ अमेरिकन प्राप्त करते हैं। भारतवर्ष में यह १ लाख मन होती हैं। चीन जापान वाले विशेषतः यही पीते हैं।

Brick Tea—यह इन दोनों से ही भिन्न है, इसमें इन दोनों के Manufachring तरीकों का सम्मिश्रण है किन्तु इसमें एक प्रकार की सड़न व Teast पैदा की जाती हैं और इसके द्रव Liquor में उसका अंश आ जाता है। यह चाय विशेषकर वर्मां, भूटान और तिब्बत वाले प्रयोग करते हैं। तिब्बत वालों के लिये यह चाय चीन यां रंगून से मगाई जाती हैं, भारत में बहुत थोड़ी वनती है। Oolong चाय का प्रचार विशेष चीन जापान में हैं।

काली चाय का अनुपान—चाय का विशेष प्रयोग गर्म Liquor द्वारा ही होता है। चाय के Liquor में पीने वाला दूध व चीनी अधिक या कम मात्रा में डालकर अपनी अपनी रुचि अनुसार सेवन करता है। विलायत में बहुत लोग दूध नहीं डालते किन्तु इसकी Liquor से कई प्रकार के स्वाद लेते हैं। टंडे देश वाले चाय का प्रयोग अधिक करते हैं; इसका गरम-गरम मीठा सुस्वाद जल ठंण्ड की कटुता को कम करता है एवं स्फूर्ति प्रदान करता है लेकिन आजकल अमेरिका में Icod Tea—(चाय में बर्फ का सम्मिश्रण करने का प्रचार हो गया है। गर्मी में यही अधिक खपती है जैसे भारत में शर्बत।

भारतीय चाय की खपत—भारतीय चाय का अधिक भाग निर्यात होता है। संसार में जितनी भी चाय निर्यात योग्य पैदा होती है उसका ५०% तो U. K. अर्थात् विलायत खरीदता है शेष अन्यान्य देश। भारत की चाय विशेषतः विलायत खरीदता आया है किन्तु अब अमेरिका,, इजिप्ट, इरान वगैरह भी अधिक खरीदने लगे हैं। भारतीय चाय का निर्यात मात्रा में इस प्रकार रहा है—

मिलियन पौंड में—(००००००००)

	१९४३—४४		१९४४—४५		१९५२—५३		१९५३—५४	
	उत्तरभारत–	दक्षिणभारत,	उत्तरभारत–	दक्षिणभारत,	उत्तरभारत–	दक्षिणभारत,	उत्तरभारत–	दक्षिणभारत
उपज–	४५२.३	६८.१	४०७.८	९७.०	५०७.०	११३.०	४८७.३	१२०.९
निर्यात–	३३९.३	६६.३	३३१.१	६३.२	३४६.७	५६.६	३८८.७	५१.३
स्वदेश में खर्च	११३.०	२८.८	७६.७	३३.८	१६०.७	५३.४	९८.६	५९.६

भारत की जनता में भी चाय का प्रयोग बहुत बढ़ चला है। यह १२५–१५० मिलियन पौंड से बढ़ कर २००–२२५ मिलियन पौंड हो गई है। भारत में अगर उद्यम और उद्योग कारखाने बढ़ते गये तो यह खपत और भी बढ़ेगी, विदेशों में भी यह खपत बढ़ रही है। अतः अगर भारत का उत्पादन ६७०–६८० या ७०० मिलियन पौण्ड तक हो तो इसमें देश का, उत्पादको का और राष्ट्रका सभी का फायदा है। देश में उत्पादन बढ़ाने का यह बहुत सुन्दर अवसर है। वैसे तो सभी जानते हैं कि जावा के पास उत्पादन बढ़ाने का बहुत बड़ा साधन है किन्तु वहां पर मजदूर-संघर्ष एवं

अन्यान्य राजनैतिक दिक्कतों के कारण वहां का उत्पादन सहज ही नहीं बढ़ेगा। यह मौका भारत के लिए अच्छा है। यहां की उर्वरा एवं शस्यश्यामला भूमि में अधिक उत्पादन करने की अदम्य सामर्थ्य है। अतः उद्योगपति और गवर्नमेण्ट चेष्टा करके ६०-७० मिलियन पाउन्ड बढ़ा लें तो चाय की लागत कम होगी, विदेशों में प्रतियोगिता में बिक सकेगी और राष्ट्र की आमदनी बढ़ेगी। अन्यान्य देश भारत की बराबरी नहीं कर सकेंगे।

पहिले तो एक एकड़ चाय बगान लगाने में और तदनुसार फैक्टरी तथा मकानात, वगैरह में ७००-८०० रुपया प्रति एकड़ खर्च होता था और एक अच्छे बगान की कीमत १०००) रुपया प्रति एकड़ थी किन्तु आजकल यह सब प्रायः ढाई तीन गुना होता है।

चाय—भारत की निधि

चाय भारत की एक निधिः—किसी महान व्यक्ति ने चाय को Teasune of the word कहा है, सत्य है यह श्लाघा! चाय के गुणों का वर्णन तो उपरोक्त पक्तियों में कर ही दिया गया है एवं यह निधि कैसे है यह निम्नलिखित पङ्क्तियों से व्यक्त होगा।

(a) Emplayment—चाय के उत्पादन में बहुसंख्यक मजदूर व मध्यवित्त देशवासियों को काम मिल रहा है। भारत वर्ष के चाय उद्योग मे प्रायः ८-९ लाख मजदूर काम करते हैं जिनकी मजदूरीसे हिसाब से प्रायः २५-३० लाख स्त्रीपुरुष बालबच्चों का भरण पोषण होता है। इसके अतिरिक्त प्रायः १-१। लाख मध्यवित्त Clerical line के आदमियों का भरण पोषण होता है। जिससे उतने ही परिवार पलते हैं। अन्याय उद्योग-धन्धों के मुकाबले इसकी यह देन बहुत बड़ी है।

(b) व्यापार—चाय बगानों के क्षेत्र में बगान सम्बन्धी वस्तुओं के स्टोर्स का व अन्यान्य ठेके के काम का व्यापार भी बहुत बड़ा है। व्यापारियो को इससे अच्छा लाभ होता है। उत्तरी आसाम और दार्जिलिंग का व्यापार तो बहुत अंश में इसी के अभ्युदयपर निर्भर है। आसाम के बड़े-बड़े शहर डिब्रूगढ़ तिनसुकिया, जोरहाट शिवसागर, तेजपुर प्रभृति प्रायः चाय उद्योग के साथ-साथ पनपे हैं। करोड़ों रुपयो का व्यापार इस उद्यमसे निकलता रहता है। जैसे उत्पादन बढ़ेगा और देश में खपत बढ़ेगी त्यों-त्यों देशी और विदेशी व्यापार भी बढ़ेगा।

(c) अन्यान्य उद्योग-धन्धों पर प्रभाव—चाय उद्योग द्वारा कई अन्य उद्योगो को अच्छा लाभ है। जैसे-लोहा, चाय बक्स, कोयला, तेल, खाद एवं हैसियन इत्यादि। चाय बगीचों में मकानात एवं कलघर बनाने में लाखों रुपयों का लोहा लगता है। देश की समूची इन्डस्ट्री में ४-४॥ करोड़ की चाय बक्से, १॥-१॥। करोड़ का कोयला, २-२॥ करोड़ का डीजल तेल व पेट्रोल आदि तथा २-२॥ करोड़ की खाद और लाखो रुपयों का हैसियन लगता है। इसके अतिरिक्त लाखों रुपयों की मशीने बिकती हैं।

(d) रेलवे स्टीमर कम्पनी—को भाड़े द्वारा करोड़ों रुपयों की आमदनी होती है। रेलवे तो इस उद्योग की मांग पूर्ति नहीं कर पा रही है, अतः स्टीमर कम्पनी विशेष काम करती है उत्तर दक्षिण भारत मिलाकर प्रायः १ करोड़ मन चाय एवं तत्सम्बन्धी स्टोर्स का यातायात स्टीमरों को मिल जाता है। ऐसा अनुमान है कि चाय इन्डस्ट्री से इन कम्पनियों को ३॥—४ करोड़ रुपये की सीधी आमदनी है।

आसाम का यातायात सुलभ व सहज न होने के कारण बहुत बार माल (A/R) हवाई मार्ग से भेजा जाता है और एअर कम्पनी को लाखों रुपया मिलता है।

(a) इण्डस्ट्रीज को लाभ—अगर सब इन्डस्ट्रीज के २०–२५ वर्षों के आंकड़े देखे जावें तो एवरेज में सबसे अधिक लाभप्रद व शेयर होल्डर्स को सुन्दर रीटर्न देनेवाली यही इन्डस्ट्रीज है। कुछ थोड़े समय को छोड़कर बाकी सर्वदा ही शेयर होल्डर्स को अच्छे अच्छे डिवीडेण्ड मिले हैं। कई कम्पनियों ने तो ६० से ८० परसेन्ट तक भी डिवीडेन्ड दिये हैं। गत दो वर्षों में भी इसमें अच्छी कमाई हुई है और अगर कम्पनी डाइरेक्टर्स व मैनेजिन्ग एजेन्टस निर्विघ्नता पूर्वक डिवीडेन्ड देना चाहें तो वे प्राय ५० से १०० परसेन्ट तक दे सकते हैं। कई कम्पनियों में तो बहुत बड़े ठोस रीजर्वस हैं।

(e) विदेश को लाभ—भारत वर्ष में यही एक उद्यम है जो बड़ी कमाई कर विदेश स्थित Investors को Dividends देती आयी है, यही नहीं चाय बगानों के अंग्रेज मैनेजर, मैनेजिन्ग एजेन्टस की कमीशन, नौकरी इत्यादि द्वारा करोड़ों रुपया विदेश जाता है। इसमें प्रायः २०००।२२०० ब्रिटिश काम करते हैं जिनकी तनख्वाह प्रतिवर्ष ३००००) रु० है।

(t) गवर्नमेंट या राष्ट्र—राष्ट्र को इस इन्डस्ट्री से बहुत बड़ा लाभ है। पहिले निर्यात कर सिर्फ तीन आना प्रति पौंड था किन्तु गत कुछ दिनों से यह ।≶) एवं तत्पश्चात ।।=) पौंड कर दी गई है। इससे राष्ट्र की आमदनी का अनुमान नीचे लिखे अनुसार लगाया जाता है।

एक्साइज ड्यूटी—६३९०००००० पौंड पर—	३९७५००००	१९५४ के उत्पादन के आधार पर
लूज चाय पर	२५०-००,००० रु०	१२८ मिलियन पैकेट द्वारा
एक्सपोर्ट ड्यूटी—४६५-०००-००० पौं०—	२६.०.६२५००० रु०	१० आना पति पौंड की दर से
इन्कमटैक्स व	२०.००.०००.०० रु०	२ रु० १२ आना प्रति पौंड की
सेलटैक्स आदि	—	चाय के दर के आधार पर
	५५.५३;७१.००० रु०	

अर्थात् करोड़ों रुपया राष्ट्र को इससे मिलता है। इतना रुपया शायद ही किसी दूसरी इन्डस्ट्री से मिलता होगा। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय सरकार को भी आसाम रोड परमिटस, माटी खजाना वगैरह की अन्य आमदनियाँ हैं।

३९—अतः सरकार को इस उद्यम पर विशेष ध्यान चाहिए। भारत वर्ष में चाय उत्पादन बढ़ाने

अच्छा मौका है और अन्यान्य देशों का उत्पादन बढ़ने के पहिले भारत का उत्पादन अति शीघ्र बढ़ाया जा सकता है।

४०—लेवर वेग्ज—यह इन्डस्ट्री बहुत ही सुन्दर रूप से सुसंगठित है। युद्धोत्तर काल में इस उद्योग में जो उन्नति हुई है उसका उचित अंश मजदूरों को भी मिला है। १९३२-३३ में चाय बगान में मजदूरी चार आना एवं पांच आना प्रति मजदूर थी वह अब एक रूपया ग्यारह आना, प्रति मजदूर तक हो गई एवं मजदूरों को सब प्रकार की सुविधायें मिलने लग गईं हैं। गत महायुद्ध में जब खाद्यान्न का अभाव था इस इण्डस्ट्री ने बहुत बड़ा व्यय कर के मजदूरों को सस्ते दामों में अन्न दिया। चाय के बगान का मजदूर अपने पडोसी गृहस्थ खेतीहर से कहीं अधिक सुखी है।

४१—चाय की आमदनी से किस-किस वर्ग को कितनी कितनी प्राप्ति होती है। इसका एक आंकड़ा नीचे दिया जाता है। अगर चाय की कीमत औसत में २॥) पौण्ड मिलती है तो वह निम्न प्रकार से बँटेगा।

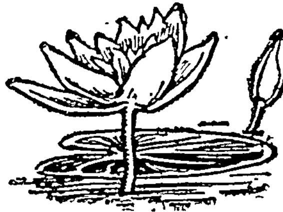
मजदूरों को यजदूरी और वेलफेअर	१० आना प्रति पौंड
मध्यवित्त नौकरी पेशों को	१$\frac{3}{4}$ आना प्रति पौंड
ब्रिटिश मैनेजरों की नौकरी भत्ता इत्यादि	१ आना ,, ,,
मैनेजिङ्ग एजेन्सी कमीशन वगैरह	१$\frac{1}{2}$ आना ,, ,,
रेलवे स्टीमर कम्पनी	१ आना ,, ,,
सिंधरी फर्टीलाइजर्स	$\frac{1}{2}$ आना ,, ,,
चाय बक्स	१$\frac{3}{4}$ आना ,, ,,
कोयला तेल वगैरह	१$\frac{1}{4}$ आना ,, ,,
निर्माण (मकान, फैक्ट्री, मशीनरी इत्यादि)	१$\frac{1}{2}$ आना ,, ,,
शेयर होल्डर	३ आना ,, ,,
सरकार	१३ आना ,, ,,
अन्यान्य व्यापारी	१$\frac{1}{2}$ आना ,, ,,
खुदरा	२$\frac{1}{4}$ आना ,, ,,
	४० आना

उपरोक्त अंकों से मालूम होता है कि इस इण्डस्ट्री से सबसे अधिक लाभ गवर्नमेंट को होता है और दूसरे नम्बर में मजदूर व कर्मचारियों को। अगर भारत का उत्पादन ६०–७० मिलियन पौण्ड बढ़ जाय तो गवर्नमेंट को भी ४–५ करोड़ रुपये की आमदनी बढ़ जागगी।

चाय उद्योग का सङ्गठन बहुत सुन्दर ढङ्ग से होता है। पहले-पहल इण्डियन टी एसोसिएशन (Indian Tea Association) की लन्दन और कलकत्ते में स्थापना हुई। बाद में कई अन्य

देशी एसोसियेशन भी बने हैं। इन सबमें इन्डस्ट्री की Policy की विवेचना होती रहती है। गवर्नमेण्ट ने भी इन एसोसियेशनों को बहुत अच्छी मान्यता दे रखी है। उत्तर भारत में इण्डियन टी एसोसियेशन द्वारा एक Experimental Station टीकलाई में खुला हुआ है जिसमें चाय सम्बन्धी Techniqus ज्ञान-विज्ञान का विश्लेषण, निर्धारण एवं अनुसन्धान होता रहता है। दक्षिण भारत में भी इसी प्रकार United planters Association है जो वहाँ बगानों की नीति का सञ्चालन करता है।

सरकार की तरफ से भी एक Tea Board बन गया है जो भारत सरकार की तरफ से चाय उद्योग में एक प्रकार Liaison का काम करता है। यही टी बोर्ड अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी टी मार्केट एक्सपेन्सन बोर्ड, अमेरिकन टी कौन्सिल और इण्डियन टी एसोसिएशन से सम्बन्ध बनाये रखता है और देश व्यापी चाय उद्योग का शासन करता है।



चाय उद्योग के कुछ प्रमुख उद्योगपति

नीचे चाय उद्योग के कुछ प्रमुख उद्योगपतियों और उनके बगीचों (Tea Estates) की सूची दी जा रही है। सब मिलाकर चाय के करीब ग्यारह सौ से अधिक बगीचे हैं। सब की सूची स्थान की कमी से देना सम्भव नहीं थी, इसलिए प्रमुख उद्योगपतियों और उनके बगीचों की जानकारी यहां दी गई है। इससे मालूम होगा कि चाय-उद्योग में भारतियों का प्रवेश हो जाने पर भी अभी तक इस उद्योग का बहुत बड़ा भाग अंग्रेज कम्पनियों के ही अधिकार में है।

उत्तर पूर्वीय भारत में चाय की प्रमुख रियासतों की सूची

इस सूची में पहले पहल टी इस्टेट के नाम और उसके पश्चात् वहां के पोस्ट ऑफिस का नाम और उसके बाद जितने एकड़ में उस इस्टेट का विस्तार है उसकी संख्या दी गई है।

मेसर्स विलियम्सन मेगर एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट्स या एजेण्ट्स

जिला दार्जीलिंग

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
चमाङ्ग	नगरीस्पुर	४०८	नगरीफार्म	नगरी स्पुर	६७३
ग्लेनबर्ग	दार्जीलिंग	६६३	घूम	दार्जीलिंग	५५४
लिजिया	मेरीबांग	३५६	टुकवार	,,	१६६३

जिला दारङ्ग (आसाम)

उत्तरी खत	उतरी खत	७४८	दुफ्लेघुर	हलेम	६१४
बारगंग (केरोला)	बोरगञ्ज	१३०६	गोहपुर	गोहपुर	५२०
बेहाली	बेहाली	८९४	हरचुरा	बाली पारा	६८१
बोरभील	बोरगञ्ज	७३६	कचारीगाँव	बोरजुली	६९३
बोरेङ्गजुली	दिमाकुशी	६१७	मजुली घुर	सूती	६६६
बोरोई	हलेम	७४९	मिजिका जान	मिजिका जान	१०३६
बोरपुखुरी	मिजीकाजान	५६९	पाभोई	,,	६४६
कोरामोर	हाथीगढ़	६९८	पानीरी	पनेरीहट	७६६
घेन्दाई	बोरजुली	६७२	परताब घुर	सूती	१०५७
दीकोराई	सूती	१७८८	फुलबाड़ी	बाली पारा	१५४१
दिमाकुशी	दिमाकुशी	६२६	रुपाजुली	बिन्दुकरी	७८६

जिला नौगांव (आसाम)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
कोलियाबुर	सिलघाट	५४८	सेकोनी	जारुलबन्धा	७६४
लूंग-सूंग	चपानाला	८३५			

जिला शिवसागर (आसाम)

अत्तावारी	राजमाई	८३०	काकाडंगा	गाट्टुंगा	१३१
बेहोरा	नुमाली घुर	८४५	लाखी बारी	जोरहाट	११६
नोर होल्ला	बेरुआगांव	५४५	नहोरवाडी	गोलाघाट	१८६
बोरजान	बोरजान	६१७	राजमाई	राजमाई	१२१२
डुफ्लेटिंग	डुफ्लेटिंग	८७२	सांगसुआ	गाट्टुंगा	१६१०
गाट्टुंगा	गाट्टुंगा	१४७०	स्काटिश आसाम	खारी कटिया	१३९९
जादनपुर	जोरहाट	६४	सोराई पानी	डुफ्लेटिंग	५४२

जिला लखीमपुर (आसाम)

बोरडुबी	डुमडुमा	१२५३	लेपीरकट्टा	बारबरुआ	८२३
दिरियाल	डूगरीजन	५१८	मोरन	मोरन	१२२१
डूगरीजन	डूगरीजन	७१८	फिलोबारी	डुमडुमा	७१८
इतकाबुली	खेतो	८१९	रोमाई	डिकोम	६२७
केयहुंग	डूगरीजन	८१२	सीजुली	नार्थलखीमपुर	४२२
कुमसांग	डुमडुमा	११२६	सिपोन	मोरन	११८३

मेसर्स डङ्कन ब्रदर्स एण्ड कम्पनी लि० कलकत्ता

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट्स या एजेण्ट्स

जिला दार्जीलिंग

मेरीबोंग-क्येल	मेरीबोंग	६७०	रुंगली रुंगलीयट	रुंगली रुंगलीयट	३४१
ओकायती	मिरिक	४१९	सीयोक	मिरिक	३८४
पूबोंग	घूम	४७८	थूर्बो	मिरिक	१२००

जिला दूआरज और जलपाईगुड़ी

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
अड़भील	मटेल्ली	८८९	किलकोट	मटेली	६३७
बाग्राकोट	पिलानशट	१५१३	कुमार ग्राम	न्यूलैंडस	९६२
बैंट गुरी	बारादिघी	११७६	लाखीपारा	बनारहट	९५६
बीरपारा	बीरपारा	१३७१	लंकापारा	हन्तुपारा	१७९१
कारोन	कारोन	६०२	लीशरीवर	पीलानशट	१५५१
चालोऊनी	मटेल्ली	११५३	मोनाबारी	मोनावरी	६१०
चुल्सा	,,	१०२६	मीनग्लास	सैलीहट	८३४
दार्लिंगकोट	माल	५८३	नागेसुरी	मटेली	१११३
दांगुझार	दांगुझार	१०२१	न्यूलैंडस	न्यूलैंडस	११७२
डुमचीपारा	हन्तुपारा	११६२	फ़ासकोआ	हातीपोथा	३५३
फ़ागु	फागु	९५५	पुथारझोरा	मानबारी	८६६
गराडापारा	बनारहाट	१२४९	सामसिंग	मटेली	१२५६
गरगन्दा	हन्तुपारा	१००२	साकोज	न्यूलैंडस	९४९
हन्तूपारा	हन्तूपारा	१२५५	साथक्याह	माल	१०६३
होप	नग्राकट	८७६	यंगटांग	मटेली	८३८
जिती	नग्राकट	८७६	झुरान्ती	मटेली	११३८

जिला तराई (पश्चिमी बंगाल)

गुनग्राम	गुनग्राम	१०७५	ओर्द	पानीघाट	५६६
हंसकुआ	बागडोग्रा	५१७	पुतीनबारी	,,	२६३

जिला दारंग (आसाम)

नोनाईपारा	दिमाकुसी	७२४	नगरी जुली	अत्तारी खाट	३६५
ओरंग जुली	दिमाकुसी	६९२	जिया जुरी	चपानाला	४६१

जिला शिवसागर (आसाम)

मोहिमा	मोहिमा	६७३

जिला लखीमपुर (आसाम)

सिन्ना टोलिया	नार्थ लखीमपुर	९२५	लेदो	लेदो	६३६

जिला काचर (आसाम)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
बोरोकाई	सिलकुरी	५२०	कंचनपुर	मोनचेरा	६००
चन्दीघाट	उदर बुन्द	६८१	रामपुर	दुलु	४९४
धोलाई	क्रूकीचेरा	१४६६	रुकनी	पालनघाट	५००
दोलू	दुलु	१५६३	वेस्ट जालिंगा	द्वार बुन्द	६५१

जेम्स वारेन एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट्स या एजेण्ट्स

जिला दार्जिलिंग (पश्चिमी बंगाल)

बन्नीकबर्न	लेवांग	३६७	रुंगनीत	लेवांग	१८६
जिंग	,,	५४१	तुकदाह और ग्लेएडा रुयल	घूम	४५१
फूब्सेरिंग	,,	३६५			

जिला तराई (पश्चिमी बंगाल)

बाड़ा दोगरा	बाड़ादोगरा	३२४	सिंधिया झोरा	बाड़ा दोगरा	२४६

जिला दारंग (आसाम)

चार द्वार	धेकिया जुली	३६६	शाको मातेः	सूती	८६४

जिला कामरूप (आसाम)

बसिस्ता	गौहाटी	८०

जिला नौगाँव (आसाम)

बुर्रा पहर	जाकला बन्धा	२४७	चाप नाला	चाप नाला	६७

जिला शिवसागर (आसाम)

आम गुरी	आम गुरी	१४३६	नुमाली घुर	नुमाली घुर	६६८
बोका होला	टीटा बार	६८९	रुंगा गोरा	बदली पर	६२४
बोर बाम	आम गुरी	९९६	सिकोटो	खारी काटिया	५९५
बोरसा पुरी	नुमाली घुर	१००५	थोबरा	राज माई	८४३
सिन्ना मारा	सिन्ना मारा	१४६४	तियोक	सोनारी	५४०
धेकिया जुली	,,	५३९	हुल वालिंग	आमगुरी	६५६
मुरमुरिया	,,	१०५६	कटौनी बारी	मारी यानी	७२१
दीपलिंग	भोजो	८०७	खारी काटिया	सिन्ना मारा	११५०

जिला लखीमपुर (आसाम)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ में
वाली जान	डूगरीजन	६६१	मोहन वारी	लालेआल	४७२
वाली जान नार्थ	चबुआ	१०२६	पावो जन	वाराह पजन	१०००
वाली झान साउथ	,,	७०१	रैदांग	डुमडुमा	१०४८
वोसा कोपी	डुमडुमा	१२६४	राजाह अली	डुगरी जन	५७६
चॉदमारी	तीनसुकिया	३२८	रुपाई	डुमडुमा	१०६६
दैमुखिया	डुमडुमा	१०७८	सामदांग	,,	१४३१
दी मूली	,,	१३०४	सील कोटी	चकुआ	११७७
देखारी	राजमाई	९६८	तारा	डुम डुमा	१२३४
देवहाल	डुगरी जन	६३७	उमा तारा	नामरूप	३७६
देलाखत	तिन सुकिया	४२६	भालोनी	डुगरीजन	७१७
धौदाम	वाराह पजन	११५०	भिरी घाट	भिरी घाट	४५६
दुआ मार	डुमडुमा	६००	कुभीर	कुभीर	१२४३
हंसारा	,,	१००३	लाइ सिंगा	उदर उन्द	६३५
लंघाजंन	नाहोर कातिया	५४५	रूपा बाली	बॉस कड़ी	६३५
लिबू गुही	तिन सुकिया	६१५			

मेसर्स बॉमर लारी एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट्स या एजेण्ट्स

जिला दार्जिलिंग (पश्चिमी बंगाल)

वदाम तम	लेबौंग	७७९	रिंग टाउन और होप टाउन	तुँग	८६५
वाल सुन	तुँग	४३७	सिंग बुलमी	करसिगांग	४१८
वारनेश बेग	दार्जिलिंग	२८१	तिंगलिंग	,,	३११
सावारी	पानीघाट	६१४	बाट लुकवार	दार्जिलिंग	४९२
मुरमा	तुंग	३५५			

जिला नौगाँव (आसाम)

सुकान ज़ुरी	नौगाँव	१४४

जिला शिवसागर (आसाम)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी स्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
बोई साहबी	सेलेन घाट	१०८८	नगानीजन	सेलेन घाट	९४६
बोर पत्ना	बोरहट	७४३	सेलेंग	,,	१०२२
मेलेंग	नाकाचरी	१७७३			

जिला लखीमपुर (आसाम)

बोगापानी	दिगबोर	११०८	कोइलामर्स	लखीमपुर नार्थ	५६१
बोकल	लाहो आल	१३३१	लेंगराई	चबुआ	३६८
बोरदेव बाम	पथाली पम	३४३	मानोटा	डिब्रूगढ़	५६०
देसाजन	तालुप	६५८	मर्घेरिटा	मर्घेरिटा	१३५२
देहिंग	मघेरिटा	८२६	मुत्तुक	लहोआल	५३४
देजू	नार्थलखीमपुर	८८७	नालानी	तिनसुकिया	१००१
दिकोम	दिकोम	९३७	नामदंग-नामतोक	मर्घेरिटा	१२१५
दिरोक	मर्घेरिटा	८२६	नामसांग	जेयपुर	४००
दूलाहट और तोतीजन	लखीमपुर नार्थ	१०१४	नोखराम	तिनसुकिया	६६७
हरमूजी	लालुक	८५५	पानीतोला	पानीतोला	१२९५
हमीआली	चबुआ	६००	पथलीपम	पथलीपम	८७४
हुकान पुकरी	तिनसुकिया	८६२	सेसा	जोकाई	६६४
जेयपुर	जेयपुर	७१५	सिंगलीजन	लहोआल	४२५
जमीरा	डिब्रूगढ़	८६५	तिपुक	तलुम	८२९
जोयरिंग	लखीमपुर नार्थ	६१४			

जिला काचर (आसाम)

सेफिन्जुरीभील	मेडले	२१६०

मेसर्स ऑक्टेवियस स्टील एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट्स या एजेण्ट्स

जिला-दोआरज और जलपाई गुड़ी (प० बंगाल)

चेंगमारी	केरन	१५७८	दालमोर	बीरपारा	६५१
दालगांव	बीरपारा	११६३	दालसिंगपारा	दालसिंगपारा	१२९८

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
इथेलबारी	बीरपारा	४४७	ऊदलबारी	दाम दिम	५७८
लूकसान	केरन	७७५	सिली	सैली हाल	१४७३
नया सिली	नगरकात	९६३	तूर्सा	दाल सिंगपारा	८५०

जिला दारंग (आसाम)

बामगांव	बालीपारा	५३८	सिंगरी	धेकिया जुली	६१२
वेलसरी	धेकियाजुली	४५०	सोनाभील	बिन्दु कुरी	६२०

जिला नौगांव (आसाम)

बोगीघोला	लतेकुजान	६१४	कानु	साफेखाती	८६६
बोका खत	बोका खत	४८५	कूमताई (बादुलीपार)	बादली पार	१९४३
देवपानी	सारुपथर	३७१	मारंगी	लाते कुजान	३३०
देसोई	मारीआनी	५२७	मेथोर्नी	बोका खात	६०८
घूली	तीतावार	८३८	रुंगा जौन	मारंगी	१३५०
दोयंग	ओटिंग	५३०	वोका	बरुआ गांव	५३४
होटले	होटले	१३५९			

जिला लखीमपुर (आसाम)

बाभालोनी और राजगर हाली	माकूम जङ्कशन	११०७	लङ्काशी	माकूम जंकशन	१७३
			तीन अली	नाहोर कटिया	५६४

जिला काचर (आसाम)

बिन्नाकेंडी	बिन्नाकेंडी	६४१	लोंगाई (आदम तिला सहित)	चाँदखीरा	९२६
चांदखीरा (लालखीरा)	चांदखीरा	९१७			
डर्वी	डर्वी	८२५	पथेमरा (थाली ग्राम)	अदर बुन्द	५०७
इन्दोग्राम-कुम्भलग्राम	कुम्भिर	६५७			
ईसाभील	हमिखीरा	१०००	पथिनी पिपलागुल चम्पारी(बारी)	चाँदखीरा	१७८०
कल्लीनेचेरा	कुलैने	५५०			

मेसर्स मेकनेल एण्ड वेरी लिमिटेड

प्रोप्राइटर्स मैनेजिंग एजेण्ट्स

जिला दोआरज और जलपाईगुड़ी (प० बंगाल)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफ़िस	विस्तार एकड़ों में
विनागुरी	विनागुरी	११११५	मोरघाट	विनागुरी	८७७
देम दिमा	वीर पारा	११६९	नाग दल	वीरपारा	९६३

जिला दारंग (आसाम)

भूरिचाँग	पनेरी हट	८६०

जिला नौगांव (आसाम)

बुखीग्राल	लेते कुजान	७५९

जिला लखीमपुर (आसाम)

वाघजन	डुम डुमा	७२७	मैजान और राजगढ़	डिब्रूगढ़	१३३०
वोर वोरुआ	वोर वोरुआ	५९४	नागाघुली	ओकलैण्डस	७७३
दी गुल तुरंग	डुम डुमा	८२३	नुदवा	दी कोम	५२०
दिन जान	रु गा गोरा	७४१	ओकलैन्डस	ओक लैण्डस	६४९
दिशई और पीथागोती	मोरान	८३६	रुंगागोरा	रु गागोरा	६७३
ग्रीन उड	डिब्रूगढ़	१००३	सिलोनी वारी	बुलूहत	९९१
हजेल बैंक	दी कोम	५००	थानाई	दीकोम	७०९
महाकाली	खेतो	५०८			

जिला कचर (आसाम)

भूवन्वर	पालन घाट	७९१	जलाल पुर	गुनूरा वाजार	८४४
बुरनोल	दिवान	१६४८	कल्लैन	कल्लैन	९०६
क्रेग पार्क	कल्लैन	४२४	कोया	मोना चेरा	८०९
दीवान	दीवान	२३६७	लावाक	दीवान	१०३९
दिलखुश	लाखी पुर	४५२	पल्लोर बुन्द स्काट पुर	वन्सकन्दी	१२६३
दोयापुर	अदर बुन्द	४८८			
हत्ती चेरा	सिलचर	८६७	सुवोंग	दुलू	८०४

मेसर्स गिलेण्डर्स अर्बुथ नाट एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट् या एजेण्ट्स

जिला दार्जिलिंग (पश्चिमी बंगाल)

सेलिंग बोंग	नगरिसपुर	३८१

जिला दोआरस और जलपाई गुड़ी (पश्चिमी बंगाल)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
बमोदंगा	बनूरी	९१८	कुर्त्ती	नगरकत्ता	७४२
भोगोत पुर	नगरकत्ता	१३२०	इन्दोग	मटेल्ली	७५६
बुन्दापानी	बनारहत	९२३	नगरकत्ता	नगरकत्ता	१०१४
गैरखत्ता	गैरखत्ता	१७७८	तासली	बीरपारा	१०७६
घाटिया	नगरकत्ता	६११	तेलीपारा	बिनागुरी	१०१३
ग्रास मोर	नगरकत्ता	७४१	तोंदू	बामोनी	६१२
हिल्ला	,,	७६३			

जिला तराई (पश्चिमी बंगाल)

तैपू	जन ग्राम	३६५

जिला दारंग (आसाम)

बोरजुली	बोरजुली	१७६२	नाम गाँव	ठाकुर बाड़ी	६७५
बोर महाजन	हलेम	४८०	शीसा	बिन्दुपुरी	६३७
युला पादुंग	ठाकुर बाड़ी	११६५	सोना जुली	बोरजुली	१२४
धुई राती	बोर जुली	५८४			

जिला शिवसागर (आसाम)

जबोका	सोनारी	९६७	निमोन गढ़	सुफ्री	४०१
मुत्रापुर	सुफ्री	६२४	सुफ्री	,,	१०१६
नाहुक	,,	८०३			

जिला लखीमपुर (आसाम)

आनन्द बाग	माकूम जंकशन	४१७	तेंग पानी	माकूम जंकशन	४८७
वेट जन	,, ,,	५८३	जुनली बारी	हूगरी जन	६०५

जिला कचर (आसाम)

अरकूतीपुर	सिलचर	८६१

मेसर्स जार्डिन हैण्डरसन लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट् या एजेण्ट्स

जिला दोआरज और जलपाई गुड़ी (पश्चिमी बंगाल)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
बारादीघी	बारादीघी	१०७८	मटेल्ली	मटेल्ली	८१६
भाट पारा	कालचीनी	१२१२	नेन्द्र पारा	काल चीनी	१०४१
मध्य दोआरज	पान बस्ती	१६१३	मूर्ति	मटेल्ली	६५३
चूआ पारा	चूआ पारा	१२३२	न्यूग्लेंको	माल	६८४
जयन्ती	हाती पोथा	७६८	रिदाख	रिदाख	१०६६
कार्तिक	,,	६२५	बाशबारी	पिल्लानशठ	६०२

जिला दारंग (आसाम)

अद्दाबारी	बाली पारा	८७९	मजबाथ	मजबाथ	३३५
बाल्ली पारा	लोकटा	४४०	मोनाबरी	बोरगंज	१६०९
गिंजिया	मिजिका जान	७२५	नया गोगरा	गोहपुर	८६१
हलेम	हलेम	१०४०	ताराजुली	त्रोरजुली	७२८
कोपाती	खारूपतिघाट	४०२	तेजपुर और गोगरा	बिन्दुपुरी	७७५

जिला नौगाँव (आसाम)

बेहुबोर	बेहुबोर	११६४	बुरनीब्रे स	साल चापड़ा	७६९
देसाई और पर बुतिया दुक लिंजिया	मरियानी	१३१५	लल्ला चेरा	वर्नर पुर	६२९
			लल्ला मुख	लाला	७२९
हुनवाल	,,	१२६१	सेरिस पुर	हेला काण्डी	६७०
अनेरवाल सिङ्गाल सहित	मोना चेरा	१३९२	सिलकुरी	सिलकुरी	९९८

मेसर्स जेम्स फिनले एण्ड कम्पनी लि०

जिला दो आरज और जलपाई गुड़ी (पश्चिमी बङ्गाल)

दामदिम	दामदिम	१६१८	नोवेरा नुद्दी	नेवरा	७२९
कुमलाई	,,	९४०	रुङ्गा मुत्ती	माल	१८६४
नरखाती	माल	६७०	सूंगची	,,	१०१७

जिला दारंग (आसाम)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
घुनसेरी	मजवत	५७१	नहोरानी	ठाकुर बाड़ी	१५४१
हत्तीगढ़	हत्तीगढ़	१८६१	सापोई	घेकिया जुली	९४२
कोनोली	ठाकुर बाड़ी	८८४	केलिदेन	मिसा	१२९४
लामबारी	मजवत	६४२	नोनेई	सालना	१२५०
मंजुली	हत्तीगढ़	६८२	सागमुत्ती	जाकलाबन्ध	৬২७

जिला शिवसागर (आसाम)

बोरहत	बोरहत	१००१	काकाजन और देवरापार	नाकाचारी	२४७८
डिफ्लू	बोका खत	८७६	लेंगरी	दीमापुर	१६२३
हाती कुली और दीरिंग	,,	८७८	तीयोक	तीयोक	६८१
जाम्बुरी	ओटिंग	७५६			

जिला लखीमपुर (आसाम)

अवाम	नामरूप	६५५	नहोर टोली	दी कोम	९६२
चाबुआ	चाबुआ	१५४९	नामरूप	नामरूप	८२९
नहोर काटिया	नहोर काटिया	५९५	ओबाई	दिगबोई	१८७७

मेसर्स साबालेस एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेन्ट् या एजेण्ट्स

जिला दो आरज और जलपाई गुड़ी (पश्चिमी बङ्गाल)

चिंचुला	कालचीनी	६६४	मोगल कटा	बनार हट	९२०
दिमा	,,	८७४	नेदाम	माल	११६३
गंगुटिया	,,	७५४	रेमातांग	कालचीनी	६८७
कालचीनी	,,	१३६५			

जिला दारङ्ग (आसाम)

बाही चुकरी	मझवत	७६१	न्यू पुरुषबाड़ी	गोहपुर	३७६
बेत्तीबारी	,,	४२०	ओरंग	ओरंग	५६२
बुदलापारा	दिमाकुशी	६५१			

जिला गोपाल पारा (आसाम)

चोई बारी	बसूगाँव	६११

जिला शिवसागर (आसाम)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
नाम बुर्नदी	बोर पायर	८११			

जिला लखीमपुर (आसाम)

वोका पारा	डुमडुमा	७०८	खारजन	पानी सोला	७६१
बुदवा पेटा	,,	७८८	खोकिंग	तालूक	१०००
डागरी	तालूक	६५५	लेना	,,	४७५
हाफ जन	माकूम जंकशन	१०१९	लोंग सोल	वाराह पजन	१०००
हिलिका	वाराह पजन	१०००	पेंगारी	दिगबोई	८४२
होकोंगुरी	,,	८१५	सूक रेटिंग	डुमडुमा	८००
कांजीकोह	पानी सोला	५१५			

जिला छोटा नागपुर (विहार)

पल्लान्दू	नानकुम	११९	सवादा	और मंभी	४९९

मेसर्स एण्ड्रयू यूले एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट् या एजेण्ट्स

जिला दार्जिलिंग (पश्चिमी बंगाल)

मिम	घूम	४६३

जिला दोआरज और जलपाई गुड़ी (पश्चिमी बंगाल)

बनारहट	बनारहट	११३९	कला	बनारहट	१४०१
चूनाभट्टी	,,	९०१	न्यू दो आरज	,,	११६२
ईगो	मटेल्ली	२६५	सारूगाँव	बीरपारा	६६३
जयवीर पारा	विनागुरी	६०७			

मेसर्स एण्ड्रयू यूले एण्ड कम्पनी

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट् या एजेण्ट्स

जिला दारंग (आसाम)

सुगराजुली	धेकिया जुली	४७६

जिला शिवसागर (आसाम)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
दुकेन हैंग्रा	बोरजन	५७७	कोनीकोर दल्लीम	सेलेनघाट	५७१
धिलोदारी	बारूआगाँव	३१३	कूपाहुरिंग	बोरजन	७१
हिंगरीजन	मोरान	६२५	मुरफुलानी	गोलघाट	३४४
होलुगूरी	मरीयानी	६४२	साकीटिंग	बोरजन	४१८

जिला लखीमपुर (आसाम)

आनन्द	पाथलीपम	३११	खोवंग	खोवंग	६६६
बासमतिया	लाहोआल	३६८	राजगढ़	टिन्खोंग	३५३
भामुन	खोवंग	५८१	टिकोंग	,,	८२९
देसाम	नाहोर कुटिया	३५७			

मेसर्स किलबर्न एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट् या एजेण्ट्स

जिला दार्जिलिंग (पश्चिमी बंगाल)

दार्जिलिंग टीं और चिन्कोना	रूम्गली संगलीयट	९७०	पाशोक	टीस्टा ब्रिज	९०५

जिला तराई (पश्चिमी बंगाल)

नई तराई (पानी घाट)	पानीघाट	९६६	पाहर गूमिया	हाती घिसा	६५७

जिला सिवसागर (आसाम)

बामोन पूकरी	नम्हीरा	६९८	मेकीपुर और मिथोन्सा	नम्हीरा	१२२०
चेरी देवपर्वत	धोल बगन	१०८६	मम्फे गांव (लिंगरी पूकरी)	नम्हीरा	८७०
देवपानी	नम्हीरा	५७५			
दूमुर डुलुंग	मोरान	१४३६	मोहोकुती	सोलागुरी	७३६
गेलाकी और अतरवेल	गेलाकी	११७८	सुन्तोक	नम्हीरा	७८५
खूमताई	मोरान	१०१५	तिन्गालीबम	सोनारी	७३२
लद्मीजन	जोरहत	६२८	टोवकोक	,,	१२७७

मेसर्स मेकलॉड एण्ड कम्पनी लि०

प्रोप्राइटर, मैनेजिंग एजेण्ट् या एजेण्ट्स

जिला दार्जलिंग (पश्चिमी बङ्गाल)

अन्सेलगंज	तूंग	७	सुनगम	नगरीसपुर	३८२
मारग्रेट्सहोप औरमहरानी	,,	८१६	तर्कुंम	,,	३६३

जिला दो आरज और जलपाईगुड़ी (पश्चिमी बंगाल)

नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में	नाम टी इस्टेट	पोस्ट आफिस	विस्तार एकड़ों में
भाटकवा	गारोपारा	११४९	रानीचेरा	सैलीहत	१२७२
राजभात	,,	७६४			

जिला तराई (पश्चिम बंगाल)

तीररीनाह	पानीघाट	५६२

जिला दारंग आसाम

बाघमारी	चारली	६०२

जिला नौंगाव (आसाम)

आमलुकी	सालाना	८७१	देजूहेली	सालाना	३०९

जिला शिवसागर (आसाम)

तायरुन और टीटाबार	खारीकाटिया	१०६२

जिला लखीमपुर (आसाम)

ओफुलिया	मोरा	४६६	तिंगामीरा	डूमडूमा	२२५
तेलोईजान	,,	५००			

जिला कचर (आसाम)

रुपाचेरा	बर्नर पुर	६३८

मेसर्स डेवन पोर्ट एण्ड कम्पनी लि०

जिला दार्जलिंग (पश्चिमी बंगाल)

गिड्ले	रुङ्गली रुंगलीयट	५३३	टीस्टा व्हेली	रुंगली रुंगलीयट	७१७
पुस्सीम्बिंग	घूम	५७०	तुमसांग	मेरीबांग	३५४

जिला दो आरज और जलपाईगुड़ी (पश्चिमी बंगाल)

आमबारी	बनारहट	१००१	मालांगी	हसीमारा	१०२७
बीच	हसीमारा	१०८३	सताली	,,	७०२
भार्नोबारी	,,	१०५०	तोतापारा	बनारहट	६८२
हुल्दीबारी	बिनागुरी	१४५०			

जिला तराई (पश्चिमी बंगाल)

नईचुमता	नई चुमता	५०४

जिला (दारंग आसाम)

नारायणपुर	बेकियाजुली	५८३

जिला कचर (आसाम)

मोनीरखाल (सोनाई खिर)	मोनीरखाल	६६२

जिला पुर्निया (बिहार)

सहबाद	जनग्राम	५५८

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में भारतीय चाय के निर्यात का महत्व

चाय भारत के सर्वश्रेष्ठ उद्योगों में से एक है और देश की अर्थ-व्यवस्था में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान ग्रहण करती है। यद्यपि भारतवर्ष में चाय के उत्पादन के सम्बन्ध में १९ वीं शताब्दि के प्रारंभ से ही प्रयोग प्रारंभ होगये थे, मगर इस उद्योग का वास्तव में प्रारंभ सन् १८३६ से हुआ जबकि कलकत्ता और लंदन में कई संस्थाएं स्थापित हुईं थीं जो कि बाद में 'असाम कम्पनी' के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

आज भारतवर्ष में लगभग ७८९,००० एकड़ भूमि में चाय की खेती की जाती है और जिसका वार्षिक उत्पादन औसतन ६५०० लाख पौंड का है। इसमें से लगभग एक तिहाई हिस्सा यहीं पर खप जाता है और शेष दो तिहाई हिस्से का निर्यात किया जाता है। यह उद्योग देश के संगठित उद्योगों में सबसे अधिक दस लाख से ऊपर मजदूरों को रोजगारी देता है—भिन्न भिन्न करों के द्वारा यह उद्योग केन्द्रिय तथा प्रान्तीय सरकारको काफी रेवेन्यू देता है और विदेशी धन कमाने का भी यह एक बहुत बड़ा साधन है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना में चाय उद्योग को जो पार्ट अदा करना है वह किसी भी तरह कम नहीं है। इस योजना में इसके उत्पादन तथा निर्यात के जो लक्ष्य निर्धारित किये हैं वे क्रमशः ७००० लाख पौंड और ५००० लाख पौंड के हैं। सन् १९५४ में भारत में चाय का उत्पादन ६५८० लाख पौंड का हुआ था तथा सन् १९५५ में ६६४० लाख पौंड का हुआ था। इसलिए द्वितीय योजना के दरमियान चाय के उत्पादन में ३६० लाख पौंड की बृद्धि करना दुर्लभ नहीं है। इसका यह मतलब नहीं है कि चाय के उद्योग पर पहले विचार नहीं किया गया अथवा यह कि उत्पादन का जो लक्ष्य निर्धारित कर दिया गया है उससे अधिक उत्पादन करना सम्भव नहीं है। यह योजना काफी संक्षिप्त है और इसी मुद्दे पर अधिक ध्यान दिया गया है।

चाय के निर्यात का औसतन स्तर सन् १९५५-५६ को छोड़कर ४५०० लाख पौंड का रहता रहा है सन् ५५-५६ में प्रधान चाय के ग्राहक इग्लैंड से सम्बन्ध विच्छेदित होने के कारण बहुत कम चाय निर्यात की गई। द्वितीय योजना का निर्यात का लक्ष्य ५००० लाख पौंड का है और इस योजना का यही हिस्सा इस उद्योग के लिये काफी परिश्रम का है।

यह हिसाब लगाया गया है कि राष्ट्रको मशीनों तथा अन्य साधनों के आयात के लिये ही १५०० करोड़ रुपयों की आवश्यकता लगेगी। इस बात पर विचार करने से कि द्वितीय योजना में अन्य चीजों तथा माल का जो आयात करना होगा उससे भिन्न २ माल के होने वाले निर्यात के आंकड़ों से हिसाब लगाने से ऐसा प्रतीत होता है कि ११०० करोड़ रुपयों की कमी रहेगी। अगर हम हमारे इकट्ठे किये हुए २०० करोड़ रुपयों के स्टर्लिङ्ग बेलेंन्स को भी जोड़लें तो भी ९०० करोड़ रुपयों की कमी रहेगी।

यह अत्यन्त आवश्यक है जैसा कि योजना बनाने वाली समिति ने सही ढंग से संकेत किया है कि इस खाई को किसी भी प्रकार अधिक से अधिक निर्यात करके और आयात को कम से कम करके पूरा करना चाहिए। द्वितीय पंचवर्षीय योजना के लिये आवश्यक विदेशी धन की खाई की पृष्ठ भूमि पर हमको

चाय के निर्यात में वृद्धि करने के प्रश्न को सोचना है।

औसतन निर्यात:—गत पांच वर्षों में भारत का औसतन चायका निर्यात् ४६०० लाख पौंड प्रति वर्ष का रहा है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि ५००० लाख पौंड चाय के निर्यात का लक्ष्य जो कि साधारण निर्यात् से केवल ५०० लाख पौंड ही अधिक है कोई विशेष अधिक नहीं है। भारत के चाय के प्रधान ग्राहक इग्लैंड, उत्तरी अमेरिका, कनाडा, आयरलैंड, मिश्र, आस्ट्रेलिया, नीदरलैंड, सुडान, ईरान इत्यादि हैं और इन देशों में भारतीय चाय की खपत शनैः शनैः बढ़ती जारही है। विशेष तौर से इग्लैंड में जहाँ पर भारत की कुल निर्यात चाय का ७० प्रतिशत हिस्सा जाता है वहाँ पर भी नियमित रूप से खपत बढ़ रही है और जब कि सन् १९५१ में केवल ४४८० लाख पौंड चाय की खपत हुई थी उसमें वृद्धि होकर सन् १९५४ में ५०४० लाख पौंड चाय की खपत हुई। अमेरिका जो कि भारत का दूसरा सबसे बड़ा ग्राहक है वहां पर सन् १९५१ में ८४० लाख पौंड चाय आयात हुई थी उसमें वृद्धि होकर सन् १९५४ में ११६० लाख पौंड चाय का आयात हुआ। सन् १९५५ में कुछ धक्का लगा और केवल १०५० लाख पौंड चाय का ही आयात हुआ। परन्तु ऐसा मालूम होता है कि यह धक्का अस्थायी है और चाय की खपत इस देश में नियमित रूप से बढ़ेगी। वास्तव में अमेरिका में चाय का क्षेत्र अभी भी बहुत बड़ा है जैसा कि वर्तमान में वहां पर प्रति मनुष्य प्रति वर्ष केवल ०·६४ पौंड चाय की खपत है जब कि प्रति मनुष्य प्रति वर्ष इग्लैंड में १० पौंड चाय की खपत है।

भारत सरकार तथा 'टी बोर्ड' दोनों ही निर्यात को बढ़ाने की आवश्यकता, तथा विदेशों में भारतीय चाय के लिए प्रचार करने के तरीकों से जिससे कि विदेशी जनता भारतीय चाय खरीदे, पूर्ण-तया परिचित हैं। इसके परिणाम स्वरूप "टी कौंसिल" सरीखे संगठन, भारत सरकार की साझेदारी में या उसी देश की सरकार की साझेदारी में अमेरिका, कनाडा, आयरलैंड, पश्चिमी जर्मनी और नीदरलैंड में, स्थापित किये गये हैं।

विशाल क्षेत्र:—मध्य पूर्वीय देश भी, उनमें से कुछ जो कि भारतीय चाय की खपत करते हैं, भारतीय चाय के निर्यात के व्यापार के लिए कॉफी क्षेत्र प्रस्तुत करते हैं। मिश्र, ईरान, ईराक, टर्की, कुवैट, सऊदी अरब, सुडान और इसी क्षेत्र के बहुत से देश भारतीय चाय का आयात करते हैं। जब कि इस क्षेत्र के कुछ देशों में भारतीय चाय की खपत बढ़ती जा रही है तब उसी के साथ साथ भारतीय चाय अन्य देशों में अपना अस्तित्व खोती जा रही है।

भारतीय चाय का इस क्षेत्र में कुछ भी उन्नति न करने का प्रधान कारण यह है कि भारत इन क्षेत्रों में चाय के लिये बिलकुल भी प्रचार नहीं करता है तथा इसके अतिरिक्त—कुछ स्वार्थ रखने वाली पार्टियाँ भी भारतीय चाय के विरुद्ध इन देशों में प्रचार करती हैं। इसके परिणाम स्वरूप इन देशों में भारतीय चाय के विरुद्ध कुछ पक्षपात तथा गलत धारणा स्थान ग्रहण कर रही है। सन् १९५४ में भारत से जो सद्भावना मण्डल (Good will Mission) मध्य पूर्वीय देशों में भेजा गया था उसने भारत सरकार के समक्ष जो रिपोर्ट पेश की है उसमें उसने बतलाया है कि इन देशों में भारत की चाय का निर्यात करने का बड़ा क्षेत्र है और उसने उसमें यह भी स्पष्टरूप से प्रदर्शित किया है कि भारतीय चाय ने किन २ कारणों की वजह से इन देशों में सन्तोषप्रद उन्नति नहीं की है और उसीके साथ परिस्थिति को सुधारने का भी तरीका बतलाया है। यह आशा की जाती है कि सही तथा उन्नतिशील प्रचार के

तरीकों को अपनाने पर इन देशों में भारतीय चाय के निर्यात में वृद्धि की जा सकती है। द्वितीय पंच-वर्षीय योजना के दरमियान में इन देशों के लिये चाय के निर्यात में १०० या १५० लाख पौंड से वृद्धि करना कठिन बात नहीं है।

हाल ही में कुछ साम्यवादी देशों के साथ व्यापारिक समझौता होने के कारण विशेष तौर से रूस के साथ होने से चाय के निर्यात में बहुत अधिक वृद्धि की जा सकती है। ऐसा ज्ञात हुआ है कि सोवियत रूस पहले से ही भारतसे सन् १९५६ में २०० लाख पौंड चाय खरीदने के विषयमें बात कर रहा है। आने वाले वर्षों में रूस तथा पूर्वीय यूरोप के देशों से चाय के और आर्डर्स मिलने की संभावना है। इसलिये ऐसा प्रतीत होता है कि ५००० लाख पौंड चाय का लक्ष्य जिसको कि पाना बिलकुलही कठिन न होगा (बहुत सहल हो जावेगा) बल्कि कुछ हद तक द्वितीय योजना के दरमियान में इससे भी अधिक हम प्राप्त करने की स्थितति में होंगे।

गत तीन वर्षों में चाय के द्वारा जो विदेशी धन कमाया गया है वह क्रमशः १०२ करोड़, १४७ करोड़ और १०६ करोड़ रु० है। यह मानकर कि औसतन रूपसे भारतीय चाय २ रुपये ७ आने पौंड के हिसाब से निर्यात की जाती है इस हिसाब से ५००० लाख पौंड चाय के निर्यात से १२५ करोड़ रुपयों का विदेशो धन कमाया जावेगा। चाय की कीमत में बहुत थोड़े समय में ही बहुत घट बढ़ होती है। सन् १९५४-५५ में जो चाय निर्यात की गई थी उसका औसतन मूल्य ३=) पौंड था जब कि सन् १९५५ ५६ में उसीका मूल्य २।≈) पौंड रह गया था। सन् १९५५-५६ में अधिक काल तक चाय की कीमत कम रही और बहुत सी चाय तो उत्पादन की कीमत से भी कम भाव में बेची गई।

इस आधार पर जिसके कि पक्ष में तर्कों की कमी नहीं है कि चाय की कीमत अगले कुछ वर्षों में बहुत वाजिब रहेगी और यह आशा करना अधिक आश्चर्य जनक नहीं है कि अगले पाँच वर्षों में निर्यात होने वाली चाय की कीमत ३ पौंड रहेगी। इस आधार पर चाय द्वारा कमाया हुआ कुल, विदेशी धन द्वितीय पंच वर्षीय योजना के दरमियान में बढ़कर ५००० लाख पौंड के लिए १५० करोड़ रु० प्रति वर्ष का हो जावेगा। और यह धन बढ़कर और भी अधिक हो जावेगा अगर हमारा निर्यात ५००० लाख पौंड से अधिक बढ़ जावे। यह आशा की जाती है कि प्रधान चाय के उत्पादक देशों में जैसे भारत सीलोन, इन्डोनेशिया और पाकिस्तान इत्यादि में एक अन्तर्राष्ट्रीय चाय का समझौता हो रहा है जो कि संसार के चाय के बाजारों में आवश्यक दर्जे तक विश्वास पैदा करेगा और चाय को कीमतों में वाजिब स्थिरता कायम करेगा।

भारतीय चाय के निर्यात में वृद्धि करने के प्रयत्नों के साथ ही चाय की परिषद स्वदेश में भी चाय की खपत बढ़ाने के लिये प्रयत्न कर रही है। भारत में चाय की खपत मन्द तथा निश्चित गति से बढ़ रही है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि खपत का वर्त्तमान स्तर २००० लाख पौंड का है यद्यपि सन् १९५० की खपत के १७०० लाख पौंड के आंकड़ों के पश्चात् अभी तक किसी प्रकार की गणना नहीं की गई है। इसका मतलब यह हुआ कि पाँच वर्षों में ३०० लाखपौंड चाय की खपत में वृद्धि हुई है।

प्रथम पंच वर्षीय योजना के दरमियान में राष्ट्रीय आय में १८% की वृद्धि हुई तथा प्रति व्यक्ति की आय में ११% वृद्धि हुई जिसके परिणाम स्वरूप चाय की खपत में भी ३०० लाख पौंड से वृद्धि हुई। अब द्वितीय पंचवर्षीय योजना में राष्ट्रीय आय में २५% की वृद्धि होगी ऐसी आशा की जाती है जो कि प्रति व्यक्ति को प्रति वर्ष को आय में १८% से वृद्धि करेगी। इसलिये यह असम्भव नहीं है कि

द्वितीय पंचवर्षीय के दरमियान में चाय की खपत में और ५०० लाख पौंड से वृद्धि हो जावेगी जिसके परिणाम स्वरूप भारत की चाय की प्रति वर्ष की खपत २५०० लाख पौंड तक पहुँच जावेगी। अगर यह कथन वास्तव में सत्य घटित हो जावे तो हमको द्वितीय योजना के निर्धारित ७००० लाख पौंड के उत्पादन के लक्ष्य को बढ़ाकर ७५०० लाख पौंड करना होगा।

वास्तव में किसी भी योजना में निर्धारित बड़े तथा छोटे लक्ष्यों को सफलता से प्राप्त करना कितने ही अनिश्चित मुद्दों पर निर्भर रहता है जिनके कि विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। फिर भी बड़े लक्ष्य भी वाजिब आशा की पहुंच से दूर नहीं होते हैं। इसका मतलब यह नहीं लगा लेना चाहिये कि कार्य सरल ही है या यह कि यह कठिनाइयों से घिरा हुआ नहीं है। वास्तव में ऐसे बहुत मसलें हैं जो कि अपनी यात्रा में बाधा पहुंचाकर उसे कठिन बनादेते हैं।

हमारे चाय के निर्यात के विस्तार को अड़चन पहुंचाने वाली कठिनाइयों में जो सबसे महत्वपूर्ण कठिनाई है वह है अन्य चाय के उत्पादक देशों के साथ में हमारी प्रतिस्पर्धा। गत कुछ वर्षों में भारत के साथ साथ अन्य मुख्य देशों में जो चाय का उत्पादन बढ़ता जा रहा है और अब सप्लाय और माँग के मध्य में कोई स्थिर सन्तुलन नहीं है। चाय के उत्पादक देशों का अन्तर्राष्ट्रीय चाय के समझौते को फिर से नया करने में असफल होने—जो कि ३१ मार्च सन् १६५५ से ही समाप्त हो चुका है—के कारण उन देशों को अपना निर्यात बढ़ाने के लिये मनमाना उत्पादन करने के लिये स्वतंत्र छोड़ दिया है। इसके परिणाम स्वरूप सन् १९५४ और १६५५ में मांग की बजाय सप्लाय की मात्रा अधिक थी।

५००० लाख पौंड चाय के लक्ष्य को पूरा करने के लिये भारत को अच्छी जाति की चाय का उत्पादन करना आवश्यक है और उसको दूसरे देशों में मुकाबले की कीमतों में बेचना चाहिये। यह शंकास्पद है कि चाय का उद्योग वर्तमान स्थितियों में उत्पादन की कीमत में कुछ रद्दोबदल कर सकेगा या नहीं। वास्तव में प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ाकर उत्पादन की कीमत घटाई जा सकती है मगर यह निश्चित ही चाय की क्वालिटी पर उल्टा प्रभाव डालेगी।

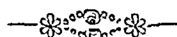
वास्तव में हम चाय की जाति को हल्की पैदा करने के बिना ही चाय की औसतन उत्पादन कीमत कम करना चाहते हैं तथा साथ ही साथ चाय की मात्रा भी अधिक चाहते हैं। आखिर में यही एक मात्र रास्ता है कि केन्द्रिय तथा प्रान्तीय सरकारों को अपनी करों की दर को सुधारना चाहिये जिससे भारतीय चाय अन्य देशों से कीमत में मुकाबला कर सके। यह रास्ता जब कि केन्द्रिय तथा प्रान्तीय सरकार की करों के रूप में आय कम करता है वह चाय के निर्यात के द्वारा उस सारे नुकसान को पूरा करता है और उसके परिणाम स्वरूप काफी विदेशी धन देता है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना ने प्रत्यक्ष रूपसे चाय के लिये न समर्पण करने वाली नीति को ही अपनाया है। यह स्पष्ट ही इस कारण से किया है कि पहला तो दूसरों की तुलना में फसल की सरलता और दूसरा संसार के बाजारों में चाय के भविष्य की अस्थिरता से। सौभाग्य से यह योजना किसी निश्चित ढाँचे में कठोरता से नहीं ढाली गई है। और प्रतिवर्ष के विवरण पर भी सामान्य उद्देश्यों के अन्तर्गत नीति परिवर्तन किया जा सकता है। भारत सरकार तथा चाय की परिषद देश के सम्पूर्ण विकास के साथ चाय की उद्योग की उन्नति तथा आने वाले वर्षों में इस उद्योग को किन २ समस्याओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा तथा इसकी विदेशी बाजारों के क्षेत्र में स्थिति सुधारने की महत्वता से पूर्णतया परिचित है।

—:o:—

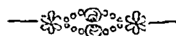
भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



भारत में जूट उद्योग का विकास

Development of Jute Industries in India



भारत का जूट उद्योग

जूट का उद्योग भारत का एक महान् उद्योग है। जब तक देश का विभाजन नहीं हुआ था तब तक सारे संसार में जूट उद्योग पर भारत का एकाधिकार था। इस उद्योग के द्वारा हमारा देश करोड़ों रुपये की सम्पत्ति बाहरी दुनिया से प्राप्त करता था, मगर देश का विभाजन होने के पश्चात् हमारे देश का जूट-उद्योग महान सङ्कट में पड़ गया। जूट उत्पादन करने वाले क्षेत्रों में से तीन चौथाई क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया और जूट का माल बनाने वाली मिलों में तीन चौथाई से भी अधिक मिलें हमारे देश में रह गईं जिसकी वजह से हमारे देश में इस उद्योग का सारा संतुलन बिगड़ गया।

इस प्रकार अब जूट उद्योग पर से हमारे देशका एकाधिकार तो प्रायः समाप्त हो गया है। अब हमारे देश के बाहर भी करीब ५० जूट मिलें जूट का माल उत्पादन कर रही हैं। पाकिस्तान इस क्षेत्र में हमारा प्रतिस्पर्द्धी पहले था, ही अब जापान और ब्राझील भी इस उद्योग में हमारी प्रतिस्पर्द्धा में उतर रहे हैं। ब्राझील ने अपने यहां जूट की खेती भी प्रारम्भ कर दी है और वह अपने यहां की जूट मिलों की मांग के इतना जूट भी उत्पादन करने लग गया है।

इन सब आपत्तियों के बावजूद भी भारत सरकार की जूट उद्योग सम्बन्धी उदार नीति और यहाँ के जूट उद्योगपतियों की बुद्धि और साहस के कारण हमारे यहां का जूट उद्योग दिन प्रति दिन उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा है। गत कुछ वर्षों में कच्चे जूट के उत्पादन में भी हम लोगों ने अच्छी उन्नति की है और अब हम अपने मिलों की मांग का ८० प्रति सैकड़ा जूट अपने ही यहाँ पैदा करने में समर्थ हो रहे हैं तथा जूट के बने माल का निर्यात भी हमारे यहाँ प्रति वर्ष बढ़ रहा है। सन् १९५२-५३ में जहाँ हमने ७०६००० टन जूट के माल का निर्यात किया था, वहाँ सन् १९५४-५५ में ८५२००० टन जूट का निर्यात इस देश ने किया है।

इस प्रकार हमारे देश का यह महान् उद्योग दिन प्रति दिन उज्वल भविष्य की ओर गति कर रहा है।

भारतमें जूट उद्योग का विकास

संसारके औद्योगिक क्षेत्रमें रेशेदार पदार्थोंकी उपयोगिताकी दृष्टिसे रुईका स्थान सबसे श्रेष्ठ है। इसके बाद यदि किसी रेशेदार पदार्थका स्थान है तो वह जूटका। जूट एक प्रकारके पोधोंके रेशोंको कहते हैं। ये पौधे एशिया, अफ्रिका और अमेरिकाके विस्तृत भूभाग में मिलने वाले कई प्रकारके पौधों से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। फिर भी ये पौधे खेतों में बोये जाते हैं और जंगली हालत में भी मिलते हैं। अतः दोनों में यदि कोई प्रकट अन्तर है तो केवल इतना ही, नहीं तो इन दोनों प्रकार के पौधों में वनस्पति शास्त्र की दृष्टिसे कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता। जंगली पौधों का व्यवसायिक क्षेत्र में कोई स्थान नहीं है। केवल खेत में बोये जाने वाले पौधों के रेशे ही कामकी वस्तु सिद्ध हुए हैं और इन्हींको जूट शब्द से सम्बोधित किया जाता है। संसार की विभिन्न भाषाओं में जिन जिन शब्दों से इस रेशेदार पदार्थ को सम्बोधित किया जाता है वे सभी एक ही सूत्र से निकले हुए प्रतीत होते हैं।

जूट के नाम

अंगेजी भाषा में 'जूट' और उसके साहित्य में इसके लिये (Jews mallow) 'जूज़ मैलो' *शब्द भी प्रयोग किया गया है। फ्रेंच भाषा में 'जूट' को* Mauve des Juifs *अथवा* Corde Textile कहते हैं। जर्मन भाषा में इसे जूट कहते हैं। इसी प्रकार भारत की देशी भाषाओं में इसके लिये पाट, झूट, झोटो, झूटो, आदि शब्द भी आये हैं। संस्कृत साहित्य में इसके लिये पाट, जूट और जटा शब्द का प्रयोग पाया जाता है। सम्भवतः संस्कृत भाषा के 'झट' शब्द से ही इसकी उत्पत्ति हुई होगी। इस सम्बन्ध में बाबू रमेशचन्द्रदत्त और कैम्ब्रिज विश्व विद्यालय के प्रसिद्ध अध्यापक स्कीटका भी भी यही मत है। केम्ब्रिज की फिलासोफिकल सोसाइटी में व्याख्यान देते हुए प्रो० स्कीट ने एक वार इस शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में प्रकाश डाला था। आपने संस्कृत के 'झट' शब्द की विस्तृत व्याख्या कर सिद्ध किया था कि इस शब्द से स्वाभाविक तीन अर्थ निकलते हैं जिससे अंग्रेजी भाषा में व्यवहृत जूट शब्द के अर्थ का पूरा बोध हो जाता है।

जूट के प्रकार और उनका देश विशेष से सम्बन्ध

हम पहिले लिख चुके हैं कि ये पौधे दो प्रकार के होते हैं जिनमें से एक वे जो जंगलों में स्वेच्छा से उत्पन्न होते हैं और दूसरे वे जो खेतों में बोये जाते हैं। जंगली पौधों के सम्बन्ध में हम चर्चा करना उपयुक्त नहीं समझते, क्यों कि व्यवसायिक क्षेत्र में इनका कोई मूल्य नहीं है। हम केवल खेतों में बोये जाने

वाले पौधों की ही यहां चर्चा कर रहे हैं। ये पौधे भी दो प्रकार के होते हैं। इनका आकार प्रकार सामान्यतया एक सा होता है और दोनों में एक ही से फूल भी आते हैं। अतः इनकी आकृतिको बाह्य दृष्टिसे से देखकर दोनों के पारस्परिक अन्तर को पहिचानना कठिन है। इनके फलों को देख कर ही पौधों के अन्तर को पहिचाना जा सकता है।

जिन देशों में इन पौधों की खेती की जाती है उनकी चर्चा करते हुए ब्रैसूचनीडर (Brelschneider) ने अपना मत व्यक्त किया है। आप का मत है इस जातिका एक पौधा चीन के निङ्गपो Ning-po के विस्तृत मैदानमें अधिकतासे पाया जाता है। इसके रेशेसे चीन वाले चावल और अन्य प्रकार के अनाज भरने के लिये बोरे बनाते हैं। इसी प्रकार टिनसिन (चीन) Tientsin के मैदान में उत्पन्न होनेवाले पौधे में यह एक प्रधान है। इसकी लम्बाई भी बहुत होती है। चीन स्थित क्यू Kew के बनस्पति उद्यान में रक्खे गये पौधों और उनके रेशों से प्रगट रूपसे सिद्ध होता है कि आजकल जूट के मिलने वाले पौधे टिनसिन में मिलनेवाले पौधों की ही जाति के हैं।

भारत में मिलनेवाले जूट के पौधे यदि कहीं प्रधान रूपसे मिलते हैं तो बंगाल और आसाम में। भारत का यह भूभाग चीन की कितनी ही विशेषताओं का विचित्र संग्रहालय है। यहां की भौगोलिक साम्य अवस्था के अतिरिक्त यहां के लोगों की कितनी ही रस्म रिवाजें भी वहाँ की रस्म रिवाजों से बहुत कुछ मिलती हैं। खान पानमें भी साम्य भाव पर्याप्त झलकता है। जल वायु की समानता यहां एक सा प्रभाव डालती है। ऐसी दशा में बनस्पति शास्त्र के विशेषज्ञों की मतानुमोदित तर्क पद्धति के बल पर कहा जा सकता है कि हो न हो बंगालमें उत्पन्न होनेवाले पाट के पौधे चीनसे ही लाये गये हों। कलकत्ते के रॉयल बोटैनिकल गार्डन नामक बनस्पति उद्यान के संस्थापक और संचालक श्री राक्सवर्ग Mr. Roxburgh का मत है कि लाल रंगका पाट बंगाल में अधिक उत्पन्न होता है। इस पौधे के बीज चीन के कैन्टन नगर से मंगाये गये थे।

चीन में उत्पन्न होनेवाले पौधे के रेशे से तैयार होनेवाला जूट भी ऊंची श्रेणी का होता है। इसके सम्बन्ध में रम्फियास (Rumphius) का मत है कि बंगाल, अराकन, और दक्षिण चीन में जूट अधिक उत्पन्न होता है। बंगाल की चर्चा न कर चीन के सम्बन्ध में आप लिखते हैं * कि इस रेशे से उत्तम सफेद सूत ऐंठा जाता है जो रुई के सूत से कहीं अधिक मजबूत होता है परन्तु यह प्रायः झुका हुआ रहता है। इसपर चूने के पानी का प्रयोग किया जाता है। रही इसकी उपज की बात वह भी सरकारी कागजों से पता चलता है कि सन् १९०३ ई० में अकेले टिनसिन (चीन) से ४० हजार हण्डरवेट जूट विदेश भेजा गया था। ‡

* देखियेCommercial Products of India by sir George wull.

‡ देखिये Board of Trade Journal की सन् १९०३ के २९ अक्टूबर वाली प्रति।

इतने प्रमाणिक परिशीलन के पश्चात भी यह सिद्ध नहीं किया जा सकता है कि क्यू के वनस्पति उद्यान में रक्षित नमूने के पाट के पौधे भारत, मलाया, चीन या जापान किसी भी देश में जंगली अवस्था में पाये जाते हैं। ऐसी अवस्था में औद्योगिक क्षेत्र में जिनकी उपयोगिता प्रमाणित हो चुकी है उन्हीं दो प्रकार के बोये जाने वालों पौधों की चर्चा होती है।

जूट पर वैज्ञानिक दृष्टि

'जूट के सम्बन्ध में वैज्ञानिक खोज करनेवालों में क्रास और बीवान दो ही ऐसे वैज्ञानिक हैं जिन्होंने सबसे अधिक परिश्रम किया है। आप लोगों ने अपनी खोज का तत्वांश प्रकाशित करते हुए सन् १८८९ ई० के 'जर्नल आफ दी केमिकल सोसाइटी' (Joural of the Chemical socity) नामक प्रतिष्ठित पत्र में जो मंतव्य व्यक्त किया था उसके आधार पर ही हम यहां कुछ बातों की चर्चा प्रसंगवश कर देना उचित समझते हैं। 'जूट' की रासायनिक सारिणी C_{12}, H_{18}, O_9, अर्थात् C=47.O; H=6.O; O=47.O हैं। इसमें सेल्यूलूज का अंश ७८.८० प्रतिशत और गैर सेल्यूलूजका २०.२२ प्रतिशत है। रसायन शास्त्र से अनुराग रखने वालों के लिये यह विश्लेपण इस प्रकार है। सेल्यूलूज 3 C_6 H_{10} O_{15} और गैर सेल्यूलूज C_6 H_6 O_3 हैं।

'जूट' बहुत ही सुकुमार वस्तु है। इस पर दुर्बल रासायनिक पदार्थ का प्रभाव भी बिना पड़े नहीं रहता। पानी में भींगने के बाद उष्णता और वायु का संसर्ग जहां एक बार पहुंचा कि यह खराब हो जाता है। पौधे के डंठल में ६ से २० तक जूट के रेशे मिलते हैं जो परिमाणुवाद के सिद्धान्तानुसार परस्पर मिले हुए पाये जाते हैं। जूट के रेशे की लम्बाई वैज्ञानिकों ने १.५ से ३ मीलीमीटर तक निश्चित की हैं। जूट के जिन रेशों का रङ्ग गहरा और तम्बाकू के समान होता है उनमें 'आयोडीन के' अंश का आभास रहता है और जिनपर गहरा पीला रंग रहता है उनमें ऐनो लाइन सल्फेट का अधिक अंश माना जाता है। जूट के जिन रेशों पर वेजनी रंग मालूम पड़ता है उनमें फ्लोरोग्लूकोल और हाईड्रोक्लोरिक एसिड (Phloroglucol & Hydrocloric acid) का अंश पाया जाता हैं। गहरे * अल्कलीज के पानी में जूट के रेशे भिगोने पर उनमें कोतूहलपूर्ण परिवर्तन देखा जाता है। उपरोक्त संमिश्रित पदार्थों का सम्पर्क होते ही जूट के रेशे फूल उठाते हैं और कोमल हो जाने के बाद लहरदार घुंघराली आकृति के हो जाते हैं। जो देखने में‡ ऊनके समान मालूम होते हैं। इस प्रयोग के किये हुए रेशों को 'मरसराइज्ड' रेशे कहते हैं।

---

* Solution of Consentrated Alkalies

‡ देखिये Cross, Bevan,Kely and Watt, Report on Indian Fibtes,36

‡ सन और जूट वैज्ञानिक विश्लेपणका परिमाण इस प्रकार है।

जूट में सेल्यूलूज का भाग उसी परिमाण में मिलता है जिस परिमाण में वह इसी प्रकार के फ्लेक्स आदि अन्य पौधों के रेशों में पाया जाता है। 'जूट में ६.६३ प्रतिशत जलका अंश पाया जाता है। उबाले जाने के बाद जूट १.१ प्रतिशत खारका भाग निकाल देता है अर्थात् जूट का वजन इतना कम हो जाता है। यदि जूट को काष्टिक सोडा ($I\%Na_2O$) में डालकर ५ मिनटतक उबाला जाय तो उसका वजन १३.३ प्रतिशत कम हो जायगा और १ घण्टे तक उबाला जाय तो १८.३ प्रतिशत वजन कम हो जावगा। यदि 'जूट' को चमकदार बनाने के लिये मरसराइज करने की विधि के अनुसार सल्यूशन आफ कन्सेन्ट्रेटेड अलकलीज ($33\%Na_2O$) में उबाला जाय तो वह ११.० प्रतिशत वजन में कम हो जायगा। इस खार में उबालने से रेशे मुलायम और चमकदार हो रेशम के समान मालूम होते हैं। जूट में कार्बन का अंश ४७ प्रतिशत हैं। यदि इसपर रासायनिक प्रयोग किये जांय तो यह टसर और ऊन की नाईं मालूम हो सकता है। जूट और सन में वैज्ञानिक दृष्टि से अन्तर अवश्य हैं।

जूट का व्यवसाय क्षेत्र में प्रवेश

व्यवसाय क्षेत्र में 'जूट' का प्रवेश तीन रूप में होता है जो इस प्रकार है।

छुट्टा जूट ३० से ४० सेर तक के गट्ठों में बांधकर बाजार में बिकने के लिये आता है और कम्पनीवाले गांठ बांधने के लिये उसे बाजार में खरीदते हैं तथा जूट प्रेस में ले जाकर बांध डालते हैं।

(२) 'कच्ची गांठ' के रूप में भी जूट का व्यवसाय होता है। कच्ची गांठ कभी कभी हाथ से बांधी जाती है और नहीं तो यंत्र द्वारा जूट प्रेस में बाँधी जाती है। जो हाथ से बांधी जाती है वह कच्ची गांठ ३½ मनके लगभग वजन में होती है और जो यंत्र द्वारा बांधी जाती है वह कच्ची गांठ ३½ से ४ मन तक की होती है। कच्ची गांठ विदेश नहीं जाती।

पक्की गांठ—वजन में ४ सौ रतल की होती है। यह यंत्र द्वारा हीं बाँधी जाती है और इसका आकार भी नियमित होता है। पक्की गांठका आकार १०½ घन फुटका होता है। विदेश भेजने के लिये ही यह ऐसी बांधी जाती है।

जूट की गाँठ और श्रेणी

रेशे सूख जाने के बाद गट्ठे बांधकर जूट पास को बाजार में बिक्री के लिये लाया जाता है।

सन और जूट के वैज्ञानिक विश्लेषण का परिणाम इस प्रकार है—

Watnr (Hygroscopic)	६.६३ जूट	६.६० सन्
Aqueous extract	0.36	२-८२
Fat and wax	0.68	०५५
Incrusting ant Pigment matter	२४-६४-४१	6.41
Dellulose	६४.२४	८०

सनमें जहां सेल्यूलूजका ८० प्रजिशत अंश है वहां पाट में उसका ६४ हो प्रतिशत है।

खरीददार लोग जूट को मोल लेकर पास के जूट प्रेस में गांठ बांधने के लिये भेजे देते हैं। वहां जूट की छटाई ऊंच नीच श्रेणी के अनुसार की जाती है। जूट की श्रेणी स्थिर करने का आधार प्रायः उसकी चमक, मुलायमपन, रंग और रेशों की बारीकी के ऊपर रहता है। जूटके सम्बन्ध में प्रायः यह रुढ़ि—सी पड़ गयी है कि जिस जूट में फूल देर से निकलें अर्थात् सितम्बर में वह उत्तम और सबल माना जाता है। सबसे अच्छा माल वह माना जाता है जो उपरोक्त गुणों के साथ ही लम्बा भी अधिक हो। इस प्रकार माल को छांट लेने के बाद उसके दोनों शिरे काटकर अलग कर दिये जाते हैं और केवल बीच के भाग की जूट के रूप में गांठ बांध डाली जाती है। इसके बाद व्यवसायियों के संकेत चिन्ह को डालकर उसकी व्यवसाय सम्बन्धी श्रेणी भी स्थिर कर दी जाती हैं। गांठ बंध जाने के बाद दो प्रकार का माल रह जाता है। जो निकम्मा और टुकड़ा के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

निकम्मा—वह माल है जो किसी कारण से खराब हो गया हो या अधिक टूट गया हो। अथवा बार बार जोड़ने के कारण उसपर गांठें अधिक पड़ गयी हों। इस प्रकार का जूट नीचे की श्रेणी का माल बनाने के काम में आता है।

टुकड़े—यह वह जूट है जो गाँठ बाँधते समय दोनो शिरोंके काट डालने पर निकलता है या अच्छा माल चुनने के समय खराब समझकर अलग कर दिया जाता है। इस प्रकार के जूट से छाँटे गये अच्छे टुकड़े बोरे बुनते समय बाने के रूप में काम आते हैं। रद्दी टुकड़ों का कागज बनता है। फिर भी व्यवहार की दृष्टि से इन दोनों प्रकार के जूट में और अच्छे जूट में कोई विशेष अन्तर नहीं होता। क्योंकि आधुनिक युग की समुन्नत यंत्र सामग्री द्वारा भद्दे प्रकार के जूट का भी अच्छा माल तैयार किया जाता है।

भारत और जूट के औद्योगिक स्वरूप का विकास

जूट की उपयोगिता से भारतीय बहुत प्राचीन काल से परिचित थे पर जूट के औद्योगिक उत्कर्ष का आरम्भकाल भारत में ब्रिटिस शासनकाल के आरम्भ से ही माना जाता है। अतः जूट के औद्योगिक जीवन की आयु भी उतनी ही मानी जाती है जितनी कि ब्रिटिश शासनकाल की।

जबसे योरोप की जलयानकला ने अपनी उन्नति की और भिन्न २ देशों में उत्पन्न होनेवाले मालों का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रारम्भ हुआ तबसे उस माल को इधर उधर भेजने के लिये चट्टी, बोरे, तथा जूट के बने हुए पदार्थों की माँग बढ़ी। इससे भारत की जूट की खेती तथा बोरे के व्यवसाय को बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला। ज्यों ज्यों माल की माँग बढ़ी त्यों त्यों मालका मोल भी बढ़ा और व्यवसाय की उन्नति की सीमा न रही। यह परिस्थिति १९ वीं शताब्दी के आरम्भ कालकी है। योरोप में यांत्रिक शक्तिका चमत्कार फैल चुका था अतः वहां वाले मानवीय पौरुष की लम्बी दौड़ में मानव कर बल को मानव मस्तिष्क बलसे होड़ लगानेपर तुल गये।

भारत के बढ़ते हुए जूट व्यवसाय को ब्रिटेन के पूंजीलोलुप व्यवसायी न देख सके और उन्होंने इस

ओर विशेष रूप से ध्यान देना आरम्भ कर दिया। जूट की खेती करने में वे सर्वदा असमर्थ थे अतः यन्त्रों द्वारा जूट कातने और बुनने की चेष्टा में उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य लगा दी। उधर रूस से आनेवाले हेम्प और फ्लेक्स के रेशों के स्थानपर दूसरे प्रकार के रेशों को व्यवहार में लानेकी चेष्टा धीरे धीरे जोर पकड़ रही थी। इस प्रकार दूनी चेष्टा से उद्योग आरम्भ हुआ। भारत में काम करने वाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एजेण्ट स्थान स्थान से जो रेशे संग्रहकर वैज्ञानिक परीक्षा के लिये ब्रिटेन भेजते थे उन रेशों में जूट प्रधान रूप से परीक्षा का लक्ष्य माना गया। फलतः सर्व प्रथम रस्से आदि बनाने के लिये ही जूट ठीक समझा गया। इस प्रकार थोड़ा थोड़ा जूट कभी कभी ब्रिटेन पहुँचने लगा और जूट के मिलनेपर उसके कातने और बुनने के सम्बन्ध में खोज करने की सुविधा वहाँ वालों को अनायास ही मिल गयी।

संसार में बोरों की मांग बढ़ी। भारतीय अपना पल्ला जोरदार समझकर अच्छा लाभ उठा रहे थे कि योरोप से यंत्रों द्वारा तैयार होनेवाले सस्ते बोरों का प्रसार आरम्भ हुआ। जिस विश्व बाजार में भारतीय जूट के मालका एकमात्र राज्य था उसमें दूसरे भी घुसे और बात की बात में भारत के इस उद्योग को भारी धक्का पहुँचा। ज्यों ज्यों भारत के बने हुए बोरों की मांग कम होने लगी त्यों त्यों जूट के उद्योग में लगे हुए किसानों की चिन्ता बढ़ने लगी। जूट कातने और बुननेवाले बेकार हो गये। उन्होंने देखा कि यन्त्रों का सामना करने में कोई बुद्धिमानी नहीं अतः जूट की खेती में ही सारी सामर्थ्य लगा देने पर वे उद्यत हो गये। भारतीयों के उद्योग का चौपट होना स्काटलैण्ड के कारखानों को और सुदृढ़ बनाना था। यहाँ काम बन्द हुआ और वहां काम और बढ़ गया। जूट की मांग भी साथ ही बढ़ी। यहाँ के किसानों की की खेती चमकी और स्काटलैण्ड के कारखानों की आवश्यकता पूरी हुई। यहां की सारी शक्ति स्काटलैण्ड के कारखानों को समुन्नत करने के लिये लगा देनी पड़ी।

डंडी का उद्योग मजबूत हो उन्नति के ऊंचे शिखर पर जा पहुँचा। यह अवस्था सन् १८५४ ई० तक रही। अभी तक योरोपियन ढंग पर भारत में कारखाने खोलने पर विचार किसी ने नहीं किया था। परन्तु क्रीमिया युद्ध और अमेरिकन सिविल वार से डंडी के ऐश्वर्य को कल्पना की दौड़ से अधिक सम्पत्तिशाली हुआ देख भारत की सस्ती मजदूरी और स्वल्प धन साध्य उद्योग की ओर लोगों का ध्यान जाना कुछ आश्चर्य की बात न थी। अतः सीलोन के काफी के एक प्रसिद्ध व्यापारी मि० जार्ज आकलैंड ने भारत आकर सेरामपुर के पास इशरा में 'दि इशरा यार्न मिल्स' नामसे पहिला कारखाना सन् १८५४ ई० में खोला। यहाँ जूट कातने का कार्य आरम्भ हुआ। सफलता मिलना निश्चित थी अतः कारखाना शीघ्र उन्नति करने लगा। आज यही वेलिङ्गटन मिल्स के नाम से प्रख्यात है। सन् १८५७ ई० में बोर्नियो द्वीप की एक कम्पनी ने, जिसका नाम बोर्नियो कम्पनी लि० था एक कारखाना और खोला जो आज बारानगर मिल्स के नाम से प्रसिद्ध है। सन् १८६३-६४ ई० में गौरीपुर जूट फैक्टरी की स्थापना हुई। इसके बाद से ही जूट कातने और बुनने के व्यवसाय ने भारत में भी उन्नति करनी आरम्भ की और थोड़े

ही समय में कलकत्ते के पास बहुत बड़ी संख्या में जूट मिल खुल गये। फल यह हुआ कि भारतका बना हुआ माल भी जोरों से विदेश जाने लगा। जिसका प्रमाण सन् १८६६-७० ई० के व्यवसायी अंक से मिलता है। उस वर्ष ६,४४१,८६३ बोरे विदेश भेजे गये थे। इस प्रकार डंडी से प्रतियोगिता करने का विस्तृत क्षेत्र खुल गया। भारतके कारखाने घरकी मांग तो पूरी करते ही थे पर वे विदेशको भी माल भेजते थे। यह होते हुए भी जूट की मांग कम नहीं हुई। इस प्रकार भारत में जूट मिल स्थापित करने का कार्य आरम्भ हुआ और इसकी उन्नति इतनी अधिक हुई कि गत ६० वर्षों में इनकी संख्या केवल कलकत्ते में ही ८४ की हो गयी। ये ८४ जूट मिल ५६ कम्पनियों की देख-रेख से संचालित होते हैं। प्रथम जूट मिल में जहां प्रति दिन ८ टन माल तैयार होता था, वहां आज प्रति दिन ४९०० टन माल तैयार होता है और ८ हजार मिल से अधिक लम्बा जूट का माल बुना जाता है। इस प्रकार भारत की जूट मिलें अपनी उन्नति करती जा रही हैं।

भारत के जूट प्रेस

माल बनाने के लिये जूट को कारखानों तक पहुँचाने की सुविधा की दृष्टि से जूट की गांठ बांधने की आवश्यकता होती है। इस लिये भारत में जूट प्रेस भी बहुत बड़ी संख्या मे हो गये हैं। इस जूट प्रेसों में दो प्रकार की गाठें बांधी जाती हैं जो कच्ची और पक्की गांठ के नाम से प्रसिद्ध हैं। कच्ची गांठ केवल एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल पहुँचा देने के लिये होती है। यह व्यवस्था स्वदेश के अन्दर की है। परन्तु विदेश जानेवाले जूट को गांठ तो पक्की ही बांधी जाती है। इसका वजन ४०० रतल का होता है और बारदान के साथ ४०५ रतल की होती है, फिर भी जहाज पर नियमित स्थान घेरने के लिये उसका आकार सदा ऐसा रहता है कि जिससे जहाज पर वह अधिक से अधिक ५४ घन फुट का स्थान घेर सके।

भारत का जूट व्यवसाय

जूट का निर्यात सन् १८२८ ई० से आरम्भ होता है। उस वर्ष ३६४ हण्डरवेट जूट विदेश गया और फिर मांग बढ़ती गयी और परिणाम यह हुआ कि गत १०० वर्षों मे इसका परिमाण बहुत बढ़ गया। इसकी क्रमशः उन्नति का अनुमान नीचे दिये गये अंकों से सहज में हो जाता है।

जूट का निर्यात

भारत ने जूट इस परिणाम में विदेश भेजा :—

सन्	हण्डरवेट (जूट गया)
१८२८	३६४
१८३७-३८	६७,४८३
१८४७-४८	२३४,०५५

१८५७-५८	७१०,८२६
१८६७-६८	२,६२८,११०
१८७७-७८	५,३६२,२६७

उपरोक्त अङ्कों में स्पष्ट है कि विश्व के बाजार में भारत के जूट की कितनी अधिक मांग है। यह क्रम ५० वर्ष का है। गत ५० वर्षों में जहां ३६४ हण्डरवेट से जूट का निर्यात ५३,६२,६७ हण्डरवेट हो गया, वहां मूल्य में भी महान अन्तर मिलेगा। अर्थात् जहां ३६४ ह० भेजकर भारत ने विदेश से ६२०) रु० वसूल किये, वहां ५३,६२, २६७ ह० जूट भेज कर ५ करोड़ से अधिक की रकम वसूल की।

गत आठ वर्षों के अंकों से जूट के गांठों का अनुमान हो जायगा।

सन्	गांठ विदेश गयी
१९२०–२१	२३,४३,००३
१९२१–२२	२९,६७९५३
१९२२–२३	२९,०१,५६३
१९२३–२४	३७,७१,२३८
१९२४–२५	३३,२२,०५२
१९२५–२६	३५,१६,७९२

जूट काटिङ्गस—छुट्टे पाट में टुकड़ों को बटकर मिला देते हैं। छुट्टे जूट का लेन-देन कलकत्ता बाजार में मन पर होता है जो ८२ रतल ४ औन्स ९ ग्रेन का होता है। कंट्राक्ट करते समय गांठ के अन्दरवाले माल के सम्बन्ध में यह पहिले ही निश्चित हो जाता है कि गांठ में कितने प्रतिशत अच्छा हैसियन वाला माल होगा और कितने प्रतिशत अच्छा बोरे का माल होगा। इसी प्रकार कितने प्रतिशत टुकड़े रहेंगे।

छुट्टेमाल और गांठ बंद माल में श्रेणियाँ अलग अलग रहती हैं जो इस प्रकार समझना चाहिये। छुट्टे माल में–५ श्रेणियां।

ढोल और कच्ची गाँठ—श्रेणी नं० १–इसमें सब माल उत्तम श्रेणी का हैसियन के योग्य रहता है।

श्रेणी नं० २—इसमें २० प्रतिशत उत्तम श्रेणी का ताने के योग्य और ६० प्रतिशत बोरे के योग्य तथा २० प्रतिशत टुकड़ा बाना रहता है।

श्रेणी नं० ३—इसमें ७० प्रतिशत बोरा का ताना और ३० प्रतिशत बोरा बाना।

श्रेणी नं० ४—इसमें ४० प्रतिशत बोरा का ताना और ६० प्रतिशत बोरा बाना रहता है।

इन ४ के अतिरिक्त ५ वीं श्रेणी वही है जो टुकड़ा और निकम्मा माल होता है। इसकी गांठ ही अलग बँधती है और इस पर R, S का चिन्ह रहता है।

पक्की गांठ—पूर्वीय जूट ढाका या नारायनगञ्जी के नाम से आता है। उत्तर का माल सिराजगञ्जी कहलाता है, फिर भी देशी और तोसा अपने पुराने ही नाम से बिकते है। इनकी पक्की गांठ

४०० रतल की होती है। इसका आकार ५२ घन फुट के स्थान को घेर लेता है। ये गांठ जूट के दोनों शिरे काट कर बांधी जाती हैं। इन पर जो मार्के रहते हैं, वे प्रातः रोपस, दौरह, मैङ्गोज, लाइटनिंगस और हार्ट कहाते हैं। जिनके सम्बन्ध में कुछ स्पष्टीकरण इस प्रकार का है—

जूट के छुट्टे माल के बाजार म जैसे किसो व्यापारीका विशेष प्रकार का मार्का चालू माना जाता है और उसको गांठ के अन्दर का माल सन्देह से नहीं देखा जाता, उसी प्रकार पक्की गांठों का हिसाब भी वैसा हा रहता है। मिलों को जो पक्को गांठें सप्लाई की जाती है उनके कन्ट्राक्ट पर भी यह व्यक्त नहीं किया जाता कि गांठ पोछे कितने प्रति कौन से नं० की श्रेणी का माल रहेगा। फिर भी पक्की गांठ के माल में देखा जाता है कि देशी प्रेसों की अपेक्षा विदेशी बन्धी गांठें कुछ अधिक भाव पर बिकती हैं। इसका कारण स्पष्ट है कि उनमें कुछ अधिक सरस माल रहता है।

जूट के बाजार में पक्की गांठों का माल अच्छा माना जाता है, पर इसमें भी एम०ग्रुप या क्रैक्स (M, Group cracks) मार्के का माल सर्वोत्तम माना जाता है। इसपर लाल रंग का चिह्न मार्का रहता है।

एम ग्रुप या लाल मार्क--में स्टैण्डर्ड क्वालिटी, स्पेशल सुपीरियर क्वालिटी, एक्सट्रा फाइन क्वालिटी आदि आती हैं। इसी के अन्तर्गत शिराजगञ्जी माल में वेरी सुपीरियर, एक्सट्रा तथा सुपरफाइन आदि क्वालिटी आती हैं।

ढाका या नारायनगञ्जी—जिसे डायमण्ड भी कहते हैं। नं०२ और ३ की श्रेणी का, माल बराबर भाग में रहता है। ढाका की गांठ में सुपीरियर, सुपर फाइन, एक्सट्रा फाइन, गुड, मीडियम आर्डिनरी तथा मैमनसिंही क्वालिटो भी रहती हैं। नारायनगञ्जी में वेरी सेलेक्टेड और ग्यारेण्टीड आदि क्वालिटी रहती हैं।

देशी—यह प्रायः नं० १, २ और ३ की श्रेणी के माल की मिलवाँ गांठ होती है जिसमें नं० १ और ३ का माल बराबर के परिमाण में आता है। यह माल देशी नं०३ या देशी नं०४ के नाम से बिकता है। इसमें एक मिडियम देशी भी होता है। इसको गाँठ में प्रायः १० से २० प्रतिशत नं० १ की श्रेणीका, ६० से ८० तक नं० ५ का श्रेणी का और १० से २० प्रतिशत तक नं० ३ की श्रेणी का माल रहता है। भिन्न २ ट्रेड मार्क के आधार पर इसमें भी सुपीरियर सफेद, भूरा तथा हलके रंग का माल आता है।

तोसा—यह प्रायः देशी की भाँति २० प्रतिशत नं० १ की श्रेणी का, ६० प्रतिशत नं० २ की श्रेणी का और २० प्रतिशत नं० ३ की श्रेणीका माल गांठ में रहता है। इसमें गुड सुपर बाम्बे, एक्सट्रा फाइन, गुड कल तथा रेड का होता है।

मैङ्गोज—इसमें अच्छे जूट के टुकड़े और उत्तर के माल को मिला कर गांठ बांधते हैं। यह बोरे बनाने के काम आता है। इसपर मार्क आता है। इसमें सुपीरियर और गुड यह दो क्वालिटी आती हैं।

लाइटनिङ्ग—यह मेंगोज के समान होता है। इसपर चक्कर ० का मार्क रहता है। इसमें सुपीरियर और गुड दो क्वालिटी आती हैं।

हार्टस—यह टुकड़ोंकी नीची क्वालिटी का माल होता है।

जूटकी लच्छी और टाट—

जूट की गाँठें जूट प्रेसमें बन्धती हैं। जूट मिल में जूट काता जाता है और वहीं उसकी लच्छी

बनाई जाती हैं और उसी के अन्तर्गत फैक्ट्री विभाग अर्थात् बुनाई खाते में जूट बुना भी जाता है और उसके टाट तथा बोरे बनते हैं।

जूटकी कताई और लच्छी—

जूट के रेशों से लकड़ी आदि कचरा निकाल लिया जाता है और फिर यन्त्र द्वारा उसे मुलायम करते हैं। मुलायम करने के लिये गर्म जल और ब्लीचिंग आयल (Bleaching Oil) नामक तेलसे उसे तर कर दिया जाता है और उसी हालत में रेशे २४ घण्टे तक पड़े रहते हैं। इस अवधि में तेल जूट के रेशों में पूर्णरूपेण व्याप्त हो जाता है। यदि आवश्यकता समझी गयी तो उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले जाते हैं। जिस नम्बर का सूत तैयार करना होता है, उस नम्बर पर यन्त्रों को ठीक लगा देते हैं। यन्त्र में रेशे साफ करने, धुनने और कातने की क्रिया स्वयं होती रहती है। यन्त्र के पास खड़ा हुआ मनुष्य केवल यन्त्र को रेशे पहुंचाता रहता हैं और इस प्रकार यन्त्र द्वारा जूट का सूत अर्थात् जूट यार्न (Jute Yarn) तैयार हो जाता है।

सूत का नम्बर प्रायः सूत की वजन के आधारपर ही रहता है जिसे अंग्रेजी में स्पिण्डल कह कर चिन्हांकित करते हैं। इसका पारस्परिक सम्बन्ध इस प्रकार है।

९० इञ्च=१ सूत
१२० सूत (३०० गज)=१ लच्छी
२ लच्छी=१ हीर
६ हीर=१ मुट्ठा (३६००)
४ मुट्ठा=१ स्पिण्डल (Spyndle) या १४४०० गज।

जूट की लच्छी का नम्बर जानने के लिये १४४०० नापकर लच्छियाँ ले ले और फिर उन्हे तौल डाले और उक्त लम्बाई की लच्छियाँ वजन में जितने रतल हों उतना ही लच्छों का नम्बर मानें। भारत में प्रायः २ रतली नम्बर का जूट यार्न ही अधिक काममें आता है। यहां से बोरे का कपड़ा बहुत कम परिमाण में विदेश जाता है। अधिकांश भाग के लिये बोरे यहीं काटकर सिये जाते हैं।

हैसियन या टाट—जूट का कपड़ा अर्थात् टाट प्रायः सादी या सरल टुइल बिनावट का होता है। कभी कभी टाट में दुरसुती बिनावट का माल भी आता हैं। हैसियन माल जूट के कपड़े में सर्वोत्तम माना जाता है। यह एक सूत के तानेपर साधारण बिनावट का माल रहता है। यह कपड़ा नियमितरूप से १ गज में ४० इञ्च चौड़ा तथा १०½ औंस वजननीट बैठता है। उसके हैसियन बोरे बनते हैं जो बृटेन, रूस, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका सैण्डविच द्वीपपुञ्ज, आस्ट्रेलिया, मिस्र और दक्षिण अफ्रीका में बहुत जाते हैं। हैसियन शब्द के अन्तर्गत हैसियन कपड़ा (टाट) और हैसियन गनी (बोरे) दोनों ही आते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका प्रायः हैसियन कपड़ा (टाट) ही अधिक जाता है। वे लोग अपनी सुविधा और रुचि के अनुकूल बोरे वहीं तैयार करते हैं।

जूट की निकासी

भारत में प्रायः जूट सितम्बर मास से ही बाहर जाने लगता है, पर पूरी फसल की निकासी प्रायः अक्टूबर और नवम्बर मास में जोरों से विदेश के लिये होती है और दिसम्बर में कम पड़ जाती है। विदेशवाले अपने आर्डर सीधा कलकत्ते के शिपर्स के पास भेजते हैं और कभी कभी बृटेन की मार्फत भी सौदा होता है। कलकत्ते के गनी-बाजार में इनडायरेक्ट कण्ट्राक्ट नहीं होते।

जूट उद्योग में भारतीय उद्योगपतियों का प्रवेश

जूट उद्योगमें सर्वप्रथम प्रवेश करनेवाले भारतीय उद्योगपति



श्री घनश्याम दास बिड़ला

जूट उद्योग की पहल। मिल जार्ज ऑकलैंड के द्वारा सन् १८५४ में खोली गई। तब से सन् १९१६ तक इस उद्योग पर सिर्फ विदेशी या अंग्रेज उद्योगपतियों का एकाधिकार था ये विदेशी उद्योगपति इस बातकी बड़ी सतर्कता रखते थे कि जूट उद्योग कामधेनु को दुहने के लिए कोई भारतीय उद्योगपति उनके इस चक्रव्यूह के अन्तर्गत न घुस जाय। सरकार भी विदेशी होने के कारण इन विदेशियों का पूर्ण समर्थन करती थी और उसने ऐसे कानून बना रक्खे थे जो विदेशी कम्पिनियों के पृष्ठ-पोषक थे।

सन् १९१६ तक विदेशी कम्पनियों का यह अधिकार निर्विघ्न रूप से चलता रहा। मगर उसके पश्चात् भारतीय उद्योगपतियों ने प्रथम महायुद्ध की सफलताओं से उत्साहित होकर इस उद्योग में येन-केन प्रकारेण घुसने का प्रयत्न किया। सन् १९१६ में मेसर्स सूरजमल नागरमल के सेठ बन्सीधर जालान ने घुसड़ी हवड़ा में भी हनुमान जूट मिल खोलने के लिए श्री शरदेन्दु मुकरजी से २८ बीघा जमीन लीज पर लेली, मगर युद्ध कालीन परिस्थितियों की वजह से उन्हें मशीनरी उपलब्ध न हो सकी और सन् १९२६ तक यह कार्य रुका रहा।



सर सेठ हुकुमचन्द



श्री बन्शीधर जालान

इसी बीच कलकत्ते के श्री घनश्याम दास बिड़ला और इन्दौर के सर सेठ स्वरूपचन्द हुकुमचन्द ने इस क्षेत्र में सफलता पूर्वक सन् १९१९ में प्रवेश किया और अंग्रेज जूट उद्योगपतियों के गढ़ को तोड़कर दो भारतीय मिलों की स्थापना की। जिनके नाम—

दी हुकुमचन्द जूट मिल्स लि०

दी बिड़ला जूट मैन्युफैक्चरिंग कं० लि०

इन दोनों जूट मिलों के सफल संचालक ने इस बात को प्रमाणित कर दिया कि जूट उद्योग केवल विदेशी लोगों की ही बपौती नहीं है। देशी व्यापारी भी उसका सफल संचालन कर सकते हैं।

यू० पी० में जूट उद्योग

जूट की खेती पर समस्त भारत में बंगाल और आसाम का एकाधिपत्य है। इन दो प्रान्तों के सिवा और भी कहीं जूट का उद्योग सफल हो सकता है, इसकी कल्पना भी किसी के दिमाग में नहीं आ सकती थी, मगर कानपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० श्री कमलापति सिंहानिया ने कानपुर में एक जूट मिल की स्थापना करके लोगों को आश्चर्य में डाल दिया। उन्होंने जूट की खेती को प्रोत्साहन देकर यू० पी० में जूट की खेती का क्षेत्र भी विस्तृत किया और इस मिल को सफलता के साथ संचालित किया। आज भी जे० के० का उद्योग-प्रतिष्ठान इस मिल का सफलता पूर्वक संचालन कर रहा है।



श्री कमलापति सिंहानिया

देश का विभाजन और जूट उद्योग

सन् १९४७ में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के रूप में देश का विभाजन हो जाने से जूट उद्योग पर उसका सबसे भयंकर और बुरा प्रभाव पड़ा। जूट के उत्पादन-क्षेत्रका करीब ३।४ भाग पाकिस्तान में

चला गया और सिर्फ १।४ क्षेत्र भारत वर्ष में रह गया। इधर जूट की मिलें ३।४ हिस्से से भी अधिक भारत वर्ष में रह गईं जिनके लिए प्रति दिन कच्चे माल की आवश्यकता होती थी। इस असन्तुलित वितरण से थोड़े दिनों तक जूट का उद्योग बहुत संकट में पड़ गया। मगर सरकार और उद्योग-पतियों की सतर्कता से यह संकट अधिक समय तक नहीं टिका। पश्चिमी बंगाल में जूट की खेती को बहुत प्रोत्साहन दिया गया जिसकी वजह से जूट के उत्पादन में तेजी से वृद्धि होने लगी और अब तो हमारे यहां हमारे मिलों की आवश्यकता के अनुसार करीब-करीब ८० प्रतिशत जूट का उत्पादन होने लग गया है।

जूट व्यापार को खतरा !

बहुत से लोग प्राय: यह समझते हैं कि जूट निर्यात पर भारत का एकाधिकार नहीं तो इतना अधिकार है कि उसे विदेशों के जूट-उत्पादन से खतरा नहीं हो सकता—यदि खतरा है तो वह जूट के बदले में निकाली गयी वस्तुओं से है। ऐसा सोचते समय यह मान लिया जाता है कि शान्ति-कालीन परिस्थितियों में यदि उचित निर्यात कर दें तो भारतीय जूट व्यापार का अन्य देश मुकाबला नहीं कर सकते। क्यों कि भारत के बाहर जूट के लगभग ५० ही तो कारखाने हैं। भारतीय जूट की किस्म और मूल्य का मुकाबला अन्य देश नहीं कर सकते इस लेख का उद्देश्य इस धारणा को दूर करके यह बताना है कि भारत के जूट-उद्योग को खतरा विदेशी जूट उद्योग की प्रतिस्पर्धा से भी है।

जब भारत अविभाजित था तो उस समय भारत के बाहर किसी देश में जूट की मिल खड़ी करना बिना जोखिम की चीज नहीं थी। क्योंकि विदेश में जूट मिल लगाने वाला यह सोचता था कि कच्चा जूट केवल भारत से ही मिल सकता है। भारत की मिलों को कच्चे जूट की इतनी अधिक आवश्यकता पड़ जाय कि भारत जूट का निर्यात न कर सके, ऐसी स्थिति में विदेशी मिलें ठप पड़ जायँगी। यह निर्यात विभाजन से पहले थी। पाकिस्तान बन जाने के बाद विदेशों का कच्चा जूट बहुत परिमाण में और सस्ते मूल्य पर मिलने लगा। इससे प्रेरित होकर संसार के कई देशों ने अपनी पुरानी मिलों को ही चालू नहीं किया, बल्कि कई नई मिलें भी खड़ी करदीं। पाकिस्तान ने पिछले वर्षों में जो जूट-निर्यात किया, उसके आंकड़े नीचे दिये जाते हैं। इनसे पता लगता है कि विदेशी जूट-उद्योग में कितना विस्तार हुआ है और भारत के मुकाबले में वह कितना माल तैयार करते हैं।

	४७-४८,	४८-४९,	४९-५०,	५०-५१,	५१-५२,	५२-५३,	५३-५४
	(लाख गांठों में)						
भारत के अतिरिक्त अन्य देशों को							

पाकिस्तान द्वारा जूट का निर्यात—३	१८	१७	४२	३२	३८	३८
भारतीय मिलों में जूट की खपत	६६	६५	५२	५७	५६	५५	५३

इन आंकड़ों में पाकिस्तान का वह जूट शामिल नहीं जो पाकिस्तान की जूट मिलों में खपा। इससे कम से कम यह तो स्पष्ट होजाता है कि १९५३-५४ में विदेशी मिलों का जूट उत्पादन, भारतीय मिलों के उत्पादन से बहुत कम नहीं था। यह उत्पादन समस्त संसार के जूट उत्पादन का ४/९ है। यह एक प्रबल प्रतिद्वंदिता का प्रतीक है। आगे हम यह भी बतायेंगे कि विदेशी जूट उत्पादन की क्षमता निरन्तर बढ़ रही है।

पाकिस्तान से कच्चा जूट मिलने से विदेशी जूट-उत्पादन को बहुत प्रोत्साहन मिला है। लेकिन केवल इतने ही से इस उद्योग का विस्तार नहीं होता। जूट के उद्योग को विभिन्न देशों में संरक्षण प्राप्त है। बाहर से आने वाले जूट के तैयार माल पर इतना आयात-कर लगा दिया गया है कि वह वहां अधिक मात्रा में अधिक समय तक नहीं बिक सकता। यह आयात-कर फ्रांस, जर्मनी में तो मूल्य पर ३० प्रतिशत तक है। विदेशी जूट मिलों को पाकिस्तान से कच्चा जूट मंगाने में काफी किराया देना पड़ता है और जो धन मिलों में लगाया गया है, उनका व्याज भी देना पड़ता है। यदि निर्यात कर ऊँचा न लगाया जाय तो ये मिलें बैट जाय। इतने ऊंचे करके लिये विदेशी सरकार बहाना ये पेश करती है कि सामाजिक दृष्टि से उद्योग को संरक्षण प्रदान किया गया है। इसलिए यह सोचना व्यर्थ है कि किसी समय यह आयात कर कम कर दिया जायगा। इसी प्रकार पिछड़े हुए देशों में स्थापित जूट मिलों को भी संरक्षण मिलता रहेगा। यहां पर यह तर्क प्रस्तुत किया जाता है वे देश औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं, अतः उद्योगों को पनपने देने के लिये संरक्षण आवश्यक है। इसके लिये उन्हें जी० ए० टी० टी० समझौते का सहारा मिल जाता है।

१९४७ में अमरीका ने जितना जूट बाहर से मंगाया उसका ९६ प्रतिशत भारत से गया। किन्तु १९५३ में यह प्रतिशत गिरकर ७६ रह गया। भारत ने धीरे-धीरे जैसे निर्यात कर कम किया उसी हिसाब से अमरीका में भारत के जूट की खपत में वृद्धि हुई। यद्यपि इस समय भारत अमरीका की मांग का ८२ प्रतिशत जूट भेज रहा है, किन्तु १९४७-४९ की स्थिति प्राप्त नहीं हो सकी है। यदि पर्याप्त परिमाण में जूट न मिलने के कारण भारत में कच्चे जूट की कीमत बढ़ गयी तो अमरीका की मंडी पर भी यूरुप का

जूट उद्योग कुछ अधिक अधिकार कर लेगा। इस समय आवश्यकता इस बात की है कि जूट उद्योगपति, सरकार और मजदूर, तीनों मिलकर यह प्रयत्न करें कि भारतीय जूट के माल की कीमत अन्य देशों के मुकाबले में नीची बनी रहे।

पिछले वर्ष तीन महत्वपूर्ण बातों का पता लगा है। भारतीय जूट की खपत के सम्बन्ध में तर्क पर ध्यान देना आवश्यक है। इसमें से तो पहली बात यह है कि १९५४ से जापान, उत्तरी अमरीकामें बहुत अधिक हैसियन निर्यात करने लगा। आँकड़े इस प्रकार हैं।

अमरीका में जापानी हैसियन का आयात

		(टनों में)
१९५२		७००
१९५३		४००
१९५४		७,३००
१९५५	(केवल जनवरी और फरवरी)	१,४४२

यह बात मानने का कोई कारण नहीं है कि उत्तरी अमरीका में जापानी हैसियन का निर्यात अब और नहीं बढ़ेगा। मजदूरों के कम वेतन, सस्ते जहाजी किराये, शून्य निर्यात कर के कारण जापान अमरीका में सस्ते मूल्य पर अपनासामान बेच सकता है।

इस क्षेत्र में भारत का दूसरा प्रतिद्वन्दी ब्राजील है, जो जापान से भी अधिक प्रबल सिद्ध हो सकता है। जब ब्राजील, पाकिस्तानी जूट पर निर्भर रहता था, तभी उसके जूट मिलों में ५,००० करघे लगे हुए थे। अब मालूम पड़ता है ब्राजील ने अपने यहाँ जूट की खेती भी शुरू करदी है। अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिये वह जूट पैदा करने लगा है। फलतः हाल के वर्षों में उसने पाकिस्तान से जूट लेना कम कर दिया था और अन्त में बिलकुल बन्द कर दिया। इसके आँकड़े इस प्रकार हैं :—

पूर्वी पाकिस्तान से ब्राजील को कच्चे जूट का निर्यात।

(गाँठों में—४०० पौण्ड की एक गाँठ)

१९५०-५१	१९५१-५२	१९५२-५३	१९५३-५४
६३,७०३	१,०३,०५८	४,२९५	कुछ नहीं

अब ब्राजील को पाकिस्तान से अपनी मिलों तक जूट ढुलाई का किराया-खर्च नहीं करना पड़ता।

इसके अतिरिक्त, ब्राजील उन तीन मंडियों के बहुत निकट है जहां भारत के जूट की खपत होती है। वे हैं—उत्तरी अमरीका, अर्जेन्टाईना और वेस्ट इन्डीज। वेस्ट इन्डीज तो अपनी चीनी बाहर भेजने के लिये, बोरियाँ भारत से बहुत अधिक मात्रा में खरीदता है। ब्राजील से इन मण्डियों को माल भेजने में किराया भाड़ा भी कम पड़ता है। ज्ञात हुआ है कि ब्राजील से अमरीका के लिये हैसियन का निर्यात आरम्भ भी हो गया है। यदि ब्राजील का कच्चा जूट बढ़िया किस्म का हुआ तैयार माल भी भारत जैसा ही होगा इससे भारत के उद्योग को बहुत ठेस पहुँचने की संभावना है।

भारत के जूट व्यवसाय को तीसरा खतरा पाकिस्तान से है। उस देश में हालही के बरसों में जूट की कुछ मिलें खड़ी की गई हैं। जिसमें आधुनिकतम ढंग की मशीनें हैं। ये सब दो पालियों में काम करती है पाकिस्तान को बढ़ियां किस्म का जूट सुलभ हैं और वहाँ मजदूरों का वेतन भी कम है। इन सब साधनों की सुलभता से पाकिस्तान का यह उद्योग खूब पनप सकता है। अनुमान है कि १९५६ के अन्त तक पाकिस्तान की जूट मिलों में करघों की संख्य कम से कम १०,००० तक पहुँच जायगी। पिछले कुछ वर्षों से पाकिस्तान जूट के विषय में आत्म निर्भर है। इस उद्योग में अधिक विस्तार होते ही उसके निर्यात में भी वृद्धि होना स्वाभाविक है। पाकिस्तान ने, अपने कच्चे जूट की खपत बढ़ाने के उद्देश्य, से मध्य-पूर्व के मुस्लिम देशों को, जूट की मिलें स्थापित करने में, सब प्रकार की सहायता करने का बचन दिया है। इन देशों में यह उद्योग एक बार स्थापित हो जाने के बाद निश्चय ही इसे संरक्षण मिल जायगा। और उसका परिणाम यह होगा कि इन देशों में भी भारतीय जूट का माल खपना बन्द हो जायगा।

विभिन्न देशों में जूट उद्योग के विकास पर जो प्रकाश डाला गया है उससे यही स्पष्ट होता है कि जहां एक ओर जूट के कई बदल निकल आये हैं अर्थात् जूट के स्थान पर कागज के बोरे तथा अन्य चीजों का इस्तेमाल किया जाता है, वहां दूसरी ओर विदेशी जूट उद्योग की प्रतिद्वंदिता भी बढ़ती जा रही है फिर भी संरक्षण के सहारे चलने वाला विदेशों का यह जूट उद्योग अधिक दिनों तक नहीं चल सकता यदि भारतीय जूट उद्योग अपनी पूरी क्षमता से काम करे तो वह जूट की वस्तुएँ विदेशों में वहाँ की बनी वस्तुओं से काफी सस्ती बेच सकता है।

यद्यपि विदेशी जूट उद्योग की प्रतिद्वंदिता बढ़ती जा रही है, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि भारत का उत्पादन अवश्य ही गिर जायगा। भारतीय उद्योग, जिसे कितने ही वर्षों का अनुभव प्राप्त है, आज भी संसार का सबसे बड़ा जूट उद्योग है। यदि मूल्य कुछ कम रख गया, तो भारतीय जूट की वस्तुओं की खपत विदेशों में बढ़ सकती है। भारतीय जूट उद्योग की भावी सफलता के लिए इन बातों का होना परम आवश्यक है। पहली बात तो यह है कि इस उद्योग को कच्चा माल सस्ते मूल्य पर निरन्तर मिलता रहना चाहिये। दूसरे विदेशी व्यापारी को यह विश्वास हो जाना चाहिये कि भारतीय माल उसके देश के माल से सस्ता पड़ेगा यदि ऐसा होता रहा तो भारतीय जूट उद्योग सब कठिनाइयों को पार कर जायगा। वे दिन बीत गये जब जूट उद्योग पर भारत का एकाधिकार था। वे अब लौटेंगे भी नहीं। भारतीय जूट मिलों के आधुनिकीकरण पर जो बहुत सा धन खर्च किया जा रहा है इस बात का प्रतीक है कि यह उद्योग संसार में अपना स्थान न छोड़ने के लिये कटिबद्ध है।

स्मरण रहे कि पाकिस्तानी रुपये के अवमूल्यन के पश्चात् भारत सरकार ने जूट पर का निर्यात कर बिल्कुल हटा लिया है।*

---

* भारतीय जूट एसोसिएशन के एक्से प्रेसिडेण्ट श्री एम० पी० बिड़ला का एक लेख।

भारतीय जूट उद्योग की समस्यायें

भारत का जूट-उद्योग कलकत्ता (पश्चिमी बंगाल) में केन्द्रित है। इसकी गणना संसार के बड़े उद्योगों में की जा सकती है। भारतीय जूट उद्योग को यह प्रतिष्ठा दो कारणों से प्राप्त है:—(१) यह उद्योग विश्व के अधिकतम आबादी वाले देशों में से एक देश की अर्थ-व्यवस्था में भौतिक सम्पदा और बहुत अधिक प्राणियों को आजीविका प्रदान करता है, और (२) समस्त संसार—विशेषतः कृषि:-क्षेत्र—की अर्थ-व्यवस्थामें इसका स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आंकड़ों का प्रयोग अत्यन्त सावधानी के साथ किया जाना चाहिए। यदि किसी तथ्य की पुष्टि में केवल आंकड़े ही प्रस्तुत करने हों तब तो इस सावधानी की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है किन्तु निम्नलिखित सारिणियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि राष्ट्रीय कोष में जूट उद्योग का योग क्या है। इन सारिणियों में पिछले तीन वित्तीय वर्षों में भारतीय जूट उद्योग द्वारा अर्जित विदेशी मुद्रा और डालर की तुलना भारत के अन्य प्रमुख निर्यात उद्योगों के साथ की गई है:—

भारत द्वारा विदेशी मुद्रा का अर्जन (करोड़ रुपयों में)

	जूट का सामान		चाय	कपास की बनी वस्तुएँ		भारत का कुल निर्यात	
	(पावना रु०)	(प्रतिशत)	(पा० रु०)	(प्र० श०)	(पा० रु०)	(प्र० श०)	(पा० रु०)
१९५२-५३	१२६	२३.३	८०	१४.४	७०	१२.६	५५५
१९५३-५४	११४	२२.०	१०२	१६.७	७२	१३.९	५१८
१९५४-५५	१२४	२१.७	१४७	२५.७	६६	११.५	५७२

भारत द्वारा अमरीका को निर्यात

	जूट का समान		चाय		खनिज पदार्थ		कुल निर्यात
	(पावना रु०)	(प्र० श०)	(पा० रु०)	(प्र० श०)	(पा० रु०)	(प्र० श०)	(पा०रु०)
१९५२-५३	३७.०	३३	५.६	५	१४.४	१३	१११.८
१९५३-५४	२७.४	३०	७.२	८	१७.३	१६	८६.९
१९५४-५५	२९.८	३४	१०.४	१२	८.७	१०	८७.४

औद्योगिक दृष्टि से भारत अभी अपने पूर्ण यौवन तक नहीं पहुँचा है। अभी इसे बहुत प्रगति करनी है। इस औद्योगिक विकास के मूलाधार होंगे भारतीय जूट, चाय तथा सूती वस्त्र उद्योग क्योंकि यदि भारत को उद्योग के पथ पर आगे बढ़ना है तो ये उद्योग ही उसे आर्थिक बल तथा स्थिरता प्रदान कर सकेंगे जो प्रगति के लिए अनिवार्य है। अतः जूट उद्योग को देश के नवोदित तथा भावी उद्योगों के प्रति एक महत्वपूर्ण कर्तव्यका पालन करना है। इसके साथ ही साथ इसे अपने भविष्य का भी ध्यान रखना होगा।

भारतीय जूट एसोसियेशन के भूत पूर्व अध्यक्ष श्री एम० पी० बिड़ला के एक लेख के आधार पर

समस्याएं और सम्भावनाएं

यहां जूट उद्योग की कुछ समस्याओं पर विचार कर लेना अनुचित न होगा। इसकी प्रथम और कदाचित् सबसे अधिक महत्वपूर्ण समस्या है उत्पादन व्यय तथा प्रतिस्पर्धा। वस्तुत: अन्य समस्याएं तो इन्हीं पर आधारित हैं। अत: यह माना जा सकता है कि यदि यह समस्या सफलता पूर्वक हलकर ली गई तो उद्योग की सम्पन्नता का प्रश्न ही हल हो जाएगा। एक निर्यात उद्योग होने के कारण भारतीय जूट उद्योग को वे समस्त घात-प्रतिघात सहन करने पड़ते हैं जो विदेशी व्यापार के क्षेत्र में अनिवार्य हैं। इस तथ्य पर विचार करते समय (और इस बात को ध्यान में रख कर कि इस उद्योग को अब वह एकाधिकार प्राप्त नहीं है जो इसे किसी समय उपलब्ध था) जब उत्पादन-व्यय (अथवा लागत कम करने) पर बल दिया जाता है तो इसका महत्व स्पष्ट हो जाता है। उपभोक्ता के लिए निर्धारित किये जाने वाले जूट के तैयार सामान के भाव में प्राय: इन बातों का समावेश किया जाता है:—१ कच्चे माल की लागत (जिसमें परिवहन तथा अन्य आकस्मिक व्यय सम्मिलित हैं—२. उत्पादन व्यय और ३. उत्पादक का मुनाफा और एजेन्टों तथा दलालों को दी जाने वाली कमीशन। इन तीनों के साथ एक अन्य खर्च—आयात और निर्यात करने वाले देशों की सरकारों द्वारा लगाये गये शुल्क—भी जोड़ा जा सकता है। यह तो स्वाभाविक ही है कि इन सब खर्चों में एक विशेष सीमा तक ही कमी की जा सकती है परन्तु पिछले वर्षों में इस उद्योग की तुलनात्मक-स्थिति के मुकाबले में इसका खर्च कम से कम करने के प्रयत्न अधिक किये गए हैं। बदलेमें काम आने वाली पैकिंग सामग्री और बोरों तथा बिक्रीके नये तरीकों और विदेशी जूट उद्योगों के कारण भारतीय जूट उद्योग की तुलनात्मक स्थिति अधिकसे अधिक निश्चित होती जा रही है।

कच्चा माल

सबसे पहले हम कच्चे माल की स्थिति पर विचार करेंगे। १९४८ में भारत का बटवारा हो गया। इस प्रकार भारतीय जूट मिल्स मुख्य जूट-उत्पादक प्रदेशोंसे अलग हो गये। जूट-उत्पादक इलाके पाकिस्तानके भागमें आये। इस वस्तुस्थिति ने व्यापार का स्वरूप ही बदल दिया। अब हमारी मिलों को एक विदेशसे जूट खरीदना पड़ा। फल स्वरूप कच्चे माल की उपलब्धि और उसके भाव के सम्बन्ध में असंख्य कठिनाइयाँ सामने आयी। इस प्रकार कच्चे जूट की खेती और उपलब्धि के युक्ति युक्त और स्थायी कार्यक्रम की प्रगति में भी बाधा उत्पन्न हो गयी। भारत की युद्धोत्तर जूट नीति की सबसे महत्त्वपूर्ण सफ़लता है देश में जूट उत्पादकों को दिया जाने वाला प्रोत्साहन। इस समय हम इस स्थिति तक पहुँच गये हैं कि स्थानीय स्रोतों से भारतीय मिलों की कच्चे माल सम्बन्धी ४।५ मांग पूरी कर सकते हैं। इसके विपरीत, बँटवारे के समय भारतीय फसल मिलों की आवश्यकता का अधिक से अधिक चौथाई भाग पूरा कर सकती थी। इस समय तो देशी रेशे की किस्म सुधारने और उत्पादन की मात्रा बढ़ाने का भी पूरा प्रयत्न किया जा रहा है। इस प्रकार यह आशा की जा सकती है कि कुछ ही वर्ष में भारत सरकार उन सब बाधाओं को दूर करने

में समर्थ हो जाएगी जो बँटवारे के कारण उत्पन्न हो गयी थीं और कच्चे जूट की उपलब्धि में विघ्न डाल रही थीं। कुछ ही वर्ष पूर्व जिस उद्योग के कच्चे माल के भाव अकल्पनीय स्तर तक बढ़ गये थे उसके लिए प्रस्तुत स्थिति सर्वथा आशाजनक और मंगल प्रद मानी जा सकती है।

नयी योजनाएँ

निस्संदेह भारतीय जूट उद्योग अपने निर्यात बढ़ाने और पैकिंग सामग्री का प्रमुख विक्रेता बनने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। इसके प्रमाण स्वरूप अभिनवीकरण की उन योजनाओं का उल्लेख कर देना अनुचित न होगा जो कलकत्ते की मिलों में या तो कार्यान्वित कर दी गयी हैं अथवा की जा रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य है कम से कम लागत पर उत्पादन में अधिकतम कार्यनिपुणता उत्पन्न करना। इस प्रकार की नीति अपना कर ही भारतीय जूट उद्योग इतने अधिक प्रतिस्पर्धात्मक व्यापार-क्षेत्र में जीवित रह सकता है। आधुनिक ढंग के यन्त्रो तथा मशीनों के प्रयोग से प्राप्त जानकारी ने इस भय को निर्मूल सिद्ध कर दिया है कि भारतीय मिलों ने अपने उपकरणों का अभिनवीकरण न करके अपना स्थान ही खो दिया है। अबतो पर्याप्त समय से भारतीय मिलों में संसार के किसी अन्य भाग के जूट उद्योग से अधिक, आधुनिक ढंग की मशीने लगी हुई हैं। १९६० तक अभिनवीकरण के इस कार्य का मुख्य अंश पूरा हो जाएगा और भारतीय जूट उद्योग अन्य देशोंके जूट उद्योगों के स्तरपर आकर अत्यधिक बल प्राप्तकर लेगा। भारत सरकार ने अभिनवीकरण सम्बन्धी योजनाएं पूरी करने में भारतीय जूट उद्योग के साथ अधिकतम सहयोग करके अत्यन्त दूरदर्शिताका परिचय दिया है। जूट उद्योगको इसके लिए सरकारकी कृतज्ञता स्वीकार करनी चाहिए। अब तो सरकार का यह सहयोग और भी अधिक सुनिश्चित स्वरूप धारणकर रहा है। सरकार उन कम्पनियों को ऋण दे रही है जो केवल अपने ही साधनों द्वारा अभिनवीकरणकी योजनाएं कार्यान्वित नहीं कर सकती। सरकार और उद्योग का यह सम्मिलित प्रयत्न उस सहयोग का सूचक है जो पिछले वर्षों में इस उद्योग की एक प्रमुख विशेषता रहा है और भविष्य के लिए भी एक शुभ संकेत है।

ऊपर उत्पादन-व्यय में सम्मिलित होने वाले जिन तीन तत्वोंका उल्लेख किया गया है उनमें तीसरा स्थान एजेन्टो और दललों को दी जाने वाली कमीशन को दिया है। वास्तव में अन्तिम रूप से उत्पादन व्यय आंकने में इसका स्थान अपेक्षाकृत नगण्य ही है। युद्धोत्तर काल में पैकिंग-सामग्री-व्यापार में प्रचलित अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थितियों के कारण उत्पादकोंको बहुत ही कम मुनाफे पर माल बेचना पड़ा है। अनेक बार तो व्यापारी कम्पनी को हानि भी उठानी पड़ी है। इसका प्रभाव एक तो अभिनवीकरणके लिए आवश्यक धन जुटाने में और मिलों की असमर्थता में देखा जा सकता है और दूसरे इस उद्योग के उस बाजार-क्षेत्र के पतन में जो महायुद्ध से पहले वित्तीय साधनों से युक्त था और देश के उत्पादन का अधिकांश अपने हाथ में लेने की शक्ति रखता था अ तः पिछले वर्षों में विदेशी मंडियों में भारत की स्थिति बनाये रखने के लिए जो प्रयत्न किये गये हैं उन लिए हमें कुछ न कुछ त्याग करना पड़ा है।

सरकारी शुल्क

उत्पादन-व्यय का अन्तिम तत्व है सरकारी-शुल्क। इस दिशा में तो जूटके सामान परसे निर्यात-कर हट जाने के फलस्वरूप इसकी प्रगति की प्रमुखतम बाधा दूर हो गई है। यह कदम पाकिस्तानी रुपये के अवमूल्यन के तुरन्त बाद उठाया गया था और इस बात का और भी स्पष्ट प्रमाण था कि जूट-उद्योग की आवश्यकताओं के प्रति सरकार का दृष्टिकोण यथार्थवादी है। पाकिस्तानी सरकार ने अपने रुपये का जो अवमूल्यन किया था उसका परिणाम अन्य बातों के अतिरिक्त यह भी था कि उससे पाकिस्तान के बढ़ते हुए जूट-उद्योग का प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को शक्ति प्राप्त होती थी परन्तु निर्यात-शुल्क हटा कर भारत सरकार ने (राजस्व में होने वाली कमी की भी चिन्ता न कर के) जो साहस पूर्ण कदम उठाया वह भारतीय जूट उद्योग के अत्यन्त अनुकूल सिद्ध हुआ। कदाचित् उसी कदम के फलस्वरूप अब यह उद्योग अपने पैरों पर खड़ा होने और अपना भविष्य निर्धारित करने योग्य बन सका है। इसका यह अर्थ नहीं है कि इसे सरकारी सहायता की आवश्यकता ही नहीं होगी। सरकार और भी न जाने कितनी तरह जूट-उद्योग को उत्साहित कर सकती है और कर भी रही है।

नवयुग का समारम्भ

महायुद्ध के उपरान्त भारतीय जूट-उद्योग एक दोराहे पर खड़ा हो गया था परन्तु अब यह अपनी अभीष्ट दिशा की ओर बढ़ चुका है। कोरियाई युद्ध के दिनों में सामने आने वाले अशान्त तथा अस्त-व्यस्त वातावरण से उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों पर विजय पा कर अब यह उद्योग बहुत तेजी के साथ प्रगति कर रहा है और अपना खोया हुआ स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है। इसका लक्ष्य है पैकिंग सामग्री के व्यापार में अपेक्षाकृत प्रमुखता प्राप्त करना और अपने उन अपरिमित शक्ति साधनों के समुचित विकास के लिये उपयुक्त दिशाओं की खोज करना जो अभी अंशतः बेकार पड़े हैं इसके लिये बाजारों की करने और सामान्य रूप से प्रगति करने के लिए उदार और स्थाई कार्यक्रम बनाना होगा। १९४९ से इस उद्योग ने ऐसा कार्यक्रम आरम्भ भी कर दिया है। इस कार्यक्रम का श्रीगणेश अधिकतम महत्वपूर्ण मंडियों—अमरीका, ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया—से किया गया। इनमें से प्रथम दो देशों में इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन के कार्यालय हैं। इनके अतिरिक्त इस एसोसियेशन ने अमरीका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलेंड में भी शिष्टमंडल भेजे हैं। इन क्षेत्रों में प्रचार-कार्य, जन सम्पर्क और विज्ञापनों आदि के आन्दोलन अधिक तेजी से आरम्भ कर दिये गए हैं—और अमरीका में जूट के सामान के प्रयोग के सम्बन्ध में नये क्षेत्रों की खोज करने पर अधिकाधिक बल दिया जा रहा है। अमरीका के औद्योगिक तथा अन्य क्षेत्रों में इस प्रकार के अनुसन्धान कार्य के लिये बहुत गुंजाइश है। वे प्रयत्न इस कथन का निश्चित रूप से खण्डन कर देंगे कि भारतीय उद्योग अपनी पराकाष्ठा पर है। सत्य तो यह है कि यह उद्योग इस बात से भली प्रकार अवगत है कि इसकी व्यापार-प्रणाली में नव-जीवन का संचार आवश्यक है और इसकी उत्पादन-प्रणाली में भी अधिक विविधता होनी चाहिए। यह तो सर्व-विदित ही है कि जूट

एक ऐसी वस्तु है जिसका प्रयोग केवल उन्हीं कामों के लिए नहीं हो सकता जिनके लिए अब तक होता आ रहा है बल्कि कुछ नये अनुभवों ने यह सिद्ध कर दिया है कि इसे और भी अनेक प्रकार काम में लाया जा सकता है। इस तथ्य से ही इस उद्योग का महत्व और भी स्पष्ट हो जाता है।

संक्षेप में, भारतीय जूट उद्योग निम्नलिखित दो लक्ष्यों की पूर्ति की ओर बढ़ रहा है:—

१. उत्पादन के अभिनवीकरण तथा सामान्यतः बढ़ी हुई कार्यकुशलता द्वारा पुरानी मण्डियों में अधिकतम प्रतिस्पर्धात्मक शक्ति अर्जित करना और

२. बाजारों का विस्तार और जूट के सामान की खपत के लिए नये क्षेत्रों की खोज।

पिछले तीन वर्षों में उद्योग से संबद्ध दृष्टिकोण में एक सुनिश्चित सुधार हुआ और उपर्युक्त लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बन गया है। निम्नलिखित सारिणी से इस सत्य का तनिक आभास हो जाएगा:—

भारत द्वारा निर्यातित जूट का सामान

अप्रैल से मार्च	(हजार टनों में)
१९५२-५३	७०५.९
१९५३-५४	७७६.८
१९५४-५५	८५२.३

इन आंकड़ों से यह प्रत्यक्ष है कि भारतीय जूट-उद्योग अपनी कठिनाइयों को पार कर रहा है और भारत अपने इस उद्योग को निरन्तर प्रगति के पथ पर ही बढ़ाता रहेगा।



जूट उद्योग-संख्या सारिणी

भारत में जूट का उत्पादन तथा उत्पादनक्षेत्र

वर्ष	जूट की खेती का क्षेत्र ४०० एकड़ में	कच्चे जूट का उत्पादन
१९३७–४८	६५१	१,६९६
१९४८–४९	८३४	२,०५५
१९४९–५०	१,१६३	३,०८९
१९५०–५१	१,४५४	३,३०१
१९५१–५२	१,९५१	४,६७८
१९५२–५३	१,८१७	४,६०५
१९५३–५४	१,१९६	३,१२९
१९५४–५५	१,२७३	३,१५३

भारत के जूट के उत्पादन के निर्यात कर में परिवर्तन

लड़ाई के पहले	(Hessain) टाट ३२ प्रतिटन	बोरे २० प्रतिटन
७ नवम्बर सन् १९४६	३२ से ८०	२० से ५०
२८ सितम्बर १९४९	८० से ३५०	अपरिवर्तित
२१ अक्टूबर १९५०	३५० से ७५०	"
१८ नवम्बर १९५०	७५० से १५००	५० से १५०
३० मार्च १९५१	अपरिवर्तित	१५० से ३५०
१८ फरवरी १९५२	१५०० से ७५०	अपरिवर्तित
६ मई सन् १९५२	७५० से २७५	३५० से १७५
२७ फरवरी १९५३	अपरिवर्तित	१७५ से ८०
१५ सितम्बर १९५३	२७५ से १२०	अपरिवर्तित

भारत के जूट मिलों की उन्नति (सन् १९४७–४८ से सन् १९५४–५५ तक)

जुलाई–जून	मिलों की संख्या	उत्पादन (टन)	जूट के माल का निर्यात (टन)	रोजाना काम करने वाले मजदूरों की औसत संख्या
१९४७–४८	१०४	१०,३५,०००	८,७२,०००	३,१५,०००
१९४८–४९	१०४	१०,४०,०००	९,२९,१००	३,०३,०००
१९४९–५०	१०४	८,२५,०००	७,८७,०००	२,७८,०००
१९५०–५१	१०४	८,५८,०००	६,५०,०००	२,८४,०००
१९५१–५२	१०४	६,४५,०००	८,०८,०००	२,७६,०००
१९५२–५३	१०४	८,९१,५००	७,०७,०००	२,७०,०००
१९५३–५४	१०४	८,६५,७००	७,४३,०००	२,७४,०००
१९५४–५५	१०४	६,२२,५००	८,५२०००	२,७५,०००

केवल अप्रैल से नम्बर तक (अनुमानित)

द्वितीय पञ्च वर्षीय योजना में जूट उद्योग

भारत की अर्थ-व्यवस्था में जूट का उद्योग एक बहुत ही महत्वपूर्ण पार्ट खेलता है। भारत के उत्तर पूर्व के क्षेत्र जिसमें पश्चिमी बङ्गाल, आसाम, बिहार, उड़ीसा, त्रिपुरा और उत्तर प्रदेश हैं, लगभग पन्द्रह लाख कृषकों के लिये यह बहुत ही महत्वपूर्ण आमदनी का साधन है। प्रथम पंच वर्षीय योजना के अन्त के वर्ष याने सन् १९५५-५६ के दरमियान में इस क्षेत्र के कृषकों ने जूट से लगभग ५० करोड़ रुपये कमाये हैं। कच्चे जूट का व्यापार करने वाले बहुत से बीच के व्यापारी इससे काफी धन कमाते हैं। भारत के बड़े निर्यात उद्योगों में से दूसरे नम्बर के उद्योग के लिये यह कच्चे माल का कार्य करता है इसलिये जूट राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था में विशेष स्थान ग्रहण करता है जो कि सामान्यतया विदेशी धन कमाने का तथा विशेष तौर से अमेरिकी डालर कमाने का बहुत बड़ा साधन है। इसके अतिरिक्त केवल जूट का ही उद्योग ३ लाख व्यक्तियों को रोजगारी देता है।

इसलिये यह स्वाभाविक ही है कि इतने महत्वपूर्ण औद्योगिक पदार्थ का भारत की कृषि की योजना में प्रधान स्थान होना चाहिये। वास्तव में जूट के उत्पादन के विषय में योजना बनाना विभाजन के एक दम बाद में बहुत आवश्यक था। सन् १९४७-४८ में जूट का उत्पादन इस उद्योग की आवश्यकता का केवल १०% ही था। इसका मुख्य कारण यह था कि विभाजन के पूर्व सारा कच्चा माल पूर्वीय बंगाल से आता था जो कि अब पूर्वी पाकिस्तान के नाम से प्रसिद्ध है। भारत सरकार ने हमारी जूट के सम्बन्ध की कमजोरी बहुत शीघ्र ही महसूस करली और शीघ्र ही जहां तक सम्भव हो इस समस्या पर विजय पाने के लिए कदम बढ़ाया। कितने ही विचित्र धक्कों के बावजूद भी हमारी उन्नति आश्चर्यजनक रही जो कि निम्नांकित सारिणी से भलीभाँति जानी जा सकती है।

मौसम	क्षेत्र फल (लाख एकड़)	उत्पादन (लाख गांठें)
(विभाजन के पूर्व)		
(१) १९४६–४७	५.४	१३.८
(विभाजन के पश्चात्)		
(२) १९४७–४८	६.५	१६.६
(३) १९४८–४९	८.४	२०.३
(४) १९४९–५०	११.६	३०.९
(५) १९५०–५१	१४.५	३३.०

	क्षेत्र फल	उत्पादन
प्रथम पंचवर्षीय योजना		
(६) १९५१–५२	१९.५	४६.८
(७) १९५२–५३	१८.८	४६.१
(८) १९५३–५४	१२.०	३१.३
(९) १९५४–५५	१२.४	२९.३
(१०) १९५५–५६	१५.८	४१.४

प्रथम पञ्चवर्षीय योजना का लक्ष्य ५३.९ लाख गाँठों का निर्धारित किया गया था। यद्यपि योजना का प्रारम्भ सुचारु रूप से हुआ था परन्तु खराब मौसम तथा कच्चे जूट की कीमतों के गिरने से तृतीय तथा चतुर्थ वर्ष मे इस उद्योग को काफी धक्का लगा। फिर भी विभाजन के दिनों से लेकर प्रथम पञ्चवर्षीय योजना के अन्त तक जो उन्नति की प्रवृत्ति रही है वह काफी प्रोत्साहन देने वाली है। इसके परिणामस्वरूप जूट का पाकिस्तान से आयात सन् १९४७–४८ में ५३.५ लाख गाँठों का होता था वह गिरकर १६.५ लाख गाँठों का रह गया। वास्तव में इसने कच्चे माल के सम्बन्ध में भारतीय जूट के उद्योग की स्थिति एकदम बदल दी। जूट के उत्पादन में अधिक वृद्धि होने के कारण जूट के उत्पादकों की कुल आमदनी जब कि सन् १९४६–४७ में १७ करोड़ थी वह बढ़कर सन् १९५५-५६ में ५० करोड़ रुपया हो गई। जूट ने राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में कितना महत्वपूर्ण पार्ट खेला है यह आँकड़े स्वयं ही उसका महत्व प्रदर्शित करते हैं।

द्वितीय पंच वर्षीय योजना में जूट के उत्पादन का ५० लाख गाँठों का लक्ष्य निर्धारित किया है जिसका कि मतलब होगा कि सन् १९५५–५६ के उत्पादन में २५ प्रतिशत की वृद्धि करना। द्वितीय पंच वर्षीय योजना के दरमियान में जूट की मिलों में जूट की खपत ६७ लाख गाँठों तक की हो जावेगी, ऐसी आशा की जाती है। इस आवश्यकता का थोड़ासा हिस्सा मेस्टा जूट (Mesta Jute) से पूरा कर लिया जाता है जिसको इन वर्षों में मिलें काम मे ले रही हैं। इसका मतलब यह हुआ कि हमारे जूट के उत्पादन में और वृद्धि होने पर पाकिस्तान से आयात और भी कम कर दिया जावेगा जो कदाचित् दस लाख गाँठों से अधिक नहीं होगा।

यह स्पष्ट ही है कि द्वितीय पचवर्षीय योजना में जूट, जो महत्वपूर्ण पार्ट खेलने जा रहा है वह यह है कि भारत के एक मुख्य निर्यात करने वाले उद्योग को कच्चे माल की बराबर सप्लाय करके मजबूत आधार पर स्थित करना जो कि किसी भी राष्ट्रीय विकास की योजना के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस तरह मजबूत किया हुआ यह जूट का उद्योग मूल्यवान विदेशी धन को कमाने के लिये आगे बढ़ सकता है जिसको कि हमारा देश आर्थिक विकास के हेतु पाने के लिये अधीर हो रहा है। जूट के निर्यात से प्रथम पंचवर्षिय योजना के प्रथम चार वर्षों में जो धन कमाया गया है वह निम्नांकित सारिणी में प्रदर्शित किया गया है।

(करोड़ रुपयों में)

वर्ष	सब देशों से निर्यात की कीमत	अमेरिका से निर्यात की कीमत
१९५१-५२	२७०	५३
१९५२-५३	१२९	३७
१९५३-५४	११४	२६
१९५४-५५	१२४	२८

सन् १९५१-५२ के वर्ष को छोड़कर जब कि कीमतें बहुत ही अधिक थी ऐसा प्रतीत होता है कि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में जूट के सामान के निर्यात से होने वाली कमाई को बढ़ाना होगा। इसका मतलब यह होगा कि भारतीय जूट के सामान की दुनियाँ के बाजारो में प्रतिस्पर्धित शक्ति को बढ़ाना।

क्वालिटी :—इस समस्या को हल करने का एक उपाय यह है कि भारतीय मिलों में जूट के माल का जितना भी उत्पादन हो उसकी क्वालिटी में सुधार किया जावे। यद्यपि भारत के कुछ हिस्से में ऊँचे दर्जे के जूट का उत्पादन किया जाता है मगर हमारा अधिकतर उत्पादन निर्धारित स्तर से भी निम्न श्रेणी का है। यह पाकिस्तान से ऊँचे द केर्जे जूट को आयात करने का दूसरा कारण है। भारत सरकार ने सन् १९५३ में भारतीय जूट की क्वालिटी में सुधार करने के प्रश्न की जाँच करने के हेतु विशेषज्ञ व्यक्तियों की एक समिति नियुक्त की, जिसने इस विषय में बहुत सी सिफारिशें की हैं। इनमें कुछ महत्वपूर्ण ये हैं जैसे (१) जूटको मुलायम करने की सुविधा होना। (२) जूट की खेती करनेके लिये नये तरीकों को अपनाना। (३) बढ़िया बीज की व्यवस्था होना (४) नाशकारी वस्तुओं तथा कीटाणुओं पर नियंत्रण होना।

भारत सरकार ने इन सिफारिशों में से बहुत सी अत्यन्त आवश्यक सिफारिशों का एकदम पालन किया और प्रथम पंचवर्षीय योजना के अन्त के वर्षों में सन्तोषप्रद उन्नति भी की गई। जूट को मुलायम करने के लिये बहुत से हौद खोदे तथा पुराने हौदों को भी फिर से खोदने का कार्य हाथ में लिया गया है। जूट की खेती करने के नये-नये तरीकों का कृषकों के समक्ष प्रदर्शन किया गया और उनके परिणामों को बतलाया गया जो कि काफी सन्तोषप्रद थे। जूट के खेतों में खाद का उपयोग, यद्यपि अभी तक इसका उपयोग सीमित ही है, फिर भी इसने उत्पादकों को अपनी उपयोगिता के लिए आश्वासित कर दिया है। नाशकारी वस्तुओं के नियंत्रण के तरीके काँफी बढ़ा दिये हैं जिसने बहुत से क्षेत्रों की फसल को नष्ट होने से बचाया है।

भारत की केन्द्रीय जूट समिति की अन्वेषणशाला के द्वारा तैयार किये हुए अच्छे बीज को खेतों में बो-बो कर और अधिक बीज तैयार किये जा रहे हैं। प्रथम पंचवर्षीय योजना के आखिरी वर्षों में प्रयोगशाला से बीज पर्याप्तरूप से न मिलने के कारण खेतों में और अधिक बीज पैदा करने का कार्यक्रम असन्तोषप्रद ही रहा।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इन तरीकों को बढ़ाना जूट के विकास के कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु है। विशेषज्ञ व्यक्तियों की समिति ने अपनी रिपोर्ट में जूट की खेती को बढ़ाने के बजाय जूट की क्वालिटी को बढ़ाने के ऊपर अधिक जोर दिया है। यह नीति एक ओर तो ऊंचे दर्जे के जूट का उत्पादन करने के लिए सबसे उत्तम भूमि का उपयोग करने के लिए प्रेरित करेगी और दूसरी ओर उन्नति शील तरीकों के अपनाने से जूट के उत्पादन में वृद्धि होने की आशा होने के कारण खाद्यान्न को उत्पादन करने की भूमि पर अधिकार किये बिना ही जूट का उत्पादन भी बढ़ाने में सहायक होगी।

वास्तव में जूट की पैदावार के सम्बन्ध में ऐसे अन्वेषण किये जा रहे हैं जिससे कि फसल जल्दी ही तैयार हो जावे और उसके पश्चात् चावल की भी खेती की जा सके। इस सम्बन्ध मे यह भी बतलाना अनिवार्य है कि भारत के बहुत से जूट के उत्पादन क्षेत्रों में एक ही फसल लेने की आदत है याने एक खेत पर केवल जूट या चावल का ही उत्पादन किया जाता है जो कि देश को दो फसल लेने के फ़ायदे से वंचित करता है।

अधिक उत्पादन करने के क्रम में जूट तभी सुव्यवस्थित रूप से अपना पार्ट अदा कर सकता है जब कि अधिक उत्पादन करनेवाला बीज उत्पादकों को प्रचुरता में मिले। इस योजना को पूरा करने के लिये सबसे पहले तो एक खेत की स्थापना करनी होगी जहाँ पर कि ऐसे बीज का उत्पादन किया जा सके जो कि बाद में प्रान्तीय सरकार के खेतों तथा रजिस्टर्ड उत्पादकों के द्वारा बहुतायत से पैदा किया जा सके। इस कार्य के लिये कलकत्ता से १०० मील के भीतर-भीतर की दूरी में भूमि पर अधिकार भी कर लिया है। प्रारम्भिक कार्य तो समाप्त किया जा चुका है और अच्छे बीजवारे की पहली फसल इस मौसम के अन्त तक ले ली जावेगी ऐसी आशा की जाती है। इस फार्म को चलाने का कार्यभार भारत की केन्द्रीय जूट समिति के सिपुर्द किया गया है।

जूट के उत्पादक प्रान्तों के कृषि विभाग के अन्तर्गत जूट के विकास के हेतु एक संगठन कार्य कर रहा है जो कि "जूट डेवेलपमेंट स्टाफ" के नाम से प्रसिद्ध है। द्वितीय पंच वर्षीय योजना में इस संगठन का कार्य और भी बढ़ाने के लिये प्रोग्राम रक्खा है जिसने कि प्रथम योजना में जूट के उत्पादकों के बीच अपनी इज्जत जमाली है।

अन्वेषण की दिशा में जूट के विकास के कार्य में भारत की केन्द्रीय जूट समिति का कार्य काफी सहायक सिद्ध हुआ है। द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना में जूट के प्रत्येक मसले की जाँच तथा अन्वेषण कार्य की एक रूपरेखा खींच ली है। जैसे कृषि सम्बन्धी, आर्थिक तथा यांत्रिक अथवा वैज्ञानिक। अन्वेषण के लाभ उत्पादक के खेतों तक पहुंचाने के लिए आज नेशनल एक्सटेन्शन सर्विस तथा भारत की केन्द्रीय जूट समिति के बीच कमिश्नर से लेकर गाँव के मजदूर तक का सहयोग होना अत्यन्त आवश्यक है।

यह आवश्यक है कि गांवोंके मजदूरों को उन्नतिशील तरीकोंके अपनाने के लिये उनको जूटकी खेती के अन्वेषणकेन्द्र पर आधुनिक ढंग से शिक्षा दी जाय। जूट के उत्पादक प्रान्त के कृषि विभाग, जूट डेवलपमेंट स्टाफ, वैज्ञानिकों और गांवो के मजदूरों का जूट की खेती के लिये सहयोग, जूट के उत्पादक को वैज्ञानिक अन्वेषणों के परिणामों का अधिक से अधिक फायदा दे सकता है।

उद्देश्य :—यह आशा की जाती है कि जूट का उद्योग द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना के उद्देश्यों को पूर्ण करने में दो तरह से सहायता करेगा प्रथम तो भारत की राष्ट्रीय आय बढ़ाकर तथा दूसरा रोजगारी बढ़ाकर। आधुनिक ढंग से जूट की खेती करने से जो कि अच्छे-ऊँचे दर्जे की जूट की अच्छी पैदावार देगा यह आशा की जाती है कि यह उत्पादक को अच्छा मुनाफा देगा। द्वितीय पञ्च वर्षीय योजनाके अन्त तक जूट के उत्पादन में २५% की वृद्धि खुद ही राष्ट्रीय आय की वृद्धि में सहायक होगी।

जूट का अधिक उत्पादन जो कि इसके उद्योग के लिए तो काफी लाभप्रद होगा ही इसके अतिरिक्त गृह तथा छोटे उद्योगों के विकास में भी यह काफी सहायक होगा। भारत के पुनर्निवास मंत्रालय ने गृह उद्योग के पैमाने पर जूट तथा उसके मिश्रण से कम्बल इत्यादि का उत्पादन करने के लिये शरणार्थियों को शिक्षित करने की एक योजना स्वीकृत की है। इस योजना के लिये चतुर तथा कलानिपुण व्यक्ति शरणार्थियों में से चुने जावेंगे जो कि ऊन तथा जूट स्पीनींग, वींवींग और नीटिंग इत्यादि के लिये भारत की केन्द्रीय जूट समिति की टेकनालाजिकल रिसर्च लेब्रोरेटरीज में शिक्षित किये जावेंगे। ऐसा माल जो कि शुद्ध ऊन से बने हुए माल से सस्ता होगा उसका गरीब जनता स्वागत करेगी और उसी के साथ-साथ यह योजना गृह उद्योग के आधार पर रोजगारी देगी।

रोजगारी देने का एक और तरीका यह हो सकता है कि जूट के उत्पादन क्षेत्रों जूट की गाँठों बनाने का प्रेस सहयोगिक सोसायटी के काम स्थापित किये जायँ। यह किसी हद तक जूट के उत्पादकों एवं कृषक मजदूरों की बेरोजगारी की समस्या को हल करेगा।

इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है कि द्वितीय पञ्चवर्षीय योजना में जूटसे जो लाभ होगें वे कितने ही भिन्न २ रूपों में होगें। इस योजना में यह विचार किया गया है कि प्रगतिशील तरीकों से जूट की खेती मे विकास किया जाय। जिससे कि भूमि की उत्पादन-शक्ति मात्रा तथा क्वालिटी दोनों में बढ़ेगी। उत्पादन के तरीकों का सुधार निश्चित ही कृषि की उन आदतों पर प्रभाव डालेगा जिनका कि अनुसरण किया जाता है। जूट सरीखी नगद फसल से ऊँची आय का मिलना निश्चित ही उत्पादक के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठावेगी। जूट के उपयोग के नये-नये तरीके रोजगारी के साधन भी बढ़ावेंगे। और अन्त में भारतीय जूट इसके उद्योग को पर्याप्त रूप में कच्चा माल देगा, जिससे कि वह संसार के नये बाजार को जीतने के योग्य हो सके। कदाचित जूट के इतिहास में कभी भी इस सुनहरी रेशे ने इतना महत्व पूर्ण पार्ट न खेला होगा जितना कि वह भारत की द्वितीय पंचवर्षीय योजना में खेलने जा रहा है।

भारत के जूट मिलों की सूची

कलकत्ता जूट मिल्स एसोसिएशन की सूची के अनुसार

नाम मिल	मैनेजिङ्ग एजण्ट	पता
दी खरदा जूट मिल्स लि०	एण्डरसन राइट लि०	७ वेलेस्लीप्लेस, कलकत्ता
श्री अम्बिका जूट मिल्स लि०	अगड़िया मोर कम्पनी लि०	५ क्लाइव रो० कलकत्ता
दी हेस्टिंग्स मिल्स लि०	बांगड़ ब्रदर्स लि०	१४ नेताजी सुभास रोड कलकत्ता
दी फोर्ट विलियम जूट को० लि०		
ऑकलैंड जूट को० लि०	बर्ड एण्ड को० लि०	चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग, कलकत्ता
डलहौसी जूट को० लि०		
लैन्सडाऊन जूट को० लि०		
लॉरेन्स जूट को० लि०		
नार्थब्रुक जूट को० लि०		
स्टैंण्डर्ड जूट को० लि०		
यूनियन जूट को० लि०		
बिरला जूट मैन्युफैक्चरिंग को० लि०	बिडला ब्रदर्स लि०	८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता
रामेश्वर जूट मिल्स लि०	,,	मुक्तापुर, पो० समस्तीपुर (विहार)
दी एङ्गस को० लि०	डी० थामस एण्ड को० (इण्डिया) लि०	२-३ क्लाइव रोड, कलकत्ता
सामनगर जूट फैक्टरी लि०		
टीटागढ़ जूट फैक्टरी लि०		
विक्टोरिया जूट को० लि०		
ऐंग्लो इण्डिया जूट मिल्स को० लि०	डङ्कन ब्रदर्स एण्ड को० लि०	३१ सुभासरोड, कलकत्ता
दी अगरपारा को० लि०	इलियास बी० एन० एण्ड को० लि०	नार्टनबिल्डिंग ओल्ड कोर्ट हाउस कार्नर कलकत्ता

नाम मिल	मैनेजिंग एजेंट	पता
चाम्पदानी जूट को० लि० वेलिङ्गटन जूट मिल्स	फिनले जेम्स एण्ड को० लि०	२ नेताजी सुभास रोड, कलकत्ता
सोसाइटी जनरल इण्डस्ट्रियल को० चन्द्रनगर		८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता
हुगली मिल्स को० लि०	गिलैण्डर्स अर्बुथनाट को० लि०	८ नेताजी सुभास रोड कलकत्ता
किन्नी सनजूट मिल्स को० लि० नौहाटी जूट मिल्स को० लि०	हेलिगर्स एफ-डब्ल्यू एण्ड को० लि०	चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग, कलकत्ता
सूरा जूट मिल्स को० लि०	हिन्दुस्तान इनवेस्टमेंट कारपोरेशन लि०	८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता
बरनागोर जूट फैक्टरी को० लि०	जार्डिन हैंण्डरसन लि० (एजेण्ट्स)	४ क्लाइव रो कलकत्ता
बाली जूट को० लि० हवड़ा मिल्स को० लि० कमरहट्टी को० लि० कान्कनाराइ को० लि० रीलायन्स जूट मिल्स को० लि०	जार्डिन हैण्डरसन लि०	४ क्लाइव रो, कलकत्ता
फोर्ट ग्लोस्टर जूट मैन्युफैक्चरिङ्ग को० लि०	केटलावाल बुलियन एण्ड को०	२१ स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता
इण्डिया जूट को० लि० मेगना मिल्स को० लि०	मेकिनान मेकेन्जी एण्ड को० लि०	१६ स्ट्राण्डरोड कलकत्ता
गोरपार को० लि० न्यूडा मिल्स को० लि० गैंजेज मैन्यूफैक्चरिङ्ग को० लि०	मेकनेल एण्ड बेरी लि०	२ फेअरली पैलेस, कलकत्ता

मिलों का नाम	मैनेजिंग एजण्ट	पता
एम्पायर जूट को० लि०		
केलविन जूट को० लि०		
प्रेसीडेन्सी जूट मिल्स को० लि०		
नेलीमारला जूट मिल्स को० लि०	मेकलॉड एण्ड को० लि०	३ नेताजी सुभास रोड, कलकत्ता
चितावल साह जूट मिल्स को० लि०		
एलेक्जेण्ड्रा जूट मिल्स को० लि०		
एलायन्स जूट मिल्स को० लि०		
वेव्हरली जूट मिल्स को० लि०		
ईस्टर्न मैन्यूफैक्चरिङ्ग को० लि०		
प्रेमचन्द जूट मिल्स लि०	राजा जानकी नाथ रॉय एण्ड ब्रदर्स लि०	८१ शोवा बाजार स्ट्रीट कलकत्ता
हुकुमचन्द जूट मिल्स लि०	रामदत्त रामकिशन	९ ब्रेबर्न रोड, कलकत्ता
क्लाइव मिल्स को० लि०	श्रीकृष्ण इनवेस्टमेंट को०लि०	१ B हलवासिया रोड कलकत्ता
दी बंगाल जूट मिल्स को० लि०	सूरजमल नागरमल	८ डलहौसी स्कायर कलकत्ता
बलवैडियर जूट मिल्स को० लि०		
बजबज जूट मिल्स को० लि०		
केलेडोनियन जूट मिल्स लि०		
चेवाइट (Cheviot) मिल्स को०	यूले एण्ड्रयू एण्ड को० लि०	८ क्लाइव रो कलकत्ता
डेल्टाजूट मिल्स को० लि०		
नेशनल को० लि०		
ओरियण्ट जूट मिल्स को० लि०		
न्यू सेंण्ट्रल जूट मिल्स को० लि०	साहू जैन लि०	११ क्लाइव रोड कलकत्ता
	(B. मेम्बर्स)	
श्री गौरीशंकर जूट मिल्स लि०	भगत एण्ड को०	१० क्लाइव रो कलकत्ता
कलकत्ता जूट मैन्यूफैक्चरिंग को० लि०	दयाराम एण्ड सन्स	स्टीफेन हाउस ४ डलहौजी स्कायर कलकत्ता
नस्करपारा जूट मिल्स को० लि०	हवड़ा ट्रेडिंग को० लि०	१४४/४५ ओल्ड घूसरी रोड हवड़ा
माहेश्वरीदेवी जूट मिल्स लि०	गंगाधर बैजनाथ	हैरिसगंज रेलबाजार कानपूर
लक्ष्मी जूट मिल्स लि०	मोर ब्रदर्स लि०	५ क्लाइव रो कलकत्ता
श्रीमहादेव जूट मिल्स	प्रतापमल रामेश्वर (प्रोप्राइटर)	४६ स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता
रायगढ़ जूट मिल्स लि०	रायगढ़ ट्रेडिंग कम्पनी लि०	रायगढ सी० पी०
श्रीलक्ष्मीनारायण जूट मैन्यु० को० लि०	रायबहादुर सुखराम लक्ष्मी नारायण	५९ नेताजी सुभास रोड कलकत्ता
कटिहार जूट मिल्स लि०	रतनलाल चमड़िया (मै०डॉ०)	३ चाँदमारी रोड, हवड़ा
श्री हनुमान जूट मिल्स	सूरजमल नागरमल प्रोप्राइटर्स	८ डलहौजी स्कायर कलकत्ता
श्री गनेश जूट मिल्स लि०	तुलस्यान जी०आर०(मै०डॉ०)	५ डलहौजी स्कायर कलकत्ता



भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



भारत में लोहा (इस्पात) उद्योग का विकास

Development of Iron Steel Industries in India



भारत का इस्पात उद्योग

लोहे या इस्पात का उद्योग सब प्रकार के उद्योगों की जड़ माना जाता है। क्योंकि तकुए से लेकर तोप तक और सुई से लेकर जहाज तक कोई भी वस्तु बनाने में लोहे के बिना काम नहीं चलता। इसलिए किसी भी देश की औद्योगिक उन्नति का अन्दाज यह देख कर लगाया जाता है कि वहां लोहा और फौलाद कितना तैयार होता है।

भारत अपनी अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियोंके कारण संसार के अन्य किसी भी देश की अपेक्षा अधिक सस्ता लोहा और फौलाद पैदा कर सकता है। यहां की खदानों में लोहे की जो कच्ची धातु निकलती है वह उत्कृष्टतम कोटि की होती है। उसमें ६० से लेकर ६९ प्रतिशत तक लोहा निकल जाता है। जब कि यूरोप में कच्ची धातु से केवल ४७ प्रतिशत और अमेरिका में ५० प्रतिशत लोहा निकलता है। लोहा बनाने के काम में आनेवाली अन्य वस्तुएं भी यहां पर्याप्त परिमाण में मिलनी हैं।

अभी तक इस देश में कच्ची धातु से लोहा और फौलाद बनाने के केवल तीन चार ही कारखाने हैं। जिनमें सबसे बड़ा कारखाना टाटा आँयर्न एण्ड स्टील वर्क्स है। टाटा का यह कारखाना एशिया का सबसे बड़ा कारखाना माना जाता है। दूसरा कारखाना इण्डियन आँयर्न एण्ड स्टील वर्क्स और तीसरा मैसूर का भद्रावती कारखाना है।

मगर इन तीनों कारखानों से जो कि ११ लाख टन फौलाद और १९ लाख टन पिग आयर्न का उत्पादन करते हैं, हमारे देश की आवश्यकता पूरी नहीं होती। हमारे देश में सन् १९५४ में खाली फौलाद की खपत पच्चीस लाख टन हुई थी।

इसी कमी को दूर करने के लिए भारत सरकार ने अगली पंच वर्षीय योजना में ६० लाख फौलाद को उत्पादन का लक्ष्य रक्खा है और इसके लिए एक कारखाना की भिलाई में रूस के द्वारा, एक रूरकेला में जर्मनी द्वारा और एक कारखाना ब्रिटेन के द्वारा (कहीं भी योग्य स्थान पर) खोलने की स्वीकृति दी है तथा टाटा आँयर्न एण्ड स्टील वर्क्स भी अपना उत्पादन अगली योजना में बीस लाख टन करने का प्रयत्न कर रहा है।

इस प्रकार भारत का इस्पात उद्योग एक सुनहले भविष्य में प्रवेश कर रहा है।

—:❀❀:—

भारत में इस्पात उद्योग का विकास

भारतवर्ष में लोहे का उद्योग बहुत प्राचीन काल से चला आरहा है। खनिज लोहे को साफ करके फौलाद बनाने की चाल भी यहां बहुत पुराने समय से चली आरही है। लोहे से भिन्न २ प्रकार के अस्त्र-शस्त्र भी यहां हजारों वर्षों से बनते चले आ रहे हैं।

लेकिन ई० सन् से १५० वर्ष पहले से ऐसे प्रमाण मिलने लगते हैं जिनके आधार पर बंगाल प्रान्त का लोहा सम्बन्धी विषय स्वतन्त्र रूप से लिखा जा सकता है। इस अवधि के बीच में निर्माण किये हुए मन्दिर जो आज भी बहुत कुछ सुरक्षित अवस्था में पाये जाते हैं, इस बात का प्रचुर प्रमाण देते हैं कि उस युग में इस देश के लोग लोहे से किस प्रकार परिचित थे। बिहार, उड़ीसा के प्रदेश में उदयगिरि के पहाड़ी मन्दिर, बुद्धगया के मन्दिर और अमरावती गुम्बज में इस विषय के पर्याप्त चिन्ह पाये जाते हैं। इन मन्दिरों में कितनी ही प्रस्तर प्रतिमाएँ हैं, जो योद्धाओं को तलवार फेरते कटार, बरछी, धनुष-बाण आदि लिये हुए प्रदर्शित करती हैं। इन प्रतिमाओं के हाथ में परशु और ढाल भी हैं, इनके आकार प्रकार से हम उस समय के अस्त्र-शस्त्र के आकार-प्रकार का अनुमान अनायास ही कर सकते हैं। अंकुश और रथों के पहियों की हालें तो उस समय भी लोहे की बनती थीं।

इस काल के इतिहास के लिए जहां हमें मन्दिरों में पाये जाने वाले प्रमाणों पर निर्भर रहना पड़ता है, वहां मुर्शिदाबाद के नवाब के पास की पिशे नामक बर्छी भी इसका प्रमाण है। इस बर्छी के एक ओर विष्णु और दूसरी ओर गरुड़ के चित्र अंकित हैं। यह फौलाद की बनी हुई है। इस बर्छी को लोग सम्राट् विक्रमादित्य की बतलाते हैं। इसके फल पर बने हुए काम की रूप-रेखा आश्चर्यजनक रीति से उड़ीसा के मन्दिरों में मिलने वाली कारीगरी से मिलती है।

उड़ीसा प्रदेश में भुवनेश्वर और कनारक के मन्दिर ऐसे हैं कि जिन पर प्रशंसनीय चित्रकारी की गई है। इनको देखकर बंगाल में पाये जाने वाले लोहे के प्राचीन अस्त्र-शस्त्रों के सम्बन्ध में बहुत कुछ खोज कर अध्ययन किया जा सकता है। उस समय के इन हथियारों की तुलनात्मक विवेचना यदि अन्य राष्ट्रों के हथियारों के साथ की जाय तो विचित्र समानता दिखाई देगी। इन मन्दिरों में अंकित चित्र में कुछ ऐसे भी मिलेगें जिनका आकार-प्रकार अधिकांश में रोमन हथियारों से मिलता जुलता है। नेपाली और भूटानी कुकुरी के आकार के छोटे खन्जर भी मिलेंगे जो सूचित करते हैं कि इस देश में उस समय लोहे के उद्योग धन्धों की कितनी उन्नति हो चुकी थी। कनारक के मन्दिर में इन चित्रों के अतिरिक्त लोहे के विशाल स्तम्भ भी मिलेंगे जो आज भी अपने अतीत गौरव की स्मृति दिला रहे हैं। इस मन्दिर की प्राचीनता के सम्बन्ध में फरग्यूसन् साहब का मत है कि उसका निर्माण नवीं शताब्दी के अन्त में हुआ होगा। इस मन्दिर के प्रवेश द्वार के पास ही साढ़े ग्यारह इञ्च मोटा और २३ फीट ऊंचा एक लोहे का

स्तम्भ है, जो सूचित करता है कि उस समय भी हिन्दू लोग लोहे के गुण-धर्म और उसकी उपयोगिता से पूर्ण रूप से परिचित थे। वे लोहे के उद्योग में सराहनीय उन्नति कर चुके थे। इसी समय की बनी हुई बचउली तोप नामक एक विशाल काय तोप नवाब मुर्शिदाबाद के इमाम बाड़े में और महल के बीच वाले मैदान में रक्खी है। इस प्रकार लोहे के बड़े २ स्तम्भ और स्थूलकाय तोपें जब ढालकर बनाई जाती थीं, तो यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि उस समय के हिन्दू लोहे को गलाने और उसको मनमानी आकृति में ढालने की कला से पूर्णतया वाकिफ थे।

मुसलमानी शासन के आरम्भ के साथ ही साथ इस प्रान्त में बहुत से नवीन पर-संस्कृति जनित परिवर्तनों का समावेश भी हो चला और शनैः २ इस उद्योग-धन्धे में कई उलट-फेर भी हो गये। मुसलमानों के साथ जो कारीगर इस प्रान्त में आये, उन्होंने यहां के शस्त्रास्त्रों में अपने ढंग की बातों का प्रसार किया। पटना, मुंगेर, ढाका, मुर्शिदाबाद, वर्धमान आदि स्थानों में बनने वाले सभी हथियारों पर फारस, अरब आदि की पूरी छाप बैठ गई, क्योंकि हथियारों के प्रेमी मुसलमान शासक इस ओर अधिक ध्यान देते थे। हथियारों के कारखानों पर शासकों की वैयक्तिक देख-रेख रहती थी। सम्राट अकबर एक सबल शासक होते हुए भी हथियारों का चतुर कारीगर था, यही कारण था कि यूरोप तक के कारीगर यवन-सम्राट का शस्त्रागार देखने के लिए उत्सुक रहते थे। पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच में इस प्रान्त के लोहे के औद्योगिक क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। जहां लोहे की बन्दूकें बनती थीं, वहां भारी तोपें भी ढाली जाने लगीं। मुर्शिदाबाद की जहाज पोप नामक तोप सन् १६३० में वहां के जनार्दन नामक कारीगर ने बनाया था। इसकी लम्बाई १७ फीट और वजन २१२ मन है। इस प्रकार मुगल काल के अन्दर लोहे का उद्योग प्राचीन प्रथा के अनुसार इस देश में चलता रहा।

लोहे के उद्योग की वर्तमान स्थिति:—

आधुनिक ढंग से लोहे के उद्योग का प्रारम्भ 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' के समय में सन् १८२४ ई० से प्रारम्भ होता है। सन् १८३० ई० में अर्काट जिले के अन्दर और सन् १८७५ ई० में आसनसोल के समीप बराकर नामक स्थान में 'बंगाल आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी' की स्थापना हुई थी। सन् १८६६ ई० में बंगाल आयर्न कम्पनी ने अपना काम जोरशोर से चालू किया। यह कम्पनी झरिया की कोयले की खदान के समीप खोली गई थी। इस कारखाने में लोहा गलाने की भट्टी और ढालने के कारखाने हैं। इसके पश्चात् और भी ८–१० कम्पनियों की यहां पर स्थापना हुई, जिनका परिचय आगे दिया जायेगा।

लोहे के आधुनिक उद्योग में प्राचीन उद्योग की अपेक्षा कई प्रकार की विशेषताएं हैं। यहां पर बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रान्त, मैसूर और मद्रास प्रान्तों में लोहे की खदानें पाई जाती हैं। मयूरभंज क्षेत्र के ३०० मील के विस्तृत क्षेत्र में कम्पनी से बोलाय जिले तक के स्थान में लोहा प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

लोहे का विभिन्न प्रकार:—

एक ही खान से निकाले गए लोहे की धातु से तैय्यार किये गये लोहे के एक कुन्दे के कई टुकड़े कर प्रत्येक टुकड़े को न्यूनाधिक समय के अन्तर से पानी या तेल में बुझाकर विभिन्न प्रकार के गुण उत्पन्न किये जा सकते हैं। खान से निकाले गये लोहे में कई प्रकार की बेमेल वस्तुएं मिली रहती हैं जैसे मिट्टी, गन्धक, फास्फरस, मेगनीज, कारबन और सिलिकन इत्यादि। इस लोहे को कारखाने की भट्टी में गलाने से इसकी मिट्टी आदि साफ हो जाती है किन्तु साफ करने पर भी लोहे के साथ गन्धक, फास्फरस, मेंगनीज और कार्वन इत्यादि पदार्थ थोड़े बहुत रह जाते हैं। इस लोहे को देगसार (कास्टआयरन) या कान्तिसार कहते हैं। साफ करने के बाद भट्टी में दुबारा पिघलाकर सांचों की सहायता से इसकी टेढ़ी-मेढ़ी आकृतियों की वस्तु ढाल ली जाती है। इस प्रकार का लोहा खिंचाव और झटका नहीं सह सकता। गिरने से या चोट लगने से यह कांच की तरह चकनाचूर हो जाता है एवं गरम करने पर हथोड़े की सहायता से मुड़ नहीं सकता और न फैल सकता है। परन्तु अधिक गर्म करने से गलकर पानी के सदृश पतला हो जाता है, जो सांचों में फिर से ढाला जा सकता है। इसी लोहे को एक विशेष तरह की भट्टी में पिघलाकर इसमें की गन्धक आदि बेमेल वस्तुएं बिलकुल जलादी जाती हैं। उनके जलने पर लोहा अपनी असली दशामें आ जाता है, और मोम के छत्ते की तरह गाढ़ा २ लचीली वस्तु के रूप में बन जाता है। गलाये हुए लोहे के कड़ाह, पहिये, बटखरे, शहतीर इत्यादि ढलुए पदार्थ बनते हैं। यह लोहा खिंचाव में बड़ा मजबूत होता है। झटकों से टूट नहीं सकता, परन्तु चोट लगाने पर मुड़ जाता है। इस लोहे को कच्चा लोहा या केवल लोहा कहते हैं।

इस्पात:—

तथा कथित देगसार और कच्चे लोहे से विशेष प्रकार की भट्टियों में खास क्रिया से इस्पात तैय्यार होता है। इस्पात बनाने के लिये कच्चे लोहे में ऊपर से कुछ कार्बन मिला दिया जाता है। कम और अधिक अनुपात में कार्बन मिलाने के कई प्रकार का इस्पात बन जाता है। इस्पात को गलाकर देगसार की भांति सांचों में ढाल सकते हैं और कच्चे लोहे की भांति ठोंक-पीट कर झुका भी सकते हैं। इसकी चद्दरें, तार, कांटे, जालियां, खेती करने के औजार—खुरपी, हँसुआ, हल, कुदाल, फावड़ा इत्यादि कई उपयोगी वस्तुएं बनती हैं।

यह कच्चे लोहे और देगसार की अपेक्षा मजबूत होता है। इसकी उपयोगिता के कारण कच्चे लोहे का प्रचार तो प्राय: उठ ही गया है। इस्पात में एक विशेष गुण और होता है, वह यह कि इस्पात की किसी भी वस्तु को भट्टी में लाल करके पानी या तेल आदि में बुझा दिया जाय तो वह सख्त हो जाती है। इस क्रिया को 'लोहे पर पानी चढ़ाना या आबदारी लगाना' कहते हैं। इसी क्रिया द्वारा चाकू, कैंची, तलवार और बन्दूक आदि यन्त्रों पर पानी चढ़ाया जाता है, जिससे एक बार धार लगाने के बाद बहुत समय तक उनकी धार खराब नहीं होती।

मशीनों के कई पुर्जों पर पानी चढ़ाया जाता है। इससे ये पुर्जे मशीन में चलते समय रगड़ खाने से घिसने नहीं पाते। लोहे का विचित्र गुण है 'चुम्बकत्व'। इसी विचित्र गुण ने लोह-विशेषज्ञों या कारीगरों के लिये लोहे को सोने से भी बढ़कर मूल्यवान बना दिया है। विभिन्न विधि से तैयार किया हुआ लोहा अपनी खास विशेषता रखता है। एक ओर कमानी के लिये लचीला लोहा तैयार किय जाता है, तो दूसरी ओर ऐसा लोहा फैक्टरियों में तैयार होता है, जिसमें किंचित भी लचीलापन नहीं होता। इस प्रकार लोहे के तीन भेद हुए। गलाया हुआ लोहा, पीटा हुआ लोहा, इस्पात।

लोहे के उद्योग को विशेष रूप से प्रोत्साहन दिलाने वाला हमारे यहां मिलने वाला प्राकृतिक सामान है। इस उद्योग के लिये जिन २ चीजों की आवश्यकता होती है—वे प्रायः सभी यहीं पर मिलती हैं। लोहे के उद्योग का विकास करने के लिये कोयला, लोहा, मेगनीज, लाइम स्टोन, उपयुक्त भूमि और उत्तम जलवायु की आवश्यकता होती है। ये सब चीजें हमारे देश में बहुत अच्छे प्रमाण में मिलती हैं।

लोहे की खदानें :—

इस देश में लोहे की खदानें नीचे लिखे स्थानों पर पाई जाती है। बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रान्त, मैसूर और मद्रास। मयूरभंज जिले के अन्तर्गत बोनाय नामक स्थान पर करीब ३०० वर्ग मील के क्षेत्र में लोहे की खदानें पाई जाती हैं। इन सब साधनों की वजह से लोहे के उद्योग के लिए यहां बहुत बड़ा क्षेत्र हैं। इस समय बहुत सी बड़ी २ कम्पनियां लोहे के उद्योग में काम कर रही हैं, जिनमें से कुछ खास २ कम्पनियों का नाम नीचे दिया जाता है।

सन्स (प्रा० लि०) लोहे उद्योग की प्रसिद्ध कम्पनियां

लोहे के उद्योग में सबसे पहले प्रवेश करने वाले उद्योगपति 'मेसर्स टाटा सन्स लि०' हैं। श्री जमशेद टाटा ने सबसे पहले इस देश की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक विशाल लोहे का कारखाना खोलने की योजना बनाई और उनके पुत्रों ने जमशेद पुर में इस विशाल कारखाने का निर्माण किया।



श्री जमशेद नसरवान टाटा

टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि०—

संसार प्रसिद्ध इस कम्पनी का रजिस्टर्ड आफिस २४ ब्रूस स्ट्रीट बम्बई में है। पर इसका कारखाना बी० एन० रेलवेके टाटा नगर नामक रेलवे स्टेशन के पास जमशेदपुर में है। यह कम्पनी १०५२१२५०० को स्वीकृत पूँजी से काम कर रही है। इसके सधारण शेयर की दर आरम्भ में ७५) प्रतिशेयर के हिसाब से थी और प्रीफरेन्स शेयर की दर १५०) प्रति शेयर की थी। इसका संचालन भारत प्रख्यात अनुभवी व्यापारियों की एक संचालक-समिति करती है।

इस कम्पनी की खानें मयूरभंज राज्य में हैं। इन खानों को सबसे प्रथम मि० पी० एन वसु ने खोज निकाला और टाटा कम्पनी को इसकी सूचना दी। कम्पनी ने अमेरिका से भूगर्भ-विद्या-विशेषज्ञ दो इंजिनियरों को बुलाकर इन खानों की परीक्षा कराई और फिर इस कारखाने का आयोजन किया गया। इस राज्य में १२ के लगभग बड़ी-बड़ी लोहे की खानें हैं। जिनमें से गुरुमैशिनी, ओकामपद और बदम पहाड़ी की खानें सबसे बड़ी हैं। जमशेदपुर से गुरुमैशिनी तक रेल्वे लाइन है और इसी के द्वारा इन खानों से खनिज (कच्चा) लोहा जमशेदपुर के इस कारखानो में लाया जाता है। इस कम्पनी की लोहे की दूसरी खानें रामपुर और दुर्ग जिले में हैं। कच्चा लोहा गलाने के लिये पत्थर के कोयले और कली के चूने की जरूर होती है। यह दोनों ही पदार्थ प्रचुर परिमाण में इस इलाके में पाये जाते हैं।

यह कारखाना बहुत ही बड़ा है और निज की विद्युत्शक्ति उत्पन्न कर अपना समस्त कार्य उसी शक्ति से करता है। इसमें आधुनिक जगत् की थाती स्वरूप ऊंची से ऊंची यांत्रिक सुविधाओं का यथेच्छ समावेश किया गया है। यहां सभी प्रकार का लोहे का सामान बनता और रेलवे कम्पनियों के काम में आने योग्य लोहे की फौलादी रेल लाईनें भी ढाली जाती हैं तथा भव्य भवनों में काम देने वाले बड़े से बड़े फौलादी गार्टर्स, तथा इतर इमारती सामान भी अधिक परिणाम में तय्यार होता है। इस कारखाने में मेगनीज [Terro manganese] तैयार किया जाता है और उसी की सहायता से फौलाद तैयार किया जाता है। यहाँ काम में आने वाले पत्थर के कोयले से कोल तैयार किया जाता है। यह कोयला जलाने से तैयार होता है। जलाते समय जो धुआं उठता है, उसे रक्षित अवस्था में संचित करने का पूरा प्रबन्ध इस कारखाने में किया गया है। इसी धुएं से अलकतरा, रोशनी की गैस और अमोनियां तैयार होता है। इसके तैयार करने के लिए कारखाने में यथेष्ट प्रबन्ध है। अलकतरा देखने में काला और भद्दा, स्वाद में कड़ुवा, और सूंघने में बदबूदार होता है पर इसीसे नाना प्रकार के मनमोहक रंग तैयार होते हैं; शक्कर से ५५० गुना मीठा सेकरीन [Saccharine] नामक पदार्थ भी इसी से तैयार होता है और साथ ही इसी से टोनोन [Tonone] नामक पदार्थ भी बनता है जिससे नाना प्रकार के सुगंधित नकली इत्र-फुलेल तैयार होते हैं। इस कारखाने में इस प्रकार सहज में प्राप्त होने वाले अलकतरे के आनुसंगिक पदार्थों को (Bye Products) तय्यार करने का उद्योग हो रहा है।

फिर भी द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् यहाँ की सरकार को यह अनुभव हुआ कि इस देश में वर्तमान कारखानों के द्वारा जो लोहे और इस्पात का उत्पादन होता है, वह बहुत कम है और किसी भी देश को स्वावलम्बी बनाने के लिए लोहे और इस्पात का उत्पादन बढ़ाना बहुत आवश्यक है। सोवियट रूस का उदाहरण हमारे सामने है जिसने २५ वर्षों में अपने यहाँ इस्पात का उत्पादन ४० लाख टन वार्षिक से बढ़ाकर ४०० लाख टन तक बढ़ा लिया है।

यहाँ के प्लानिंग कमीशन ने सन् १९५४ की अपनी अन्तिम रिपोर्ट में बतलाया कि लोहे तथा इस्पात का उत्पादन इस देश में आशा के अनुरूप नहीं हुआ है।

इस रिपोर्ट के पश्चात् यहाँ की सरकार और उद्योगपतियोंने इस्पात का उत्पादन बढ़ाने के सम्बन्ध में अधिक ध्यान देना प्रारम्भ किया, जिसका ज्ञान नीचे दिये विवरण से हो सकता है। इस देश में इस्पात के विशाल कारखाने खोलने के लिए रूस, ब्रिटेन और फ्रांस से समझौते किये गये और यहाँ के पूर्ववर्ती कारखानों को नई २ मशीने लगाने के लिए उत्साहित किया गया।

१—टाटा ऑयर्न एण्ड स्टील कम्पनी

प्रगति जिस पर ४३ करोड़ रुपये खर्च होंगे—

इस कारखाने को आधुनिकतम मशीनों से सुसज्जित करने में तथा विस्तार के कार्यक्रम में ४२.६२ करोड़ रुपये व्यय होने का अनुमान किया जाता है और जिसका कि उत्पादन का लक्ष्य ७,५०,००० टन से बढ़ाकर ९४०,००० टन करना है, वह इस कार्य में काफी सन्तोषप्रद गति से प्रगति कर रहा है और दिसम्बर सन् १९५४ में ८८५,६०० टन इस्पात का उत्पादन किया, जब कि सन् १९५३-५४ में ७८०,००० टन इस्पात का उत्पादन किया गया था। गत दो वर्षों में नये स्केल्प (Skelp) मिल प्रोजेक्ट का आर्डर दिया गया है और मेसर्स टाटाज तथा अंग्रेजी फर्म मेसर्स स्टुवर्टस और लायड्स सम्मिलित रूप से एक ट्यूब मिल उपरोक्त स्केल्प की सहायता से चलाने वाले हैं, जिसका कि नाम इण्डियन ट्यूब मिल लि० रक्खा गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्नति की गति समय के अनुसार सन्तोषप्रद है और इस कारखाने की उत्पादन-क्षमता ९४०,००० टन कर देने का कार्यक्रम सन् १९५७ तक पूर्ण हो जावेगा। इसकी प्रगति इतनी सन्तोषप्रद है कि वे लोग और २० लाख टन इस्पात के उत्पादन में वृद्धि करने की योजना बना रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। यह भारत के लिये दुस्साहस होगा मगर टाटा के अतिरिक्त कोई भी यह प्रयास नहीं कर सकता।

दी इण्डियन आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि०—वर्तमान

विकास योजना की प्रगति जिसपर ३२ करोड़ रु० खर्च होगें

सन्तोष प्रद प्रगति को ध्यान में रखते हुए सन् १९३७ में स्टील कार्पोरेशन ऑफ बंगाल लि० और दी इण्डियन आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी को सम्मिलित करना बहुत आवश्यक समझा गया और तारीफ कमीशन तथा सरकार ने भी इस कार्य में सहमति प्रगट की। यह योजना १ जनवरी सन् १९५३ में कार्यरूप में परिणत की गई। एक विकास-योजना, जिसपर कि ३१७४ करोड़ रु० खर्च किया जावेगा तथा जिससे उत्पादन ७००,००० टन हो जावेगा—वह शुरू है। सन् १९५४ में इसके उत्पादन में नियमित वृद्धि हुई और दिसम्बर सन् १९५४ में वास्तव में ५४०,००० टन इस्पात का उत्पादन हुआ, जब कि सन् १९५३-५४ में केवल २६१,७४७ टन ही उत्पादित किया गया था। भारत सरकार की सहायता देने को नीति तथा

विश्वबैंक के २६ करोड़ रुपयों ने व्यवस्थापकों को ३१.७४ करोड़ की योजना निर्धारित करने के योग्य बनाया। कार्य बहुत ही शान्त वातावरण में नियमित गति से चल रहा है। यह आशा की जाती है कि कर्ज के सम्बन्ध में जो कानूनी कठिनाइयाँ उपस्थित हो रही हैं वे ७ लाख टन के लक्ष्य को सन् १९५८ तक पूरा करने में किसी प्रकार की अड़चन नहीं डालेंगी।

मैसूर गवर्नमेंट आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स भद्रावती—
वर्तमान विकास योजना की प्रगति जिसपर ७ करोड़ रु० खर्च होंगे

यद्यपि इस कारखाने के इस्पात के उत्पादन में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं हुआ है फिर भी लोहे (Pig Iron) के उत्पादन मे निश्चित वृद्धि हो गई है। योजना के पूर्व जो उत्पादन २५००० टन का था वह बढ़कर अब ५२००० टन हो गया है। इस कारखाने के विकास मे सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कोयले की कमी की कठिनाई को हल करने के लिए इसमें बिजली की भट्ठियां लगाई गई हैं। इसी प्रकार भारत में फेरो सिलिकन की बढ़ती हुई आवश्यकता को पूर्ण करने के लिये, जो कि इस्पात के उत्पादन के लिये अत्यन्त आवश्यक पदार्थ है, उसका उत्पादन २००० टन प्रति वर्ष से बढ़ाकर ४००० टन प्रतिवर्ष कर दिया गया है। इस्पात के सम्बन्ध में, इसका उत्पादन २५००० टन प्रति वर्ष से बढ़ाकर एक लाख टन प्रति वर्ष करने की योजना है। उसके साथ ही मिश्रित धातुओं, पुर्जों के लिये इस्पात तथा स्टेनलेस स्टील का प्रोवीजन भी रक्खा गया है जो कि भारत सरकार के समक्ष विचाराधीन है और एक बार इसका निर्णय हो जाय फिर तो इनका पूर्ण होना निश्चित ही है।

हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड—भारतीय संघ का प्रोजेक्ट
वर्तमान में ७३ करोड़ रु० का अनुमानित खर्च

यह कारखाना समतल वस्तुओं को बनाने में विशेषता प्राप्त करने के लिये कार्य कर रहा है। जैसे तश्तरियां, चद्दरें और पट्टे, ठंडे और गरम दोनों प्रकार के और धातुओं के सामान में वृद्धि करना इसका उद्देश्य है जो कि आर्थिक विकास का वास्तविक आधार है। यह सही रास्ते पर पहला ही कदम रक्खा गया है और यह आशा की जाती है कि छोटे पैमाने पर तैयार किये गये माल पर भी दृष्टि रहेगी। वास्तव में इस प्रकार का एक कारखाना डालने की इस समय अत्यन्त आवश्यकता थी।

भारत सरकार की मेसर्स क्रीडकप एण्ड मेसर्स डेनाग ए. जी. से कभी से ऐसा कारखाना जिस में ३६०००० टन लोहे का माल तैयार किया जा सके तथा जिस पर ७३ करोड़ रुपया खर्च किया जावेगा। कला-निपुण व्यक्तियों तथा आर्थिक सहायता के विषय में समझौते की बात चल रही है जो कि अभी तक प्रारम्भिक कार्य में व्यस्त थे। इस कारखाने के लिये उड़ीसा में रूरकेला नामक स्थान चुन लिया गया है और भारतीयों को शिक्षा देने का प्रबन्ध भी कर दिया है। यह आशा की जाती है कि इस कारखाने का कार्य जर्मनी वालों की तरह धड़ाके से चलेगा और सन् १९४६ से व्यर्थ में नष्ट किये हुए आठ वर्षों की क्षति की पूर्ति कर ली जावेगी।

समस्त भारतवर्ष में लोहे तथा इस्पात के विकास के हेतु भारत सरकार तारीफ कमीशन के जरिये व्यक्तिगत उत्पादकों की कीमतों के आधार पर रिटेन्शन प्राइस स्कीम (Retention price scheme) बना रही है। दुनियां की कीमतों से मेल खाती हुई एक सरीखो विक्रय कीमतें तथा इसके अलावा सामञ्जस्य करने वाले फण्ड (Equilisation Fund) के किये कुछ अधिक चार्ज, सारे देश में

निर्धारित कर दिया गया है। इस फण्ड के विधान में सरकार को यह भी अधिकार दिया गया है कि वह किसी उत्पादक की विकास योजना में इस धन से उसको सहायता दे सकती है। इस प्रकार की योजना सामान्यतया देश के विकास में बहुत बड़ा पार्ट अदा करेगी तथा विशेष रूप से फौलाद के उद्योग के लिए काफी सहायता होगी। वास्तव में हिन्दुस्तान स्टील लिमिटेड सरीखे महंगे उत्पादकों को कुछ समय तक सहारे की आवश्यकता होगी, कम से कम उस समय तक जब तक कि उसकी उत्पादन शक्ति बढ़ कर १० लाख टन तक नहीं पहुंच जावे। हाल ही की रिपोर्ट से यह ज्ञात होता है कि इस कारखाने की उत्पादन क्षमता १० लाख टन तक की कर देने का निश्चय कर लिया गया है और इसका मतलब यह हुआ कि इसे फण्ड के धन के लिये अब कम निर्भर रहना होगा।

रूस फ्रांस और ब्रिटिश के प्रस्तावना:—

रूस के मंत्री श्री ए. ए. ट्रूसोव (A. A. Trusov) के प्रतिनिधित्व में इस्पात के विशेषज्ञ व्यक्तियों का फरवरी सन् १९५५ में एक मंडल (Team) आया था। जिसने हाल ही में देश के कई स्थानों की जहाँ पर कच्चा माल तथा दूसरे अन्य साधन उपलब्ध होसकें जाँच की और उनकी सिफारिश करने के पश्चात् मध्य प्रदेश में एक लोहे तथा इस्पात के कारखाने को खोलने का समझौता किया जिसकी कुल उत्पादन क्षमता दस लाख टन की होगी जिसमें से साढ़े सात लाख टन बेचने लायक इस्पात होगा और अन्त में इस इस्पात से २३५,००० टन के मर्चेण्टबार, १७५,००० टन के खास भारी ढाँचे (Heavy Structurals) १५०,००० टन के बिलेट्स (Billets) १००,००० टन की रेल की पटरियाँ और ९०,००० टन स्लीपर बार बानाये जावेगें।

यद्यपि रूस में विज्ञान और कला कौशलका कदाचित तुलनात्मक दृष्टिसे हाल ही में विकास हुआ है फिरभी हमारे देशमें इनसे काफी आशा की जाती है। क्योंकि एक तो इन्होंने अपने खुदके देशमें इस्पात के उत्पादनमें अद्वितीय वृद्धिकी, तथा जुलाई सन् १९५४ में एटामिक पावर प्लान्ट भी स्थापितकर लिया है।

बिड़ला परिवार की ब्रिटिश एक्सपोर्ट फर्मस के साथ हाल ही प्राइवेट क्षेत्र में एक इस्पात के कारखाने को खोलने की योजना को सरकार ने अस्वीकार कर दिया है। फिर भी इस घटना ने अंग्रेजों को सरकार के साथ एक दस लाख टन की उत्पादन क्षमता वाला कारखाना खोलने की बात करने के लिए निरूत्साह नहीं किया और इस प्रस्ताव पर भारत सारकार इस समय बहुत ध्यान से विचार कर रही है। यह प्रस्ताव फ्रान्स वाले के प्रस्ताव के अतिरिक्त है जिसपर कि पहले से ही विचार हो रहा है।

जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है जमशेदपुर, बर्नपुर और भद्रावती के कारखानों की योजनाओं के पूर्ण होने से इस्पात की २३ लाख टन की वृद्धि तो अभी के मौजूदा उत्पादकों से ही हो जावेगी। इस समय एक बहुत उच्च स्तर की उप-समिति बनाई गई है जो कि राष्ट्र के इन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्नों पर शीघ्र ही विचार करके निश्चय करेगी। इससे यह आशा कीज ाती है कि द्वितीय पंचवर्षीय योजनाका ६० लाख टन इस्पातके उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित समयके दरमियान में सफलता पूर्वक पूर्ण हो जावेगा।

संसार में इस्पात की खपत

इस्पात की भिन्न देशों में प्रति मनुष्य खपत

देश	१९३७-३८ की औसत	१९५१	१९५२	१९५३
	पौंड	पौंड	पौंड	पौंड
(१) उत्तरी अमेरिका	६४०	१३४२	११३४	१३७३

—	पौंड	पौंड	पौंड	पौंड
(२) स्वीडन	५३२	७०९	७७७	७०४
(३) कनाडा	३३६	७९३	७३२	६९८
(४) युनाइटेड किंगडम	४९३	६५३	७०१	७०४
(५) आस्ट्रेलिया	४२८	६७७	६८८	५४७
(६) जर्मनी	६००	४३८	६६१	६५२
(७) फ्रान्स	२८९	३९७	५२४	४१४
(८) बेलजियम लुक्सेम्बर्ग	३५३	५१६	५१८	४६५
(९) नीदरलैंड्स	३३३	४१७	३९८	४४७
(१०) इटली	१२३	१६५	१८६	१९१
(११) भारत	९	१०	११	११

भारत का लोहे तथा इस्पात का उद्योग एक दृष्टि में—

भारत में मुख्य उत्पादकों की संख्या—५

कारखाने	लोहा		इस्पात	
	वार्षिक उत्पादन पंचवर्षीय योजना के पूर्व दर	वर्तमान उत्पादन दर दिसम्बर सन् १९५४ पर निर्धारित	वार्षिक उत्पादन पंचवर्षीय योजना के पूर्व दर	वर्तमान उत्पादन दर दिसम्बर सन् १९५४ पर निर्धारित
	टन—	टन—	टन—	टन—
१—टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि०	१,०३१,०००	१,२६७,२००	७२७,०००	८८५,६००
२—इण्डियन आयर्न स्टील कं० लि०	६००,०००	७२०,०००	२२५,०००	५४७,२०४
३—मैसूर गवर्नमेंट आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स	२५,०००	५२,०००	२२,०००	२५,०००
४—हिन्दुस्तान स्टील लि० (१९५४) रोरकेला (उड़ीसा)	योजना तथा निर्माण के अन्तर्गत		योजना तथा निर्माण के अन्तर्गत	
५—स्टील प्लान्ट भिलाई (१९५५) (मध्य-प्रदेश)	”	”	”	”
कुल	१,६५६,०००	२,०३९,२००	९७४,०००	१,४५७,८०४

* इसमें छोटे पैमाने के कारखानों का उत्पादन का सम्मिलित नहीं है—

भीलाई विकास की ओर अग्रसर

भीलाई जो कि दुर्ग जिले में स्थित है वहां पर इस्पात का नया कारखाना स्थापित करने की योजनायें बन चुकी है। जिसकी उत्पादन शक्ति १० लाख टन प्रति वर्ष की होगी। वह मध्य प्रदेश में अद्वितीय उद्योग के विकास का नया द्वार खोलेगा। जब ३१ दिसम्बर सन् १९५८ तक इस कारखाने के कुछ भाग काम करना शुरू कर देंगे तब इसकी उन्नति किसान ग्रामीणों की कमजोर आर्थिक स्थिति को एक मजबूत

औद्योगिक आर्थिक स्थिति में परिवर्तित करने में समर्थ होगी। इससे भी महत्व की बात तो यह होगी कि एक राष्ट्रीय कारखाने का अस्तित्व हो जायगा।

स्वतंत्रता होने के पश्चात् ही भारत सरकार ने इस विषय पर ध्यान दिया और उसी समय तीन विदेशी इञ्जनियरों की फर्मों को इस विषय की जांच करने के लिये निमंत्रित किया। ये लोग सन् १९४८ के अन्त तक रामपुर तथा उसके आस पासके क्षेत्रों में गये। जो चर्चा में बाद में हुई उससे ऐसा प्रतीत होता था कि कच्चा माल बहुतायत से मिलने के बावजूद भी दूसरी ऐसी मुद्दे की बात है जिन पर अच्छी जगह चुनने के लिये विचार करना आवश्यक है। पहला तो यह कि वह जगह रेलवे स्टेशन के आस पास ही होना चाहिये और दूसरा यह कि पानी की सुविधा होनी चाहिये। इन सब दृष्टि कोणों को ध्यान में रखते हुए भीलाई ही एक सबसे उपयुक्त स्थान नजर में आया।

स्थिति:—भीलाई दुर्ग जिले में स्थित है तथा बम्बई से कलकत्ता जाने वाली गाड़ी के रास्ते में रेलवे स्टेशन पड़ता है। दुर्ग जिले में जो धातु मिलती है वह रेत के कणों के समान पाई जाती है और खास तौर से डाली-राजीहरा पहाड़ियों मे पाई जाती है जो कि भिलाई के ५० मील दक्षिण में स्थित है। इस तरह की धातु की लड़ी दक्षिण में हाहालादी, कोन्डापाखा, चारगांव तथा रोवाट में भी पाई गई है। हर जगह धातु की क्वालिटी बहुत अच्छी है। लगभग ११५० टन धातु जिसकी कि जांच की गई है जिसमें ६६.३५% लोहा, ०.०५८% फासफोरस, ०.१०८% गंधक, १.४४% सिलिक तथा ०.१५१% मेगजीन पाया जाता है और जब नीचे की सतह की जांच की गई तब उसमें ६८.५३% लोहा, ०.०६४% फासफोरस, ०.०७१% गंधक, ०.७१% सिलिक तथा ०.१७५% मेगजीन पाया गया।

इस स्थान को चुनने के कई कारणों में एक कारण यह भी है कि यहाँ पर १४० मील की दूरी पर ही कोयला मिलता है। यह स्थान जो कि कोर्बा के नाम से प्रसिद्ध है इसके चारों ओर लगभग २०० वर्ग मील में कोयला मिलता है और यह आशा की जाती है कि यहाँ पर ६ करोड़ टन तो मिश्रीत कोयला तथा २० करोड़ टन दूसरा कोयला प्राप्त हो सकेगा।

चूने का पत्थर जो कि इस्पात के उत्पादन के लिये जरूरी है वह भी यहीं पर पास में ही मिलता है। छत्तीसगढ़ के चार जिलों में चूने की खदानें करीबन १५००० हजार वर्ग मील तक फैली हुई हैं। और जो कि दुर्ग जिले में ही मुरीपुर रेलवे स्टेशन के पास है। इस चूने के पत्थर में सामान्यतः सिलिका तथा मेगनीशियम बहुतायत में पाया जाता है। मगर हाल ही की जाँच में कुछ ऐसे स्थान मिल गये हैं जिसमें चूने के पत्थर यथा डोलोमाइट (केलशियम कार्बोनेट + मेगनिशियम कार्बोनेट) के मिश्रण का अच्छा चूने का पाथर मिलने लग गया है जो कि हिर्री, रांक, लटीया, पकारीया, अलटारा, चिंता-पंडेपीया तथा बोल्हाडीह में पाया जाता है। यह आशा की जाती है कि इन स्थानों से करीबन ११० लाख टन चूने का पत्थर मिल सकता है। इस सूचि में टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी बाराद्वार को जोड़ देना चाहिये जहां से कि सन १९५१ में २३८१२ टन चूने का पत्थर प्राप्त हुआ था।

इस कारखाने को बनाने में तथा काम शुरू होने में जितने पानी की आवश्यकता होगी वह टन्डुला (Tandula) तालाब से तथा गोंडी प्रोजेक्ट जो कि अभी बन रहा है उससे पूरी करली जावेगी।

हाल ही में रशियन विशेषज्ञों द्वारा स्थानके चुननेकी जांच की गई जिन्होंने हर प्रकारके दृष्टिकोणों को ध्यान में रखकर जहाँ पर कई प्रकार के साधन जैसे भूगर्भिक, आबहवा, इन्जिनियरिंग, यातायात, पानी तथा खास और सहायक धातु की जांचके पश्चात् हों, वे लोग इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि मध्य प्रदेश सरकारने जो स्थान बतलाया है वही सबसे उपयुक्त है और यह बात भारत सरकार ने भी मंजूर करली है।

——:०:——

भारतवर्ष में कोयला उद्योग का विकास

संसार की अन्तर्राष्ट्रीय रीति नीति में आश्चर्यजनक उथल पुथल करने की किसी पदार्थ में यदि शक्ति है तो वह कोयला और लोहे में ही है। इन दो पदार्थों के समान आज के युग में कोई अन्य पदार्थ ऐसा उपयोगी नहीं माना जाता। यही मुख्य कारण है कि संसार के सभी राष्ट्र कोयला और लोहे के राशि भण्डार को अपने २ हाथ में लेने की चिन्ता में सदा चूर रहते हैं। अस्तु ये दोनों ही पदार्थ अपना विशेष स्थान अवश्य रखते हैं इसलिए हम भारत के सम्बन्ध को लेकर कोयले के विषय में कुछ लिख रहे हैं।

इतिहास

पत्थर के कोयले के सम्बन्ध में निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि मानव समाज ने कब से इसकी उपयोगिता का अनुभव कर इसे काम में लाना आरम्भ किया। फिर भी इतना तो अवश्य ही अनुमान किया जा सकता है कि जब संसार में पत्थर का कोयला इतने प्रचुर परिणाम में मिलता है तो अवश्य ही मानवीय पौरुष ने कोयले पर प्राचीन समय में ही विजय प्राप्त की होगी और उसी काल से इसका व्यवहार करना आरम्भ कर दिया होगा। जिस समय से मानव समाज में धातु का व्यवहार चला उसी समय से पत्थर के कोयले का उपयोग में आना माना जा सकता है। यह समय अनुमान तथा मसीह से १ हज़ार से ८ हजार वर्ष पूर्व तक का हो सकता है। सबसे प्रथम सन ईसवी से ३०० वर्ष पूर्व यूनान के थियोफ्रेटस (Theophratus) नाम के एक व्यक्ति ने पत्थर के कोयले को काम में लाना आरम्भ किया था। इसके बाद दूसरा ऐतिहासिक प्रमाण तब मिलता है जब कि रोमन लोगों ने ब्रिटेन पर आक्रमण किया था उस समय ब्रिटेन में कोयला भी खान से निकाला जाता था। पर कोयले के वास्तविक प्रयोग का प्रमाण सन् ८५२ ईसवी के पूर्व का नहीं मिलता। कोयले का प्रसार ३ सौ वर्ष तक साधारण रीति से होता रहा। इसके बाद ही कुछ उन्नति हुई और कार्यारम्भ हुआ।

सबसे पहले ब्रिटेन में ही पत्थर के कोयले का काम आरम्भ किया गया। सन् १२३९ में प्रथम बार खान से कोयला निकालने का लैसेन्स दिया गया। ब्रिटेन वाले पत्थर के कोयले को समुद्रका कोयला [Sea coal] कहते थे। कुछ समय बाद ही खानों से कोयला निकालने का काम आरम्भ कर दिया गया और काम जोरों से चल पड़ा। इस कोयले के जलाने से दुर्गन्ध और धुआं बहुत पैदा होता था इससे सन् १३०६ ई० में इसका जलाना लन्दन में निषेध करार दिया गया। फल यह हुआ कि ब्रिटेन के सम्राट की आज्ञानुसार खान से कोयला निकालना भी कानून के विरुद्ध करार दिया गया। कुछ समय बाद ही यह आज्ञा उठली गयी और सन् १३२५ ई० में ब्रिटेन ने प्रथम बार निर्यात के रूप में अपना कोयला फ्रान्स भेजा। फिर क्या था कोयले की मांग बढ़ी और फ़ल यह हुआ कि कुछ ही समय में यह व्यापार ब्रिटेन के प्रधान व्यापार में माना जाने लगा। ब्रिटेन से कोयला बाहर जाता और उसके विनिमय में विदेश से अनाज ब्रिटेन आता था। इसी बीच इग्लैंड का न्यूकोसम नामक बन्दर पत्थर के कोयले के निर्यात का प्रधान बन्दर बन गया और इसी बन्दर से फ्रान्स, जर्मनी, हालैंड आदि को कोयला भेजा जाने लगा। उधर १३ वीं शताब्दी में जर्मनी में भी कोयले का काम आरम्भ किया गया और साथ ही १६ वीं शताब्दी में पेरिस के व्यापारियों ने भी कोयले की ओर ध्यान दिया। इसी प्रकार योरोप में पत्थर के कोयले के व्यापार ने अच्छी उन्नति की और फलतः सभी योरोपीय देश इस व्यापार की ओर अधिक अनुराग दिखाने लगे। उन्होंने

भारत भी कोयले की खानें खोज निकालने का भारी प्रयत्न किया और उन्हीं के उद्योग का यह फल है कि भारत में कोयले के व्यापार को इतनी सफलता मिली।

भारत में कोयले के व्यापार का सूत्रपात

इसमें लेश मात्र भी सन्देह नहीं कि भारतवासी पुराने समय से ही पत्थर के कोयले से परिचित थे पर न तो वे उसे काम में ही लाते थे और न पत्थर का कोयला भारत में खान से ही निकाला जाता था। अतः भारत में कोयला व्यापार की वस्तु भी नहीं माना जाता था। भारत में कोयले का उद्योग आरम्भ करने वाले योरोपियन ही हैं और इन्हीं की आवश्यकतानुसार कोयले का उद्योग भी आरम्भ हुआ है।

भारत में रहने वाले योरोपियन समाज की आंखे भारत में कोयले की खानें खोज निकालने के लिए इधर उधर तेजी से घूम रहीं थीं कि वारेन हेस्टिंग्ज के समय में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के दो कर्मचारियों ने कोयले की खान खोज निकालने की आज्ञा मांगी और फल यह हुआ कि सन् १७७४ ई० में उन्हें इच्छित आज्ञा पत्र अर्थात् लैसेन्स भी मिल गया। ये दोनों ही अपने काम में जुट पड़े और कुछ ही समय बाद इनमें से मि० एस० जी० हीटली ने बंगाल के प्रान्तर्गत वीरभूमि जिले में कोलले की खान खोज निकाली। अब व्यवस्थित रूप से कोयला निकालने का काम इन्हीं दोनों हिस्सेदारों अर्थातू मि० एस० जी० हीटली और मि० जान समर ने आरम्भ कर दिया। पर लार्ड कार्नवालिस की सरकार इस उद्योग की ओर से उदासीन ही रही, अतः इन्हें इच्छित सफलता भी न प्राप्त हो सकी। सन् १७७७ ई० के एक ऐतिहासिक प्रमाणके आधार पर पता चलता है कि मिस्टर फारग्बूहर और मोथे ने उक्त सन् में लोहा ढालने और गोला बारुद बनाने के लिए सरकार से आज्ञा मांगी थी जिसके सम्बन्ध में उन्ह.ने अपने प्रार्थना पत्र में लिखा था कि झरिया जिले के इस स्थान के पास वाले भूखण्ड में मेसर्स मेसर्स जान समर एण्ड हीटली की कोयले की खाने हैं और पास ही लोहे की खानों से लोहा भी निकलता है। उपरोक्त प्रमाण से यही सिद्ध होता है कि उक्त कम्पनी की कोयले की खानें झरिया जिले में थी जहां उनके पास ही लोहे की खाने भी थीं। इस प्रकार दोनों ही प्रति सहायक पदार्थों की उन्नति साधारणतया एक साथ ही आरम्भ हुई।

एक ओर कोयले का उद्योग उन्नति की ओर धीरे २ बढ़ रहा था कि दूसरी ओर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरों ने सैनिक सामग्री के ढलाव के काम के लिये भारतीय कोयले का जांच कराने का काम आरम्भ किया। उस समय यहां गवर्नर जनरल अर्ल आफ मिन्टो थे। आपने भारत के पत्थर के कोयले की जांच कराई। पर विधि विहित ढंग से परीक्षा न हो सकी और यह प्रश्न ज्यों का त्योंही पड़ा रह गया। सन् १८१४ ई० में गवर्नर जनरल मार्कुइस आफ वेलस्ली के सम्मुख भी भारत के पत्थर के कोयले का प्रश्न पुनः उठ खड़ा हुआ। आपने समुचित व्यवस्था कर यहाँ की खानों के कोयले की परीक्षा कराई।

यहां के गवर्नर जनरल अर्ल आफ मिन्टो तो भारत के कोयले की परीक्षा करा कर चुप हो बैठ गये थे। पर कलकत्ते के कोयले के व्यापारी निराश हो इस व्यापार से उदासीन नहीं हुए। वरन वे अपने पूर्ववत् उत्साहसे कोयलेके व्यापारमें लगे ही रहे। कोयलेकी खानोंसे कोयला नावोंपर लादकर दामोदर नदी के जल मार्गसे बराबर कलकत्ते आता रहा और इतना ही नहीं दिन प्रति दिन यह व्यापार जोर पकड़ता गया फलतः तत्कालीन गवर्नर जनरल मार्कुइस आफ वेलस्ली को बाध्य होकर भारत के कोयले की पुनः परीक्षा करानी पड़ी। विद्वान विशेषज्ञ मि० रुपर्ट जोन्स ने सन् १८१५ ई० में अपनी परीक्षा की रिपोर्ट प्रकाशित कर भारत के कोयले के पक्ष में अपनी अनुकूल सम्मति प्रकट की। सरकार ने भी उनकी परीक्षा सम्बन्धी रिपोर्ट का समुचित सत्कार किया और आपको खानों से कोयला निकालने के लिए ४ हजार पौंड

की पूँजी भी दी। सरकारी खानों से कोयला निकालने का काम मि० रुपर्ट जोन्स भली भांति न चला सके और अन्त में सन् १८२० में आप पूर्ण रूप से निराश हो बैठ गये। फिर भी कलकत्ते के व्यापारी पूर्ववत् अपने कार्य में डटे रहे। उसी वर्ष उन्होंने कोयला निकालने के व्यवहारिक क्षेत्र में साहस के साथ प्रवेश किया और फलतः रानीगंज के कोयला क्षेत्र में कार्यारम्भ किया गया। सन् १८३९ ई० में इसी खान से ३६ हजार टन कोयला निकाला गया, सन् १८४५ ई० में ईस्ट इण्डियन रेलवे कम्पनी ने अपनी रेलवे लाईन भी इसी कोयला क्षेत्र से निकालकर इस खान के समीप ही रेलवे स्टेशन भी बना दिया। इससे खान खोदकर कोयला निकालने के कामको बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला। इसके बाद ही कलकत्ते में जूट मिलों की स्थापना होने लगी अतः भारतीय कोयले की खानों का भाग्य ही पलट गया और सन् १७५७-५८ ई० के बाद से इस कार्य ने जोरों से उन्नति करना आरम्भ कर दी जो नीचे के अंको से स्पष्ट है।

सन् १८५८ ई० में	१, ९३, ४४३ टन
सन् १८६८ ई० में	४, ५६, ४०३ टन
सन् १८७८ ई० में	९, २५, ४६४ टन
सन् १८९८ ई० में	४६, ०८, १६६ टन
सन् १९०८ ई० में	९७, ८३, २५० टन

इसमें ८८ प्रतिशत कोयला बंगाल की खानों का है। इसी प्रकार खानों की संख्या में भी वृद्धि हुई है जो नीचे के अंको से स्पष्ट है।

सन् १८८५ ई० में कोयले की कुल खानें ९५ थीं जिनमें से ९० बंगाल में थीं।
सन् १९०० ई० में कोयले की कुल खाने २८६ थीं जिनमें २७१ बंगाल में थीं।
सन् १९०६ ई० में कोयले की कुल खानें ३०७ थी जिनमें से २७४ बंगाल में थी।

उपरोक्त ऐतिहासिक विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि संसार में पत्थर के कोयले से मानव समाज परिचित आवश्य था पर सबसे प्रथम पत्थर को कोयले की खानों का उद्योग ब्रिटेन से आरम्भ हुआ था और धीरे धीरे भारत में इस उद्योग ने अपनी जड़ जमा ली। आज भारत में कोयले का काम जोरों से हो रहा है।

जहां कुछ जानकारों का मत है कि कोयले का उद्योग धन्धा सर्व प्रथम योरोप में आरम्भ हुआ था वहां कितने ही लोगों का मत है कि योरोप वालों की अपेक्षा चीन वाले शताब्दियों से पूर्व ही कोयले और गैस के व्यवहार से परिचित थे।

पत्थर के कोयले की खोज तो बहुत पुराने समय में हुई थी परन्तु उद्योग धन्धों में इसकी व्यवहारिक उपयोगिता से लाभ उठाने का काम बहुत पीछे से आरम्भ हुआ था और आज तो संसार में कोयले और लोहे को ही प्रधान अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त है सभी राष्ट्र अपनी आत्मरक्षा के लिए इन्हीं दोनों पर निर्भर रहते हैं।

भारत में पत्थर के कोयले का केन्द्र

भारत में निकलने वाले पत्थर के कोयले का ९५½ प्रतिशत भाग ऐसी पद्धति की खानों से निकलता है कि जिनके कोयले को गोंडवाना सिष्टम [gondawana] का कोयला कहते हैं। भारत के प्रधान कोयला क्षेत्र में रानी गंज और झरिया ही दो ख्याति प्राप्त क्षेत्र हैं। भारत की खानों से निकलने वाले पत्थर के कोयले का ८३ प्रतिशत माल इन्हीं दो क्षेत्रों से निकलता है। इनमें से रानीगंज तो वर्दवान जिले में है

जहां की खानों में सबसे प्रथम कोयला निकालने का काम सन् १८२० ई० में आरम्भ हुआ था। दूसरा झरिया का कोयला क्षेत्र है जो वर्तमान में बिहार उड़ीसा प्रदेश में है। यहां की खानों में कोयला निकालने का कार्य सन् १८९३ में आरम्भ हुआ था। इन दो प्रधान कोयला क्षेत्रों के अतिरिक्त हैदराबाद राज्य के सिगरेरी स्थान में भी कोयले की बड़ी खानें हैं। जहां कोयला निकालने का कार्यारम्भ सन् १८८७ ई० में हुआ था। भारत में कोयले के यही तीन बड़े क्षेत्र हैं। इनके अतिरिक्त वर्धा और पेंच की घाटी सी० पी० में, उमरिया रीवों राज्य में, माकूम आसाम में, और झेलम जिला पंजाब में भी कोयले की खाने हैं जहाँ कोयला निकाला जाता है।

कोयला उद्योग में भारतीय व्यापारियों का प्रवेश

यहां यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि दूसरे २ प्रमुख उद्योगोंकी तरह कोयला उद्योग पर भी प्रारम्भमें अंग्रेज कम्पनियों का प्रधान अधिकार था। धीरे २ भारतीयों ने भी इस उद्योगमें प्रवेश किया मगर ब्रिटिश सरकार भारतीय और यूरोपीय व्यापारियों के बीच बहुत पक्ष पातका व्यवहार करती थी इस पक्षपात पूर्ण व्यवहारके खिलाफ आवाज उठाने वाले पहले व्यक्ति स्व० सेठ अमृतलाल ओझा थे जिन्होंने कोयला उद्योगमें भारतीय हितोंकी रक्षाके लिए वैधानिक तौरपर बहुत लड़ाई लड़ी और भारतीय हितों की रक्षा में सफल हुए।


स्व० सेठ अमृत लाल ओझा

कोयले की प्रधान खानें

भारत की प्रधान खानों में रानीगंज और झरिया ही की खानें मानी जाती है। रानीगंज कलकत्ते से लगभग १४० मील दूर है। इन खानों से कोयला रेलवे और स्टीमरों के द्वारा कलकत्ते आता हैं। रानीगंज से ४० मील दूर झरिया का कोयला क्षेत्र है। इन दो के बाद गिरिडिह की खानों का स्थान मान जाता है। इन तीनों ही खानों का कोयला परिमाण में एकसे एक बढ़कर निकलता है। यह भारत के कोयले की कुल उतज का ९० प्रतिशत माना जाता है। इस औद्योगिक कार्य से ५ लाख के लगभग श्रमो जीवी पलते है। फिर भी श्रमी श्रम जीवियों की मांग कम नहीं हुई। क्योंकि कभी २ आदमियों की कमी के कारण माल भी कम निकलता है। इन खानों में सभी प्रकार का कामकरने के लिये आधुनिक यन्त्र सामग्री की सुविधा की गई है। विद्यु त शक्ति संचालक केन्द्रो की स्थापना भी की गई है। तथा कोयले से दूसरे प्रकार के उपयोगी पदार्थ तैय्यार करने की व्यवस्था भी की गई है।

देश के स्वाधीन होने के पश्चात् हमारे यहाँ कोयले के उद्योग का महत्व और भी बहुत अधिक बढ़ गया है। अब हमारे यहां साठ लाख टन इस्पात के उत्पादन का लक्ष्य पूरा करने के लिए तीन २ बड़े विशाल इस्पात के कारखाने खुलने जा रहे हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस्पात का उत्पादन करने के लिए कोयले की विशाल मात्रा में आवश्यकता होती है और यही कारण है कि अगली पंचवर्षीय योजना में हमारे देश में कोयला-उत्पादन का लक्ष्य छः करोड़ टन का रक्खा गया है। जो कि वर्तमान

उत्पादनसे २.३ करोड़ अधिक है और इसी दृष्टिकोण को सामने रखते हुए हमें कोयला उद्योग से सम्बन्धित सभी समस्याओं पर विचार करना होगा।

पत्थर का कोयला मुख्यत: दो प्रकार का होता है—एक तो कोक बनाने का और दूसरा घटिया कोयला जो भट्टियों में जलाने के काम आता है। कोक बनाने का कोयला लोह-इस्पात आदि धातुओं के निर्माण में प्रयुक्त होता है और इतना मूल्यवान होता है कि उसका प्रयोग भाप बनाने के लिए भट्टियों में नहीं करना चाहिए, पर इस कोयले का इंजनों तथा अन्य बायलरों में प्रयोग किया जाता है। ज्यों-ज्यों द्वितीय पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत कच्चा लोहा और इस्पात बनाने के लिए कोक बनाने के कोयले की आवश्यकता बढ़ती जायगी, त्यों-त्यों इस कोयले का यह व्यर्थ प्रयोग भी धीरे-धीरे बन्द होता जायगा। पत्थर का घटिया कोयला भाप बनाने तथा रासायनिक कार्यों में प्रयुक्त होता है।

कोयले में राख कितनी होती है, इस आधार पर हमारे कोयले को निम्न वर्गों में विभक्त किया जाता है (यहाँ हम वर्गीकरण करते समय कोयले की आर्द्रता ख्याल सुगमता की दृष्टि से नहीं करेंगे):— सिलैक्टेड ए, सिलैक्टेड बी, ग्रेड १, ग्रेड २ और ग्रेड ३। इनमें से ग्रेड ३ के कोयले में सबसे अधिक राख होती है।

श्रेष्ठ कोयले के भंडार सीमित

कोक बनाने के कोयले के हमारे भंडार सीमित हैं। इसी से सरकार को इसकी बड़ी चिन्ता है। क्योंकि जब इस्पात बनाने के तीनों सरकारी कारखाने चलने लगेंगे तो धातु-शोधन कार्यों में कोक बनाने के कोयले की खपत बहुत बढ़ जाएगी। हमारे भूगर्भ शास्त्री निश्चयपूर्वक यह कहने में असमर्थ है कि कोक बनाने के कोयले के भण्डार कितनी सदियों तक चलेंगे। भूगर्भ सर्वेक्षण विभाग कोयला भंडारों का नये सिरे से आकलन कर रहा है जिससे इसकी अपेक्षाकृत अधिक सही जानकारी प्राप्त हो सके।

इन स्थितियों में हमारी सरकार ने बढ़िया कोयले के इन भंडारों को अधिक से अधिक समय तक चलाने के लिए निम्न कदम उठाये हैं :—(क) बढ़िया कोयले का उत्पादन सीमित करना (ख) धातु-शोधन के अतिरिक्त अन्य कामों में इस कोयले का प्रयोग रोकना (ग) कोयले की धुलाई को प्रोत्साहित करना जिससे उसमें राख का अंश कम हो जाए और पहले तथा दूसरे ग्रेड का धोया हुआ कोयला धातु-शोधन के कार्यों में प्रयुक्त किया जा सके और (घ) जो खानें कोयला निकालने के बाद खाली हो गयी हैं, उन्हें रेत आदि से भरना जिससे शेष कोयला सुगमता से निकाला जा सके। इन उपायों को अधिकाधिक तेजी से किया जाएगा, जिससे १९६० तक, जब कि इस्पात के तीनों नये कारखाने चलने आरम्भ हो जायंगे तब तक, इस्पात उद्योग के लिए कोक बनाने का कोयला पर्याप्त मात्रा में सुलभ हो जायगा और धातु-शोधन के अतिरिक्त अन्य कार्यों में इस कोयले का जो प्रयोग होता है, वह वस्तुतः समाप्त हो जाएगा।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना की जो रूप रेखा निर्धारित की गई है, उसके अनुसार भारत में कोयले का उत्पादन १९६०-६१ तक ३.७ करोड़ टन के स्थान पर ६ करोड़ टन हो जाना चाहिए। इससे जहां राष्ट्रीयकरण आदि की चर्चा चल पड़ी है वहां उत्पादक सक्रिय रूप से उन व्यवहारिक उपायों के सम्बन्ध में भी सोचने लगे हैं जिससे दूसरी पंचवर्षीय योजना की चुनौती स्वीकार की जा सके।

राष्ट्रीयकरण का प्रश्न

यह विश्वास किया जा सकता है कि सरकार केवल राष्ट्रीयकरण की ही खातिर वर्तमान कोयला खानों का राष्ट्रीयकरण नहीं करेगी। किन्तु जब सरकार यह देखेगी कि राष्ट्रीय दृष्टि से कोक बनाने के

कोयले के भंडारों को सुरक्षित रखने के लिए क्षतिपूर्ति करके कोयला खानों का अधिग्रहण आवश्यक है अथवा ५०० टन कोयला प्रति घंटा धोने वाले विशाल कारखाने में, जिसकी लागत १ करोड़ रु० से अधिक होगी और जिसे स्थापित करना निजी पूंजीपतियों के वश की बात न होगी, प्रयोग करने के लिए कोयले का उत्पादन बढ़ना आवश्यक है, अथवा जब सरकार बेची जाने वाली ऐसी भूमि खरीदे जिसमें बढ़िया कोयले की खानें हों और जिन्हें उसके मालिक उपयोगिता पूर्वक न खोद सकें उन्हें खोदने में इतना खर्च हो जो उनके साधनों के बाहर हो, तो सरकार द्वारा खानें अपने अधिकार में लेने की बात सोची जावेगी।

अतिरिक्त कोयला उत्पादन

६ करोड़ टन कोयले के वार्षिक उत्पादन का जो लक्ष्य द्वितीय पंचवर्षीय योजना में रखा गया है, उसे प्राप्त करने के लिए २.३ करोड़ टन कोयला प्रतिवर्ष अधिक निकालना होगा। अतिरिक्त उत्पादन बढ़ाने के लिए विभिन्न कोयला क्षेत्रों में निम्न मात्रा में उत्पादन बढ़ाने की योजना है :—

(लाख टनों में)

कोयला क्षेत्र का नाम	सरकारी क्षेत्र	निजी क्षेत्र	योग
रानीगंज	३६	२६.८	६२.८
झरिया	....	३५	३५
करनपुरा	४*	५.६	४५.६
बोकारो	४	....	४
कोरबा	४०	....	४०
कोरिया और रीवा	३०	५	३५
सिंगरैनी		१०.७	१०.७
	१५०	८३.१	२३३.१

कुछ विशेषज्ञों को शंका है कि कोरबा और करनपुरा के कोयला क्षेत्रों से प्रतिवर्ष ४०–४० लाख टन कोयला अधिक निकल भी सकेगा अथवा नहीं। विभिन्न कोयला क्षेत्रों में कितनी वृद्धि हो, इसका अन्तिम वितरण ऊपर दी गयी सारिणी से कुछ कम या ज्यादा हो सकता है, किन्तु समझने की महत्व पूर्ण बात यह है कि कोयला उत्पादन के एक लक्ष्य निर्धारण की योजना बनाना और उसे प्राप्त करने के लिए कोयला क्षेत्रों के अनुसार उसका वितरण करना—भले ही उसमें बाद में बदली हुई स्थितियों के अनुसार परिवर्तन करना पड़े—योजना विहीन आपा-धापी द्वारा उत्पादन बढ़ाने से कहीं अच्छा है।

रेलों की व्यवस्था

यह प्रश्न अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है कि क्या अतिरिक्त वार्षिक उत्पादन में से १.८ करोड़ टन कोयले को रेलें इधर से उधर ले जाने की व्यवस्था कर भी सकेगी या नहीं। (यहां १.८ करोड़ टन ही अतिरिक्त उत्पादन इसलिए रखा है कि २.३ करोड़ टन कोयले में से शेष ५० लाख टन कोयले का कुछ भाग कोयला खानों पर प्रयुक्त होगा और कुछ भाग ट्रकों के द्वारा ढोया जावगा।) इस समय जो ३.७ करोड़ टन कोयला खानों से निकाला जाता है, उसमें में रेलें ३.२ करोड़ टन कोयला ही ढोती है। वर्तमान उत्पादन में से बचा ५० लाख टन तथा अतिरिक्त उत्पाचन में से १८० लाख टन कोयला रेलों को १९६० तक अधिक ढोना होगा और २३० लाख टन कोयला और अधिक ढोने की सामर्थ्य कर लेना कोई खिलवाड़ नहीं है।

रेलों की कठिनाई

परिवहन मन्त्रालय रेलों के विस्तारके लिए १,५०० करोड़ रुपयों की मांग कर रहा है जबकि द्वितीय पंचवर्षीय योजना में प्रस्ताव लगभग ६०० करोड़ रु० का ही है। अपर्याप्त परिवहन व्यवस्था का उद्योगों पर क्या कुप्रभाव पड़ेगा, इसपर विचार करके यह आशा को जाती है कि परिवहन व्यवस्था के लिए आवश्यक धनराशि बढ़ा दी जायेगी।

रेल प्रशासन की एक कठिनाई यह भी है कि जब किसी उद्योग को देश के दुर्गम भाग यथा सौराष्ट्र में, स्थापित करने की योजना बनायी जाती है तो रेल विभाग से यह सलाह नहीं ली जाती कि रेल आवश्यक परिमाण में बिना कठिनाई के उस उद्योग के लिए कोयला आदि पहुँचा भी सकेंगी या नहीं।

इस स्थिति में संतोष की बात यही है कि यदि कोयले का उत्पादन ही लक्ष्य से कम हुआ तो लक्ष्य के अनुसार १९६० तक रेल परिवहन की सुविधा न होना उतना नहीं अखरेगा।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य है कोयला उद्योग का चिर प्रतीक्षित युक्तियुक्त संगठन करना। उसकी आवश्यकता एक तो कोयले के प्रादेशिक वितरण की दृष्टि से भी है और दूसरे धातु शोधन के लिए श्रेष्ठ कोयले को सुरक्षित रखने की भी दृष्टि से है। कोयले के प्रादेशिक उत्पादन में वृद्धि होने से रेलें निकटस्थ कोयला क्षेत्र से माल को निर्दिष्ट स्थान तक जल्दी से जल्दी पहुँचा सकेंगी और रेलें कोक बनाने का बढ़िया कोयला बचा सकेंगी, क्योंकि रेलें बढ़िया कोयला या तो लम्बे सफर में भाप बनाने के लिए प्रयोग करती हैं अथवा दुर्गम प्रदेशों में जाने पर। जब कम दूर माल ढोना होगा तो वे योजनानुसार घटिया कोयला ही जलाने लगेंगी।

इस प्रकार कोयला उत्पादन की द्वितीय योजना के अनुसार भले ही निर्दिष्ट लक्ष्य की पूर्ति में एक या दो वर्षों का विलम्ब हो जाय, फिर भी इससे कोयला उद्योग का काफी हद तक युक्तियुक्त पुनर्गठन हो सकेगा।

उद्योग की युक्ति पूर्वक व्याख्या आवश्यक

भारतवर्ष में कोयले के उद्योग की युक्तिपूर्वक व्याख्या करने के लिए अन्य चीजों के साथ साथ, (अ) कोयले की अधिक मात्रा कम कीमत पर पाने के लिए खदानों को यन्त्रों से सम्पन्न करना (ब) रेलवे किराया तथा डिब्बों की टूट फूट को बचाने के लिये नजदीक की कोयलों की खदानों से आसपास के क्षेत्रों में (Zonal) कोयला भेजना (स) निम्नश्रेणी के कोयले को धोकर उसकी राख को कम करके उच्चश्रेणी के कोयले की खपत को बढ़ाना जिससे कि निम्नश्रेणी का कोयला भी ऊंची श्रेणी के स्तर में लाया जा सके।

कोयले को धोने के कारखाने के लिये पूँजी की आवश्यकता

केन्द्र को कोयला धोने का कारखाना खोलने के लिए अधिक पूंजी की आवश्यकता होगी और जब तक ये कारखानें आस पासकी खदानों से रेलवे के द्वारा सम्बन्धित नहीं किये जावेगें तब तक ये कारखानें मितव्ययता से कार्य नहीं कर सकेगें। इस कारखाने के सफलता पूर्वक कार्य करने में एक कठिनाई यह है कि मध्यम श्रेणी के कोयले के लिए पर्याप्त मात्रा में डिब्बों (Wagons) की आवश्यकता लगेगी। इसके साथ ही जब धोने के कारखाने (Washing Plants) समस्त कोयले के क्षेत्रमें फैल जावेगें तब सरकार को मध्यश्रेणी के कोयलेको अग्नि तथा थर्मल पॉवर स्टेशन में उपयोग में लाने के तरीकों को ढूंढने के लिए सहायता देनी होगी।

इन कठिनाईयों को दृष्टि में रखकर विशेष तौर से यातायात के साधनों को, हाल ही में बनाई हुई कोयले की समिति —जो कि प्लानिंग कमीशन के द्वारा बुलाई गई थी—सरकार को यह सिफारिश करने के लिये सहमत होगई की साधारणतया प्रत्येक इस्पातके कारखानेके साथ उसका स्वयं कोयला धोनेका कारखाना होना आवश्यक है जो कि अपने खुद का धुलाई कार्य करे तथा मध्य श्रेणी और अनुपयोगी कोकले को समाप्त करे। यद्यपि यह योजना रेल के कार्य को सरल बना देगी परन्तु अगर यह सिफारिश सम्पन्न हो जाय तो इस्पात के उद्योग को अपने विषय में बहुत कुछ कहना होगा। कोयले के उत्पादकों की पिछली बैठक में यह तय हुआ था कि सब कोकिंग कोयला अवश्य धोना चाहिये। इस्पातके कारखाने में ही कोकिंग कोयला धोया जाय इस सिफारिश को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त कोयले के उत्पादकों की सिफारिश की स्थिति अनिश्चित है।

रेत को व्यवस्थित रूपसे जमाने के लिये विशाल सहायताः—

खदानों की छत को झेला देने के लिये रेत को व्यवस्थित रूकसे जमाना आवश्यक है जब कि उच्चश्रेणी के कोयले का निचला भाग गलत तरीकों के कारण तथा अधिक कीमत को बचाने के लिये पहले ही खोद लिया जाता है। यह बहुत मँहगा तरीका है। सरकार रेत को व्यवस्थित रूप से जमाने लिये (Sand-stowing) लागत का ८५ प्रतिशत तक सहायता कर रही है और यह सहायता और भी अधिक प्रतिशत तक बढ़ सकती है।

ऐसी परिस्थिते में द्वितीय पंचवर्षिय योजनामें इन बातों का खयाल रखना होगा (अ) अभिनवीकरण की आवश्यकता के लिये तथा देशकी बढ़ती हुई आर्थिक स्थिति का मुकाबला करनेके लिये कोयले को इधर उधर भेजने के लिये यातायात के साधनों की सुन्दर व्यवस्था करना (ब) कोयला क्षेत्रों में तथा इस्पात के कारखानों में कोयले के धोने की अच्छी व्यवस्था करना।

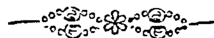
ऐसे अपरिपूर्ण अर्थ की पृष्ठ भूमि के समक्ष जो कि कोयले के यातायात के लिये आवश्यक रेल की लाईनों की वृद्धि में रूकावट डालती है और यह अप्रर्याप्त यातायात का प्रबन्ध कोयले के उद्योग के अभिनवीकरण में अड़चन डालता है इन सब बातों से हम कोयले के उद्योग की वर्तमान प्रवृत्ति की रूप रेखा खींच सकते हैं।

कोयला उद्योग का उज्ज्वल भविष्य :—

दस वर्षों के पश्चात्, सुव्यवस्थित योजना के अन्तर्गत, उद्योगों में क्रान्तिकारी वृद्धि के साथ, अभिनवीकरण में विकास के साथ और यातायात के साधनों में सुधार के साथ कोयले का उद्योग अपना महत्व अधिक अच्छी तरह प्रदर्शित कर सकेगा। स्पष्ट दिखलाई दे रहा है कि इस उद्योगका भविष्य बहुत उज्वल है।

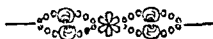
कोयले तथा कोक उत्पादन तथा निर्यात

	वर्ष	उत्पादन ('००० टन)	निर्यात ('००० टन)
१	१९४८-४९	४६६७०.१	१३.३२
२	१९४९-५०	३०५९२.३	२३.२३
३	१९५०-५१	३२२२५.९	९९४
४	१९५१-५२	३५०२६.२	२८०१
५	१९५२-५३	३५९९८.०	२६६८
६	१९५३-५४	३५६३०.०	१६१७
७	१९५४-५५	३६०००.०	१९८६



भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



भारत में इञ्जीनियरिंग उद्योग का विकास

Development of Engineering Industrie In India



भारत में इञ्जीनियरिंग उद्योग
मोटर उद्योग का विकास
डीजल इञ्जीन का उद्योग
साइकल उद्योग का विकास
सीनेकी मशीनों का उद्योग
लालटेन उद्योग
बालबेयरिंग उद्योग
कपड़ा उद्योग की मशीनरी का उद्योग
बिजली इञ्जीनियरिंग उद्योग
एल्यूमिनियम उद्योग का विकास

भारत में इञ्जीनियरिंग उद्योग का विकास

भारत के इञ्जीनियरिंग उद्योग का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। सन् १९२५ में भारत के इञ्जीनियरिंग उद्योग ने जोकि उस समय विकास की ओर अग्रसर हो रहा था तारीफ बोर्ड (कर समिति) के सम्मुख "इञ्जीनियरिंग" शब्द के मिश्रित अर्थ होने के कारण एक जटिल समस्या उत्पन्न करदी थी। समय के व्यतीत होने की गति के साथ २ मशीनों को सुधारने के कारखाने (वर्क्स एण्ड रिपेअरशॉप्स) जो कि ५० वर्ष पूर्व इञ्जीनियरिंग उद्योग के प्रतिरूप थे तथा उसकी उन्नति के सूचक थे वे क्रमशः मशीनों के निर्माण करने वाले कारखानोंके रूप में बदल दिये गये। टाटा ने इस्पात के कारखानेको स्थापित कर जिस प्रकारका प्रतिनिधित्व किया है उसने देश में अन्य कई कारखानें स्थापित करने में बड़ी सहायता की है।

इञ्जीनियरिंग उद्योग के पायोनियर



श्री जे० आर० डी० ताता (ताता सन्स प्रा० लि०)

इञ्जिनियरिंग उद्योग का प्रशंसनीय प्रयास

इञ्जिनियरिंग उद्योग का वास्तव में नियमित ढंग से विकास गत महा युद्ध से महान् उत्साह पाकर हुआ जब कि भारतवर्ष युद्ध की हलचलों के जाल में फंसा दिया गया था। उस समय के चालू कारखानों ने बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए कई पालियाँ चलाकर कार्य किया, उनकी उत्पादन क्षमता स्थानीय मशीनों को, या पुरानी मशीनों को फिर से लगाकर बढ़ाई। इसके अतिरिक्त बहुत अधिक कारखाने बड़े बड़े उत्पादन केन्द्रों के आस पास खोले गये। यद्यपि इस प्रकार की हलचलों की प्रवृत्ति व्यवहारिक तौर से सारे भारत वर्ष के पैमाने पर बढ़ चुकी थी, बड़े-बड़े शहर तथा उनके उपनगरों में—मगर खास तौर से कलकत्ते के औद्योगिक हिस्से को अधिक से अधिक उत्साह मिला।

शान्ति होने के पश्चात् ये कारखाने ही युद्ध की गतिविधि बंद होने के प्रथम शिकार बने क्योंकि सेना की ओर से अब किसी प्रकार के अस्त्र शस्त्रों की मांग नहीं रही थी। युद्ध के सामानों की अब बिलकुल बिक्री नहीं थी क्योंकि ग्राहकों को इनकी बिलकुल आवश्यकता नहीं होती थी जिससे अधिकतर कारखानों को करीब दो दो वर्षों तक याने सन् १९४७ तक बेकार ही रहना पड़ा। चारो ओर

अंधकार ही अन्धकार होने के उपरान्त भी, कुछ दूरदर्शी उद्योगपतियों ने युद्ध के समय कमाये हुए धन की बचत से तथा जो मशीने और दूसरे आवश्यक सामान जो कि बचे हुए सामान से प्राप्त किये जा सकते थे प्राप्त कर उनसे शांति के पथ पर चलने वाले उद्योगों को आधुनिक ढंग से बढ़ाना प्रारम्भ किया। भारतीय उत्पादकों का सन् १९४८ से ५२ तक की गणना का संक्षिप्त ब्योरा जो कि 'डायरेक्टर ऑफ इण्डस्ट्रीयल स्टेटिक्स' के यहां से हाल ही में प्रकाशित हुआ है वह एक बहुत ही रुचिपूर्ण, नियमित तथा अनियमित विकास की प्रगति की एक क्रम बद्ध गणना की पृष्ठभूमि प्रदर्शित करता है और हम इन आँकड़ो से वर्तमान स्थिति का चित्र खींचना चाहते हैं।

उद्योग को क्रम से अध्ययन करने में डायरेक्टर ने लोहे तथा इस्पात, एल्युमिनियम, ताँबा और पीतल, सायकलें, सीनें की मशीनें, प्रोड्युसर गैस प्लान्ट, बिजली के बल्ब, पंखों को अलग से लिया है तथा अन्य सामान और बिजली की इन्जीनियरिंग के उद्योग को एक अलग ही मिश्रित श्रेणी में लिया है।

सामान्य तथा बिजली की इंजिनियरिंग श्रेणी के क्षेत्र के अन्तर्गत रजिस्टर्ड कारखानों में बहुत वृद्धि हुई सन् १९४८ में जब कि केवल १४७३ कारखाने थे वे सन् १९४९ में बढ़कर १६०३ हो गये और अगले दो वर्षों में याने १९५०, १९५१ में बढ़कर क्रमशः १७३० और १९३० हो गये और सन् १९५२ में उनकी संख्या बढ़कर २०२१ हो गई।

जहां तक निश्चित धन का सम्बन्ध है वह सन् १९४८ से अगले क्रमिक वर्षों में (फैक्टरियों की रिपोर्ट से) १९.६४ करोड़ रुपये २३-४७ करोड़ रुपये, २६.६ करोड़ रु० ३१.४५ करोड़ रु० तथा २७.१६ करोड़ रुपये था जब कि इसके साथ का श्रमिक (Working) धन १६.७ करोड़ रुपये, २०.७४ करोड़ रुपये, २७.३७ करोड़ रुपये, ३४.३८ करोड़ रुपये तथा ३३.४३ करोड़ रुपये था। इसलिये इन वर्षों की कुल पूँजी क्रमशः ३६.३४ करोड़ रु०, ४४.२१ करोड़ रुपये, ५३.४३ करोड़ रु०, ६५.०३ करोड़ रु० तथा ६०.५६ करोड़ रुपये थी।

स्थायी तथा अस्थायी श्रम से लगे हुए श्रमिकों की संख्या प्रति वर्ष बढ़ती ही जा रही है जो कि क्रमशः १.४० लाख से १.४० लाख १.४५ लाख, १.५३ लाख सन् १९५१ में हो गई। सन् १९५२ में श्रमिकों की संख्या में कुछ कमी कोरिया में शान्ति हो जाने की वजह अवश्य आगई थी और श्रमिकों संख्या कम होकर १.४३ लाख रह गई।

कुल तनख्वाह मजदूरी तथा अन्य इनाम वगैरह मिलाकर क्रकशः १३.६५ करोड़ रुपये से १५.१० करोड़ रुपये, १६.६२ करोड़ रुपये, १८.६० करोड़ रुपये और सन् १९५२ में १८.०७ करोड़ रुपये दिये गये।

कारखानों में अन्य समान कोयले इत्यादि आवश्यक चीजोंका खर्च प्रति वर्ष क्रमशः २२.४७ करोड़ रुपये, २८.८६ करोड़ रुपये, ३२.२१ करोड़ रुपये, ४१.९० करोड़ रुपये और ३८.३७ करोड़ रुपये होता था। हमेंशा होने वाला घिसाव (Depriciation) कारखानों की पूंजी में एक बहुत बड़ा छिद्र है।

जो कि प्रति वर्ष क्रमश: १.५५ करोड़ रुपये, १.८३ करोड़ रुपये, १.६३ करोड़ रुपये, २.३१ करोड़ रुपये तथा २.०१ करोड़ रुपयों का हुआ, वह उपरोक्त अंकड़ों से भली भाँति जाना जा सकता है। कुल संचयी खर्च क्रमशः २४.५२ करोड़ रुपये, ३१.०६ करोड़ रुपये, ३४.७६ करोड़ रुपये, ४४.६३ करोड़ रुपये, तथा ४१.१९ करोड़ रुपयों का था।

इन उपरोक्त रजिस्टर्ड कारखानों से उत्पादित माल की कुल कीमत जो कि सन् १९४८ में ४५.०८ करोड़ रुपये, सन् १९४९ में ५२.४१ करोड़ रुपये, सन् १९५० में ५८.९० करोड़ रुपये सन् १९५१ में ७४.०७ करोड़ रुपये तथा सन् १९५२ में ६७.६४ करोड़ थी जब कि उत्पादकों के द्वारा जोड़ी गई कीमत २०.५६ करोड़ रुपये, २१.३२ करोड़ रुपये २४.१४ करोड़ रुपये, २९.१४ करोड़ रुपये तथा २६.७५ करोड़ रुपये थी।

उपरोक्त अंकों से सहज ही जाना जा सकता है कि देश के स्वाधीन होने के साथ ही यहाँ के इञ्जीनियरिंग उद्योग ने कितनी तेजी से उन्नति की।

सम्पूर्ण मोटर उद्योग के भारतीय पायोनियर



सेठ व्रजमोहन बिड़ला

मोटर उद्योग का विकास

इस देश के उद्योग पतियों का ध्यान सन् १९४० से ही इस देश में मोटर उद्योग की स्थापना की ओर चला गया था। इन उद्योग पतियों में मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स और मेसर्स वालचन्द हीराचंद साह प्रमुख थे।

मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स ने सर्व प्रथम सन् १९४२ में हिन्दुस्तान मोटर्स नामक फैक्टरी की स्थापना ओखा बन्दर में की। यहां पर विलायत से आने वाले मोटर के पुर्जों को जोड़कर मोटरें तैय्यार की जाती थीं।

मगर उपरोक्त प्रतिष्ठान मोटरों के पुर्जों के लिए विदेशों का परमुखापेक्षी नहीं रहना चाहता था अत: शुरू से अन्त तक मोटर के समस्त पुर्जों का निर्माण देश में करने के लिए कलकत्ते के पास उत्तरपाड़ा में बीस करोड़ रुपए की पूंजी से एक विशाल कारखाने का निर्माण दस लाख वर्गफीट के क्षेत्र में किया।

इस फैक्टरी में हिन्दुस्तान लैण्डमास्टर नामक कारें अपने समस्त कल पुर्जों सहित बनती हैं। प्रतिदिन २५ कारें और २० ट्रक तैय्यार होते हैं। स्टूडबेकर नामक गाड़ी का गठन भी यहां होता है। इस विशाल कारखाने की सम्पूर्ण व्यवस्था का संचालन भी व्रजमोहन बिड़ला करते हैं।

इसके अतिरिक्त प्रीमियर ओटो मोबाइल्स लि० बम्बई ने भी इस क्षेत्र में थोड़े ही समय में अच्छी प्रगति कर ली है। इसकी उत्पादन क्षमता ३५ गाड़ी प्रतिदिन जोड़ने की है।

मद्रास के निकट एनोर में अशोक मोटर प्लांट हैं इसकी उत्पादन क्षमता प्रतिदिन २० कार और १० ट्रक तैयार करने की है।

इस स्थिति में हमारी पंचवर्षीय योजना का आरम्भ हुआ और मोटर उद्योग के कुल बारह प्रतिष्ठानों में से सिर्फ चार ने आशा जनक प्रगति की। हमारे देश में मोटर गाड़ियों की मांग का क्षेत्र संकुचित और सीमित होने से इनको मांग ने प्रगति नहीं की अतः उपरोक्त कारखानों का उत्पादन कम हो गया। सन् १६५१–५२ में जहां २३५७६ वाहनों का उत्पादन हुआ था वहां सन् १९५३–५४ में गिर कर वह सिर्फ १२६३६ रह गया।

वर्तमान में हिन्दुस्तान मोटर्स लि० कलकत्ता प्रीमियर ओटो मोबाईल्स लि०, बम्बई स्टैण्डर्ड मोटर प्राडक्ट्स आफ इण्डिया लि० मद्रास, अशोक मोटर्स लि० मद्रास ऐसे प्रधान औद्योगिक प्रतिष्ठान है जो मोटर निर्माण में लगे हुए हैं। इनके अतिरिक्त मेसर्स महेन्द्र एण्ड महेन्द्र नामक औद्योगिक प्रतिष्ठान को जीप के पुर्जों को जोड़कर जीप गाड़ी के निर्माण की स्वीकृति भारत सरकार ने दे दी है। इस प्रतिष्ठान ने अमेरिकन फर्म मेसर्स विलीज ओवर लैण्ड एक्सपोर्ट कारपोरेशन से व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ कर जीप गाड़ियों का निर्माण प्रारम्भ किया है।

इन आयोजनों के अतिरिक्त मेसर्स टाटा इञ्जीनियरिंग एण्ड लोकोमेटिव कम्पनी लि० ने पश्चिम जर्मनी की प्रसिद्ध औद्योगिक फर्म मेंसर्स हेमलर बेनज ए० जी० से व्यापारिक सम्बन्ध कर उनके सहयोग से भारत में ३ टन वाली डीजल ट्रकके निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया है। इसी प्रकार मेसर्स मद्रास मोटर्स लि० ने इंगलैण्ड की प्रसिद्ध फर्म मेसर्स इनफील्ड सायकल कम्पनी लि० से व्यापारिक सहयोग कर भारत में मोटर साइकलों का निर्माण प्रारम्भ किया है।

डीजल इञ्जिनों का निर्माण

सन् १८६२ में डा० रुडाल्फ डीजल ने एक नये प्रकार के इंजिन का आविष्कार किया था जो डीजल एंजिन के नाम से प्रसिद्ध है कमशः उन्नति करते करते यह इञ्जिन कई आकारों का बनाया जा रहा है।

भारतवर्ष में डीजल इंजिन बनाने का पहला कारखाना सेठ बालचन्द हीराचन्द शाह ने पूना के निकट बालचन्द नगर में स्थापित किया।

स्वाधिता के बाद केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों की सहायता से इस उद्योग ने बहुत तरक्की की। सन् १९५१ तक देश में डीजल इञ्जिन बनाने वाले कारखानों की संख्या ५ होगई। जिनकी अधिकतम उत्पादन क्षमता ६३२५ इञ्जिन प्रति

इञ्जिन उद्योग के पायोनियर



सेठ बालचन्द हीराचन्द शाह

वर्ष बनाने की थी। इसी वर्ष डीजल इञ्जिन उद्योग, १९५१ के उद्योग अधिनियम के अन्तर्गत आ गया। जिससे इस उद्योग के विकास का दायित्व केन्द्रीय सरकार पर आ गया।

इस अधिनियम तथा इसी प्रकार के उठाये गये दूसरे कदमों से इस उद्योग को बहुल प्रेरणा मिली जिसके परिणाम स्वरूप डीजल इञ्जिम के कारखानों की संख्या बढ़ कर १६ हो गई है, जिनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता १६३६९ इञ्जिन प्रति वर्ष है इसके अतिरिक्त तीन अन्य फर्मों ने भी सड़क पर चलने वाली मोटरों और ट्रकों आदि के काम आने वाले इंजिन बनाने प्रारम्भ किये हैं इनकी वार्षिक उत्पादन क्षमता १०००० इंजिन प्रति वर्ष है।

इस उद्योग की उन्नति के परिणाम स्वरुप विदेशों से इन इञ्जिनों का आना कम होता जा रहा है। सन् १९५१-५२ में जहां ७२३६७ इंजिनों का हमारे यहां विदेशों से आयात हुआ था वहां सन् १९५२-५३ में वह १७६१४ का रह गया और सन् १९५३-५४ में तो केवल ६८२ इंजिन ही विदेशों से आये।

दूसरी पंच वर्षीय योजना में ५० से लेकर १०००० हार्स पॉवर तक के एञ्जिन निर्माण करने वाले कारखानों की स्थापना करना भी शामिल है।

सायकल उद्योग का विकास

भारत में पूर्ण सायकल उद्योग का प्रारम्भ सन् १९३९ से प्रारम्भ हुआ जब कि मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स ने हिन्द सायकल्स लि० की बम्बई में स्थापना की तथा हिन्दुस्तान बाइसिकिल मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि० की पटना में स्थापना हुई।

द्वितीय महायुद्ध के समय में सायकल उद्योग अधिक प्रगति नहीं कर सका। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् इस उद्योग ने तेजी से प्रगति की। इस समय कुल मिलाकर पूर्ण सायकलें बनाने वाले छः कारखाने इस देश में चल रहे हैं। १—मेसर्स हिन्द सायकल्स लि० बम्बई जिसकी उत्पादन क्षमता १००००० सायकल प्रति वर्ष है। (२) मेसर्स हिन्दुस्तान बाइसिकिल मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी लि० पटना, इसकी उत्पादन क्षमता २०००० सायकल प्रतिवर्ष है। (३) टी० आई० साइकल इण्डिया लि० (४) सैन-रेले इण्डस्ट्रीज ऑफ इण्डिया लि० (५) एटलस सायकाल इण्डस्ट्रीज लि० (६) इण्डिया सायकल मैन्युफैक्चरिंग कं० लि०। इनमें से नं० ३ और ४ की कम्पनियाँ विख्यात ब्रिटिश निर्माताओं की है।

साइकलों की माँग अधिकाधिक बढ़ जाने से पुरजों से साइकलों का निर्माण करने वाले कारखानों को स्थापित करने की आवश्यकता भी महसूस हुई। जिसके फल स्वरूप नवम्बर १९५३ से अब तक १२ योजनाओं को स्वीकृति दी जा चुकी है। इन सभी योजनाओं के क्रियान्वित हो जाने पर सब कारखानों की एकसाल की उत्पादन क्षमता बढ़कर ८५०००० साइकलें हो जावेंगी कुछ कारखानों में दो पालियाँ भी चलेंगी इसलिए सब मिलाकर दस लाख साइकलों का वार्षिक उत्पादन होना कठिन न रहेगा।

सायकल उद्योग की प्रगति

वर्ष	कारखानों की संख्या	वार्षिक उत्पादन क्षमता	वास्तविक उत्पादन
१९५१	२	१२००००	११४२७५
१९५२	२	१२००००	१६६९५६
१९५३	६	४१७५००	२६४१६९
१९५३	६	४३७५००	३५००००
१९५५ (जन० जून) छः महीने में	१०	४९२०००	२२१८६४

इनके अतिरिक्त सायकल के पुर्जों का निर्माण करने वाले २३ निर्माता और हैं जो सालभर में एक करोड़ रुपये से अधिक का माल तैयार करते हैं।

कपड़ा उत्पादन मशीनरी

वस्त्र उद्योग हमारा एक बहुत बड़ा उद्योग है। इस लिए मशीन निर्माण करने वाले उद्योगपतियों का ध्यान इस ओर जाना स्वाभाविक ही है। वस्त्र बद्योग की मशीनरी बनाने में इस समय ८ प्रमुख कारखाने लगे हुए हैं।

१—टैक्सटाइल मैशीनरी कारपोरेशन वेलघुरिया (कलकत्ता)

२—टैक्सटाइल मैशीनरी कारपोरेशन गवालियर

३—नेशनल मैशीनरी मैन्यूफेक्चरर्स बम्बई

४—लक्ष्मी रतन इञ्जीनियरिंग वर्क्स बम्बई

५—टैक्स टूल्स कोयम्बटूर

६—मैशीनरी मैन्यूफेक्चरर्स कारपोरेशन कलकत्ता

७—दी मैसूर मशीनरी मैन्युफेक्चरर्स बंगलोर

८—कपूर इञ्जीनियरिंग लि० सतारा

ऊपर की सूचि में वर्णित नं० २ और नं० ८ की फर्में कपड़े बुनने के लूम्स भी तैय्यार करती है।

जूट और चीनी उत्पादन की मशीनरी

जूट उद्योग की मशीनें बनाने का काम मेसर्स ब्रिटानिया इञ्जीनियरिंग वर्क्स कलकत्ता ने प्रारम्भ कर दिया है दो और योजनाओं का कार्य्य भी प्रारम्भ हो रहा है। जूट मिलों की मशीनें बनाने के लिए विख्यात् ब्रिटिश फर्म "जेम्स मैकी एण्ड कम्पनी" ने कलकत्ता में अपना एक नया कारखाना स्थापित किया है जिसमें आधुनिक जूट की मशीनें बनाने के लिए नवीनतम मशीनरी लगाई गई हैं।

चीनी उद्योग की मशीने जैसे रस गरम करने की मशीनें, वैक्यूम पेन, तथा इवैपोरेटर इस समय हमारे देशमें बनाई जाती हैं शेष मशीनों का निर्माण करने की योजनाएं भी चल रही हैं।

चाय उद्योग की मैशीनरी

मेसर्स ब्रिटानिया इञ्जीनियरिंग वर्क्स, कलकत्ता मेसर्स मार्शल एण्ड सन्स गैन्सबरी के सहयोग से चाय की पत्ती तैयार करने की मशीनें तथा चाय उद्योग की अन्य मशीनें बना रहा है। निकट भविष्य में चाय उद्योग की सभी प्रकार की मशीनें यहां बनायी जाने लगे गी जिससे देशके चाय उद्योग की मांग पूरी हो सके।

सिलाई की मशीनें

भारत में सिलाई की मशीनों का उद्योग सन् १६३६ और ३८ के बीच में प्रारम्भ हुआ। जब कि देहली के मशहूर उद्योग पति सर श्रीराम ने कलकत्ते में जय इञ्जीनियरिंग वर्क्स की स्थापना कर "ऊषा" मशीन का उत्पादन किया। साथ ही कलकत्ते के मेसर्स के० सी० मालिक एण्ड सन्स ने भी इस उद्योग का प्रारम्भ किया। १९५१ में जय इञ्जीनियरिंग वर्क्स की उत्पादन क्षमता ३६००० मशीन प्रति वर्ष की थी और मलिक कारखाने की उत्पादन क्षमता १५०० मशीन (पैर की) प्रति वर्ष की थी। ये दोनों ही कारखाने सुइयों को छोड़कर शेष सभी पुरजों का अपने यहां निर्माण करते थे।

युद्ध के पश्चात् दोनों ही कारखानों ने अपना पुनर्गठन किया और इस उद्योग ने बड़ी तेजी से प्रगति की। सन् १६४७ में जहां भारत में सिलाई की ५९०० मशीनें बनती थी वहां १६५४ में सिलाई की ८०००० मशीनों का निर्माण हुआ। जब कि तटकर कमीशन के अनुसार इनकी मांग ७०००० मशीनो की ही है। सन् १९५५ की प्रथम छ:माही में यह उत्पादन ४६४८४ पर पहुँच गया इससे पता चलता है कि १९५५ में पूरे वर्ष का उत्पादन ९०००० तक पहुँच जावेगा।

इनके सिवा दो नये कारखानों को स्थापित करने की योजनाएं स्वीकृत की जा चुकी हैं। इनकी उत्पादन क्षमता ४१००० मशीनें प्रति वर्ष बनाने की होगी।

लालटेन बनाने वाले कारखाने

वर्तमान समय में हमारे यहां १२ बड़े बड़े कारखाने हैं जो व्यवस्थित रूप से लालटेन निर्माण करने में संलग्न हैं जिनकी सम्मिलित उत्पादन सामर्थ्य ४०.५८ लाख लालटेन प्रति वर्ष उत्पादन करने की है। इस उद्योग में ५० लाख रुपये की पूंजी लगी हुई है और ३ हजार श्रमिक काम कर रहे हैं। इनमें से मेसर्स हिन्दुस्तान लैण्टर्न फैक्टरी सहारनपुर और मेसर्स मास प्राडक्ट्स लि० लखनऊ प्रधान हैं। इन दो के अतिरिक्त ५ अन्य प्रतिष्ठान पश्चिमी बंगाल में स्थित हैं। यह उद्योग अच्छी प्रगति कर रहा है। पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत सन् १९५५-५६ ई० के अन्त तक ६० लाख लालटेन प्रतिवर्ष उत्पादन करने की क्षमता हो जानी चाहिए यह स्थिर किया गया है। लालटेन का निर्यात् भी क्रमानुसार बढ़ रहा है। इस उद्योग को भी सरकारी सुरक्षा सहायता सन् १९५४ ई० तक प्राप्त रही।

बाल और रोलर बेयरिंगस निर्माण करने के कारखाने

अनेक प्रकार के इंजिनियरिंग और विद्युत उद्योगों में बाल और रोलर बेयरिंगस की

आवश्यकता पड़ती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व तक भारत इनको विदेशों से आयात कर अपना काम चलाता था। इनका निर्माण स्वदेश में करने के लिये इंग्लैण्ड की एक सुख्यात औद्योगिक फर्म के सहयोग से सन् १९४९ ई० में मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स के द्वारा मेसर्स नेशनल बियरिंग कम्पनी लि० की स्थापना जयपुर में की गयी और सन् १९५० ई० से इसके कारखाने ने उत्पादन आरम्भ किया। इस प्रतिष्ठान में ४० लाख रुपये की पूंजी लगी है और इसके अतिरिक्त ३० लाख रुपये के ऋण की भी व्यवस्था हो चुकी है। यहां ५३० श्रमिक काम करते हैं। सन् १९५१ ई० में इस कारखाने ने २३४५०० बियरिंगस का उत्पादन किया, इस कारखाने की उत्पादन क्षमता ६ लाख बियरिंग वार्षिक उत्पादन की मानी जाती है जब यह कारखाना एक पाली ही काम करता है। प्रथम पञ्चवर्षीय योजना के अन्तर्गत सन् १९५५-५६ ई० के अन्त तक इसका उत्पादन लक्ष्य १२ लाख बियरिंग वार्षिक का स्थिर किया गया है। कारखाने का उत्पादन क्रमशः वृद्धि कर रहा है। सन् १९५३ ई० में इसने ६४८३७० बियरिंग का निर्माण किया था। इस प्रतिष्ठान को सरकारी सुरक्षा सहायता सन १९५४ ई० तक मिल चुकी है। इसकी प्रगति सन्तोषप्रद है।

इलेक्ट्रिक इन्जीनियरिंग मैशीनरी

ड्राय बैटरीज निर्माण—

घरेलू जीवन और सुरक्षा सम्बन्धी सामरिक जीवन में ड्राय बैटारियों का बड़ा उपयोग होता है। फ्लेशलाइट, साइकल लैम्प, रेडियो सेट, टार्च, चिकित्सा सम्बन्धी यंत्र इत्यादि अनेक कार्य्यों में इनका उपयोग होता है।

सबसे पहले सन् १९२६ में हालैण्ड की प्रसिद्ध औद्योगिक फर्म मेसर्स एवररेडी कम्पनी ने कलकत्ते के काशीपुर नामक स्थान में अपना कारखाना खोल कर शुष्क बैटरीं निर्माण का काम भारत में प्रारम्भ किया। सन् १९३६ में अमेरिका की प्रतिष्ठित औद्योगिक फर्म मेसर्स नेशनल कार्बन कम्पनी ने ड्राय बैटरी निर्माण का अपना कारखाना कलकत्ते में खोला।

मेसर्स स्ट्रेला बैटरीज लि० बम्बई पहला भारतीय प्रतिष्ठान है जिसने ड्राइ बैटरीज का उद्योग प्रारम्भ किया। सन् १९४७ में इस उद्योग को गवर्नमेंट का संरक्षण मिला उसके बाद मेसर्स सनबीमो इलेक्ट्रिक इण्डस्ट्रीज लि० बम्बई और मेसर्स सौलर बैटरीज एण्ड फ्लैशलाइट्स लि० बम्बई ये दो नवीन प्रतिष्ठान चालू हुए।

इन सब प्रतिष्ठानों का उत्पादन सामर्थ्य इस समय २२१०.५ लाख शुष्क बैटरी प्रति वर्ष है।

स्टोरेज बैटरी

इस प्रकार की बैटरियों का उपयोग मोटर कारों और वायुयानों में विशेष रूप से होता है। रेडियो सेट भी इनसे चलाये जाते हैं। इस समय १३ कारखाने हमारे देशमें स्टोरेज बैटरीज का उत्पादन कर रहे हैं। सन् १९५०-५१ में ४४५८२०० बैटरियोंका निर्माण हुआ था। पंच वर्षीय योजना के आरम्भ में पांच नवीन कारखाने और काम करने लगे हैं। इनका उत्पादन सामर्थ्य ९९००० बैटरी प्रति वर्ष है।

बिजली के पंखे

बिजली के पंखों का निम्मर्माण करने के लिए हमारे देश में सन् १९२४ में मेसर्स इण्डिया इलेक्ट्रिक वर्क्स की स्थापना कलकत्ते में हुई थी और सन् १९३६ तक करीब ६ कम्पनियां यहां काम करने लगी। जो करीब ४०००० पंखों का उत्पादन हमारे देशमें करने लगी। इस समय हमारे देश में १८

औद्योगिक प्रतिष्ठान बिजलो के पंखें बना रहे हैं। जिनकी उत्पादन क्षमता करीब साढ़े चार लाख पंखे प्रति वर्ष बनाने की है।

बिजली के उद्योग के लिए सन् १९५३ के बजाय सन् १९५४ बहुत महत्व पूर्ण वर्ष रहा है केवल दो चीजों के उत्पादन में (१-नंगे ताम्बे के चालक और घरेलू बरफ़ रखने के बक्स) कमी हुई है और सब चीजों के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई। बिजली की मोटर के उद्योग ने भारी उन्नति की है और १२५ हार्स पॉवर भी स्लीपरिंग टाईप की मोटरें भी अब भारत में बनने लग गई हैं। इसी प्रकार ३००० KVA/33KV के ट्रान्स फ़ार्मर भी बनने लग गये हैं।

इस वर्ष में जो नई बिजली की चीजें उत्पादन की गई हैं उनमें बिजली के बल्बकी पीतल की टोपी और खदान के पीतल की टोपी वाले बल्बों का स्थान प्रमुख है।

सारणी क्रमांक संख्या १

(क) सन् १९५३ और १९५४ में बिजली के इञ्जिनियरिंग उद्योग की औद्योगिक क्षमता और उत्पादन

उद्योग का नाम	हिसाब बतलाने की ईकाइयाँ	१९५३ कारखानों कीसंख्या	उत्पादन क्षमता	वास्तविक उत्पादन	१९५४ कारखानों की संख्या	उत्पादन क्षमता	वास्तविक उत्पादन
(१) केवल और वायर							
(अ) एल्युमिनियमका बिजलीके संचालक	टन	३	६.६२०	३.२८०	३	६.०२०	५.४८१
(ब) ताँबे के नंगे ,,	टन	२	२०.०००	७.३७२	५	२७.८००	७.५७६
(स) रबर से अवरोधित केबल	गज	२	४५	४८.४३	४	८६.८४	६२.७२
(द) लपटने के तार	टन	२	४५०	२२६	२	४५०	३१८.५९
(२) ड्राय सेल	मिलसं०	५	२२१.५	१४८.३९	५	२२१.५	१४८.६५
(३) घरेलू रेफ्रीजरेटर	संख्या	२	३.६००	१.१४३	२	३.६००	१.०१३
(४) बिजली के पंखे	,,	१८	३०३.१००	१९९.४६८	१८	३०३.१००	२३६.७८
(५) बिजली के बल्ब	मिल सं०	११	२९	१९.६७	११	२६	२२.८६
(अ) फ्लोरोसेन्ट ट्यूब	,,	१	४० .०००	१०२.५०८	१	४००.०००	२१४.२५
(६) बिजली की मोटर	हार्सपावर	१२	२००.०३०	१६२.५२५	१२	२००.०००	१८६.६४४
(७) बिजली की इस्पात चद्दरें	टन	१	४.५८०	२.९३६	१	४.५००	४.५१३
(८) चूड़ी के बाजे	संख्या	१	२१.०००	१.४६८	१	२१.०००	४.४५६
(९) घर के लिए मीटर	,,	४	१८५.०००	८०.६७७	४	१८५.०००	१४८.८८२
(१०) गणित के औजार (जामेट्री बॉक्स)	ग्रॉस बॉक्स	५	३७.८००	१०.४१४	५	३७.८००	६.८३४०
(११) पावर ट्रान्स फार्मर	KVA	८	३२८.०००	३०८.०८४	८	३२८.०००	३९८.२२४
(१२) रेडियो रिसीवर	संख्या	१५	१५३.१००	५६.२७०	१५	१५३.१००	५८.६१६
(१३) स्टोरेज बेटरी	,,	१४	३५०.१००	१७५.९९९	१३*	२९०.१००	१८८.४००
(१४) पानी के मीटर	,,	१	१२.०००	६.७०१	१	१२.०००	८.७५५

* जनरल मोटर लि० के बन्द हो जाने से सन् १९५४ में एक कारखाना कम हो गया।

सन् १९५३-५४ में इञ्जिनियरिंग उद्योग की औद्योगिक क्षमता तथा उत्पादन

सारणी क्रमांक संख्या २

(अ) यन्त्र सम्बन्धी इञ्जिनियरिंग उद्योग

उद्योग का नाम	हिसाब बताने की इकाइयाँ	१९५३ कारखानों की संख्या	१९५३ उत्पादन क्षमता	१९५३ वास्तविक उत्पादन	१९५४ कारखानों की संख्या	१९५४ उत्पादन क्षमता	१९५४ वास्तविक उत्पादन
(१)	(२)	(३)	(४)	(५)	(६)	(७)	(८)
कृषि के औजार	टन	६३	२६,२६४	८,०४६	६३	२६,३४८	१२,०१०
बाल बेयरिंग	संख्यामें	१	६००,०००	६४९,१४४	१	६००,०००	७०४,०००
मशीन चलानेके पट्टे	टन	६	१,१२०	७५७	६	१,२२०	८४०
(ब) रबरकी तहट्रान्समिशन एण्ड कन्वेयर	टन	९	७१०	५१९	९	७१०	९९५
सायकलें	सख्यामें	६	४१७,५००	२६४,१६९	६	४३७,५००	३७२,३६५
सायकलों के पूर्जे	रुपयोंमें	२३	आकीनहींगई	९१,१४,५७१	२४	आकीनहीं	११८.८९,३
बोल्ट, नट, रिवेट्स एण्ड डागस्पाइक्स	टन	१५	३३,३५६	१०,४२८	१५	३३३५६	१६,०३४
विल्डिंग्स एण्ड हार्डवेयर फिटिंग्ज	टन	१८	४,८८८	२,०२२	१८	४,८८८	३,२०२
घड़ियाँ	सख्या	४	५१,६३६	९,७०८	४	५,१६३६	७,५००
नालियों के नल	फुट	७	७,५६०,०००	३,७१४,९७१	९	९,६६०,०००	६,६८३,१५
क्राउन कार्क	ग्रॉस	७	३,५५२.०००	१,८६७३,३३	७	३,५५२,०००	२,२११,६
डुप्लीकेटर्स	सख्या	३	४,८००	९२७	३	४,८००	११३२
एक्सपेन्डेड मेटल्स	टन	४	२,९४०	१,६५४	४	२,६४०	२,४४३
लालटेन	संख्या	१३	४,५८२,८००	४,३१२,३८२	१३	४,४८२,८००	४,९८७,०
तेजी से चमकने वाले लैम्प (Incandescent lanp)	संख्या	९	६४,२००	३०,३९२	९	३३,६००	३७,६९४
मशीनों के स्क्रू	ग्रॉस	६	४४४,४००	१६७,७६८	६	४४४,४००	२२८,५०
सीने की मशीनें	संख्या	२	४१,५००	६२,४१९	२	४१,५००	८०,१९४
शैफ्टींग	टन	४	३,५४०	२३०	४	३,५४०	१४०
इस्पात के पट्टे के लेंसिंग	बॉक्स	३	२२८,०००	६७,९३९	३	२२८,०१०	७२,५००
इस्पात का फर्नीचर	टन	१८	३०,९८८	१२,१७५	१९	३०,९८८	१३,९९६
इस्पात के ढांचे (Structure)	टन	७१	१२८,६५२	३१,५१७	७१	१२८,९५२	२८,०७१
स्टोव	संख्या	१०	१४१,०००	४२,९५५	१०	१४१,०००	५७,१६७
छाते की तीली	दर्जनसेट	४	१६५,०००	१५०,९३७	४	३६०,०००	२४६,६४
वेल्डिंग इलक्ट्रोड्स	हजारफुट	३	६१,५००	५५,६००	३	९६,०००	८७,०१६
तार का सामान (अ) जाली	टन	७	१५००	५४६	७	१,५००	७५०
(ब) नेटिंग	टन	३	६८४	२०६	३	६८४	२६०
(स) चेनलिंक फेसिंग	टन	३	६००	१०४	३	६००	११०
लकड़ी के स्क्रू	ग्रोस	१८	४,६३६,१००	२,५७१,७१०	१७	४,४९६,०००	५,०९८,४
जिप फास्टनर	फुट	१	९००,०००	१५९,०७५	२	१,२६०.०००	२४३,००

†एक कारखाना सन् १९५४ में बंद होगया सन् १९५४ में वास्तविक उत्पादन, कई जगह उत्पादन क्षमता से अधिक हु

सारणी क्रमांक संख्या ३

औद्योगिक मशीनें

सन् १९५३-५४ में इञ्जिनियरिंग उद्योग की औद्योगिक क्षमता तथा उत्पादन

उद्योग का नाम	१९५३ कारखानों की संख्या	१९५३ उत्पादन क्षमता	१९५३ वास्तविक उत्पादन	१९५४ कारखानों की संख्या	१९५४ उत्पादन क्षमता	१९५४ वास्तविक उत्पादन
(१) बॉइलर्स—						
(अ) औद्योगिक	१	५०	२	१	५०	७
(ब) लोकोमोटिव्स	१	६६	५३	१	९६	९५
वस्त्र उद्योग की मशीनें—						
(२) ब्लीचिंग, डाईंग प्रिन्टिंग फरनेसस	५	१,१३१	१४९	५	१,१३१	३६२
(३) कार्डिङ्ग इञ्जिन्स	१	६००	१९२	१	६००	४३६
(४) ड्रा फ्रेमस	१	१२	५	१	१२	१७
(५) फ्लाय फ्रेम्स	१	२४	१४	१	२४	१३
(६) लूम्स	३	४,२००	२,०८६	३	४.२००	१,९७०
(७) रिंग फ्रेम्स	२	३९६	२००	३	६६६	३५८
(८) पोर्टेबल एयर कंडिशनर	३	७००	३७५	४	१,५५०	१०,५० (अनुमानित)

सारणी क्रमांक संख्या ४

सन् १९५३—५४ में इञ्जिनियरिंग उद्योग की औद्योगिक क्षमता तथा उत्पादन

(स) कल पुर्जे

उद्योग का नाम	हिसाब बतलाने की ईकाइयाँ	१९५३ कारखानों की संख्या	१९५३ उत्पादन क्षमता	१९५३ वास्तविक उत्पादन	१९५४ कारखानों की संख्या	१९५४ उत्पादन क्षमता	१९५४ वास्तविक उत्पादन
(१) कोटेड एब्रेसिव (परत चढ़े हुए घिसने के कागज)	रीम	४	८०,०००	६१,०२२	४	८०,०००	७०,५७३
(२) ग्राइंडिगव्हील	टन	१	५००	३६१	१	५३५	५०६
(३) मशीनो के औजार	रुपये	१६	१३६ करोड़	४४.१ लाख	१६	१.३६ करोड़	५० लाख
(४) सुईयां—							
(अ) होइजरी नीटिंग	मिल की सं०	२	३.९६	०.२	१	३	०.९४
(ब) चूडी का बाजा	,,	१	४६०	१२५.५५	१	९००	१८६.०८
(५) रेभ्रर पत्ती	,,	५	२००	२३.१	५	२७२	१३१.३८
(६) छोटे पुर्जे और हाथ के पुर्जे बरमे, टेप्स, रीमरस, रेती और मिलिंग कटरस)	,,	८	२.७५	०.५३	९	२.७५	१.१३

सारणी क्रमांक संख्या ५

सन् १९५३-५४ की इंजिनियरिंग उद्योग की औद्योगिक क्षमता तथा उत्पादन

(द) मोटर तथा उसके सहायक उद्योग

उद्योग का नाम	१९५३ कारखानों की संख्या	उत्पादन क्षमता संख्या	वास्तविक उत्पादन संख्या	१९५४ कारखानों की संख्या	उत्पादन क्षमता संख्या	वास्तविक उत्पादन संख्या
(१ मोटरें (ऑटो मोबाइल)	१२	८४,०१४*	१३,९२६	९i	४०,०००†	१४,४६२
(२) सीलिन्डर लाइनर	१	१,२०,०००*	१७,३१८	१	१,२०,०००*	२३,८५६
(३) पिस्टन रिंगज	१	१२,००,०००*	१३,७६,३३३	१	१२,००,०००*	१५,७५,६६८
(४) पिस्टन्स	१	३,००,०००*	६५,४९७	१	३,००,००००*	१,१४,२२३
(५) स्पार्किंग प्लगस	१	३,००,०००	२४,१०८	१	३,००,०००	१,१२,५९३

सारणी क्रमांक संख्या ६

सन् १९५३-५४ की इंजिनियरिंग उद्योग की औद्योगिक क्षमता तथा उत्पादन

(इ) डीजल इंजन पम्पिंग सेट और सहायक उद्योग

उद्योग का नाम	१९५३ कारखानों की संख्या	उत्पादन क्षमता	वास्तविक उत्पादन	१९५४ कारखानों की संकया	उत्पादन क्षमता	वास्तविक उत्पादन	विशेष कथन
(१) डीजलइंजिन	८	१३,१६५	३,७१६	११	१४,५१५	८,६५४*	यह कारखाना जून
(२)फ्युअलइंजेक्शन इक्वियमेंट		....	...				सन् १९५४ से
(अ) पम्प †	....	..	...	१	४,५००	३,६३८	उत्पादन करने
(ब) नॉझल होल्डर	...	...	....	१	४,५००	३,८१३	लगा।
(६)शक्तिसे चालक पम्प	२४	६०,२००	२५,२७१	२५	६१,४००	२८,६१७	.

* तारीफ समिति के द्वारा आँकी हुई उत्पादन क्षमता

† छः फर्मों की उत्पादन क्षमता जिनकी कि मोटरों सम्बन्ध में उन्नतिशील उत्पादन की योजना भारत सरकार के द्वारा स्वीकृत की गई

i इसमें ऐसे भी व्यक्ति हैं जो कि तारीफ कमीशन की ऑटोमो बॉइल उद्योग के ऊपर की गई सिफारिशों के स्वीकार होते हुए मोटर वे ही कल की असेम्बली में जाना बंद कर देगें।

सारणी क्रमांक संख्या ७

सन् १९५३-५४ में इञ्जिनियरिंग उद्योग की औद्योगिक क्षमता तथा उत्पादन

(य) धातु सम्बन्धी उद्योग

उद्योग का नाम	१९५३ कारखानों की संख्या	उत्पादन क्षमता (टन)	वास्तविक उत्पादन (टन)	१९५४ कारखानों की संख्या	उत्पादन क्षमता (टन)	वास्तविक उत्पादन (टन)
(अ) शुद्ध धातुएं						
(१) एल्युमिनियम	२	४०,००	३,७५८.७५	२	७,०००	४,८८५.६५
(२) ताँबा	१	७.२००	४,१२०	१	७,२००	७,१६१
(३) सीसा	१	६०००	१६१४	१	६,०००	१,७८७
(४) सुरमा (एन्टं मनी)	१	७००	१३०.१५	१	७००	५३९.०५
(ब) आंशीक उत्पादन						
(१) एल्युमिनियम की चद्दरें	९	८,२००	५,२६३.०८	११–९.५६०		७,६१६.४६
(२) एल्युमिनियम का वर्क	१	१,२००	५४०.८२	१	१,२००	६४५.५
(३) पीतल।तांवे की चद्दरें*	१९	५२,३००	११,६७६	१८	४७,०००	१७,३७४
(४) पीतल।तांवे की छड़ तथा आर्सेनिक–तांवे की छड़ तथा पट्टे इत्यादि	५	५,४७७	५४०.४१	५	५,४७७	१,३७१.३१
(५) पीतल।तांवे के नल तथा ट्यूब	१	३६०	४६.३५	१	३६०	२०.५५
(६) पीतल।तांवे के तार-बिजली के अलावा काम में आने योग्य	४	१९,५८	२४५.६१	४	१,६५८	३३२,२३
(७) इलक्ट्रोलाइटिक तांवेकी काली छड़	१	२४,०००	३,३६४,२५	कारखाना नॉन फेरस से फेरस की ओर परिवर्तित कर दिया गया है।		
(८ सीसे की चद्दरें	२	२,८००	७८.२५	१	१,०९२	८७.७५
(९) सीसे के नल तथा ट्यूब	३	४,८००	३१०.४१	३	४.८००	१६५,४४
(१०) जस्ते की चद्दरें तथा पत्तियें	३	४,४१०	७७,४५	३	४,४१०	४५.६५
(स) नॉन फेरस मिश्रण जैसे बेल मेटल, व्हाइट मेटल, कांसा, गन मेटल, सोल्डर, टाइप मेटल, इत्यादि इत्यादि	१५–६६,०००		६,१०४.८०	१५	६६,०००	१०,९५२
(द) इस्पात कास्टिंग्ज़	९†	२१,०००	१०,३२७·१२	८–२१,०००		१२,८७५‡

† सन् १९५३ में टाटा का नाम कारखानों में जोड़ दिया गया था, मगर उसकी उत्पादन-क्षमता नहीं जोड़ी गई थी। इस लिए कारखानों की वास्तविक संख्या ८ है जिनकी कि टाटा को छोड़कर कुल उत्पादन-क्षमता २१००० टन है।

* यद्यपि कारखानों की संख्या उतनी ही थी तो भी उत्पादन-क्षमता ने कमी बताई जो कि दो नये कारखानों को जोड़ने से जिनकी उत्पादन क्षमता कम थी बजाय दो उन दो कारखानों के जिनकी उत्पादन क्षमता अधिक थी उन्होंने सब प्रयत्नों के बाद बावजूद भी कोई रिपोर्ट नहीं भेजी। इस वजह से क्षमता कम हो गई।   ‡ अनुमानित

धातु सम्बन्धी उद्योग

गत वर्ष में धातु सम्बन्धी उद्योगों ने भी उत्पादन का सन्तोषप्रद रेकार्ड रक्खा। सारणी क्रमांक संख्या ७ से ज्ञात होगा कि १३ खास चीजों के उद्योगों ने उत्पादन में वृद्धि की है तथा केवल तीन चीजों के उद्योग ने उत्पादन में कमी का अनुभव किया है।

सुरमे(Antimony) का उत्पादन सन् १९५३ के उत्पादन से सन् १९५४ में चौगुना हो गया है और इस उद्योग को तारीफ (कर) की रक्षा दी गई थी। उसकी मियाद ३१ दिसम्बर सन् १९५६ तक बढ़ा दी है।

एल्युमिनियम के सम्बन्ध में ठोस धातु का उत्पादन गत वर्ष में ४००० टन से ७००० टन हो गया है और दूसरे एल्युमिनियम का उत्पादन ५५०० टन से बढ़ गया है। हवाई जहाजों के योग्य मिश्रित धातु तथा एल्युमिनियम के तार ए० सी० एस० आर० के लिए इस देश में सर्व प्रथम उत्पादित किये गये हैं। गत वर्ष में प्रेस में कुछ विभागों जैसे नल, ट्यूब, छड़े इत्यादि के लिये विस्तार किया है और अगले वर्ष में तार की छड़ों के उत्पादन के लिए नई मशीनें लगाई जावेगीं ऐसी पूर्ण रूप से आशा की जाती है।

सीसे को शुद्ध करने के उद्योग में लगभग १५०० टन प्रति वर्ष से वृद्धि करने के लिये आगे कदम बढ़ाया गया है। गत वर्ष जस्ते की रोलिंग मिल खोलने की योजना, जिसकी कि वार्षिक उत्पादन क्षमता २००० टन की हो, को स्वीकृति दी गई थी।

इस्पात को ढालने के उद्योग ने अपनी वर्तमान की उत्पादन क्षमता को २००० टन से बढ़ाकर ४००० टन वार्षिक करने के लिये एक योजना बनाई और उसमें आगे १५०८० टन तक वृद्धि करने का विचार किया।

फेरो मेगनीज

गत वर्ष धातु सम्बन्धी उद्योग में फेरो मेगनीज के विषय में छः नई योजनायें स्वीकार करके उसकी वार्षिक उत्पादन मात्रा बढ़ाकर लगभग १०६,००० टन कर देने से इस क्षेत्र में बहुत ही महत्त्वपूर्ण विकास हुआ है। भिन्न भिन्न भाँति के इस्पात के उत्पादन के लिये फेरो मेगनीज एक बहुत ही महत्व पूर्ण मिश्रित धातु है। वर्त्तमान में भारत की उच्च दर्जे की मेगनीज की धातु विदेशों को निर्यात् की जाती है जहाँ से कि वह फेरो मेगनीज बनकर आता है

भारत का फेरो मेगनीज का इस समय का उत्पादन १७००० टन है जो कि यहाँ की जरूरतों को पूरा करने के लिये पर्याप्त है। फेरो मेगनीज का विदेशों में बहुत अच्छा बाजार है, इस लिये वाणिज्य तथा उद्योग का मंत्रालय ऐसे तरीकों को खोज रहा है जिससे कि कच्चे मेगनीज के बजाय फेरो मेगनीज का निर्यात किया जा सके। इस उद्योग के प्रतिनिधियों के साथ की गई बहस के परिणाम स्वरूप वाणिज्य तथा उद्योग का मंत्रालय कम से कम छः उद्योग पतियों का प्राइवेट विभाग मे पीछा करने में समर्थ हो चुका है जिससे कि इस महत्त्वपूर्ण मिश्रित धातु का उत्पादन बढ़ाया जा सके। उनकी योजनाएं अगले दो वर्षों में फेरो मेगनीज के उत्पादन में परिवर्तित कर दी जावेगी, ऐसी आशा की जाती है।

भारत में एल्युमिनियम का उद्योग

समय को दृष्टि में रखते हुए एल्युमिनियम के उद्योग का इतिहास बहुत ही नया है। यह धातु केवल १०० वर्ष पुरानी है। जो कुछ भी घटनाएं इस उद्योग पर गुजरी हैं वे सब याददाश्त में आसानी से रखी जा सकती हैं। तुलनात्मक दृष्टि से इस धातु की कम उम्र होते हुए भी आज यह समस्त विश्व में नॉन फेरस (Non ferrous) धातुओं मे प्रधान धातु है। सन् १९०५ में जब कि इस धातु का उत्पादन केवल १२००० टन प्रति वर्ष का ही था, वह एक दम बढ़ कर सन् १९५३ तक २७.५ लाख टन प्रति वर्ष का हो गया। इस धातु के उत्पादन में नियमित वृद्धि तथा उन्नति इसकी सब धातुओं के साथ मिलने के अपवादित गुण के कारण हुई। हलकापन, मिश्रण की मजबूती, विद्युत का अच्छा चालक, सरलता से काम में लेना तथा सस्तापन—ये सब इसकी अधिक बिक्री के कारण हैं:

बौक्साइट (Bawsite) का स्थायी कोष:—यद्यपि एल्युमिनियन के उत्पादन के लिए कच्ची धातु बौक्साइट है फिर भी बिजली का होना भी उतना ही आवश्यक है। बौक्साइट, जो कि इस देश में प्रचुरता से मिलता है वह वह हाइड्रेटेड एल्युमिनियन आक्साइड तथा दूसरी धातुओं का मिश्रण होता है। इस धातु का उत्पादन करने में सबसे पहले कच्ची धातु को शुद्ध किया जाता है तथा फिर बाद में शुद्ध एल्युमिनियन आक्साइड को अलग किया जाता है। इसके पश्चात् बिजली से एल्युमिनियम तैय्यार किया जाता है। प्रत्येक पौंड धातु को तैय्यार करने में दस यूनिट बिजली की आवश्यकता होती है। इसलिए एल्युमिनियम के उद्योग के विस्तार करने के प्रश्न का वास्तविक तात्पर्य्य तो यह होगा हमको उपलब्ध बिजली की शक्ति में वृद्धि करना होगी।

भारत वर्ष में बौक्साइट, जो कि एल्युमिनियन को उत्पादन करने की प्रधान धातु है, का कुल अनुमानित कोष २५०० लाख टन हैं जिनमें से केवल ८८० लाख टन धातु ही इसके उत्पादन करने में काम में आ सकती है याने अगर ५०००० टन एल्युमिनियम प्रति वर्ष तैयार किया जाय तो १०० वर्ष में समस्त कोष समाप्त हो जावेगा।

भारत में एल्युमिनियम का उत्पादन

भारत में एल्युमिनियम के सर्व प्रथम उत्पादक 'इन्डियन एल्युमिनियम कम्पनी लिमिटेड' थी। इस कम्पनी का प्रधान कार्य (१) बिहार की खदानों बौक्साइट निकालना, (२) मुरी बिहार के कारखा ने बौक्साइट से एल्युमिना तैय्यार करना, (३) त्रावनकोर-कोचीन में एल्युमिमा से एल्युमिनियम की धातु तैय्यार करना, (४) पश्चिमी बंगाल में इस धातु की चद्दरें तैयार करना तथा (५) बम्बई में इस धातु का चूर्ण तथा पेन्ट तैय्यार करना था। इस कम्पनी ने सन् १९४१ में अपना काम विदेशी एल्युमिनियम के टुकड़ों से चद्दरें तैयार करके चालू किया था। सन् १९४३ में इस कम्पनी ने विदेशी एल्युमिना से एल्यु मिनियम की धातु तैयार करने का काम चालू किया था तथा सन् १९४८ से यह कम्पनी देशी बौक्साइट से ही एल्युमिनियम तैयार करने लग गई है। इस कम्पनी के अधिकार में रांची जिले में पाँच खदानें हैं जिनमें कि लगभग ६३ लाख टन बौक्साइट निकलने का अनुमान किया जाता है। सके अलावा बम्बई प्रान्त के बेलगाम नगर की खदानें भी इसी के अधीन है जिनमें १८ लाख टन बौक्साइट का अनुमान किया जाता है। इस कम्पनी को एक १०००० टन की क्षमता वाला धातु गलाने वाले कारखाने का लाइसेंस मिल गया है तथा जैसे ही हीराकुण्ड बाँध से विद्युत् शक्ति उपलब्ध होने लगी कि यह कार्य करने लग जावेगा।

इसके अतिरिक्त एक और कम्पनी एल्युमिनियम का उत्पादन कर रही हैं वह है एल्युमिनियम कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड" जो कि सम्पूर्णतया भारतीयों के अधिकार में है और जिसका कि शिलान्यास सन् १९३६ में किया गया था। इस कार्पोरेशन की खदानें लोहारडागा (विहार) रेलवे स्टेशन से २० मील दूरी पर स्थित है। इस कम्पनी की मध्य-प्रदेश में भी खदानें हैं। इस कम्पनी की कार्य क्षमता ५००० टन की है मगर सबसे अधिक उत्पादन अभी तक ३००० टन तक पहुँचा है।

इण्डियन एल्युमिनियम कम्पनी लिमिटेड और एल्युमिनियम कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया दोनों के पास अपने चद्दर बनाने के मिल हैं। दोनों मिलों की वर्तमान उत्पादन क्षमता क्रमशः ७००० टन और ३००० टन प्रति वर्ष की है।

देश तथा विदेश के एल्युमिनियम का उपयोग करने वाले बरतनों के भी कई कारखाने हैं। सन् १९५२ तक इस उद्योग की मांग ८००० टनसे १०००० टन प्रति वर्ष तक की रही थी परन्तु हाल ही के कुछ वर्षों से विदेशों में इसके बरतनों की खपत कम होने से इसकी मांग में कमी आ गई है। जीवनलाल (१९२९) लिमिटेड और एल्युमिनियम मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड, इस धातु के बरतन बनाने के मुख्य कारखाने हैं इनके अतिरिक्त कितने ही छोटे २ कारखाने हैं।

हाल ही के कुछ चन्द वर्षों में विजली का सामान तैयार करने वाले उद्योगों ने विजली के चालकों की आवश्यकता को पूरा करने के लिये इस धातु की ओर मुख मोड़ा है। एल्युमिनियम को उपयोगिता चालकों के उत्पादन के लिए बहुत है। इसलिए दूरदर्शिता इसी में है कि विजली के चालकों के लिये विदेशी तांबा मंगवाने के बजाय जिसमें कि हमारे धन की क्षति होती है, हमारे देशी एल्युमिनियम के उद्योग को प्रोत्साहित करना चाहिये जिससे कि यह उद्योग देश में विद्युतीकरण की योजना को सफल बनाने में अपना योग दे सके।

देश में एल्युमिनियम के चालक का उत्पादन करनेवाला कारखाना त्रावणकोर कोचीन में एल्युमिनियम इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के नाम से प्रसिद्ध है और सन् १९५० से कार्य कर रहा है। इस कम्पनी की चालकों को उत्पादन करने की क्षमता ७००० टन प्रति वर्ष की है। एक एल्युमिनियम की छड़ें (Rod) बनाने वाला मिल भी लगाया गया है जिसकी कि उत्पादन क्षमता ६००० टन प्रति वर्ष की है और जो कि इस तरह का समस्त एशिया में एक ही कारखाना है और समस्त संसार में इस तरह के इने गिने मिलों में से एक है।

अन्य कम्पनियां जो कि एल्युमिनियम के चालकों का उत्पादन करने में व्यस्त हैं वे इस प्रकार हैं—

(१) इण्डियन केबल कम्पनी लिमिटेड टाटा नगर, (२) दी नेशनल इन्स्युलेटेड केबल कम्पनी ऑफ इण्डिया लिमिटेड शामनगर (३) दी इलेक्ट्रीकल मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता, और (४) दी हिन्दुस्थान कन्डक्टरस लिमिटेड, फरीदाबाद। इन भिन्न २ कारखानों के होने से यह आशा की जाती है कि एल्युमिनियम के चालकों की आवश्यकता पूरी की जा सकेगी।

यह स्मरण रखना चाहिये कि योजना बनाने वाली समिति के सन् १९५५-५६ के ८००० टन A.C.S.R. के तारों की प्रति वर्ष की खपत के अनुमान में पहले से वृद्धि होगई है और इसकी माँग सम्भवतथा १२००० या १३००० टन तक पहुच जावेगी।

अन्य क्षेत्रः—एल्युनियम के सामानों के अन्य क्षेत्रों में, जैसे इसके वर्क (Foils) और चूर्ण और पेस्ट (Paste) बनाने में मेसर्स वेनेस्टा लिमिटेड कलकत्ता और इण्डियन एल्युमिनियम कम्पनी

प्रधान स्थान रखते हैं। इण्डियन एल्युमिनियम कम्पनी लिमिटेडका आलपेस्ट (Alpaste) का कारखाना बम्बई में स्थित है। जिसकी कि ३०० टन प्रति वर्षकी उत्पादन क्षमता है मगर यह इस समय २०० टन प्रति वर्ष का उत्पादन कर रहा है। यहाँ पर एल्युमिनियम केपस्युल्स लिमिटेड का उल्लेख कर देना भी आवश्यक है जो कि केपस्युल का उत्पादन करता है। इस कम्पनी की ५०० लाख केपस्युल प्रति वर्ष की उत्पादन क्षमता है। भारत की "दी मेटल बाक्स कम्पनी कलकत्ता" ने हाल ही में बड़े पैमाने पर औषधियों तथा टूथ पेस्ट के लिये ट्यूबस का उत्पादन करना प्रारंभ कर दिया है।

एल्यूमिनियम पर सुनहला रंग

हाल ही में चमकदार सुनहले रंग की अल्यूमीनियम उतार चढ़ाव के सुनहले रंगों में बनाने की विधि प्रगट हुई है। यह सुनहला रंग बिना किसी रंग अथवा अन्य धातु के योग से अल्यूमोनियम में बनाया गया है। विभिन्न उतार चढ़ाव वाले सुनहले रंग इस पद्धति से प्राप्त करना अब सम्भव हो गया है इस प्रकार की एक पद्धति का जिसके द्वारा डूबते सूरज का सुनहला रंग बन रहा है। केलोकोर्निया की कैसर अल्यूमोनियम और केमिकल कारपरेशन द्वारा प्रगट किया है। इस कम्पनी द्वारा इस रंग में उत्पादित अल्यूमोनियम की अच्छी उपयोगिता भी प्रगट हो रही है। यह सुनहली अल्यूमोनियम विभिन्न इमारतों, कारों, मोटरों की बाडा, फरनीचर और घरेलू सामान के बनाने में बड़ी ही उपयुक्त मानी जा रही है। यह धातु शीघ्र ही चादरों के रूप में बिकने लगेगी। अन्य रूप में भी इस प्रकार की अल्यूयोनियम उत्पादित करने के अनुसंधान किए जा रहे हैं।

सन् १९५० से सन् १९५४ तक भारत में एल्युमिनियम का अनुमानित उत्पादन आयात तथा खपत।

[Long tons]

	उत्पादन		आयात		कुल अनुमानित
वर्ष	प्रधात	अप्रधान	प्रधान	कच्चा माल	खपत
१९५०	३,५९६	९८०	१,६१०	७,३००	१४,३६७
१९५१	३,८४८	९८०	३,२३८	९,४८२	१७,३३६
१९५२	३,५६६	१,९६८	१,४३२	८,०९६	१५,०११
१९५३	३,७५८	१,८९९	६०२	८,८१२	१२,२८७
१९५४	४,८८६	२,४५२	२,०९७	८,३२४	१८,७८१

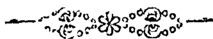
भारत में एल्युमिनियम का उत्पादन

वर्ष				टनों में उत्पादन
१९४८	...	....	....	३,३६१
१९४९	....	....	....	३,४६०
१९५०	....	....	....	३,५९६
१९५१	....	....	...	३,८४८
१९५२	....	....	....	३,५६६
१९५३	....	....	....	३,७५८
१९५४	....	....	....	४,८८६

—*—✿—*—

भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



भारत में सीमेंट और कागज उद्योग का विकास



Development of Cement & Paper Industries in India

भारत का सीमेंट उद्योग

भारत वर्ष में सर्व प्रथम सन् १९०४ में सीमेंट का कारखाना मद्रास में प्रारम्भ किया गया। परन्तु यह कुछ ही समय के पश्चात् बंद हो गया। सन् १९१४ से सीमेंट का उत्पादन विशाल पैमाने पर होने लगा। प्रथम विश्व युद्ध ने इस उद्योग को बहुत प्रोत्साहन दिया। सन् १९२४ में कारखानों की संख्या दस तक पहुंच गई जिनकी कि उत्पादन क्षमता ५.८१ लाख टन थी। सन् १९३० में सीमेंट मार्केटिंग कं०" की स्थापना की गई जो कि लगभग सब कारखानों के निर्धारित कोटा के आधार पर सीमेंट की बिक्री तथा विभाजन का कार्य करती थी। सन् १९३६ में एक कम्पनी को छोड़कर सब कम्पनियों को इसमें सम्मिलित कर लिया गया। द्वितीय विश्व युद्ध के समय में भारत सरकार के हाथों में इस उद्योग के विकास का तथा नये कारखानों को खोलने का कार्य लिया गया। सन् १९४५ के अन्त में सीमेंट का कुल उत्पादन २६.१५ लाख टन था जो कि बढ़ कर सन् १९५२ में ४१.२५ लाख टन हो गया। सन् १९५१ में इस उद्योग पर ५९ करोड़ रुपयों की पूंजी लगी हुई थी। सन् १९५४ के अन्त में सीमेंट का उत्पादन ४५ लाख टन हो गया। सन् १९५५-५६ का उत्पादन लक्ष्य ४८ लाख टन किया गया तथा सन् १९५६-५७ में यह बढ़कर ६५ लाख टन हो जावेगा ऐसी आशा की जाती है। और द्वितीय पंच वर्षिय योजना के अनुसार इसके उत्पादन का लक्ष्य १०० लाख टन का है।

सीमेंट के उत्पादन के लिये विशेष रूप से चूने के पत्थर तथा कोयले की आवश्कता होती है। जिसमें से अच्छी जाति का चूने का पत्थर तो कई स्थानों से मँगवाया जाता है। इस लिये सीमेंट के कारखाने के लिये उपयुक्त स्थान चुनने के लिये अन्य बातों के साथ इस बात पर भी ध्यान देना पड़ता है कि चूने का पत्थर तथा कोयला मगवाने में और तैयार सीमेंट को ग्राहकों के पास भेजने में यातायात के साधनों पर क्या खर्च लगता है। दक्षिण भारत के मौजूदा कारखाने कोयले की खदानों से बहुत दूर हैं इस लिये वे केवल अधिक रेलवे किराये से ही परेशान नहीं हैं बल्कि यातायात के साधनों की कमी से भी बहुत परेशान हैं। इस लिये दक्षिण भारत में आर्काट जिले में पाये गये लिगनाइट (Lignite) पर जो अन्वेषण हो रहे हैं उनके परिणामों के लिए उत्पादक तथा सीमेंट कन्सनर्स बहुत ही उत्सुकता से इन्तजार कर रहे हैं।

भारत में जल्दी कठोर होने वाली तथा साधारण पोर्टलैंड (Port land) सीमेंट का उत्पादन किया जाता है जिस जाति की यहां पर सीमेंट बनाई जाती है वह बहुत से विदेशों से ऊंचे दर्जे की तथा बढ़िया होती है। अन्य प्रकार की जैसे कम ताप की [Low heat], बड़े भट्टों की [Blast Furnace] सल्फेट की रोक करने वाली (Sulphate resistant) और रंगीन सीमेंट यहां पर विशाल पैमाने पर नहीं तैय्यार की जाती है।

नये कारखाने की स्थापना लड़ाईके कारण बहुत ही मंहगे समय में हुई। पुराने कारखानों के मुकाबले इन पर तिगुना रुपया लगा। ये कारखाने स्थापना की तारीख से अभी तक लाभ का हिस्सा (Dividands) नहीं दे सके हैं। नये तथा पुराने कारखानों से उत्पादित सीमेंट की कीमतों में निश्चित ही अन्तर होगा जब तक कि एक साझे में "मार्केटिंग संगठन" सीमेंट की बिक्री के लिए स्थापित न किया जाय जो कि भिन्न भिन्न कारखानों को भिन्न २ रिटेन्शन प्राइस दे। तारीफ कमीशन की सिफारिशों पर विचार विमर्श

करने के पश्चात् भारत सरकार ने पूंजी पर ८% लाभ (Return) निर्धारित कियाहै। विदेशों में सीमेंट के उद्योग पर जो लाभ मिलता है वह उसके समतुल्य नहीं है।

भारत में भिन्न २ कारखानों में जो सीमेंट उत्पादित की जाती है वह कितने व्यवसायियों के द्वारा उनकी खुद की भिन्न २ एजेन्सियों से ग्राहकों को वेची जाती है उन मूल्यों पर जो कि भारत सरकार के द्वारा प्रत्येक कारखाने के लिये निर्धारित किये हुए हैं। इस प्रकार की व्यवस्था भिन्न २ स्थानों पर भावों में अन्तर पैदा करने को अग्रसर करती है। समस्त भारत में सीमेंट के विभाजन के लिये एक एकता होने से इस प्रकार के भावों के अन्तर को मिटाया जा सकता है। बिक्री की कितनी ही एजेंसियाँ होने से बहुत बहुत माल इधर का उधर और उधर का इधर भेजा जाता है। इस प्रकार की एक एजेंसी की स्थापना सीमेंट के विभाजन को सरल कर देगी तथा जो सीमेंट व्यर्थ ही इधर का उधर जाता था उसकी जगह दूसरा माल भेजा जा सकेगा।

भूतकाल में भी देश में सीमेंट के विभाजन के लिये एक संगठन स्थापित करने का प्रयत्न किया गया था मगर उसमें सफलता नहीं मिली। इस प्रकार के संगठन को स्थापित करना हमारे खयाल से अलंघनीय नहीं है। प्रत्येक उत्पादन की ओर से कुछ त्याग किया जाय तो ऐसा साझे का संगठन बहुत ही सरलता से प्राप्त किया जा सकता है। अभी भी समय है कि सरकार तथा उद्योगपति दोनों ही ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर एक बार ध्यान दें।

युद्ध के समय में देश में सीमेंट की बहुत कमी महसूस हो रही थी, कहने का मतलब यह कि एक प्रकार से देश सीमेंट के लिये भूखों मर रहा था। केन्द्रीय सरकार तथा कई रियासतों को अपनी योजनाओं को तथा जनता के निर्माण के कार्य को सीमेंट के अभाव में स्थगित करना पड़े। आने वाले समय में सीमेंट की मांग और भी बढ़ जावेगी। सीमेंट की प्रति मनुष्य खपत लोहे तथा इस्पात की खपत की तरह राष्ट्र की बढ़ती हुई उन्नति का द्योतक है। सीमेंट के कितने ही उपयोगों को ध्यान में रखते हुए, इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है कि योजना बनाने वाली समिति ने १०० लाख टन सीमेंट का लक्ष्य ठीक ही निर्धारित किया है।

सीमेंट के लिये विदेशी बाजार

यह केवल मनोकामना ही नहीं है बल्कि यह आवश्यकता है कि सीमेंट के निर्यात के लिये अभी से कदम बढ़ाना चाहिये तथा उसके लिये पृष्ठ भूमि तैय्यार करना चाहिए। भारत में इस उद्योग के पैर अब अच्छी तरह जम गये हैं। यहां पर कच्चा माल बहुतायत से प्राप्त किया जा सकता है, यांत्रिक ज्ञान बहुत प्राप्त किया जा चुका है और यहां पर जो सीमेंट बनती है जैसा ऊपर कहा जा चुका है वह विदेशों से बढ़िया होती हैं। जागरूकता एवं स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के कारण भारत के ईर्द गिर्द का प्रत्येक देश अपने राष्ट्र के निर्माण तथा पुर्न निर्माण के कार्यक्रम बना रहा है जिसके लिये सीमेंट की बहुत आवश्यकता होती है। भारत और फारस की खाड़ी के ईर्द गिर्द के देशों को अपनी खुद की आवश्यकता के लिए सीमेंट का आयात करना अत्यन्त आवश्यक है इस माने में भारत बहुत ही मोर्चे के स्थान पर स्थित है और इस लिये सीमेंट को प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले में सस्ती दर से दे सकता है।

विदेशी बाजारों को बढ़ाया जा सकता है तथा स्थायी रूपसे रोका जा सकता है अगर यह उद्योग कम से कम निर्यात के लिए एक साझे का धन्धा करने के लिये अपने आपको तैयार कर ले। विदेशी व्यापार में सफलता पूर्वक वृद्धि सब उद्योगपतियों के संगठित प्रयास से की जा सकती है। कोई कारण नजर नहीं आता कि क्यों न सब उद्योगपति समझौता करके प्रत्येक कारखाने के माल का कुछ प्रति शत हिस्सा विदेश को भेजा करें। यह आशा की जाती है कि यह उद्योग न केवल उनके स्वार्थ के लिये ही इस प्रश्न पर

विचार करें बल्कि राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था को भी ध्यान में रखकर इसपर ध्यान दें। हमारे खयाल से यह विषय ऐसा है जिसपर सरकार सहानुभूति पूर्ण रुख रखकर प्रत्येक मुद्दे पर गहराई से विचार करेगी।

सीमेंट का उद्योग एक ऐसा उद्योग है जहां पर मजदूरों तथा व्यवस्थापकों के आपस में सम्बन्ध अच्छे हैं। मजदूरी निर्धारित करने के लिए केन्द्रीय सभा (Central Boad) को स्थापित करना इस दिशा में सही कदम है और इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं हो सकती अगर मजदूरी उत्पादनके साथ सम्बन्धित करके निधारित कर दी जावे।

सीमेंट के कारखाने सारे भारत वर्ष में फैले हुए हैं। सीमेंट के उद्योग में मजदूरों के विषय में ऐसी कोई विशेष बात नहीं है जैसा कि दूसरे उद्योगों में स्पष्ट है सिवाय कुछ विभागों को छोड़कर। किसी भी प्रकार से मजदूरों की इस उद्योग में मजदूरी निर्धारित करना निश्चित ही दूसरे उद्योग के मजदूरों की मजदूरी पर उसका प्रभाव डालेगी।

भारत में सीमेंट का उत्पादन तथा आयात

वर्ष	उत्पादन टन	आयात टन
१९४८-४९	१६०५३००	१४६७००
१९४९-५०	२२६७६००	३४०४००
१९५०-५१	२६९१५००	१८६००
१९५१-५२	३२९२४००	१२९००
१९५२-५३	३५७६८००	१२६००
१९५३-५४	३६५७२००	१३००
१९५४-५५	४४१९६००	....

सीमेंट कंपनियों

१—काडंमम मार्केटिंग कंपनी (ट्रावंकोर) लिमिटेड कोट्टायाम, ट्रावंकोर कोचीन स्टेट
२—आँध्र सीमेंट को०, लिमिटेड विजगापट्टम
३—आसाम-बंगाल सीमेंट को० लिमिटेड, कलकत्ता
४—एसोशियेटेड कंपनीज, लिमिटेड बंबई
५ बागलकोट सीमेंट कम्पनी, लिमिटेड बंबई
६—बर्मा सीमेंट कंपनी, लिमिटेड, बर्मा
७—डालमिया सीमेंट को०, लिमिटेड, बिहार
८—डालमिया सीमेंट (भारत), लिमिटेड डाल मिया पुरम जिला तिरुचिरापल्ली (एस. आइ.)
९—इंडिया सीमेंट्स, लिमिटेड, मद्रास
१०—न्यु हिन्दुस्तान सीमेंट्स, लिमिटेड, नागपुर
११—ओड़िसा सीमेंट, लिमिटेड, ओड़िसा
१२—पटियाला सीमेंट कंपनी लिमिटेड, पटियाला (पेप्सू)
१३—श्री दिग्विजय सीमेंट को०, लिमिटेड, जामनगर
१४—सोन वैली पोर्टलैंड सीमेंट को०, लिमिटेड, कलकत्ता
१५—ट्रावंकोर सीमेंट्स लिमिटेड, नाटा कोग कोट्टाया-ट्रावंकोर
१६—चूर्क सीमेंट फेक्टरी चूर्क (यू० पी०)



भारत में कागज उद्योग का विकास

कागज निर्माण के पहले भारत में लिखने के लिए भोज पत्र का व्यवहार होता था फिर हाथ से कागज बनाना प्रारम्भ हुआ। कोटा उज्जैन, जयपूर हाथ से कागज बनाने के प्रधान केन्द्र थे।

का ज बनाने का काम सम्भवतः सबसे पहले चीन में आरम्भ हुआ। उस समय कागज हाथ से बनाया जाता था। चीन के सम्पर्क से ही कई सदियों पूर्व भारत को भी हाथ से कागज बनाने की प्रेरणा मिली। आज भी भारत के अनेक भागों में हाथ से कागज बनाया जाता है। भारत में मशीन से कागज बनाना सन् १८७० में आरम्भ हुआ जब कि हुगली के तट पर पहले कारखाने में उत्पादन आरम्भ हुआ। १८८० में सरकार ने देशी कागज उद्योग के साथ प्राथमिकतापूर्ण व्यवहार करने का वचन दिया। इस घोषणा तथा उस समय कागज के चढ़े हुए भावों ने इस उद्योग के विस्तार की प्रेरणा दी। सन् १९०० तक कागज बनाने के ७ कारखाने स्थापित हो गये जिनमें प्रतिवर्ष १६,००० टन कागज बनता था।

इसके बाद देशी उद्योग को सस्ते विदेशी कागज से कड़ी प्रतिद्वन्द्विता करनी पड़ी। फिर भी सन् १९२४ तक कागज का उत्पादन २,३००० टन तक हो गया और कागज मिलों की संख्या ९ हो गयी। १९२५ में इस उद्योग को तटकर संरक्षण प्राप्त हो गया और आयात किये जाने वाले कई प्रकार के कागज पर २५ प्रतिशत शुल्क लगा दिया गया इस कदम का एक उद्देश्य यह भी था कि यह उद्योग अधिक से अधिक देशी कच्चा माल प्रयोग करने लगे।

१९३६ में दूसरा महायुद्ध छिड़ने से यह उद्योग बहुत बढ़ा। १९४१ तक देशी कागज के दाम आयात किये गये कागज से कम थे। उन दिनों कागज की कमी अनुभव होने लगी थी। १६४२ में सरकार ने मूल्य नियन्त्रण लागू कर दिया, जो फिर १६५१ में ही समाप्त हुआ। इस अवधि में कागज उद्योग ने पर्याप्त प्रगति की।

सन् १९३० से १९५५ के उत्पादन और खपत के आंकड़ों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि १९३१ की अपेक्षा १९५५ में कागज का उत्पादन ४५० प्रतिशत बढ़ गया है। १६३१ में उत्पादन ४०,००० टन था। लिखने छापने तथा आवरण के काम के कागज का आयात जहां अब भी उसी स्तर पर है, वहाँ अखबारी कागज का आयात ३५० प्रतिशत बढ़ गया है और गत्ते का आयात ६० प्रतिशत घट गया है।

१६५१ के उद्योग (विकास तथा नियमन) अधिनियम के बनने से कागज उद्योग का नियमन योजना के अनुसार होने लगा है। आधुनिक आधार पर कागज के नये कारखाने खोलने की योजना बनाई जा रही है जिनमें बढ़िया उपकरण होंगे और कम लागत पर अधिक उत्पादन हो सकेगा। गत ५ वर्षों में निम्न प्रकार का नया कागज भारत में बनने लगा है:—मोटे गत्ते, आर्ट और क्रोमो कागज, सिगरेटों में प्रयोग होने वाला पतला चिकना कागज, चेक का भारी कागज और सेलूलोज फिल्म। यहां यह उल्लेखनीय है कि अब हम सिगरेट का कागज पर्याप्त मात्रा में तथा कागज और गत्ता अल्प परिमाण में निर्यात करते हैं। कागज और गत्ते के उत्पादन आँकड़े निम्न हैं:—

वर्ष		उत्पादन (टनों में)	कारखानों की संख्या
१९००	....	१९,०००	७
१९२४	....	२३,०००	९
१९३३	....	४४,०००	७
१९४३	....	१,००,०००	१५
१९५३	....	१,३६,७०३	१९
१९५४	...	१,५५,३२७	२०
१९५५ (जन० से जून)		८९, २५३	२०

कच्चा माल

बांस—आज कागज उद्योग के लिए सबसे प्रमुख कच्चा माल बांस है। कागज और गत्ते का हमारा वर्तमान उत्पादन १,८०,००० टन है। इसके उत्पादन में हम ३,२५,००० टन बांस का प्रयोग करते हैं। दूसरी पंचवर्षीय योजना में ६ लाख टन कागज और गत्ता बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इतना कागज बनाने के लिए १६ लाख टन बांस की आवश्यकता होगी। देश में कितना बांस निरन्तर उपलब्ध होता रह सकेगा, इसके लिए विश्वसनीय जानकारी एकत्र की जा रही हैं जिससे इस उद्योग के विकास की समुचित योजना बनायी जा सके। हाल ही में केन्द्रीय वन बोर्ड बना हैं जो कागज मिलों को बांस तथा सवाईघास सुलभ करने की समस्या सुलझा रहा है।

अन्य कचा माल—सवाई घास का प्रयोग करके कागज उद्योग के विस्तार की अधिक गुंजाइश प्रतीत नहीं होती क्योंकि यह घास थोड़ी मात्रा में ही प्राप्त है।

कड़ी लकड़ी और गन्ने की छोई

कड़ी लकड़ी और गन्ने की छोई—अखबारी कागज के उत्पादन में आजकल सलाई की लकड़ी प्रयोग की जा रही है। यूकेलिप्टस (Eucalyptus), वैटल (Wattle) और शहतूत के वृक्ष आदि की लकड़ी की जांच पड़तालकी गयी और उसे कागज बनाने के उपयुक्त पाया गया है। यह आवश्यक है कि इन किस्मों के पेड़ बड़ी संख्या में उगाये जांए। १९४८ में मद्रास सरकार ने नीलगिरी पहाड़ पर यूकेलिप्टस के पेड़ बड़े पैमाने पर लगाने आरम्भ किये थे। इनमें से यूकेलिप्टस की एक किस्म ब्लू गम (Blue Gum) के पेड़ २,००० एकड़ में और वेटल (Wattle)के पेड़ २,४०० एकड़में हैं। ब्लू गम का पेड़ १५ साल में तैयार हो जाता है, उससे प्रति एकड़ ५० टन लकड़ी प्राप्त होती है; और वैटल का पेड़ १० वर्षमें ही पूरा हो जाता है, लेकिन उससे २० टन प्रति एकड़ ही लकड़ी प्राप्त होती है।

कागज और लुग्दी बनाने के लिए गन्ने की छोई को महत्वपूर्ण कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। देश में इस समय जिस गति से गन्ना पेरा जाता है, उसके अनुसार प्रतिवर्ष २५ लाख टन गन्ने की छोइयां निकलती हैं। इस समय के चीनी मिल प्रायः इतनी सारी छोइयों का प्रयोग कर लेते हैं कि उनके पास छोइयां बचती नहीं हैं। इसलिये आवश्यकता यह खोजने की है कि हमारे चीनी मिलों के लिए ऐसी व्यवस्था की जाय कि कम छोइयां जलाने से उनका काम चल जाए और इसमें से कुछ या अधिकांश

छोइयां कागज तथा लुग्दी बनाने के काम आ सकें। शीघ्र ही एक विशेषज्ञ दल भारत आ रहा है जो इन समस्याओं का आगे अध्ययन करेगा और छोइयां तथा लुग्दी की लकड़ी के प्रयोग के लिए योजना प्रस्तुत करेगा।

आयात की हुई लकड़ी की लुग्दी बहुत ही कम परिमाण—२॥ प्रतिशत—में प्रयुक्त होती है।

रासायनिक पदार्थ

इस उद्योग के लिए निम्न रासायनिक पदार्थों की आवश्यकता होतीहै—कास्टिक सोडा, क्लोरीन, लाहौरी नमक, गंधक, चूना, राल, फिटकरी और विशेष प्रकार की मिट्टी। गंधक और कुछ हद तक कास्टिक सोडा का आजकल आयात किया जाता है।

गत्तों का निर्माण

भारत में गत्ता बनाने का उद्योग अधिक पुराना नहीं है। दूसरे महायुद्ध से पहले इसका बहुत थोड़ा उत्पादन होता था किन्तु युद्धकाल और युद्ध के बाद गत्ता बनाने के अनेक छोटे छोटे कारखाने स्थापित हुए जिनमें से अधिकांश ने भारत में बनी मशीनें ही लगायी हैं। इनमें से बहुत से कारखाने छोटे हैं किन्तु यह उद्योग अपनी स्थापित उत्पादन-क्षमता से कहीं कम काम करता है। पतले गत्ते तथा पैक करने की अन्य सामग्रियों के चलने के कारण गत्ते की मांग कम है। गत्ता उद्योग का उत्पादन गत तीन वर्षों से ३०,००० टन वार्षिक ही चल रहा है और निकट भविष्य में इस उद्योग के विशेष विकास की स्थितियां अनुकूल प्रतीत नहीं होती है।

कागज उद्योग का विस्तार

इस समय देश में कागज बनाने की २० मिलें हैं जिनकी स्थापित वार्षिक उत्पादन क्षमता २,११,९०० टन है। इनमें से ४ मिलें बंगाल में, दो, दो उत्तर प्रदेश और मैसूर में तथा उड़ीसा बिहार, पंजाब, मध्य प्रदेश, आंध्र, मद्रास और त्रावणकोर-कोचीन में एक एक मिल है। बम्बई में भी चार मिलें हैं। सात नये कारखाने स्थापित करने के लाइसेंस दिये जा चुके हैं जिनकी कुल उत्पादन क्षमता ५५,१०० टन होगी। इनमें से ३ मिल बम्बई में, और आसाम, बंगाल, उड़ीसा तथा आंध्र में एक एक मिल होगा। वर्तमान कारखानों में से ८ कारखानों का पर्याप्त विस्तार किया जाएगा जिसमें १,०९,५०० टन कागज और बनाने की उत्पादन क्षमता बढ़ जाएगी। इन विस्तार योजनाओं के क्रियान्वित होने तथा नया नये कारखाने स्थापित हो जाने पर देश की कागज उत्पादन की क्षमता कुल ३,५०,८०० टन कागज बनाने की हो जाएगी। कागज की उत्पादग क्षमता और बढ़ाने की योजनाएं भी विचाराधीन है।

इस समय हमारा कागज उद्योग छापने और लिखने के कागज की ८० प्रतिशत, विशेष कागज की ५० प्रतिशत, पैक करने और चीजें लपेटने के कागज की ३० प्रतिशत तथा कागज और लुग्दी के गत्तों की ६५ प्रतिशत आवश्यकताएँ पूरी करता है शेष कमी कागज का आयात करके पूरा की जाती है। लिखने और छापने का कागज, पतला कागज आदि विभिन्न प्रकार के कागज भिन्न २ मात्राओं में मंगाये जाते हैं।

पुराने अखबारों पर जो बहुत अधिक शुल्क लगाया हुआ है और अखबारी कागज के अन्य प्रयोगों पर रोक लगाई हुई है, उसका उद्देश्य यही है कि देश में माल पैक करने तथा छपाई का सस्ता कागज बनने लगे।

कागज उद्योग को मोटे तौर पर निम्न चार वर्गों में बांटा जाता है :—

(१) लिखने और छापने का कागज,

(२) विशेष प्रकार का कागज,

(३) औद्योगिक प्रयोग का कागज तथा पैकिंग के काम आने वाला सामान्य तथा चिकना बादामी वांसी कागज, दियासलाई में लगने वाला नीला कागज, परतदार गत्ता और जमाया हुआ गत्ता

(४) अखबारी कागज।

१९५४ में कितना कागज और गत्ता तैयार हुआ तथा उसकी क्या खपत रही, इसका विश्लेषण नीचे की सारिणी से विदित हो सकेगा:—

औद्योगिक रूप से उन्नत देशों में कागज की जो खपत होती है, उससे अनुमान लगाया जाता है कि कागज की सामान्य खपत निम्न अनुपात में ही होनी चाहिए।

(१) लिखने पढ़ने का कागज	कुल खपत का ४० प्रतिशत
(२) विशेष कागज	कुल खपत का ४ प्रतिशत
(३) औद्योगिक प्रयोग का कागज तथा गत्ता	कुल खपत का ४० प्रतिशत
(४) अखबारी कागज	कुल खपत का १६ प्रतिशत

अखबारी कागज

देश में जितना भी अखबारी कागज काम में आता है, इस समय लगभग सारा का सारा विदेशों से आयात किया जाता है। देश में अखबारी कागज का एकमात्र कारखाना मैसर्स न्यूजप्रिन्ट एण्ड पेपर मिल लि० (नेपा मिल) है जिसकी स्थापित उत्पादन-क्षमता ३०००० टन कागज बनाने की है। इस मिल में परीक्षण के तौर पर इसी वर्ष कागज बनाना आरम्भ हुआ है। इस मिल में लकड़ी पीस कर लुग्दी बनाने के लिए सलाई लकड़ी काम में लाते हैं और रासायनिक लुग्दी के लिए बांस का प्रयोग करते हैं। विदेशों में अखबारी कागज बनाने के लिए सदा से जिस कच्चे माल का प्रयोग होता रहा है, इस मिल में उसका प्रयोग न होगा। आशा है कि बांस की रासायनिक लुग्दी बनाने का यन्त्र आगामी वर्ष के आरम्भ में चलने लगेगा।

१९५४-५५ में लगभग ७९,००० टन अखबारी कागज आयात हुआ। अनुमान है कि १९६०-६१ तक अखबारी कागज की खपत बढ़कर १ लाख टन हो जाएगी। ऊपर उल्लिखित नेपा मिल देश की अखबारी कागज की कुल आवश्यकता पूर्ण नहीं कर सकता, इससे अखबारी कागज के और कारखाने खोलने की आवश्यकता होगी।

१९१३ में भारतीय कागज उद्योग में ८७ प्रतिशत विदेशी पूंजी लगी हुई थी। १९३२ में इस उद्योग में भारतीय पूंजी का तेजी से बढ़ना आरम्भ हुआ। १९५३ में इस उद्योग में भारतीय पूंजी ६५ प्रतिशत हो गयी।

१९५२ में इस उद्योग में २४ करोड़ रु० की पूंजी लगी थी। वर्तमान मिलों के विस्तार, आधुनिकीकरण, तथा जिन नये कारखाने के लायसंस दिये जा चुके हैं, उन्हें खोलने के लिए २० करोड़ रु० की पूंजी और लगाने की आवश्यकता होगी। दूसरी पंचवर्षीय योजना में ६ लाख टन कागज और गत्ता तैयार करने के लिए ६६ करोड़ रु० की पूंजी लगाने की योजना है। यह पूंजी मुख्यतः निजी क्षेत्र में लगायी जायगी। (उद्योग-व्यापार पत्रिका से)

भारतीय पेपर मिल्स (कागज के कारखाने)

१—*बल्लार पुर पेपर ऐंड स्ट्रा बोर्ड मिल्स, लिमिटेड, बल्लार शाह (मध्य प्रदेश)*—सन् १९४५ ई० में बल्लारशाह में स्थापित मैनेजिग एजेंट्सः—करमचन्द थापर ऐण्ड ब्रास० लिमिटेड, कलकत्ता मूलधन—२ करोड़ रुपया। मध्य प्रदेश की सरकार ने इस कम्पनी को रियायत दी है। इसमें सब प्रकार के कागज तैयार होते हैं।

२—*बंगाल पेपर मिल को०, लिमिटेड, कलकत्ता*—यह कागज की कम्पनी सन् १८८९ ई० में कलकत्ता में स्थापित हुई। मैनेजिग एजेण्टस 'बालमर लारी एण्ड को०, लिमिटेड। रजि० आफिस २१ नेताजी सुभास रोड, कलकत्ता। पूंजी १ करोड़ रुपया। इसमें १२ हजार टन कागज प्रतिवर्ष तैयार होता है।

३—*कावेरी वैली पेपर मिल्स, लिमिटेड, (बैंगलोर)*—इसकी स्थापना सन् १९४७ ई० में बैंगलोर में हुई। मैनेजिंग एजेंट्स—दी इण्डस्ट्रीज इण्डिया लिमि०। रजि० आफिस—एशियाटिक बिल्डिंग्स कैंपेगोडा रोड, बैंगलोर। यहाँ से वफ़ राइटिंग, ह्वाइट और कलर प्रिंटिंग, रैपरिंग तथा क्रैफ्ट पेपर विशेष रूप से निर्यात होते हैं।

४—*इण्डिया पेपर पल्प कंपनी लिमिटेड, कलकत्ताः*—यह कागज कंपनी सन् १९१८ ई० में कलकत्ता में खोली गई। मैनेजिंग एजेण्ट्स—ऐंड्रू यूले ऐंड को० लिमि०। रजि० आफिस—८ क्लाइव रो० कलकत्ता। मूलधन ४० लाख रुपया। उत्पादन—प्रतिवर्ष ८ हजार टन कागज तैयार होता है।

५—*मैसूर पेपर मिल्स लिमि० बैंगलोरः*—सन् १९३६ ई० में बैंगलोर में स्थापित। रजि० आफिस—"एशियाटिक बिल्ड् केम्पेगोडा रोड, बैंगलोर। मूलधन—२५ लाख रुपया। उत्पादनक्षमता—प्रतिदिन १७ टन केमिकल और २५ टन और कागज तैयार होता है।

६—*नेशनल न्यूज प्रिंट ऐंड पेपर मिल्स*—यह कंपनी सन् १९४७ ई० में बंबई में स्थापित की गई। रजि० आफिसः—माउंट रोड, इक्सटेंशन, नागपुर। मूलधन ५ करोड़ रुपया। यह कागज का बहुत बड़ा कारखाना है। इसमें प्रायः न्यूज प्रिंट (पेपर) सलई की लकड़ी और बांसों से बनाया जाता है जो मध्यप्रदेश के पास के जंगलों से प्राप्त होते हैं। इसकी उत्पादन-शक्ति प्रति वर्ष ३० हजार टन की है।

७—*ओरियंट पेपर मिल्स लिमिटेड ब्रजराजनगर*—सन् १९३६ ई० में कलकत्ता में स्थापित। मैनेजिग एजेंटसः—बिरला ब्रदर्स लिमि० ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता। रजि० आफिस और मिल ब्रजराज नगर झारसुगोदा (Jharsugoda) के पास जिला संभलपुर (ई० रेलवे०) इसका मूल धन ४ करोड़ रुपया है। कंपनी लार्ज स्केल पर काम कर रही है। इसकी वार्षिक उत्पादन योग्यता ३६ हजार टन कागज और बोर्ड तैयारी की है।

८—*पुडूकोटाह पेपर मिल्स लिमिटेड, पुडूकोट्टाई* (Puduk Kottei)—सन् १९४६ ई में पुडू कोट्टाई में स्थापित। मैनेजिग एजेंट्सः—पेरियानन ऐड को०, लिमि०। रजि० आफिसः—उमायल पुरम् पो० रायवरम्, जि० त्रिचनापल्ली यह आधुनिक ढंगका कागजका कारखाना है। यहाँ पर प्रत्येक प्रकार के कागज और बोर्ड तैयार किये जाते हैं।

६—पुनालूर पेपर *मिल्स लिमिटेड*, पुनालूर (Punalur) *ट्रावनकोर, कोचीन (कलकत्ता, बम्बई, मदरास, बैंगलोर, तेलीचेरी, कोलम्बो आदि में इस मिल की शाखाएं है ।)*:—यह कंपनी सन् १९३१ ई० में पुनालूर में स्थापित हुई । मैनेजिंग एजेण्टस—ए० एण्ड एफ० हारवे लिमि०, रजि० आफिस—पुनालूर (Puunalur) । मूलधन—२० लाख रुपया । इसमें प्रत्येक प्रकार का कागज तैयार होता है ।

१०—श्री गोपाल पेपर मिल्स लिमिटेड, जगाधरी:—सन् १६३६ ई० में कलकत्ता में स्थापित । मैनेजिंग एजेंट्स—करमचन्द थापर ऐंड ब्रदर्स लिमि० । रजि० आफिस—५ रायल इक्सचेंस प्लेस, पो० बा० नं० २०३७ कलकत्ता । मूलधन—१ करोड़ १० लाख रुपया । इस कंपनी ने लिक्विडेशन में दी पंजाब पल्प ऐंड पेपर मिल्स लिमि० को खरीद लिया । इसमें कागज बनाने की दो मशीनें हैं, जिनमें प्रतिवर्ष ७॥ हजार टन कागज (रैपर सहित) तैयार करने की योग्यता है । यह मिल अब्दुल्लापुर जगाधरी (पंजाब) में स्थापित है । यह कम्पनी बनस्पति प्लांट भी रखती है, जिससे ८१५ टन उत्पादन होता है ।

११—सिरपुर पेपर मिल्स लिमिटेड हेदराबाद (Deccan):—सन् १९३९ ई० में हैदराबाद (दक्षिण) में स्थापित । मैनेजिंग एजेंट्स—हैदराबाद गवर्नमेंट इण्डस्ट्रियल ट्रस्ट फंड (अब यह कारखाना बिड़ला ब्रदर्स ने ले लियाहै । पूंजी—२ करोड़ रुपया की लागत से कम्पनी खड़ी की गई । इसमें प्रायः सभी प्रकार के मोटे पतले और सूखे-चिकने कागज तैयार होते हैं । इसमें बाँस और चिथड़ों से काम लिया जाता है । यह कागज कारखाना सिरपुर कागज् नगर में है । वर्तमान समय में इसकी कागज उत्पादन—योग्यता वार्षिक ६ हजार टन की है । परन्तु गवर्नमेंट इसे बढ़ाना चाहती है ।

१२—स्टार पेपर मिल्स लिमिटेड, सहारनपुर—सन् १९३३ ई० में कलकत्तामें स्थापित । मैनेजिंग एजेंन्ट्सः—बाजोरिया एण्ड को० । रजि० आफि १० क्लाइव रो, कलकत्ता मूलधनः—५० लाख रुपया । इस मिल में प्रतिवर्ष ६ हजार टन कागज तैयार होता है जो कि सहारनपुर (यू० पी०) में स्थित है ।

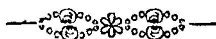
१३—टीटागढ़ पेपर मिल्स को०, लिमिटेड कलकत्ता—सन् १८८८ ई०में इस कागज बनाने वाली कम्पनी की स्थापना कलकत्ता में की गई । वास्तव में इस कम्पनी का बड़ा नाम है और है भी यह पुरानी । मैनेजिंग एजेन्ट्स :—एफ० डब्ल्यू० हेलजर्स एण्ड को० लिमिटेड । रजि० आफिसः—पी० बी० १८५ चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग्स, कलकत्ता । मूलधन :—१ करोड़ ८२ लाख ९२ हजार ३ सौ । इसमें ६ कागज बनाने वाली मशीनें काम करती हैं । वार्षिक उत्पादन शक्ति प्रतिवर्ष ३० हजार टन कागज तैयार करने की है । यह तैयारी टीटागढ़ और कॉकनाड़ा में होती है ।

१४—अपर इण्डिया कूपर पेपर मिल्स, को० लिमिटेड, लखनऊ—सन् १८७८ ई० में लखनऊ (यू० पी०) में स्थापित । यह भारत की सबसे पुरानी पेपर मिल है । रजि० आफिस :—मिल प्रेमिसन लखनऊ । पूंजी :—८ लाख रुपया । वार्षिक उत्पादन शक्ति ४ हजार टन कागज की है । यह कारखाना रोनल्ला मस्जिद बाग में बादशाह नगर के पास चलता है । इसमें कागज बनाने की २ मशीनें काम करती हैं ।



भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



भारत में अभ्रक और लाख उद्योग का विकास



Development of Mica and Lac Industries in India

भारत में अभ्रक उद्योग का विकास

मानव-समाज ज्यों ज्यों भूगर्भ विद्या में उन्नति करता गया त्यों त्यों उसे अभ्रक के सम्बन्ध में नित नये रहस्यों का पता लगता गया। अभ्रक के कितने ही प्रकार सामने आये और उनके व्यापक गुणों का प्रसार हुआ। इसी क्रमानुगत उन्नति के कारण आज अभ्रक दश प्रकार का खोज निकाला गया है। अभ्रक की चर्चा करते समय आज लोग अभ्रक न कहकर अभ्रक समूह से ही उसे सम्बोधित कर अपनी जानकारी का परिचय देते हैं। लेकिन यहां हम अपने पाठकों के सम्मुख अभ्रक के केवल उन्हीं प्रकारों की चर्चा करेंगें जिनका व्यवहार व्यवसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है और इसीलिये उनकी खानों में रात दिन काम होता रहता है। ये अभ्रक दो प्रकार के हैं। इन दोनों में से एक को मिसकोवाइट माइका (Miscovite mica) और दूसरे को फ्लोगोपी माइका (Phlogopi mica) कहते हैं। अभ्रक के इन दोनों प्रकारों से मानव-समाज बहुत प्राचीन समय से पूर्ण रूपेण परिचित हैं।

आधुनिक युग की वैज्ञानिक खोज जनित समुन्नत कला कौशल में विद्युत शक्ति का कितना व्यापक हाथ है यह किसी भी जानकार से छिपा नहीं है। विद्युतशक्ति संचार के आश्चर्य जनक चमत्कारों को यशस्वी बनाने में यदि कोई पदार्थ सहयोग देता है तो वह एक मात्र अभ्रक है। अभ्रक के प्राकृतिक गुणों ने उसकी अतुलनीय उपयोगिता सर्वरूपेण प्रमाणित कर दी है। वह विद्युत शक्ति को जिस प्रकार शून्य सिद्ध करता है उसी प्रकार अग्नि के प्रचण्ड प्रकोप को भी तृणावत् समझता है। आधुनिक विज्ञान वेत्ताअभ्रक के इसी गुण पर रीझे हुए हैं। परन्तु भारत के प्राचीन विज्ञान वेत्ताओं ने इससे आगे भी हाथ मारा है। जिस अभ्रक को आज के वैज्ञानिक अग्निप्रभाव शून्य मान बैठे हैं, इसी अभ्रक को भारत के पुराने रसायन शास्त्रियों ने भस्मीभूत कर डाला है और उसकी ऐसी भस्म बना डाली है कि जिसका पुनरोत्थान न हो सके। अतः भारत के सम्बन्ध में अभ्रक से परिचित होने का प्रश्न उठाना ही अनावश्यक सा मालूम पड़ता है। फिर भी आधुनिक विद्वानों के मतानुसार हम यहां पर प्रसंगवश अभ्रक का ऐतिहासिक विवेचन कर देना उचित समझते हैं।

अभ्रक का ऐतिहासिक विकास

अमेरिका

पूर्व कालीन युग मे अमेरिका के आदि निवासी रेड अमेरिकन लोग अभ्रक से परिचित थे। अपने समय की सजावट और आमोद-प्रमोद में वे लोग अभ्रक का उपयोग तो करते ही थे पर मनुष्यों के शव के साथ ही अभ्रक को भी भूमि में समाधि दे देते थे। जैसा कि अमेरिका के ओहियो जिलों में पाई गई पूर्वकालीन समाधियों से विदित होता है। अमेरिका की 'अपर लेक' नामक प्रसिद्ध झील के तट पर पायी गई प्राचीन वस्तुओ में पत्थर के कुछ ऐसे भी औजार मिले हैं जिनसे ऐसा अनुमान होता है कि किसी युग में इनका व्यवहार पत्थर की चट्टानों से अभ्रक निकालने के लिए होता होगा।

रोम

रोम साम्राज्य संसार के प्राचीन साम्राज्यों में से है। यहां वाले अभ्रक से बहुत पहिले से परिचित थे। वायु के झकोरों से दीपक की रक्षा करने के लिए उन्हें सदैव चिन्ता रहती थी। उस समय शीशा तो बनाया नहीं जाता था। ऐसी दशा में वे लोग अभ्रक के तख्तों से शीशे का काम लेते थे। इस प्रकार के

प्रकाश दान रोम के इतिहास प्रसिद्ध हरक्यूलैनियम (Herculaneum) में आज भी रक्षित पाये जाते हैं। इतना ही नहीं शीशे के अभाव में अभ्रक का काममें लिया जाना यह इतिहास प्रसिद्ध बात है। प्लीनी का मत है कि शयनागर व स्नानागार की खिड़कियों में भी अभ्रक के आईने लगाये जाते थे इसी प्रकार शीतकालीन भवनों और सिंहासनों पर भी अभ्रक के शीशे का शृंगार होता था। सेनीका नामक एक योरोपियन इतिहास मर्मज्ञ का मत है कि घरों की खिड़कियों में तो अभ्रक के आइने जड़े जाते ही थे पर मधु मक्खियों के छत्ते भी अभ्रक के बनाये जाते थे जिनमें निवास करने वाली मक्खियों को पालन कर उनकी शिल्प क्रिया का कौतुक लोग देखा करते थे। यही क्यों उसका तो यह भी कहना है कि विशेष महोत्सवों पर भूमि पर भी अभ्रक के टुकड़ों का छिड़काव कर दिया जाता था।

यूनान

यूनान वाले भी अभ्रक से प्राचीन युग में ही परिचित हो चुके थे। वे लोग उसकी उपयोगिता भी जानते थे। अभ्रक के पर्तो से प्रकाश पार कर जाता है यह बात यूनानी लोग जानते थे मध्य कालीन लेखक एग्रीकोला का कहना है कि प्लिनी के मतानुसार उस समय भी यूनानी भाषामें अभ्रकके लिए कई एक शब्द थे जो अभ्रक के विभिन्न प्रकार के पारस्परिक अन्तर की सूक्ष्म खोज तक पहुँच के सूचक है। ऐग्रीकोला, Cat' s Cold',Cat's Silver'Or,Iec' नामसे भी अभ्रकका ही अनुमान करता है। प्राचीन काल मे योरोप में कानराड गेनसर नामक एक प्रकृति शास्त्रज्ञ हो गया है उसने वनस्पतियों और पशुओं के सम्बन्ध को लेकर जहां अपने ग्रन्थों में खोज पूर्ण वैज्ञानिक चर्चा की है वहां उसने भूगर्भ विद्या विषयक विस्तृत विवेचन भी किया है। उसके ग्रन्थों से जो पुराने हैं यह भी पता चलता है कि वह व्यक्ति षटकोण आकृति युक्त सुघड़ अभ्रक के तख्तों से पूर्ण रूपेण परिचित था। वह लिखता है कि हैले (Halle) नामक स्थान में अभ्रक की खाने थीं। इतना ही नहीं उसका मत था कि अभ्रक औषधि के रूप में सेवन करने से उन्माद और कुष्ट को दूर करता है। बोटियस (Boetius) लिखता है कि उस समय स्त्रियां अपने मुंह पर अभ्रक का चूर्ण मलती थीं जिससे मुंह की शिकन दूर हो जाती थी।

अभ्रक का औद्योगिक विकास

अभ्रक के व्यवहारिक उपयोग के बाद उसके रंगों के अनुसार उसके अनेक प्रकारों का निश्चय सन् १७४७ ई० योरोपीय विद्वान बेलेरियस ने किया। उसका कहना है कि अभ्रक कई प्रकार होता है जैसे—सफेद, पीला, लाल, हरा, काला, मटमैला, रेखाखचित, आकृतिवाला, लहरदार और गोलार्ध आकार का इत्यादि। इसी प्रकार जरमन विद्वान जान बेकमानने सन् १७९६ ईसवीमें अभ्रक की उपज और उपयोगिता की विस्तृत विवेचनाकी है। इस विवरणसे यह पता चलता है कि उस समय जर्मनीमें कहाँसे अभ्रक आता था और किस काम मेंआता था। कुछ समय बाद शीशा बनानेकी विधि खोज निकाली गई और इस सम्बन्ध में अभ्रक का आने वाला उपयोग कम होने लगा। सन् १८७० ईसवी के लगभग वैज्ञानिकों ने एक प्रकार के चूल्हे की योजना की जिसमें अभ्रक का उपयोग होने लगा। इस प्रकार के चूल्हों का उपयोग जर्मनी में भी हो गया। स्मरण रहे कि चूल्हे के आयोजन के पूर्व साइबेरिया का अभ्रक योरोप के बाजार की आवश्यकता को पूरी करता था परन्तु १८६८ ईसवी में उत्तर करोलिना की अभ्रक वाली खाने खोज निकाली गई और उनसे अभ्रक बाजार में आने लगा। चारों तरफ के लोग इस क्षेत्र मे टूट पड़े और मनमानी खुदाई आरम्भ की गई। यह क्रम वर्षों तक जारी रहा पर सन् १८८४ ई० से भारत के द्वारा संसार के बाजारों

में अभ्रक भेजना आरम्भ कर देने पर बाजार में अभ्रक का भाव बहुत गिर गया। इसके दो वर्ष बाद सन् १८८६ ई० में कनाडा ने भी अपने यहां की खानों का माल भेजना शुरू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि और भी भाव बैठ गया।

अभ्रक के भौतिक गुण

खानों में अभ्रक चद्दरों के रूप में पाया जाता है जो छोटी से छोटी आकृति से लगाकर भारी से भारी आकार में पायी जाती हैं। सामान्य श्रेणी के आकार वाले पर्त का अभ्रक आन्टैरियो (कनाडा प्रान्त) के सिडनूहम स्थानके पास वाली लैसी खास नामक खानों से निकलता है। इन खानों से अधिक से अधिक ७ फीट की लम्बाई का अभ्रक का तख्ता निकलता देखा गया है और अभ्रक के ढेले जो यहां से बड़े से बड़े निकाले गये हैं उनका वजन ३० हजार से ४० हजार रतल तक तौला गया है। अभ्रक के एक तख्ते की लम्बाई ९ फीट और चौड़ाई ४ से ५ फीट तक भी देखी गई है। जर्मन पूर्वीय अफ्रीका में निकलने वाले अभ्रक के तख्ते भी बड़े आकार के निकलते हैं। यहाँ के बड़े से बड़े तख्ते की लम्बाई ८८ सेन्टोमीटर और चौड़ाई ७८ सेन्टीमीटर तथा मोटाई १५ से २५ सेरण्टीमीटर तक पाई गई है परन्तु इन सबसे अधिक लम्बा चौड़ा और मोटा तख्ता भारत में पाया गया है। जिसने संसार के मिले हुए सभी अभ्रक के तख्तों के आकार को नीचे गिरा दिया है।

विद्युत चमत्कार को व्यक्त करने वाले पदार्थों में अभ्रक का सबसे ऊंचा स्थान है। अभ्रक जरासी रगड़ में विद्युत शक्ति उत्पन्न कर देता है और स्वयं विद्युत शक्ति का शोषण न करने वाला होने के कारण उसके संचित स्वरूप का अनुभव करने का अवसर देता है। अभ्रक के दो टुकड़े परस्पर रगड़ने से भी विद्युत शक्ति उत्पन्न होती है। यदि अन्धेरे कमरे में अभ्रक के तख्ते के टुकड़े २ करके रख दिये जांय तो तीखे किनारों पर हरा मायल प्रकाश सा दिखाई देगा। यह प्रकाश उस अवस्था में अधिक स्पष्ट होगा जब उसे तोड़ कर तेजी से रगड़ दिया जाया। यह प्रकाश रगड़ से उत्पन्न होने वाली बिजली का होता है।

अभ्रक गर्मी भी बहुत अधिक सहन कर सकता है। ४०० से ६०० डिग्री तक गर्म करने पर भी उसकी पारिदर्शक विशेषता और विद्युत शक्ति के प्रति उदासीनता के गुण का अस्तित्व उसमें पाया जाता है। ६०० से १००० डिग्री की गर्मी से उसकी चमक और अधिक बढ़ जाती है और वह चांदी के समान मालूम होने लगता है इससे भी अधिक गर्मी पाकर वह पिघल जाता है और उससे भी अधिक गर्मी पाकर वह उबलने लगता हैं तथा भूरे या पीले रंग का कांच जैसा ही जाता है।

अभ्रक का रासायनिक गुण धर्म

रासायन शास्त्र के मतानुसार अभ्रक अलमूमिना और अन्य खारदार पदार्थों का सम्मिश्रण है। इसमें मेग्नेशिया और आइरन आक्साइड नाम के पदार्थ भी कभी २ सम्मिलित पाये जाते हैं। अधिकांश में इन्हीं पदार्थों की मात्रा के अनुसार ही अभ्रक के प्रकार निश्चित किये जाते हैं। अभ्रक के एक प्रकार को अंग्रेजी में बियोटाइट कहते हैं। इसमें मैग्नेशिया का अंश १० से ३० प्र. तक पाया जाता है। मिस्कोहवाइट की अपेक्षा इसमें लोहे का अंश अधिक होता है। मिस्कोहवाइट में अल्मूमीना और सीलीसिक एसिड का भाग अधिक पाया जाता है।

जिस अभ्रक में मैग्नेशिया का अंश अधिक होता है वह यदि जोरदार गंधक के तेजाब में डालकर गर्म किया जाय तो गलकर विलिन हो ताजा है और प्याली में सफेद सिलिका रह जाती है। अभ्रक और तेल का संयोग भी चमत्कारिक होता है। अभ्रक का सम्पर्क तेल से हुआ नहीं कि तेल उसकी तहों तहों

में प्रवेश करने लगता है और उसके परमाणुओं की पारस्परिक आकर्षणकारी शक्ति को नष्ट कर उसे चूर २ कर डालता है। रसायन शालाओं में अभ्रक कृत्रिम रीति से बनाया गया है। इस कार्य में जर्मन रासायन शास्त्री डाल्टर (Dolter) सफल हुए थे। आपने प्लैटीनम की प्याली में स्वभाविक सिलिकेटस को सेडियम फ्लाउराइड और मैग्नेशियम फ्लाउराइड के गर्मी पहुंचाकर पिघला डाला और इस प्रकार अभ्रक बना लिया। आपने एनडाल्यू साइट को पोटेशियम सिलिको फ्लाउराइड और अल्लूमिनियम फ्लाउराइड के साथ पिघला कर भी अभ्रक तैयार किया था। इस दूसरे प्रकार वाले की चमक पहले वाले की अपेक्षा कहीं अधिक उत्तम हुई थी। यह सीप के समान उज्जवल और चमकीला था।

भारत में अभ्रक के क्षेत्र

भारत के विस्तृत भूगर्भ में अभ्रक सभी स्थानों में पाया जाता है। परन्तु आधुनिक व्यवसाय प्रधान युग में औद्योगिक क्षेत्र के काम का अभ्रक सीमाबद्ध क्षेत्र में ही मिलता है। इस प्रकार के अभ्रक में दो जातियों का अभ्रक मुख्य माना जाता है और हर्ष का विषय है कि इन दोनों बहुमूल्य जातियों का अभ्रक भारत में मिलता है। अतः यहाँ का अभ्रक इस दृष्टि से महत्व का है। इन दो जातियों में भी भारत के इस पूर्वीय भाग में पाया जाने वाला अभ्रक तो संसार भर में सर्वोच्च श्रेणी का माना जाता है। इतना ही क्यों अभ्रक की श्रेणी का जहाँ महत्व है वहाँ अभ्रक के तख्ते के बड़े आकार का महत्व तो और भी बढ़ा हुआ है। जो टुकड़ा जितना अधिक बड़ा होता है उतना ही अधिक मोल का वह माना जाता है इस दृष्टि से संसार में अब तक पाये गये अभ्रक के टुकड़ों में भारत की "इनीकुर्ता" नामक खान में पाया हुआ टुकड़ा सबसे बड़ा था। मतलब यह कि उद्योग धन्धे के काम में आने वाला अभ्रक ही भारत में अधिक मिलता है। औद्योगिक दृष्टि से यह सर्वोच्च श्रेणी का माना जाता है और परिमाण में भी संसार भर की खानों से निकलने वाले कुल अभ्रक से कहीं अधिक केवल भारत में ही निकलता है।

खानों से अभ्रक निकालने का काम भारत में अत्यन्त प्राचीन समय से अखण्डित रूप से चला आ रहा है। सन् १८२६ ई० में डा० वेलोब्रेटन ने पटना और दिल्ली के पास अभ्रक की खानें काम करती हुई देखी थी। डाक्टर साहब (Dr. Belobretan) का कहना है कि इन खानों पर पाँच हजार श्रमजीवी काम करते थे। डा० मैक्लेलेण्डने लिखा है कि सन् १८४८ ई० में इन खानों से ८ लाख पौण्ड वजन का अभ्रक निकाला गया था। भारत में सबसे प्रथम अभ्रक का निर्यात् बंगाल से आरम्भ हुआ और उसी वर्ष कलकत्ते से ७५०७ रतल अभ्रक विदेश गया। तब से आज तक बराबर भेजा जा रहा है।

संसार भर की खानों से निकलने वाले अभ्रक का ६० प्रतिशत भाग भारत की खानो से निकाला जाता है। भारत में अभ्रक के कटिबन्ध माने जाते हैं और इन्हीं में भारत की अभ्रक की मुख्य २ खानें हैं। उत्तर पूर्व की ओर वाला अभ्रक कटिबन्ध १२ मील चौड़ा और ७० मील लम्बा है। इस कटिबन्ध का फैलाव मुंगेर, हजारीबाग, तथा गया के जिलों में है और आरा तथा चम्पारन तक फैला हुआ है। यहां वाली अभ्रक की खानों में गत ५० वर्षों से बराबर काम होता चला आ रहा है। प्रथम योरोपीय महासमर ने अभ्रक के उद्योग को बहुत बड़ा प्रोत्साहन दिया फिर भी भारत में कुछ ही ऐसी खानें हैं जिनपर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार काम होता है। इस अभ्रक कटिबन्धके अतिरिक्त भारतमें एक और अभ्रक कटिबन्ध है जो मद्रास प्रदेशान्तर्गत नैलोर जिले में फैला हुआ है। इसके पूर्वीय पार्श्व पर हलके दर्जे का अभ्रक निकलता है। इसके प्रधान खण्ड चार हैं जो गूदूर, रापुर, आत्माकुर और कराली, के नाम से विख्यात् हैं। इस

कटिबन्ध की प्रधान खानें रापुर में हैं। ये खानें प्रायः चौड़े मुँह वाली हैं। भारत के इन दो प्रधान अभ्रक कटिबन्धों के अतिरिक्त मद्रास के सालेम और मलाबार जिलों में तथा भारत के मध्यभाग अजमेर, किशनगढ़, सिरोही और टोंक में भी अभ्रक निकलता है। सन् १९१७ ई० में उदयपुर के पास खोज की की गई थी और गंगापुर के उत्तर नागसा में अभ्रक की खान का पता चला था। ट्रावनकोर में भी मुलायम जाति का अभ्रक मिलता है।

अभ्रक के दो प्रकार

व्यसाय के काम में आनेवाले अभ्रक की दो जातियां हैं। इनमें से एक को मस्कव्हाइट और दूसरे को फ्लोगोपोइट कहते हैं। भारत में इन्हीं दोनों जातियों का अभ्रक पाया जाता है।

औद्योगिक महत्व की दृष्टि से अभ्रक के गुण धर्म

अभ्रक के जितने ही अधिक पतले और सुडौल पर्त निकाले जासके उतना ही अधिक मूल्यवान वह माना जाना है। पर्त तभी तक पतले से पतले और सुडौल निकलते जांयगे जब तक उसमें कड़ाई रहेगी अन्यथा वह चूर २ हो जायगा। इन दो विशेषताओं के अतिरिक्त उसमें लचीलापन न हुआ तो भी औद्योगिक दृष्टि से वह अधिक काम का नहीं है। अतः यह तीन गुण अभ्रक की आर्थिक विशेषता को बढ़ाते हैं। खान से अभ्रक सुडौल आकृति का नहीं निकलता। खान से निकालने के बाद उसके बेडौल पर्त निकालकर फेंके जाते हैं और फिर किनारे काटकर उसके ढंगदार टुकड़े बनाये जाते हैं। इतना करने के बाद तब कहो अभ्रक की श्रेणी और प्रकार का पता लगता है। अभ्रक के टुकड़ों को सुडौल करने में भारत में ९० प्रतिशत माल की क्षति होती है और तब जाकर वह बाजार में बिक्री के योग्य बनाकर लाया जाता है। अतः उपरोक्त तीन गुणों का अभ्रक में पाया जाना उसकी विशेषता को बढ़ाने वाला माना होती है।

अभ्रक की कटाई छँटाई

बिक्री के लिये तैयार किये जाने वाला अभ्रक का टुकड़ा खान से निकाले जाने के बाद काटा जाता है। टुकड़े पर के पर्त एक एक कर निकाले जाते हैं ताकि वह सुडौल और चौरस मालूम हो। इस प्रकार जब ठीक ढंग का टुकड़ा हो जाता है तब उसके पर्त निकालना बन्द कर दिया जाता है और उसके किनारों को हाथ से ही तोड़कर सम कर दिया जाता है तथा टूटे टुकड़े तोड़कर फेंक दिये जाते हैं।

व्यवसायिक दृष्टि से अभ्रक के प्रकार

अम्बर अभ्रक—यह प्रधानतया कनाडा का अभ्रक है। यह कठोर नहीं होता वरन इस प्रकार का अभ्रक कोमल गुण वाला ही होता है। यह बिजली से सचालित कम्युटेटर नामक यन्त्र में काम आता है। इसके टुकड़े सुडौल आकृति के नहीं आते। इसकी छंटाई हाथों से बेडौल भाग को मसलकर की जाती है। जो टुकड़े बाजार में बिकने के लिये आते हैं उनकी मोटाई ·००५ से ·०५० इंच तक की होती है।

कोमल स्फटिक कांति वाला भारतीय अभ्रक—यह अभ्रक प्रधानतया भारतमें ही उत्पन्न होता है। यह उत्तम श्रेणी का माना जाता है। यह बिजली और बेतार के तारके काम में आता है। इसके टुकड़े तरतीबदार पर्त वाले होते हैं। यह देखने में सुडौल और चौरस आकृति का होता है। बाजार में बिकने वाले अभ्रक के टुकड़े की मोटाई ·०१० से ·०५० इंच तक की होती है।

गुलाबी नायल स्वच्छ अभ्रक—यह अभ्रक भी भारतीय खानोंमें निकलने वाले अभ्रकसे ही छांटकर निकाला जाता है। ऐसानिर्दोष अभ्रक संसारके अन्य किसी भी भागमें नहीं पाया जाता। यह सर्वोच श्रेणीका माना जाता है। यह औरों की अपेक्षा अधिक कठिन होता है। यह अभ्रक चूल्हों और अत्यधिक उष्णता एवं विद्युत शक्तिके केन्द्रीय स्थानोंमें लगाया जाता है इसके टुकड़ोंकी मोटाई ·०१० से ·०५० इंच तककी होती है।

अभ्रक की उपयोगिता

प्राचीन काल में अभ्रक का उपयोग खिड़कियों और लालटेनों के कांच के स्थान में किया जाता था और जहाँ अत्यन्त उष्णता द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रकाश पुंज का उपयोग इष्ट रहता है वहां आज भी कांच के स्थान पर अभ्रक का ही उपयोग किया जाता है। इस पर क्षणिक ताप मान के प्रबल, उतार चढ़ाव का लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता। अत: अभ्रक का उपयोग कई प्रकार के विलायती चूल्हों में काम आता है। तेल और गेस की बत्तियों के 'गवर्नर' भी इसीके बनते हैं। जहां पानी और तूफान से आग लग जाने का भय रहता है वहां अभ्रक के संयोग से संयुक्त प्रकाशपुंज से काम लिया जाता है। प्रकाश पारिदर्शक तथा उष्ण प्रतिगन्धक होने के कारण अभ्रक के तख्ते के पर्दे जली हुई भट्टियों के मुँह पर रहते हैं। कारखानों और रसायन शाला तथा प्रयोगशालाओं में उष्णता के प्रकोप से बचकर प्रेक्षणिय प्रतिक्रियाएं देखने के लिए भी अभ्रक से काम लिया जाता है। फोटोफोन तथा टेली फोन के प्लेटों पर प्रतिध्वनि अंकित करने का काम भी अभ्रक देता है। इसके १ इन्च चौड़े तथा ४ से ८ इञ्च लम्बे तख्ते डायनुमा तथा मोटरों के संचय करने की सामर्थ्य रहती है अत: यह खेतों में खाद का काम भी देता है। इसे ग्रेफाइट या ग्रीज के साथ मिलाकर गाड़ियों में तेल देने के काम में भी लिया जाता है। काला अभ्रक औषधि के काम भी आता है।

अबरक निर्माता तथा व्यापारी

इण्डियन माइका सप्लाई कं० लि० ६५, लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता
डान एण्ड कं०, ११, पुर्तगीज चर्च स्ट्रीट, कल०
प्रीमियर माइका माइनिंग एण्ड मैनुफैक्चरिंग कं०, ३२, गोपीकृष्ण पाल लेन, कलकत्ता
बी० एम० सिंह एण्ड सन्स, क्रुकेट लेन, कल०
माइका माइनिंग एण्ड ट्रेनिंट कं० आफ इंडिया लि०, १२ चौरंगी स्क्वायर, कलकत्ता
माइका मैनुफैक्चरिंग कं० लि०, १६१, मुक्ता-राम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता
राजगढ़िया ब्रदर्स लि०, हैरिंगटन स्ट्रीट, कल०
इस्ट इंडिया माइनिंग सिंडिकेट, अन्नपूर्णा निवास, झाझा
इंडियन प्रोड्यूस कं०, पो० बा० नं० १, गिरिडीह, हजारी बाग
ए० के० नाग, गिरिडीह, हजारी बाग
के०आर० दर्शन एंड कं०, झुमरी तिलैया, हजारी०
केदारनाथ रामगोपाल, झुमरी तिलैया हजारी०
गुप्ता माइका माइनिंग सिंडिकेट, कोडरमा, हजारीबाग
छोटा नागपूर माइका सिंडिकेट, कोडरमा हजारी०
जगन्नाथ केदारनाथ, झुमरी तिलैया, हजारीबाग
जेठमल भोजराज, झुमरी तिलैया, हजारीबाग
डी० एन० सिंह एंड कं०, झुमरी तिलैया, हजारी०
दानूलाल एंड संस, झुमरी तिलैया, हजारीबाग
दत्त सन एंड कं०, गिरिडीह, हजारीबाग
नंद सामंत एंड कं०, कोडरमा, हजारीबाग
बंगाल माइका कार्पोरेशन, कोडरमा, हजारीबाग
बिहार माइका एंड कं०, गिरिडीह, हजारीबाग
बी० एन० दा एंड संस, कोडरमा, हजारीबाग
बी० सिंह लि०, गिरिडीह, हजारी बाग
बैजनाथ एंड कं०, पो० आ० बा० ४६, गिरिडीह, हजारीबाग
महावीर एंड कं०, गिरिडीह, हजारीबाग
माधवजी मेवा एंड कं०, झुमरी तिलैया, हजारी०
रामदयाल छोगमल, झुमरी तिलैया, हजारी०
लेखाराम सोनाराम एंड कं०, गिरिडीह, हजा०
शिवशंकर माइका सप्लाई कं० लि०, सिखन्द्रा मुंगेर
हजारीबाग माइका माइनिंग कं० लि०, गिरिडीह, हजारीबाग



भारत में लाख का उद्योग

पूर्वइतिहास

बीसवीं शताब्दी के अन्दर विज्ञान प्रधान समुन्नत युग में लाख की व्यापक उपयोगिता का प्रत्यक्ष अनुभव सहज में हो जाया करता है। बिजली के सामान में, बीमा पार्सल की मोहर में, बोलते हुए ग्रामोफोन के रेकार्ड मे, लीथो की स्याही मे, नकली रबर की ढलाई में, बटन और साज में लाख का प्रकट दर्शन होती है।

लाख नाम का उपयोगी पदार्थ कई प्रकार के वृक्षों पर पाया जाता है। चिपकने वाले लसलसे पदार्द राल के रूप मे यह वृक्षों की पतली टहनियों पर देखा जाता है। यह एक छोटे से कीड़े के कार्य कौशल के प्रति फल स्वरूप उत्पन्न होता है। लाख में गोद के समान राल के गुण और लाख रंग के समान विशेष प्रकार के रंग का गुण समान रूप से होता है। इसके चिपकने वाले गुण का प्रत्यक्ष अनुभव राल में मिलता है और रंग दार पदार्थ का चमत्कार इससे तैय्यार किये जाने वाले महावर में दिखलायी देता है।

भारत में लाख का उद्योग अत्यन्त प्राचीन समम से श्रृङ्खलाबद्ध चला आरहा है। भारत का यह घरेलू धन्धा संसार के प्राचीन उद्योग धन्धों में माना जाता है। लाख प्रायः पलास वृक्ष पर ही अधिक उत्पन्न होती है। इसका पूर्ण अनुभव भारत को बहुत प्राचीन समय से था। अतः संस्कृति साहित्य में पलास वृक्ष का पर्य्यायवाची शब्द लाक्ष तरु रक्खा गया है लाक्ष तरु से लाख के सम्बन्ध मे दोनों प्रधान बातों का सकेत हो जाता है।

महाभारत के समान प्राचीन ग्रन्थ में भी लाक्ष भवन की चर्चा आयी है। भारत के इस प्राचीन उद्योग धन्धे की ख्याति अन्य विदेशों मे कब और कैसे पहुँची, इसका कोई विश्वासोत्पादक प्रमाण तीसरी शताब्दी के मध्यकालीन युग के प्रथम का नहीं मिलता है। सन् २५० में एलियन नामक पाश्चात्य विद्वान ने सबसे प्रथम इसकी चर्चा की है। इसने लिखा है कि भारत में एक ऐसा भी कीड़ा होता है जो रंग के काम में आने वाले पथार्थ को उत्पन्न करता है। इसके बाद शताब्दियों तक इतिहास में लाख की कहीं चर्चा तक नही मिलती। हा आइने अकबरी में लाख और लाख के संयोग से तैयार की जाने वाली वार्निश की बात का प्रकरण आया है। सन् १५९० ई० में अकबर ने दरवाजों और राजप्रसादों के फाटकों पर पोती जाने वाली वानिश के सम्बन्ध मे नियम बनाये थे। इसके कुछ ही समय बाद पुर्तगाल के सम्राट ने जान ह्यूग्लेन वानलिन चोटन नामक एक उच्च जानककार को लाख की वैज्ञानिक खोज करने के लिये भारत भेजा था। इस डच जानकारने अपना अनुभव सन् १५९८ ई० में पुस्तकाकार प्रकाशित किया। आबूहनीफा नामक जानकार ने लाख को औषधि के काम मे व्यवहार करने की सलाह दी है। डा० केयर ने सन् १७८१ ई० में लाख के कीड़ों का विस्तृत विवरण प्रकाशित कराया था। डा० केयर ने लिखा था कि बंगाल में गंगा के दोनों किनारों पर के जंगलों में लाख होती है। जो ढाका के बाजार में बिकती है उस समय १ राशीलिंग में एक हण्डरवेट लाख बिकती थी। ढाका के बाजार में आसाम की लाख भी आती थी। सन् १८७६ ई० रांची के पास दोरन्दा छावनी में रांची लैक कम्पनी नामक एक कारखाना था। इस कारखाने में लोहार डांगा रामपुर तथा सम्भलपुर जिलों से लाख आती थी। इस कारखाने में कुसुम की

लाख का चपड़ा और पलास की लाख का रंग तैयार होता था। इसी प्रकार वीर भूमि जिले के इलम बाजार में, दुनका तहसील के केसरी तालुके में, नदियां तालुके के कैनजोर गांव में, और बाजी तालुके के आश महानी स्थान में भी लाख का अच्छा व्यवसाय होता था।

लाख से चपड़ा तैयार करने की विधि—टहनियों पर लाख को साफ कर स्वच्छ लाख तैयार की जाती है। इस स्वच्छ लाख से चपड़ा तैय्यार होता है जिसकी विधि हम नीचे दे रहे हैं।

उत्तम स्वच्छ लाख देखने में मसूर के दाल के समान चमकदार होती है। इस लाख को चावरी कहते हैं। यह लाख धूप में सुखाकर साफ की जाती है। इसके बाद हरताल पीसकर पानी में मिला इसी साफ चावरी लाख पर छिड़का जाता है और लाख को मसल २ कर छिड़की गई हरताल को सब जगह बराबर कर दिया जाता है। प्रति मन लाख पर प्रायः पाव भर से आधा सेर तक हरताल देते हैं। लाख में हरताल मिलाकर चपड़ा बनाने से चपड़े का रंग सोने के समान पीला चमक दार दिखाई देता है। इस प्रकार के चपड़े की मांग बाजार में अधिक रहती है अतः लाख में हरताल देकर चपड़ा बनाया जाता है।

चपड़ा बनाने के लिए एक विशेष प्रकार की थैली तैयार की जाती है जिसकी लम्बाई ३० से ४५ फीट तक की होती है। इसका मुंह २ इञ्च तक चौड़ा होता है। यह दोहरे कपड़े की होती है। हरताल मिली हुई चवरी लाख को इसी लम्बी थैली मे भर दिया जाता है और फिर यह भरी हुई थैली एक बड़ी भट्टी के पास रक्खी जाती है। भट्टी ५ फीट लम्बी और अंडाकार होती है इसमें धधकता हुआ कोयला भरा रहता है। इसी धधकती हुई भट्टी के सामने चपड़ा बनाने वाला कारीगर लाख से भरी हुई लम्बी थैली को घुमा २ कर उसके अन्दर की लाख को पिघलाता है और साथ ही थैली को निचोड़ २ कर पिघाली हुई लाख को थैली से बाहर टपकाता जाता है। दूसरा आदमी जो वहीं उपस्थित रहता है निचोड़ कर निकाली गई लाख को एक मिट्टी के चिकने बर्तन में भरता है। इस बर्तन में गर्म पानी भरा रहता है अतः पिघली लाख गुड़ के पात के समान कुछ ऐंठ सी जाती है। पानी से लाख के पत्रों को निकाल कर भट्टी के सामने चद्दर की भांति हाथ और पैर की सहायता से खींच २ कर बढ़ाया जाता है इस क्रिया से बड़े २ पतले तख्ते तैय्यार हो जाते हैं। इसी का नाम चपड़ा होता है। ४० सेर लाख से २० सेर चपड़ा बनता है।

लाख के प्रकार—व्यवसाय की दृष्टि से लाख की कई किस्में होती है जो बाजार में मिलती हैं। इसमें से लाख छड़ी जिसे व्यापारी स्टिकलैक [Stick Lac] कहते हैं इसमें तीन प्रकार की लाख सम्मिलित रहती है। इसका ऊपरी भाग लाख की राल का होता है। लाख के दानों के अन्दर के भाग में जहां कीड़े केलि करते है लाख का मोम [Lac Wax] रहता है। कीड़ों के शरीर मिश्रित लाख में लाख का रंग होता है। इस प्रकार स्टिक लाख के अन्दर तीन प्रकार से लाख पाई जाती है। लाख के कुल प्रकार यों हैं।

१—स्टिक लाख—लाख की छोटी, टहनियां।
२—बिड़ली—लाख का चूरा जिसमें मिट्टी और लकड़ियां भी होती हैं।
३—कच्ची चौवरी—बिना धोई दानेदार लाख
४—पक्की चौवरी—धोई दानेदार लाख।
५—मुलम्मा—एक बार की धोई बारीक लाख जिसमें कचरा और बालू भी होती है।

६—कीरी—चपड़ा बनाते समय थैले में जो लाख बच रहती है और मैलकाट कर निकाली जाती है। इसकी टिकिया बनाई जाती है।

७—पसेवा—चपड़ा बनाने के बाद जो लाख थैले में लगी रह जाती है। यह लाख पिघला कर लकड़ी के समान लम्बी कर ली जाती है और गर्म पानी में उबाल कर सोड़े की सहायता से अलग कर ली जाती है।

चपड़े के प्रकार—चपड़े में हरताल मिलाने से उसका रंग सोने का सा चमकीला हो जाता है और राल [Rasin] मिलाने से चपड़ा जल्दी पिघलने वाला हो जाता है। चपड़े के प्रायः तीन भेद प्रधान होते हैं। [१] चपड़ा [२] बटन लेक [३] गार्नेट लेक।

चपड़े की श्रेणी और व्यवसायिक मार्क—व्यवसाय की दृष्टि से बाजार में आने वाले चपड़े में टी० एन० [T.n.] क्वालिटी का चपड़ा अच्छा माना जाता है। यही कारण है कि यह माल बाजार में सबसे अधिक आता है। यह चपड़ा प्रायः पलास की लाख से बनता है और देखने में चमकदार नारंगी रंग का होता है।

१—T.N. [टी. एन.]	इनमें से नं० २ और नं०
२—स्टेण्डर्ड	३ का माल प्रायः T. n.
३—सुपर फाइन	से ऊंची श्रेणी का होता है।

इसके अतिरिक्त कितनी ही कम्पनियों का माल उनके विशेष मार्कों के अनुसार भी बाजार में विशेष श्रेणी का माना जाकर चालू है।

लाख और चपड़े की उपयोगिता

बिजली के समान में, सभी प्रकार की वार्निश तैय्यार करने में, ग्रामोफ़ोन के रेकार्ड बनाने में, जहां लाख का उपयोग होता है वहां हैट बनाने, मोहर लगाने, बटन बनाने, अभ्रक के पर्त जड़ने आदि के काम में भी लाख का प्रयोग होता है। लाख से लीथो की स्याही तैय्यार होती है। नकली रबड़ बनाई जाती है और जूते के साज तैय्यार होते हैं। इसके साथ ही लाख से लाल रंग भी तैय्यार होता है जिसे लाख का रंग कहते हैं।

लाख का रंग—लाख के रंग के सम्बन्ध में लोगों का अनुमान है कि भारत में तो इस रंग का व्यवहार बहुत पुराने समय से था ही पर योरोप में लाख का प्रवेश लाख के रंग के कारण ही हुआ था। टॉमलिनसन्स साइक्लो पिडिया [Tomlins On scyclopaedia] के आधार पर डा० वाल्कर ने लिखा कि लाखके कीड़ों का रंग योरोपवाले भी पहले व्यवहारमें लाते थे। यूनान और रोमके निवासियोंका किमसन नामक लाल रंग भी लाख का ही होता था पर इस सम्बन्ध में सर जार्ज वर्डवुड का मत उपरोक्त डाक्टर के मत से भिन्न है। वे इसे लाख के कीड़ों के स्थान में इसी प्रकार के दूसरे कीड़ों—Kirmig—का रंग बताते हैं। फिर भी यह निश्चय है कि योरोप में लाख ने यदि प्रवेश किया तो अपने लाख रंग केही कारण। योरोप वाले कोचिनियल से लाल रंग तैय्यार करते थे पर जब यह पदार्थ मेक्सिको से आना बन्द होगया तो उन्होंने लाख से लाल रंग बनाने की युक्ति निकाली और इस प्रकार लाख के रंग का व्यवहार योरोप में आरंभ हुआ। योरोप वाले इस रंग से सैनिकों की पोशाक रंगते थे पर कोलतार के रंग का प्रचार बढ़ते ही लाख के रंग को भारी धक्का लगा और थोड़ी ही अवधि में लाख के रंग का व्यवहार सदा के लिये बन्द हो गया। कोलतार के रंग–Aniline dyes–के समान सस्ता और कोई रंग नहीं

होता अतः इसके मुकाबिले में लाख और कोचीनियल दोनो ही प्रकार के रंग का व्यवसाय सदा के लिये रुक गया।

भारत में पुराने समय से लाख के रंग का व्यवहार होता आया है। पर वर्तमान युग में लाख के रंग का वह पूर्वकालीन व्यापार भारत में भी नहीं रह सका। हाँ यहां लाख के रंग से महावर तैयार किया जाता है जिससे हिन्दू ललनायें अपने पैरों को लाल सुकोमल एड़ियों को रंगती हैं। महावर बनाने की सहज विधि यह है कि लाख को पानी में घोल दिया जाता है और फिर इसके रंगीन पानी में रुई भिगो दी जाती है जो फिर सुखा ली जाती है। इसी सूखी हुई रंगीन रुई को महावर कहते हैं।

भारत से लाख का निर्यातः—यों तो भारत से विदेशमें लाख अत्यन्त पुराने समय से बाहर जाती रही है पर आधुनिक ऐतिहासिक प्रमाण पद्धति के अनुसार पुराने समय के निर्यात् अंक उपलब्ध नहीं हैं अतः जब से ऐसे प्रमाण मिलना साध्य होता है तभी से हम इसके निर्यात् की चर्चा करते हैं।

लाख की उपयोगिता का रहस्य ज्यों ज्यों योरोप वालों पर प्रगट हुआ, त्यों त्यों उन लोगों ने इस ओर ध्यान देना आरम्भ किया। यही कारण है कि बंगाल के कासिम बाजार नामक स्थान में रहने वाले मि० ब्राउन नामक एक योरोपियन ने सन् १७९२ ई० में लाख के निर्यात के सम्बन्ध में लिखा था कि यदि बोर्ड की इच्छा हो तो कुछ लाख योरोप भेजी जाय। लाख कलकत्ते में मिल सकती है। इसके बाद योरोप में कोचीनियल का भाव बढ़ जाने के कारण सन् १८१३ ई० से भारत से योरोप लाख जाना सम्भव हुई। सन् १८२० ई० में २ लाख रुपये की लाख योरोप गई थी और सन् १८२४–२५ में यह तादाद ७ लाख की हो गयी। पर कोलतार के रंग का प्रचार होते ही लाख की मांग योरोप में कम हो गई। फिर भी इसके रालदार गुण के कारण चपड़े का निर्यात बहुत शीघ्रता से बढ़ने लगा और आज वह बहुत अधिक परिणाम में भारत से विदेश जाता है।

भारत में लाख के केन्द्रः—

भारत के सभी भूभागों में लाख उत्पन्न होती है पर प्रधानतया नीचे लीखे केन्द्रो में बहुत अधिक परिमाण में पायी जाती है।

मिर्जापुर [यू० पी] बलरामपुर और झालदा [मानभूमि जि०] पकौड़ कोटल पोखर [सन्थाल परगना] दूलिवन प्रतापगंज [मुर्शिदाबाद जि०] इमामगंज [गया जि०] उमरिया [रीवा राज्य] कोटा [विलासपुर] गोंदिया सी० पी डालटन गज [पलामू जि०]

यों तो पलास, कुसुम, बबूल, बेर और गोंद पर लाख अधिक लगती है पर बंगाल मे बेर पर, आसम में अरहर और पीपल पर, बर्मा में पीपल और पलास पर, बिहार-उड़ीसा मे कुसुम और पलास पर, संयुक्त प्रान्त मे पलास पर, मध्यप्रदेश में पलास पर, मध्यभारत में पलास और कुसुम पर, पंजाब में बेर पर, और सिन्ध में बबूल पर ही अधिक होती है।

ऊपर लिखे गये केन्द्रों में और उसके आस पास लाख बहुत अधिक होती है और उन्हीं केन्द्रों में संग्रह कर वहीं के चपड़े के कारखानों में गलाई जाती है। यह चपड़ा कलकत्ता, रंगून, करांची, बम्बई और मद्रास के बन्दरों से संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस तथा अन्य देशों को भेजा जाता है। भारत से यह माल स्टिक लैक, बड़ा दाना लाख और चाड़ा और बटन चपड़ा के रूप में विदेश जाता है।

व्यवसाय का ढंग—भारत से प्राय: T.N. मार्क का ही चपड़ा विदेश जाता है। लन्दन में भारत के चपड़े के नमूने को स्टेण्डर्ड स्वरूप दिया जाता है और T.N. के आधार पर माल की सूचना दी जाती है। न्यूयार्क लन्दन के आधार पर N.Y.T.N. का मार्का बनाता है जिसमें T.N. का तीन प्रतिशत करदा काटकर N.Y. जोड़ा जाता है। लाख में मिलावट की रोक जोरों से हो रही है। ब्रिटेन का कन्ट्राक्ट C.I.F. पर और अमेरिका का C.E. पर होता है। चपड़ा सन्दूक या दोहरे बोरों में भरकर दो मन या डेढ़ मन या डेढ़ हण्डरवेट वजन से भरा जाता है। बाजार में मन वजन चलता है। ब्रिटेन को हण्डरवेट के हिसाब से और अमेरिका को रतल पर चपड़ा भेजा जाता है।

लाख का निर्यात-व्यापार

भारत में लाख की उपज मुख्यत: निर्यात के लिए होती है। प्राय: २५ ९५ प्रतिशत लाख विभिन्न देशों को भेज नी जाती है। भारतीय लाख मगाने वाले देशों में उल्लेखनीय है अमेरिका, इंगलैंड, जापान चीन, स्वीडन, ब्राजील, अर्जेण्टाइना और रूस।

१९३६-३७ में लाख का अधिकतम निर्यात हुआ। इस वर्ष ८,२३,९६४ हण्डरवेट लाख बाहर भेजी गयी। किन्तु मूल्य की दृष्टि से १९५१-५२ वर्ष सबसे आगे रहा। इस वर्ष १४,८४,०३,५९९ रुपये के मूल्य की लाख बाहर भेजी गयी। १९४६-४७, १९५०-५१ और १९५४-५५ प्रत्येक वर्ष में १० करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की लाख का निर्यात हुआ।

लाख का सबसे कम निर्यात १९४३-४४ और १९४२-४३ में हुआ। इन दो वर्षों में क्रमश २,२१,२५७ हण्डरवेट लाखका निर्यात हुआ। विदेशी मुद्राकी कमाई की दृष्टि से १९३१-३३, १९३४-३५ १९३६-४० सबसे पीछे रहे। इन वर्षों में २ करोड़ रुपये से भी कम मूल्य की लाख बाहर भेजी गयी।

गत २५ वर्षों में मूल्य की अपेक्षा लाख के निर्यात के परिमाण में बहुत कम उतार-चढ़ाव हुआ है। निर्यात का परिमाण सामान्यत: ४ लाख और ७ लाख हण्डरवेट के बीच रहा, किन्तु मूल्य में उतार चढ़ाव २ करोड़ और ९ करोड़ रुपये के बीज होता रहा। मूल्य की दृष्टि से आलोच्य काल दो भागों में बांटा जा सकता है। पहला, १९३१ से १९४६ तक और दूसरा १९४६ से १९५६ तक। पूर्व भागमें लाख से आय ५ करोड़ रुपये से कम रही और उत्तर भ ग में ६॥ करोड़ रुपये से अधिक।

युद्ध पूर्व और युद्धोत्तर काल में लाख के निर्यात में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। युद्ध के बाद रूसने, जो पहले लाख नहीं खरीदता था अब लाख मँगवाना शुरू कर दिया है। उधर हांगकांग, चीन, हिन्देशिया और आस्ट्रेलिया में लाख का निर्यात पर्याप्त मात्रा में घट गया है। इसी प्रकार युद्धोत्तर काल में बेलजियम, नीदरलैण्ड और जर्मनी के निर्यात में भारी कमी हो गयी है।

नकली लाख से मुकाबला

पिछले कुछ वर्षों में भारतीय लाख को थाई देश की लाख तथा नकली लाख की प्रतियोगिता भी करना पड़ रहा है। इनके मुकाबले में भारतीय लाख के निर्यात में कमी होने के प्रमुख कारण हैं— श्याम में लाख उत्पादन में वृद्धि, श्याम और अमेरिका के बीच लाख का सीधा व्यापार, भारत में लाख का अस्थिर मूल्य, उचित प्रतिमानो का अभाव, नकली लाख से मुकाबला और भारत में खपत।

श्याम की लाख तथा नकली लाख का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए यह आवश्यक है कि सस्ते एवं स्थिर भावों पर अच्छी किस्म की लाख सुलभ की जाय। मूल्य ऊंचे न उठें इसके लिए उत्पादन बढ़ाना भी जरूरी है।

लाख निर्यात की वृद्धि के उपाय ढूंढने के लिए एक निर्यात-वृद्धि परिषद् की स्थापना की जा रही है। आशा है कि परिषद सुझाये गये उपायों के क्रियान्वित होने पर लाख की मांग में वृद्धि होगी और विदेशी मण्डियों में लाख व्यापार को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है उनका भी पर्याप्त मात्रा में निराकरण हो सकेगा।

लाख का निर्यात के १२ वर्ष के आंकड़े

साल	तौल मन	मूल्य
१९४१-४२	१०,४३,०६१	४,९१,७३,९३६
१९४२-४३	४,२७,२३१	२,६६,१६,६३६
१९४३-४४	३,२१,२३५	२,२९,५४,६८८
१९४४-४५	५,९५,९२२	४,३२,१६,०१३
१९४५-४६	५,९०,६११	४,३३,२२,०२५
१९४६-४७	६,२३,४६३	११,१६,०१,६२५
१९४७-४८	७,३७,८८२	९,११,३६,६५३
१९४८-४९	६,६६,२०९	८,६७,८१,४१७
१९४९-५०	६,२१,०३३	८,०८,४५,०२७
१९५०-५१	९,०१,२७५	११,८७,५२,१६१
१९५१-५२	९,७२,१८२	१,४८,४०,३५९९
१९५२-५३	९,१३,२५०	७,४१,७८,३९३
१९५३-५४	७,३१,९७६	६,६९,६७,८८०

लाख उद्योग का विकास-आयोजन बनाने के लिए यह आवश्यक है पहले इस उद्योग की समस्याओं पर विचार कर लिया जाय। मोटे तौरसे इन समस्याओं को निम्नलिखित भागों में बांटा जा सकता है—१ भाव की स्थिरता, २—लाख का उत्पादन, ३—बिक्री, ४—विदेशों में लाख की खपत, ५—गवेषणा, विशेष वैज्ञानिक ढंग से लाख का उत्पादन निर्माण तथा उपयोग।

भाव की स्थिरता

लाख उद्योग के बारे में जितनी समितियाँ बनीं, सभी ने अपने प्रति वेदनों में लाख के भावों के उतार-चढ़ाव पर चिंता प्रकट की है। फाटका, भावमें कमी-वेशी, दूसरे उद्योगों पर निर्भरता, विदेशों की मांग पर अधिक निर्भर तथा वार्षिक उत्पादन मे काफी वृद्धि अथवा कमी इन सबके कारण लाख का भाव घटता-बढ़ता रहता है।

खुशी की बात है कि भारत सरकार ने २७ दिसम्बर १९५५ से इसके फाटके पर प्रतिबन्ध लगा दिया है। आवश्यक है कि भविष्य मे भी यह प्रतिबन्ध लगा रहे और इसका कड़ाई से पालन किया जाय।

चपड़ा निर्माता तथा व्यापारी

प० बंगाल

आर० आर० मोदी, २३, कैनिंग स्ट्रीट, कलकत्ता

ए० एम० आरथून लि०, ११, स्टीफेन हाउस, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ता

ए० एस० इस्पहानी एण्ड संस, ५१, एजरा स्ट्रीट, कलकत्ता

ए० सी० मुखर्जी एण्ड कं०, २, ग्रांट लेन, कल०

एफ० एण्ड ओ० लैंग, स्टीफेन हाउस, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ता

एंजेलो ब्रदर्स लि०, ६, लियान्सरेंज, कलकत्ता

जे० थामस एंड कं०, ८, मिशन रो, कलकत्ता

टर्नर मारिसन एंड कं०, ६, लयान्स रेंज, कल०

टालीगंज शेलाक फैक्ट्री, ६, लयान्स रेंज, कल०

डेविड जैकोब एंड कं०, स्टीफेन हाउस, डलहौसी स्क्वायर, कलकत्ता

डान एंड कं०, ११, पुर्तगीज चर्च स्ट्रीट, कल०

हीरालाल अग्रवाला एंड कं० ४-५, हेयर स्ट्रीट, कलकत्ता

उत्तर प्रदेश

अनंतराम गणेशप्रसाद, वदलीकत्र, मिर्जापुर

वदलीकत्र लैक फैक्ट्री, वदलीकत्र, मिर्जापुर

बयदेवप्रसाद सरजूप्रसाद, मुजफ्फरगंज मिर्जापुर

विठलनाथ नटवरनाथ, मिर्जापुर

बुद्धराम एण्ड भगवानदास, भसियाटोला, मिर्जापुर

रूखरघाट कं० लि०, रूखरघाट, मिर्जापुर

रामदास एंड विहारीलाल, गनेशगंज, मिर्जापुर

सुरजीवनलाल एंड महावीरप्रसाद, गनेशगञ्ज, मिर्जापुर

अन्य

ए० एस० अराथून्स शैलेक फैक्ट्री, झालदा, मानभूम

एच० जे० अपकर शैलाक फैक्ट्री, झालदा, मानभूम

मुरहू लेक फैक्ट्री, मुरहू, रांची

रीवां स्टेट शलाक फैक्ट्री, उमरिया, रीवां

हिन्दपीड़ी लेक फैक्ट्री हिन्दपीड़ी, पाकुर



भारत का औद्योगिक विकास

Industrial Development of India



भारत में बीमा उद्योग का विकास



Development of Insurance Componies in India

भारत में बीमा उद्योग का विकास

पूर्वइतिहास

बीमा उद्योग का प्रारम्भ संसार में सबसे पहले कहां, कब और कैसे हुआ इसका कोई प्रामाणिक इतिहास इस समय उपलब्ध नहीं है।

मगर इतना अनुमान अवश्य किया जाता है कि बीमा उद्योग में सबसे पहले समुद्री-बीमा का उद्योग अस्तित्व में आया। ऐसा कहा जाता है कि ईसा के करीब एक हजार वर्ष पहले फोनीसिया और रोड्स में समुद्री बीमा का प्रारम्भ हो चुका था। ग्रीस के अन्दर ईसा के चार सौ बरस पहले एक ऐसी बीमा पद्धति का प्रचलन प्रारम्भ हो गया था। जिसमें आधुनिक बीमा व्यवसाय के कुछ लक्षण मिलते थे।

मगर सामुद्रिक बीमा के इस उद्योग को व्यवसायिक बुनियाद पर स्थापित करने का श्रेय यहूदियों को दिया जाता है जिन्होंने सन् ११८२ में फ्रान्स से निर्वासित होने के बाद इस व्यवसाय को कुछ वैज्ञानिक पद्धति पर प्रारम्भ किया।

इसके पश्चात् इटाली वालों ने इस व्यवसाय को और अधिक वैज्ञानिक रूप दिया। चौदहवीं शताब्दी तक फ्लोरेंस जिनेवा, वेनिस, लम्बार्डी इत्यादि प्रमुख व्यापारिक क्षेत्रों में बीमा पत्रों का प्रयोग शुरू हो चुका था। क्रमशः धीरे २ मगर थोड़े समय में ही अन्य देशों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध होने से बीमा का प्रचार इटली से बेलजियम, हालेण्ड, स्पेन, जर्मनी, इंगलैण्ड इत्यादि देशों में हुआ।

सन् १३१० में बेलियम के एक नगर में चेम्बर ऑफ इन्स्यूरेंस नामक संस्था की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य सामुद्रिक दुर्घटनाओं का बीमा करना था। इंगलैण्ड में महारानी एलिजाबेथ के राज्यकाल में सामुद्रिक बीमे का वैज्ञानिक ढङ्ग पर संगठन हुआ।

सामुद्रिक बीमा के पश्चात् अग्नि-बीमा का विकास हुआ। वर्तमान रूप में सबसे पहले सोलहवीं सदी में इसका प्रारम्भ जर्मनी में हुआ। वहां से इसका प्रचार इंगलैण्ड में हुआ। सन् १६६६ में लन्दन के अन्दर एक भयंकर अग्निकाण्ड हुआ। इस अग्निकाण्ड के पश्चात् ही इंगलैण्ड में अग्नि-बीमा का तेजीसे विकास हुआ और सन् १६८१ में-लन्दनमें फायर इन्स्यूरेंस आफिस की स्थापना हुई। इसके पश्चात् अग्नि-बीमा ने भी वैज्ञानिक रूप ग्रहण किया और कई नई २ कम्पनियां स्थापित होने लगी।

अग्नि-बीमा का विकास होने के करीब सौ वर्ष पश्चात् जीवन-बीमा पद्धति का आविष्कार हुआ। मगर मनुष्य जीवन की क्षणभंगुरता के कारण इस पद्धति को वैज्ञानिक रूप देने में काफी समय लगा। अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक मृत्यु संख्यक तालिका (Mortality Tables) के बारे में कोई महत्वपूर्ण खोज नहीं हुई थी जिसकी कि जीवन-बीमा में सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता रहती है।

मगर इस तालिका की खोज हो जाने के पश्चात् जीवन-बीमा ने मजबूती के साथ वैज्ञानिक आधार पकड़ लिया और उसके पश्चात ही इसका इतनी तेजी से प्रचार हुआ कि इसने सभी दूसरे बीमा व्यवसायों को पीछे रख दिया।

इन तीन बीमा प्रणालियों के पश्चात् और भी कई प्रकार की बीमा प्रणालियां अस्तित्व में आई जिनके नाम इस प्रकार हैं—

१—जीवन बीमा (Life Insurance)
२—अग्नि बीमा (Fire Insurance)
३—सामुद्रिक बीमा (Marine Insurance)
४—दुर्घटना बीमा (Accident Insurance)
१—व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा
२—सम्पत्ति दुर्घटना बीमा
३—दायित्व बीमा (Libality Insurance)
५—सामाजिक बीमा (Social Insurance)
१—व्याधि बीमा (Sickness Insurance)
२—प्रसूति बीमा (Maternity Insurance)
३—औद्योगिक दुर्घटना बीमा (Industrial Accident)
४—अनौद्योगिक दुर्घटना तथा असामर्थ्य बीमा (Nan-Industrial & Invalidity Insu.)
५—वृत्तिहीनता बीमा (Unemploymen Insu.)
६—वृद्धावस्था बीमा (Oldage Insu.)

इस प्रकार जीवन के हर एक क्षेत्र में और मानवीय सुविधाओं के प्रत्येक पहलू में बीमा-उद्योग ने अपनी उपयोगिता सिद्ध करके प्रवेश किया।

भारत में बीमा उद्योग का प्रारम्भ

भारत में बीमा उद्योग का इतिहास अधिक पुराना नहीं है। उन्नीसवीं सदी के अन्त तक भारतवर्ष का बीमा-व्यवसाय अपने विकास की प्रारम्भिक अवस्था में था। विशेष कर कुछ विदेशी कम्पनियां ही यहां पर इस कार्य्य को करती थीं। सबसे पहले देशी उद्योग पतियों का ध्यान जीवन-बीमा उद्योग की ओर सन् १८७० से आकर्षित हुआ और सबसे पहले सन् १८७१ में बाम्बे म्यूच्यूअल और १८७४ में ओरियण्टल लाईफ इन्स्यूरेंस कम्पनी की स्थापना हुई।

उसके पश्चात् जीवन बीमा क्षेत्र में तेजी से प्रगति होने लगी और सन् १९१२ में भारत-सरकार ने प्रावीडेण्ड इन्स्यूरेंस सोसायटी एक्ट और इण्डियन लॉइफ इन्स्यूरेंस कम्पनीज एक्ट को पास किया। इन दोनों कानूनों के द्वारा इस व्यवसाय को नियंत्रण में लिया गया।

फिर भी यह कहा जा सकता है कि सन् १९११ के इन दोनों विधानों से बीमा व्यवसाय पूरी तरह नियंत्रण में नहीं आया।

सन् १९१४–१८ के महा युद्ध के समय सामुद्रिक तथा अग्नि दुर्घटना बीमा का तेजी से विकास हुआ। और उनको नियंत्रित करने के लिए कानूनी आधार की आवश्यकता पड़ी। इसके फल स्वरूप इंग्लैण्ड की क्लॉसन समिति की रिपोर्ट के आधार पर सन् १९२९ में धारा समासें इण्डियन इन्स्युरेंस कम्पनीज ऐक्ट को पास किया गया। फिर भी यह ऐक्ट सर्वाङ्गीण नहीं था और अपने उद्देश्य को सफल करने में पूर्ण समर्थ नहीं था इसलिए बीमा सम्बन्धी एक व्यापक कानून की मांग विधान सभा में ज्यों की त्यों बनी रही।

सन् १९३५ में सरकार ने श्री सुशील चन्द्र सेन को बीमा का स्पेशल ऑफिसर नियुक्त करके यह आदेश दिया कि भारत वर्ष के बीमा व्यवसाय सम्बन्धी विधान को पुनः अध्ययन करके उसमें आवश्यक सुधारों की सिफारिश करते हुए एक रिपोर्ट पेश करें। नवम्बर सन् १९३५ में उन्होंने अपनी रिपोर्ट पेश की। इस रिपोर्ट के आधार पर विधान परिषद के विचारार्थ एक बिल पेश करने का भार सर नृपेन्द्रनाथ सरकार को सौंपा गया और उनकी सहायता के लिए देशी विदेशी प्रतिनिधियों की एक एडवाइजरी कमेटी बनाई गई। इस कमेटी की सिफारिश के अनुसार सन् १९३९ की पहली जुलाई से इण्डियन इन्स्युरेंस एक्ट अमल में आना प्रारम्भ हुआ।

यह कानून सभी प्रकार के बीमा व्यवसायों पर लागू है इसमें वस्तुतः प्रशासन सम्बन्धी नियमों का ही उल्लेख है और बीमा व्यवसाय के नियंत्रण का सम्पूर्ण अधिकार केन्द्रीय सरकार के हाथ में रक्खा गया है। केन्द्रीय सरकार एक बीमा अधिक्षक को नियुक्त कर उसके अनुसार ऐक्ट में निर्देशित सम्पूर्ण प्रशासन कार्य सम्पादित करती है।

इस प्रकार धीरे २ मगर मजबूत गति से हमारे यहां का बीमा व्यवसाय उन्नति के पथ पर अग्रसर होता गया जिसके क्रमागत विकास का ज्ञान आगे दी हुई अंक सारिणियों से होगा।

सन् १९५४ में बीमा उद्योग की प्रगति

१९५४ में भारतीय बीमा कम्पनियों ने लगभग ६ लाख ८३ हजार पालसियां बेची, जिसके द्वारा २ अरब १३ करोड़ ३२ लाख रुपए का बीमा किया गया और इनसे १० करोड़ ६७ लाख रुपए की वार्षिक किस्तें आएंगी। इस वर्ष भारत में व्यापार करने वाली विदेशी बीमा कम्पनियों ने लगभग २२ हजार पालिसियां बेचीं और १६ करोड़ २२ लाख रुपए के मूल्य का बीमा किया। विदेशी कम्पनियों को किस्तों से ९४ लाख रुपए वार्षिक की आय होगी। ये आंकड़े इंडियन इंश्योरेंस ईयर बुक, १९५५ में दिए गये, जिसे भारत सरकार के बीमा नियन्त्रक ने प्रकाशित किया है।

जीवन बीमा

१९५३ से १९५४ में लगभग १ लाख ४४ हजार पालिसियां अधिक बेची गई और ७५ करोड़ १४ लाख रुपए का बीमा कराया गया। इसके अलावा वार्षिक किस्तों की आय में भी ३ करोड़ २९ लाख रुपये की वृद्धि हुई। विदेशी कम्पनियों के जीवन बीमा व्यापार में पिछले साल से कुछ कमी हुई है।

१९५४ के अन्त में भारतीय बीमा कम्पनियों की ४० लाख ६९ हजार पालिसियां चालू हालत में थीं और इसके द्वारा ९ अरब २१ करोड़ ९० लाख रुपए का बीमा किया हुआ था। इन पालिसियों से सब कम्पनियों को ४२ करोड़ ६८ लाख रुपए की वार्षिक आय थी। इस प्रकार इन आँकड़ों से पता चलता है कि बीमे की हर मद में पिछले साल से वृद्धि हुई। विदेशी कम्पनियों की पालिसियों की संख्या पिछले साल से ७ हजार और किश्तों की आय ३१ लाख रुपए कम रही, पर उनके जरिये ३ करोड़ ९० लाख रुपए का बीमा पिछले साल से अधिक कराया गया।

१९५४ में भारतीय कम्पनियों ने विदेशों में १७ करोड़ ४६ लाख रुपए की लगभग ३२ हजार पालिसियाँ बेचीं और इस साल के अन्त तक ८५ करोड़ ३ लाख रुपए के मूल्य की लगभग २ लाख ७४ हजार पालिसियां चालू हालत में थी।

इस साल भारतीय बीमा कम्पनियों को जीवन बीमे के व्यापार से कुल ५८ करोड़ १ लाख रुपए की आय हुई। विदेशी कम्पनियों को जीवन बीमे से ६ करोड़ ३८ लाख रुपये की आय हुई। इसी अवधि में भारतीय कम्पनियों ने दावों और पालिसियां छोड़ने (सरेंडर) पर ३१ करोड़ ७० लाख रुपये का और विदेशी कम्पनियों ने ७ करोड़ ४१ लाख रुपये का भुगतान किया। इस प्रकार देशी कम्पनियों के जीवन बीमा कोष में २७ करोड़ २१ लाख रुपये की और विदेशी कम्पनियों के जीवन बीमा कोष में १ करोड़ ६७ लाख रुपये की वृद्धि हुई।

नया रुख

नियन्त्रक ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि १६५४ में जीवन बीमे में काफी वृद्धि हुई है। यह वृद्धि मुख्यतः इस कारण दिखाई देती है कि किश्तों की दर कम हो जाने से लोगों ने अपनी पुरानी पालिसियां परिदत्त (पेडअप) कर नई पालिसियां लीं। इस कारण जो वृद्धि हुई यदि उसको निकाल भी दें, तो भी, जीवन बीमे में पर्याप्त वृद्धि हुई है। किस्तों की दर में कमी होने से बीमा व्यय भी कम हुआ है क्योंकि देश में लोगों की औसत आय बढ़ी है और कम्पनियों को व्याज से जो आय होती है, उसमें भी वृद्धि हुई। यह व्यापार की दृष्टि से अच्छा लक्षण है।

इस वर्ष भारतीय और विदेशी कम्पनियों का प्रबन्ध व्यय किश्तों से होने वाली आय का २९.३ प्रतिशत रहा। १९५३ में प्रबन्ध व्यय इस आय का क्रमशः २७.४ प्रतिशत और २०.७ प्रतिशत था।

आग आदि का बीमा

बीमा-नियन्त्रक ने अपने प्रतिवेदन में कहा है कि १६५४ में आग दुर्घटना आदि के बीमे-व्यापार में सबसे महत्वपूर्ण बात, आग के बीमे की किस्तों की दरों में कमी है। इस तरह के बीमे की कुल किस्तों की आय में तो इस साल कुछ कमी हुई पर वास्तविक आय पिछले साल से बढ़ी है। भारतीय बीमा कम्पनियों ने विदेशों में आग दुर्घटना आदि का बीमा पिछले साल से तो अधिक किया। पर अभी इस व्यापार की स्थिति सन्तोषजनक नहीं कही जा सकती। इस तरह के बीमे का भारतीय कम्पनियों का का देशी व्यापार ८ करोड़ ९७ लाख रु० का और विदेशी व्यापार ६ करोड़ ९६ लाख रु० का हुआ। विदेशी कम्पनियों की वास्तविक आय ६ करोड़ ४१ लाख रु० और कुल ८ करोड़ ८१ लाख रु० रही।

आग के बीमे के दावे, (भारतीय और विदेशी, दोनों तरह की, कम्पनियों के किस्तों की आय के ३१ प्रतिशत, समुद्री बीमे के दावे किस्तों की आय के ५७ प्रतिशत और अन्य प्रकार के बीमे के दावे आय से ४८ प्रतिशत रहे। १९५३ में यह अनुपात क्रमशः ३५, ५७ और ४९ प्रतिशत था।

आग बीमे में किस्तों की आय का १६ प्रतिशत, समुद्री बीमे में ८ प्रतिशत और अन्य प्रकार के बीमे में १६ प्रतिशत कमीशन दिया गया। पिछले साल आग बीमे में १५ प्रतिशत कमीशन दिया गया था और बाकी दोनों की दर यही थी।

किस्तों की वास्तविक आय के अनुपात से प्रबन्ध व्यय, जीवन बीमे में ३४ प्रतिशत (१९५३ में ३३ प्रतिशत), समुद्री बीमे में २६ प्रतिशत (१६५३ में २८ प्रतिशत) और अन्य प्रकार के बीमे में २८ प्रतिशत (१९५३ में २८ प्रतिशत) रहा।

१६५३ में जीवन बीमा करने वाली ८४ कम्पनियों और दूसरे प्रकार का बीमा करनेवाली ८३ कम्पनियों ने बीमा नियमों में निर्धारित परिमाण से अधिक खर्च किया। इनमें से ५२ भारती और ६

विदेशी कम्पनियां थीं। बीमा-नियन्त्रक ने नियम उल्लंघन करने वाली कम्पनियों चेतावनी दी। प्रतिवेदन में कहा गया है कि अधिक खर्च करने वालों में सबसे अधिक संख्या जीवन बीमा करने वाली कम्पनियों की है। अन्य कम्पनियों का स्थान उनके बाद आता है।

समायन और स्थानांतरण

प्रतिवेदन में कहा गया है कि जीवन बीमा करने वाली ४ कम्पनियां और प्राइवेट बीमा करने वाली २ सोसायटियों, का बीमा का काम दूसरों को दे दिया गया। दो बीमा कम्पनियों और ३ प्रावीडेंट सोसायटियों का काम अदालतों के आदेश से बन्द किया गया। एक बीमा कम्पनी और एक प्रावीडेंट सोसायटी ने स्वेच्छा से अवसायन कर दिया। एक कम्पनी के लिए अस्थायी अवसायक (लीक्विडेटर) नियुक्त किया गया।

केन्द्रीय सरकार ने भारत इंश्योरंस कम्पनी लि० के लिए प्रशासक नियुक्त किया। इस समय ७ कम्पनियां प्रशासकों के हाथ में है। बीमा नियन्त्रक ने कहा है कि पालसियों के दावेदारों और कम्पनियों के मेरे पास भेजे जाने वाले झगड़ों में वृद्धि हुई है। अधिकांश झगड़े दावों के भुगतान में देर होने के कारण नियन्त्रक के पास गये। बिना किसी खास कारण के भुगतान में देर करने के रवैये की प्रतिवेदन में बहुत निन्दा की गई है।

१९५४ में १,१९,२६८ नये एजेंटों को लाइसेंस दिये गये। इनमें से ३८,४०९ या ३२.२ प्रतिशत स्त्रियां थीं। इनके अलावा ८५७ प्रिंसिपल एजेंटों' ३९६ चीफ एजेंटों और ५,०७३ स्पेशल एजेंटों को प्रमाण-पत्र जारी किये गये।

इंश्योरेंस सोसियशन

प्रतिवेदन में इस बात को स्वीकार किया गया है कि भारत के इंश्योरेंस एसोसियेशन की कार्यकारिणी समिति ने बीमा कम्पनियों के लिए जो एक प्रकार की 'आचरण संहिता' बनाई थी, उसका आम बीमे के व्यापार की बुराइयों पर अच्छा प्रभाव पड़ा है यह ठीक है कि एजेंटों को अधिक कमीशन देने, किश्त में छूट (रिबेट) देने आदि की बुराइयाँ बहुत हद तक दूर नहीं हुई हैं। समिति ने एजेण्टों के कमीशन के हिसाब के लिये एक नया फार्म निकाला है। समिति देश में दुबारा बीमा करने का एक निगम स्थापित करने का भी विचार कर रही है।

प्रावीडेंट सोसाइटियां

अक्टूबर, १९५५ के अन्त में देश में बीमा अधिनियम के अन्तर्गत ७१ प्रावीडेंट सोसायटियां पंजीबद्ध थी। १९५४ में इन सोसायटियों ने १ करोड़ २५ लाख ६२ हजार रु० की १५,७२८ पालिसियां वेचीं। पिछले साल से १६,२४ लाख रु० की २,३१५ पालिसियाँ अधिक वेची गई। इस वर्ष के अन्त में ४ करोड़ १७ लाख १९ हजार रु० की ६५,३९२ पालिसियाँ चालू हालत में थीं।

जीवन-बीमा उद्योग का राष्ट्रीय करण

तारीख १९ जनवरी सन् १९५६ को भारत के राष्ट्रपति ने एक अध्यादेश प्रकाशित करके "जीवन बीमा उद्योग" के राष्ट्रीयकरण का निर्णय घोषित कर दिया।

उक्त अध्यादेश "जीवन बीमा अध्यादेश" सन् १९५६ है जिसमें सरकार को तत्काल जीवन बीमा व्यापार जिसमें भारतीय बीमा व्यवसायियों का विदेशी व्यापार तथा विदेशी बीमा व्यवसायियों का भारत स्थित व्यापार भी शामिल है का सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किया गया है।

जहां तक जीवन-बीमा व्यापार का सम्बन्ध है उसकी पूरी व्यवस्था इस अध्यादेश के बाद केन्द्रीय सरकार ने अपने नियंत्रण में लेली है। जो कम्पनियां जीवन-बीमे के सिवाय अन्य प्रकार का व्यापार भी करती हैं उनका केवल जीवन बीमा व्यापार ही सरकार के हाथ में जावेगा। प्राविडेण्ड फण्ड सोसायटियों के सम्पूर्ण व्यापार पर भी इसका प्रभाव पड़ा है।

राष्ट्रपति द्वारा जारी किये गये जीवन-बीमा अध्यादेश से १४९ भारतीय तथा १६ विदेशी कम्पनियों पर प्रभाव पड़ा है।

बीमा कण्ट्रोलर को ३१ अक्टूबर १९५५ तक के आंकड़े प्राप्त हैं। उनके अनुसार उस दिन केवल जीवन-बीमा करने वाली १०९ भारतीय तथा ३ विदेशी कम्पनियां थीं। इन कम्पनियों के व्यवसाय की सारी व्यवस्था अब सरकार के हाथमें चली गई है। इनके अलावा ४० भारतीय तथा १३ विदेशी कम्पनियां ऐसी हैं जो जीवन-बीमें के साथ दूसरे बीमा-व्यवसाय भी करती हैं। इन कम्पनियों का केवल जीवन-बीमा व्यवसाय ही सरकार के हाथ में गया है।

जीवन बीमा कोष के ३१ दिसम्बर १९५४ तक के जो आंकड़े कण्ट्रोलर को प्राप्त हैं उनके अनुसार भारतीय कम्पनियों की कुल जीवन-बीमा पूंजी ३०१.३२ करोड़ रुपया और विदेशी कम्पनियों की ५०.९१ करोड़ रुपया है।

जीवन बीमा निगम

भारतीय जीवन बीमा के इतिहास में १ सितम्बर सन् १९५६ के दिन का विशेष महत्व है क्यों कि पार्लियामेंट से पास होकर जीवन-बीमा कानून इस दिन से इस देश में चालू हुआ।

जीवन-बीमा के सम्बन्ध में गणतंत्र भारत ने जो कार्य्य किया है वह दुनिया में अपने ढङ्ग का एक अनूठा कार्य्य है। शायद ही संसार में कोई ऐसा देश होगा जहां कोई कानून जीवन बीमा व्यापार को एकाधिकार के रूप में संचालन कर रहा हो। अतः हमारे देश को इस बात का पूरा ध्यान रखना है कि संसार में किया हुआ हमारा यह पहला परीक्षण पूर्ण रूप से सफल हो।

जीवन-बीमा निगम कानून में कहा गया है कि जीवन-बीमा का नियंत्रण करने के लिए पांच मण्डल बनाये जांय। जिनके प्रधान कार्यालय बम्बई, कलकत्ता। मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रक्खेजांय। इनके अन्तर्गत सारे देशमें ३३ डिविजन कार्यालय खोले जांय। इन कार्यालयों के अन्तर्गत करीब १८० शाखाएं होंगी। उद्देश्य यह है कि देश के प्रत्येक पॉलिसी होल्डर को वह चाहे जहां रहता हो अपने निकट कोई शाखा अवश्य मिल जाय।

चालू पालिसियां

इस समय कुल लगभग ५० लाख पॉलिसियां चालू हैं और पूरे समय के कर्मचारियों की संख्या २७००० है। इनमें से अधिकांश बम्बई, कलकत्ता, मद्रास और दिल्ली में हैं जहां नये डिविजनल कार्यालय खुले हैं वहां प्रधान कार्यालयों के प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या का बहुत कम है। उत्तर प्रदेश और प्रस्तावित मध्य प्रदेश के क्षेत्र में पहले बहुत कम कार्यालय थे। अतएव वहाँ प्रधान कार्यालयों के प्रशिक्षित कर्मचारियों की बहुत कमी है, दूसरी ओर बम्बई में जहाँ देश का अधिकांश बीमा व्यापार

होता है ऐसे कर्मचारियों का बहुत आधिक्य है। अतएव वहाँ से कर्मचारियों का इधर तबादला करना आवश्यक हो गया है, मगर तबादला करने में कर्मचारियों की सुविधाओं का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

इस प्रकार एक नवीन भावना, नवीन अनुभव और नवीन उत्साह के साथ गणतंत्र भारत की सरकारने जीवन-बीमा उद्योग के राष्ट्रीय करण का कदम उठाया है। यह प्रयोग आगे जाकर क्या रूप लेगा इसका निर्णय तो भविष्य ही करेगा, मगर भविष्य का अनुमान लगाने वालों में दो प्रकार की विचार धाराएं हैं। एक विचार धारा बीमा उद्योगपतियों की तथा उनके समर्थकों की है जिनके मतानुसार पारस्परिक प्रति स्पर्द्धा की भावनाएं समाप्त हो जाने से उद्योग में बहने वाला जीवनप्रवाह समाप्त हो जायगा और बीमा उद्योग में जड़ता आजावेगी। दूसरी विचार धारा राष्ट्रींय विचार धारा के समर्थकों की है जिनके मतानुसार यह उद्योग राष्ट्रीय सम्पत्ति का रूप धारण करके योग्य व्यवस्थापकों की व्यवस्था में दिन प्रतिदिन उन्नति करता रहेगा।

जीवन बीमा-कम्पनियों का व्यापर

व्यापार के नये आँकड़े

निम्न सारिणी में गत दस वर्षों में जीवन बीमा कम्पनियों के द्वारा जो नया व्यापार किया गया है उसके आँकड़े दिये गये हैं

(आँकड़े करोड़ की संख्या में)

वर्ष	कुल धन का बीमा: भारतीय बीमा करने वाली कम्पनियाँ	कुल धन का बीमा: विदेशीय बीमा करने वाली कम्पनियाँ	कुल योग
१९४५	१२३.७	१२.६	१३६.३
१९४६	१४०.६	१२.९	१५३.८
१९४७	१२६.५	१३.१	१३९.६
१९४८	१२१.७	१२.६	१३४.६
१९४९	१३०.०	१२.२	१४२.२
१९५०	१२५.८	१३.७	१३९.५
१९५१	१३१.४	१६.५	१४७.९
१९५२	१३०.३	१६.४	१४६.७
१९५३	१३८.२	१७.०	१५५.२
१९५४	२१३.३	१६.२	२२९.५

भारत में बीमा कम्पनियों की सूचि

जीवन वीमा करने वाली कम्पनियों के आगे (L) अग्नि वीमा करने वाली कम्पनियों के आगे (F) और समुद्र बीमा करने वाली कम्पनियों के आगे (M) संकेत चिन्ह तथा विभिन्न प्रकार के वीमा करने वाली कम्पनियों के आगे (S) संकेत चिन्ह लगाये गए हैं।

१ आदर्श बीमा कम्पनी लि० (L) अलाहाबाद
२ एडवान्स इन्शोरेन्स कम्पनी लि० ※ (F) बम्बई
३ अजय म्युचअल कार्पोरेशन लिमिटेड (L) आगरा
४ एल्को इन्शोरेन्स कम्पनी लि० (F. S.) बम्बई
५ ऑल इण्डिया को-आपरेटिव फायर एण्ड जनरल एशोरेन्स सोसायटी लि० (F. S.) बम्बई १
६ ऑल इण्डिया जनरल इन्शोरेन्स कम्पनी लि० (L. F. M.) बम्बई
७ ऑल इण्डिया मोटर ट्रान्सपोर्ट (S.) म्युचअल इन्सोरेन्स कम्पनी लि० पूना २
८ आनन्द इन्शोरेन्स कम्पनी † (F.M.S.) बम्बई
९ आन्ध्र इन्शोरेन्स कम्पनी लि० (L. F. M. S.) मछली पंट्टम
१० आर्गस इन्शोरेन्स कम्पनी लि० (L) अहमदाबाद
११ अरूणोदय मेरीन इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड M. (C. C.) बम्बई ६
१२ आर्यन चेम्पीयन इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड (L) बम्बई
१३ आर्यस्थान इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड (L) कलकत्ता
१४ आर्य इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड (L) कलकत्ता
१५ एशियन इन्शोरेन्स कम्पनी लि० (L) बम्बई
१६ एशियाटिक लाइफ एण्ड जनरल एशोरेन्स कं० लि० (L. F. M. S.) बंगलोर-सिटी
१७ एशोशिया को गोआना डो मुटुओ आक्सीलिओ लि० (L) बम्बई
१८ ऑध्र म्युचअल लाइफ एन्शोरेन्स सोसायटी लि० (L) पूना
१९ बंगलक्ष्मी इन्शोरेन्स लि० (L) कलकत्ता
२० बिहार युनाइटेड इन्शोरेन्स लि० (L) पटना३
२१ बंगाल क्रिश्चियन फेमिली पेन्शन फण्ड लि० (L) कलकत्ता
२२ बंगाल इन्शोरेन्स एण्ड रीयल प्रापरटी कम्पनी लिमिटेड (L) कलकत्ता
२३ बंगाल सेक्रेटेरियेट को-आपरेटिव इन्शोरेन्स सोसायटी लि० (L) कलकत्ता
२४ भामा मेरीन इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड पोरबन्दर (M)
२५ भारत फयार एण्ड जनरल इन्शोरेन्स लि० † न्यू दिल्ली (F. M. S.)
२६ भारत इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड ‡ (L. S.) दिल्ली
२७ भास्कर इन्शोरेन्स कम्पनी लि० (L) गोहाटी
२८ बॉम्बे अलायन्स एशोरेन्स कम्पनी लिमिटेड (M) बम्बई
२९ बाम्बे को-आपरेटिव इन्शोरेन्स सोसायटी लिमिटेड (L) बम्बई

※ आजकल जीवन बीमा का व्यापार देवकरण नान्जी को दे दिया है और जीवन का रजिस्ट्रेशन रद्द हो गया है।

† १-१-५५ से नया व्यापार बंद हो गया है।

‡ ५२ ए धारा के अन्तर्गत एक शासक नियुक्त किया है।

१०४ इण्डियन पोस्टस एण्ड टेलेग्राफ्स को-ऑपरेटिव इन्शोरेंस सोसायटी लि० (L) मद्रास
१०५ इण्डियन प्रोग्रेसिव इन्शोरेंस कंपनी लि० (L) पूना २
१०६ इण्डियन ट्रेड एण्ड जनरल इन्शोरेन्स कंपनी लिमिटेड (F. M. S) बम्बई
१०७ इण्डस्ट्रीयल एण्ड प्रुडेन्शयल एशोरेंस कंपनी लिमिटेड (L) बम्बई
१०८ इन्शोरेन्स आफ इण्डिया लिमिटेड (L) कलकत्ता १३
१०९ जयभारत इन्सोरेन्स कंपनी लिमिटेड (L. F. M. S.) बम्बई
११० जुपिटर जनरल इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड (L. F. M. S.) बम्बई
१११ कैसरे-हिन्द इन्शोरेन्स कंपनी लि० (F. M. S.) बम्बई
११२ कल्याण मेरीन इन्शोरेन्स कम्पनी लि०(M) पोरबंदर
११३ लक्ष्मी इन्शोरेन्स कंपनी लि० (L) दिल्ली १
११४ लिबरटी इन्शोरेन्स कंपनी लि० (F.M.S.) नई दिल्ली
११५ लॉंग लाईफ इन्शोरेंस कंपनी लि० (L)पूना
११६ मध्यप्रदेश म्युचअल इन्शोरेंस कंपनी लिमि० (L) नागपुर
११७ मद्रास लाईफ एशोरेन्स कंपनी लिमि० (L) कांचीपुरम्
११८ मद्रास मोटर इन्शोरेन्स कं० लि० (S) मद्रास
११९ मथुरा इन्शोरेंस कम्पनी लि० (F. M.S.) मदुराई
१२० महागुजरात को-ऑपरेटिव इंशोरेन्स सोसायटी लिमि० (L) बड़ौदा
१२१ महावीर इन्शोरेन्स कंपनी लि० (L)कलकत्ता
१२२ मंगलोर रोमन केथोलिक, पाइनीयर फण्ड लिमि० (L) मंगलोर
१२३ मेरीन एण्ड जनरल इन्शोरेन्स कंपनी लिमि० (F. M. S.) बम्बई
१२४ मर्चेन्ट्स जनरल इन्शोरेन्स कंपनी लिमि० (M) बम्बई
१२५ मेथादिस्ट एन्यूटेन्ट सोसायटी फार इण्डिया बर्मा एण्ड सिलोन लिमिटेड मद्रास ७ (L)
१२६ मेट्रोपोलीटन इन्शोरेन्स कंपनी लिमिटेड (L) कलकत्ता १३
१२७ मिडलैण्ड इन्शोरेंस कंपनी लिमिटेड (L.S) मद्रास १८
१२८ मिल ओनर्स म्यूचअल इन्शोरेन्स एसोसियेशन लिमिटेड बम्बई
१२९ माडर्न म्युचअल लाईफ इंशोरेन्स कंपनी लिमिटेड * (L) बम्बई
१३० मदर इण्डिया फायर एण्ड जनरल इन्शोरेंस कंपनी लिमिटेड (F. M. S.) मदुराई
१३१ मदर इण्डिया लाईफ एशोरेन्स कंपनी लि० (L) मदुराई
१३२ मोटर एण्ड जनरल इन्शोरेंस कंपनी लि० (S) कलकत्ता १३
१३३ मोटर ओनर्स म्यूचअल इन्शोरेन्स कंपनी लिमिटेड बेलगांव (S.)
१३४ म्युचअल हेल्थ एसोसियेशन लि० शिमला नई दिल्ली (L)
१३५ नागपुर पायोनियर इन्शोरेन्स कम्पनी लि० (L) बम्बई १
१३६ नारायनजी भानाभाई एण्ड कंपनी लिमि० (M.) भावनगर
१३७ नरहरी मेरीन इन्शोरेन्स कंपनी लिमि० (M.) बम्बई
१३८ नेशनल फायर एण्ड जनरल इन्शोरेन्स कंपनी लिमि० (F. M. S.) कलकत्ता
१३९ नेशनल इंडियन लाईफ इन्स्योरेंस कंपनी लिमि० (L.) कलकत्ता

* रजिस्ट्रेशन ३ (४) (ए) नं के क़ानून के अनुसार रद्द हो गया।

१४० नेशनल इन्शोरेंस कंपनी लिमि० (L. F. M.S.) कलकत्ता
१४१ नेशनल सिक्यूरिटी एशोरेंस कंपनी लिमि० (F. M. S.) नई दिल्ली
१४२ नेशनल स्टार एशोरेंस कंपनी लिमि० (L.) मद्रास १७
१४३ नेपच्युन एशोरेंस कंपनी लिमि० (L. F. S.) बम्बई
१४४ न्यू एशियाटिक इन्शोरेंस कंपनी लिमि० (L. F. M. S.) नई दिल्ली
१४५ न्यू ग्रेट इंशोरेंस कंपनी ऑफ इंडिया लिमि० (L. F. M. S.) बड़ौदा
१४६ न्यू गार्जियन ऑफ इंडिया लाईफ इन्शोरेंस कंपनी लिमि० (L.) मद्रास
१४७ न्यू इण्डिया इन्शोरेंस कंपनी लिमिटेड (L. F. M. S.) बम्बई
१४८ न्यू इन्शोरेंन्स लिमिटेड (L) बनारस
१४९ न्यू मर्चेन्टस इन्शोरेंस कंपनी लिमिटेड (M) पोरबन्दर
१५० न्यू मेट्रो इन्शोरेंस कं० लि० (L) बम्बई १
१५१ न्यू स्वस्तिक लाईफ इन्शोरेन्स कं० लि० (L) बम्बई
१५२ नादर्न इण्डिया मोटर ओनरस म्यूचअल इन्शोरेंस कंपनी लि० जलन्धर सिटी (S)
१५३ नादर्न इण्डिया ट्रान्सपोर्टर्स इन्शोरेंस कंपनी लि० जलन्धर सिटी (S)
१५४ ओरियन्टल फायर एण्ड जनरल इन्शोरेंस कंपनी लिमिटेड (F. M. S.) बम्बई १
१५५ ओरियन्टल गवर्नमेंट सिक्यूरिटी लाईफ एशोरेंस कंपनी लि० (L) बम्बई
१५६ उड़ीसा को-आपरेटिव इन्शोरेंस सोसायटी, लि० (F. S.) कटक २
१५७ पेलेडियम एशोरेंस कं० लि० (L) कलकत्ता
१५८ पांड्यान इन्शोरेंस कंपनी लि० मदुराई
१५९ पीअरलेस लाईफ एशोरेन्स कंपनी लिमिटेड (L) कलकत्ता
१६० पायोनियर फायर एण्ड जनरल इन्शोरेंस कंपनी लिमिटेड (L. F. M.S) कोयम्बटोर
१६१ पुलिस को-आपरेटिव लाईफ इन्शोरेंस सोसायटी लिमिटेड (L) कलकत्ता १३
१६२ पालिसी होल्डर्स एशोरेंस लि० (L) दिल्ली
१६३ पाप्युलर इन्श्योरेंस कं० लि० (L) मंगलोर
१६४ पोरबंदर इन्श्योरेंस कं० लि० (M) पोरबंदर
१६५ प्रवर्त्तक इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड (L) कलकत्ता १
१६६ प्राची इन्श्योरेन्स कम्पनी लि० (S) कटक १
१६७ प्रीमियर लाईफ एण्ड जनरल इन्श्योरेन्स कंपनी लिमिटेड (L. F. M. S.) मद्रास
१६८ प्रेसिडेन्सी लाईफ इन्श्योरेन्स कंपनी लि० (L) बम्बई
१६९ पृथ्वी इन्श्योरेन्स कं० लि० † (L) मद्रास १
१७० पंजाब नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि० (L) दिल्ली ६
१७१ रेडिकल इन्श्योरेन्स कं० लि० (L) कलकत्ता
१७२ रेलवे एम्प्लाईज कोआपरेटिव (L) इन्श्योरेन्स सोसायटी लिमिटेड कलकत्ता
१७३ राजस्थान एग्रीकलचर लिव-स्टॉक एण्ड जनरल इन्श्योन्स कम्पनी लि० (S) जयपुर
१७४ राजस्थान इन्श्योरेन्स कं० लि० (L) कलकत्ता
१७५ रीइन्श्योरेन्स एसोसियोशन ऑफ़ इण्डिया (इण्टरनेशनल) लिमिटेड (F) नागपुर
१७६ रीलायन्स एशोरेन्स सोसायटी लिमिटेड (L. S.) बड़ौदा
१७७ रुबी जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड (L. F. M.S.) न्यू देहली कलकत्ता
१७८ सैहादरी इन्श्योरेन्स कं० लि० (L) नासिक
१७९ सरस्वती इन्श्योरेन्स कंपनी लिमिटेड (L. F. S.) दिल्ली

† फिरसे नया नहीं करवा का वजह से फायद मेरीन और मिश्रित व्यापार का रजिस्ट्रेशन रद्द कर दिया गया है।

१८० सेन्टीनल एश्योरेन्स कंपनी लिमिटेड (L.F. M. S.) बंबई
१८१ सेवेन्ट्स ऑफ इण्डिया इन्श्योरेंस कंपनी लिमि० (L) नई दिल्ली
१८२ श्री महासागर बीमा कंपनी लिमि० (M.) पोरबन्दर
१८३ श्री विजय सागर इन्श्योरेंस कंपनी लिमि० (M) वेरावल
१८४ साऊथ इण्डिया को-आपरेटिव इन्श्योरेंस सोसायटी लिमि० (L.) मद्रास
१८५ साऊथ इडिया इन्श्योरेंस कंपनी लिमिटेड (F. M. S.) बम्बई
१८६ साऊथ इंडियन टीचर्स युनियन प्रोटेक्शन फण्ड लिo (L.) मद्रास
१८७ स्टेन्डर्ड जनरल एन्शोरेंस कंपनी लिमि० (F. M. S.) कलकत्ता
१८८ स्टर्लिङ्ग जनरल इश्योरेंस कंपनी लिमि० (L. F. M. S.) नई दिल्ली
१८९ सनलाइट ऑफ इण्डिया इन्शोरेंस कंपनी लिमि० (L) नई दिल्ली
१९० सुप्रीम म्युअल एश्योरेंस कंपनी लिo(L)पूना
१९१ सर्वोदय बीमा कंपनी लि० (M.) बम्बई
१९२ स्वदेशी बीमा कम्पनी लि० (L.S.) आगरा
१९३ स्वराज्य लाईफ इन्श्योरेंस कंoलि०(L)धारवाड़
१९४ तरुण एश्योरेन्स कंपनी लि० (L.) बम्बई
१९५ तिलक इंश्योरेंस कंपनी लि० (L) नई दिल्ली
१९६ टिन्नेवेली दिओसेसन म्युचअल इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L.) पालम कोटाह
१९७ ट्रीटॉन इन्श्योरेंस कंपनी लि० (F. M. S.) कलकत्ता
१९८ ट्रॉपीकल इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L.) नईदिल्ली
१९९ ट्रस्ट ऑफ इण्डिया एन्श्योरेंस कंपनी लि० (L.) पूना
२०० यूनियन लाईफ एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L.) बम्बई
२०१ युनीक मोटर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L) बम्बई
२०२ युनाइटेड जनरल एशोसियेशन ट्रस्ट (इण्डिया) लि० (F. M. S.) बम्बई
२०३ युनाइटेड इंण्डिया फायर एण्ड जनरल इन्शोरेंस कम्पनी लि० (F. M. S.) मद्रास
२०४ युनाइटेड इण्डिया लाईफ एश्योरेंस कंपनी लि० (L) मद्रास
२०५ युनाइटेड कर्नाटक इन्श्योरेन्स कंपनी लि० (L) धारवाड़
२०६ युनिवर्सल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L. F. M. S.) बम्बई
२०७ वेन्गार्ड फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L. S.) मद्रास
२०८ वेन्गार्ड इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L.S) मद्रास
२०९ वसन्त इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L) बम्बई
२१० विक्रम जनरल एशोरेंस लि० (L) बम्बई
२११ विशाल भारत बीमा कम्पनी लिमिटेड (L) आगरा
२१२ विश्व भारती इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L. F. M. S.) बम्बई
२१३ वल्कन इन्श्योरेंस कंoलि०(L.F.M.S.)बम्बई
२१४ वार्डन इन्श्योरेंस कं० लि०(L.F.S.) बम्बई
२१५ वेस्टर्न इण्डिया लाईफ इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L.) सतारा सिटी
२१६ वेस्टर्न रेलवे को-आपरेटिव लाईफ एश्योरेंस सोसायटी लि० (L) बम्बई
२१७ वेस्टर्न रेलवे भोरोस्ट्रीयन को-आपरेटिव डेथ बेनेफिट एसोसियेशन लि० (L) कलकत्ता
२१८ व्हाइट स्टार म्युचअल इंन्श्योरेंस कंपनी लि०‡ (L) पूना
२१९ यशवन्त म्युचअल इन्श्योरेंस कंपनी लि० (L) पूना
२२० झेनीथ एश्योरेन्स कंपनी लि० (L. F) बम्बई



‡ १ सितम्बर १९५४ से २ (४) ९ कानून के अन्तर्गत रजिस्ट्रेशन रद्द किया गया।

भारत का औद्योगिक विकास



Industrial Development of India.

भारत में सिनेमा उद्योग का विकास

Development of Cinema Industries in India.

सिनेमा उद्योग के पूर्व
सिनेमा युग का प्रारम्भ
बंगाल आर्ट
बम्बई आर्ट
फिल्म व्यवसाय पर सरकारी नियंत्रण
फिल्म उद्योग की संख्या सारिणी
भारत में सिनेमा स्टूडियो की सूचि
सिनेमा के प्रसिद्ध कलाकारों का परिचय

भारत में सिनेमा उद्योग का विकास

संसार में जब तक सिनेमा-मशीनरी का आविष्कार नहीं हुआ था तब तक नाट्य-कला के द्वारा रंगमंच पर तरह-तरह के नाटक दिखाकर जनता का मनोरंजन और कला का प्रदर्शन किया जाता था।

इस प्रकार के उच्चकोटि के नाटकों का भारतवर्ष में बहुत प्राचीन समय से प्रचार था। और इस सम्बन्ध में हमारी कला समस्त संसार में उत्कृष्ट तम स्थिति पर पहुँची हुई थी, कालिदास की शकुन्तला, भवभूति का उत्तर रामचरित्र तथा विशाखनन्द का मुद्राराक्षस नाटक हजारों वर्ष बीत जाने पर भी आज सारे संसार को अपनी उत्कृष्टता की चुनौती दे रहें हैं।

भारतवर्ष के पश्चात् यूरोप में भी नाट्य-कला का विकास हुआ और वहाँ के साहित्य और रंगमंचों पर शेक्सपीयर के संसार प्रसिद्ध नाटकों ने तहलका मचा दिया।

भारतीय और यूरोपीय नाट्य-कला में कई समताएँ और कई विषमताएँ देखी जाती हैं। मगर इनमें जो सबसे बड़ी विषमता दृष्टि गोचर होती है वह यह कि जहाँ भारत की नाट्य-कला हमेशा आदर्श का अनुकरण करती हुई गतिशील रही है वहाँ पश्चिम की नाट्यकला हमेशा समाज की वास्तविक स्थिति का चित्रण करती हुई गतिशील रही है। इसी से आधुनिक युग में नाट्य कला दो भागों में विभक्त हो गई है। एक को आइडियालिस्टिक स्कूल और दूसरे को रीयालिस्टिक स्कूल कहा जाता है।

पश्चिम के कलाकारों का विश्वास रहा कि समाज में दिन-रात जो वास्तविक घटनाएँ होती हैं उन्हीं को कला का प्रसाधन देकर कला पूर्ण रूप में रंचमंच पर अभिनीत करना नाटक का प्रधान लक्ष्य होना चाहिए, इसीलिए हम देखते हैं कि उनके यहाँ जितने भी उच्चश्रेणी के नाटककार हुए सबके नाटक *प्रायः* दुःखान्त (Tragiedy) दिखलाई पड़ेगें।

भारतीय कलाकारों की विचारधारा इससे एकदम विभिन्न दिशा में दौड़ती है उनका मत है कि समाज का जो वास्तविक रूप है वह तो दिन-रात हमारे सामने रहता ही है, उसका चित्रण रंगमंच पर करने से कोई लाभ नहीं, समाज के जिस आदर्श रूप का निर्माण हम आगे चलकर करना चाहते हैं और जो महान् व्यक्तित्व हमारी उच्च सामाजिक परम्परा के प्रतीक हैं उन्हीं का चित्रण रंगमंच पर करने से जन समाज ऐसे आदर्श समाज की रचना करने की ओर प्रवृत्त हो सकेगा। समाज में जो रोना, धोना दुःख, वियोग, दरिद्रता के दृश्य हैं वे तो रात दिन हमारे सामने दिखलाई पड़ते ही हैं वास्तविक जगत् में उन्हें देखकर ही हमारी अशान्ति का पारावार नहीं रहता, फिर रंगमंच पर भी उन्हीं को बतलाकर रोती हुई जनता को और रुलाने से कोई लाभ नहीं। रंगमंच के सामने से तो जनता को हंसते खेलते निकलना चाहिए। यही कारण है कि हमारे यहाँ के सभी उत्कृष्ट नाटककारों ने सुःखान्त नाटकों की रचना की है।

आधुनिक मशीनयुग में जब सिनेमेटोग्राफ मशीनरी का आविष्कार हुआ तो रंगमंच की सारी नाट्य कला धीरे धीरे सिनेमा के रंगमंचों में विलीन होने लगी। शुरू शुरू में साइलेन्स पिक्चर या बिना

बोलनेवाले सिनेमा का आविष्कार हुआ मगर उसका नाटकों की रंगशालाओं पर कोई विशेष असर नहीं पड़ा।

मगर जब इस क्षेत्र में बोलनेवाली टॉकी फिल्म का आविष्कार हो गया तब यह उद्योग समाज में सर्वव्यापी हो गया और इसने नाटकों की तमाम रंगशालाओं को करीब करीब खतम कर दिया।

भारतवर्ष में सिनेमा उद्योग का प्रारम्भ

भारतवर्ष में सिनेमा उद्योग के पायोनियर दादा साहेब फालके माने जाते हैं। जिन्होंने सब से पहले "हरिश्चन्द्र" नामक फिल्म बनाया। तब से यह उद्योग नियमित रूप से उन्नति कर रहा है। सन् १६२८ तक ८० फिल्मों का उत्पादन प्रति वर्ष होने लग गया था।

सन् १६३१ से बोलते हुए सिनेमाका निर्माण प्रारम्भ हुआ। सबसे पहले बम्बईकी इम्पीरियल फिल्म कम्पनी ने "आलमआरा" नामक चलचित्र का निर्माण किया। सन् १६३५ तक भारतीय फिल्म उद्योग द्वारा करीब करीब सभी बोलते फिल्म बनने लगे। इस समय समस्त भारत में २५० से २८० तक फिल्में प्रति-वर्ष निर्माण होती हैं। फिल्म उत्पादन में भारत का नम्बर समस्त संसार में दूसरे का नम्बर पर आता है।

इस समय जिन फिल्मों का निर्माण इस देश में होता है उनकी साधारणतयः दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक को हम बंगाल आर्ट और दूसरे को बम्बई आर्ट कह सकते हैं।

बंगाल आर्ट में अधिकतर गम्भीर, कलापूर्ण और पाश्चात्य शैली के दुःखान्त चित्रों का निर्माण होता है। इस आर्ट को विशेषकर बंगाली समाज तथा आधुनिक शिक्षा सम्पन्न कालेजियन्स विशेष पसन्द करते हैं। मगर हिन्दुस्तान की साधारण जनता जो विशेष कर सुखान्त चित्रों को पसन्द करती हैं ऐसे चित्रों में विशेष रुचि नहीं रखती। देवदास, परिणीता, बिराजबहू, दोबीघाजमीन, नौकरी आदि चित्र इस आर्ट के नमूने हैं। इस आर्ट के प्रदर्शन में, श्री पी० सी० बरुआ, सहगल, कानन बाला, बोस इत्यादि कलाकारों ने बहुत ख्याति प्राप्त की है।

दूसरे बम्बई आर्ट में—जिसमें किसी सीमा तक मद्रास आर्ट को भी सम्मिलित किया जा सकता है—विशेषकर चुलबुले, मनुष्य की यौन भावना को उत्तेजना देने वाले, संगीत और नाच से भरपूर रंग बिरंगे चित्रों का निर्म्माण होता है। शुरू शुरू में तो यह आर्ट भी भारतीय समाज की विशेष मर्यादाओं का, अश्लीलता का तथा युवक भावनाओं में विकार पैदा न होने देने का अपने चित्रों में खयाल रखता था मगर ज्यों-ज्यों समय बीतता गया और "खिड़की" तथा "शहनाई" के समान चित्रों का निर्माण होने लगा त्यों त्यों सिनेमा-उत्पादकों ने समाज के चारित्रिक निर्माण की भावनाओं को छोड़ कर सिर्फ जनता की भावनाओं को उत्तेजित कर पैसा कमाना ही अपना मुख्य ध्येय बना लिया। उन्हें इस बात का ध्यान नहीं रहा कि समाज के नैतिक निर्माण की कितनी गम्भीर जिम्मेदारी उनपर है और उनके द्वारा निर्मित चित्रों का कितना कुप्रभाव जनता पर पड़ता है। वे तो अपने चित्र को मर्यादा के आवरण से अधिक से अधिक हटाकर कितना नग्न और अश्लील बनाया जा सकता है इसी पर कटिबद्ध हो गये और—

जादूगर सइयाँ छोड़ मेरी बहियाँ,
हो गई आधी रात, अब घर जाने दे।

इस प्रकार के उत्तेजक गानों के द्वारा जनता की जेब से पैसा निकालने में उन्होंने अपनी चरम सफलता समझी।

फिर भी यह नहीं कहा जा सकता की बम्बई और मद्रास आर्ट में अच्छे डायरेक्टर और अच्छे उत्पादकों की एकदम कमी है। आज भी व्ही० शान्ताराम, सोहराब मोदी, पृथ्वीराजकपूर इत्यादि कई

डायरेक्टर और उत्पादक इस क्षेत्र में मौजूद हैं जो "झनक झनक पायल बाजे" "तूफान और दीया" झाँसी की रानी, स्वयं सिद्धा, अमर ज्योति" के समान ऊँचे दर्जे के कलापूर्ण चित्रों का सृजन कर रहे हैं।

फिल्म नियंत्रक बोर्ड

सन् १९२८ में भारत सरकार ने फिल्म व्यवसाय को नियन्त्रण या सेन्सर करने के लिये पहले पहल एक बोर्ड की स्थापना की जिसके अध्यक्ष दीवान बहादुर टी० रंगाचारी थे। इस समिति ने निम्न-लिखित सिफारिशें की। (१) सारे भारत की फिल्मों के लिए उसके गुण दोष विवेचकों की समिति का विधान (२) केन्द्र की ओर से सलाह समिति को नियुक्त करना (३) उत्पादन करने वालों को आर्थिक सहायता देना (४) अधूरी फिल्मों पर आयात कर हटाना (५) आमोद प्रमोद के कर में कमी करना इत्यादि।

सन् १९४९ में गण तंत्र भारत की सरकार ने एक दूसरी फिल्म नियंत्रण करने वाली कमेटी का निर्माण किया। जिसके अध्यक्ष श्री एस० के० पाटील नियुक्त किये गये इस कमेटी की रिपोर्ट सन् १९५१ में पेश की गई।

इस रिपोर्ट में यह बताया गया है कि सिनेमा उद्योग इस स्थिति में नहीं है कि स्वयं अपना सुधार कर सके। इस पद्धति में कितनी ही खराबियां घुस गई हैं और दोष तो चारों ओर फैले हुए हैं।

फिल्मों के कला पूर्ण तत्वों का स्तर तो ऊँचा उठ गया है मगर जहां पर बुद्धि तथा कला का मिश्रण होता है वहां पर आज की फिल्में बहुत ही भद्दा प्रदर्शन करती हैं। इसके लिए समिति ने निम्न-लिखित सिफारिशे कीं—

(१) स्वतंत्र भारत के कानून के अन्तर्गत एक भारतीय फिल्म परिषद बनाई जावे। यह परिषद् इस उद्योग को एक मित्र, दार्शनिक तथा मार्ग दर्शक की तरह पथ प्रदर्शन करेगी। यह परिषद एक शिक्षा का केन्द्र भी खोलेगी जहां सिनेमा के पात्रों तथा कलाकारों को शिक्षा दी जावेगी।

(२) उत्पादन के कानून—इस समिति ने एक शासकीय उत्पादन कानून समिति को नियुक्त करने की सिफारिश की। यह समिति हस्त लिखित कहानियों की जांच कर फिल्म उत्पादन पर नियंत्रण रक्खेगी—

(३) फिल्म की अर्थ संस्था—उपरोक्त समिति ने एक करोड़ रुपये की पूंजी से एक फिल्म अर्थ संस्था का निर्माण करने की सिफारिश की। इस संस्था के द्वारा फ़िल्म उत्पादकों को आर्थिक सहायता या ऋण दिया जावेगा—जिसके बिना इस उद्योग का पुनर्निर्माण असंभव है।

(४) करों की सुविधा—आमोद प्रमोद पर समस्त देश में एक ही प्रकार के करों की व्यवस्था तथा विदेशों से आई हुई फ़िल्मों पर २० प्रतिशत कर लगाने की उपरोक्त समिति ने जोरदार सिफारिश की।

(५) विदेशी बाजार—समिति ने अपना यह विश्वास प्रगट किया कि भारतीय फिल्मों की मांग विदेशों में बढ़ रही है इसके लिए एक निर्यात संगठन इस विषय की देख रेख के लिए बनाया जावे। भारतीय उत्पादन कानून समिति की स्वीकृति बिना कोई भी फ़िल्म विदेशों को न भेजी जावे।

फिल्म उद्योग पर भारत सरकार का विभाग

सन् १९४९ में सूचना तथा रेडियो का विभाग गृह विभाग से अलग कर दिया जो कि पहले इसी विभाग का एक भाग था। यह विभाग अब सूचना तथा रेडियों पर बोलने के विभाग के नान से जाना जाता है तथा भारतीय फिल्मों तथा केन्द्रीय सरकार के फिल्म विभाग का नियंत्रण करता है।

फिल्म सलाहकार समिति:—सन् १९४९ में भारतीय सरकार ने एक फिल्म सलाहकार समिति नियुक्त की जो कि सूचना तथा रेडियी के मंत्रालय के फिल्म विभाग को सलाह देती है। यह समिति

फिल्म विभाग से जितनी भी प्रामाणिक फिल्में तथा खबरों की फिल्में निकलती है इनके ऊपर पहले ही विचार कर लेती है और इनके बारे में सरकार को सलाह देती रहती है।

फिल्म विभागः—प्रारंभ में यह विभाग सन् १९४२ में खोला गया था जिसका कि नाम उस समय भारतीय सूचना फिल्म था, जिसका काम युद्ध के लिए कोशिशें जारी रखना था। यह विभाग सन् १९४६ में बंद हो गया था। परन्तु राष्ट्रीय सरकार ने सन् १९४९ में इस विभाग को फिर से खोला। फिल्म विभाग जो कि सूचना तथा रेडियो मंत्रालय की एक शाखा है उसका बड़ा आफिस मलाबारहिल, बम्बई में है। इसके दो अलग २ विभाग है। एक तो प्रामाणिक विभाग (Documantary films of India) जिसको भारत की प्रामाणिक फिल्म के नाम से जाना जाता है। और दूसरा समाचार फिल्मों का उत्पादन करता है (Indian News Review) है। यह दूसरा विभाग प्रत्येक सप्ताह में लगभग १००० फीट लम्बी खबरों की रील निकालता है। तथा प्रामाणिक विभाग सांस्कृतिक तथा शिक्षा से भरी हुई छोटी फिल्में निकालता है जिससे कि प्रजा को कुछ प्रेरणा मिले। यह दोनों प्रकार की फिल्में जो कि फिल्म विभाग की ओर से उत्पादित की जाती है वे भारतीय जीवन के बहुत से मुद्दों पर असर डालती हैं। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा चालू घटनाओं के विकास के बारे में इन फिल्मों में जानकारी दी जाती है।

यह संगठन निम्न लिखित पाँच विभागों का बना हुआ है। (१) प्रामाणिक फिल्मों का विभाग (२) खबरों की फिल्मों का विभाग (३) जनता के सम्बन्धों का विभाग (४) वितरण विभाग (५) शासकीय विभाग। यह फिल्में पाँच भाषाओं में बनाई जाती है, अंग्रेजी, हिन्दुस्तानी, तामील, तेलगु और बंगाली और एक ही साथ सारे भारतवर्ष में बताई जाती हैं। इन फिल्मों को प्रदर्शकों के प्रमाण पत्र (Licence) के कानून के अन्तर्गत दिखलाना अत्यन्त आवश्यक है और सिनेमा में जितना रुपया इकट्ठा होता है इनका १% किराये के रूप में लिया जाता है।

भारतवर्ष ने इतने कम समय में सारे संसार में प्रामाणिक फिल्मों में अच्छी इज्जत प्राप्त कर ली है। सन् १९५१ में अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म प्रदर्शन में राजस्थान की प्रामाणिक फिल्म ने बहुत ही अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की है।

फिल्मों का निरीक्षणः—भारतवर्ष में फिल्मों के निरीक्षण की पद्धति सब से पहले भारतीय चित्र कानून के अन्तर्गत सन् १९१८ में प्रारंभ की गई है। सन् १९४९ में इस कानून में संशोधन होने के पश्चात् यह निरीक्षण केन्द्रीय सरकार के निश्चय करने का विषय बन गया। १५ जनवरी सन् १९५१ से केन्द्रीय सरकार ने प्रान्तीय सरकारों से फिल्म निरीक्षण करने का अधिकार अपने हाथ में ले लिया। सरकार ने फिल्म निरीक्षकों की एक केन्द्रिय समिति स्थापित की उसको जो फिल्में भारतवर्ष में बनाई जाती है तथा बाहर से मँगवाई जाती है उनके लिए एक अखिल भारतीय निरीक्षण करने की नीति बनाने तथा उसे कार्य क्रम में परिणित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। अध्यक्ष के सिवाय इस समिति में छः और अवैतनिक सदस्य होते हैं। फिल्म उद्योग का एक प्रतिनिधी भी सरकार की ओर से नियुक्त किया जाता है।

इस नये केन्द्रीय बोर्ड का बड़ा आफिस बम्बई में है तथा दो छोटे-छोटे दफ्तर कलकत्ता तथा मद्रास में है। प्रत्येक फिल्म जो निरीक्षण के लिये भेजी जाती है वह कलकत्ता तथा मद्रास के अधिकारियों और छोटी समिति के सलाहकारों द्वारा जाँच की जाती है। अगर समिति के सदस्यों की सर्व सन्मति से वह पास हो जाती है तो एक सार्टिफिकेट दिया जाता है। अगर इस समित का किसी सिनेमा के बारे में एक मत

न हो या उत्पादक इन लोगों के निर्णय से सन्तुष्ट न हो तो इस सिनेमा की जाँच प्रान्तीय सलाहकार समिति के द्वारा की जाती है। अगर इस समिति का निर्णय उत्पादक को मंजूर हो और यह सदस्यों की सर्व सम्मति से पास किया गया हो तो एक सर्टिफिकेट दे दिया जाता है। इन समितियों के जांच के पश्चात भी यदि उत्पादक को इनका निर्णय स्वीकृत न हो तो फिर उस सिनेमा का निर्णय केन्द्रीय बोर्ड से लिया जाता है। इस निर्णय के विरुद्ध भी उत्पादक भारत सरकार को अपील कर सकता है।

यह बोर्ड दो प्रकार के सार्टिफिकेट देता है। एक तो यह कि उस फिल्म के प्रदर्शन के ऊपर किसी प्रकार की रोक टोक न हो तथा दूसरे वह जिनको कि सिर्फ बालिग व्यक्ति ही देख सकते हैं। ये सार्टी-फिकेट क्रमशः U और A के नाम से जाने जाते हैं।

कर-निर्धारण

इस उद्योग पर निम्न लिखित कर लगाये जाते हैं।

(१) अधूरी या कच्ची फिल्मों पर आयात कर तथा उत्पादन और चित्र चलाने वाले यंत्रों पर दूसरा कर।

(२) नगरपालिकाओं के द्वारा बहुत से जिलो में चुंगी ली जाती है।

(३) सरकार की विद्युत शक्ति का कर।

(४) आमोद प्रमोद का कर।

(५) आमदनी का कर, अधिक आमदनी का कर तथा अधिक फायदे का कर।

(६) नगरपालिकाओं द्वारा सिनेमा के पर्दों पर सिनेमा के विज्ञापन के लिए कर।

कुछ प्रन्तीय सरकारो ने आमोद प्रमोद का कर २५% से बढ़ कर ५०% तक कर दिया है।

आज के भारत में सिनेमा उद्योग

फिल्मों का वार्षिक उत्पादन अब २५० से २८० फिल्म प्रति वर्ष का हो गया है। भारत में लगभग १५ या २० लाख व्यक्ति भारतीय फिल्मों को देखने रोजाना जाते हैं जब कि वार्षिक उपस्थिति लगभग ६००० या ७००० लाख व्यक्तियों की होती हैं। देश भर में लगभग ६० सिनेमा बनाने के स्टुडियो है तथा ४० प्रयोग शालायें हैं। इस उद्योग में लगभग ७०,००० व्यक्ति कार्य करते हैं। भारतीय फिल्म उद्योग में कुल पूंजी ३२०० लाख रुपये की लगी हुई है। इसके अलावा कार्य करने के लिये ६०० लाख रुपये की पूंजी और लगाई जाती है इस उद्योग से सरकार को वार्षिक आय लगभग २० करोड़ रुपये की होती है।

भारतीय फिल्म उद्योग की संस्था (चेम्बर)

इस संस्था की स्थापना सामान्यतया व्यवसाय में उन्नति करने के लिये तथा खास तौर से भारतीय फिल्म उद्योग और उसमें जो व्यक्ति हैं उनकी उन्नति, रक्षा तथा उनके फायदों के लिये की गई है। जिससे कि यह व्यवसाय नियमित ढंग से चले। उद्योग के कानूनों को ठीक तरह से निभाया जा सके, तथा झगड़ों को पंचों के द्वारा निपटाया जा सके। इस संस्था का काम इस उद्योग की उन्नति तथा सहायता करना तथा जो कानून इस उद्योग के और इसमें लगे हुए व्यक्तियों के आर्थिक फायदों पर असर डालते हैं उनका विरोध करना है।

संसार के फिल्म उद्योग के कुछ आँकड़े

उत्तरी अमेरिका सारे संसार में सब से ज्यादा फिल्मों का उत्पादन करता है। उत्तरी अमेरिका प्रति वर्ष लगभग ४३०, भारत २५०, जापान १२३, फ्रान्स १०६, मेक्सीको ८४ और इंग्लैंड ७१ फिल्मों का

उत्पादन करते हैं। निम्न लिखित देशों में हर एक हजार आदमियों के अनुपात में इस प्रकार सिनेमा की कुर्सियाँ है:—मोनेको १६०, आस्ट्रेलिया १८२, न्यूजीलैंड १४६, ब्रिटेन ८४, उत्तरी अमेरिका ८३, भारत ४ और चीन, इन्डोचीन तथा इथोपिया १।

विदेशों में भारतीय फिल्में—उत्तरी अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रान्स, क्यूबा में भारत की खबरों की फिल्में तथा प्रामाणिक फिल्में टेलीविजन द्वारा बतलाई जाती हैं।

टेलीविजन के अलावा ये फिल्में लगभग सारी दुनियाँ के पर्दों पर दिखाई जाती हैं।

भारतीय प्रामाणिक फिल्में केवल इसलिये ही नहीं उत्पादित की जातीं कि उससे बाहरी दुनियाँ ही फायदा उठाये मगर वे भारत के ३२०० सिनेमा गृहों में भी बतलाई जातीं है, जिससे कि भारतीय जनता फायदा उठा सके।

भारत सन् १९४८ से अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म के उत्सवों में जो कि भिन्न-भिन्न देशों में होते हैं नियमित रूप से भाग ले रहा है। सन् १९४९ में चौथे अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म उत्सव में जो कि जेकोस्लावाकिया में हुआ था उसमें भारतीय प्रामाणिक फिल्म "Tree of Wealth" दौलत का पेड़ को एक प्रशंसा का सार्टिफिकेट मिला था। अक्टोबर सन् १९५० के उत्सव में जो कि यार्कटन (कनाडा) में हुआ था उसमें तीन भारतीय सिनेमाओं को खास योग्यता का सार्टिफिकेट दिया था वे फिल्में इस प्रकार हैं (१) राजस्थन सीरीज, १ (जयपुर) (२) रेशम के कीड़े की प्राइवेट जिन्दगी (३) भारतीय अल्पसंख्यक (Indian Minorities) इसके दूसरे ही वर्ष वेनीस में राजस्थन सीरीज १ ने प्रथम पुरस्कार पाया।

दूसरी फिल्मों ने भी विदेशों में प्रसिद्धि पाली है। सन् १९४९ में दुनिया के द्वितिय फिल्म उत्सव में जो कि ब्रुसेल्स (बेलजियम) में हुआ था उसमें भारतीय सिनेमा "कल्पना" ने अपवादिक गुणों के कारण उत्तरी अमेरिका के फिल्म से इनाम में हिस्सा में लिया था। सन् १९५२ में अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म उत्सव में जो कि फ्रान्स में हुआ था उसमें भारतीय फिल्म "अमर भूपाली" ने अपनी बहुत ही सुन्दर आवाज की रिकार्डिंग की वजह से इनाम पाया था।

फिल्म उद्योग के आवश्यक आँकड़ें

लगी हुई पूँजी

(१) इस उद्योग पर सम्पूर्ण लगी हुई पूँजी	४२ करोड़ रुपया
(२) स्टुडियोज, प्रयोग शालाये, आवश्यक वस्तुओं इत्यादि पर लगी पूँजी	६ करोड़ ,,
(३) सब सिनेमाओं पर कुल लगी हुई पूँजी	२६ करोड़ ,,
(४) उत्पादन तथा विभाजन पर कुल पूँजी	१० करोड़ ,,

उत्पादन

(१) औसतन सिनेमाओं का उत्पादन (१० वर्ष का औसत)	२५६ फिल्में प्रति वर्ष
(२) स्टुडियोज की संख्या	६५
(३) प्रयोग शालाओं की संख्या	४०
(४) साऊन्ड (Sound Stages) रंगमंचों की संख्या	१५०
(५) चबूतरे (Stage) का औसतन आकार	५६०० वर्ग फुट
(६) कच्ची फिल्मों का आयात (१० वर्षों का औसत)	१८८० लाख फुट प्रति वर्ष
(७) भारतीय फिल्म की औसतन लम्बाई	१२००० फुट से अधिक
(८) उत्पादकों की औसतन संख्या	३००

(६) प्रति वर्ष नई उत्पादक कंसर्नों की प्रतिशत	५०-६०
(१०) विभाजक कन्सर्न्स	५००
प्रदर्शन करने के स्थान	
(१) सब सिनेमाओं में अनुमानित कुल बैठने की जगह	२२,७५,०००
(२) प्रति सिनेमा गृह में बैठने की जगह	६५०
(३) भारत में नगरों की कुल संख्या	३०१८
(४) कुल सिनेमा गृहों की संख्या	१६६०
(५) अनुमानित प्रतिवर्ष कुल देखने वालों की संख्या	७३०० लाख
कर्मचारी	
(१) उत्पादन विभाग में	२०,०००
(२) विभाजन विभाग तथा अन्य ऐसे ही क्षेत्रों में	५,०००
(३) प्रदर्शन विभाग	५,००००
	कुल ७५,०००
लागत कीमत, आमदनी और कर	
(१) फिल्म के उत्पादन में औसतन खर्च	३ से ५ लाख
(२) सन् १९५४-५५ में कुल सिनेमा गृह से धन प्राप्त	३० करोड़
(३) सन् १९५४-५५ में कुल आमोद-प्रमोद का कर	७ करोड़
(४) सन् १९५४-५५ में दिये गये अन्य कर	६ करोड़

सारिणी संख्या १

भारतवर्ष में क्षेत्र के हिसाब से सन् १९५५ के अन्त में सिनेमा गृहों की संख्या

	सिनेमा स्टेशन के साथ	स्थायी सिनेमा	चलते फिरते सिनेमा	कुल सिनेमा गृह
बम्बई क्षेत्र				
बम्बई (पूर्वी तथा पश्चिमी खानदेश को छोड़कर)	२५०	४८६	५४	५४०
सौराष्ट्र-कच्छ	५४	७८	५	८३
कुल	३०४	५६४	५९	६२३
सेन्ट्रल (मध्य) क्षेत्र				
पूर्वी तथा पश्चिमी खानदेश	३०	४५	८	५३
मध्य प्रदेश	१६६	२३१	९२	३२३
मध्य भारत	५६	१०४	१५	११६
राजस्थान	५५	६५	२४	८६
अजमेर-भोपाल	५	१०	...	१०
विन्ध्य-प्रदेश	११	१५	...	१५
कुल	३२६	४७०	१३६	६०९

उत्तरी क्षेत्र	सिनेमा स्टेशन	स्थायी सिनेमा	चलते फिरते	कुल योग
दिल्ली	१	२३	...	२३
उत्तर-प्रदेश	१३८	२४५	७६	३२४
पंजाब	६८	८६	३३	१२२
पेप्सू	२८	३०	७	३७
काश्मीर-हिमाचल-प्रदेश	१५	१६	...	१६
कुल	२५०	४१६	११६	५३५
बंगाल क्षेत्र				
बंगाल	१८६	२८४	५८	३४२
बिहार	८६	१२०	२६	१४६
आसाम	४५	८०	४	८४
उड़ीसा	३३	४२	५	४७
नेपाल-अण्डमान	३	८	...	८
कुल	३५३	५३४	६३	६२७
दक्षिण क्षेत्र				
मद्रास	...	३३२	...	३३२
आन्ध्र	१६६	२६८	२७	२६५
मैसूर	५१	११८	२	१२०
हैदराबाद	१४४	२५२	२३	२७५
त्रावनकोर-कोचीन	६४	१३७	...	१३७
कुर्ग	२	२	...	२
कुल	४५७	११०६	५२	११६१
भारत में कुल	१६६०	३०६३	४६०	३५५५

सारिणी संख्या २

भारतवर्ष में सिनेमा गृहों की वृद्धि

वर्ष	बम्बई-क्षेत्र	मध्य-क्षेत्र	उत्तरी-क्षेत्र	बंगाल-क्षेत्र	दक्षिण-क्षेत्र	कुल भारत में
१६२८	७७	१५	८१	४५	५७	२७५
१६३८	२६७	२०४	३३०	२५१	५७५	१६५७
१६४८	६००	३०६	३२०	४०४	१३७३	३००३
१६५२	६६६	५३१	४०५	५२६	१३६६	३५३३
१६५५	६२३	६०६	५३५	६२६	११६१	३५५५

सारिणी संख्या ३

उत्पादन की कीमत का भिन्न भिन्न खर्चों में विभाजन (दो उदाहरणों पर आधारित)

	धन (रुपयों)	कुल का प्रति शत	धन रुपयों में	कुल का प्रतिशत
(१) कहानी, स्क्रीन प्ले, गाने इत्यादि	२०,०००	४.५	१५,०००	४.५
(२) कच्ची फिल्में	२५,०००	५.०	२५,०००	८.०
(३) स्टुडियो का किराया और अन्य खर्चे	४०,०००	८.०	३५,०००	११.५
(४) निर्देशन	१२,५००	२.५	१०,०००	३.०
(५) संगीत निर्देशन	२०,०००	४.५	१०,०००	३.०
(६) संगीत-ऑरकेस्ट्रा-गानेवाले इत्यादि	३०,०००	६.०	१०,०००	३.०
(७) अभिनय करने वाले पात्र	१,५०,०००	३१.०	१,००,०००	३१.०
(८) अतिरिक्त	१०,०००	२.०	४,०००	१.०
(९) कला निर्देशक	५,०००	१.०	३,०००	१.०
(१०) घन	१०,०००	२.०	६,०००	२.०
(११) वस्त्र, सजावट	१०,०००	२.०	४,०००	१.०
(१२) नाच निर्देशन और नाच	७,०००	१.५	३,०००	१.०
(१३) केमरामैन	८,०००	१.५	४,०००	१.०
(१४) सम्पादक	४,०००	१.०	३,०००	१.०
(१५) प्रयोगशाला और अन्य	१०,०००	२.०	८,५००	३.०
(१६) प्रचार का सामान	२५,०००	५.०	२०,०००	६.०
(१७) पहले से प्रचार में खर्च	१०,०००	२.०	१०,०००	३.०
(१८) आवागमन के साधन और आमोद प्रमोद के साधन	११,५००	२.५	६,०००	२.०
(१९) उत्पादन का मुखिया, ऑफिस का खर्च	२२,०००	५.०	८,०००	२.०
(२०) मिश्रित	१०,०००	२.०	५,५००	२.०
(२१) दूसरी छपाई	४०,०००	९.०	३०,०००	१०.०
कुल	४,८०,०००	१००.०	३,२०,०००	१००.०

सारिणी संख्या ४

प्रान्तीय भाषाओं में भारतीय सिनेमाओं की संख्या

वर्ष	हिन्दी	गुजराती	मराठी	बंगाली	तामील	तेलगू	कन्नड	मलयालम	पंजाबी	अन्य	कुल
१९४६	१५५	१	२	१५	१६	१०	...	...	१	...	२००
१९४७	१८६	११	६	३३	२९	६	५	...	...	७	२८३
१९४८	१४८	२८	७	३७	३२	७	२	१	१	२	२६५
१९४९	१५७	१७	१५	६२	२१	७	६	१	१	२	२८९
१९५०	११५	१३	१९	४२	१९	१८	१	६	४	४	२४१
१९५१	१००	६	१६	३८	२६	२०	२	७	४	२	२२१
१९५२	१०२	२	१७	४३	३२	२५	१	११	...	...	२३३
१९५३	९७	...	२१	५०	४२	२९	७	७	३	४	२६०
१९५४	११८	...	१८	४८	३८	२७	१०	८	३	५	२७५
१९५५	१२७	३	१३	५१	४६	२४	१५	७	...	४	२९०
औसत	१३०	८	१३	४२	३०	१७	५	५	२	३	२५६

भारत वर्ष में सिनेमा स्टुडियोज की सूची

नाम	पता
(१) अशोक स्टुडियोज्	अन्धेरी, बम्बई
(२) बसन्त पिक्चर्स स्टुडियोज्	कोलवाड़ा बोरला रोड चेम्बूर, बम्बई
(३) बॉम्बे टॉकीज स्टुडियोज्	मलाड, फिल्मीस्तान लि० बम्बई
(४) सेन्ट्रल स्टुडियोज्	७४-९४ तारदेव रोड तारदेव, बम्बई ७
(५) फेमस पिक्चर्स लिमिटेड	कडेल रोड बम्बई २८
(६) फेमस साइन लेबोरेटरीज् एण्ड स्टुडियोज् लि०	२० हेन्स रोड, महालक्ष्मी, बम्बई ११
(७) फिल्मीस्तान लिमिटेड,	घोदबदर रोड गोरेगाँव, बम्बई
(८) जागृति स्टुडियोज्	चेम्बूर, बम्बई
(९) जुपीटर स्टुडियोज्	परेल टैंक रोड, परेल, बम्बई १२
(१०) ज्योति स्टुडियोज्	केनेडी ब्रिज बम्बई ७
(११) कारदार प्राडक्शन्स	३० गवर्नमेंट गेट रोड, परेल बम्बई १२
(१२) मेहबूब स्टुडियोज्	हिल रोड, बान्द्रा बम्बई २०
(१३) एम० एण्ड टी० फिल्मस लिमिटेड	कुर्ला रोड, अन्धेरी बम्बई
(१४) मिनर्वा स्टुडियोज्	बंदर रोड, सेवरी बम्बई
(१५) माडर्न स्टुडियोज्	१६४ कुर्ला रोड, अन्धेरी बम्बई
(१६) मोहन पिक्चर्स स्टुडियोज्	कुर्ला रोड, अन्धेरी, बम्बई
(१७) रंगमहल स्टुडियोज्	८५ मेन रोड, दादर बम्बई १४
(१८) प्रकाश स्टुडियोज्	कुर्ला रोड, अन्धेरी बम्बई ४१
(१९) प्रीमियर स्टुडियोज्	सीजर रोड अन्धेरी बम्बई ४१
(२०) राजकमल कलामन्दिर लिमिटेड	गवर्नमेंट गेट रोड, परेल, बम्बई १२
(२१) आर० के० स्टुडियोज्	चेम्बुर, बम्बई
(२२) श्री रणजीत मुवीटोन कम्पनी	११९ दादा साहेब फाल्के रोड दादर, बम्बई १४
(२३) श्री साऊण्ड स्टुडियोज	गोकुलदास पास्ता रोड, दादर, बम्बई १४
(२४) श्रीकान्त स्टुडियोज	चेम्बुर, बम्बई
(२५) डेकन स्टुडियोज	शकरशेत रोड, पूना
(२६) नवयुग चित्रपट लिमिटेड,	३८ शंकरशेत रोड, पूना
(२७) प्रभात फिल्मस कम्पनी लिमिटेड,	प्रभात नगर, पूना ४
(२८) जयप्रभा स्टुडियोज	कोल्हापुर
(२९) एसोसियेटेड प्रोडक्शन्स लिमिटेड	१२, प्रिन्स अनवर शाह रोड, टॉलीगंज, कलकत्ता
(३०) अरोरा फिल्म कार्पोरेशन लिमिटेड	१०६ नारीकेल डंगा रोड, कलकत्ता ११
(३१) कलकत्ता मुवीटोन लिमिटेड	२०५ चंडी घोष रोड, टॉलीगंज कलकत्ता
(३२) ईस्ट इण्डिया फिल्म कम्पनी	रीजेन्ट पार्क, टॉलीगंज कलकत्ता
(३३) ईस्टर्न टॉकीज, लिमिटेड	२, डाक्टर रविन्द्रनाथ टैगोर रोड, कलकत्ता
(३४) इन्द्रपुरी स्टुडियोज लिमिटेड	रसा रोड, टॉलीगंज कलकत्ता ३३

(३५) नेशनल साऊन्ड स्टुडियोज लिमिटेड	४८ बैरकपुर ट्रन्क रोड, कलकत्ता २
(३६) न्यू थियेटर्स	३०, गाँधी घोष रोड, टॉलीगंज, कलकत्ता ३३
(३७) राधा फिल्मस् लिमिटेड	७२, रुसा रोड, टॉलीगंज कलकत्ता ३३
(३८) श्री भारत लक्ष्मी फिल्म स्टुडियोज	१९ प्रिन्स अनवर शाह रोड, कलकत्ता
(३९) टेकनीशियन्स स्टुडियोज लिमिटेड	४ बाबू राम घोष रोड, टॉलीगंज, कलकत्ता ३३
(४०) ए० बी० एम० स्टुडियोज	आर्कोट रोड, वाडापलानी, मद्रास २६
(४१) भारती स्टुडियोज	सालीग्राम, वाडापलानी, मद्रास २६
(४२) सितादेल स्टुडियोज लिमिटेड	लॅडोन्स रोड, मद्रास १०
(४३) फिल्म सेन्टर लिमिटेड	वाडापलानी, मद्रास २६
(४४) जेमिनी स्टुडियोज	"मुनीलैंड" पोस्ट ऑफिस बॉक्स नम्बर ७०६, मद्रास
(४५) नरसु स्टुडियोज	नरसु नगर, गुरन्डी मद्रास १५
(४६) नेपच्युन स्टुडियोज लिमिटेड	ग्रीनवेज रोड, मद्रास २८
(४७) न्यू टोन स्टुडियोज लिमिटेड	३०, किलपौक गार्डन रोड, किलपौक, मद्रास १०
(४८) प्रकाश स्टुडियोज	आर्कोट रोड कोदम्बक्कम, मद्रास २६
(४९) रेवाठी स्टुडियोज	आर्कोट रोड, कोदाम्बक्कम मद्रास २६
(५०) रोहिनी स्टुडियोज	आर्कोट रोड, कोदाम्बक्कम, मद्रास २६
(५१) श्यामला स्टुडियोज	आर्कोट रोड, कोदाम्बक्कम, मद्रास २६
(५२) शोबनाचल स्टुडियोज	मिर्जापुर हाऊस, अलवार्पेट मद्रास १८
(५३) स्टार कम्बाइन्स् लिमिटेड स्टुडियोज	कोदाम्बक्कम, मद्रास २६
(५४) वौहिनी स्टुडियोज	आर्कोट रोड, कोदाम्बक्कम मद्रास
(५५) माडर्न थियेटर्स लिमिटेड	यरकौड रोड, सलेम
(५६) रत्न स्टुडियोज	ओमालुर, सलेम
(५७) चित्रकला मुवीटोन	मदुराई अल्लेपी
(५८) उदय स्टुडियोज	अल्लेपी

सिनेमा जगत् के प्रसिद्ध कलाकार

(१) पृथ्वी राज कपूरः—अभिनेता (बम्बई) आपका जन्म पेशावर में ३ नवम्बर १९०६ को हुआ था। सिनेमा को कला के बहुत ही चतुर एवं अनुभवी कलाकार हैं। आपकी शिक्षा बी० ए० तक हुई है और आपने सिनेमा संसार में उस समय प्रवेश किया जब कि विना बोलती सिनेमाओं का चारों ओर प्रचलन था। प्रारंभ में आपको "एक्स्ट्रा" (Extra) की तौर पर काम करना पड़ा। मगर बाद में प्रधान नायक की तौर पर अनेक चित्रों में काम किया "सीता" पर इनको अन्तर्राष्ट्रीय पारितोषिक दिया गया। इन्होंने कितने ही नाटक भी खेले हैं जिनमें से पठान, दीवार, आहूति और कलाकार प्रसिद्ध हैं।

ये राज्य सभा के सदस्य भी हैं तथा सन् १६५५ में सांस्कृतिक सभा (delegation) के प्रधान बनकर चीन भी गये थे।

(२) *सोहराब मोदी:*—इनका जन्म २ नवम्बर सन् १८६७ में बम्बई में हुआ था। इस समय ये उत्पादक, निर्माता, निर्देशक, संचालक, अभिनेता, स्टुडियों के मालिक सब कुछ हैं। इन्होंने सिनेमा की अभिनेत्री महताब से शादी की है। इस उद्योग में ये सन् १६१४ से कार्य कर रहे हैं और प्रारंभ में इन्होंने एक प्रदर्शक की हैसियत से काम किया तथा ग्वालियर में सबसे प्रथम सिनेमा की स्थापना की। सन् १६२५–३३ तक आपने शेक्सपियर के नाटक खेले और इसमें काफी ख्याति प्राप्त की। सन् १६३६ में मिनर्वा मुवीटोन नामक स्टुडियो की नींव डाली और तब से आज तक बराबर सिनेमा का उत्पादन करते जा रहे है। आपको मिर्जा गालिब चित्र पर राष्ट्रपति का सोने पदक सन् १६५५ इनाम में दिया गया है।

(३) *अब्बास ख्वाजा अहमद:*—आपका जन्म ७ जून सन् १६१४ को पानीपत में हुआ था। आज ये सिनेमा जगत में उत्पादक, निर्देशक, विभाजक और लेखक के रूप में कार्य कर रहे हैं। सन् १६५१ में भारतीय प्रतिनिधि सभा के सदस्यों के रूप में चीन ने आपको निमंत्रित किया था। सन् १६५४–५५ में आपने रूस, जेकोस्लोविया, पोलेंड, इङ्गलैंड तथा अन्य यूरोपीय देशों की यात्रा की। इस समय इनका चित्र ग्यारह हजार लड़कियां चल रहा।

(४) *ए०आर० कारदार:*—आपका जन्म अक्टोबर सन् १६०४ को लाहौर में हुआ। आपने सिनेमा जगत में उत्पादक के रूप में प्रवेश किया। आप कारदार स्टुडियोज् के मालिक हैं। कारदार प्रोडयशन्स लिमिटेड के मेनेजिग डायरेक्टर तथा म्युजिकल पिक्चर्स लिमिटेड के निर्देशक हैं।

(५) *व्ही० शान्ताराम*—आप बम्बई के सिनेमा जगत में उत्पादक, निर्देशक, स्टुडियो के मालिक, प्रदर्शक तथा विभाजक के रूप में कार्य कर रहे हैं। आपका जन्म १८ नम्बर सन् १६०१ को कोल्हापुर में हुआ। आप राजकमल कलामन्दिर स्टुडियोज के मालिक तथा राजकमल कलामन्दिर लि० के मेनेडिंग डायरेक्टर है। भारत वर्ष के प्रथम श्रेणी के सिनेमा डायरेक्टरों में आप एक हैं आपके द्वारा निर्माण किये हुए चित्र अत्यन्त उच्च कोटि की कला का प्रदर्शन करते हैं। आपने फिल्म जगत के भिन्न भिन्न विभागों में काम किया है तथा सन् १६२६ में सर्वप्रथम नेताजी पाल्कर (सायलेंस) चित्र बनाया। आपने गोपाल कृष्ण, चन्द्रसेन (दोनों खामोश), किंग आफ अयोध्या, माया मछिन्द्र, अमृतमन्थन, अमर ज्योति, दुनियाँ ना माने, आदमी, शकुन्तला, डा० कोटनीस, दहेज, अमर भूपाली, तीन बत्ती चार रास्ता, सुबह का तारा, परछाई इत्यादि का निर्देशन किया तथा आखिरी सात को अपने हाथों से निर्माण किया। इस समय आपका चित्र झनक-झनक पायल बाजे चल रहा है। आप भारत सरकार के फिल्म एडवाइजरी बोर्ड, सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सेन्सरस, चिल्डरन्स फिल्म सोसायटी के सदस्य हैं।

(६) *महबूब खान*—आप बम्बई के सिनेमा जगत में उत्पादन तथा निर्देशक के रूप में कार्य करते हैं तथा स्टुडियो के मालिक भी हैं। आपका जन्म सन् १६०६ को बिलीमोरा में हुआ। सन् १६२१ में 'एक्स्ट्रा'' के रूप में सिनेमा जगत में प्रवेश किया। तत्पश्चात् सागर फिल्म कम्पनी में प्रधान पात्र बन गये। केवल तीन सिनेमाओं के निर्देशन के पश्चात् सन् १६४२ में इन्होंने महबूब प्रोडक्शनस लिमिटेड फंसर्न की स्थापना की।

(७) *राजकपूर*—आप बम्बई के सिनेमा जगत में उत्पादक, निर्देशक, अभिनेता के रूप में कार्य करते हैं तथा स्टुडियो के मालिक भी हैं। आपका जन्म १४ दिसम्बर सन् १६२४ को पेशावर में हुआ था। आप जगत् प्रख्यात सिनेमा के अभिनेता पृथ्वीराज के पुत्र हैं मैट्रिक के पश्चात् आपने ताली बजाने

वाले की जगह सिनेमा में काम करना प्रारम्भ किया। पृथ्वी थियेटर्स में आपने प्रोडक्शन मेनेजर, कला निर्देशक और अभिनेता के रूप में कार्य किया है। आपने सर्व प्रथम नीलकमल सिनेमा बनाया जिसमें कि अभिमेता के रूप में कार्य किया। सन् १९४८ में आपने सबसे पहला सिनेमा बनाया जिसमें नायक का काम किया।

(८) *अशोक कुमार*—भारतीय सिनेमा जगत में आपका नाम अभिनेता तथा उत्पादक के रूप में काफी प्रख्यात है। आपका जन्म १३ अक्टोबर सन् १९११ को भागलपुर में हुआ था। आपने बी० एस० सी० तक शिक्षा प्राप्त की है तथा सन् १९३६ में सिनेमा जगत में केमरामैन के रूप में प्रवेश किया था। आपने सर्वप्रथम 'जीवन नैय्या" में सबसे पहले काम किया था। आप अशोक प्रोडक्शन्स लिमिटेड के मेनेजिंग डायरेक्टर हैं।

(९) *किशोर साहु*:—आप बम्बई के प्रसिद्ध सिनेमा उत्पादक, निर्देशक, तथा अभिनेता हैं तथा हिन्दुस्तान चित्र के मालिक हैं और साहु फिल्म लि० के मेनेजिंग डायरेक्टर हैं। आपका जन्म २२ अक्टोबर सन् १९१५ को हुआ तथा बी० ए० तक शिक्षा पाई। सर्व प्रथम स्वर्गीय हिमान्सुराय ने आपको सिनेमा जगत में प्रवेश करवाया और जीवन प्रभात में नायक का काम दिया। इसके पश्चात् बहुत से सिनेमाओं में आपने नायक का पार्ट किया।

(१०) *दिलीपकुमार (युसूफ खान)*:—आप बम्बई के प्रमुख अभिनेताओं में से एक हैं। आप का जन्म ११ दिसम्बर सन् १९२२ को पेशावर में हुआ था तथा सिनेमा जगत् में देविका रानी के प्रयास से सन् १९४४ में सर्व प्रथम प्रवेश किया और सब से पहले "ज्वार भाटा" में प्रमुख कार्य किया। इसके पश्चात् अन्य चित्रों से जैसे मिलन, जुगनू से आप की और भी अधिक ख्याति बढ़ गई। इस समय आपने के० आसिफ की हिस्सेदारी में फुट पाथ, अमर, आजाद, उड़न खटोला, इन्सानियत, देवदास इत्यादि चित्रों का उत्पादन भी किया है और अब मुगले-आजम का उत्पादन कर रहे हैं।

(११) *नरगिस*:—(मिस फातिमा ए० रसीद) आप बम्बई की प्रसिद्ध अभिनेत्रियों में से हैं। आपका जन्म १ जून १९२९ को कलकत्ता में हुआ था। चित्रों में प्रमुख पार्ट खेलती हैं। आपने सीनियर केम्ब्रिज तक शिक्षा पाई है। आपने सिनेमा जगत में महबूब खान की सहायता से पाँच वर्ष की आयु में ही प्रवेश कर लिया था। सन् १९४३ में सर्व प्रथम आपने तकदीर में प्रधान पार्ट खेला। उसके पश्चात् आज तक ४७ चित्रों में कार्य कर चुकी हैं। सन् १९५२ में अमेरिका जो सद्भावना मिशन गई थी उसकी आप सदस्या थीं और सन् १९५४ में फिल्म डेलीगेशन जो रूस गया उसकी भी आप सदस्या थीं।

(१२) *मधुबाला*:—(मिस मुमताज जहाँन बेगम) आप सिनेमा जगत की प्रमुख अभिनेत्री तथा सिनेमा उत्पादक हैं। १४ फरवरी सन् १९३३ को दिल्ली में आपका जन्म हुआ था। सन् १९४१ में मुमताज महल, धन्ना भगत, पुजारी, फुलवाड़ी इत्यादि में प्रमुख पार्ट किया है। आप सबसे अधिक नीलकमल में कार्य करने के पश्चात् प्रसिद्ध हुई और सबसे अधिक ख्याति लाल दुपट्टा में काम करने से प्राप्त हुई। अबतक आपने १०० चित्रों में काम किया है।

(१३) *मीनाकुमारी*: (मिसेज मे झाबी नारा बेगम कमल) बम्बई के सिनेमा जगत् की प्रमुख अभिनेत्रियों में से हैं। आपका जन्म १ अगस्त सन् १९३२ को बम्बई में हुआ था। आपने बचपन से ही सिनेमा संसार में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था। आपने अपना प्रमुख पार्ट सर्व प्रथम 'बच्चों का खेल'

में खेला है। आपने लगभग २५ चित्रों में कार्य किया है जिन में से बैजू बावरा, परिणिता और आजाद सब से उत्तम सिद्ध हुए हैं। आपने उत्पादक और निर्देशक कमल अमरोही से शादी कर ली है।

(१४) देवानन्दः—आप बम्बई के सिनेमा जगत् के प्रख्यात उत्पादक तथा अभिनेताओं में से। आपका जन्म सन् १६२३ को गुरुदासपुर में हुआ था। आपने बी० ए० (आनरस) तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने सिनेमा की अभिनेत्री कल्पना कार्तिक से शादी की है। आपने सर्व प्रथम प्रमुख पार्ट "हम एक हैं" नामक चित्र में खेला है। आपने लगभन ३० चित्रों में कार्य किया है। आप नवकेतन, बम्बई के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

(१५) नलिनी जयवंतः—आप बम्बई के सिनेमा जगत की प्रख्यात अभिनेत्रियों में से हैं। आपका जन्म १८ फरवरी सन् १६२७ को बम्बई में हुआ था। आपने सन् १६४१ में "राधिका" नामक चलचित्र में कार्य करके सिनेमा जगत में सर्व प्रथम प्रवेश किया। आपने लगभग ६० चलचित्रों में काम किया है।

(१६) प्रेमनाथः—आप बम्बई के सिनेमा के प्राख्यात उत्पादकों, निर्देशकों और अभिनेताओं में से हैं। आपका जन्म २१ नवम्बर १६२६ को पेशावर में हुआ था। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने १६४६ से रंग मंच के अभिनेता के रूप में पृथ्वी थियेटर्स में काम किया था। आज तक आपने कितने ही चित्रों में काम किया है। आपने सिनेमा की अभिनेत्री बीनाराय से शादी की है। आप जी० एन फिल्मस लि० के मेनेजिंग डायरेक्टर हैं। सन् १६५१ में अमेरिका जो सद्भावना मिशन गई थी उसके आप सदस्य थे।

(१७) बीना रॉय - आप बम्बई सिनेमा जगत की प्रमुख अभिनेत्रियों में से हैं। आपका जन्म १३ जुलाई सन् १६३२ को लाहौर में हुआ था। किशोर साहु की "कालीघटा" नामक चित्र के लिये चुन जाने के पश्चात् आपने विश्व-विद्यालय की पढ़ाई को तिलाजंली दे दी थी। उसके पश्चात् आपने बहुत से चित्रों में काम किया और कॉफी ख्याति प्राप्त की। आपने फिल्म अभिनेता प्रेमनाथ से शादी करली। आप सन् १६५२ में अमेरिका, भारतीय सद्भावना मिशन की सदस्या बन कर गई थीं।

(१८) वैजयंती मालाः—सिनेमा जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्रियों में से हैं। आपका जन्म १३ अगस्त सन् १६३६ को मद्रास में हुआ था। आप नाचनेकी कला में प्रवीण हैं। आपने तामील, तेलगू तथा हिन्दी के कितने ही चलचित्रों में कार्य किया है। नागिन और पहली झलक नामक चित्रों में आपने बहुत ख्याति उपार्जन की है।

(१६) देविका रानीः—सिनेमा जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री तथा उत्पादक थीं। अब आप इस क्षेत्र से रिटायर हो गई हैं। आपका जन्म सन् १६१४ में हुआ था, आप कर्नल चौधरी की सुपुत्री हैं तथा रविन्द्रनाथ टैगोर की पड़ भतीजी हैं। आपने अपनी शिक्षा लंदन तथा शांति निकेतन में पूरी की, उसके पश्चात् हिमान्सु राय से शादी करके सिनेमा जगत में प्रवेश किया। अपने पति की सहायता से बाम्बे टाकीज लि० की स्थापना की। आपने कितने ही चित्रों में कार्य किया। उसके पश्चात् सन् १६४५ में बम्बई टाकीज को छोड़ दिया।

(२०) भारत भूषणः—सिनेमा जगत के प्रसिद्ध अभिनेताओं में से हैं। आपका जन्म मेरठ में जनवरी सन् १६२३ में हुआ था। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने सर्व प्रथम भक्त कबीर में प्रमुख पार्ट खेला है। उसके पश्चात् आपने कितने ही चित्रों में कार्य किया है "मिर्जा गालिब" चित्र पर राष्ट्रपति का सन् १६५५ का स्वर्ण पदक इनाम में दिया गया है।

(२०) *प्रेम अदीबः*—आप बम्बई के सिनेमा जगत के उत्पादक, निर्देशक और अभिनेता हैं। आपका जन्म सुल्तानपुर में १० अगस्त सन् १९१८ को हुआ था। आपने अधिकतर धार्मिक चित्रों में ही काम किया है। आपने सिनेमा जगत् में सन् १९३६ में प्रवेश किया। आपने "राम विवाह" नामक चित्र का उत्पादन तथा निर्देशन किया है। आपने कितने ही चित्रों में कार्य किया है और काफी ख्याति प्राप्त की है।

(२२) *प्राण*—(प्राण किशन सिकन्द) सिनेमा जगत में प्रसिद्ध खलनायक अभिनेता हैं। आपका जन्म फरवरी १९२० को दिल्ली में हुआ था। आप हिन्दी के चित्रों में 'BAD MAN" के नाम से प्रख्यात हैं। आपने लगभग ८० चित्रों में कार्य किया है। आप बम्बई में अच्छे खिलाड़ी के रूप में भी प्रसिद्ध हैं।

(२३) *गोप*—(गोप विशनदास कमलानी) हिन्दी सिनेमा संसार में आप एक बहुत ही प्रख्यात मजाकियाँ हैं। आपका जन्म ११ अप्रैल सन् १९१३ को हैदराबाद सिन्ध में हुआ था। मजाकिया का आज तक आपने सौ चित्रों से भी अधिक में कार्य किया है। हाल ही में इन्होंने अपने भाई की सहायता से चित्र का उत्पादन भी किया है। आपने लतिका नामक अभिनेत्री से शादी की है। हंगामा और मालकिन इनकी फर्म के चल चित्र हैं।

(२४) *मोतीलाल*—(मोतीलाल राजवंश) भारत के सिनेमा जगत के आप प्रसिद्ध अभिनेता तथा उत्पादक हैं। आपने लगभग ५० चित्रों से अधिक में प्रधान पार्ट खेला और अपनी इज्जत को वैसी की वैसी ही बना रक्खी है। आपका जन्म ४ दिसम्बर १९१० में हुआ था। आपने सर्वप्रथम इस क्षेत्र में सन् १९३४ में प्रवेश किया था।

(२५) *आगा*—(आगा जान बैग) भारत के हिन्दी सिनेमा जगत के आप प्रसिद्ध मजाकिया अभिनेता हैं। आपका जन्म २१ मार्च सन् १९१४ को पूना में हुआ था। आपने बहुत से चित्रों में काम किया जो कि इनकी ख्याति के द्योतक हैं। आप सिनेमा जगत में लगभग २५ वर्षों से काम करते हैं।

(२६) *किशोर कुमार*—बम्बई के सिनेमा क्षेत्र के आप प्रसिद्ध अभिनेता तथा संगीतज्ञ हैं। आपका जन्म ४ अगस्त सन् १९२९ को खण्डवा में हुआ था। आप सिनेमा जगत के प्रसिद्ध अभिनेता अशोक कुमार के छोटे भाई हैं। आप सिनेमा में प्रधान पार्ट खेलते हैं तथा पीछे से गाना गाते हैं। आपने रमादेवी नामक अभिनेत्री से शादी करली है।

(२८) *प्रदीप कुमारः*—बम्बई सिनेमा क्षेत्र के आप प्रसिद्ध अभिनेता तथा चित्र उत्पादक हैं। आपका जन्म ४ जनवरी सन् १९२५ को कलकत्ता में हुआ था। आपने सब से प्रथम अलोकनन्दा (बंगाली) चित्र में काम किया था। आपने हिन्दी, बंगाली और तामील भाषाओं के चित्रों में प्रमुख पार्ट खेला है। नागिन नामक चित्र में आपकी बहुत ख्याति हुई। दीप और प्रदीप प्रोडक्शनस अब "एक झलक" का उत्पादन कर रहे हैं।

(२९) *उल्हासः*—बम्बई के सिनेमा क्षेत्र के आप प्रसिद्ध अभिनेता हैं। आपने लगभग ७५ चल चित्रों में प्रमुख पार्ट खेला है। इस समय आपने सुरंग, धुआँ, लैला मजनू, अमर, बादशाह, मिर्जा गालिब, नास्तिक, कुन्दन, शाही मेहमान, बाप रे बाप इत्यादि में काम किया है।

(३०) *बलराज साहनीः*—आप बम्बई सिनेमा जगत क्षेत्र के प्रसिद्ध अभिनेता हैं। आपका जन्म १ मई सन् १९१३ को रावलपिंडी में हुआ था। आपने एम० ए० तक की शिक्षा प्राप्त की है। प्रारम्भ में आप व्यापारी थे तथा उसके पश्चात् सम्पादक का कार्य किया। इसके पश्चात् शांति निकेतन में आध्यपक

का कार्य किया, सेवाग्राम में बुनियादी शिक्षण का कार्य किया, बी० बी० सी० रेडियो पर अनाउन्सर रहे और अन्तमें सिनेमा जगत् में प्रवेश किया। आपने अनेकों चित्रों में कार्य किया और काफी ख्याति पाई।

(३१) *विकाश रायः*—आप बंगाल सिनेमा क्षेत्र के प्रख्यात सिनेमा निर्माता, निर्देशक, तथा अभिनेता हैं। आपका जन्म १६ मई सन् १९१६ को कलकत्ता में हुआ था। आपने इस क्षेत्र में सन् १९४६ में सर्व प्रथम कदम रक्खा और सबसे पहले "अभियात्री" (बंगाली) नामक चित्रमें प्रमुख पार्ट खेला। आपने अभी तक लगभग ६० चित्रों में कार्य किया।

(३२) *रतनकुमारः*—(सैयद नजीर अली) आप बम्बई के प्रसिद्ध कलाकार हैं। आपका जन्म २१ अगस्त सन् १९४२ को अजमेर में हुआ था और अब आप बम्बई में शिक्षा पा रहे हैं। आपने सबसे पहले "दिल की आवाज" नामक चित्र में काम किया था और अब तक आप ४८ चित्रों में कार्य कर चुके हैं।

(३३) *निरूपा रॉयः*—(श्रीमती कोकिला किशोरचन्द्र बलसाड) आप बम्बई सिनेमा जगत् की प्रख्यात अभिनेत्रियों में से एक हैं। आपका जन्म ४ जनवरी सन् १९३१ को बलसाड़ में हुआ था। आपने हमेशा प्रमुख पार्ट खेलें हैं और अब तक ६० चित्रों में कार्य कर चुकीं हैं।

(३४) *नितिन बोसः*—आप भारतीय सिनेमा जगत् के प्रमुख सिनेमा निर्माताओं, निर्देशकों और केमरामेन में से एक हैं। आपका जन्म सन् १९०१ में कलकत्ता में हुआ था। आपने सबसे पहले "इन्टरनेशनल न्यूज रील्स ऑफ अमेरिका" के साथ काम किया था। सन् १९३० में न्यू थियेटर्स लि० कलकत्ता में नौकरी कर ली। आपने यहाँ पर अनेकों प्रसिद्ध चित्रों का निर्माण किया और अन्त में अपने ही संरक्षण में नितिन बोस लि० बम्बई से "दर्दे दिल" चित्र का निर्माण किया।

(३५) *नूतनः*—(मिस नूतन समर्थ) आप भारतीय सिनेमा जगत् की प्रसिद्ध अभिनेत्रियों में से एक हैं। आपका जन्म ४ जनवरी सन् १९३६ को बम्बई में हुआ था। सिनेमा अभिनेत्री शोभाना समर्थ की सुपुत्री हैं और सबसे पहले सन् १९५१ में आप की माता के द्वारा निर्माणित चित्र "हमारी बेटी" में आपने काम किया था। अब तक आप अनेकों प्रसिद्ध चित्रों में काम कर चुकी हैं।

(३६) *निम्मी*—(सुश्री नवाब बानु) आप एक प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं। आपका जन्म फरवरी सन् १९३३ में आगरा में हुआ था। आपने राजकपूर के द्वारा निर्माणित चित्र "बरसात" में सबसे पहले काम किया था और वहीं काफी ख्याति प्राप्त करली। इसके पश्चात् आपने अनेकों चित्रों में काम किया है। "डङ्का" नामक चित्र का आपने खुद ही निर्माण किया है।

(३७) *निगार सुल्ताना*—आप बम्बई सिनेमा जगत की एक अभिनेत्री हैं। आपका जन्म दक्षिण हैदराबाद में हुआ था। आपने कितने ही चित्रों में प्रमुख कार्य किया है और इस क्षेत्र में आपने काफी ख्याति भी पाई है।

(३८) *सुरैया*—(मिस सुरैया जमाल शेख) आप भारतीय सिनेमा जगत की प्रख्यात अभिनेत्रियों में से एक हैं। आपका जन्म १५ जून सन् १९२९ को लाहौर में हुआ था। आपको सबसे पहले "इशारा" नामक चित्र में महत्त्वपूर्ण काम मिला और इसी में आपने ख्याति प्राप्त की। आपने लगभग ५५ चित्रों में काम किया है।

(३९) *दुर्गा खोटे*—आप सिनेमा जगत् की प्रख्यात अभिनेत्री हैं। आपका जन्म सन् १९०० में बम्बई में हुआ था। आपने सन् १९३५ में "किंग ऑफ अयोध्या" में काम करके ख्याति पाई। इसके पश्चात् मायामच्छिन्द्र, अमर ज्योति, राजरानी मीरा में आपने काफी प्रशंसा प्राप्त की। आजकल आप साधारणतया माता का काम करती हैं। आपने रशीद नामक व्यापारी से शादी करली थी। आपने अनेकों चित्रों में काम किया।

(४०) *गीताबाली*—(हरी कीर्तन कौर) आप बम्बई के सिनेमा जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री हैं। आपका जन्म सन् १६३० में अमृतसर में हुआ था। आप एक दक्ष अभिनेत्री तथा निपुण नर्तकी हैं। आप बारह वर्ष की उम्र में ही नर्तकी के रूप में सिनेमा जगत् में प्रवेश कर चुकी थीं। आपने "सोहाग रात" में ख्याति पाई। आपने शम्मी कपूर नामक अभिनेता से शादी की है। आपने अनेकों चित्रों में कार्य करके अपनी कला का प्रदर्शन किया है।

(४१) *शशिकला*—आप बम्बई सिनेमा संसार की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म ३ अगस्त सन् १६३३ को शोलापुर में हुआ था। आप इस क्षेत्र में लगभग बारह वर्षों से काम कर रही हैं। आपने सबसे पहले "जीनत" में प्रधान पार्ट खेला। इसके पश्चात् आपने अनेकों चित्रों में काम किया।

(४२) *शीला रमानी*—(सुश्री शीला केवल रमानी) आप बम्बई क्षेत्र के सिनेमा संसार की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म २ अप्रैल सन् १६३१ को कराची में हुआ था। आपने बी० ए० तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने सर्वप्रथम "आनन्द मठ" नामक चित्र में काम किया। उसके पश्चात् आप अनेकों चित्रों में काम करती रहीं हैं।

(४३) *विजय लक्ष्मी*—(सुश्री कमला वर्मा) आप बम्बई क्षेत्र सिनेमा जगत की प्रख्यात अभिनेत्रियों में से हैं। आपका जन्म २२ मार्च सन् १६३० को नगीना (यू० पी०) में हुआ था। आपने जूनियर बी० एस० सी० तक शिक्षा प्राप्त की है। आप अब तक लगभग ३० चित्रों में काम कर चुकीं हैं। आपने सर्वप्रथम "शान्ति" नामक चित्र में काम किया था।

(४४) *उषा किरण*—(श्रीमती उषा मनोहर खेर) आप बम्बई क्षेत्र सिनेमा जगत की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म २२ अप्रैल सन् १६२६ में बासीन (बम्बई) में हुआ था। आपने मैट्रिक तक शिक्षा पाई है। आप हिन्दी तथा मराठी के चित्रों में खास काम करती हैं। आप एक निपुण नर्तकी हैं, तथा तामील, गुजराती और अंग्रेजी भाषायें जानतीं हैं। आप अबतक लगभग ५० चित्रों में काम कर चुकीं हैं। आपने सबसे पहले "कल्पना" नामक चित्र में काम किया था।

(४५) *मनोरमा*—आप बम्बई क्षेत्र सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म १६ अगस्त सन् १६२६ को लाहौर में हुआ था। आपने जूनियर केम्ब्रिज तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने सिनेमा संसार के अभिनेता राजन् हक्सार से शादी की है। आपने सबसे पहले "खजाञ्ची" नामक फिल्म में काम किया उसके पश्चात् और कई फिल्मों में काम कर चुकी हैं।

(४६) *श्यामाः*—(सुश्री खुरशीद अख्तर) आप बम्बई क्षेत्र सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म १२ जून सन् १६३५ को लाहौर में हुआ था। सबसे पहले आपने "जीनत" में कौरस गाने का काम किया था, इसके पश्चात् लगभग आठ वर्ष तक आप छोटे छोटे पार्ट करती रहीं। अन्त में सन् १६५१ में आपने ख्याति पाई और प्रमुख अभिनेत्रियों के काम करने लगीं। अब तक आप लगभग १०० सिनेमाओं में काम कर चुकी हैं।

(४७) *कुक्कूः*—आप भारतीय सिनेमा जगत् की बहुत ही प्रख्यात नर्तकी हैं। आपने लगभग सौ चलचित्रों में अपने नाच की दक्षता को प्रदर्शित किया है। इसके अतिरिक्त आपने दूसरे पार्ट भी खेलें हैं।

(४८) *दीप्ति रॉयः*—आप बंगाल क्षेत्र सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आप ने इन्टर मिजियेट तक अध्ययन किया है। आप बंगाली उपन्यास कार अशीत रंजन् रॉय की सुपुत्री हैं। आपका सबसे सुन्दर चित्र जिसमें कि आपने काम किया है—वह है "स्वयंसिद्धा"। उसके पश्चात् आपने अनेकों बंगाली चल चित्रों में काम किया है।

(४६) *जयराज*:—आप सिनेमा जगत् के अभिनेता, निर्माता तथा निर्देशक हैं। आपका जन्म २८ सितम्बर सन् १६०६ को दक्षिण हैदराबाद में हुआ था। आपने वि० वि० की शिक्षा के पश्चात् सन् १६३० में बिना बोलते सिनेमा के समय में इस क्षेत्र में प्रवेश किया था। आप ८० चित्रों में कार्य कर चुके हैं।

(५०) *अभी भट्टाचार्य*:—आप सिनेमा संसार में एक अभिनेता के रूप में कार्य करते हैं। आपका जन्म २० नवम्बर सन् १६२२ को बगाल प्रदेश में हुआ था। आपने कार्य्य का प्रारम्भ बंगाल क्षेत्र में किया मगर अब बम्बई में काम करते हैं। सबसे पहले आपने "नौका डूबी" नामक बगाली चित्र में काम किया था। इसके पश्चात् आप अनेकों चित्रो में काम कर चुके हैं।

(५१) *बेबी नाज*:—(सुश्री सलमा सुल्ताना बेगम)—आप एक शिशु कलाकार हैं। आपका जन्म २० अगस्त सन् १६४४ को बम्बई में हुआ था, आप अभी अध्ययन कर रही हैं। आपने सबसे पहले "रेशम" नामक चित्र में काम किया था उसके पश्चात् अनेकों चित्रो में काम कर चुकी हैं।

(५२) *पी० भानुमति*:—आप दक्षिण भारत सिनेमा जगत् की निर्माता, निर्देशक, स्टुडियो की मालिक और अभिनेत्री हैं। आपका जन्म ७ सितम्बर सन् १६२५ में हुआ था। इसके अतिरिक्त आप निपुण गानेवाली तथा नाचनेवाली भी हैं। आपने तेलगू में संक्षिप्त कहानियाँ भी लिखी हैं। आपने दक्षिण भारतीय सिनेमा निर्देशक पी० एस० रामकृष्ण राव से शादी की है और अब तक लगभग ३५ चित्रों में काम कर चुकी हैं।

(५३) *भारती देवी*—आप बंगाल सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म कलकत्ता में अक्टोबर सन् १६२२ में हुआ था। आप सिनेमा संसार में पन्द्रह वर्ष से भी अधिक समय से कार्य कर रही हैं। आपने सब से पहले "डाक्टर" नामक चित्र मे जो कि हिन्दी और बंगाली में निकला था, काम किया था। आप अब तक ५० चित्रों में काम कर चुकी हैं जो कि लगभग सब ही बंगाली में निकले हैं। आपने "स्वामीजी" नामक चित्र का हिन्दी और बंगाली में निर्माण किया है।

(५४) *भगवान*—आप बम्बई सिनेमा जगत् के सिनेमा निर्माता, स्टुडियो के मालिक, निर्देशक (संचालक) एवं प्रवीण अभिनेता हैं। आप जागृति स्टुडियोज के हिस्सेदार तथा भगवान आर्ट प्रोडक्शन्स के मालिक हैं। आपने इस क्षेत्र में "वेवफा आशिक" में काम करके सर्वप्रथम सन् १६२६ में प्रवेश किया। आप अपने चित्रों के लिये खुद ही कहानियाँ लिखते हैं और अब तक अनेकों चल चित्रों में कार्य कर चुके हैं।

(५५) *एस० पद्मिनी*—आप दक्षिण भारत सिनेमा क्षेत्र की नर्तकी एवं अभिनेत्री हैं। आपका जन्म दिसम्बर सन् १६३४ को त्रिवनद्रम में हुआ था। आप त्रावनकोर की प्रसिद्ध बहनों में द्वितीय हैं। साधारणतया आपका प्रत्येक चित्र में नाच तथा प्रमुख पार्ट होता है। आप अब तक लगभग १७५ चल चित्रों में काम कर चुकी हैं।

(५६) *नमिता चटर्जी*—(सुश्री नमिता चटर्जी) आप बगाल सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म २२ अगस्त सन् १६३६ को कलकत्ता में हुआ था। आप कलकत्ता में इन्टर मिजियेट की शिक्षा पा रही हैं। आप एक निपुण नर्त्तकी एवं गाने वाली हैं। आपने सबसे पहले "रामप्रसाद" नामक बंगाली चित्र में कार्य किया है। आप अबतक कुल मिलाकर ५० चल चित्रों में कार्य कर चुकी हैं।

(५७) के० *अंजली देवी*:—आप दक्षिण भारत सिनेमा जगत् की निर्माता तथा अभिनेत्री हैं। आप का जन्म मई सन् १६२७ को पेड्डापुरम् में हुआ था। आप हिन्दी, तामील तथा तेलगू भाषा के चलचित्रों में प्रमुख पार्ट खेलती हैं। आपने इस क्षेत्र में सबसे पहले सन् १६४६ में कदम रक्खा था। आप अब तक लग-

भग ७० चलचित्रों में कार्य कर चुकी हैं। आप सन् १६५०-५१ में इण्डियन फिल्म चेम्बर ऑफ कामर्स की उपाध्यक्ष रह चुकी हैं। सन् १६५२ में उत्तम एक्टिंग के कारण प्रादेशिक सरकार से इनाम पाया है।

(५८) *सविता चटर्जीः*—आप बंगाल सिनेमा जगत् की प्रमुख अभिनेत्री हैं। आप अधिकतर बंगाली चल चित्रों में ही कार्य करती हैं। आप एक बहुत ही सफल अभिनेत्री हैं। आपने अनेकों बंगाली भाषा के चित्रों में कार्य किया है।

(५६) *सिप्रा देवीः*—(श्रीमती कननिका मित्रा) आप बंगाल सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आपका जन्म ३० मार्च सन् १६२६ को कलकत्ता में हुआ था। आप इस क्षेत्र की एक प्रमुख अभिनेत्री हैं। आपने अधिकतर बंगालीभाषा के चित्रों में ही कार्य किया है और अबतक अनेकों चित्रों में काम कर चुकी हैं।

(६०) *सुलोचना चटर्जीः*—आप बम्बई क्षेत्र सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आप एक सफल कलाकार एवं अभिनेत्री हैं। आपने अधिकतर हिन्दी भाषा के चित्रों में कार्य किया है। आप अब तक अनेकों चित्रों में कार्य कर चुकी हैं जो कि आप की सफलता के द्योतक हैं।

(६१) *लता मंगेशकरः*—(सुश्री लता दीनानाथ मंगेशकर) आप भारतीय सिनेमा जगत् की सबसे उत्तम गाने वाली हैं। आपका जन्म २८ सितम्बर सन् १६२६ को इन्दौर में हुआ था। आप भारतीय सिनेमा जगत् की उच्च श्रेणी की गायिकाओं में सर्व-प्रधान स्थान रखती हैं। आपने भिन्न-भिन्न भाषाओं के अबतक ५०० चित्रों को अपने मधुरकंठ से सुशोभित किया है। आपने इस समय ५० चलचित्रों में गाने का ठेका ले रखा है।

(६२) *जय श्रीः*—(श्रीमती जय श्री व्ही० शान्ताराम) आप बम्बई क्षेत्र सिनेमा जगत् की अभिनेत्री हैं। आप निपुण संगीतज्ञ एवं दक्ष नर्तकी हैं। आपने अधिकतर हिन्दी एवं मराठी के चित्रों में काम किया है। आप अब तक लगभग आठ चित्रों में कार्य कर चुकी हैं।

(६३) *कामिनी कौशलः*—(श्रीमती ऊमा सूद) आप बम्बई सिनेमा जगत् की प्रख्यात अभिनेत्रियों में से एक हैं। आपका जन्म २४ फरवरी सन् १६२७ को लाहौर में हुआ था। आपने बी० ए० (ऑनर्स) तक की शिक्षा प्राप्त की है। आपने सर्व प्रथम सिनेमा जगत् में "नीचा नगर" नामक चित्र में काम करके सन् १६४६ में पदार्पण किया था। फिल्मिस्तान के 'शहीद' में काम करके आपने काफी ख्याति पाई। इसके पश्चात् आपने अनेकों चित्रों में काम किया और कर रही हैं।

(६४) *डेविडः*—(डेविड अब्राहम) आप बम्बई सिनेमा जगत् के प्रसिद्ध अभिनेता हैं। आपका जन्म २१ जून सन् १६०७ को बम्बई में हुआ था। आपने बी० ए० एल० एल० बी० तक शिक्षा पाई है। आप एक प्रमुख अभिनेता के साथ साथ एक प्रमुख खिलाड़ी भी हैं और हेलसिंकी में जो प्रतियोगिता हुई थी, उसमें अधिक वजन उठाने की होड़ के रेफरी आप ही थे। सन् १६५३ में इजराइल में भी आप इस होड़ के रेफरी बन कर गये थे तथा भारतीय सद्भावना मिशन के सदस्य बनकर सन् १६५२ में अमेरिका भी गये थे। आप अब तक लगभग सौ चित्रों में कार्य कर चुके हैं।

(६५) *जीवनः*—(ओंकार नाथ धर जीवन दुर्गा प्रसाद) आप बम्बई सिनेमा जगत् के प्रसिद्ध अभिनेता हैं। आपका जन्म २४ अक्टूबर सन् १६१५ को श्री नगर में हुआ था। आपने इन्टरमीजियेट तक शिक्षा पाई है। आप धार्मिक चित्रों में अकसर "नारद मुनि" का काम करते हैं तथा दूसरे खेलों में (Villain) खल नायक का काम करते हैं। आप १०० चित्रों से अधिक में काम कर चुके हैं। २० वर्ष के सिनेमा जगत् के जीवन में आपने केवल एक ही वक्त "जमीन-आसमान" नामक चित्र में नायक का पार्ट खेला है।

भारत में ऊन उद्योग का विकास*

ऊनी वस्त्रों का उपयोग भारत वर्ष में बहुत प्राचीन काल से प्रचलित है। यहां पर अशौच कार्यों में ऊनी और रेशमी वस्त्र धारण करने का रिवाज पुरातन काल से चला आ रहा है। बीकानेर में बननेवाली ऊन की लोइयां, कश्मीर की शालें और कम्बल आज भी दुनिया में अपनी सानी नहीं रखतीं।

मशीन युग के औद्योगिक क्षेत्र में ऊन उद्योग का प्रारम्भ हमारे देश में सन् १८७६ से प्रारम्भ होता है। इसी वर्ष धारीवाल में धारीवाल ऊलन मिल्स और कानपुर में ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन के तत्वाविधान में कानपर ऊलन मिल्स (लालइमली) के विशाल कारखानों की स्थापना हुई।

इसके पश्चात् सन् १९१९-२० में और १९४८ से ५४ के बीच में दोनों महायुद्धों से इस उद्योग को बहुत प्रेरणा मिली और इस उद्योग का काफी विकास हुआ।

इस समय हमारे देश में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करनेवाला सम्भवतः एक ही उद्योग है और वह है ऊन का उद्योग। इस समय हमारे देश में जितने शक्ति चालित करघे और तकुवे हैं उनके एक पाली काम करने से जितना माल उत्पन्न हो सकता है उतनी खपत भी हमारे देश में नहीं है। द्वितीय पंच वर्षीय योजना में जनता का जीवनस्तर बढ़ जाने पर तथा ऊनी कपड़े का निर्यात अधिक बढ़ जाने पर भी इस उद्योग को पूरे पैमाने पर चलाने की जरूरत न पड़ेगी।

ऊनी उद्योग के साधारणतयः दो वर्ग होते हैं। एक वर्ग मोटी ऊन का होता है और दूसरे वर्ग में श्रेष्ठ मुलायम और उंची श्रेणी का माल तैयार होता है। हमारे देशमें जो कच्ची ऊन पैदा होती है वह हलकी किस्म की मोटे वस्त्र बनानेवाली ऊन होती है। इस ऊन से कम्बल, मेस्टन और ब्लेझर आदि कपड़ा तैय्यार होता है। श्रेष्ठ ऊनी वस्त्र आस्ट्रेलियाई भेड़ों की ऊन तथा संकर नस्ल की भेड़ों की उन, तथा स्टेपल फ़ाइबर टौप्स से तैय्याार की जाती है। इस किस्म में बढ़िया किस्म का माल, सूट के लायक कपड़े, वेड फोर्ड कार्ड, फ़लालेन, सर्ज, गैबरडीन इत्यादि तैय्यार किया जाता है।

खाली ऊन कातने के हमारे देश में १९ कारखाने हैं, पॉवर से चलने वाले लूम्स के ७९ कारखाने हैं, और कताई और बुनाई दोनों काम करने वाली २४ संयुक्त मिलें हैं।

१—मोटी ऊन कातने वाले स्पिण्डल्स कुल मिलाकर ६१०३२ हैं जो १७० लाख पौण्ड सामान्य ऊनी धागा कात सकते हैं।

२—बढ़िया किस्म की ऊन कातने वाले स्पिण्डल्स कुल मिला कर ९३०१९ हैं जो २१० लाख पौण्ड श्रेष्ठ किस्म का ऊनी धागा कातने की क्षमता रखते हैं।

३—हमारे यहां की सब मिलों में ३९५० पॉवर लूम्स लगे हुए हैं जो ४८० लाख गज सामान्य और बढ़िया किस्म का ऊनी कपड़ा तैय्यार कर सकते हैं।

मगर ऊनी माल की खपत कम होने से तथा निर्यात की पूरी व्यवस्था न होने से हमारे यहां के कारखानों को अपनी पूरी कार्य्य क्षमता दिखलाने का अवसर नहीं आता है और बहुत सी मशीनें बेकार पड़ी रहती हैं।

गत आठवर्षों में सामान्य तथा बढ़िया किस्म के ऊनी कपड़े का वार्षिक उत्पादन औसतन १६० लाख गज से अधिक नहीं हुआ। इसी से ऊनी धागे के उत्पादन का अनुमान भी किया जा सकता है। सन्

---

* उद्योग व्यापार पत्रिका के आधार पर।

१९५४ में घटिया और बढ़िया दोनों किस्म की ऊनी धागों का उत्पादन १६३·५ लाख पौण्ड हुआ और घटिया और बढ़िया दोनों प्रकार के ऊनी वस्त्रों का उत्पादन १३७·५ लाख गज रहा। इस वर्ष में दो बड़े २ ऊन के कारखाने बन्द होगये। इससे भी उत्पादन में कमी हुई।

गत पांच वर्षों में प्रतिवर्ष औसतन लगभग १८ लाख गज खालिस ऊनी कपड़े का वार्षिक आयात हुआ और ऊन तथा वेस्टर्ड धागे का आयात २०·६ लाख पौण्ड का हुआ।

उत्पादन में कमी का प्रधान कारण यह है कि ऊनी कपड़ा बुननेवाले लगभग आधे करघे तो बन्द रहते हैं और जो तकुवे तथा करघे चालू हैं वे भी एक पाली काम करते है। यह देखा गया है कि कभी भी २०१५ से अधिक पॉवर लूम्स चलाये नहीं जाते। शेष करघे या तो बेकार रहते हैं या उनसे नकली रेशम या नकली रूई कातने का काम लिया जाता है।

श्रेष्ठ ऊनी वस्त्र उद्योग का विस्तार

पहली पंच वर्षीय योजना के सिलसिले में ऊन-उद्योग की स्थिति का सिंहावलोकन किया गया था। उस समय भी बढ़िया ऊन की कताई के अतिरिक्त और वस्तुओं के उत्पादन के लिए स्थापित-क्षमता पूर्णतः पर्याप्त समझी गयी थी। योजना कमीशन ने यही तय किया था कि ऊन के बढ़िया धागे के सम्बन्ध में देश को आत्म निर्भर बनाने के लिए ३०,००० अतिरिक्त तकुवे लगाये जाए। गत ५ वर्षों में प्रति वर्ष सामान्य तथा बढ़िया ऊन का २०.६ लाख पौन्ड धागे का औसत आयात हुआ। इससे प्रकट है कि इस धागे के उत्पादन में इतना ही भारत पीछे है।

बढ़िया ऊनी धागे की कताई का विस्तार करने के अवसर का उद्योग ने उत्साहपूर्वक लाभ उठाया और अब तक उद्योग (विकास तथा नियमन) अधिनियम, १९५१ तथा सूती कपड़ा (नियंत्रण) आदेश के अन्तर्गत बढ़िया ऊन की कताई के लिए ५४,००० अतिरिक्त तकुवे लगाने के लायसंस दिये जा चुके हैं। इनमें से २२,००० तकुवे वास्तव में लगाये जा चुके हैं और शेष तकुवे लगाने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं। अनुमान है कि इन अतिरिक्त ५४,००० तकुवों की उत्पादन-क्षमता १ करोड़ पौन्ड वार्षिक से कम न होगी। ऊपर दिये तथ्यों तथा आंकड़ों से विदित होगा कि ऊन उद्योग के सामान्य तथा श्रेष्ठ दोनों प्रकार का माल बनाने वाले वर्गों की उत्पादन क्षमता इतनी हो गयी है कि अब इसमें और विस्तार की गुंजाइश बहुत ही थोड़ी रह गयी है।

द्वितीय पंचवर्षीय योजना की स्थिति

लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि दूसरी पचवर्षीय योजना की अवधि में इस उद्योग की ओर ध्यान देने की आवश्यकता ही नहीं है। आगे आने वाले वर्षों में जनसंख्या की वृद्धि तथा जनता के रहन-सहन के स्तर में सुधार होने के फलस्वरूप ऊनी कपड़े की मांग बढकर २ करोड़ गज हो जाने का अनुमान है। इतना कपड़ा तैयार करने के लिए ऊन उद्योग को सामान्य तथा बढ़िया ऊन के १.७५ करोड़ पौंड धागे की आवश्यकता होगी।

मिल के कते हुए सामान्य तथा बढ़िया ऊन के धागे की कुछ परिमाण में आवश्यकता स्वेटर, मोजे आदि बुनने, कालीन आदि बनाने तथा कुटीर उद्योग की चीजें बनाने के लिए होगी। टटकर कमीशन ने १९५२ में अनुमान लगाया था कि मोजा, स्वेटर, दास्ताने आदि बनाने के उद्योग को प्रति वर्ष ४० लाख पौण्ड कती ऊन की आवश्यकता होती है। दूसरी पंचवर्षीय योजना की अवधि में यह आवश्यकता बढ़कर ५० लाख पौण्ड हो सकती है। कुटीर उद्योग को मिल में कती ऊन की आवश्यकता २० लाख पौण्ड से अधिक न होगी क्योंकि यह अक्सर हाथ से कती ऊन का प्रयोग करता है। कालीन बनाने

के उद्योग को मिल की कती हुई लगभग २५ लाख पौण्ड ऊन की आवश्यकता होगी। इस प्रकार सामान्य तथा बढ़िया ऊन के धागे की मांग २.७ करोड़ पौण्ड बढ़ जाएगी जिसमें से १.२ करोड़ पौण्ड धागा सामान्य ऊन का और १॥ करोड़ पौण्ड बढ़िया ऊन का होगा। इस उद्योग की वर्तमान उत्पादन क्षमता इस मांग को पूरा करने के लिए सर्वथा पर्याप्त है और इस उद्योग की जो उत्पादन-क्षमता निठल्ली पड़ी हुई है, उसका प्रयोग तो तभी हो सकता है, जब ऊनी कपड़े का निर्यात होने लगेगा।

ऊपर जो कुछ कहा गया है, उसके बाद भी भारत के ऊन उद्योग के विस्तार पर पूर्णतः रोक लगा देना इस उद्योग के हित में न होगा। कुछ ऐसे कारखानों के विस्तार की अनुमति तो देनी ही पड़ेगी, जिससे कताई और बुनाई की संतुलित व्यवस्था नहीं है।

वूल टौप्स का भारी आयात

ऊपर बताया ही जा चुका है कि भारत वूल टौप्स के लिए आयात पर ही पूर्णतः निर्भर है। बढ़िया—ऊन की कताई की वृद्धि के साथ इसके आयात में भी वृद्धि होती जा रही है जो आयात के निम्न आंकड़ों से प्रगट है:—

वर्ष		वूल टौप्स का आयात (परिमाण लाख पौण्ड में)		(मूल्य रु० में)
१९५१-५२	...	५६	...	५,२५,८६६
१९५२-५३	...	७८	...	४,०१,२२,१५७
१९५४-५४	...	१००	...	६,८३,७६,६१४
१९४५ ५५	...	११५	....	७,१५,६८,८६६

आगे इस वस्तु की मांग बढ़कर १.८ करोड़ पौन्ड तक हो जाने की सम्भावना है। इसलिए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि देश में ही वूल टौप्स तैयार किये जाएं। ये वूल टौप्स आस्ट्रेलियाई भेड़ों तथा मिलीजुली नस्ल की भेड़ों की ऊन से बनते हैं। इस प्रकार की ऊन भारत में तो नहीं होती लेकिन आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैन्ड से आयात की जा सकती है। वूल टौप्स तैयार करने वाले अन्य देशों की अपेक्षा भारत इन दोनों देशों के अधिक निकट है इसलिए भारतीय ऊन उद्योग कम लागत पर वूल टौप्स तैयार कर सकता है। इसलिए दूसरी पंचवर्षीय योजना काल में कार्यक्रम बनाने का प्रस्ताव है कि कम से कम ६० लाख पौन्ड वूल टौप्स तैयार करने वाले कारखाने स्थापित किए जाएं। इससे वूल टौप्स के आयात के लिए भारत द्वारा विदेशों का मुंह ताकना तो कम हो ही जाएगा, साथ ही एक मूल्यवान उपोत्पादन जिसका नाम ऊनी नौइल है, भी ऊन उद्योग के लिए तैयार हो सकेगा।

ऊनी माल के निर्माता और व्यापारी

बम्बई

अहमदाबाद ऊलेन मिल्स, अम्बरनाथ, बम्बई

ईस्टर्न ऊलेन मिल्स लि०, भवानीशंकर रोड, दादर, बंबई

श्री ध्रुव ऊलेन मिल्स, महालक्ष्मी बम्बई

बाम्बे ऊलेन मिल्स, थाना, बंबई

इंडियन ऊलेन मिल्स, एलफिंसटन सर्किल, बंबई

कृष्णा ऊलेस मिल्स, अलबर्ट बिल्डिंग, हार्नबी रोड, बम्बई

नागपाल ऊलेन मिल्स, चिकेल क्रास रोड, बंबई

बाम्बे ऊलेन मिल्स लि०, मुगल लेन, बंबई

महालक्ष्मी ऊलेन मिल्स लि, बंबई
रायमण्ड ऊलेन मिल्स लि०, थाना, बंबई
श्री दिग्विजय ऊलेन मिल्स लि०, बोदी बंदर रोड, जामनगर

उत्तर प्रदेश

इलाहाबाद ऊलेन मिल्स, सूबेदारगंज, इलाहाबाद
कानपुर ऊलेन मिल्स, कानपुर
दयालबाग टेक्सटाइल मिल्स लि०, दयालबाग, आगरा
भदोही टेक्सटाइल इंडस्ट्रीज लि०, भदोही
कपूरचंद ऊलेन मिल्स, कन्नबाजी राम, मिर्जापुर
जे०के० ऊलेन मैनुफैक्चरर्स लि० अनवरगंज, कानपुर
बैजनाथ बांके विहारीलाल ऊलेन मिल्स, अनवरगंज, कानपुर

पंजाब

अमृतसर स्वदेशी ऊलेन मिल्स लि०, जी० टी० रोड, अमृतसर
इंडिया ऊलेन टेक्सटाइल मिल्स, जी० टी० रोड, छेहर्त, अमृतसर
एस० एन० ऊलेन मिल्स, जेन स्ट्रीट, पानीपत
काश्मीर ऊलेन मिल्स, जी० टी० रोड, अमृतसर
प्रभु ऊलेन एण्ड सिल्क मिल्स, छेहर्त, अमृतसर
पानीपत ऊलेन मिल्स कं० लि०, खरार, अम्बाला
प्रकाश टेक्सटाइल मिल्स लि०, जी० टी० रोड अमृतसर
अशोक ऊलेन मिल्स, क्वीन्स रोड, अमृतसर
इंडियन ऊलेन एण्ड सिल्क मिल्स, अमृतसर
ओसवाल ऊलेन एण्ड जेनरल मिल्स लि०, जी० टी० रोड, लुधियाना
दिल्ली सिल्क एण्ड ऊलेन मिल्स, दिल्ली
पंजाब ऊलेन मिल्स, जी० टी० रोड, अमृतसर
पानीपत ऊलेन मिल्स, खरार, अम्बाला
माडल ऊलेन एण्ड सिल्क मिल्स, वर्का, अमृतसर

भारत के उद्योग और उद्योगपति—

(Indian Industrys & Industrialists)



दूसरा खण्ड



भारत के प्रमुख उद्योगपति

भारतीय उद्योग के महान् निर्माता
मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०

राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद ने "In the Shadow of Mahatma" नामक पुस्तक की प्रस्तावन में एक स्थान पर लिखा है कि—

"गांधीजी की शिक्षाओं में से एक यह भी रही है कि जिन्हें धन का सुख प्राप्त हो, वे उस धन के दूसरों के हित के लिए ट्रस्ट की सम्पत्ति समझ कर स्वयं को उसका ट्रस्टी मानें। आज सारे देश के प्रधान-प्रधान हिस्सों में एक बहुत बड़ी तादाद में सार्वजनिक संस्थाएं दिखाई दे रही हैं या तो वे शिक्षा-सम्बन्धी संस्थाओं के रूप में हैं या धार्मिक मन्दिर, धर्मशाला या अस्पतालों के रूप में। जिनका केन्द्र पिलानी या दिल्ली में है। वे इस बात का प्रमाण हैं कि बिड़ला-बन्धुओं ने गांधीजी की शिक्षा के इस भाग को बहुत कुछ धारण किया है। उन्होंने खूब पैदा किया है और उसी तरह बहुत उदारता और बहुतायत से हर अच्छे कार्य में खर्च किया है। यह बात हमारे स्वाधीनता-संग्राम के लिए भी बराबर लागू होती रही है जिसमें उन्होंने बापू और अन्य राजनैतिक नेताओं की मार्फत उदारता से निःसंकोच सहायता दी है।"

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भारतीय उद्योगपति

श्री वल्लभभाई पटेल ने २४ फरवरी सन् १९५० को राजा बलदेव दास को एक पत्र लिखते हुए लिखा था कि "आप लोगों के द्वारा जितनी देश की सेवा हुई है उसका पूरा अनुमान देशवालों को आज चाहे न हो लेकिन समय आने पर इतिहास के लिखने वाले भाग्य विधाता इसका उचित निर्णय करेंगे यह मेरी पूर्ण आशा है"

हाल ही में कलकत्ते का विशाल बिड़लाभवन जिसकी लागत बीस लाख रुपये से अधिक आंकी जाती है आपने भारत सरकार को औद्योगिक कलाप्रदर्शनी के लिए दानस्वरूप भेंट कर दी है।



श्री घनश्यामदास बिड़ला।

भारतीय उद्योग और उद्योगपति

मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०

भारतीय उद्योग के इतिहास में सर्व कलाओं से युक्त प्रकाशपुंज की तरह आज के समय में यदि कोई एक ही नाम चमक रहा है तो यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि वह बिड़ला-बन्धुओं का है।

वैसे चालीस करोड़ जनसंख्या का यह एक महान् देश है। गत शताब्दी से लेकर अभी तक बड़े-बड़े महान् उद्योग और उद्योगपति इस देश में पनप रहे हैं। विद्युत्गति से देश के अन्दर उद्योगीकरण का जाल बिछ रहा है, मगर अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा से जन-समाज के लिए उपयोगी विभिन्न वस्तुओं के उद्योग को अपने चरम उत्कर्ष पर पहुँचा देना, यह शक्ति बिड़ला-बन्धुओं के अतिरिक्त भारत के किसी दूसरे उद्योगपति में दिखलाई नहीं देती। कपड़ा, चीनी, कागज, जूट, मोटर, साइकिल, बैंकिंग, कोयला, बीमा, मशीनरी, ताम्बा, पीतल, प्लास्टिक, चाय इत्यादि प्रत्येक प्रकार के उद्योग में हाथ डालकर बिड़ला-बन्धुओं ने उसे चरमसीमा पर पहुँचा दिया है। जैसा कि आगे के विवरण से मालूम होगा।

अपने औद्योगिक विकास के साथ-साथ कमाई हुई सम्पत्ति को व्यापक रूप में जनसेवा के कार्यों में लगाते जाना यह इस परिवार की दूसरी महान् विशेषता है। कहावत है कि पैसा कमाना तो सैकड़ों व्यक्ति जानते हैं, मगर उसको सदुपयोग में खर्च करना बिरला ही जानता है! सो यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि बिड़ला-परिवार उन्हीं बिरले लोगों में से एक है, जिनकी बनाई हुई अमर और महान् स्मृतियों से सारा देश आलोकित हो रहा है। आगे हम इस प्रसिद्ध औद्योगिक परिवार का संक्षिप्त परिचय पाठकों के सामने रखते हैं—

प्रारम्भ और क्रमविकास

इस परिवार का वर्त्तमान इतिहास सेठ शिवनारायण बिड़ला से प्रारम्भ होता है, जिनका जन्म सन् १८४० के लगभग पिलानी में हुआ था और जो प्रारम्भ में अत्यन्त सामान्य अवस्था में एक महाजन की दूकान पर दस रुपये महीने की नौकरी करते थे, मगर जिनके दिल में साहस और अध्यवसाय कूट-कूट कर भरा हुआ था। अपने पिता के देहान्त के पश्चात् सिर्फ अठारह वर्ष की उम्र में उन्होंने बम्बई

की यात्रा की। उन दिनों आजकल की तरह रेल, मोटर इत्यादि यातायात के साधन न थे। सिर्फ अहमदाबाद से बम्बई तक रेल की लाईन बनी थी। अतः पिलानी से अहमदाबाद तक की यात्रा इन्होंने ऊँटों पर बैठकर तय की और वहां से रेल में बैठ कर ये बम्बई आये। यहां पर एक कमरा किराये पर लेकर उन्होंने दलाली और सट्टे का व्यवसाय प्रारम्भ किया और करीब सात वर्षों में उसे ठीक जमा लिया।

उन दिनों पिलानी के अन्दर पढ़ाई की कोई व्यवस्था नहीं थी। एक छोटी सी चटशाला में एक गुरुजी प्रत्येक विद्यार्थी से प्रतिमास एक सेर बाजरा लेकर पढ़ा दिया करते थे। एक दिन अत्यधिक वर्षा से वह शाला भी ध्वस्त हो गई। तब सेठ शिवनारायण बिड़ला ने सन् १६०१ में एक प्रायमरी पाठशाला की स्थापना की, जो आगे चलकर अंग्रेजी स्कूल में बदल दी गई। सन् १६०६ में सेठ शिवनारायण बिड़ला का स्वर्गवास हुआ।

राजा बलदेवदास बिड़ला



राजा बलदेवदास बिड़ला सेठ शिवनारायण बिड़ला के पुत्र थे। आपका जन्म पिलानी में सन् १८६४ ई० में हुआ था। बचपन से ही इनकी प्रतिभा के दर्शन होने लग गये थे। शादी होने के पश्चात् सन् १८७६ में ये भी अपने पिता श्री के व्यवसाय में हाथ बटाने बम्बई चले गये और मेसर्स शिवनारायण बलदेव दास की फर्म का कारबार देखने लगे। सन् १८६८ ई० में आप कलकत्ता आये और यहां पर भी मेसर्स बलदेवदास जुगलकिशोर के नाम से एक फर्म की स्थापना की। सन् १६०१ में आपने अपने बड़े पुत्र श्री जुगलकिशोर बिड़ला को भी कलकत्ता बुला लिया।

"उद्योगी पुरुषाणां मुपैतिलक्ष्मीः" के अनुसार इस उद्योगी परिवार पर भाग्य-लक्ष्मी की मुसकुराहट दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और प्रथम महायुद्ध के समय में यह परिवार उन्नति की एक मंजिल पर पहुँच गया।

सन् १९२१ में जयपुर महाराजा ने सेठ बलदेवदास बिड़ला की सेवाओं से प्रसन्न होकर उनको पैर में सोना बक्शा। फरवरी सन् १९२५ में ब्रिटिश सरकार ने आपको "राजा" की सम्माननीय उपाधि से विभूषित किया। उपाधि देते समय बिहार-उड़ीसा के तत्कालीन गवर्नर ने जो घोषणा की, वह अत्यन्त महत्वपूर्ण थी।

Raja Baldeodas Birla,

We honour in you the head of the family and of the important firm of Birla Brothers, although you have now delegated the management to your sons. Through your widespread business activitis, in Calcutta & Bombay in particular, you stand in the forefront of Indian Commerce with the sound and enterprising conduct of which the future of this country is so closely bound up. In Bihar and Orrisa, however we know you principally in two capacities, that of a considerable and influential land-lord, and that of a generous philanthropist. Apart from other villages you own the large Kairo estate in the Ranchi District and developing the property on practical and efficient lines. You are commended by the local officers for your enlightened dealings with your tenantry and for the good influence exercised by you, while if, as you are endeavouring to do, you can set an example of inteligent forest administration, you will give a much needed object lesson in support of our endeavours to stop the reckless denudation of the jungle which is now going on.

In Calcutta and Banaras the list of your benefactions is a long one, and I was interested to recall an eloquent tribute to your public sprit which was paid by Lord Ronaldshay when I was in Bengal. He then spoke of you as "subscribing impartially to all projects which are designed to benefit humanity", and such action constitute a high title to public regard. But your liberality has extended to this province also and your gift of Rs. 1¼ lakhs to the Patna Medical Collage will materially assist a scheme of particular interest to this city and of great importance to the province. In addition you have placed Rs. 75000/-at Lady Wheelar's disposal for any general charitable purpose that may arise, You have thus distinguished your self by an enlightened care for your fellowmen and have well earned the title which I have extreme pleasure in best owing upon you. I congiatulate you most sincerely

upon it. In your retirement at Banaras these mundane honours may seem of slight account, but the sprit of enlightened enterprise which your family has displayed is no small thing, and it is that which we are recognising today.

Patna, Sd/-H. Wheeler,

Dated, 20th February, 1 2?. Governor of Behar and Orissa.

शिक्षा के प्रति आपकी अभिरुचि को देखकर बनारस--हिन्दू-विश्वविद्यालय ने आपको 'Docter of Literature" की सम्माननीय उपाधि से विभूषित किया।

सन् १६२० से आप अपने व्यवसाय का समस्त कारबार अपने यशस्वी और प्रतिभाशील पुत्रों के जिम्मे कर बनारस में शान्तिपूर्ण धार्मिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सरदार वल्लभभाई पटेल ने २४ फरवरी सन् १६५० ई० को राजा बलदेवदास को एक पत्र लिखते हुए लिखा था कि "आप लोगों के द्वारा जितनी देश की सेवा हुई है उसका पूरा अनुमान देशवालो को आज चाहे न भी हो लेकिन समय आने पर इतिहास के लिखने वाले और भाग्य विधाता इसका उचित निर्णय करेंगे। यह मेरी पूर्ण आशा है।

इस प्रकार इस समय आप उन सौभाग्यशाली और यशस्वी पिताओं में सर्वप्रथम हैं जो अपने जीवनकाल में दान, भोग इत्यादि मानव-जीवन की सारी महत्वाकांक्षाओं को पूर्णकर अपने सामने ही अपने वंश का हराभरा और महान् उन्नतिशील पौधा फूलता-फलता देख रहे हैं और भारतवर्ष के सभी प्रमुख केन्द्रों में आपकी महान् स्मृतियाँ, कहीं मन्दिरों के रूप में, कहीं अस्पतालों के रूप में और कहीं शिक्षा-केन्द्रों के रूप में आपका जयघोष कर रही हैं।

सन् १६१६ में राजा बलदेवदास के चारों पुत्रों ने मिलकर कलकत्ता में पचास लाख की पूंजी से मेसर्स "बिड़ला ब्रदर्स लि०" की स्थापना की। यह फर्म नवीन पद्धति से व्यापार करनेवाली भारतीय फर्मों में बहुत अग्रगण्य थी। इस फर्म की मुख्य विशेषता यह रही है कि जहाँ दूसरी फर्मों में प्रबन्ध के लिए ऊपर के पदों पर विदेशी जानकार रक्खे जाते थे, वहाँ इस फर्म में ऊपर से नीचे तक सब कर्मचारी मारवाड़ी या हिन्दुस्तानी ही रखे गये। इसका प्रधान कार्यालय ८ रायल एक्सचेञ्ज प्लेस कलकत्ता में है। स्वर्गीय श्री देवीप्रसाद खेतान ने इस फर्म की उन्नति में काफी भाग लिया था।

सेठ जुगलकिशोर बिड़ला



राजा बलदेवदास बिड़ला के सबसे बड़े पुत्र सेठ जुगलकिशोर बिड़ला, उन व्यक्तियों में से एक हैं जो ठोस काम और सेवा करना जानते हैं, नाम कमाने की बिल्कुल इच्छा नहीं रखते। आपका जन्म पिलानी में हुआ और सन् १६०१ में आप अपने पिताजी को व्यवसाय में सहयोग देने कलकत्ता आये।

व्यवसाय की अपेक्षा धार्मिक और सामाजिक कार्य्य करने में आपकी लगन शुरू से ही बहुत अधिक रही। महामना मालवीय जी के आप अत्यन्त प्रिय पात्र रहे और उनके द्वारा निर्मित हिन्दू युनिवर्सिटी इत्यादि तमाम महान् कार्य्यों में तन-मन-धन से आपने जी खोलकर सहायता दी है।

आपके दान और सार्वजनिक सेवाएं इतनी गुप्त होती हैं कि उन सबका पता लगना भी बड़ा कठिन होता है। सन १६२८ की २३ फरवरी को व्यवस्थापिका सभा की बैठक में पिछड़ी हुई जातियों की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लाला लाजपतराय ने कहा था कि—

"बहुत-सी हिन्दू-संस्थाओं ने पिछड़ी हुई जातियों के विद्यार्थियों को केवल साधारण स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने तथा उनके विरुद्ध प्रचलित बन्धन या कानून को हटाने का ही प्रयत्न नहीं किया है,

वरन् उनके लिए विशेष स्कूल खोलने और विशेष छात्रवृत्तियों की व्यवस्था करने का भी प्रयत्न किया है मैं एक ऐसे व्यक्ति को जानता हूँ जो गत पांच-छः वर्षों से इन पिछड़ी जातियों की शिक्षा के लिए प्रति मास पन्द्रह हजार से पच्चीस हजार रुपये तक खर्च कर रहा है और यह व्यक्ति मेरे मित्र श्री घनश्यामदास बिड़ला के बड़े भाई श्री जुगलकिशोर बिड़ला हैं।"

आपके द्वारा निर्मित कई शिक्षा-केन्द्र, औषधि-केन्द्र और मन्दिर बने हुए हैं, जिनमें देहली का सुप्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मन्दिर, मथुरा का गीता-मन्दिर, पटना का लक्ष्मीनारायण मन्दिर, कलकत्ता का सद्धर्म विहार, रांची का गौतम-धारा, हरिद्वार का गीता-मन्दिर, बम्बई का बुद्ध-मन्दिर इत्यादि अत्यन्त सुप्रसिद्ध हैं।



बनारस का विशाल बिड़ला अस्पताल, प्रसूति-गृह, संस्कृत कॉलेज, बिड़ला छात्रावास आपके परिवार की महान् दानशीलता को घोषित कर रहे हैं। अब विश्वविद्यालय में आपकी ओर से एक विशाल मन्दिर का निर्माण हो रहा है।

श्री रामेश्वर दास बिड़ला

श्री रामेश्वरदास बिड़ला राजा बलदेव दास बिड़ला के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म पिलानी में हुआ था। आपने अपने व्यवसाय का क्षेत्र बम्बई को चुना। आप बिड़ला ब्रदर्स लि० कलकत्ता और दी कॉटन एजेण्ट्स लि० बम्बई के डॉइरेक्टर हैं। हिन्द सायकिल्स लि० बम्बई के आप प्रधान हैं। न्यू-

स्वदेशी सूगर मिल्स लि०, अवध सूगर मिल्स लि०, सतलज कॉटन मिल्स लि०, न्यू स्वदेशी मिल्स लि० अहमदाबाद; सेंचुरी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, तुङ्गभद्रा इण्डस्ट्रीज लि०, रांची जमींदारी लि०, आदि बिड़ला बन्धुओं द्वारा प्रबन्धित उद्योगों के आप डाइरेक्टर हैं। इनके अतिरिक्त हिन्दुस्तान सूगर मिल्स लि०, बछराज एण्ड कम्पनी लि०, बम्बई लाईफ इन्स्युरेन्स कं० लि०, बछराज फैक्टरी लि०, बैंक ऑफ बड़ौदा लि०, दी पोद्दार मिल्स लि० मेकेञ्जीज लि०, श्री दिग्विजय सीमेण्ट कम्पनी लि०, स्वदेशी प्राविडेण्ड इन्स्युरेन्स कम्पनी लि०, आदि उद्योगों के भी आप डाइरेक्टर हैं।

बम्बई बुलियन एक्सचेंज लि० की स्थापना में आपका बहुत हाथ रह चुका है। आप इसके तथा बम्बई बुलियन एसेइंग एण्ड रिफाइनिंग कं० लि० के भी डाइरेक्टर हैं। इनके अलावा बम्बई की कई प्रमुख व्यापारिक संस्थाओं के आप जन्मदाता तथा पदाधिकारी रह चुके हैं।

सामाजिक कार्य्यों में भी आप अच्छी दिलचस्पी रखते हैं। बम्बई का सुप्रसिद्ध "बम्बई अस्पताल आप ही के प्रयत्न से जनता की इतनी बड़ी सेवा कररहा है। इस अस्पताल के निर्माण में आपने काफी दान दिया तथा दूसरों से भी दिलवाया है। आप इस अस्पताल के ट्रस्टी मण्डल के अध्यक्ष हैं। बिड़ला शिक्षा ट्रस्ट पिलानी के आप ट्रस्टी हैं और इसकी सभी योजनाओं में आप पूरी दिलचस्पी से भाग लेते हैं।

आपके श्री गजानन बिड़ला और श्री माधवप्रसाद बिड़ला नाम के दो पुत्र हैं। श्री गजानन बिड़ला के श्री अशोकवर्धन बिड़ला नामक एक पुत्र है।



श्री घनश्यामदास बिड़ला

अपनी औद्योगिक और व्यापारिक संगठनशक्ति के बलपर न केवल मारवाड़ी समाज में प्रत्युत समस्त भारत के औद्योगिक क्षेत्र में, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने में जो थोड़े से व्यक्ति सफल हुए हैं, उनमें सेठ घनश्यामदास बिड़ला भी एक प्रमुख हैं। आपका जन्म सन् १८९४ में पिलानी में हुआ। स्कूल के अन्दर आपकी शिक्षा दीक्षा नहीं के बराबर ही हुई। मगर बचपन से ही शक्ति और प्रतिभा का तेज

आपके चेहरे से टपकता था और उसी के बलपर आगे चलकर निजी अध्ययन और मनन से आपने अंग्रेजी, संस्कृत और एक दो अन्य भाषाओं का अध्ययन किया तथा इतिहास और अर्थशास्त्र का विशिष्ट ज्ञान प्राप्त किया। फ्रेंच भाषा का भी आपने अध्ययन किया है।

सोलह वर्ष की उम्र से आपने दलाली का स्वतन्त्र व्यवसाय प्रारम्भ किया। इस व्यवसाय में आपका अंग्रेजों से विशेष सम्पर्क हुआ। आपको उनकी समुन्नत व्यापार-पद्धति, संगठनशक्ति और अन्य अनेक विशेषताएँ देखने को मिलीं। पर भारतीयों को तुच्छ निगाह से देखने की उनकी प्रवृत्ति, आपको बहुत खटकती थी। उनके ऑफिसों में जाते समय आप स्वयं लिफ्ट का प्रयोग नहीं कर पाते थे तथा प्रतीक्षा के लिए बेंचों पर बैठे रहने में आपको बड़ा अपमान अनुभव होता था। इस प्रकार के अपमान से आपके दिल को गहरी ठेस पहुँची। आज बिड़ला-बन्धुओं का जो औद्योगिक विस्तार है, उसके मूल कारणों में इसी प्रकार की अपमानजनक घटनाएँ भी सम्मिलित हैं। इसी अपमान से क्षुब्ध होकर आपने सन् १९१९ में "बिड़ला ब्रदर्स लि०" की स्थापना कर एक दो मिलें चालू कीं और औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश किया। आप बिड़ला ब्रदर्स लि० कलकत्ता तथा इसके अन्तर्गत तथा अन्य कई प्रमण्डलोंके डॉयरेक्टर हैं। यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक लि० कलकत्ता तथा हिन्दुस्तान मोटर्स लि० के आप अध्यक्ष हैं। दी हिन्दुस्तान टॉइम्स लि० दिल्ली तथा ईस्टर्न इकानामिक्स नामक पत्रों के भी आप डॉयरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त और भी कई बड़ी २ कम्पनियों के आप डॉयरेक्टर हैं।

श्री घनश्यामदास बिड़ला की गणना भारतवर्ष के उच्चकोटि के अर्थशास्त्रज्ञों में होती है। आप के प्रयत्न से १९२५ में कलकत्ता में इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स की स्थापना हुई और सर्वप्रथम आप ही दो वर्षों तक इसके अध्यक्ष रहे। सन् १९२७ में आपके तथा भारत के अन्य अर्थशास्त्रियों के प्रयत्न से दिल्ली में "फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज" की स्थापना हुई। सन् १९२९ में आप इस फेडरेशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। औद्योगिक क्षेत्र में तथा फेडरेशन के लिए की गई आपकी महान् सेवाओं के फलस्वरूप, सन् १९५२ में फेडरेशन ने आपको फेडरेशन का यशस्कर सदस्य चुन कर सम्मानित किया।

सन् १९२१ में प्रथम बार राजस्वनीति में सुझाव देने के निमित्त एक समिति बनाई गई थी। उसके आप सदस्य थे। सन् १९२७ में आप जिनेवा में "इण्टरनेशनल लेबर आर्गेनिजेशन" की बैठक में भी प्रतिनिधि बनकर गये थे। सन् १९२९ में स्थापित रॉयल कमीशन ऑफ लेबर्स के भी आप सदस्य थे।

भारतवर्ष की राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं पर विचार करने एवं उसके लिए कुछ हल निकालने के लिए सन् १९३१ में लन्दन में दूसरी राउण्डटेबिल कान्फ्रेन्स बैठी, जिसमें महात्मा गान्धी, महामना मालवीयजी आदि महान् नेता सम्मिलित हुए थे। इस कान्फ्रेन्स में फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज़ की तरफ से तीन प्रतिनिधि गये थे, ये तीन सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, सेठ जमाल मुहम्मद तथा श्री घनश्यामदास बिड़ला थे। भारत की कई आर्थिक समस्याओं के

सम्बन्ध में श्री घनश्यामदास बिड़ला ने वहाँ महत्वपूर्ण भाषण और सुझाव दिये। वहाँ सर एडवर्ड बेन्थल, भारतमन्त्री के सलाहकार सर हैनरी स्ट्राकोश, बैंक ऑफ इंगलैण्ड के डॉयरेक्टर सर बेसिल ब्लैकेट, सर पैथिक लॉरेन्स, श्री वेजवुड वेन आदि कई योग्य व्यक्तियों से श्री बिड़ला का बहुत परिचय हो गया था। सर कैम्पबेल रोड्स कहते थे कि "बिड़ला जब तुम्हें कभी नौकरी की जरूरत हो तो स्ट्राकोश के पास जाना, वह अच्छी सर्टीफिकेट देगा"। इसपर श्री बिड़ला ने पूछा "वे मेरे लिए क्या कहते हैं" रोड्स बोले "मुझे मत पूछो, तुम अपनी प्रशंसा सुनकर असमंजस में पड़ जाओगे।"

गनी ट्रेड्स एसोसिएशन कलकत्ता के भी सन् १९२९–३० में आप अध्यक्ष रहे। सन् १९३६–३७ में "ऑल इण्डिया आर्गेनिजेशन ऑफ इण्डस्ट्रियल एम्पलायरर्स" नामक संगठन के भी आप अध्यक्ष रहे।

स्वतन्त्र भारत के आर्थिक संगठन के लिए श्री अर्देशर दलाल की अध्यक्षता में जो कमेटी बनी थी, उसमें श्री टाटा तथा आप भी प्रमुख सदस्य थे। इस कमेटी ने देश के आर्थिक संगठन के लिए एक पन्द्रह-वर्षीय योजना बनाई जो बम्बई प्लॉन के नाम से प्रसिद्ध है। इस योजना में लगभग दस हजार करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान था। आर्थिक सुधारों के बारे में आपने कुछ विचार "मॉनेटरी रिफार्मस्" नामक पुस्तक में भी व्यक्त किये हैं।

सन् १९५२–५३ में भारत सरकार के निमंत्रण पर फ़ेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज ने "आपको सेण्ट्रल एडवाइजरी कौन्सिल ऑफ इण्डस्ट्रीज" में अपना प्रतिनिधि चुना। इस कार्य्य में आपने अपने लम्बे अनुभव से काफ़ी बहुमूल्य सलाहें दीं। आप भारत सरकार की पंचवर्षीय योजना से सम्बन्धित कई समितियों तथा कमीशनों के गहरे सम्पर्क में हैं। अखिल भारतीय शिल्प-शिक्षा परिषद् (All India Council of Techinical Education) ने भारत में औद्योगिक शासन व वाणिज्य प्रबन्ध की शिक्षा देने के लिए "एडमिनिस्ट्रेशन स्टॉफ कॉलेज" तथा 'नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेण्ट" की स्थापना की है। इसकी योजना बनाने के लिए जो समिति बनी थी उसके आप प्रमुख सदस्य थे।

श्री घनश्यामदास बिड़ला ने भारतवर्ष के राजनैतिक क्षेत्र में भी काफी काम किया है। सन् १९१६ में जब महात्मा गान्धी दक्षिण अफ्रीका से लौटने पर कलकत्ता आये थे, उसी समय आपने उस युगपुरुष के प्रथम बार दर्शन किये। उसके पश्चात् ३२ वर्षों तक आपका उनसे पूर्ण सम्पर्क रहा। आपने स्वयं एक स्थान पर लिखा है—

"......मैं अंग्रेजों से मिलने जाने के लिए न तो लिफ्ट का ही व्यवहार कर सकता था और न उनसे मिलने की प्रतीक्षा करते समय बेंचों पर ही बैठ सकता था। इस प्रकार के अपमान पूर्ण व्यवहार से मैं तिलमिला कर रह जाता था। इसी ठेस ने मेरे अन्दर राजनीति की चिनगारी पैदा की जो सन् १९१२ से अभी तक बराबर जागृत है। देश का ऐसा कोई राजनैतिक आन्दोलन नहीं रहा जिसमें मैंने दिलचस्पी न रक्खी हो अथवा अपने ढङ्ग से उसे मदद न दी हो। इन्हीं दिनों एकबार आतङ्कवादियों से सम्बन्ध

हो जाने के कारण मुझे काफी परेशानी उठानी पड़ी और लगभग तीन महीने गुप्तवास में रहना पड़ा। कुछ सहृदय मित्रों के हस्तक्षेप से ही मैं जेल जाने से बच सका। वास्तव में आतङ्क वाद के प्रति मेरा विशेष अनुराग कभी नहीं रहा और गांधीजी के सम्पर्क में आने के बाद तो उसका रहा सहा अस्तित्व भी समाप्त हो गया।"

महात्मागांधी घनश्यामदास बिड़ला को अपने पुत्र की तरह समझते थे। श्री बिड़ला अपने पारिवारिक जीवन की बातों में, रहन-सहन के तरीकों में, दवादारू में तथा दूसरी छोटी बड़ी बातों में भी महात्माजी से परामर्श लिया करते थे। पहले आप मक्खन बिलकुल नहीं खाते थे, पर महात्माजी ने जब आपको मक्खन के गुणों से पूर्ण अवगत कराया तब आप मक्खन का बड़े चाव से उपयोग करने लगे।

गांधी जी के सन् १९१६ से लेकर १९४२ तक के आन्दोलन में आप बराबर उनके साथ रहे और कठिन से कठिन समय में आन्दोलन को सहायता पहुँचाते रहे। फिर भी यह कहना गलत होगा कि सभी बातों में आप गांधीजी से सहमत थे। कुछ ऐसी मौलिक बातें भी थीं जिनमें आपके उनसे मतभेद रहे हैं। जैसे महात्मा गांधी छोटे घरेलू उद्योग धन्धों के एकान्त पक्षपाती थे मगर श्री बिड़ला का विश्वास बड़े बड़े उद्योग-धन्धों के द्वारा उद्योगीकरण करने के पक्ष में था। फिर भी आमतौर से आप गांधी जी के पूरे भक्त बन गये।

सरदार पटेल तथा श्री महादेव देसाई आपके घनिष्ठ मित्र थे। इसके अतिरिक्त लाला लाजपतराय, माननीय पं० मदन मोहन मालवीय, राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद आदि सभी समकालीन भारतीय नेताओं से और भारतीय शासन से सम्बन्धित इंगलैण्ड के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्यक्तियों से आपके गहरे सम्बन्ध रहे हैं।

सामाजिक प्रवृत्ति और देश की सामाजिक संस्थाओं को आप तन, मन, धन से सहयोग देते आ रहे है। देशबन्धु मेमोरियल फण्ड, अ० भारतीय स्पिनर्स एसोसिएशन, कस्तूरबा स्मारकनिधि तथा पिछड़ी जातियों के उत्थान में आपने बड़ी-बड़ी आर्थिक सहायताएँ दी हैं। महात्मा गांधी ने जब हरिजन पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया था तब उन्हें सबसे बड़ा सहयोग आपही से मिला था।

शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में जितना कार्य्य श्री घनश्यामदास बिड़ला ने किया है उतना शायद ही कोई अन्य उद्योगपति कर सका है आपही के प्रयत्न से पिलानी में बिड़ला शिक्षा ट्रस्ट की स्थापना हुई और शुरू से अबतक आप ही उसके प्रधान हैं। इस ट्रस्ट ने शिक्षा के क्षेत्र में देश की बहुमूल्य सेवाएँ की हैं। इसके अतिरिक्त देश की और कई शिक्षण संस्थाओं को आपने मुक्त हस्त होकर दान दिया है। हाल ही में मद्रास टैकनालॉजी इन्स्टीट्यूट में छात्र निवास के निर्माण के लिए तथा पश्चिमी बंगाल में कृषि कॉलेज और छात्र निवास बनाने के लिए आपने बड़ी सहायताएँ दी हैं। ६ जनवरी १९५४ को मद्रास टेकनालॉजी इन्स्टीट्यूट के नवनिर्मित छात्रावास में आपके तैल चित्र का भी उद्घाटन किया गया है। डॉ० राधाकृष्णन ने इस छात्र निवास का उद्घाटन करते हुए जो भाषण दिया उसमें कहा था कि :—

"श्री बिड़ला मुझसे कहा करते हैं कि शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने के लिए कितना भी खर्च हो उसकी मुझे चिन्ता नहीं है। ये मुझे पिलानी तथा अन्य स्थानों की शिक्षण संस्थाओं के लिए योग्य एवं अनुभवी अध्यापकों की सलाह के लिए कहा करते हैं।"

पिलानी में भारत सरकार द्वारा जो सेण्ट्रल एलक्ट्रानिक रीसर्च इन्स्टीट्यूट की स्थापना हुई है उसकी स्थापना का सबसे अधिक श्रेय आपही को है आप इसकी आयोजक समिति के सदस्य भी हैं।

श्री घनश्यामदास बिड़ला अच्छे लेखक एवं वक्ता भी हैं। आपके भाषण बहुत प्रभावशाली एवं कार्य साधक होते हैं। फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री में आपके महत्वपूर्ण भाषण हुआ करते हैं। यूरोप, अमेरिका और भारतवर्ष में दिये गये आपके भाषणों का संग्रह Path to Prosperty नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ है। आपने "बापू" "जमनालाल जी", "बिखरे विचार", "कर्जदार से साहूकार", 'रुपये की कहानी", "रूप और स्वरूप", "ध्रुवोपाख्यान", "डायरी के कुछ पन्ने" आदि कई उत्तम पुस्तकें लिखी हैं। स्वर्गीय महादेव देसाई ने आपकी लिखी हुई "बापू" नामक पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा है—

"यों तो श्री घनश्यामदासजी की लेखन-शक्ति का जितना परिचय मुझे है उतना हिन्दी जगत को शायद न होगा। उनके हिन्दी भाषा में लिखे हुए पत्र मुझे सीधी-सादी, नपी-तुली और सारगर्भित शैली के अनुपम नमूने मालूम हुए हैं और जब से मैं इस शैली पर मुग्ध हुआ हूँ तब से सोचता हूँ कि बिड़लाजी कुछ लिखते क्यों नहीं? मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इस पुस्तक में उसी आकर्षक शैली का नमूना मिलता है जिसका कि उनके पत्रों में मिलता था।"

श्री घनश्यामदास बिड़ला की हाल ही में अंग्रेजी भाषा में "In the Shadow of ma' atma" नामक एक पुस्तक प्रकाशित हुई है। इसमें आपके साथ गांधीजी, महादेव देसाई व अन्य नेताओं का जो पत्र-व्यवहार हुआ उसमें से कई पत्रों को प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक में दोनो महायुद्धों के बीच तथा बाद में हुए भारतीय स्वाधीनता के संग्राम का संक्षिप्त इतिहास आसानी से मिल जाता है। श्री बिड़ला की पुस्तकें तलस्पर्शी परीक्षण-शक्ति के सुन्दर नमूने हैं।

श्री बिड़ला ने संसारभर के उद्योगों और व्यवसायों का मननपूर्वक अध्ययन किया है। तथा अपने सभी उद्योगों और व्यवसायों में आधुनिक एवं उचित तरीकों का प्रयोग किया है। आपके जीवन में अनुशासन और समय के मूल्य का प्रधान स्थान है।

श्री घनश्यामदास बिड़ला के श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला, श्री कृष्णकुमार बिड़ला और श्री बसन्त-कुमार बिड़ला ये तीन पुत्र हैं।

श्री बृजमोहन बिड़ला

बिड़ला ब्रदर्स के औद्योगिक क्षेत्र को इतना व्यापक रूप देने का बहुत बड़ा श्रेय श्री बृजमोहन बिड़ला को है। जो श्री घनश्यामदास बिड़ला के तत्वावधान में इतनी बड़ी फर्म के विशाल उद्योग का संचालन कर रहे हैं। श्री बृजमोहन बिड़ला का जन्म पिलानी में सन् १६०४ में हुआ। आप राजा बलदेवदास के सबसे छोटे पुत्र हैं। आप की शिक्षा पिलानी में ही हुई इसके पश्चात् स्वयं अध्ययन करके हिन्दी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र आदि विषयों का आपने काफी ज्ञानप्राप्त कर लिया।



हिन्दुस्तान मोटर्स लि० कलकत्ता को सफलतापूर्वक संचालन करने का श्रेय आप ही को है। आपने प्रारम्भ में ही मोटर निर्माण की इस महान् योजना में बहुत दिलचस्पी ली और तन, मन, धन से इस कार्य में हाथ बटाया। स्वतन्त्र भारत को मोटर यन्त्र निर्माण कार्य में गौरवान्वित करने में आपका उल्लेखनीय हाथ रहा है। इस प्रकार भारतीय परिवहन-साधनों के विकास के इतिहास में आपका यश स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ रहेगा जिसको पढ़कर अग्रिम पीढ़ियों की अन्वेषण बुद्धि को भी उत्साह और प्रेरणा मिलती रहेगी।

श्री ब्रजमोहन बिड़ला बिड़ला ब्रदर्स लि० के मैनेजिंग डायरेक्टर है तथा इसके अन्तर्गत बिड़ला स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि०, हिन्दुस्तान मोटर कार्पोरेशन लि० कलकत्ता, रांची जमींदारी लि० कलकत्ता, पिलानी प्रापर्टी लि० कलकत्ते के भी डॉयरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त, इण्डिया एक्सचेञ्ज लि० कलकत्ता, हिन्दुस्तान डेवलपमेंट कार्पोरेशन लि० कलकत्ता, हिन्दुस्तान हेवी केमिकल्स लि० कलकत्ता, दी अतुल प्राडक्टस लि० अहमदाबाद, हुकुमचन्द जूट मिल्स लि० कलकत्ता आदि के भी डॉयरेक्टर हैं।

१० नवम्बर १६५० ईस्वी को न्यूयार्क में अमेरिकन ईस्ट इण्डिया कार्पोरेशन की स्थापना हुई थी उस दिन से आप इसके डॉयरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त दी ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूज कम्पनी लि० के भी आप सन् १६४७ से डॉयरेक्टर हैं। आपके व्यवसाय ज्ञान, आपकी कर्मठता और आपकी कार्य्य-शक्ति की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स कलकत्ता की स्थापना करने में आपका प्रमुख हाथ रहा है। सन् १६३६ तथा सन् १६४४ में आप उसके अध्यक्ष चुने गये थे। फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज दिल्ली के सन् १६५३–५४ में आप उपप्रधान और सन् ५४-५५ में अध्यक्ष चुने गये हैं। फेडरेशन की ओर से आप भारत सरकार के प्लानिंग कमीशन में प्रतिनिधि बनकर

गये थे। सन् १६५२ में पंचवर्षीय योजना को अधिक कार्य्यक्षम बनाने के लिए उसमें संशोधन और परिवर्द्धन करने का निश्चय हुआ तो सरकार के निमन्त्रण पर फेडरेशन ने एक कमेटी बनाकर भेजी जिसके श्री बृजमोहन बिड़ला भी सदस्य थे। फेडरेशन के द्वारा आपसे देश की बहुत सेवा हो रही है।

इम्प्लायर्स एसोसिएशन कलकत्ता के संस्थापकों में आप प्रमुख व्यक्ति थे। इस परिषद के पहले अध्यक्ष आप ही चुने गये। "ऑल इण्डिया आर्गेनिजेशन ऑफ इण्डस्ट्रियल इम्प्लायर्स" तथा 'आटोमोटिक, मैन्यूफेक्चर्स ऑफ इण्डिया" इन दोनो संस्थाओ के आप शुरू से ही सदस्य हैं। इन दोनों संस्थाओं में आपने बहुत दिलचस्पी से कार्य्य किया है।

सन् १६३४-३५ में आप इण्डियन सूगर मिल्स एसोसिएशन के, सन् १६४० में इण्डियन सूगर सिंडिकेट लि० के तथा सन् १६४४ में इण्डियन पेपर मिल्स एसोसिएशन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के सेण्ट्रल बोर्ड के आप सदस्य तथा लोकल बोर्ड के अध्यक्ष हैं। पश्चिमी बंगाल की सरकार ने फरवरी सन १६५४ में 'पश्चिमी बंगाल औद्योगिक अर्थमण्डल' की स्थापना की है उसके अध्यक्ष भी आप ही बनाये गये हैं।

आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है, उद्योग के हर क्षेत्र में आपको बड़ी दिलचस्पी है। कठिन से कठिन काम करनेमें भी आप नहीं घबराते हैं। किसी भी समस्या के समाधान पर तत्काल पहुँच जाने की आपमें विलक्षण बुद्धि है। गणित (Statistics के विज्ञान को समझकर उसका आर्थिक एवं औद्योगिक समस्याओं में उपयोग करने की आप में उत्कट प्रतिभा है। विदेशों के औद्योगिक विकास का अध्ययन करने के लिए आप कई बार विदेशों में भ्रमण कर चुके हैं। हाल ही में (१६५४) आपने विदेश यात्रा में अपनी औद्योगिक प्रतिभा का परिचय दे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की है। आपके श्री गंगाप्रसाद बिड़ला नामक एक पुत्र हैं।

श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला



श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला घनश्यामदास बिड़ला के बड़े पुत्र हैं आपका जन्म जुलाई सन् १६०६ में पिलानी में हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा वहीं प्राप्त कर आपने भारतीय विश्वविद्यालय में सन् १६२४-२६ तक विद्याध्ययन किया सन् १६२७ में आपकी शादी श्रीमती सुशीला लोइवाल के साथ हुई। सन् १६२६-२७में आपने जूट व गनी की दलाली से प्रारम्भ कर व्यवसाय क्षेत्र में पदार्पण किया। सन् १९२६ से आपने बिड़ला ब्रदर्स लि० के अन्तर्गत कई कम्पनियों और फर्मों के प्रबन्ध की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया तथा कई कम्पनियों के डायरेक्टरभी बने। संसार की व्यापारिक, राजनैतिक एवं औद्योगिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए आप कई बार विदेशों का भी भ्रमण कर आये हैं। ऐसे भ्रमणों से आपने काफी ज्ञान और अनुभव प्राप्त कर लिया है।

बिड़ला ब्रदर्स की दो अन्य प्रबन्ध अभिकर्तृत्वों दी कोटन एजंट्स लि० बम्बई तथा हिन्दुस्तान इन-वेस्टमेंट कार्पोरेशन कलकत्ता के आप डॉयरेक्टर हैं। इनके अतिरिक्त बिड़ला ब्रदर्स द्वारा प्रबन्धित जयाजीराव कॉटन मिल्स लि० गवालियर, सतलज कॉटन मिल्स लि० देहली, हिन्दुस्तान मोटर कारपोरेशन लि० कलकत्ता, बिड़ला जूट मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी लि० कलकत्ता, अवध सूगर मिल्स लि० बम्बई, न्यू स्वदेशी सूगर मिल्स लि० बम्बई, हिन्द सायकिल्स लि० बम्बई, इण्डियन प्लॉस्टिक लि० बम्बई, सेण्ट्रल इण्डिया कोल फील्ड्स लि०, वेस्टर्न बंगाल कोल फील्ड्स लि०, जयपुर माइनिंग कार्पोरेशन लि० जयपुर, सैंचुरी स्पिनिंग एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि० बम्बई इत्यादि के आप डॉयरेक्टर हैं। बीमा व्यवसाय में आपकी काफी दिलचस्पी है। न्यू एशियाटिक इन्स्यूरेंस कम्पनी लि० दिल्ली के आप अध्यक्ष हैं। आप बिड़ला बन्धुओं के प्रबन्ध अभिकर्तृत्वों की ओर से कोयले की खानों बीमा, सायकिल निर्माण तथा प्लास्टिक निर्माण का प्रबन्ध देखते हैं।

इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स कलकत्ता की समिति के आप कई वर्षों से सदस्य हैं। सन् १९५१-५२ में आप इसके अध्यक्ष भी रहे हैं। फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज़ दिल्ली की समिति में आप बहुत वर्षों तक एसोसिएट मेम्बर रहे हैं। अप्रैल सन् १९५३ में उद्योग विस्तार और व्यवस्था बिल की सिलेक्ट कमेटी के सदस्य चुने गये। सन् १९५४ में पेरिस में होने वाले सत्ताइसवें श्रम सम्मेलन में आप सेवा योजकों के प्रतिनिधि बनकर गये थे।

शिक्षा, संगति, काव्य तथा साहित्य में आपकी विशेष अभिरुचि है। आपने स्वयं कला और उद्योग के ऊपर कई निबन्ध लिखे हैं। कलाकारों एवं कवियों को आपसे सम्मान और आर्थिक सहयोग हमेशा मिलता रहता है। हिन्दी साहित्य की उन्नति में भी आपने काफी सहयोग दिया है। बंगाल हिन्दी मण्डल कलकत्ता के आप अध्यक्ष हैं। इस संस्था के द्वारा आपने कई हिन्दी लेखकों की पुस्तकों को प्रकाशित करवाकर उन्हें उत्साहित किया है। शिक्षा सम्बन्धी तथा सामाजिक संस्थाओं में आप काफी भाग लेते हैं। हिन्दी हाई स्कूल कलकत्ता तथा हिन्दू शिल्प विद्यालय कलकत्ता के आप अध्यक्ष हैं।

आपके एक पुत्र श्री सुदर्शनकुमार और दो पुत्रियां हैं। श्री सुदर्शनकुमार बिड़ला ब्रदर्स लि० के अन्तर्गत उद्योग-धन्धों का अध्ययन कर रहे हैं।

श्री माधवप्रसाद बिड़ला

श्री माधवप्रसाद बिड़ला श्री रामेश्वरदास बिड़ला के पुत्र हैं। आपने शुरु से ही जूट के व्यवसाय और उद्योग में काफी दिलचस्पी ली है। यही कारण है कि आज आप जूट के सफल उद्योगपति और व्यवसायी बन गये है।



बिड़ला ब्रदर्स द्वारा संचालित व प्रबन्धित कई कम्पनियों के जैसे जयाजीराव कॉटन मिल्स लि० ग्वालियर, बिड़ला जूट मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी, सूरा जूट कम्पनी, हिन्दुस्तान ऊलन मिल्स लि० इत्यादि के आप डॉयरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त राजपूताना इनवेस्टमेंट्स कम्पनी लि०, इनवेस्टमेंट कार्पोरेशन लि० जयपूर, निखलीजूट वेलिंग कम्पनी लि०, हिन्दुस्तान केबल्स लि० चित्तरंजन, सतलज कॉटन मिल्स सप्लाई एजेन्सी लि० ग्वालियर आदि के भी आप एक प्रमुख डॉयरेक्टर हैं। इण्डियन जूट मिल्स रिसर्च एसोसियेशन के आप कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे है।

आप ही सबसे पहले भारतीय है जो इण्डियाजूट मिल्स एसोसियशन कलकत्ता के सन् १६४५ से ४७ तक लगातार दो वर्ष अध्यक्ष पद पर चुने गये।

हाल ही में आप ब्रिटेन और अमेरिका गये है जहां इण्डियन जूट मिल्स एसोसिएशन के प्रतिनिधि के रूप में आप जूट के बाजार का अध्ययन करेंगे।

श्री कृष्णकुमार बिड़ला

श्री कृष्णकुमार बिड़ला श्री घनश्यामदास बिड़ला के द्वितीय पुत्र हैं। आपकी बुद्धि बड़ी कुशाग्र है। सन् १६३५ ई० में आपने मैट्रिकुलेशन परीक्षा पास की। इस परीक्षा में आपका विश्वविद्यालय में २१ वाँ स्थान रहा था तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से बैठने वाले मारवाड़ी छात्रों में सर्व प्रथम हुए थे।

आप बिड़ला बंधुओं की दी कॉटन एजेन्टस् लि०, की प्रबंध अभिकर्तृत्व तथा उससे व बिड़ला ब्रदर्स लि० से प्रबंधित कई प्रमण्डलो यथा-न्यू इंडिया सूगर मिल्स लि०, भारत सूगर मिल्स लि०, अपर गैंगेज सूगर मिल्स लि०, टेक्सटाइल मशीनरी कॉरपोरेशन लि०, जयश्री टी गार्डन्स लि०, ऊषा डेवलपमेंट क० लि०, बिड़ला बिल्डिंग लि०, राँची जमीन्दारी लि०, गोविन्द सूगर मिल्स लि०, अवध सूगर मिल्स लि०

आदि के डाइरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त कलकत्ता इलेक्ट्रिकल मैनुफैक्चरिंग कं० लि०, नवलगढ़ इलेक्ट्रिक सप्लाई कं० लि०, इन्वेस्टमेंटस् लि०, इन्वेस्टमेंट कॉरपोरेशन लि०, राजकमल पब्लिकेशन्स लि०, इन्वेस्टमेंट सीक्यूरीटीज ट्रस्ट लि०, जयन्त इन्वेस्टमेंट कारपोरेशन लि०, नार्थ बिहार सूगर मिल्स लि० आदि के भी डाइरेक्टर हैं। आप बिड़ला बंधुओं द्वारा प्रबंधित चीनी मिलों एवं 'टेक्समाको' के प्रबंध की ओर विशेष रूप से ध्यान देते हैं।



श्री कृष्णकुमार बिड़ला

इंडियन सूगर मिल्स ऐसोशियेशन (Indian Sugar Mills Association) कलकत्ता की समिति के आप कई वर्षों से सदस्य हैं। आप इसके प्रधान पद को भी सुशोभित कर चुके हैं। बिहार चेम्बर ऑफ कामर्स (Behar Chamber of Commerce) की कलकत्ता शाखा के आप सदस्य चुने गये हैं।

राजस्थान क्लब कलकत्ता के सफलतापूर्वक संचालन में आपका काफी हाथ है। सन् १९४४ ई० से ही आप उसके अवैतनिक कोषाध्यक्ष हैं। क्लब के अन्तर्गत कई उपसमितियों के भी आप सदस्य रहे हैं। अच्छे खिलाड़ियों को समय समय पर पारितोषिक आदि भी देते रहते है। सन् १९३६ से ३९ ई० तक आप इसके प्रधान पद पर रहे थे।

कई सामाजिक एवं शिक्षण संस्थाओं को भी आप समय-समय पर सहयोग देते रहते हैं। बिड़ला शिक्षा ट्रस्ट पिलानी के आप सन् १९४५–४७ तक ट्रस्टी रहे थे। पिलानी में विद्या-विहार के निर्माण में आपने काफी उत्साह से काम किया। राजेन्द्र छात्र निवास कलकत्ता में आपने सहायता स्वरूप १०,०००) का दान दिया है।

श्री बसंतकुमार बिड़ला

आप श्री घनश्यामदास बिड़ला के सबसे छोटे पुत्र हैं। आप बिड़ला बन्धुओं द्वारा प्रबंधित कई प्रमण्डल यथा केशोराम कॉटन मिल्स लि० कलकत्ता, जयश्री टेक्सटाइल्स लि० कलकत्ता, भारत एयरवेज लि० कलकत्ता, हिन्दुस्तान ऊलेन मिल्स लि० कलकत्ता, जियाजीराव कॉटन मिल्स लि० ग्वालियर, बिड़ला लेबोरेटरीज कलकत्ता, पिलानी प्रॉपरटीज लि०, सतलज कॉटन मिल्स लि०, सतलज कॉटन मिल्स सप्लाई एजेन्सी लि० आदि के डाइरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त भवानी उत्कल कॉटन मिल्स लि०, हिन्द बैंक लि०,

विजय कॉटन मिल्स लि०, आदित्य इन्वेस्टमेंट लि०, बंगाल नागपुर कॉटन मिल्स लि० आदि के भी आप डाइरेक्टर हैं। बिड़ला ब्रदर्स लि० की ओर से आप कपड़े की मिलों का प्रबंध देखते हैं।



आप बंगाल मिलओनर्स ऐसोसियेशन (Bengal Millowners Association) कलकत्ता की समिति के कई वर्षों से सदस्य हैं। इसके प्रधान पद पर भी आप सुशोभित हो चुके हैं।

संगीत कला मंदिर कलकत्ता का सारा कार्य आप ही की देखरेख में होता है। आप इसके कई वर्षों से अवैतनिक कोषाध्यक्ष है। इस संस्थान की सफलता का श्रेय आप ही को है। बंगाल हिन्दी मण्डल कलकत्ता की प्रबंधकारिणी समिति के भी आप सदस्य हैं।

आपके एक पुत्र श्री आदित्यविक्रम हैं।

श्री गंगाप्रसाद बिड़ला

आप श्री ब्रजमोहन बिड़ला के सुपुत्र हैं। आपने कालेज की डिग्री परीक्षा पास की। शिक्षा की समाप्ति पर आपने व्यवसाय एवं उद्योग का अध्ययन करना शुरू किया। आप बिड़ला बंधुओं की हिन्दुस्तान इन्वेस्टमेंट कॉरपोरेशन लि० नामक प्रबंध अभिकर्तृत्व तथा उससे और बिड़ला ब्रदर्स लि० से प्रबंधित कई प्रमण्डलों यथा-ओरियेंट पेपर मिल्स लि० कलकत्ता, वेस्टर्न बंगाल कोल फील्डस् लि० कलकत्ता, सूराजूट मिल्स लि० कलकत्ता, तुंगभद्रा इण्डस्ट्रीज लि० तथा इंडियन प्लास्टिक्स लि० बम्बई के डाइरेक्टर हैं। बिड़ला ब्रदर्स लि० की ओर से आप कागज व वनस्पति उद्योग का प्रबंध देखते हैं।



आप इण्डियन पेपर मिल्स ऐसोसियेशन (Indian Paper Mills Association) के प्रधान पद पर रह चुके है। राजस्थान क्लब कलकत्ता के कार्यों में काफी दिलचस्पी लेते है। इस क्लब की कार्यकारिणी समिति तथा कई उप-समितियों के भी आप सदस्य हैं। हाल ही मे आपके यहाँ एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई है।

औद्योगिक विस्तार

बिड़ला बन्धुओं द्वारा संचालित उद्योग धन्धो का विस्तार भारत वर्ष के प्रायः सभी प्रमुख औद्योगिक केन्द्रों में फैला हुआ है जिनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है।

१ - कपड़े की मिलें

बिड़ला बंधु सूती, रेशमी एवं ऊनी हर प्रकार के कपड़े बुननेवाली मिलों का प्रबंध करते हैं। इनके द्वारा सञ्चालित मुख्य-मुख्य मिलो का विवरण इस प्रकार है :—

(१) केशोराम काटन मिल्स लि० कलकत्ता

सूती कपड़े की मिलो में यह मिल भारत की एक प्रधान मिल है। इसकी स्थापना कलकत्ता में सन् १६१६ ई० में हुई थी। इस मिल में हर प्रकार के सूती कपड़े जैसे धोती, साड़ी, रंगीन कपड़े, होजियारी सामान, लॉग क्लाथ आदि बनते हैं। इस मिल का बना कपड़ा विदेशों में भी निर्यात होता है।

इस मिल का रजिस्टर्ड कार्यालय १ए, वेन्सीटार्टरो कलकत्ता में तथा मुख्य कार्यालय ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता में हैं। मिल की स्थिति हुगली के बाँई ओर ४२ गार्डनरीच रोड, मटियाबुर्ज, कलकत्ता में है। मिल की इमारत एक बहुत बड़े क्षेत्र में है। पास में ही हुगली नदी के होने से पानी भी सुविधा से प्राप्त हो जाता है। साथ ही नदी के द्वारा सामान के आवागमन में भी सहायता मिलती है। इस मिल की अधिकृत पूँजी दो करोड़ रुपया है। यह पूँजी दो प्रकार के शेयरों में विभाजित है। बीस लाख रुपया सात प्रतिशत बढ़ने वाले (Cumulative) प्रिफेरेन्स (Preference) शेयरों में है, जिसमें प्रत्येक शेयर का मूल्य सौ रुपया है। शेष १,८०,००,००० रु० पन्द्रह रुपये के १२,००,००० साधारण शेयरो (Ordinary Shares) में विभक्त है। जारी की हुई (Issued) बिकी हुई (Subscribed) माँगी हुई (Called up) और प्रदत्त पूँजी (Paid up) १,४०,००,००० रु० है। इसमें बीस लाख रुपये के जमा होने वाले प्रिफेरेन्स शेयर हैं और शेष साधारण पूँजी है।

इस मिल में कुल १,६६० करघे और ६६,३५२ स्पिण्डल्स (Spindles) हैं। प्रतिवर्ष लगभग १७,५० गाँठों की इस मिल में खपत होती है।

मिल के प्रबंध अभिकर्त्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, कलकत्ता हैं। इसके डाइरेक्टर :—श्री बसंत कुमार बिड़ला, श्री बी० एम० बागड़ी, श्री राधाकिशन सौनथलिया, श्री रामकुमार भुवालका, राजा बी० एन० रायचौधरी ऑफ सन्तोष, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका और श्री हीरालाल सोमाणी हैं। श्री मक्खनलाल बागरोदिया इसके मैनेजर है।

श्री बी० एम० बागड़ी के कुशल सञ्चालन में इस मिल ने बहुत उन्नति की है। श्री बागड़ी एक कुशल संचालक, उत्तम संगठनकर्त्ता और उदार प्रवृत्तियों के व्यक्ति हैं। इस मिल की व्यवस्था में आपका बहुत बड़ा हाथ है।

मिल में काम करनेवालो को काफी सुविधायें दी जाती हैं। कार्यकर्त्ताओं (Staff) के लिए सुन्दर, सुसज्जित, हवादार मकान हैं। मिल में एक अच्छा अस्पताल, स्कूल, क्लब, लाण्ड्री, बैंक आदि हैं। कार्यकर्त्ताओं के खेलने का तथा नौका विहार का भी उत्तम प्रबंध है।

इस मिल की एक शाखा ग्वालियर में भी है। इस मिल की कुछ सहायक संस्थायें भी हैं। इनमें सबसे मुख्य भारतकला-भण्डार है। यह संस्था कलकत्ता में ही है। इसका मुख्य कार्य केशोराम कॉटन मिल्स की सहायता करना है। मिल का सामान बेचना तथा इससे सम्बंधित अन्य कार्य यह करती है। इसकी अधिकृत पूँजी पचास लाख रुपये तथा प्रदत्त पूँजी तीन लाख रुपये हैं। इसके डाइरेक्टर श्री बी० एम० बागड़ी, श्री एम० एल० बागरोदिया एवं श्री मक्खनलाल जैन हैं। इसके अलावा उड क्राफ प्रोडेक्ट्स लि० तथा अन्य सहायक संस्थायें भी हैं जो इस मिल के साथ ही काम करती हैं।

(२) बिड़ला कॉटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लि० देहली

इस मिल का रजिस्ट्रेशन सन् १९२० ई० में कलकत्ता में हुआ। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय बिड़ला लाइन्स दिल्ली में है। उत्तरी भारत की सबसे प्रसिद्ध और बड़ी मिलों में से यह एक है। यहाँ का कपड़ा मुख्यतः सम्पूर्ण उत्तरी भारत में बेचा जाता है। विशेष रूप से भारतीय कपास ही यहाँ पर कातकर उसका कपड़ा बुना जाता है। इस मिल में भी दैनिक उपयोग का हर प्रकार का कपड़ा बुना जाता है।

मिल की इमारत सब्जीमण्डी, दिल्ली में है। मिल की स्थिति भी अच्छी है। कार्यकर्त्ताओं तथा मजदूरों की सुविधा व लाभ का पूरा ध्यान रखा जाता है। ऐसा प्रबंध भी करने का प्रयत्न किया गया है जिससे मजदूरों के स्वास्थ्य पर मिल की हवा का अधिक प्रभाव नहीं पड़े।

इस मिल के प्रबंध अभिकर्त्ता मेसर्स०. बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता हैं। मिल के डाइरेक्टर श्री बृजमोहन बिड़ला, श्री जी० डी० कोठारी, श्री रघुनाथप्रसाद पोद्दार, श्री बी० पी० खेतान, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, श्री महेन्द्र कुमार चौधरी एवं श्री रामप्रसाद पोद्दार हैं।

मिल की अधिकृत पूँजी ७५ लाख रुपया है जो इस प्रकार विभाजित है–दस रुपये के ,५०,००० शेअर, दस रुपये के ३,५०,००० शेअर और सौ रुपये के २५,००० शेअर। जारी की हुई और प्रदत्त पूँजी पंद्रह लाख रुपया है जो दस रुपये के १,५०,००० शेअरों में विभाजित है।

इस मिल में लगभग ३६,८९६ स्पिन्डल्स और ९९८ करघे हैं। प्रतिवर्ष लगभग १२,३०० गाँठों की इस मिल में खपत होती है।

(३) सतलज कॉटन मिल्स लि० ओंकारा (पश्चिमी पञ्जाब)

यह पंजाब की कपड़े की प्रमुख मिलों में से एक है। इसका रजिस्ट्रेशन कलकत्ता में सन् १६३४ ई० में हुआ था। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय बिड़ला लाइन्स, सब्जीमण्डी दिल्ली में है।

मिल की इमारत ओंकारा (पश्चिमी पंजाब) में है। मिल के मजदूरों व कार्यकर्त्ताओ की सुविधा का पूरा ध्यान रखा जाता है।

इस मिल के प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स० बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता हैं। श्री रामेश्वरदास बिड़ला, श्री कृष्णराज एम० डी० ठाकरसी, श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला, श्री कृष्णगोपाल महेश्वरी, श्री रमनलाल गोकलदास सरैया, श्री एम० वी० दलाल, माननीय सर रहीमतुल्ला मेहरअली चिनाय तथा श्री खुशहालचन्द बिशेसरदास डागा इसके डाइरेक्टर हैं।

मिल की अधिकृत पूँजी ७५ लाख रुपया है जो इस प्रकार से विभक्त की गयी है—सौ रुपये के २५,००० शेयर तथा दस रुपये के ५,००,००० शेयर। माँगी हुई एवं प्रदत्त पूँजी १५ लाख रुपया है जो दस रुपये के १,५०,००० शेयरों में विभक्त है।

इस मिल में लगभग २२,८०८ स्पिन्डल्स और ६६०-करघे हैं। प्रतिवर्ष लगभग १०,६०० गाँठों की खपत होती है।

(४) दी जयाजीराव कॉटन मिल्स लि० ग्वालियर

मध्यभारत की प्रधान मिलों में से यह एक है। यह मिल ग्वालियर में है। मध्यभारत के रजिस्ट्रेशन एक्ट के अनुसार ही इस मिल का रजिस्ट्रेशन हुआ था। इसकी स्थापना सन् १६२१ ई० में हुई।

इस मिल में हर प्रकार का कपड़ा जैसे—धोती, साड़ी, कमीज व कोट का कपड़ा, छींट, लाँग क्लाथ आदि तैयार होता है। सूती कपड़े के अलावा यहाँ ऊनी और बनावटी रेशम के कपड़े भी तैयार होते हैं।

इस कम्पनी के प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स० बिड़ला ब्रदर्स (ग्वालियर) लि० हैं। श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला, श्री रामबाबू वैश्य, कर्नल सरदार डी० के० जादव, श्री माधवप्रसाद बिड़ला, श्री बसन्तकुमार बिड़ला तथा श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका इसके डाइरेक्टर हैं। श्री दुर्गाप्रसाद मण्डेलिया इसके मैनेजर हैं।

इस कम्पनी की अधिकृत पूँजी ५,२५,००,००० रु० है जो १५० रु० के ३,५०,००० शेयरों में विभक्त है। जारी की हुई एवं प्रदत्त पूँजी ४,६३,६५,३०० रु० है जो ३,०६,१०२ शेअरों में विभक्त है।

इसके मैनेजर श्री दुर्गाप्रसाद मंडेलिया एक कुशल सञ्चालक एवं उत्तम संगठनकर्त्ता हैं। मिल की व्यवस्था एवं संगठन में आपकी कुशाग्र बुद्धि का स्थान-स्थान पर परिचय मिलता है। आप बिड़ला ब्रदर्स के उच्चस्तरीय व्यक्तियों में से एक हैं। मिल के आस-पास बिरला नगर नाम से आपने एक बस्ती बसाई जो आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है, इस मिल की सफलता का आपको काफी श्रेय है।

मिल में काम करने वालों को काफी सुविधायें हैं। इस मिल में कार्यकर्त्ताओं व मजदूरों के हित के लिए पुस्तकालय, स्कूल, अस्पताल, चित्रपट, क्लब आदि का प्रबन्ध है। मजदूरों एवं अन्य कार्यकर्त्ताओं के लिए सुन्दर, साफ एवं हवादार मकान हैं। सफाई का हर प्रकार से ध्यान रखा जाता है। मिल के क्षेत्र का नाम भी 'बिड़ला नगर" है तथा इसी नाम से पास में ही एक स्टेशन भी बन गया है। मिल की भव्य एवं विशाल इमारत है। एक विशाल शक्तिगृह (Power House) भी बनाया गया है।

इस मिल में लगभग ५१,४६४ स्पिन्डल्स तथा लगभग १४५६ करघे हैं। प्रतिवर्ष लगभग २०,५०० गाँठों की खपत होती है। इस विशाल मिल में लगभग दस हजार मजदूर काम करते है।

इसी मिल के साथ दो अन्य मिलें और काम करती है। पहली मिल है "ग्वालियर रेयन फेक्टरी" और दूसरी है "बिड़ला होजियारी"। रेयन फेक्टरी में बनावटी रेशम के तरह-तरह के कपड़े बनते हैं। होजियारी फेक्टरी में होजियारी का सामान बनता है। जयाजीराव कॉटन मिल के ही समान इन मिलों में भी सुविधायें प्राप्त हैं।

(५) जयश्री टेक्सटाइल्स लि० कलकत्ता

इस मिल की स्थापना कलकत्ता में सन् १९४४ ई० में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड कॉर्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता में है। यह अपनी तरह की भारतवर्ष में एक ही मिल है।

मिल कलकत्ता से ११ मील दूर रिसड़ा (हुगली) नामक स्थान पर है। मिल अभी अधिक पुरानी नहीं है, फिर भी काफी उन्नति की ओर जा रही है।

मिल के प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि० कलकत्ता है। इस मिल के निम्न डाइरेक्टर हैं : श्री माधव प्रसाद बिड़ला, श्री राधाकृष्ण सोथनलिया, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका एवं श्री बसंत-कुमार बिड़ला। श्री एम० एल० हरकावत इसके मैनेजर है।

इस मिल की अधिकृत पूंजी पाँच करोड़ रुपया है। यह पूंजी इस प्रकार विभक्त की गयी है— दस रुपये के बीस लाख साधारण शेअर तथा सौ रुपये के तीन लाख प्रीफेरेन्स शेयर। इसमें से ५,१०,००० साधारण शेयर जारी किये गये हैं। जब्त किये हुए शेयरों (Forfeited Shares) को निकालने के पश्चात् प्रदत्त पूंजी ४९,१७,००० रु० है।

इस मिल में फ्लेक्स (Flax) और ऊन का उपयोग किया जाता है। ऊन और फ्लेक्स विदेशों से आयात की जाती है। इसका लाभ यह होता है कि कपड़ा तथा अन्य वस्तुएं अच्छी बनती है। इस मिल में लिनन (Linen) के कपड़े, डोरे, ऊनी चद्दर, ऊन व लिनन के कपड़े, ऊन, होजपाइप (Hose Pipe) आदि तैयार होते हैं। यहाँ पर कातना, बुनना, बाँधना व जोड़ना, रंगना, छापना आदि सब काम होता है।

यहाँ पर लगभग २१० करघे है। लगभग एक हजार मजदूर प्रतिदिन काम करते हैं।

(६) सेन्चुरी स्पिनिंग ऐण्ड मैन्यूफेक्चरिंग कं० लि०

यह भारत की प्रसिद्ध एवं बड़ी-बड़ी मिलों में से एक है। इस मिल की बनी मलमलें तथा धोतियाँ सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रसिद्ध हैं। हर प्रकार का सूती कपड़ा यहाँ पर अच्छा बनता है। इस मिल की स्थापना अक्टूबर सन् १८९७ ई० में बम्बई में हुई थी। अतः यह भारत की सबसे पुरानी मिलों में से एक है।

पहले इस मिल के प्रबन्ध अभिकर्ता मेसर्स सर चुन्नीलाल वी० मेहता एण्ड सन्स लि०, क्वीन मेन्शन्स प्रेसकट रोड फोर्ट बम्बई थे, परन्तु मई सन् १९५१ ई० से ही इन्हें इस मिल के प्रबन्ध से अलग होना पड़ा तथा बिड़ला बन्धुओं ने इसका प्रबन्ध अपने हाथ में लिया। श्री रामेश्वरदास बिड़ला, श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला, श्री मोतीलाल तापरिया, श्री रसिकलाल मानिकलाल, श्री नवलचन्द टी० शाह, श्री अरविन्द एन० माफतलाल, श्री रामनाथ ए० पौद्दार, श्री मानिकलाल प्रेमचन्द तथा श्री मदनमोहन आर० रुइया इसके डाइरेक्टर हैं।

इस मिल की अधिकृत पूंजी एक करोड़ पचास लाख रुपया है जो सौ रुपये के १,५०,००० शेयरों में विभाजित है। प्रदत्त पूंजी लगभग १,०९,४२,८०० रु० है।

इस कम्पनी की दो मिलें हैं। दोनों मिलें बम्बई में परेल नामक क्षेत्र में डिलिस्ले रोड और एल-फिन्सटन रोड के मिलने के स्थान पर है। मिलों की इमारतें काफी विशाल हैं। कार्यकर्ताओं तथा मजदूरों को सुविधायें दिये जाने के प्रयत्न जारी है।

इन मिलों में मिलाकर लगभग १,२५,९३६ स्पिण्डल और २,७६० करघे हैं। इन्हीं की गिनती से मिल की विशालता का अनुमान हो जाता है।

मिल में धोने, रंगने, सुखाने तथा छापने के लिए अच्छी व्यवस्था है। खराब सूत और रुई को धुनकर दरियाँ आदि बनाई जाती हैं। यहाँ पर 'परमसुख' धोतियाँ, 'लेक्स ब्यूटी' मलमल, छींट, वॉयल, चद्दर, साड़ियाँ तथा कॉटनवेस्ट के कम्बल बहुरंगी डिजायनों में बनाये जाते हैं। जो अपनी कलापूर्ण बनावट के कारण सारे भारत में प्रसिद्ध हैं।

(७) हिन्दुस्तान ऊलन मिल्स लि०

इस कम्पनी की स्थापना सन् १९४६ ई० में कलकत्ता में की गयी। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय ८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता में है।

इसकी अधिकृत पूंजी दो करोड़ रुपया है जो दस रुपये के दस लाख साधारण शेयरों तथा सौ रुपये के एक लाख प्रीफेरेंस शेयरों में विभक्त है। जारी की हुई पूँजी पैंतीस लाख रुपया (साधारण शेअरों में) हैं जिसमें से प्रदत्त पूँजी ३४,९७,२५० रु० है। इसके प्रबंध अभिकर्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि० ८

रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता है। श्री माधव प्रसाद बिड़ला, श्री पी० आर० सरकार, रायबहादुर एस० आर० कानोड़िया, श्री बसंत कुमार बिड़ला तथा श्री डी० पी० गोयनका इसके डायरेक्टर हैं।

श्री दिग्विजय ऊलन मिल्स लि० जामनगर (सौराष्ट्र) के प्रबंध में इस कम्पनी का विशेष हाथ है।

(८) दी न्यू स्वदेशी मिल्स ऑफ अहमदाबाद लि०

यह अहमदाबाद की प्रसिद्ध मिलों में से है। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता है। प्रधान कार्यालय एवं मिल नरोदा रोड अहमदाबाद में है। इसके प्रबंध अभिकर्त्ता दी कॉटन एजेन्टस् लि०, इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग, बैंक स्ट्रीट, फोर्ट बम्बई है।

यहाँ पर धोती, साड़ी, लट्ठा, कमीज एवं कोट के कपड़े, छींट, चद्दर, मलमल आदि बनते हैं। यहाँ लगभग २६,१४४ स्पिन्डल तथा ७२० करघे हैं। लगभग ७१०६ गाँठों की खपत प्रति वर्ष होती है।

इन मिलों के अतिरिक्त टेकनालाजिकल इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्सटाइल्स भिवानी एवं सिर सिल्क मि० लि० सिरपुर (हैदराबाद) में भी कपड़ा बनाया जाता है।

२—चीनी की मिलें तथा उनकी सहायक व्यापारी संस्थाएँ

बिड़ला बन्धुओं द्वारा प्रबंधित चीनी की मिलें निम्न हैं:—

(१) भारत सूगर मिल्स लि०

इस मिल की स्थापना सन् १९३१ ई० में कलकत्ता में हुई थी। इसका प्रधान कार्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता है। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय और मिल बिहार के सारन जिले में सिधवालिया नामक स्थान पर है।

कम्पनी की अधिकृत पूँजी चालीस लाख रुपया है जो इस प्रकार विभाजित की गयी है–दस रुपये के एक लाख साधारण तथा एक लाख दूसरे शेयर और सौ रुपये के दस हजार प्रीफेरेन्स तथा दस हजार दूसरे शेयर। जारी की हुई तथा प्रदत्त पूँजी बीस लाख रुपया है जो इस प्रकार प्राप्त हुई–१,५०,००० साधारण शेयरों पर दस रुपये प्रति शेयर तथा पाँच हजार पाँच प्रतिशत जमा होने वाले शोध्य (Redeemable) प्रिफेरेंस शेयरों पर सौ रुपये प्रति शेयर।

कम्पनी के प्रबंध अभिकर्त्ता मेसर्स कॉटन एजेन्टस् लि० इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग फोर्ट बम्बई हैं। इसके डाइरेक्टर इस प्रकार हैं–श्री कृष्णकुमार बिड़ला, श्री रामकुमार जालान, श्री रामकुमार भुवालका तथा श्री भगवती प्रसाद खेतान। कम्पनी की इमारत सिधवालिया में अच्छी बनी है। भारतवर्ष की पुरानी मिलों में इसकी गिनती है। यहाँ पर चीनी Double Sulphitation Process द्वारा तैयार की जाती है। इस मिल में प्रतिदिन ६५० टन ईख का उपयोग होता है।

इस कम्पनी की कई सहायक कम्पनियाँ है। जिनके नाम इस प्रकार है।

(१) सी० एण्ड ई० मारटन (इंडिया) लि० (विलायती मिठाई बनाने का कारखाना)

(२) ऊषा डेवलपमेंट कम्पनी लि०

(३) मेसर्स टिम्सप्राडक्ट्स लि०

(४) भारत फार्म्स लि०

(५) सारन ट्रेडिंग कम्पनी लि०

(२) अपर गैंजेज सूगर मिल्स लि०

उत्तर प्रदेश की बड़ी-बड़ी चीनी की मिलों में यह भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इसकी स्थापना सन् १९३२ ई० में हुई। यह मिल उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में सिवहारा नामक स्थान पर है।

कम्पनी की अधिकृत पूँजी एक करोड़ रुपया है जो इस प्रकार विभाजित की गयी है—दस रुपये के १,५०,००० साधारण शेयर, दस रुपये के ३,५०,००० अन्य शेअर, सौ रुपये के १५,००० प्रिफेरेन्स शेअर तथा सौ रुपये के ३५,००० अन्य शेअर। जारी की गयी तथा प्रदत्त पूँजी ३५,००,००० रु० है जो इस प्रकार बाँटी गयी है—दस रुपये के ८०,००० साधारण शेअर, सौ रुपये के पाँच प्रतिशत जमा होने वाले प्रिफेरेन्स शेअर-कर-रहित (Tax Free) १२,००० तथा कर-सरहित (Taxable) १५,०००।

कम्पनी के प्रबन्ध अभिकर्त्ता मे० काटन ऐजेन्टस् लि० बम्बई है। इसके डाइरेक्टर इस प्रकार हैं—श्री कृष्ण कुमार बिड़ला, श्री केशव प्रसादगोयनका, श्री राधाकिशन कानोड़िया, श्री भगवतीप्रसाद खेतान तथा श्री एन० सी० मेहता। चीनी का उत्पादन Double Sulphitation Process से होता है यहाँ पर चीनी बहुत अच्छी बनती है। इस मिल में प्रतिदिन लगभग २४०० टन ईख का उपयोग होता है।

इस कम्पनी की सहायक कम्पनी उत्तर प्रदेश ट्रेडिग कं० लि० है।

उत्तर प्रदेश ट्रेडिग कं० लि०

यह सिवहारा (जिला बिजनौर) में है। इसका प्रबन्ध भी कॉटन एजेन्टस् लि० ही करते हैं। श्री ए० एल० गोयनका, श्री जे० एम० जालान एवं श्री एस० एन० गुप्ता इसके डाइरेक्टर है। कम्पनी की अधिकृत पूँजी दो लाख रुपया है जो एक रुपये के दो लाख शेअरों में बँटी है। जारी की हुई, बिकी हुई तथा प्रदत्त पूँजी ८० हजार रुपया है जो एक रुपये के शेअरो में बँटी है। इस कम्पनी के अधिकांश शेअर अपर गैंगेज शूगर मि० लि० सिवहारा के अधिकार में है।

इसके अलावा इस कम्पनी की दूसरी सहायक कम्पनी 'बिड़ला लेबोरेटरीज" कलकत्ता है। इसका परिचय अन्यत्र दिया गया है।

(३) न्यू इण्डिया सूगर मिल्स लि०

भारतवर्ष की बड़ी-बड़ी चीनी की मिलों में इस मिल की गिनती है। इसकी स्थापना सन् १९३३ ई० में कलकत्ता में हुई थी। इसका प्रधान कार्यालय ८, रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता में है। रजिस्टर्ड कार्यालय बिहार के दरभंगा जिले में हसनपुर रोड नामक स्थान पर है।

कम्पनी की अधिकृत पूँजी पचास लाख रुपये है जो इस प्रकार बाँटी गयी है—दस रुपये के २,२०,००० साधारण शेयर, सौ रुपये के १५,००० साधारण शेयर, सौ रुपये के तीन हजार प्रिफेरेन्स शेअर तथा सौ रुपये के दस हजार जमा होनेवाले शोध्य प्रिफेरेन्स शेअर। कम्पनी की प्रदत्त पूंजी १८,३७,७०० रु० है जो इस प्रकार प्राप्त हुई—दस रुपये के ७८,९१० साधारण शेअर, सौ रुपये के ४८६ साढ़े सात प्रतिशत जमा होने वाले प्रिफेरेन्स शेअर तथा सौ रुपये के दस हजार साढ़े पाँच प्रतिशत जमा होने वाले शोध्य प्रिफेरेन्स शेअर।

कम्पनी के प्रबन्ध अभिकर्ता दी कॉटन एजेन्ट्स लि०, बम्बई है। इसके डाइरेक्टर श्री कृष्णकुमार बिड़ला, श्री जी० डी० लोयलका, श्री प्रभुदयाल हिम्मत सिंहका तथा श्री पी० एन० सिन्हा हैं।

कम्पनी की मिल दरभंगा जिले में हसनपुर रोड के पास उत्तरी-पूर्वी रेलवे पर है। इमारत अच्छी बनी है। कार्यकर्ताओं तथा मजदूरों की सुविधा का पूरा ध्यान रखा गया है।

चीनी बनाने का कार्य Double Sulphitation Process से किया जाता है। प्रतिदिन लगभग १३०० टन ईख का उपयोग होता है।

दी दरभंगा मारक्यटिंग कम्पनी लि० के अधिकांश शेअर इस कम्पनी के अधीन होने से यह भी इस मिल की सहायक कम्पनी हुई।

(४) अवध सूगर मिल्स लि०

इस कम्पनी की स्थापना सन् १९३२ ई० में बम्बई में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग बम्बई में है।

कम्पनी की अधिकृत पूंजी एक करोड़ तीस लाख रुपया है। इसकी प्रदत्त पूंजी ९०,१७,५५० रु० है।

कम्पनी के प्रबन्ध अभिकर्ता दी कॉटन एजेन्ट्स लि० बम्बई है। इसके डाइरेक्टर श्री कृष्णकुमार बिड़ला, श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला, श्री विश्वम्भर लाल महेश्वरी, श्री रामनिवास रामनारायण, श्री कमलनयन बजाज, श्री एस० राम निरंजन और श्री एस० जी० नेवटिया हैं।

कम्पनी की मिल उत्तर-प्रदेश के सीतापुर जिले में हरगाँव नामक स्थान पर है। यह मिल उत्तर-प्रदेश की बड़ी मिलों में है।

चीनी बनाने का काम Double Sulphitation Process से किया जाता है। प्रतिदिन लगभग २००० टन ईख का उपयोग होता है। इसी कम्पनी के अन्तर्गत आकोला में भी एक मद्यशाला (Distillery) तेल की मिल तथा हाइड्रोजिनेटेड तेल तथा अन्य गौण उपज की मिल है जहाँ पर लगभग ४० टन ईख का प्रतिदिन उपयोग किया जाता है। इस सहायक संस्था का नाम बरार आयल इन्डस्ट्रीज, आकोला (मध्यप्रदेश) है, जहाँ पर सुप्रसिद्ध "वनसदा" घी का भी निर्माण होता है।

(५) न्यू स्वदेशी सूगर मिल्स लि०

इस कम्पनी की स्थापना बम्बई नगर में सन् १९३१ ई० में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग, बम्बई में है।

कम्पनी की अधिकृत पूंजी बीस लाख रुपया है जो सौ रुपये के सोलह हजार साधारण शेअरों तथा पचीस रुपये के सोलह हजार शेयरों में विभक्त है। जारी की हुई, बिकी हुई तथा प्रदत्त पूंजी १३,५६,३७५ रु० है जो इस प्रकार प्राप्त हुई। सौ रुपये के १०,८७५ साधारण शेयर तथा पचीस रुपये के १०,८७५ शेअर।

कम्पनी के प्रबन्ध अभिकर्ता दी कॉटन एजेन्ट्स लिमिटेड, बम्बई है। श्री रामेश्वरदास बिड़ला, श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला, श्री विश्वम्भर लाल महेश्वरी, श्री मानकलाल प्रेमचन्द, सर फजुलभाई आई० रहीमतुल्ला के० टी० के० सी० आई० ई० तथा श्री महादेव सिंघी इसके डाइरेक्टर है।

कम्पनी की मिल बिहार के चम्पारन जिले में नरकटियागंज नामक स्थान पर है। यह बिहार की प्रसिद्ध मिलों में से एक है।

चीनी बनाने का काम Double Sulphitation Process से किया जाता है। इस मिल में लगभग ९०० टन ईख का उपयोग प्रतिदिन होता है।

इनके अतिरिक्त दी कॉटन एजेन्ट्स लि० बम्बई मेसर्स गोविन्द सूगर मिल्स लि०, लखीमपुर का भी प्रबन्ध करते हैं।

३—जूट की मिलें

भारत में जूट की बनी वस्तुएँ सारे संसार में जाती हैं। जूट के कपड़े, थैले, सूतली, चटाइयाँ, आसन आदि संसार के हर देश में दिखाई देंगे। बिड़ला ब्रदर्स निम्न जूट की मिलो का सञ्चालन करते है।

(१) बिड़ला जूट मैनूफेक्चरिंग कम्पनी लि०

यह जूट की बड़ी मिलों में से एक है। इसकी स्थापना सन् १६१६ ई० में कलकत्ता में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय १ ए, वेन्सीटार्ट रो, कलकत्ता में है। प्रधान कार्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता में है।

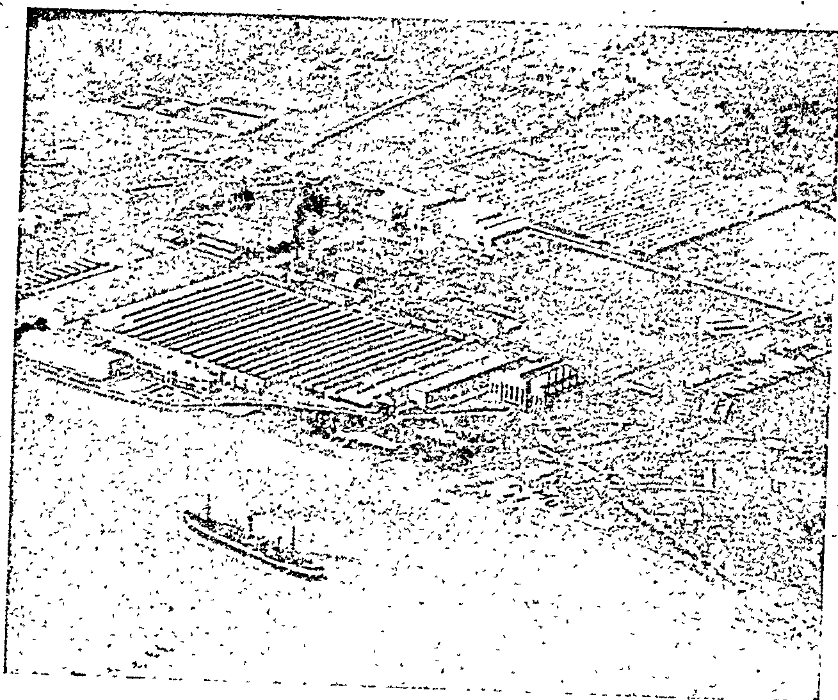
इसकी अधिकृत पूँजी एक करोड़ रुपया है जो निम्नानुसार विभक्त की गयी हैं—दस रुपये के चार लाख साधारण शेअर, सौ रुपयें के २५,००० साढ़े सात प्रतिशत जमा होनेवाले प्रिफेरेंस शेअर तथा सौ रुपये के ३५,००० अन्य शेअर। बिकी हुई एवं प्रदत्त पूँजी ५४,०६२०० रु० हैं जो इस प्रकार प्राप्त हुई–३,०४,२०० साधारण शेअरों पर दस रुपया प्रति शेअर तथा २३,६४२ साढ़े सात प्रतिशत प्रिफेरेन्स शेअरो पर सौ रुपयों के हिसाब से।

कम्पनी के प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता है। इसके डाइरेक्टर निम्न हैं—श्री माधवप्रसाद बिड़ला, श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला, श्री कनाईलाल जटिया, श्री हीरालाल सोमानी, श्री गिरधरदास कोठारी, श्री जगमोहन प्रसाद गोयनका तथा श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका। मिल की इमारत कलकत्ता से लगभग १७ मील दूर दक्षिण की ओर हुगली नदी के बाँए किनारे पर बजबज में बिरलापुर नामक स्थान पर है। जूट की मिल में पानी की बहुत आवश्यकता होती है। यह पूर्ति हुगली नदी के पानी से की जाती है। पानी की भाप (Steam) द्वारा ही यह मिल चलाई जाती है। यही इस मिल की एक मुख्य विशेषता है। पानी की अधिकता होने से भाप अन्य शक्ति पदार्थों की अपेक्षा सस्ती पड़ती है। एक नया विशाल शक्तिगृह (Power house) भी सन् १६५१ ई० में बन कर तैयार हो गया है।

इस मिल में कुल १३७३ करघे है थैले के लिए (Sacking) ३६१ तथा कपड़े के लिए (Hessian) ६८२ करघे हैं। कुल स्पिण्डल्स लगभग २६,७१२ हैं। जूट के हर प्रकार के सामान जैसे, थैले, बोरे, जूट का कपड़ा, सूतली, रस्सी; चटाइयाँ आदि इस मिल में तैयार किये जाते है। इस मिल में लगभग ५,७०० मजदूर काम करते हैं।

बिरलापुर में कार्यकर्त्ताओं एवं अन्य मजदूरो के रहने के लिए सुन्दर, साफ एवं हवादार लगभग १२५० मकान बने हुए हैं। उन्हें हर प्रकार की सुविधायें दी जाती हैं। कुल काम करनेवाले मजदूरो में से लगभग ६० प्रतिशत इन मकानो में रहते हैं। मकानो में पानी, स्नानघर, बिजली, पक्की मोरियाँ, पाखाना आदि की अच्छी व्यवस्था है। सितम्बर १६५० ई० में स्थापित Omnibas Tribunal की शिफारिशों के अनुसार १० दिसम्बर १६५१ में ही मिल मजदूरों को भृत्ति (Wages) तथा कार्य की शर्तो में बहुत रियायत की गयी है। मिल की इमारत भी स्वास्थ्यजनक व अच्छी है। मिल के मजदूरो और कार्यकर्त्ताओ

के लिए अस्पताल, खेल, आदि की सुविधा का भी प्रबन्ध किया गया है। मजदूरों को पेन्शन, प्राविडेन्ट फण्ड तथा ग्रेचुयेटी की भी सुविधायें प्राप्त हैं



बिड़लापुर का हवाई जहाज से लिया गया चित्र

बिड़लापुर की बस्ती उस स्थान पर बनी है जहाँ पहले जंगल एवं दलदल था। आज वही जंगल एक सुन्दर बस्ती के रूप में परिवर्तित हो गया है। बिड़लापुर मजदूर बस्ती व मिल का क्षेत्र फल कुल मिला कर लगभग २३० एकड़ है। सारी बस्ती में विद्युत, जल तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सब सुविधायें प्राप्त हैं। शिक्षा के लिए यहाँ पर एक 'बिड़लापुर विद्यालय' है जहाँ पर कार्यकर्त्ताओं तथा मजदूरों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। यह एक हाई स्कूल है। इसके अतिरिक्त चित्रपट, डाकघर, क्लब, क्रीड़ा-स्थल, सहकारी अधिकोष, पुस्तकालय, कैन्टीन, मंदिर, दुग्धशाला आदि सब सुविधाओं का प्रबंध है। बिड़ला-पुर का नया बाजार अगस्त १६४६ ई० में बन कर तैयार हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग ८०,००० वर्ग-फीट है जिसमें लगभग ६६ दूकानें हैं। बिड़लापुर से प्रतिमाह "बिड़लापुर श्रमिक समाचार" नामक पत्र हिन्दी व बंगला में निकलता है। यह लगभग १२०० मजदूरों में मुफ्त वितरित किया जाता है।

इस कम्पनी की एक सहायक कम्पनी है, जिसका नाम मेसर्स इंडिया लिनोलियम्स लि० है। इसके अधिकांश शेयर इस कम्पनीके हाथमें है। इसी कम्पनी की देखरेख में एक नयी कम्पनी 'केलशियम कारबाईड' फैक्टरी का भी निर्माण हो रहा है।

इसकी मिल नये ढंग की तथा सब आवश्यक सामान से सुसज्जित है। यह मिल सारे भारतवर्ष की वर्तमान माँग की पूर्ति कर रही है तथा आशा है कि शीघ्र ही इसका पदार्थ विदेशों में भी अच्छी प्रसिद्धि प्राप्त करेगा। फर्श का टाट जो इस मिल में निर्माण किया जाता है, घरों, कार्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों, पुस्तकालयों, दुकानों, होटलों, क्लबों आदि सब स्थानों पर उपयोग में लाया जा रहा है।

यहाँ का उत्पादन प्रति सप्ताह लगभग ६००० गज होता है।

(२) सूरा जूट मिल्स कम्पनी लि०

इस कम्पनी की स्थापना सन् १८६२ ई० में कलकत्ता में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता में है।

पहले इस कम्पनी के प्रबंध अभिकर्ता मेसर्स मोक्लायड एण्ड कम्पनी थे। उन्होंने १ जुलाई सन् १९४६ ई० को इस कार्य से त्यागपत्र दिया। तत्पश्चात् मे० हिन्दुस्तान इन्वेस्टमेंट कारपोरेशन लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता इसके प्रबंध अभिकर्ता बने। श्री एम० पी० बिड़ला, श्री ए० डी० विकर्स, श्री जी० पी० बिड़ला, श्री जी० डी० कोठारी तथा श्री ताराचन्द साबू इसके डाइरेक्टर हैं। कम्पनी की अधिकृत एवं प्रदत्त पूँजी सत्रह लाख रुपया है। यह पूँजी दस रुपये के ७०,००० साधारण शेअरों तथा सौ रुपये के १०,००० सात प्रतिशत जमा होने वाले प्रिफेरेन्स शेअरों में विभक्त है।

मिल की इमारत कलकत्ता से तीन मील पूर्व की ओर सूरा नामक स्थान पर है जहाँ पर रेलवे सड़क की सुविधा है। मिल विद्युत-शक्ति से चलाई जाती है। इस मिल में कुल ४०१ करघे हैं। थैले के लिए (Sacking) २०० तथा कपड़े के लिए (Hessian) २०१ करघे हैं। जूट के हर प्रकार के सामान जैसे बोरे, थैले, टाट, सूतली, कपड़ा आदि का इसमें निर्माण होता है।

४— मोटर-निर्माण

आधुनिक काल में जल, थल और वायु तीनों प्रकार के यातायात के साधन उपलब्ध हैं। किसी विशेष क्षेत्र में एक या अधिक प्रकार के साधनों को जुटाने से पहले इस बात का पूरा ध्यान रखना पड़ेगा कि कौनसा साधन उस क्षेत्र विशेष में उपयुक्त होगा और कम से कम खर्च में उस क्षेत्र की आवश्यकताओं की पूर्ति कर देगा। सम्पूर्ण साधनों की तुलनात्मक विवेचना करने पर हम इस नतीजे पर पहुँचेंगे कि सबसे सस्ता तथा अधिक बढ़नेवाला साधन सड़कों एवं मोटरों का है। भारतवर्ष में मोटरों की बहुत कमी है। अमेरिका में हर चार व्यक्तियों के पीछे एक कार है, कनाडा में आठ, इंगलैण्ड में अट्ठारह, फ्रांस में अट्ठारह और भारतवर्ष में १९०० आदमियों के पीछे एक कार है। इससे स्पष्ट पता चलता है कि भारतवर्ष में देशी मोटरों को बनाने के लिए मोटर उद्योग को बढ़ाने की बड़ी आवश्यकता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए बिड़ला ब्रदर्स लि० के द्वारा "हिन्दुस्तान मोटर्स लि०" की स्थापना की गयी।

हिन्दुस्तान मोटर्स लि०

सर्व प्रथम फरवरी सन् १६४२ ई० में इस फेक्टरी की स्थापना ओखा बन्दरगाह में हुई। वहाँ पर विलायत से आनेवाले मोटर के पुर्जो को जोड़कर मोटर तैयार की जाती थीं। मगर इस कार्य में मोटर के पुर्जों के लिए विदेशों का मुँह देखना पड़ता था, अतः शुरू से अन्त तक सब प्रकार के पुर्जों का निर्माण इसी देश में करने के लिए कलकत्ता के पास एक विशाल कारखाने का निर्माण किया गया। इसकी स्थापना सन् १६४४ ई० में हुई। यह फैक्टरी (निर्माणी) मोटरगाड़ियों की हिन्दुस्तान में सबसे बड़ी फैक्टरी है। भारतवर्ष के विभाजन के डर से ३ जून १६४७ ई० तक इस फैक्टरी की स्थिति का निश्चय नहीं हो सका। बँटवारे के पश्चात् ही फैक्टरी का निर्माण शुरू हुआ।

फैक्टरी की इमारत कलकत्ते के पास उत्तरपाड़ा (हुगली) नामक स्थान पर है। फैक्टरी के पास ही हिन्द मोटर्स' नामक एक रेलवे स्टेशन बन गया है जहाँ लोकल गाड़ियाँ ठहरती हैं। इमारत बहुत विशाल है। चारों ओर खुला जंगल है। फैक्टरी में हवा आने का ध्यान रखा गया है। कार्यकर्ताओं के लिए सुन्दर मकान हैं। मजदूरों के लिए भी मकानों का प्रबंध किया जा रहा है। फैक्टरी का सारा क्षेत्र लगभग ५३० एकड़ है।

फैक्टरी इमारत का क्षेत्र लगभग १० लाख वर्गफीट है जिसमें से लगभग तीन चौथाई पर इमारत तैयार हो चुकी है। वर्तमान यन्त्रों के विस्तार के लिए भी काफी स्थान रखा है। फैक्टरी ने पूर्वी रेलवे के उत्तरपाडा स्टेशन से तीन रेल की लाइनें भी ली हैं जिनसे प्रतिदिन २०० वेगन का बोझ उतारा तथा चढ़ाया जा सकता है। पूरे प्लेटफार्म पर कार्य कर सकने वाली एक विशालक्रेन मशीन का भी रेल के डिब्बों में सामान चढ़ाने तथा उतारने के लिए प्रबन्ध किया गया है। मोटर गाड़ीके भिन्न भिन्न हिस्सों के निर्माण के लिए लगायी गयी मशीनों का मूल्य लगभग तीन करोड़ रुपया है। इनके अलावा इमारत तथा अन्य व्यवस्था की आवश्यक चीजें लगभग एक करोड़ रुपये की लागत के हैं।

कम्पनी का रजिस्टर्ड कार्यालय भी उत्तर पाड़ा (हुगली) में ही है।

कम्पनी की अधिकृत पूंजी बीस करोड़ रुपया है जो इस प्रकार विभक्त की गयी है :—सौ रुपये के ७,५०,००० प्रिफेरेन्स शेअर तथा दस रुपये के १,२५,००,००० साधारण शेअर। इनमें से केवल पचास लाख साधारण शेअर ही जारी किए गये हैं। बिक्री हुई एवं प्रदत्त पूंजी ४,६६,१२,६५० रु० है जो दस रुपये के ४,६६१,२६५ साधारण शेअरों में विभक्त है।

कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता है। इसके डाइरेक्टर निम्न हैं :—श्री घनश्यामदास बिड़ला (चेअरमैन), श्री ब्रजमोहन बिड़ला (उप-चेअरमैन), श्री कस्तूरभाई लालभाई, सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, श्री नवीनचन्द्र मफतलाल, सर बद्रीदास गोयनका, श्री बी० पी० खेतान एवं श्री मंगतूराम जयपुरिया। कम्पनीके जनरल मैनेजर सर एल० पी० मिश्रा हैं जो अपने योग्य सहयोगी श्री गोपीचन्द धारीवालके साथ कम्पनीका कार्य सुचारु



हिन्दुस्तान मोटरके कारखानेका एक दृश्य

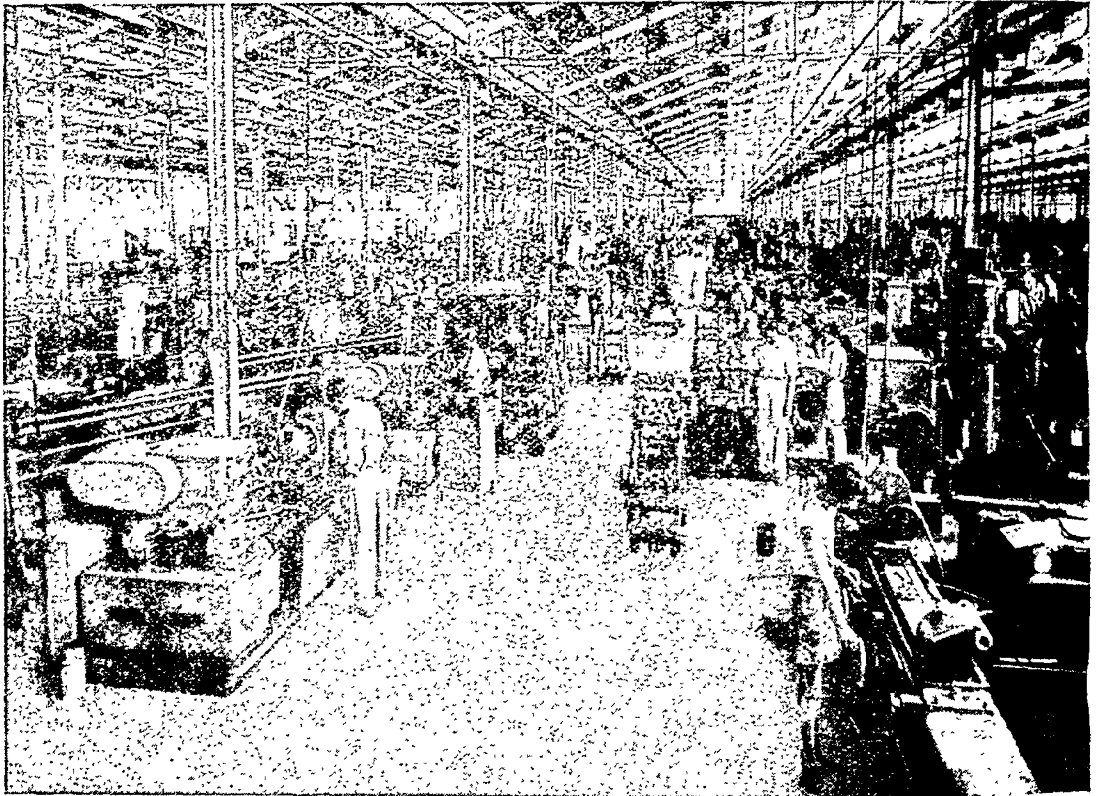
रूपसे चला रहे हैं। श्री जी० डी० थिरानी इसकी विशाल फैक्टरीका संचालन करते हैं। जिनके संचालन में इसके उत्पादनकी निरन्तर वृद्धि हो रही है। श्री एस० एल० झुनझुनवाला इसके सेल्स मैनेजर हैं जो पूरी योग्यताके साथ हिन्दुस्तान मोटर्सकी तैयार की गयी मोटरोंका प्रचार सारे हिन्दुस्तानमें कर रहे हैं। श्री ब्रजमोहन बिड़ला कम्पनीकी सम्पूर्ण व्यवस्थाका संचालन करते हैं।

इस फैक्टरीमें हिन्दुस्तान लैण्ड मास्टर नामक मोटरकारें अपने कुल पुरजोंके साथ तैयार की जाती हैं प्रति दिन २५ कारें तथा २० ट्रक तैयार होते हैं स्टूड बेकर नामक गाड़ीका गठन भी यहाँ होता है।

इस कम्पनीने अपना सम्बन्ध इंगलैण्डकी 'मौरिस' तथा अमेरिकाकी 'स्टूडबेकर' के साथ जोड़ रखा है जिससे "हिन्दुस्तान" गाड़ीके निर्माणमें काफी सहायता मिलती है।

यह कम्पनी आटोमोटिव मेन्यूफेक्चरर्स एसोसियेशन आफ इंडिया, कलकत्ताकी सदस्य है।

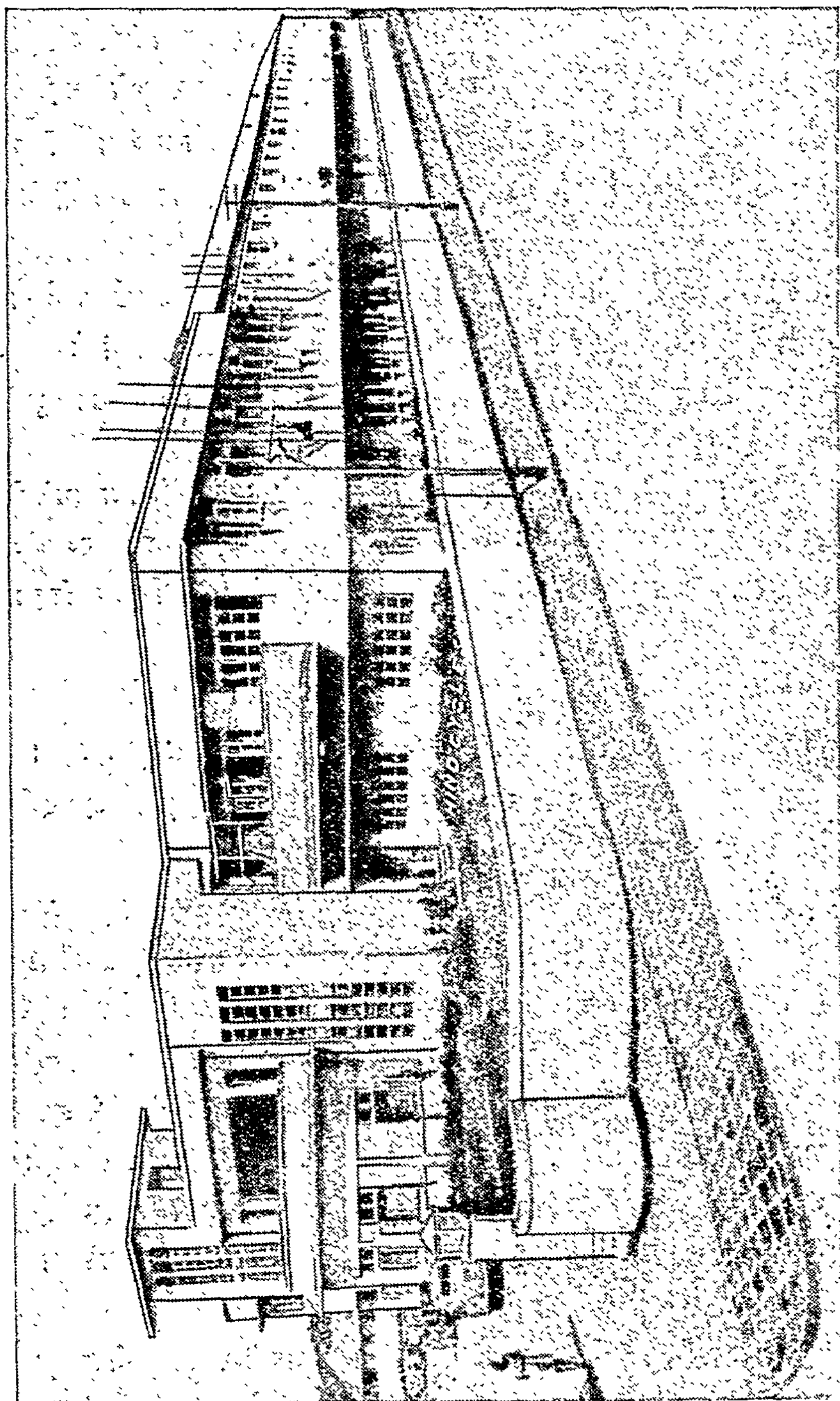
इस कम्पनीने लगभग ४० अनुभवी शिल्पकारोंको बाहरसे बुलाया है तथा २८ योग्य भारतीय छात्रोंको विलायतमें मोटर निर्माणकी विविध शाखाओंमें शिक्षा प्राप्त करनेके लिए भेजा है।



हिन्दुस्तान मोटरके कारखानेका एक दृश्य

इस कम्पनीकी दो सहायक कम्पनियाँ हैं। प्रथमका नाम "हिन्दुस्तान मोटर कारपोरेशन लि०, कलकत्ता" है। इसकी अधिकृत पूँजी बीस करोड़ रुपया है जो इस प्रकार वितरण की गयी है- दस रुपयेके १,२५,००,००० शेयर तथा सौ रुपयेके ७,५०,०००, शेअर। प्रदत्त पूँजी तेरह लाख रुपया है जो दस रुपयेके १,३०,००० साधारण शेअरोंमें विभक्त है। इसके डाइरेक्टर श्री व्रजमोहन बिड़ला श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला एवं सर एल० पी० मिश्रा हैं।

दूसरी सहायक कम्पनी "दी पाकिस्तान मोटर्स लि०, करांची" है। इसकी अधिकृत पूँजी पचास लाख रुपया है जो सौ रुपयेके ५००० शेअरोंमें विभक्त है। प्रदत्त पूँजी पचास हजार रुपया है जो सौ रुपयेके ५०० शेअरोंमें विभक्त है। इसके डाइरेक्टर श्री अब्दुल रज्जाक कोहारी, श्री सिकन्दर खाँ देहलवी, श्री बी० के० सीतलवाड़ तथा श्री एम० आर रुंगटा हैं।



हिन्द सायकिल वर्कशाप बम्बई

५—सायकल उद्योग

हिन्द सायकल्स लि०—आजकल सायकल आवागमनका एक प्रमुख साधन हो गया है। छोटे मोटे शहरोंमें बिना सायकलोंकी सहायताके प्रतिदिन एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जानेमें बड़ी कठिनाई होती है। यह बड़ा साधारण, सुविधाजनक एवं सस्ता साधन है इसीलिए इसका बहुत अधिक प्रचलन हो गया है बिड़ला बंधु "हिन्द सायकल्स लि०" का संचालन करते हैं जहाँ पर सायकलें निर्माण की जाती हैं।

इस प्रमण्डलकी स्थापना बम्बईमें सन् १६३६ ई० में हुई थी। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय २५०, वरली, बम्बई नं० १८ में है। प्रधान कार्यालय इ० बैंक बिल्डिंग, बैंकस्ट्रीट फोर्ड बम्बईमें है। कम्पनीकी अधिकृत पूँजी चालीस लाख रुपया है। यह भारतवर्षमें पहली कम्पनी थी जिसने सब पुर्जों सहित सायकल निर्माणका काम इस देशमें प्रारम्भ किया।

कम्पनीका प्रबन्ध मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि० करते हैं। श्री रामेश्वरदास बिड़ला इसके चेअरमैन हैं। राजा बहादुर गोविन्दलाल, श्री शिवलाल मोतीलाल, धरमसी एम खटाऊ, श्री आर० जी० सरैया, श्री रामनिवास रामनारायण रुइया, श्री मानिक लाल प्रेमचन्द एवं श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला इसके डाइरेक्टर हैं।

फेक्टरी २५० वरली, बम्बईमें है। विशाल एवं सुन्दर इमारत बनी है। फेक्टरीमें कर्मचारियों की सुविधाका बहुत ध्यान रखा गया है। कर्मचारियोंके निवासके लिए भी समुचित प्रबन्ध है। मजदूरों को अच्छी वृत्ति मिलती है। यह औसत १६४ रु० प्रतिमाह प्रति मजदूर है। लगभग एक दर्जन दैनिक मजदूर आयकर देते हैं तथा लगभग ४४० मजदूर कम्पनीके शेअर होल्डर हैं।

भारतीय पूँजी एवं श्रमसे भारतवर्षमें ही उत्पादित सायकलोंकी कम्पनियोंमें इसका प्रमुख स्थान है। सायकलके २५० भागोंमेंसे केवल स्पोक्स (Spokes), निपल्स (Nipples) तथा स्टील बाल्स (Steel Balls) को छोड़कर सब भाग यहीं पर बनाये जाते हैं। ये भाग भी क्रमशः बम्बई तथा जयपुर में बनने लग गये हैं। फ्री ह्वील्स (Free Wheels) तथा चेनोंके उत्पादनके लिए भी यहाँ पर मशीनोंका प्रबन्ध है। इस प्रकारसे सम्पूर्ण गाड़ीका उत्पादन भारतवर्ष में ही होने लग गया है।

यह फेक्टरी प्रतिवर्ष दो लाख सायकलें बना सकती है। सन् १६५१ ई० में १,०८,८१० तथा सन् १६५२ ई० में लगभग १, ३०,०५३ सायकलों का उत्पादन इस फेक्टरीने किया। इस प्रकारसे एक सालमें सायकलोंके उत्पादनमें लगभग २०% की अधिकता हुई। फेक्टरीकी स्थापनाके पश्चात् सबसे अधिक उत्पादन सन् १६५२ ई० में ही हुआ।

स्वदेशीकी भावना एवं सरकारकी सहायतासे इस कम्पनीको अच्छी उन्नति करनेकी पूरी आशा है जिसमें इसे अवश्य लाभ होगा। यह कम्पनी दी सायकल मेनूफेक्चरर्स एसोसियेशन (The Cycle Manufacturers Association) कलकत्ता की सदस्य है।

६—कागज की मिलें

भारतवर्षमें बहुत प्रचीनकालसे ही कागज बना करता था। सैकड़ों वर्ष पुराने ग्रन्थ आज भी पर्याप्त मात्रामें मिलते हैं। मशीन युगके पूर्व हमारे देशमें बहुत मजबूत, सुन्दर तथा सफेद चिकना कागज तैयार किया जाता था। मशीनोंके आविष्कारने बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया। आज भारतवर्षमें इस उद्योगकी कई मिलें हैं। बिड़ला बन्धु निम्न मिलोंका प्रबन्ध करते हैं:—

(१) ओरियण्ट पेपर मिल्स लि०—यह भारतवर्षकी कागजकी बड़ी-बड़ी मिलोंमें से एक है। इसकी स्थापना सन् १९३६ ई० में कलकत्तामें हुई। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय उड़ीसाके सम्बलपुर जिलेमें ब्रजराजनगर नामक स्थानमें है। प्रधान कार्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्तामें है।

कम्पनीकी अधिकृत पूँजी चार करोड़ रुपया है जो दस रुपयेके बीस लाख साधारण शेअरों तथा सौ रुपयेके दो लाख प्रिफेरेंस शेअरोंमें बाँटी गयी है।

इस कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता है। इसके डाइरेक्टर श्री गंगाप्रसाद बिड़ला, श्री रामकुमार सोमानी, श्री किशनलाल पोद्दार, दीवान बहादुर आर० के० जालान, श्री पी० आर० सरकार तथा श्री पी० एन० सिन्हा हैं।

यह मिल उड़ीसामें सम्बलपुर जिलेके झाड़सुगड़ाके पास 'ईब' नामक स्थान पर है। यह स्थान आजकल ब्रजराजनगरके नामसे प्रसिद्ध है। इस मिलमें दो विशाल तथा एक छोटी कागज बननेकी मशीनें है। इनके अतिरिक्त एक बोर्ड मशीन भी है। इन सब मशीनोंको मिलाकर कागज और कार्डबोर्ड बनानेकी शक्ति प्रतिवर्ष लगभग ३०,००० टन है।

इस मिलमें भाँति-भाँतिके कागज, कागजकी लुग्दी और कार्डबोर्ड बनाये जाते हैं। सादा व धारीदार क्राफ्ट पेपर, वाटरप्रूफ पेपर, बोर्ड (सिम्प्लेक्स, डुप्लेक्स तथा ट्राइप्लेक्स) और रंगीन ट्राइप्लेक्स आदि भाँति-भाँति के कागज तैयार होते हैं।

यह मिल इंडियन पेपर मिल्स एसोसियेशन, कलकत्ताकी साधारण सदस्य है। इस कम्पनीकी एक सहायक व्यापारी संस्था हिन्दुस्तान सेल्यूलोज एण्ड पेपर मिल्स लि० ब्रजराजनगर है जिसके सम्पूर्ण शेअर इस कम्पनीके हाथमें है।

हिन्दुस्तान सेल्यूलोज ऐण्ड पेपर मिल्स लिमिटेड—यह मिल भी ब्रजराज नगरमें ही है। इसकी अधिकृत पूँजी दस करोड़ रुपया है जो दस रुपयेके साठ लाख शेअरों तथा सौ रुपयेके चार लाख शेअरोंमें विभक्त है। जारीकी हुई, बिकी हुई तथा प्रदत्त पूँजी दस लाख रुपया है जो दस रुपयेके एक लाख साधारण शेअरोंमें बँटी है।

इसका प्रबंध मेसर्स० बिड़ला ब्रदर्स लि० कलकत्ता करते हैं। श्री आनन्दीलाल गोयनका तथा श्री एस० आर० साबू इसके डाइरेक्टर हैं।

यह कम्पनी इंडियन पेपर मिल्स एसोसियेशन, कलकत्ताकी साधारण सदस्य है।

(२) सिरपुर पेपर मिल्स लि०—इस कम्पनीकी स्थापना हैदराबाद (दक्षिण) में सन्१९३८ई० में हुई थी। यह कम्पनी पहले हैदराबाद सरकार औद्योगिक ट्रस्ट फण्ड (Hyderebad Govt. Industrial Trust Fund) के अधीन थी, परन्तु इसका प्रबंध अब बिड़ला बंधुओंने ले लिया है। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय "विश्व भवन", ३६४ हिमायतनगर, हैदराबाद (दक्षिण) में है। प्रधान कार्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता में है। मिल हैदराबाद स्टेटमें सिरपुर—कागजनगर (सेण्ट्रल रेलवे) नामक स्थान पर है।

इसकी अधिकृत पूंजी दो करोड़ रुपया है जो सौ रुपये के दो लाख साधारण शेअरोंमें विभक्त है। जारीकी हुई पूंजी १,२३,६१,८०० रु० तथा प्रदत्त पूंजी १,१६,७२,६५० रु० है।

मिलमें काम करनेवाले मजदूरों तथा कर्मचारियोंको काफी सुविधायें हैं। अच्छा अस्पताल है जहाँ निःशुल्क औषधि वितरणकी जाती है। मजदूरोंके बच्चोंकी देख-भालके लिए नर्सोंका प्रबंध है। बच्चोंके लिए शुद्ध दूध, दवाईयाँ, दवाइयाँ एवं मनोरंजनके साधनों का प्रबंध है। कर्मचारियों व मजदूरोंके लिए पुस्तकालय एवं क्लब की भी सुव्यवस्था है।

यहाँका उत्पादन प्रतिवर्ष लगभग ५,००० टन है।

७—कोयले की खानें

संसारकी अन्तर्राष्ट्रिय राजनीतिमें आश्चर्यजनक उथल-पुथल करनेकी किसी पदार्थमें यदि शक्ति है तो वह कोयला और लोहेमें ही है। इन दो पदार्थोंके समान आजके युगमें कोई अन्य पदार्थ ऐसा उपयोगी नहीं माना जाता। कोयला उद्योगकी जननी है। भारतवर्षमें कई कोयले की खानें हैं। मुख्य क्षेत्र गोंडवाना कोल फील्ड्स (Gondwana Coal Fields) के नाम से प्रसिद्ध है। बिड़ला बंधुओंके हाथ में भी कई खानें हैं। कोयलेकी खानोंकी दो बड़ी कम्पनियोंका प्रबंध बिड़ला बन्धु करते हैं।

(१) वेस्टर्न बंगाल कोल फील्ड्स लिमिटेड—इस कम्पनीकी स्थापना कलकत्तेमें सन् १९४४ ई० में हुई थी। पश्चिमी बंगालकी कई कोयलेकी खानोंका प्रबन्ध यही कम्पनी करती है। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता में है।

कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स हिन्दुस्तान इन्वेस्टमेण्ट कारपोरेशन लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता है। श्री लक्ष्मीनिवासी बिड़ला, श्री गंगाप्रसाद बिड़ला, श्री बी० डी० डागा, श्री एल० पी० गोयनका, श्री एस० एम० मोहता, राजा बी० एन० रायचौधरी तथा श्री बी० डी० शर्मा इसके डाइरेक्टर हैं।

कम्पनी की दो खानें बर्दवान जिला (पश्चिम बंगाल) में है। पहली खान मोइरा (Moira) पो० आ० उखरा में है। दूसरी खान का नाम सामला मन्दरबनी खान (Samla Manderboni

Colliery) है जो पण्डेश्वर (पश्चिम बंगाल) के पास है। इस क्षेत्र में कोयला देनेवाली लगभग ४५०० बीघा जमीन इस कम्पनी के अधीन है। इसके अलावा काजोरा क्षेत्र (Kajora Field) में भी लगभग १८,००० बीघा जमीन, जिसमें कोयला मिलता है, इस कम्पनीके अधीन है।

३१ मार्च सन् १९५३ ई० को समाप्त होनेवाले वर्षमें इस कम्पनीकी खानोंसे पिछले वर्षकी अपेक्षा ९ प्रतिशत अधिक कोयला निकाला गया। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यह कम्पनी दिनोंदिन उन्नतिकी ओर अग्रसर हो रही है।

(२) सेण्ट्रल इण्डिया कोल फील्ड्स लि०—इस कम्पनी की स्थापना सन् १९४४ ई० में कलकत्ता में हुई। बिहार, मध्यप्रदेश एवं उड़ीसामें इस कम्पनीकी खानें हैं। इसका रजिस्टर्ड ऑफिस ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता है।

इस कम्पनी की अधिकृत पूँजी एक करोड़ रुपया है जो दस रुपयेके दस लाख शेअरोंमें विभाजित है। जारी की हुई, बिकी हुई एवं प्रदत्त पूँजी ४९,९७,००० रु० है जो दस रुपयेके ४,९९,७०० साधारण शेअरोंमें विभक्त है।

कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स हिन्दुस्तान इन्वेस्टमेंट कारपोरेशन लि० ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता है, इसके डाइरेक्टर्स इस प्रकार हैं—श्री लक्ष्मी निवास बिड़ला, राजा बी० एन० रायचौधरी, श्री सी० एल० जटिया, श्री घनश्यामदास गोयनका तथा श्री विधुशेखर।

कम्पनी की मुख्य खानें मध्यप्रदेश एवं बिहारमें हैं। मध्यप्रदेशमें पियोर चिरीमिरी (Pure Chirimiri) नामक कोयलेकी खान चिरीमिरी नामक स्थानपर है। बिहारमें मानभूम जिलेमें निरशाचटी (Nirshachati) के पास खासबदजना (Khasbadjana) नामक कोयलेकी दूसरी खान है। उड़ीसामें भी ईब (Ib) क्षेत्रमें थोड़ा बहुत भाग है। मध्यप्रदेशमें कोरिया नामक छोटी-सी स्टेटमें कम्पनीका लगभग ५५ वर्गमीलके क्षेत्रपर अधिकार है। यह क्षेत्र अच्छा उपयोगी सिद्ध होगा। यह पूरा क्षेत्र चार हिस्सोंमें विभाजित है जिनमेंसे दस वर्गमीलका हिस्सा खान खोदनेकी लीज (Lease) में परिवर्तित किया जा सकता है।

कोयला निकालनेमें प्रतिदिन उन्नति हो रही है। ३१ मार्च सन् १९५२ ई० को समाप्त होनेवाले वर्षमें पिछले वर्षसे अधिक कोयला निकाला गया।

८—बैंकिंग उद्योग

भारतवर्षमें बैंकिंग व्यवसाय बहुत प्राचीन कालसे ही है। राजस्थानी समाजने अतिप्राचीन कालसे ही इस क्षेत्रमें भी काफी कार्य किया है। अपने निजी काम-धंधों के साथ-साथ यह व्यवसाय भी होता रहता था। आज देशमें सैकड़ों बैंक इस क्षेत्रमें काम कर रहे हैं। इन संस्थाओंने बड़ी-बड़ी सेवायें की हैं। बिड़ला बंधु यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लि० नामक अधिकोष का प्रबन्ध करते हैं।

यूनाइटेड कमर्शियल बैंक

इस बैंककी स्थापना सन् १९४३ ई० में कलकत्तामें हुई। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय भागीरथीपैलेस, चाँदनीचौक, दिल्लीमें है। प्रधान कार्यालय २, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्तामें है। यह भारतके प्रधान बैंकोंमेंसे एक है।

इस बैंककी अधिकृत पूँजी आठ करोड़ रुपया है जो सौ २ रुपयेके आठ लाख शेअरोंमें विभाजित हैं। जारी की हुई तथा बिकी हुई पूँजी चार करोड़ रुपया है जो सौ रुपयेके चार लाख शेअरोंमें विभक्त है। प्रत्येक शेअरपर पचास रुपये मांगे गये हैं। अतः प्रदत्त पूँजी दो करोड़ रुपया हुई। बैंकका रिजर्व फण्ड (Reserve Fund) पचहत्तर लाख रुपया है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि यह बैंक करोड़ों रुपयोंका कारोबार करता है।

इस बैंकके डाइरेक्टर निम्न हैं :—श्री घनश्यामदास बिड़ला (चेअरमैन), श्री ईश्वरी प्रसाद गोयनका (उप-चेअरमैन), श्री रमनलाल जी० सरैया (उप-चेअरमैन), श्री अनन्तचरन ला, श्री महादेव एल० दहानुकार, श्री मदनमोहन आर० रुइया, श्री गोविन्दलाल बांगड़, श्री मोहनलाल एल० शाह, श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, श्री मोतीलाल तापुरिया, श्री रामेश्वर लाल नोपानी, तथा श्री नवीनचन्द्र माफतलाल। श्री बी० टी० ठाकुर इसके जनरल मैनेजर हैं।

इस बैंककी शाखायें सम्पूर्ण भारतवर्ष तथा विदेशोंमें है। भारतवर्षके प्रमुख नगरों यथा आगरा, अहमदाबाद, अजमेर, इलाहाबाद, अमृतसर, अलवर, आसनसोल, अगरतला, बनारस, बंगलोर, बड़ोदा, भावनगर, बेलगा, भिण्ड, बम्बई, बुलसर, कलकत्ता, कोयम्बटूर, कटक, दिल्ली, देहरादून, गौहाटी, गिरीडीह, गोरखपुर, ग्वालियर, इन्दोर, जयपुर, जामनगर, जोधपुर, कानपुर, लखनऊ, मद्रास, मथुरा, मोगा, मैसूर, नागपुर, पटना, पूना, राजकोट, रानीगंज, शिलांग, सिकन्दराबाद, शिमला, सिलचर, सूरत, उज्जैन आदिमें इसकी शाखायें हैं। विदेशोंमें सिंगापुर, हांगकांग, पीनांग (मलाया), रंगून, लन्दन, करांची, चटगाँव, पांडिचेरी आदि स्थानोंपर भी इसकी शाखायें हैं। इनके अतिरिक्त संसारके प्रत्येक देशमें इसके अभिकर्त्ता हैं। इस प्रकार यह बैंक एक अन्तर्राष्ट्रीय बैंकका काम करता है।

६—बीमा उद्योग

जिस प्रकार बैंकिंग व्यवसाय आजकल के वाणिज्य में बहुत महत्व रखता है उसी प्रकार बीमा व्यवसाय का भी वर्तमान वाणिज्य एवं उद्योग में महत्वपूर्ण स्थान है। नये २ आविष्कारोंने नये-नये कल कारखानों को जन्म दिया। इन कल कारखानोंसे उत्पन्न जोखिमसे बचनेके लिए बीमा व्यवसायकी भी आविष्कारोंको साथही प्रगति होती गयी। आज भारतवर्ष में देशी और विदेशी कई बीमा कम्पनियां काम कर रहीं हैं। बिड़ला बन्धु दो बड़ी बीमा कम्पनियों का संचालन कर रहे हैं।

(१) दी न्यू एशियाटिक इन्स्योरेन्स कं० लि०

यह भारतकी पुरानी बीमा कम्पनियोंमेंसे एक है। इसकी स्थापना सन् १६३२ ई० में नई दिल्लीमें हुई। सर्वप्रथम इसने केवल जीवनबीमा (Life Inssurance) का ही काम हाथमें लिया। परन्तु दिनों दिन बढ़ती हुई उन्नतिको देखकर अन्य प्रकारके बीमा करनेकी ओरभी कदम उठाया। यह प्रमण्डल इस समयतक हर क्षेत्रमें सफलतापूर्वक कार्य करता आ रहा है। इस समय यह प्रमण्डल जीवन, आग, समुद्री (Marine), मोटर, स्वामिभक्ति (Fidelity); दुर्घटना (Accident), बरग्लरी (Burglary), मजदूर क्षतिपूर्ति (Workmen Compenasation), हवाई जहाज (Aviation), कूपन बीमा (Coupon Insurance), हवाई जहाजके यात्री, निजी दुर्घटना आदि हर प्रकारके बीमा करता है।

इस प्रमण्डलका प्रधान कार्यालय न्यू एशियाटिक बिल्डिंग, कनॉट सर्कस, नई दिल्लीमें है। भारतके सब प्रधान नगरों-कलकत्ता, बम्बई, पटना, कानपुर, जयपुर, इन्दौर, हैदराबाद, अहमदाबाद, पूना, सूरत, बड़ोदा, जामनगर, जम्मू, राजकोट, रायपुर, हुबली, त्रिचनापल्ली, जलपाइगुरी, बंगलोर, कोयम्बटूर, जालन्धर, लखनऊ, बनारस, बरेली, विजयवाड़ा, जलगाँव, भावनगर, नागपुर, बीकानेर आदि स्थानों पर इसकी शाखाएँ हैं। विदेशोंमें कोलम्बो, रंगून, ट्रिनीडाड, कनाड़ा, यूगेण्डा (अफ्रीका), मारीशश एवं चटगाँव (पाकिस्तान) आदि स्थानों पर इस कम्पनी द्वारा कार्य होता है। अतः यह स्पष्ट है कि इस कम्पनीका कार्यक्षेत्र बहुत बड़ा है।

कम्पनी की अधिकृत पूँजी ७५,००,००० रु० है जो दस रुपयेके ७,५०,००० शेअरोंमें विभाजित है। माँगी हुई तथा प्रदत्त पूँजी बीस लाख रुपया है जो चार लाख शेअरों पर पाँच रुपये प्रति शेयरके हिसाबसे प्राप्त हुई है। जीवन बीमा विभागका रिजर्व फण्ड सन् १६५२ के अन्तमें लगभग २,६४,४५,४२६ रु० था। कम्पनीके डाइरेक्टर श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला (चेयरमैन) मुहम्मद हुसैन हसन प्रेमजी, श्री कमलनयन बजाज, श्री डी० एम० धानुकार, श्री एच० पी० पोद्दार, राजा बी० एन० रायचौधरी ऑफ सन्तोष और श्री बी० डी० डागा हैं। कम्पनीके जनरल मैनेजर श्री ए० एल० दत्ता (जीवन बीमा विभाग) एवं श्री बी० के० सीतलवाड़ (विविध बीमा विभाग-बम्बई क्षेत्र) तथा मैनेजर श्री मोहन लाल खत्री हैं। इस कम्पनीके चीफ अकाउण्टेण्ट श्रीकानसिंह बोलिया हैं तथा बंगाल शाखाके व्यवस्थापक श्रीहरिसिंह नौलखा हैं, जो विलायतसे इन्स्युरेंसकी ट्रेनिंग लेकर आये हैं।

(२) दी रूबी जेनरल इन्स्योरेन्स कं० लि०

इस कम्पनीकी स्थापना सन् १६३६ ई० में कलकत्ता में हुई। जैसा कि इसके नामसे स्पष्ट है यह कम्पनी मुख्यतः विविध प्रकारके बीमा (General Insurances) के लिए स्थापित हुई थी। शुरूसे ही इसने आग, समुद्री दुर्घटना, मोटर, मजदूर क्षतिपूर्ति, हवाई जहाज (Aviation), स्वामिभक्ति (Fidelity) आदिअनेक प्रकार के विविध बीमा उद्योगको हाथमें लिया। कम्पनीका कार्य बढ़ता गया। ई-नईं शाखायें खुलती गयीं। प्रसिद्धि प्राप्त होती गयी। बढ़ती हुई इस प्रगतिको देखकर इस कम्पनीने

जीवन बीमा भी शुरू कर दिया। आज यह हर प्रकारका बीमा करती है। भारत की बड़ी कम्पनियोंमें से एक है।

इस कम्पनी का रजिस्टर्ड कार्यालय २१, दरियागंज, दिल्ली में है। वहीं पर जीवन बीमा विभाग का प्रधान कार्यालय भी है। जनरल बीमा विभागका प्रधान कार्यालय बम्बई म्यूच्यिल बिल्डिंग, ६ ब्रेबोर्न रोड, कलकत्तामें है। बम्बई क्षेत्रका कार्यालय बिड़ला हाउस चर्च गेट बम्बई है। भारतके सब प्रधान नगरों यथा-अहमदाबाद, अम्बाला, अजमेर, अमृतसर, बनारस, बंगलोर, बड़ौदा, कोचीन, कटक, कोयम्बटूर, दिल्ली, गौहाटी, गोआ, इन्दौर, हैदराबाद, जयपुर, कानपुर, लखनऊ, मद्रास, मेरठ, पटना, पूना, श्रीनगर, विजयवाड़ा, वर्धा, शिलांग आदिमें इसकी शाखायें काम कर रही हैं। विदेशों में अदन, कोलम्बो, पीनांग, कापाला (पूर्वी अफ्रीका), रंगून, सिंगापुर, तथा चटगाँव (पाकिस्तान) आदि स्थानों पर भी यह कम्पनी काम करती है। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि यह कम्पनी एक बहुत बड़े क्षेत्र में सफलतापूर्वक कार्य कर रही है।

इस प्रमण्डलकी अधिकृत पूँजी एक करोड़ रुपया है जो पच्चीस रुपया प्रतिशेअरके चार लाख शेअरोंमें विभाजित है। सम्पूर्ण शेअरोंपर आठ रुपया प्रतिशेअर माँगा गया है। अतः माँगी हुई एवं प्रदत्त पूँजी बत्तीस लाख रुपया है। सन् १९५१ ई० के अन्तमें जीवनबीमा कोषमें लगभग १,६८,३६,२४६ रु० था।

इस प्रमण्डलके डाइरेक्टर श्री बृजमोहन बिड़ला (चेयरमैन), श्री महालीराम सौन्थलिया, श्री मोहनलाल लालचन्द, श्री सूरजमल मोहता, श्री अनन्तचरन लॉ, श्री रामेश्वरलाल नोपानी तथा श्री राधाकिशन कानोड़िया हैं। कम्पनीके जनरल मैनेजर श्री ज्वालाप्रसाद कानोड़िया और श्री बी० के० सीतलवाड़ (बम्बई क्षेत्रके) हैं। भूतपूर्व मैनेजर स्वर्गीय श्री शिवसिंह कोठारीका इस कम्पनीके उत्थानमें बहुत हाथ रहा था। जीवन बीमा विभागके जनरल मैनेजर श्री पी० आर० गुप्ता हैं।

१०—अन्य औद्योगिक प्रमण्डल एवं संस्थाएँ

इन संस्थाओंके अतिरिक्त बिड़ला ब्रदर्सकी अन्य कई मुख्य मुख्य औद्योगिक प्रमण्डल एवं संस्थाएँ हैं :—

(१) टेक्सटाइल मशीनरी कारपोरेशन लि०

यह भारतवर्षमें अपने ढङ्गकी एक महान् फैक्टरी है। जैसा कि नामसे ज्ञात होता है, यहाँपर कपड़े बुनने तथा कपड़ा मिलोंके उपयोगमें आनेवाली मशीनोंका निर्माण होता है। इस प्रमण्डल की स्थापना सन् १९३९ ई० में कलकत्तामें हुई। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय बेलगड़िया (२४ परगना), पश्चिमी बंगालमें है।

कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता हैं। श्री कृष्णकुमार बिड़ला, श्री एम० आर० जयपुरिया, श्री जगमोहनप्रसाद गोयनका, डाक्टर एस० सी० लहा, श्री सरोत्तम हुथैसिंह, श्री एम० ए० चिदमबरम् और श्री डब्ल्यू० ए० रसेल इसके डाइरेक्टर हैं।

कम्पनीकी अधिकृत पूँजी एक करोड़ पचास लाख रुपया है जो सौ रुपयेके ४०,००० प्रिफेरेन्स शेअर और दस रुपयेके ग्यारह लाख साधारण शेअरोंमें विभाजित है। प्रदत्त पूँजी एक करोड़ रुपया है इस प्रकार प्राप्त हुई—दस रुपये छः लाख साधारण शेअर, सौ रुपेके दस हजार पाँच प्रतिशत (कर-रहित) जमा होनेवाले प्रिफेरेन्स शेअर तथा सौ रुपयेके तीस हजार पाँच प्रतिशत (कर सहित) जमा होनेवाले प्रिफेरेन्स शेअर।

कम्पनीकी स्थापना हर प्रकारकी मशीनों मुख्यतः कपड़ा बनानेकी मशीनें, और पुर्जे तथा औजारके बनानेके लिए की गयी है। मिल चौबीस परगना (पश्चिमी बंगाल) में बेलगड़ियाके पास बासुदेवपुर, जो कलकत्तासे आठ मील उत्तरकी ओर है, में है। यहाँपर सूत कातनेके स्पिण्डिल, स्पिनिंग फ्रेम, स्विसिबल रिंग आदि चीजोंका निर्माण होता है। यहाँ पर पेट्रोल के टीन, रॉलिंग स्टॉक, ट्राम गाड़ी तथा चीनी मिलों की मशीनोंका भी निर्माण होता है।

द्वितीय महायुद्धके समय कई वर्षों तक यह फेक्टरी सरकारके प्रबंधमें थी। ज्योंही सरकारने इसे छोड़ा इसमें स्पिण्डिल्स, बॉयलर तथा अन्य वस्तुओंका निर्माण होने लग गया। यहाँ पर लगभग ५० रिंग फ्रेम, २५,००० स्पिन्डल्स, २५००० स्पिनिंग रिंग्ज तथा अन्य कई चीजें प्रति माह बनती हैं।

फेक्टरीमें मजदूरोंके निवास तथा सुविधाओंका पूरा ध्यान रखा जाता है। निवासके लिए सस्ते मकानोंका प्रबन्ध है. मनोरंजन, खेलकूद, कैण्टीन आदि हर बातकी पूरी सुविधा है। शुद्ध दूध, चाय व नाश्तेकी सुव्यवस्था है।

इस कम्पनीका एक दूसरा कारखाना बॉयलर फैक्टरी नामसे अगरपाड़ामें स्थित है यह इसकी अधिकृत पूंजी एक करोड़ रुपया है, यहां पर बॉयलर रेलवे कोच वैगन इत्यादि बनाये जाते हैं।

कम्पनीके मैनेजर श्री रामलाल राजगढ़िया अत्यन्त व्यवस्था चतुर, कुशल संचालक और उदार प्रवृतिके व्यक्ति हैं:—

दी ग्वालियर रेयान सिल्क मेन्यूफेक्चरिंग (व्हिविंग) लि० स्टेपल फायबर डिव्हीजन पर संक्षिप्त टिप्पणी

बिरला बन्धुओंने जो भारतवर्षकी आधुनिक औद्योगिग प्रगतिमें हाथ बटाया है, उसकी परम्परा को बढ़ाते हुए दी ग्वालियर रेयान सिल्क मेन्यूफेक्चरिंग (वीविंग) को० लि० की शाखा, स्टेपल फायबर डिव्हीजन की स्थापना बिरला ग्राम (नागदा) में सन् १९५१ में हुई तथा इस मिलमें स्टेपल फायबरका निर्माण होता है।

यह मिल भारतवर्षमें अपने ढंग की एक ही है। स्टेपल फायबर एक प्रकारका कृत्रिम कपास है तथा यह वैज्ञानिक औद्योगिक शोधका एक दिलचस्प नमूना है। इसका शोध सन् १८७० में फ्रांसमें हुआ; और साठ साल की इस छोटी सी अवधिमें ही आज यह परिपूर्ण रूपसे इस युगके हर देशमें

व्यवहारिक रूपसे काममें लाया जाने लगा। यह रुईके समान काता जाता है और इसको रुई अथवा ऊनके साथ मिलाकर तत्पश्चात् उसका धागा बनाया जाता है।

स्टेपल फायबरके निर्माणमें लगनेवाला मुख्य कच्चा माल निम्नलिखित है। (१) वुडपल्थ (२) कास्टिक सोडा (३) कारबनबाई सलफाइड और (४) सल्फ्युरिक ऐसिड। स्टेपल फायबरका निर्माण सम्पूर्ण यांत्रिक पद्धितिसे होता है, तथा सब मशीनें स्वचालित हैं। मिल की उत्पादन शक्ति प्रतिदिन १५ टन की है।

स्टेपल फायबरके निर्माणमें बिजली, पानी और भाप की मात्रा काफी तादादमें लगती है। इसलिये यहाँ एक विशाल शक्ति-गृहका निर्माण किया गया हैं। जिसकी शक्ति ८००० किलोवाट की है। इस शक्ति गृहमें दो टरवाई हैं, और यह आधुनिक पद्धतिके रीमोट कंट्रोल-स्विच गीयरसे सुसज्जित है।

शक्ति गृहमें तीन हाई प्रेशर वाटर ट्यूब बॉयलरस् भी हैं, व हर एक बॉयलर की भापकी निर्माण शक्ति २२५०० पौण्ड प्रति घंटा है। इस भापका उपयोग स्टेपल फायबरके निर्माणमें और इसके बाई प्रोडक्ट सोडियम सल्फेटके बनानेमें होता है। इस शक्ति-गृहसे दो छोटे सब स्टेशनों पर ६, ६०० वाल्ट की बिजली दी जाती है।

जल की विशाल मात्रा मिलके निर्माण कार्यमें तथा शक्ति-गृहके लिये लगती है। इसलिये चम्बल नदीके तट पर एक पम्पिंग स्टेशनका निर्माण किया गया है। इस पर तीन विशाल पम्प लगाये गये हैं तथा वे २,४०,००० गैलन पानी प्रति घंटा देते हैं। पम्पिंग स्टेशनको पर्याप्त मात्रामें बारह माह पानी मिले, इसलिये एक बाँधका निर्माण भी चम्बल नदी पर किया गया है।

यह कम्पनी लिमिटेड है; कंपनी की अधिकृत पूंजी रु० ४,००,००,००० की है, चुकाई गई पूंजी २, ५४, ३०, ००० की है।

कंपनीके डॉयरेक्टर निम्नलिखित महानुभाव हैं:—

(१) श्री० घनश्यामदास बिरला।
(२) श्री० लक्ष्मीनिवास बिरला।
(३) श्री० लेफ्टिनेंट जनरल मृगेन्द्र शमशेर जंगबहादुर नेपाल।
(४) श्री० रसिकलाल जे० चिनाई।
(५) श्री० सर० ए, राम स्वामी मुदालियर।
(६) श्री० कृष्ण राज एम० डी० वकरसी।
(७) श्री० दुर्गाप्रसाद मंडेलिया।

औद्योगिक क्षेत्रके अनुभव प्राप्त श्री दुर्गाप्रसाद मंडेलियाके निर्देशनमें इस मिलका संचालन हो रहा है तथा मिल मैनेजर श्री० इंदू पारिख हैं। मिल फरवरी सन् १९५४ से ही चली है, किन्तु इस छोटी सी अवधिमें ही अपने उत्तम स्टेपल फायबरके निर्माण द्वारा तथा योग्य व्यापारिक पद्धतिके कारण देशमें

ख्याति प्राप्त कर चुकी है। इस मिलका भविष्य उज्जवल है। देशकी बढ़ती हुई माँगको ध्यानमें रखते हुये मिलकी उत्पादन शक्ति प्रतिदिन १५ टनसे २८ टन तक बढ़ानेका निर्णय संचालकोंने किया है। स्टेपल फायबरका उपयोग ज्यादातर बम्बई प्रान्त व दक्षिण भारतकी टेक्सटाईल मिलें कर रही हैं।

मिलकी अपनी निजी कालोनी बिरलाग्राम नामसे सम्बोधितकी जाती हैं। इसमें हर एक कामगर व स्टाफके लोगोंके लिये उपयुक्त क्वार्टरस बनाये गये हैं, जिनमें जल, बिजली तथा अन्य सुविधायें पर्याप्त रूपसे दी जाती हैं।

नेशनल बियरिंग कम्पनी लि० जयपुर

सन् १९४६ में, भारतमें बॉल व कॉलर बियरिंग्सके निर्माणके उद्देश्यसे, नेशनल बियरिंग कम्पनी की स्थापना की गयी।

यह औद्योगिक प्रतिष्ठान, उच्च कोटिके बियरिंग्स व बॉल्सके बनानेके लिये, आधुनिक यंत्रोंसे पूर्ण सुसज्जित हैं। विश्वविख्यात हॉफमैन मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि० इँगलैण्डसे व्यापारिक सम्पर्क स्थापित करके उनके अनुभवी विशेषज्ञोंकी सेवायें प्राप्त की गई है। यह फैक्ट्री जिसकी कि वार्षिक उत्पादन शक्ति १८ लाख बियरिंग्सकी है, अभी बियरिंग्सके निर्माणमें संलग्न हैं और इसका उत्पादन राष्ट्रकी आवश्यकताओंके लिये परियाप्त है।

भारतीय रेलवेजके लिये बॉल बियरिंग एक्सल बॉक्सेजका उत्पादन भी इस कारखानेमें हो रहा है और ऐसी आशा की जाती है कि इसकी जो वृद्धि व विकास किया जा रहा है उसके पूर्ण हो जानेपर भारतीय रेलवेजकी पूरी आवश्यकतायें इस प्रतिष्ठान द्वारा निर्मित एक्सल बॉक्सेजसे पूरी हो जायेंगी।

कम्पनीने कॉलर बियरिंग्सका निर्माण भी शुरू कर दिया है। इनके अलावा इसकी २४ लाख ग्रूस बॉल्सकी भी उत्पादन शक्ति है और यह भारतीय साइकिल निर्माताओंकी व अन्य कारखानोंकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करती है।

दी इंडियन स्मेल्टिंग ऐण्ड रिफाइनिंग कम्पनी लि०

यह कम्पनी भारतवर्षकी अपनी भाँतिकी प्रसिद्ध कम्पनियोंमें से है। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय बिड़ला हाउस चर्चगेट बम्बई में है।

कम्पनीका प्रबन्ध दी कॉटन एजेन्टस् लि० बम्बई करते हैं। इसके डाइरेक्ट श्री एस० जी० नेवटिया, (चेअरमैन) श्री एम० डी० सिंघी, श्री बी० डी० बिनानी, श्री एन० टी० शाह, श्री रसिकलाल मानिकलाल, श्री एम० एम० गोयनका तथा श्री बी० के० नेवटिया हैं।

प्रमण्डलकी अधिकृत पूँजी एक करोड़ रुपया है बिकी हुई तथा प्रदत्त पूँजी ३०,६७,००० रुपया है।

इस कम्पनी की दो मिलें हैं—प्रथम रोलिंग मिल (Rolling Mills) तथा द्वितीय स्मैल्टिंग, रिफाइनिंग ऐण्ड कास्टिंग वर्क्स (Smelting, Refiing & Casting Works)।

(अ) रोलिंग मिल्सः—वह मिल मई सन् १९४९ ई० में शुरु हुई। संयुक्त राष्ट्र अमेरिकासे पूर्ण व्यवस्थित मशीनें मँगाई गयी। यह भारतवर्षकी आधुनिक तथा सबसे बड़ी Non ferrous Rolling Factory है। यह मिल बम्बई-आगरा रोड पर भान्डुप नामक स्थान पर लगभग १८ एकड़ भूमिके घेरेमें बनी हुई है। यहाँ पर ताँबा और पीतलको वर्तमान वैज्ञानिक ढँगोंसे पिघलाकर पत्तरोंमें परिणित किया जाता है जो इस देशमें बहुत प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। पत्तरोंके बननेपर उनकी भौतिक एवं रसायनिक तरीकोंसे जाँचकी जाती है जिनके लिए भी यहाँपर अच्छा प्रबन्ध हैं। फैक्टरीके मजदूरों तथा कर्मचारियोंके लिए सुन्दर आरामदायक मकानोंकी कोलोनी बसी हुई है। आफिसरोंके लिए अच्छे बँगलोंका प्रबन्ध है। सबके लिए आमोद प्रमोद की भी सुव्यवस्था है।

(ब) स्मेल्टिंग, रिफाइनिंग एण्ड कास्टिंग वर्क्सः—यह कारखाना लगभग बीस वर्ष पूर्व स्थापित हुआ था। यह अपनी तरहका भारतका प्रथम तथा अच्छा कारखाना है। यह कारखाना बम्बई में १०१, सियनरोडमें है। यहाँ पर बड़े बड़े भट्टों के उपयोगसे भरत (Alloys) तैयार किये जाते हैं जो रेलों तथा कई फेक्टरियोंके काममें आते हैं। एक आधुनिक कारखानेमें मशीनोंके हिस्से भी ढाले जाते हैं।

इसकी एक शाखा कलकत्तामें १०२, नरकुलडंगा मेन रोड है।

इस कम्पनीकी एक सहायक कम्पनी दी मेटल सेल्स कारपोरेशन लि०, बम्बई है जिसकी सम्पूर्ण पूँजी इसी प्रमण्डलने दी है।

इस कारपोरेशनकी अधिकृत पूँजी दस लाख रुपये हैं। जारीकी हुई, बिकी हुई तथा प्रदत्त पूँजी दो लाख रुपये है।

इस कारपोरेशनके डाइरेक्टर श्री बी० के० नेवटिया, श्री बी० बाजोरिया और श्री एच० सी० गोयल हैं। यह कारपोरेशन कम्पनी द्वारा निर्मित पदार्थोंके बेचनेका काम करता है।

दी इंडियन प्लास्टिक लि०

आजकल प्लास्टिकका इतना उपयोग होने लगा है कि कुछ अर्थशास्त्रियोंने इस युगको ही "प्लास्टिक युग" के नामसे पुकारा है। खिलौने, बर्तन, फर्निचर, बिजलीका सामान आदि कई प्रकारकी वस्तुएँ प्लास्टिकसे बनती है। प्लास्टिकके सामान सुन्दर एवं सस्ते होते हैं इसलिए इनका प्रचलन बहुत बढ़ गया है। बिड़ला बंधु इंडियन प्लास्टिकस् लि० का सञ्चालन करते हैं।

इस कम्पनीकी स्थापना सन् १९४५ ई० में बम्बईमें हुई थी। इसका रजिस्टर्ड कार्यालय बिड़ला हाउस चर्च गेट बम्बईमें है। प्रधान कार्यालय पॉइजर ब्रिज, कान्दीवली, बम्बई में है।

कम्पनीकी अधिकृत पूँजी एक करोड़ रुपया है जो दस रुपयेके पाँच लाख साधारण शेअरों तथा सौ रुपयेके पचास हजार ५ प्रतिशत जमा होनेवाले शोध्य प्रिफेरेन्स शेअरोंमें विभक्त है। जारीकी हुई, बिकी हुई एवं प्रदत्त पूँजी ४६,६३,३७५ रु० है।

कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता हैं। श्रीलक्ष्मीनिवास बिड़ला, श्री गंगाप्रसाद बिड़ला, श्री एस० बी० दलाल एवं श्री के० जी० महेश्वरी इसके डाइरेक्टर हैं।

इसकी फेक्टरी पोइजर ब्रिज, कांदीवली, बम्बईमें है इमारत आधुनिक ढंग की है। यहाँ पर प्लास्टिकके खिलौने, बर्तन, फर्नीचर, बटन, कंघे, बिजलीके सामान अदि कई भाँति की आवश्यक वस्तुओं का निर्माण होता है। "झंकार" नामक रेडियोका भी यहींपर निर्माण होता है। सारी मशीनें विद्युतकी शक्तिसे चलाई जाती है। कई साँचे आदि भी यहींपर बनाये जाते हैं।

तुंगभद्रा इण्डस्ट्रीज लि०

इस कम्पनीकी स्थापना सन् १९४६ ई० में बम्बईमें हुई थी। कम्पनीका रजिस्टर्ड कार्यालय १ ए, वेन्सीटार्ट रो, कलकत्तामें है।

कम्पनीकी अधिकृत पूँजी एक करोड़ रुपया है जो दस रुपयेके दस लाख शेअरोंमें विभक्त है। जारीकी हुई पूँजी चालीस लाख रुपया हैं। बिकी हुई तथा प्रदत्त पूँजी ३०,५८,९५० रु० है जो दस रुपयेके ३,०५,८९५ साधारण शेअरोंमें बाँटी गयी है।

कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्त्ता दी कॉटन एजेण्ट्स लि०, बिड़ला हाउस चर्च गेट बम्बई है। श्री रामेश्वरदास बिड़ला (चेअरमैन), श्री रामदास किलाचन्द देवचन्द, श्री एस० के० कृष्णयाचन्द्र बहादुर, श्री जी० डी० सोमानी, तथा श्री गंगाप्रसाद बिड़ला इसके डाइरेक्टर हैं।

इस कम्पनीकी मिल मद्रास प्रेसीडेन्सीमें करनूल नामक स्थान पर है। यहाँ पर वनस्पति पदार्थ भी बनाये जाते हैं। मूंगफलीका जमाया हुआ 'तुषार' घी इस कम्पनीका बनाया हुआ मुख्य पदार्थ है।

जयश्री टी गार्डन्स लि०

चायका व्यवसाय भारतवर्षका एक मुख्य व्यवसाय है। संसारमें चाय पैदा करनेवाले देशोंमें भारतका महत्वपूर्ण स्थान है। आज भारतमें सैकड़ों चायके बगीचे हैं जिनमें आवश्यकतानुसार छोटे-छोटे कारखाने हैं। भारतवर्षकी चाय बहुत अधिक मात्रामें विदेशोंको निर्यात की जाती है। कई सम्मिलित पूँजी प्रमण्डल चायके बागोंका प्रबंध करते हैं। बिड़लाबंधु जयश्री टी० गार्डेन्स लि०का प्रबन्ध करते हैं।

इस कम्पनीकी स्थापना कलकत्तामें सन् १९४५ ई० में हुई थी। कम्पनीका रजिस्टर्ड कार्यालय ८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता है।

कम्पनीकी अधिकृत पूँजी १,५०,००,००० रु० है। यह पूँजी सौ रुपयेके ७५,००० तथा दस रुपयेके ७,५०,००० शेअरोंमें विभक्त है। कम्पनीकी बिकी हुई तथा प्रदत्त पूँजी ३६,०४,६०० रु० है जो ३,६०,४६० शेअरों पर दस रुपये प्रति शेअरकी दरसे प्राप्त हुई।

कम्पनीके प्रबन्ध अभिकर्त्ता मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि० ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता हैं। श्री कृष्ण कुमार बिड़ला, श्री डी० मॉरगन, श्री मंगतूराम जयपुरिया, श्री एम० एल० शाह, श्री टी० भास्करराव, श्री एन० सी० मेहता तथा श्री बसंतकुमार बिड़ला इसके डाइरेक्टर हैं।

कम्पनीकी सम्पत्ति पश्चिमी बंगाल, आसाम तथा कोयम्बटूरमें है। कम्पनी दक्षिण भारतके शौला-यर तथा कल्लायरके बगीचोंका प्रबन्ध करती है। उत्तर भारतमें लोहागढ़ तथा नहार हाबीके चाय बगीचे कम्पनीके अधीन हैं। सरकार द्वारा दिया गया क्षेत्र लगभग ५७६०-७४ एकड़ है। दार्जिलिंगमें रिशीहट टी कम्पनी लि० नामक एक सहायक कम्पनी भी है।

सन् १९५१ ई० में लगभग २,८१३,५ एकड़ भूमि पर खेती की गयी। कुल उत्पादन लगभग ३०,४१४ मन हुआ। इन बगीचोंमें औसतन प्रति एकड़ लगभग ११ मन चायकी पैदावार प्रतिवर्ष होती है।

इंडियन स्टार्च प्रोडेक्ट्स लि०

इसका रजिस्टर्ड कार्यालय ८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्तामें है। फेक्टरी रंगून (बर्मा) में थिंगनगुन (Thingangyun) नामक स्थान पर है। इसकी अधिकृत पूँजी पचास लाख रुपया है जो दस रुपयेके २,५०,००० साधारण शेअरों और सौ रुपयेके २५,००० प्रिफेरेन्स शेअरोंमें विभक्त है। प्रदत्त पूँजी ३,४८,१९० रु० हैं जो दस रुपयेके साधारण शेअरोंमें विभक्त है।

कम्पनीका प्रबन्ध मेसर्स हिन्दुस्तान इन्वेस्टमेंट कारपोरेशन लि०, ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता करते हैं। श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला, डा० सत्यचरन लॉ, श्री नवलचन्द टी० शाह और सूरजमल कारनानी इसके डाइरेक्टर हैं।

यहाँ पर माड़ी (Starch), ग्लूकोज (Glucose), डेक्स्ट्रोस (Dextose) तथा मका, चावल, गेहूँ, बीज आदि पदार्थोंसे तेल बनाया जाता है।

इन प्रधान संस्थाओं, प्रमण्डलों एवं मिलोंके अतिरिक्त कई अन्य छोटे-मोटे प्रमण्डल एवं संस्थाये बिड़ला ब्रदर्सके अधीन हैं जिनमें मुख्य इण्डियन टूल्स मैन्यूफैक्चरिंग लि० दी इंडियन शिपिंग कं० लि० कलकत्ता, दी हिन्दुस्तान गैस कं० लि० कलकत्ता, राँची जमीन्दारी लि० कलकत्ता, बंगाल स्टोर्स लि० कलकत्ता, जूट इन्वैस्टमेंट कं० लि० कलकत्ता, जयपुर माइनिंग कारपोरेशन लि० जयपुर, प्रीमियर स्टोर्स सप्लाई क० लि० कलकत्ता, प्रसाद होजियारी कं० लि० कलकत्ता, ईस्टर्न इक्विपमेंट ऐण्ड सेल्स लि० कलकत्ता, वेस्ट पंजाब फेक्टरीज, एक्सप्रेस डेयरी कं० लि० कलकत्ता आदि हैं।

बिड़ला ब्रदर्सके उच्च पदस्थ कार्याधिकारी

बिड़ला ब्रदर्सके संचालनकी सबसे बड़ी कुशलता इस बातमें है कि अपने विभिन्न प्रतिष्ठानोंके संचालनके लिये उन्होंने योग्य से योग्य और ईमानदार स्वदेशी व्यक्तियोंका चुनाव किया। सारे भारतवर्षमें प्रसारित इतने विशाल प्रतिष्ठानो का संचालन बिना योग्य और ईमानदार व्यक्तियोंके सहयोगके सम्भव नहीं हो सकता। ऐसे व्यक्तियों के चुनावमें की हुई छोटी सी भूल भी कभी कभी बहुत बड़े खतरेका कारण बन सकती है।

मगर हम देखते हैं कि बिड़ला बन्धुओंने अपने प्रतिष्ठानोंकी व्यवस्थाके लिए जिन व्यक्तियोंका चुनाव किया है उसमें कहीं भी भूल नजर नहीं आती। आज इस प्रतिष्ठानने अपने सभी उपप्रतिष्ठानोंके उच्च पदाधिकारियोंको सभी प्रकारके अधिकार खुले दिलसे दे रक्खे हैं, हजारो लाखों की लेवा बेचीका उन्हें अधिकार है और हजारो लाखोंके चेकों पर दस्तखत करनेकी भी उन्हें स्वतन्त्रता है। संचालकोंने पूरे विश्वासके साथ उन्हे पूरी व्यवस्था का भार दे रक्खा है और यही कारण है कि वे लोग भी पूरी मेहनत और ईमानदारी से सारा काम करते हैं और कहीं भी कोई खामी दिखलाई नहीं देती। जहां २ भी बिड़ला ब्रदर्सके प्रतिष्ठान नजर आवेंगे, व्यवस्थाकी दृष्टिसे सभी दूर प्रथम श्रेणीके प्रतिष्ठानोंमें उनकी गणना दिखाई देगी। नीचे हम बिड़ला ब्रदर्सके ऐसे ही कुछ उच्च पदाधिकारियोंका संक्षिप्त परिचय देते हैं।

स्व० बाबू देवीप्रसाद खेतान



स्व० बाबू देवी प्रसाद खेतान

बिड़ला ब्रदर्सकी उन्नतिमें सक्रिय सहयोग देने वालोंमें सबसे पहला नाम बाबू देवीप्रसाद खेतान का लिया जा सकता है।

सन् १९११ में बाबू देवी प्रसाद खेतान कलकत्ता हाईकोर्टके एटर्नी बने। यह वह समय था जब सारे मारवाड़ी समाजमें इने गिने ही ग्रेज्यूएट नजर आते थे। एटर्नी बननेके साथही सार्वजनिक जीवनमें भी बाबू देवी प्रसाद खेतान ने प्रवेश किया और आप मारवाड़ी एसो॰सिएसन और विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालयका काम देखने लगे।

सन् १९१९ में आपकी प्रतिभा और विलक्षण कार्यशक्तिको देखकर बाबू घनश्यामदास बिड़लाने आपको बिड़ला ब्रदर्स में ले लिया। इसी समयसे आप कानूनकी लाइनसे निकलकर व्यापारिक जगत्में चमकने लगे।

उसके पश्चात् उनके जीवन पर्यन्त व्यापारिक जगत्में जितनी भी महत्वपूर्ण घटनाएँ हुई सबसे आपका किसी न किसी रूप में सम्बन्धमें रहा। यों कहा जा सकता है कि भारतके अर्थशास्त्रीय और व्यापारिक विकास के साथ साथ आपका जीवन समानान्तर रेखापर चलता रहा।

उन दिनों देशके प्रसिद्ध व्यवसायी और उद्योगपति सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदासके साथ एक रेलवे कमीशनके सिलसिलेमें आपकी घनिष्ट मैत्री होगई और तबसे सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, बाबू घनश्यामदास बिड़ला और बाबू देवी प्रसाद खेतान तीनों व्यक्ति मिलकर यहांके व्यापारी समाज और देश हित के काममें अपनी पूरी २ शक्ति लगाने लगे।

सन् १९२१ के प्रारम्भ में आप कलकत्ता कारपोरेशनके कमिश्नर निर्वाचित हुए और १९२२ के प्रारम्भमें आप बङ्गाल लेजिस्लेटिव कौन्सिलके मेम्बर चुने गये। सन् १९२४ के प्रारम्भमें आप दूसरी बार बंगाल लेजिस्लेटिव कौन्सिलके मेम्बर चुने गये।

इन्हीं दिनों देशमें सिक्केके एक्सचेंजके प्रश्नने बहुत जोर पकड़ा। गवर्नमेण्ट रुपयेका भाव बीस पेन्स करना चाहती थी और देशका राष्ट्रीय समुदाय उसका मूल्य सोलह पेन्स रखना चाहता था। इसी आन्दोलनमें बाबू देवीप्रसाद खेताननें प्रमुख भाग लिया था अन्तमें गवर्नमेंटने अठारह पेन्सका भाव स्थिर किया। इस प्रश्नका अनुसन्धान करनेके लिए इण्डियन करेन्सी कमीशनके नामसे एक कमीशन बैठाया गया था इस कमीशनके साथ जब सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास कलकत्ता आये तब उन्होंने तथा बाबू घनश्यामदास बिड़ला और बाबू देवी प्रसाद खेतानने मिलकर सोचा कि भारतवर्षमें जितने भ व्यापारिक चेम्बर हैं उनको मिलाकर उनकी एक सेण्ट्रल बॉडी कायमकी जाय, जिसके सभी चेम्बर मेम्बर हों इस विचारके फल स्वरूप आप तीनों ही व्यक्तियोंके उद्योगसे "फैडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स" की स्थापना हुई। यह फैडरेशन भारतीय व्यापारी समाज की मुख्य संस्था है और समग्र भारतवर्ष के छप्पन से अधिक चेम्बर इसके मेम्बर हैं

सन् १९२५ में आपने बाबू घनश्यामदास बिड़लाके साथ मिलकर "इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स" की कलकत्तामें स्थापना की। यह संस्था इस समय भारतकी तमाम व्यापारिक संस्थाओंमें अग्रणी मानी जाती है। सन् १९२८ और ३० में बाबू देवी प्रसाद खेतान इस चेम्बरके प्रेसिडेण्ट चुने गये।

सन् १९२८ में जेनेवा की इण्टर नेशनल लेबर कान्फ्रेन्समें भारतीय व्यापारियोंकी तरफसे बाबू देवी प्रसाद खेतान प्रतिनिधि बनकर गये। वहांपर ब्रुसेलसमें "इण्टर नेशनल आर्गेनिजेशन आफ इण्डस्ट्रियल एम्प्लायर्स" नामक एक संस्था है उसमें अबतक भारवर्ष की ओरसे अंग्रेज प्रतिनिधि ही जाता था मगर बाबू देवी प्रसाद खेतानके प्रयत्नसे इस संस्थाकी सदस्य भारतकी "फैडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज" बनाई गई। इसी प्रकार पेरिस इण्टर नेशनल चेम्बर ऑफ कॉमर्समें भारतवर्ष की ओरसे अंग्रेज लोग ही प्रतिनिधित्व करते थे। वहां पर भी आपने अंग्रेज प्रतिनिधित्वको हटाया और फेड-

रेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्सके सहयोगसे उस चेम्बरकी शाखा भारतवर्षमें खुलवाई जिसका नाम इण्डियन नेशनल कमेटी है।

सन् १६२८ से पहले इण्टर नेशनल लेबर आर्गेनिजेशनकी गवर्निंग बॉडीमें कोई हिन्दुस्तानी शामिल नहीं किया जाता था। इसके लिए भी आपने प्रयत्न किया जिसके फल स्वरूप सन् १६२६ में भारतवर्ष तथा ब्रिटिश साम्राज्यके उपनिवेशोंके व्यापारी समाजकी ओरसे उपरोक्त संस्थाकी गवर्निंग बॉडीमें बाबू देवी प्रसाद खेतान प्रतिनिधि बनाकर भेजे गये।

इन सब बातोंका संगठित परिणाम यह हुआ कि सन् १६२८ के पहले अन्तर्राष्ट्रीय सर्कलमें जहां यूरोपियन लोग भारतकी ओरसे प्रतिनिधि बनकर जाया करते थे वहां उसके पश्चात् सब जगह भारतवासी जाने लगे।

सन् १६३२ में गवर्नमेंट और शक्कर मिलमालिकोंके बीच कई पेचीदा प्रश्न उपस्थित हुए, जिनको हल करनेके लिए गवर्नमेंटने कई कान्फ्रेन्सेस बुलवाईं, इन सबके अन्दर शक्कर उद्योगकी तरफसे बाबू देवीप्रसाद खेतान प्रतिनिधि होकर गये। उन दिनों शक्करका किराया बहुत बढ़ा हुआ था। बाबू देवी प्रसाद खेतानने लगातार छ मास तक परिश्रम करके इस किरायेको कम करवाया जिसके फल स्वरूप शक्कर उद्योगको प्रतिवर्ष ३० लाख रुपयेकी बचत होने लगी।

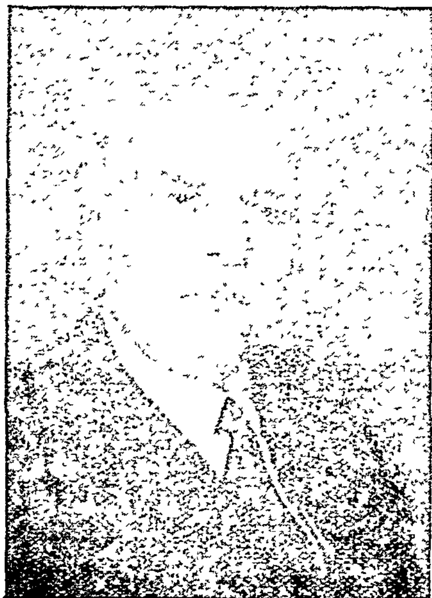
सन् १६३४ में बाबू देवीप्रसाद खेतान बंगाल मिल ऑनर्स एसोसिएशनके सभापति चुने गये। सन् १६३६ के अप्रैलमें फैडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स और इण्टर नेशनल चेम्बर ऑफ कामर्सकी इण्डियन नेशनल कमेटीके आप सभापति चुने गये।

बिड़ला ब्रदर्सके सहयोगसे आपको हर एक क्षेत्रमें आगे बढ़नेके साधन प्राप्त हुए और आपके सहयोगसे बिड़ला ब्रदर्सकी नींव भी मजबूत होती गई।

अपनी मृत्युके समय बाबू देवी प्रसाद खेतान जितनी व्यापारिक संस्थाओंके सभापति थे वैसा अवसर तबतक शायद भारतके किसी भी व्यापारीको प्राप्त नहीं हुआ था। उन दिनों आप (१) फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स की इण्डियन नेशनल कमेटी, (३) बंगाल मिल आनर्स एसोसिएशन (४) इण्डियन इन्स्युरेंस कम्पनीज एसोशिएशन (५) बंगाल फ्लाइंग क्लब और (६) रघुमल चेरिटी ट्रस्टके सभापति थे।

सर एल० पी० मिश्रा

सर एल. पी. मिश्रा बिड़ला ब्रदर्स द्वारा संचालित हिन्दुस्तान मोटर्स लि० के जनरल मैनेजर हैं। सन् १८८८ में आपका जन्म हुआ। थामसन इञ्जीनियरिंग कालेजमें अपनी शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् सन् १९११ में आप रेलवे सर्विस में प्रविष्ट हुए। अपनी प्रतिभा और विचक्षण कार्यशक्तिके


सर एल० पी० मिश्रा

कारण सन् १९२८ में आप एक्जीक्यूटिव इञ्जीनियरके पद पर पहुँच गये। सन् १९२४ में आप बड़ौदा स्टेट रेलवे के डिप्टी मैनेजर तथा चीफ इञ्जीनियर नियुक्त किये गये। सन् १९२८ में आप वापस ईस्ट इण्डियन रेलवेमें आ गये। १९३२ से ३५ तक आप ईस्ट इण्डिया कम्पनीके डिप्टी मैनेजरके पद पर नियुक्त रहे। १९३८--३६ में आप फैडरल पब्लिक सर्विस कमीशनके सदस्य बने तथा १९३९ में बी० एण्ड एन० रेलवेके जनरल मैनेजर नियुक्त हुए और १९४२ तक इस पद पर बने रहे। १९४५ के जून महीने में आप रेलवेके चीफ कमिश्नर नियुक्त हुए और उसी अक्टूबर महीनेमें रिटायर हुए। १९३९ से ४२ तक आप कलकत्ताके पोर्ट कमिश्नर भी रहे। आप इन्स्टीट्यूशन आफ वेडिंग (लंदन) इण्डिया ब्राञ्च, इन्स्टीट्यूशन आफ इञ्जीनियर्स, एडहक कमेटी आफ नेशन लाइज्ड रोड यू० पी० के अध्यक्ष भी रहे हैं। अपनी प्रतिभा कार्य विलक्षणता और व्यक्तित्वके बलसे आपने इतना उन्नतिपूर्ण जीवन व्यतीत किया है। रिटायर होनेके पश्चात् आपने बिड़ला ब्रदर्स प्रतिष्ठानमें प्रवेश किया और अभी तक उसीमें काम कर रहे हैं।

श्री डी० पी० मण्डेलिया

अपनी व्यवस्थापिका और संगठन शक्तिके लिए श्री डी० पी० मण्डेलिया भारत वर्षके समस्त कपड़ा मिल उद्योगके क्षेत्रमें प्रसिद्ध हैं। आप भी बिड़ला ब्रदर्सके अत्यन्त विश्वसनीय और कर्मठ पदाधिकारियोंमें से एक है। आप बिड़ला ब्रदर्स की विशाल कपड़ा मिल दी जयाजीराव काटन मिल्सके जनरल मैनेजर हैं। इस मिलके आसपास बसाये हुए बिड़ला नगरकी बसावट और मजदूरों तथा कर्मचारियोंके लिए बनाये हुए भिन्न २ प्रकारके सुख सुविधा के साधनों को देखकर दङ्ग रह जाना पड़ता है। यह औद्योगिक नगर आपकी संगठन शक्तिका एक उत्कृष्ट नमूना पेश करता है। श्री मण्डेलिया नागदा के रेयन मिल्सके भी डायरेक्टर हैं तथा वहाँ का प्रबन्ध संचालन भी आप ही की देख रेखमें होता है।

श्री बृज मोहन बागड़ी–जे० पी, इन्चार्ज—केशोराम काटन मिल्स लि०

श्रीब्रजमोहन बागड़ी का जन्म ३ अक्टूबर सन् १९०४ को बीकानेर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्रीमथुरा दास बागड़ी है। बिड़ला बन्धुओं द्वारा सञ्चालित केशोराम काटन मिल में आपने

सन् १९२९ में कार्य करना प्रारम्भ किया। अपूर्व प्रतिभा, विलक्षण कार्यदक्षता, ईमानदारी एवं अथक परिश्रम के साथ कार्य संलग्न हो थोड़े समय ही में आप सञ्चालक वर्ग के स्नेह भाजन वन गये। फलस्वरूप जनरल मैनेजर, सेक्रेटरी के पद पर क्रमशः पदोन्नति प्राप्त करते हुए वर्तमान समय में डायरेक्टर इन्चार्ज रूपमें कार्य संलग्न है। आपके इस मिल में जाने के पूर्व यहाँ की जो स्थिति थी उसमें आमूल परिवर्तन हो गया है। कर्मचारियों की संख्या, उत्पादन वृद्धि आदि में पहले की अपेक्षा आज कई गुना वृद्धि हो गई है। मिल की रूपरेखा ही आज नवीनता के आवरण से ढक गई है। इधर मिल के विभिन्न विभागों का कार्य भी पूर्ववत अपने साधारण रूप में चालू रहा और दूसरी तरफ उसका कलेवर भी परिवर्तित होता रहा। आज मिल की गणना देश की प्रमुख सूती मिलों मे हो रही है। इसका श्रेय श्री वागड़ी जी को दिया जासकता है।

केशोराम काटन मिल के अतिरिक्त भी आप बिड़ला बन्धुओं द्वारा सञ्चालित भारत कला भवन, हिन्दुस्तान गैस फैक्टरी आदि के भी डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त आप बंगाल मिल ओनर्स एसोसिएशन के दो बार चेयरमैन रह चुके है। आप कतिपय सरकारी या गैर सरकारी संस्थाओं के भी सम्मान नीय सदस्य रह चुके हैं एवं कुछ के अब भी हैं। कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेट जे० पी, एवं कलकत्ता कारपोरेशन के एशोसियेट मेम्बर भी है। इसके अतिरिक्त भी बहुत सी स्थानीय, प्रान्तीय एवं अन्तर्देशीय सरकारी, गैरसरकारी संस्थाओं से भी आपका सम्बन्ध रहा है एवं आज भी है। यूरोपके विभिन्न देशों अमेरिका एवं जापान आदि औद्योगिक प्रधान देशों मे भ्रमण कर वहां के आधुनिक नवीनतम यन्त्रो युक्त उद्योगालयों का निरीक्षण कर आप वहां से लौटे हैं और उन अनुभवों का यहाँ भी उपयोग कर रहे हैं।



श्री बृजमोहन जी वागड़ी जे० पी०

स्व० श्री ज्वाला प्रसाद कानोडिया

श्री ज्वाला प्रसाद कानोड़िया का जन्म सन् १८८४ ई० में हुआ। आप की शिक्षा दीक्षा हवड़ा में हुई। अपने जीवन के प्रभात काल में आप ने योरप से वस्त्र–आयात का व्यवसाय आरम्भ किया। सन् १९११ ई० मे आप बिड़ला प्रतिष्ठान के गनी विभाग में काम करने लगे। वाल्यकाल से ही जन

कल्याण की भावना आप की रगों में थी। अतएव मानव के प्रति अपने कर्तव्यों को आप ने शीघ्र ही पहिचान लिया और तन मन से आप लोक सेवा में रत हो गये। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के संस्थापक थे और हिन्दू सभा, वैश्य सभा, मारवाड़ी सेनेटोरियम, हिन्दू आफेनेज (अनाथालय), हिन्दू इन्डस्ट्रियल स्कूल गोविन्द भवन, गीता प्रेस, सन्यास आश्रम हवड़ा, गोरक्षिणी सभा प्रभृति कतिपय सार्वजनिक तथा निजी संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारी रहे। धार्मिक सामाजिक तथा अन्य मानवतापूर्ण कार्यों के करने के अतिरिक्त आप क्रान्तिकारी दल के एक प्रमुख नेता थे। उस समय क्रान्तिकारी लोग अपने साहस पूर्ण कार्यों द्वारा भारतवर्ष से ब्रिटिश साम्राज्य को उखाड़ फेंकने के प्रयत्नमें लगे थे। आपने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और प्रथम महायुद्धके पश्चात् सन् १९२६ ई० में ब्रिटिश सरकार ने शान्तिभंग के अभियोग में आप को बन्दी कर लिया। कुछ काल तक बन्दी गृह में रख कर सरकारी आज्ञा से आपको कई वर्षों के लिए बंगाल से बाहर निकाल दिया गया तथा गोरखपुर में ही आप का निवास स्थान सीमित कर दिया गया। आप का कार्यक्षेत्र कलकत्ता तक ही सीमित न था वरन् अकाल, बाढ़ तथा भूकम्प आदि दैवी प्रकोपों से पीड़ित जनता की सेवा तथा सहायता में संलग्न सभी संस्थाओं को आपका बहुमूल्य सहयोग एवं साहाय्य प्राप्त था। सन् १९३५ ई० में बिहार प्रदेश में भूकम्प के प्रकोप से धन जन की अभूतपूर्व क्षति हुई थी। उस समय मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी उन असहाय लोगों के पुनर्वास एवं प्रतिदिन के खाने पीने की व्यवस्था कर रही थी। तब आपने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की ओर से इस कार्य में प्रमुख भाग लिया था।



श्री ज्वाला प्रसाद कानोडिया

सन् १९२६ ई० में मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स ने रूबी जनरल इन्स्योरेन्स कम्पनी लि० की स्थापना की और श्री ज्वालाप्रसाद कानोडिया उसके सर्वोच्च पदाधिकारी बनाये गये। कुछ समयोपरान्त आप इस प्रतिष्ठान के प्रधान व्यवस्थापक (जनरल मैनेजर) के पद पर नियुक्त किये गये। आप के सुयोग्य संचालन, अथक परिश्रम एवं अविरल चेष्टाओं के फलस्वरुप रूबी ने अवर्णनीय सफलता प्राप्त की है तथा अति न्यून काल में ही जनरल इन्स्योरेन्स के व्यवसाय में भारत की द्वितीय सबसे बड़ी कम्पनी हो गयी है। भारतवर्ष के विभिन्न भागों के अतिरिक्त इसका कार्य क्षेत्र अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में भी विस्तृत है। वृद्धावस्था तथा अस्वस्थता के कारण आप ने सक्रिय कार्य्य से अवकाश प्राप्त करने का निश्चय कर लिया था। आप

अभी अवकाश पर थे कि २४ जुलाई सन् १९५५ ई० को अपने निवास स्थान (१३३ ग्रैन्ड ट्रंक रोड, शिवपुर, हवड़ा) पर आप का देहान्त हो गया।

श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल

बिड़ला ब्रादर्सके पुराने और विश्वसनीय कार्याधिकारियों में श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। श्री धाड़ीवालका जन्म सन् १८९६ में अजमेरमें हुआ, १९१७ में आप लॉ कालेज इलाहाबादसे लॉ-ग्रेजुएट हुये। १९२० में आपने बिड़ला ब्रदर्स बम्बईमें अपनी सर्विस प्रारम्भ की। सन् १९२४ में आपकी बदली कलकत्ता हुई और इन्स्यूरेन्स तथा जूट एक्सपोर्ट डिपार्टमैंट आपके जिम्मे किये गये।

सन् १९३० में आप ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूज कम्पनीके डाइरेक्टर हुए और इसी वर्ष आपने इंग्लैंडकी यात्रा की। इसके पश्चात् १९३४ में आप अपर गैंजेज सूगर मिलसके सेक्रेटरी बनाकर सिंहोरा भेजे गये। जहाँ आप १९४२ तक काम करते रहे। इसके पश्चात् सन् १९४२ से ४४ तक आप बिड़ला ब्रदर्सकी समस्त शूगर मिलोंके इनचार्ज बनकर देहलीमें रहे।

सन् १९४४ से आप हिन्दुस्तान मोटर्स लि० के सेक्रेटरी हैं। आप बिड़ला बन्धुओंके अत्यन्त विश्वसनीय पदाधिकारियोंमें से एक हैं। कई कम्पनी के आप डाइरेक्टर भी हैं।

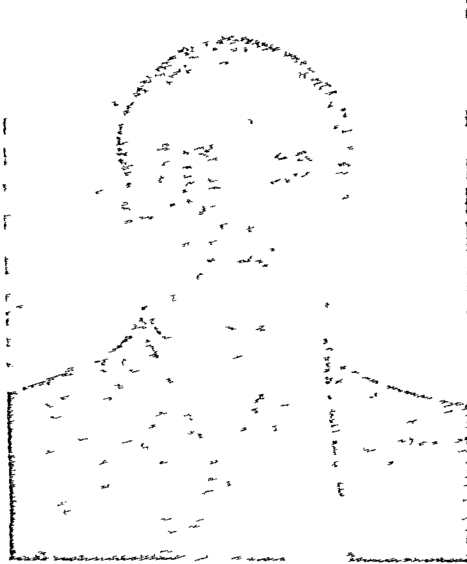
श्री ताराचन्द्र साबू



श्री ताराचन्द साबू

श्री ताराचन्द्र साबूका जन्म साही (पञ्जाब) ग्राममें सन् १९०७ में हुआ। आपने इण्टरमीडिएट परीक्षा पास कर युवावस्था में ही मेसर्स बिड़ला ब्रदर्समें प्रवेश किया। और २८ वर्षोंसे यहाँकी जूट इण्डस्ट्रीज से और पांच वर्षों से लिनोलियम इण्डस्ट्रीजसे सम्बन्धित हैं। इस समय काफी दिनों से आप बिड़ला ब्रदर्सकी जूट मिलोंके सेक्रेटरी हैं। आप सूरा जूट मिल कम्पनी लि०, इण्डिया लिनोलियम लि०, इत्यादि कम्पनियों के डायरेक्टर हैं। इसी प्रकार इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन और इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स की कई महत्वपूर्ण सब कमेटियों के मेम्बर हैं। गत दो वर्षोंसे आप रोटरी क्लब के भी सदस्य हैं।

श्री रामलाल राजगढ़िया

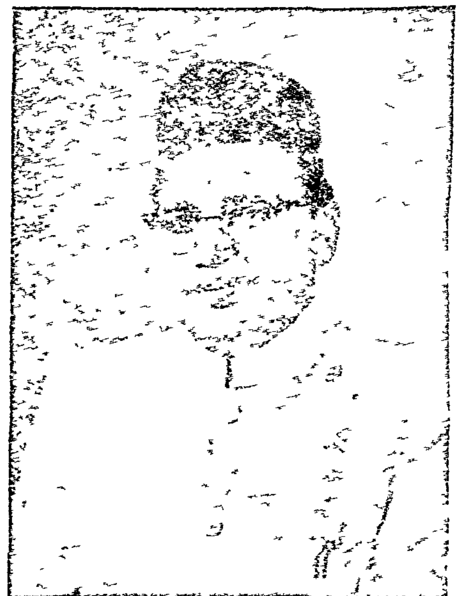

श्री रामलालजी राजगढ़िया

श्री रामलाल राजगढ़िया बिड़ला ब्रदर्स के विश्वस्त उच्च पदाधिकारियोंमें एक प्रमुख स्थान रखते हैं। आपका जन्म सन् १९१३ में सादुलपुर बीकानेर में हुआ। आरम्भिक शिक्षा पिलानी में प्राप्त की। तत्पश्चात बिड़ला काटन मिल्स, देहली में औद्योगिक योग्यता प्राप्तकी। फिर पश्चिम पञ्जाबकी सबसे बड़ी कपड़े की मिल सतलज काटन मिल्स लि० ओकाड़ाके जनरल मैनेजर नियुक्त हुए। सन् १९४६ से आप टैक्सटाईल मशीनरी कारपोरेशन लि०, —टेक्समाको—के चीफ आफिसरके पद पर आसीन हैं। आपके सुयोग्य मैनेजमेन्टमें टैक्समाक के निर्मित रिंग, स्पिनिंग फ्रेम, और उसके हिस्से अपने गुण और टिकाऊपन के लिए सारे भारतवर्ष तथा पाकिस्तानमें प्रख्यात हैं। इस कारखानेमें भारतीयो रेलोंके लिए लोको कायलरस, माल गाड़ियां, पेट्रोल टैंक तथा अनेक भारी-भारी इञ्जीनियरीकी विशालकाय वस्तुओं के निर्माणका आयोजन किया।

आपने यूरोप, और मध्य पूर्व आदि देशों की यात्रा की है और उत्पादन विषयक विकाशका आधुनिकतम ज्ञान प्राप्त किया है। आप बहुतसे व्यवसायिक संगठनों और क्लबों के सदस्य हैं।

श्री माखनलाल बागड़ोदिया

आप स्वर्गीय श्री बिलासराय बागड़ोदिया के कनिष्ठ पुत्र हैं। आपका जन्म सन् १९१२ में मुकुन्दगढ़, जिला जयपुर में हुआ। मुकुन्दगढ़ से मैट्रिकुलेशन पास करने के पश्चात् सन् १९२९ में आप कलकत्ता आये और कुछ समय तक अपना व्यापार करते रहे। सन् १९३५ मे विख्यात औद्योगिक फर्म बिड़ला ब्रदर्स के अधीनस्थ केशोराम काटन मिल्स लिमिटेड में आपने अपना प्रगतिशील


श्री माखन लाल बागड़ोदिया

जीवन प्रारम्भ किया। अपनी प्रतिभा, परिश्रम व विलक्षण बुद्धि के कारण इस समय आप केशोराम काटन मिल्स लिमिटेड, क्राफ्ट प्रोडक्ट्स लि०, एक्सप्रेस डेयरी कं० लि०, तथा अष्टिषिहाट टी कं० लि० के डायरेक्टर हैं तथा बंगाल रोइंग क्लब, हिन्दुस्तान क्लब तथा कलकत्ता क्लब आदि संस्थाओं के आप वर्षों से एक उत्साही सदस्य हैं।

इण्डियन चेम्बर आफ् कामर्स, कलकत्ता के कार्यों में आप बहुत दिलचस्पी लेते हैं और चेम्बर की कई उप-समितियों के सदस्य हैं। आप बिड़ला क्लब के सभापति भी रह चुके हैं।

श्री वी० के० सितलवाड़

भारत वर्ष के बीमा उद्योग के क्षेत्र में श्री वी० के० सितलवाड़ एक उच्चकोटि के बीमा-विशेषज्ञ माने जाते हैं आपका जन्म सन् १८६७ में हुआ।

सन् १६२० में आप ने बम्बई में मेसर्स एम-कानजी एण्ड कम्पनी में जो कि उस समय मैन्यूफैक्चरर्स लाईफ कम्पनी कनाडा की भारत वर्ष के लिए जनरल एजण्ट थी और "यूनिवर्सल कम्पनी" की मैनेजिंग एजण्ट थी।

सन् १९२६ में मि० सितलवाड़ को मेसर्स–एम कानजी एण्ड कम्पनी में मैन्यूफैक्चरर्स लाईफ के जीवन-बीमा विभाग का पूरा चार्ज प्राप्त हो गया।

सन् १९३० के जून में मैन्यू फैक्चरर्स लाईफ के कनाडा हेड ऑफिस में ट्रेनिंग प्राप्त करने के लिए श्री सितल वाड़ कनाडा गये और वहाँ एक साल तक इन्स्युरेंस बिजोनेस का ट्रेनिंग प्राप्त किया।

सन् १६३१ में आपने न्यूयार्क युनिवर्सिटी से सेल्स मेनशिप का डिप्लोमा प्राप्त किया।

जनवरी १६३२ में श्री सितलवाड़ वापस भारतवर्ष आये और फिरसे मेसर्स कानजी एण्ड कम्पनीमें "मैन्युफैक्चरर्स लाईफ" और "यूनिवर्सल" का चार्ज ग्रहण किया। सन् १९३६ में आप यूनिवर्सल के जनरल मैनेजर बनाये गये।

सन् १९३६ में आपने रूबी जनरल इन्स्युरेंस कम्पनी में बम्बई डिवीजन के जनरल मैनेजर के रूप में प्रवेश किया।

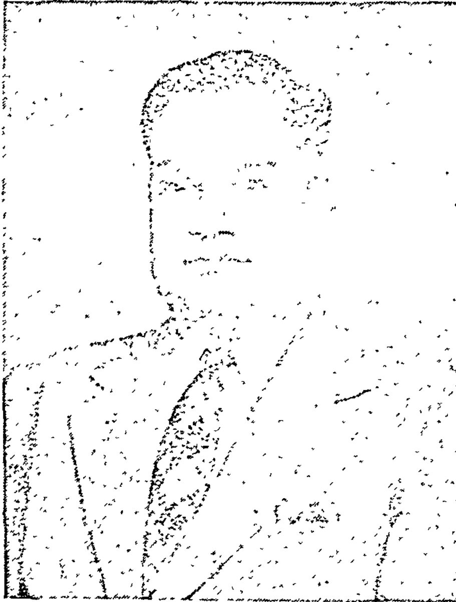
सन् १६५४ के सितम्बर में आप रुबी के जनरल मैनेजर बना दिये गये।



श्री सितल वाड़

इस प्रकार श्री सितल वाड़ अपनी व्यक्तिगत प्रतिभा विलक्षण बुद्धि और अद्भुत कार्य-क्षमता के कारण जीवन में उत्तरोत्तर उन्नति करते जा रहे हैं। सन् १६५१-५२ में आप इण्डियन इन्स्युरेंस कम्पनिज

एसोशिएशन के चेअरमेन चुने गये। सन् १९५१ से आप टैरिफ कमेटी जनरल इन्स्युरेंस कौन्सिल ऑफ इन्स्युरेंस एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के चेअरमेन पदपर आसीन हैं।



श्री एस० एल० झुनझुनुवाला

श्री कानसिंह बोलिया

श्री कानसिंह बोलिया बिड़ला ब्रदर्स के पुराने और विश्वसनीय कार्यकर्ता हैं। आप न्यूएशियाटिक इन्स्युरेंस कम्पनी के चीफ एकाउन्टेण्ट हैं। हाल ही में आप उपरोक्त कम्पनी के सेक्रेटरी बना दिये गये हैं।

श्री एस० एल० झुनझुन वाला

हिन्दुस्तान मोटर्स लि० के सेल्स विभाग के अधिकारी श्री एस० एल० झुनझुनवाला बिड़ला ब्रदर्स के विश्वसनीय और सक्रिय अधिकारियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आप हिन्दुस्तान मोटर्स के विक्रय और प्रचार विभाग का कार्य्य बड़ी योग्यता से सम्हाल रहे हैं।

श्री आर० डी० पेरीवाल

श्री आर० डी० पेरीवाल सन् १९२० से बिड़ला ब्रदर्स में काम कर रहे हैं। आपकी सेवाओं का प्रारम्भ सबसे पहिले बिड़ला जूट मिल्स में हुआ। उसके पश्चात् बिड़ला काटन मिल्स, सतलज काटन मिल्स, ओरियण्ट पेपर मिल्स, बिड़ला सूगर फैक्टरीज तथा बिड़ला लेबरेटरीज में आपने अच्छे पदोंपर काम किया। इस समय आप नेशनल बेरिंग कम्पनी जयपुर के जनरल मैनेजर हैं।

राजस्थान के सार्वजनिक क्षेत्र में आपकी सेवाएं मूल्यवान् हैं। आप जयपुर चेम्बर ऑफ कामर्स के प्रेसीडेण्ट, राजस्थान चेम्बर आफ कामर्स के वाइस प्रेसीडेण्ट तथा राजस्थान फ्लाइंग क्लब, इण्डस्ट्रीयल फायनेन्स कारपोरेशन, के मेम्बर हैं।



श्री आर० डी० पेरीवाल

स्व० श्री शिवसिंह कोठारी

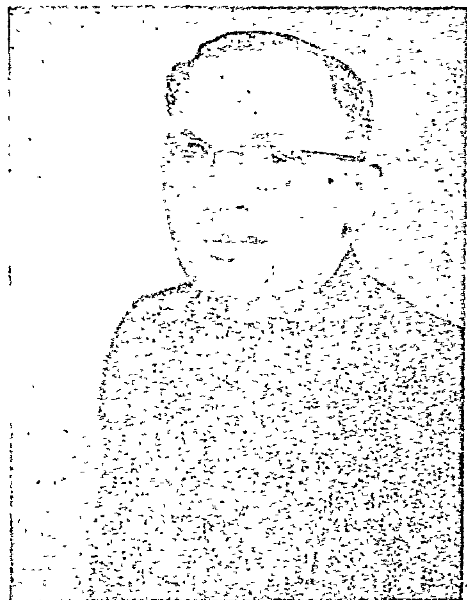
स्व० श्री शिवसिंह कोठारी भी विड़ला ब्रदर्स के विश्वास पात्र, कुशल और कर्मठ कार्याधिकारियों में से एक थे। श्री कोठारी का जन्म सन् १९०२ में हुआ था और बी० काम० की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् १९२५ में आपने बिड़ला ब्रदर्स में प्रवेश किया। रूबी जनरल इन्स्युरेंस कम्पनी के उत्थान में आपकी सेवाएँ बहुत महत्वपूर्ण रहीं। सिद्धौलिया शूगर मिल्स की व्यवस्था भी आपने कुछ समय तक की थी। खेद है कि आपका कम उम्र में ही स्वर्गवास हो गया।



स्व० श्री शिव सिंह कोठारी

श्री मुरलीधर डालमियां

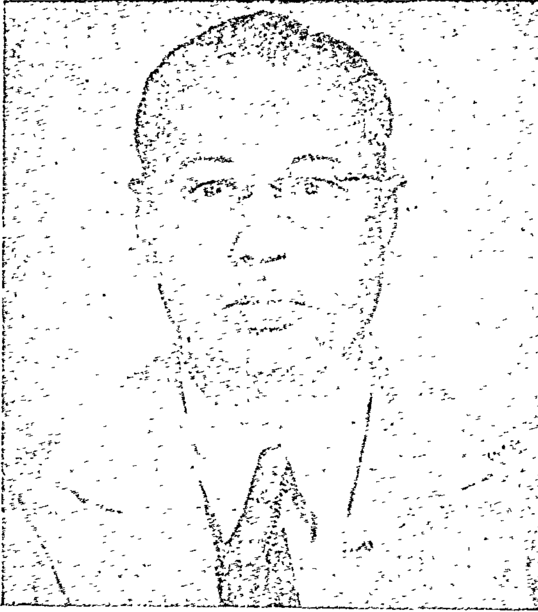
श्री मुरलीधर डालमिया का जन्म संवत् १९६५ में हुआ। आप सूरज गढ़ (राजस्थान) के मूल निवासी हैं। सन् १९२१ से बिड़ला ब्रदर्श में आपने अपनी सेवाएँ प्रारम्भ की। इस समय आप बिड़ला कॉटन मिल्स देहली और टी० आई० टी० भिवानी के जनरल सेक्रेटरी हैं।



श्री मुरलीधर डालमिया देहली

श्रीराधाकृष्ण छावछरिया

आप नवलगढ़ (राजस्थान) निवासी हैं। आपका जन्म सन् १६०२ में हुआ। श्रीनवलगढ़ विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर सन् १९१७ में आपने विरला ब्रादर्स लिमिटेड में प्रवेश किया। विभिन्न विभागों में सुचारु रूपसे काम करते हुए आप इस समय विरला जूट मिल तथा सूरा जूट मिल के सेल्स मैनेजर हैं। आप हिन्दुस्थान इनवेस्टमेन कारपोरेशन लिमिटेड के मैनेजिंग डाईरेक्टर तथा



श्रीराधाकृष्ण छावछरिया

एक्सप्रेस डेरी लिमिटेड, प्रीमियर स्टोर्स एण्ड सप्लाइज़ कम्पनी लिमिटेड, जूट, इन्वेस्टमेन्ट लिमिटेड, महावीर कामर्शियल कम्पनी लिमिटेड, ग्वालियर वेविंग कम्पनी लिमिटेड, पंजाब प्रॉडक्ट्स एण्ड इन्वेस्टमेण्ट कम्पनी लिमिटेड, दुर्गापुर आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड और आसाम जूट सप्लाई कम्पनी के डाइरेक्टर हैं।

श्री एस. एन. हाड़ा

शिक्षा समाप्त करने के तुरन्त बाद से अब तक श्री एस० एन० हाड़ा बिड़ला बन्धुओं की सेवा में हैं। आपने अपना जीवन एक छोटे से पद से प्रारम्भ किया था। आप पहले कॉटन फैक्ट्री, आयल मिल्स तथा बॉबिन फैक्टरी वगैरह का काम देखते थे। तत्पश्चात् आप बिड़ला बन्धुओं की न्यू स्वदेशी मिल्स आफ अहमदाबाद लिमिटेड में फैक्ट्री मैनेजर की हैसियत से आये। वहां आप पिछले बारह वर्ष से अपनी विलक्षण प्रतिभा तथा कार्यशक्ति का परिचय दे रहे हैं। आपका स्वभाव बड़ा ही मिलनसार तथा हास्यप्रधान है। आपकी सुयोग्य व्यवस्था तथा प्रेम ने कारीगरों को, अपने वशीभूत कर लिया है। अपनी बुद्धिमत्ता तथा व्यवहार कुशलता के कारण आप उक्त मिल के जनरल-मैनेजर के उच्च पद पर आसीन हुए। इसके पश्चात् आप मिलके डाइरेक्टर बने। आजकल आप इस मिलके डाइरेक्टर तथा जनरल मैनेजर हैं।

अहमदाबाद के सार्वजनिक क्षेत्रमें आपकी सेवाएं बहुमूल्य हैं। आप अनेक संस्थाओं के सदस्य हैं जिनमें निम्न लिखित मुख्य हैं— (१) अहमदाबाद मिल ओनर्स एसोसिएशन की मैनेजिंग कमेटी, (२) अहमदाबाद मिलओनर्स एसोसिएशन का आर्बिट्रेशन बोर्ड,



श्री एस. एन. हाड़ा

(३) अहमदाबाद टैक्सटाइल इण्डस्ट्रीज रिसर्च एसोसिएशन (अटीरा) की इम्प्लीमेन्टेशन कमेटी, (४) यूनाइटेड कमर्शियल बैंक लिमिटेड, अहमदाबाद का एडवाइजरी बोर्ड, (५) ऑलइन्डिया टैक्सटाइल एसोसिएशन की सेन्ट्रल मैनेजिंग कमीटी, तथा (६) इन्डियन स्टैण्डर्ड इन्स्टीट्यूट की टेक्सटाइल डिवीजन कॉन्सिल, इत्यादि ।

श्री काशी प्रसाद मोदी, बी० काम०, बी० एस०

श्री काशी प्रसाद मोदी का जन्म सन् १९२० ई० में सन्थाल परगना, दुमका (बिहार) में हुआ। आपने कलकत्ता के सेन्टपाल्स कालेज से आई० ए०, विद्यासागर कालेज से बी० काम० एवं युनिवर्सिटी ला-कालेज से कानून की फाइनल परीक्षा पास की। आपका झुकाव बचपन से ही व्यावसायिक शिक्षा एवं समाज सेवा की ओर था और दोनों ही दिशाओं में आपने बड़ी तत्परता दिखाई तथा सफलता प्राप्त की।

सन् १९४१ ई० में आप ने रूबी जनरल इन्स्योरेन्स कम्पनी लि० में प्रवेश किया। परिश्रमी, कुशाग्र बुद्धि एवं सौम्य प्रकृति के होने के कारण आपने इन्स्योरेन्स क्षेत्र में बड़ी शीघ्रता के साथ लोक प्रियता प्राप्त की। इतनी अल्प वय में ही आप रूबी जैसे ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठान के असिस्टेन्ट मैनेजर हैं। आप अपनी योग्यता एवं लोकप्रियता बल पर ही इन्स्योरेन्स एसोसियेशन आफ़ इण्डिया की कलकत्ता रीजनल काउन्सिल की फ़ायर और मैरिन सेक्शनल कमेटियों के सदस्य चुने गये। इसके अतिरिक्त फ़ेडरेशन आफ़ इन्स्योरेन्स इन्स्टीट्यूट, बम्बई की प्रथम स्थापना समिति के सदस्य तथा कलकत्ता की इन्स्योरेन्स सोसायटी के उप सभापति के रूप में आप इन्स्योरेन्स जगत की सेवा कर रहे हैं।

जनसेवा के क्षेत्र में भी आपको बड़ा अनुराग है। मारवाड़ी छात्र संघ के प्रधान मन्त्री एवं सभापति, मारवाड़ी रिलीफ़ सोसायटी के विभिन्न विभागों, शिक्षा, अर्थ व्यवस्था, रसायनशाला सेवा, गृह उद्योग आदि के समय-समय पर मन्त्री रहकर आपने सोसायटी के द्वारा जनता की सेवा की है। बिड़ला क्लब के मन्त्री एवं सभापति भी आप रह चुके हैं। आप बड़ा बाजार मंडल कांग्रेस कमेटी के कोषाध्यक्ष भी रह चुके हैं। आज भी आप उक्त संस्थाओं की सेवा के अतिरिक्त पोद्दार छात्र निवास एवं टाटिया हाई स्कूल के प्रधान मन्त्री तथा मारवाड़ी सभा पुस्तकालय के उप सभापति हैं एवं अखिल भारत-वर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्टैन्डिंग कमेटी के सदस्य हैं।



श्री काशी प्रसाद मोदी.बी० काम० बी० एस०

श्री हरदत्त राय सुग्ला

बिड़ला ब्रदर्स के अत्यन्त विश्वसनीय और प्रभावशाली कार्याधिकारियों में श्री हरदत्त राय सुग्ला का भी एक प्रमुख स्थान है।

श्री हरदत्त राय सुगला का जन्म २ अक्टूबर सन् १९०२ में भिवानी के अन्तर्गत हुआ, आपने सन् १९२५ में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से बी० ए० एवं सन् २७ में लॉ कालेज से एल० एल० बी० पास कर लिया। आपका विवाह पंजाब केसरीलाला लाजपतराय की नतिनी श्रीमती सत्यवतीदेवीसे हुआ। सन् १९४३ तक आप वकालतकी प्रैक्टिस करते रहे। १९३२-३५ तक आप भिवानी के म्यूनिसिपल कमिश्नर रहे।

सार्वजनिक और शिक्षाप्रचार के कामों में प्रारम्भ से ही आपकी बहुत अभिरुचि रही है। आपने अपने प्रयत्नो से भिवानी में दो बालिका विद्यालयों की स्थापना करवाई।

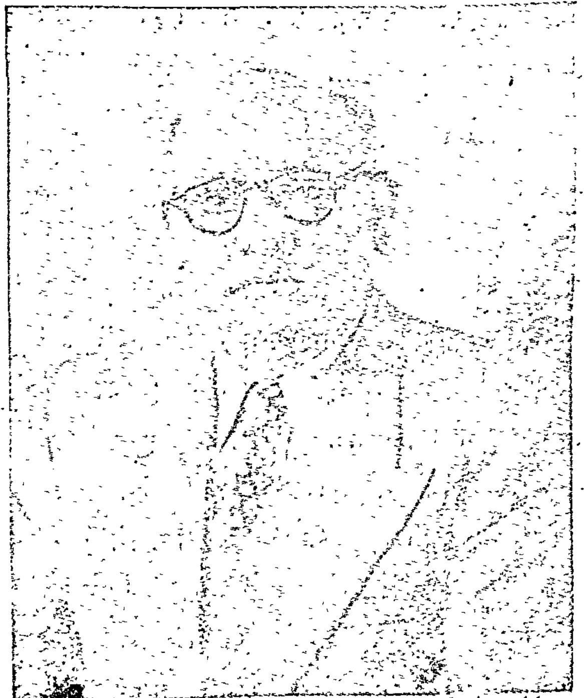


श्री हरदत्त राय सुग्ला

सन् १९४१ में भिवानी में हिन्दू मुसलिम दङ्गा हुआ उसमें आपने अपने प्राणोंकी बाजी लगाकर संकटग्रस्त लोगों की रक्षा की, सरकारी कर्मचारियों को आपके ये काम पसन्द न आये इससे लाभ उठाकर आप पर धारा ३०२ और १०७ के अन्तर्गत मुकदमें लाद दिए। मगर अभियोग निराधार होने से सरकार को वापस उठा लेना पड़ा।

आप हिन्दी तथा अंगरेजी भाषा के योग्य लेखक हैं।

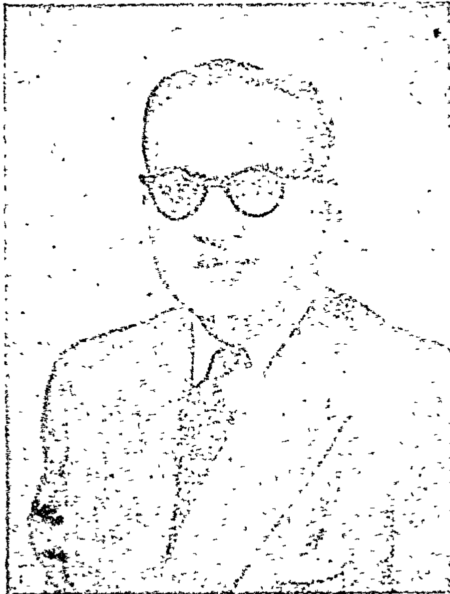
सन् १९४३ में आपने बिड़ला ब्रदर्स में प्रवेश किया और बिड़ला ब्रदर्स द्वारा संचालित भारत एयरवेज के आप जनरल मैनेजर बनाये गये। साथ ही आप एयर ट्रान्सपोर्ट एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के वाईस प्रेसिडेण्ट भी चुने गये।



श्री जालीराम लखोटिया

एयरवेज का राष्ट्रीयकरण हो जाने के पश्चात इस समय आप बिड़ला ब्रदर्स की कई कम्पनियों के लीगल एडवाइजर पद पर काम कर रहे हैं।

आप देहली रौशनआरा क्लब तथा कलकत्ता क्लब और हिन्दुस्तान क्लब मेम्बर हैं।



श्री हरि सिंह नौलखा

श्रीजालीराम लखोटिया

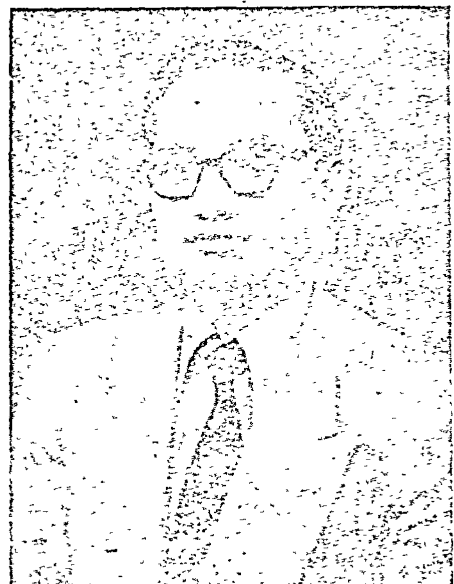
आप चूरु राजस्थान के निवासी हैं। आपने बिड़ला ब्रादर्स की सेवा १६३३ ई० से प्रारम्भ की। अपने परिश्रम, प्रतिभा एवं कार्य कुशलता से आप उत्तरोत्तर उन्नति करते गये। आपने कई विभागों में उत्तर दायित्व पूर्ण पदों पर काम किया है। विगत कई वर्षों से आप बिड़ला लेबोरेटरीज के सेक्रेटरी हैं। बिड़ला ब्रादर्स के सूगर मिल्स विभाग के कार्यों से भी आप विशेष रूप से सम्बन्धित हैं।

श्री हरिसिंह नौलखा

आप बिड़ला ब्रदर्स के द्वारा संचालित न्यू एशियाटिक इन्स्यूरेन्श क० की बंगाल शाखा के मैनेजर हैं। आपका मूल निवास स्थान सीतामऊ मध्यभारत का है। बीमा सम्बन्धी विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप विलायत गए थे। आप एक प्रतिभाशाली, विलक्षण बुद्धि और बीमा सम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान रखने वाले युवक हैं।

श्री हरि प्रसाद सिंघी

श्री हरि प्रसाद सिंघी बिड़ला ब्रदर्स के अन्दर काम करने वाले उच्च पदस्थ अधिकारियों में सबसे छोटी उम्र के युवक हैं। आप श्री महादेव सिंघी के पुत्र हैं। जो कि बिड़ला ब्रदर्स के अन्दर बहुत पुराने समय से काम करते आ रहे हैं। श्री हरि प्रसाद सिंघी इस समय बिड़ला ब्रदर्स द्वारा संचालित ओरियन्ट पेपर मिल्स, सिरपुर पेपर मिल्स इत्यादि का काम देख रहे हैं।



श्री हरि प्रसाद सिंघी

बिड़ला बन्धुओं की सार्वजनिक सेवाएँ

औद्योगिक क्षेत्र की तरह सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में भी बिड़ला बन्धुओं की सेवाए इस देश में बेजोड़ हैं। उनकी सार्वजनिक सेवाओं का विस्तार शिक्षा के क्षेत्र में, धार्मिक क्षेत्र में, स्वास्थ्य और चिकित्सा के क्षेत्र में तथा साहित्य और कला के क्षेत्र में अपनी तुलना नहीं रखता।

शिक्षा के क्षेत्र में बिड़ला बंधुओं का "बिड़ला शिक्षा ट्रस्ट" बना हुआ है। इस ट्रस्ट की पूंजी इस समय लगभग दो करोड़ रुपया है। इस ट्रस्ट की तरफ से पिलानी में बिड़ला हाई स्कूल, बिड़ला बालिका विद्या पीठ, बिड़ला कालेज, बिड़ला कालेज ऑफ आर्टस और बिड़ला इंजिनियरिंग कालेज का प्रबन्ध होता है। ये सब संस्थाएं सुन्दर व स्वास्थ्य प्रद स्थानों पर बनी हुई हैं। इन संस्थाओं में विद्यार्थियों के लिए कई छात्रावास बने हैं। तथा अध्यापकों के रहने के लिए भी सुन्दर मकानों की व्यवस्था है। भारत वर्ष के सब भागों से यहां पर विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने को आते हैं। इन्ही शिक्षण संस्थाओं की वजह से पिलानी, नालन्दा व तक्षशिला की तरह भारत का एक प्रमुख शिक्षा केन्द्र बन गया है।

इन संस्थाओं के अतिरिक्त बिड़ला शिक्षा-ट्रस्ट की ओर से बिड़ला विश्वकर्मा महा विद्यालय नाम का इञ्जीनियरिंग कालेज गुजरात के आनन्द नामक स्थान पर चल रहा है। तथा टैकनालाजिकल इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्सटाइल्स भिवानी तथा बिड़ला विद्या मन्दिर नैनीताल के खर्च का प्रबन्ध भी यही बिड़लाशिक्षा ट्रस्ट करता है।

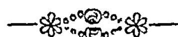
पिलानी के विद्या-केन्द्र इस समय बी० ए०, बी० एसन्सी०, एम० ए०, एम० एस० सी०, तथा बी, काम और एम० काम० के लिए विद्यार्थी प्रस्तुत करते हैं। खोज, अनुसंधान एवं उच्चतम शिक्षा के लिए भी यहां से सहायता मिलती है। इञ्जीनियरिंग कालेज में भी सभी तरह के विभाग हैं।

बिड़ला विद्या विहार

बिड़ला शिक्षा ट्रस्ट ने पिलानी में एक नई शिक्षण बस्ती का भी निर्माण किया है। इसकी प्रधान इमारत का शिलान्यास सन् १९४८ ई० में रामनवमी को कुलपति ले० कमाण्डर सुखदेव पाण्डे ने किया था। इस इमारत में विज्ञान और इञ्जिनीयरिंग कॉलेज; बिड़ला केन्द्रिय पुस्तकालय, हॉल, विविध वस्तु संग्रहालय आदि हैं। इसके बनाने में लगभग ३० लाख रुपये खर्च हुए हैं। विद्यार्थियों के लिए छात्रावास, खेल के मैदान, अध्यापकों के मकान आदि सब बनाये गये हैं। इसी नई बस्ती में शिवगङ्गा, दुग्धशाला, विद्युतगृह आदि सब हैं। सारी बस्ती के निर्माण में ७५ लाख रुपये खर्च हुए हैं।

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



भारतीय उद्योग का प्रथम महान् व्यक्ति

The great Pioneear of Endustrial India



Tata Sons Ltd.

ताता उद्योग प्रतिष्ठान

बम्बई, कलकत्ता

टाटा उद्योग प्रतिष्ठान

श्री जमशेद नसर वान टाटा

(औद्योगिक भारत का पिता)

भारत के औद्योगिक इतिहास में श्री जमशेद नसर वान टाटा का नाम हमेशा अमर रहेगा। जिसने की भारत के औद्योगिक निर्माण में अपना सारा जीवन व्यतीत किया। जो एक उत्पादक की भाँति जिया और देश का उत्पादन बढ़ाने में अपनी सारी शक्तियाँ लगा दी।



श्री जमशेद नसर वान टाटा

सर जमशेद टाटा के हाथों से भारतीय व्यवसाय और उद्योग के क्षेत्र में जो क्रान्तिकारी विकाश हुए तथा जनता की उपयोगिता और उसके हितों के पक्ष में जो अद्वितीय सिद्धि प्राप्त की गई, उसके विषय में कई भिन्न २ विचार धाराओं के लेखकों ने, इनके राष्ट्र-निर्माण की कल्पनाओं के महत्व, उनकी स्पष्ट विचार करने की शक्ति, उनकी रचनात्मक कार्य करने की क्षमता, उनके अलौकिक साहस और कर्त्तव्य-निष्ठा तथा औद्योगिक क्षेत्र में मौलिक योजनाएँ बनाने की असीमित शक्ति और अपने ही तरीके से अपने काम में आनेवाली अड़चनों पर विजय प्राप्त करने की संतुलित शक्ति की मुक्तकंठ से प्रशंसा की।

श्री जमशेद टाटा ने जब कर्मक्षेत्र में प्रवेश किया, वह जमाना एक अन्धकार पूर्ण जमाना था। चारो ओर साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद फैला हुआ था तथा सरकार निर्लज्जता से गरीबों को चूस रही थी। वैज्ञानिक औद्योगिक युग का उस समय एक दम बाल्यकाल था।

ऐसे कठिन समय में श्री जमशेद टाटा ने मन के अंदर अनेक महत्वाकाक्षाओं तथा उच्च सिद्धान्तों को लेकर कर्मक्षेत्र में प्रवेश किया था।

श्री जमशेद टाटा का जन्म सन् १८३९ में बड़ौदा राज्य के नौसारी नामक कस्बे में हुआ था। आपके पिता पारसी समाज के धर्म-पुरोहित थे। श्री जमशेद टाटा की शिक्षा बम्बई के एलफिन्सटन् कालेज में हुई। उन्नीस वर्ष की अवस्था में आपने कालेज छोड़ दिया। उसके कुछ समय पश्चात् सन् १८५९ में आप काम सीखने के लिए हाँगकाँग चले गए। जहां पर आपको कई प्रकार के व्यापारिक अनुभव हुए। रुई तथा अफीम को चीन के लिए निर्यात करना तथा रेशमी कपड़ा, चाय, कपूर इत्यादि चीजों का चीन से भारत वर्ष में आयात करना—इन सब बातों का अनुभव श्री जमशेदने हाँगकांग में प्राप्त किया।

सन् १८६१ में प्रसिद्ध अमेरिकन गृह-युद्ध प्रारम्भ हुआ। जिसके कारण अमेरिका से इंग्लैंड रुई का आना बिल्कुल बन्द हो गया। इस वजह से लंका शायर के कपड़े के कारखानों को बड़ा धक्का पहुँचा। यह देखकर भारतवर्ष के व्यवसाय कुशल पारसी व्यापारियों ने इस अवसर से लाभ उठाने का पूर्णरूप से निश्चय किया। प्रसिद्ध व्यापारी प्रेमचन्द रायचन्द जो कि बम्बई के व्यवसायिक इतिहास में एक आर्थिक जादूगर माना जाता था, उसके नेता बने। इस समय रुई के व्यापार में इन लोगों को ५१ करोड़ रुपये का लाभ हुआ। श्री जमशेद टाटा को भी इस अवसर पर लाभ हुआ, मगर सन् १८६५ में एकाएक अमेरिकन लड़ाई बंद हो जाने से बम्बई के व्यवसायिक जगत में एक बहुत बड़ा भूकम्प आया। १ जुलाई सन् १८६५ ई० का दिन बम्बई के इतिहास में सबसे बड़ा दुर्भाग्य का दिन माना जाता है। उस दिन बम्बई की कई प्रतिष्ठित कम्पनियों का पलड़ा बैठ गया। अमीर गरीब हो गए। गरीब भिखारी बन गए और भिखारी भूखों मरने लगे। उस घटना-चक्र में श्री जमशेद टाटा को भी बहुत हानि उठानी पड़ी इस घटना ने उनके जीवन में एक नया मोड़ दे दिया। मगर श्री जमशेद टाटा बड़े हिम्मत बहादुर व व्यवहार-कुशल व्यक्ति थे। आपने इस भयंकर दुर्दिन में भी अपने साहस को न छोड़ा और औद्योगिक शिक्षा लेने के लिए वे लंका शायर चले गए।

लंका शायर में चार वर्ष व्यतीत करने के पश्चात् जो कि इस कपड़ा उद्योग की पढ़ाई का सबसे उत्तम केन्द्र था, ये १८६६ में बम्बई वापस लौटे। उसी बीच थोड़े दिनोंके बाद अबीसीनियां की लड़ाई शुरु हुई। उस समय अंग्रेजी पल्टन बम्बई से भेजी गई थी, उसकी रसद का ठेका आपने लिया और उस ठेके में अच्छा मुनाफा हुआ। इससे संभल कर आपने चिंचपोकली बम्बई में एक तेल के मिल को खरीद कर उसे बुनने तथा सूत कातने के मिल में परिवर्तित कर दिया और उसका नाम ऐलक झेन्ड्रा स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स रक्खा। थोड़े ही समय में यह मिल पश्चिमी भारत में सबसे बढ़िया उत्पादन करने वाली मिल हो गई। उस समय श्री टाटा ने काफी मुनाफा लेकर उस मिल को बेच दिया।

इसके पश्चात श्री टाटा फिरसे इङ्गलैण्ड गए और वहाँ जाकर पहले से भी अच्छी तरह लंका शायर की यान्त्रिक चतुरता और सङ्गठन को मजबूत तथा कमजोर मुद्दों का अध्ययन किया और यह महसूस किया कि भारत वर्ष में इस उद्योग की उन्नति के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र है।

रानी विक्टोरिया के जमाने में उद्योगपतियों को इस बात का पूर्ण विश्वास था कि सबसे अच्छी जाति की रूई केवल लङ्का शायर में ही पायी जा सकती है। यह केवल इसलिए नहीं कि लंका-शायर में बहुत चतुर कारीगर काम करते हैं, बल्कि इसलिए कि लंकाशायर की आब-हवा बारहों महीने तरीदार रहती है जो कि उत्तम सूत कातने के लिए उपयुक्त है।

श्री जमशेद टाटा ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने तत्कालीन उद्योगपतियों के इस विश्वास को चुनौती दी और वे यह सिद्ध करने के प्रयत्न में लग गए कि अच्छी रूई को कातने के लिए लंका शायर के सिवा और भी स्थान पाये जा सकते हैं।

वास्तव में जब वह भारत लौटे तो एक क्रान्तिकारी उद्योगपति के सब गुण उनमें प्रकट होने लगे थे। क्रान्तिकारी वही व्यक्ति होता है जो किसी भी चालू व्यवस्था से सहमत न हो और अपनी मौलिक विचारधारा के अनुसार किसी भी नवीन वस्तु के अन्वेषण का साहस रखता हो। श्री जमशेद टाटा का भी यही ढङ्ग था। उस समय भारत वर्ष की तत्कालीन व्यवस्था से यही प्रतीत होता था कि भारत एक कृषक देश है और केवल बहुत छोटे-छोटे साधारण उद्योग ही यहां पर पनप सकते हैं। श्री जमशेद टाटा ने उस विचारधारा के विपरीत यह संकल्प किया कि भारत को एक बहुत ही उच्च श्रेणी का औद्योगिक देश होना चाहिए। जिसको कि प्रत्येक आवश्यक वस्तु यहीं पर बनाना चाहिए और सब चीजों का ऐसा उत्पादन करना चाहिए कि वह माल संसार के किसी भी देश से द्वितीय श्रेणी का न हो।

उनकी इस कल्पनाशक्ति को देखकर लोग यह सोचते थे कि सर टाटा हवा में किले बनाना चाहते हैं, मगर यहाँ महान व्यक्ति अपनी कल्पना को एक मूर्ति रूप देने का दृढ़ निश्चय कर चुका था। उन्होंने क्रान्ति को आरम्भ करने के लिए नागपुर के समान उपयुक्त स्थान को ढूँढ लिया और वहाँ पर कपड़े की एक विशाल मिल की स्थापना की और उसको एयर कन्डीशण्ड कर दिया। मिल के बाहर तो हमेशा भारत की गर्म हवा का आभास होता था मगर उसके अन्दर बिल्कुल लंका शायर के समान ही ठण्डा और तर वातावरण था जिसमें किसी प्रकार का अन्तर नहीं था।

जिस दिन टाटा ने अपनी मिलों को आरम्भ किया, उसी दिन रानी विक्टोरिया भारत की साम्राज्ञी घोषित की गई। इस घटना को याद रखने के लिए उन्होंने अपने कारखाने का नाम 'एम्प्रेसमिल्स' रखा।

किसी प्रकार उन्होंने लंका शायर की आबोहवा का अनुकरण अपने मिल में अवश्य कर लिया, मगर सभी बातों में उन्होंने अपने आपको. लंका शायर के तरीकों के बन्धन में नहीं रक्खा। एक अमेरिकन नेरिंग स्पीण्डल नामक कातने की मशीन का आविष्कार किया था। उस समय यह अनुमान किया गया था कि रूई के कातने के सम्बन्ध में यह मशीन एक बहुत बड़ा सुधार है। परन्तु लंका शायर वालों ने इस मशीन को अजमाया, वह इससे सहमत नहीं हुए। पर श्री टाटा ने उसी स्पीण्डल को अपने मिल में लगाया। इसके मार्ग में कोई कठिनाई पैदा हुई तो उसके सुलझाने का प्रयत्न किया और अन्त में यह सिद्ध किया कि यह स्पीण्डल उसी लायक है जैसी कि इसके बारे में आशा की गई थी। यह घटना बहुत छोटी थी परन्तु इसने बहुत बड़ा परिवर्तन कर दिया। भारत में उसने पहली बार अपने गुरु लंकाशायर से भी अच्छा सुधार किया।

श्री जमशेद टाटा की विचारशक्ति केवल अपने स्वार्थ या रुपया कमाने तक ही नहीं थी और वे इस देश में एक औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात करना चाहते थे और उस औद्योगिक क्रान्ति से मजदूरों को कैसे अलग रक्खा जा सकता था। उन्होंने उत्पादन के मेरुदण्ड मजदूरों की सुख-सुविधा पर सबसे पहले ध्यान देना प्रारम्भ किया।

एम्प्रेस मिल्स के चारो ओर उन्होने मजदूरों के आमोद–प्रमोद के लिए मैदान बनवा दिए थे। उनके पढ़ने के लिए कमरे तथा पुस्तकालय बनवा दिए थे। जिससे उनके यहां काम करने वाले कारखाने के बाहर की भी बात सोच सकें। जो माताएं रोजाना मिल में आती थीं, उनके बच्चों को सम्भालने के स्थान भी बनवा दिये थे। आज के युग में ये सब चीजें आम तौर से स्वीकार कर ली गई हैं और इनमें नवीनता नहीं मालूम होती परंतु जब हम बीसवां शदी के पीछे उन्नीसवीं सदी के उस अन्धकार पूर्ण युग के साथ इन चीजों की तुलना करके देखते हैं तो हमें श्री जमशेद टाटा की दूरदर्शिता, महानता और उदारता का सहज ही अनुभव होता है। जिसकी वजह से भारत के औद्योगिक इतिहास में वे एक महान व्यक्ति की तरह माने गये।

कहना न होगा कि श्री टाटा को इस एम्प्रेस मिल के संचालन में आशातीत सफलता हुई और सन् १६१२ के अन्त तक इस कम्पनी ने २६३४५००७ रुपये मुनाफे में बाँटे।

सन् १८८७ में श्री टाटा ने लिक्वीडेटर से कुरला के धर्मसी मिल्स को खरीद लिया। इसमें कई नये यन्त्र लगा कर चालू किया। इस मिल ने भी प्रान्त की उन्नति शील मिलों में नाम पाया।

इसके अतिरिक्त बारीक सूत कातने के लिए सबसे पहले मिल के कपास की खेती कराने का इस देश में उद्योग किया और महीन माल तैयार करवाया।

इस प्रकार नागपुर के एम्प्रेस मिल से प्रारम्भ होकर टाटा का वस्त्र उद्योग उनके जीवनकाल में और उनकी मृत्यु के पश्चात् भी उनके उत्तराधिकारी द्वारा क्रमागत विकास करता रहा। आज टाटा के वस्त्र उद्योग के मिल समूह में चार २ बड़ी २ मिलें धुवाँधार गति से उत्पादन कर रही हैं। इन मिलों के नाम

१—दी सेण्ट्रल इण्डिया मिल्स लि० (एम्प्रेसमिल) २—दी स्वदेशी मिल्स, ३—दी अहमदाबाद एडवांन्स मिल्स ४—और दी टाटा मिल्स लि० हैं।

दी सेण्ट्रल इण्डिया स्पिनिङ्ग एण्ड वीविङ्ग एण्ड मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्नी लि०

सन् १८७७ में नागपुर में एम्प्रेस मिल्स के नाम से यह मिल प्रारम्भ की गई। प्रारम्भ में केवल २९९९५२ स्पिण्डिल्स और ४५० लूम इसमें लगाये गये थे। आज ७५ वर्षो के पश्चात् यह मिल टाटा समुदाय में सबसे बड़ी मिल है जिसमें कि अब १,१५,१८८ स्पिण्डल्स और २०६२ लूम्स हैं। आज यह मिल ४–५ करोड़ गज कपड़े का तथा ४० लाख पौण्ड का उत्पादन करती हैं।

गत महायुद्ध के पश्चात् इस मिल में नई मशीनों के लगाने तथा पुनर्निर्माण के कार्य में ५१ लाख रुपये लगाये तथा फिरसे इस मिलको आधुनिक ढङ्ग से पुनः संगठित करने के हेतु १४० लाख रुपये लगाने की योजना बनाई गई है।

दी स्वदेशी मिल्स कम्पनी लिमिटेड बम्बई

कुरलापर स्थित धरमसी मिलको सन् १८८६ में टाटा ने बारह लाख रुपये में खरीद कर इस कम्पनी की स्थापना की। इस मिल में इस समय ७०७६४ स्पिएडल्स और २००० लूम्स तथा आधुनिक प्लाएटस लगे हुए हैं। इसका कुल उत्पादन ४.५ करोड़ गज का है जिसका कि वार्षिक मूल्य ३५ करोड़ रुपया होता है। टाटा के मिल समुदायों में मशीनों के सम्बन्धमें सबसे अधिक ध्यान स्वदेशी मिलपर दिया जाता है।

दी अहमदाबाद एडवांस मिल्स लिमिटेड अहमदाबाद

यह मिल सन् १६०३ में श्री टाटा के द्वारा खरीदा गया। आज इस मिल में ४९, १४४ स्पिएडल्स और १०१६ लूम्स है। यह मिल प्रतिवर्ष २५० लाख गज कपड़े का उत्पादन करता है।

दी टाटा मिल्स लि० बम्बई

यह मिल सन् १६१३ में स्थापित किया गया। और १६१७ से इसने कपड़े का उत्पादन प्रारम्भ किया। इस समय इसमें ६२०५६ स्पिएडल्स और १८०० लूम्स लगे हुए हैं और प्रति वर्ष ४,५ करोड़ गज मध्यम श्रेणी का कपड़ा उत्पादन करता है।

सब मिला कर टाटा का वस्त्र-उद्योग भारत के सबसे बड़े समुदायों में से एक है जिसकी कार्य-क्षमता २९७१६२ स्पिडल्स और ६८७८ लूम्स की है।

निम्नलिखित सूची से यह सब बातें स्पष्ट हो जावेंगी।

अनुक्रम-संख्या		टाटाके समुदायके आँकड़े	समस्त भारत के आँकड़े
१	स्पीन्डल	२९७, १९२	११, ६५१, १३७
२	लूम	६, ७७८	२०१, ७१८
३	मजदूरों की संख्या	२३,०००	७५०,०००
४	वार्षिक मजदूरी और वेतन का बिल	३५ करोड़ रु०	८० करोड़ रु०
५	रूई की गांठों की खपत	१३०,०००	४,६००,०००
६	खपी हुई रूई की कीमत	५.८ करोड़ रु०	२०० करोड़ रु०
७	गोदाम में खपत का मूल्य	१.२ करोड़ रु०	२६ करोड़ रु०
८	कपड़े के उत्पादन की मात्रा	१६ करोड़ गज	५०० करोड़ गज
६	उत्पादित कपड़े का मूल्य	१३ करोड़ रु०	३३५ करोड़ रु०

ये चारों मिलें मिलकर मोटी चद्दरों और ड्रील से लेकर किमरिख, वाँयल, पोपलीन, साड़ी और धोती तक उत्पादन करतीं है और जिनका देश तथा विदेश में काफी नाम है। प्रतिवर्ष अधिकतर कपड़े

की मात्रा पूर्वी और पश्चिमी अफ्रीका, मध्य पूर्वीय, पूर्वीय के निकट, सुदूर पूर्व में आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और अब इग्लैंड को भेजा जाता है।

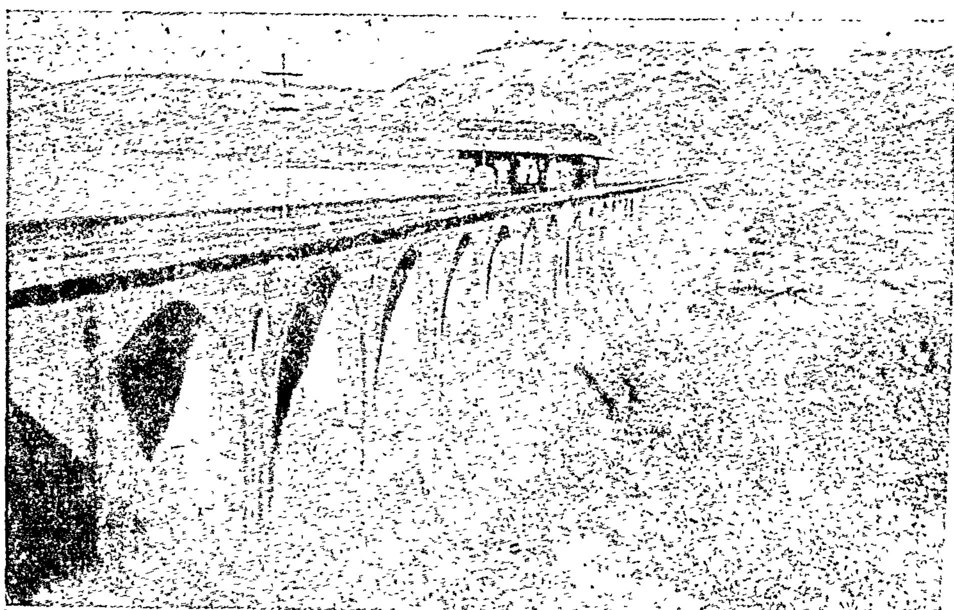
टाटा के द्वारा प्रबन्धित मिलों की कार्यदक्षता भारत के औद्योगिक संसार में एक कहावत है, एक पहेली है। टाटा के उद्योगों में एक विशेष मुद्दे की बात यह है कि वे अधिक से अधिक उत्पादन कम से कम मूल्य पर करते हैं जिसके पीछे खास उद्देश्य यह रहता है कि वह माल सस्ता बने जिससे कि उस माल को कम से कम आमदनी वाला व्यक्ति भी सरलता से खरीद सके। टाटा के व्यस्थापकों के दिमाग में ग्राहकों की क्वालिटी तथा कीमत के विषय का दृष्टिकोण हमेशा खयाल में रहता है। यह चीज़ पुरानी मशीनों को निरन्तर नई आधुनिक मशीनों से बदलते रहने से, आधुनिक उत्पादन की सहुलियतों और चतुर व्यवस्थापन से प्राप्त की जाती है।

इन सब बातों के होते हुए भी मजदूरों के स्वार्थों को कभी भी नहीं भुलाया जाता है। बिलकुल सच है और कोई भी भारतीय अर्थ व्यवस्था की स्वीकृत प्रधान पुस्तक में पाया जा सकता है कि मजदूरों के हित का जो स्तर टाटा के उद्योगों ने कायम रख रक्खा है, वह भारत में अद्वितीय है तथा पूर्वी देशों में भी किसी से दूसरा नम्बर नहीं है। आज, हमारी सरकार भारतीय मजदूरों को काम करने की सहुलियतें देने की समस्या में उलझी हुई है परन्तु यह उद्देश्य तो टाटा की नीति का मजबूत स्तम्भ था जब कि उन्होंने आज के ८० वर्ष पूर्व प्रथम उद्योग खोला था, तभी इसी नीति अनुसरण किया था। टाटा के परिवार ने अग्रगण्य होकर अपनी परम्परा को निभाते हुए आधुनिक ढंग के केन्टीन, बच्चे रखने के स्थान, अध्ययन करने के लिए कमरे, क्लब, आमोद-प्रमोद के केन्द्र, खेलने के मैदान और कितनी अन्य प्रकार की सुविधाएँ दी। स्वदेशी मिल के कार्यकर्त्ताओं के लिये एक विशाल भवन का निर्माण हो रहा है जिसमें कि लगभग ८० लाख रुपये लगेगें, जो कि जब पूरा हो जावेगा, तब मिल के कार्य-कर्त्ताओं की आदर्श बस्ती होगी। प्रत्येक मिल औद्योगिक स्वास्थ्य विभाग तथा इञ्जिनियरिंग से रक्षा के साधनों से सम्पन्न हैं जो कि औद्योगिक दुर्घटनाओं को रोकते हैं तथा कर्मचारियों को समय पर मेडिकल सहायता देते हैं। देश तथा विदेश के सम्माननीय मेहमानों ने मिलों के द्वारा कर्मचारियों के हित की तथा भलाई की जो हलचलें जारी हैं, उन्होंने उनकी खुले दिल से तारीफ की है।

टाटा का जल विद्युत् शक्ति—उत्पादन

बम्बई शहर के दक्षिण पूर्व में पश्चिमी घाट के ५० मील के आस-पास के क्षेत्र में चेरापूंजी को छोड़कर समस्त भारत से अधिक वर्षा होती है। वर्षा जो कि १०० से लेकर ४०० इञ्च तक होती है वह सब मानसून के साढ़े तीन महीनों में इस क्षेत्र में इकट्ठी कर ली जाती है। शताब्दियों तक यह वर्षा का पानी पूर्व दिशा में बेकार बहता रहा, क्यों कि इसका पश्चिम का भाग इन पहाड़ी शृंखलाओं से रुका हुआ है। गत शताब्दि के अंत तक श्री डेविड गोस्टलिंग (David Gostling) जो कि बम्बई का

प्रसिद्ध इंजिनियर था, उसने पश्चिमी घाट के वर्षा के पानी का एक एक बूंद जल-विद्युत् शक्ति के उत्पन्न करने में उपयोग करने की सोचा। अगर कोई योजना बनाई जाय जिससे कि इस प्राकृतिक पर्वत श्रेणी में पानी रोका जा सके, बजाय उसके कि वह पूर्वी पठार पर सारा बह जाय। जमशेद जी टाटाने इस योजना की उपयुक्तता को महसूस किया और इसका विलक्षण तरीके से अध्ययन किया। उन्होंने बम्बई के विषय में धुएं से रहित शहर की कल्पना की, जिसको कि घरेलू तथा औद्योगिक उपयोग के लिये सस्ती विद्युत् शक्ति दी जा सके। जिन योजनाओं का जमशेद जी टाटा के द्वारा निर्माण किया गया था वह उनकी मृत्यु के पश्चात् इस शताब्दि के प्रारंभ में, टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रीक पावर सप्लाय कं० लि० (रजिस्टर्ड १९१०), 'दी आन्ध्र व्हेली पावर सप्लाय कं० लि०' (रजिस्टर्ड १९१६) और 'दी टाटा पावर कं० लि०' (रजिस्टर्ड १९१९) के नाम से स्थापित कर दी गई थीं।



टाटा का जल विद्युत शक्ति का उत्पादन

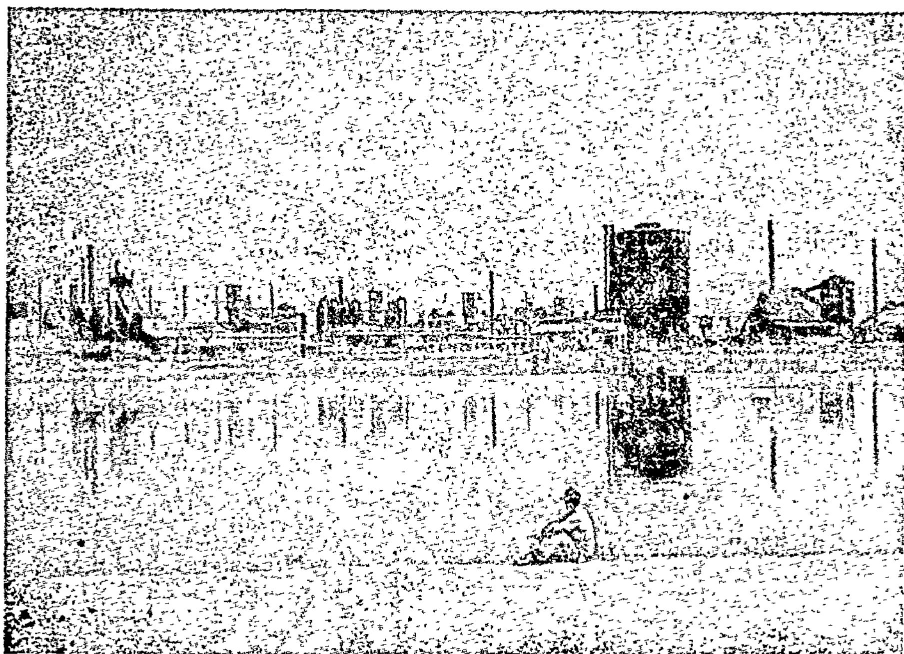
जल विद्युत शक्ति—

ये तीनों कम्पनियों, जो कि अलग अलग काम करती हैं वे सब एक सम्मिलित एजेंसी—दी टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रीक एजेन्सिज लि० जो कि इन कम्पनियों के मेनेजिंग एजेंट हैं, के अधीन काम करती हैं। सम्मिलित शासन और कलापूर्ण देख रेख तथा इसके साथ ही प्लाएट से पानी रोकना और पानी के रोकने की क्षमता के परिणाम स्वरूप इसका विश्वास जम गया है तथा आर्थिक स्थिति अच्छी हो गई है। टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रिक पावर बम्बई और पूना के क्षेत्र में १००० वर्ग मील तक

शक्ति दी जाती है जिसमें कि लगभग ३० लाख मनुष्य रहते हैं। शक्ति के रूप में यह दक्षिणी पूर्वी एशिया में सबसे बड़ा विद्युतशक्ति का केन्द्र है जहाँपर कि २७४,००० किलोह्वाट शक्ति उत्पन्न की जाती है।

हाइड्रो कॅम.थर्मल पावर (HYDRO CUM-THERMAL POWER)

सन् १९२९ में सेन्ट्रल रेलवे ने अपना खुद का थर्मल इलेक्ट्रिक स्टेशन कल्याण के पास चोला (Chola) में खोला जिससे कि रेलवे की आवश्यकता पूरी की जा सके। सन् १९४० में टाटा की हाइड्रो कम्पनियों के साथ अदल-बदल का प्रबन्ध करके चोला स्टेशन को हाइड्रो सिष्टम से जोड़ दिया गया। सेण्ट्रल रेलवे के प्लान की वर्तमान क्षमता ६४,००० किलोवाट है। कुछ ही वर्षों पूर्व बम्बई सरकार ने चोला में ५४००० किलोह्वाट का एक और थर्मल प्लाण्ट लगाया है वह भी टाटा-रेलवे के साथ मिला दिया गया है, इस तरह सारे सम्मिलित प्रबन्ध की क्षमता ३६२,००० किलोवाट की हो गई हैं।



टाटा आयर्न स्टील वर्क्स जमशेदपुर

यद्यपि जल विद्युत् शक्ति में एक नया प्लाण्ट डालकर २२००० किलोवाट की और वृद्धि कर दी गई है फिर भी यह महसूस किया गया है कि टाटा-रेलवे-सरकार के प्रबन्ध की क्षमता बम्बई और पूना के क्षेत्रों के ग्राहकों तथा उद्योगों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने में असमर्थ रहेगी। औद्योगिक काल

की इस बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिये टाटा के व्यवस्थापन ने बम्बई के समीप एक थर्मल जनरेटिंग स्टेशन की स्थापना करके शक्ति की क्षमता में और वृद्धि करके इस आवश्यकता को पूरा किया है।

ट्राम्बे थर्मल स्टेशन

उन लोगों की योजना के परिणामस्वरूप ट्राम्बे थर्मल स्टेशन की स्थापना की गई जो कि बम्बई नगर के उत्तर पूर्व में ७ मील की दूरी पर ट्राम्बे नामक द्वीप पर स्थित है जिसकी कि क्षमता १००,००० किलोवाट की है और इसकी मालिक तीनों कम्पनियाँ हैं जो कि इसको चालू करेंगी। ट्राम्बे को इस कार्य के लिये इसलिये चुना गया कि यह दूसरे स्थानों से बहुत अधिक फायदे रखता है, जैसे ठण्डे पानी की प्रचुरता, तेल के शुद्ध करने के कारखाने समीप होने से खराब गैस तथा पिच (Pitch) को जलाने में सरलता तथा विभाजन के जाल तथा खास ट्रांसमिशन की समीपता इत्यादि कारणों से इसे चुना गया। इस स्थान का लगभग आधा हिस्सा ज्वार-भाटे के समय पानी में रहता है। इस भूमि को पुनः प्राप्त करके, जहाँ पर कि अब तक दल-दल भरा हुआ था, उस स्थान पर एशिया भर में आधुनिकतम स्टीम इलेक्ट्रिक स्टेशन की स्थापना की जावेगी। ट्राम्बे स्टेशन से नई ट्रान्समिशन लाइनें मोजूदा जाल को जोड़ने के लिये भेजी जावेंगी और बम्बई के दक्षिण में कर्नाक ब्रिज पर नया विद्युत् स्टेशन (Receiving station) बनाया जावेगा जिससे दक्षिणी भाग में इस प्रबन्ध की विभाजन शक्ति बढ़ जाय। सन् १६५६ के अन्त तक ट्राम्बे से, बम्बई पूना के घरों तथा कारखानों में बिजली आने लग जावेगी, जिससे कि बिजली की कमी तथा प्रतिबन्ध हट जावेंगे जो कि लड़ाई के जमाने से परम्परा रूपमें चली आ रही है। जब ट्राम्बे स्टेशन कार्य करना प्रारंभ कर देगा तब इस आपस में सम्बन्धित पूर्ण प्रबन्ध की क्षमता ४६२,००० किलोहृवाट की हो जावेगी।

जब कि भारतवर्ष में जल से विद्युत् शक्ति को उत्पन्न करना कोई नहीं जानता था उस समय टाटा ने बम्बई पूना क्षेत्र में जल से विद्युत्-शक्ति, थर्मल शक्ति से सस्ती तथा अधिक विश्वासी प्राप्त करके एक नवीन अध्ययन प्रारम्भ किया उसके परिणामस्वरूप इन वर्षों में करोड़ों टन कोयला बचाया गया जिसके कि समाप्त होने से बड़ी हानि होती।

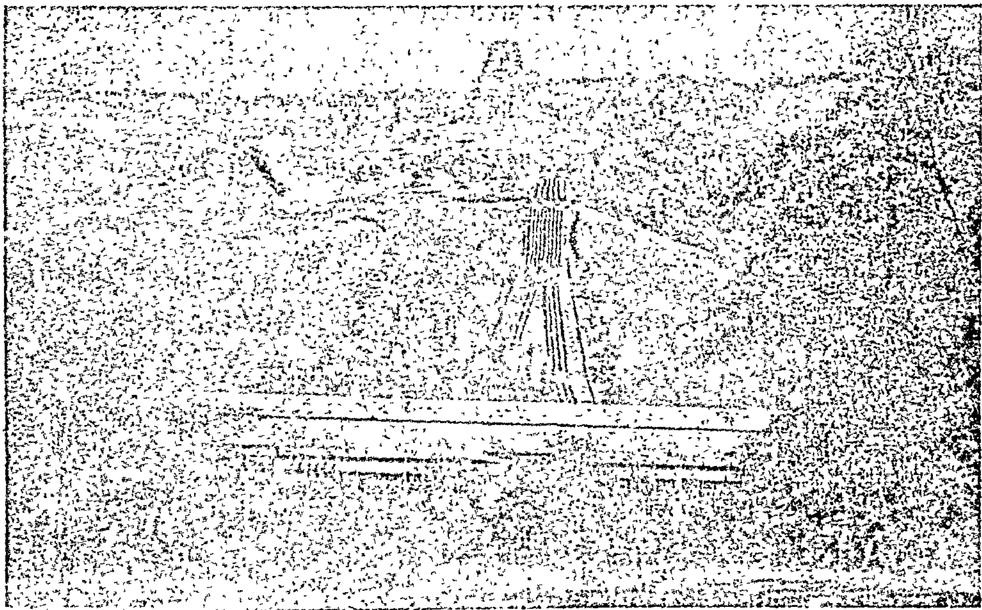
'दी टाटा इलेक्ट्रिक सिस्टम' जो कि एक महान् भारतीय उद्योगपति श्री जमशेद जी टाटा के उद्योग तथा स्वप्नो का स्मारक रहेगा तथा उनके उत्तराधिकारियों का भी जिन्होंने की उनके स्वप्नों तथा योजनाओं को वास्तविकता में परिवर्तित करने के लिये अथक प्रयास किया।

टाटा का इस्पात का कारखाना

टाटा के इस्पात के कारखाने का वर्णन करने के लिये हमको इस शताब्दी के प्रारंभिक कुछ वर्षों से प्रारंभ करना होगा जब कि भारत के लिए सबसे विशाल इस्पात के कारखाने की रूप रेखा ने भारत के महान् उद्योगपति श्री जमशेद टाटा के मस्तिष्क में स्थान ग्रहण किया।

यह महान् उद्योगपति इस बात को मानने लग गया था, महसूस करने लग गया था कि भारत इस्पात का उत्पादन कर सकता है मगर उस समय के उद्योगपति इनके विचारों से भिन्नता रखते थे। इस विचार की सचाई को सिद्ध करने के लिये श्री जमशेद टाटा ने समस्त भारतवर्ष में लोहे की धातु चूने के पत्थर तथा कोयले की खोज के लिये भूगर्भशास्त्रियों को भेजे क्योंकि ये सब पदार्थ लोहा बनाने के लिये अनिवार्य हैं।

इस महान् विभूति का अपने स्वप्नों को सचाई में परिवर्तित करने के पूर्व ही स्वर्गवास हो गया। परन्तु जिन विचारों को इन्होंने प्रोत्साहित किया था उन विचारों ने इनके उत्तराधिकारियों को प्रेरणा दी। इन्होंने अपने कार्यों की बागडोर उन व्यक्तियों को संभलाई जिन्होंने उनके उद्योग, धैर्य तथा विश्वास का उत्तरदायित्व ग्रहण किया। वे लोग किसी भी प्रकार की कठिनाइयों से इस कार्य को बंद नहीं करेंगे।



भीरा पावर स्टेशन टाटा हाइड्रो इलेट्रीक कंपनीज

बहुत से सम्भावित स्थानों की खबर दी गई और वे नामंजूर कर दिये गये; तब अचानक भूगर्भ शास्त्रियों ने साकची नामक एक स्थान को पसंद किया जो कि बिहार में एक छोटा सा गांव था। साकची लोहे तथा कोयले की खदानों के बिल्कुल नजदीक था। इसके अतिरिक्त साकची खोरकाई और सुवर्ण रेखा नामक नदियों के संगम पर स्थित है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात थी क्योंकि इस्पात के कारखाने की पानी की आवश्यकता इन नदियों से पूरी जा सकेगी। इसलिये साकची एक दम इस्पात के कारखाने के लिये उपयुक्त स्थान चुन लिया गया।

इसके पश्चात् पूँजी के प्रश्न का सामना करना पड़ा था। जब कि लंदन के बाजारों ने पूँजी देना अस्वीकार कर दिया जहाँ से कि उनके वारिसों को पहले पूंजी मिली थी। तब उन्होंने बम्बई में एक विज्ञप्ती निकाली। लगभग तीन सप्ताह में २ करोड़ रुपये प्राप्त किये गये जिसमें कि करीब-करीब ८०० व्यक्तियों ने सहायता दी। इस घटनाने प्रबन्धकों के विश्वास तथा साहस को जाग्रत किया।

२७ अगस्त सन् १९०७ में 'दी टाटा आयरन एण्ड स्टील की कम्पनी का निर्माण किया गया और सन् १९०८ में साकची में इसका निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया गया।

सन् १९११ में जब कि एक ब्लास्ट की भट्टी चालू कर दी गई थीं तब तक भी साकची एक छोटा सा गाँव ही था। यहाँ पर दो ब्लास्ट भट्टियाँ, एक ब्लूमिंग मिल (Blooming Mil) और रेल की पटरियों तथा ढाचों के मिल थे। इसकी वार्षिक उत्पादन क्षमता १००००० टन की थी।

यद्यपि यह कारखाना साधारण पैमाने पर प्रारम्भ किया गया था तो भी यह बहुत ही शीघ्र विशेष महत्व रखने लग गया। प्रथम महायुद्ध के समय जब कि ब्रिटेन से मध्य पूर्वीय भाग में इस्पात का आना असम्भव सा हो गया था तब यह टाटा का इस्पात कारखाना था जिसने कि मेसोपे पोटामिया को जीतने में मदद की। इस सहायता से प्रभावित होकर सन् १९१९ में वाइसराय लार्ड चेम्सफ़ोर्ड साकची आये और उन्होंने इसका नाम जमशेद पुर रक्खा।

आज जमशेद पुर एक बड़ी हलचल वाला नगर हो गया है जिसका कि क्षेत्रफल २५ वर्ग मील है। केवल यह इस्पात का कारखाना ही नगर के ४०००० व्यक्तियों को रोजगारी देता है तथा हजारों इसके सहायक कारखानों तथा नगरपालिका के व्यवस्थापन कार्य में लगे हुए हैं।

परन्तु इसके पहले कि हम जमशेदपुर का वर्णन करे इस कारखाने की भीतरी स्थिति का वर्णन करना भी अनिवार्य है।

लोहे को तैयार करने के तीन बुनियादी पदार्थ लोहे की धातु, कोयला और चूने का पत्थर हैं। जमशेदपुर के समीप ही लोहे की खदानें हैं। कोयले तथा चूने के पत्थर की खाने भी थोड़े से ही अन्तर पर है। ये सब पदार्थ कारखाने में मंगवाये जाते हैं।

कोक (कोयले) की भट्टी—पहले पहल कोयले को कोक की भट्टी में जलाया जाता है। ये ईंटों के कमरे से हैं जो कि कोयले से भर दिये जाते हैं तथा इस कोयले को वहाँ तक गर्म किया जाता है जब तक उसकी सब गैस नहीं निकल जाती। लगभग ५००० टन कोयला प्रति दिन गर्म किया जाता है। यहां पर कुल २१६ भट्टियां हैं जो कि १० लाख टन कोक प्रति वर्ष उत्पादित करती हैं।

ब्लास्ट फरनेस (भट्टी)—लोहे तथा इस्पात के कारखाने की मुख्य चीज ब्लास्ट फरनेस होती है। यहां पर कोक तथा चूने के पत्थर की सहायता से लोहे की धातु को पिघला कर लोहे को उसके

साथ मिले हुए अनुपयोगी पदार्थों से अलग किया जाता है। जमशेदपुर के इस कारखाने में अब ५ ब्लास्ट फरनेस (भट्ठी) हैं और सब मिलाकर यहां पर प्रतिवर्ष १० लाख टन लोहे का उत्पादन किया जाता है।

दिन में कितनी ही वक्त इन भट्ठियों के तले के द्वार से पिघला हुआ लोहा निकाला जाता है। यह करछुले में इकठ्ठा किया जाता है जहां पर कि इसको ढाला जाता है। यह शीघ्र ही जम जाता है जो कि रेल के डिब्बों में रख दिया जाता है।

इस्पात को पिघलाने की दूकानें—यहां पर कुल इस्पात को पिघालने की तीन दूकानें हैं जिनको कि वार्षिक उत्पापन क्षमता १०५०००० टन की है।

बिजली की आर्क (Are) भट्ठी १८००० टन विशेष उच्च दर्जे के इस्पात का उत्पादन करती है। इन पिघालने वाली भट्ठियों से इस्पात निकाल लिया जाता हैं और छः छः टन के टुकड़े बना दिये जाते हैं।

ब्लूमिंग मिलः—यह छः टन वाले इस्पात के टुकड़े इस मिल पर फैलाये जाते हैं। यह मिल १००००० टन टुकड़ों को समतल चौकों में प्रति माह बदलती है।

शीट बार एण्ड बिलेट मिल—(Sheet Bar and Billet mil) यह मिल समतल टुकड़ों को २४'' तथा १८'' गेज की चद्दरों में बदलता है जिनसे कि चद्दरें, स्लीपर, फ्लेट्स, कुन्दे इत्यादि बनाये जाते हैं।

रेलकी पटरी तथा ढाँचा बनाने की मिलः—इस मिल में फैले हुए चौकों को पहले तो ३५'' को मिल में तथा बाद में २८'' की मिल में भेजा जाता है जिससे कि एन्गल, खम्बे, गारडर इत्यादि बनाये जाते हैं।

प्लेट मिलः—इस मिल को ब्लूमिंग मिल से चौकोर चौके दिये जाते हैं। इन चौकों को फिर से गर्म किया जाता है तथा तीन से लेकर ⅛ इञ्च मोटी चद्दरें बनाई जाती हैं। यह प्लेट (चद्दरें) ५० फुट लम्बी तथा ७ फुट चौड़ी तक होती हैं। लगभग ७०,००० टन से भी अधिक चद्दरें, डिब्बे बनाने, जहाज बनाने, इत्यादि के लिये प्रतिवर्ष उत्पादित की जाती हैं।

चद्दरों की मिलः—इस मिल में तीन अर्ध स्वतः चालित और चार हाथ से चलने वाली मशीने हैं। यह मिल १५,००० टन काली, सफेद और विशेष दर्जे की रेल के डिब्बों के उपयोग में आने लायक इस्पात की चद्दरों का उत्पादन करती है।

पहिये; और टायर एक्सल का कारखानाः—पहिये तथा पहिये की हाल को ४४०० टन के इस्पात के टुकड़े से भाप की मशीन के द्वारा दबाया जाता है। एक्सल फैले हुए इस्पात से बनाये जाते हैं। इनका वार्षिक उत्पादन २४००० टन का है।

उन्नति का केन्द्र विन्दु:—इस्पात के उत्पादन के सम्बन्ध की असंख्य समस्याओं की कन्ट्रोल एगड रिसर्च लेबोरेटरीज में जाँच की जाती है तथा उन्हें हल की जाती हैं। इस लेबोरेटरी में धातु सम्बन्धी विभाग, रसायन शाला, रीफ्रेक्टरी प्रयोग शाला तथा कला (Technical) पुस्तकालय है। वैज्ञानिक यन्त्रों तथा परीक्षण साधनों से पूर्णतया सम्पन्न होने से धातु ज्ञाता तथा रसायन शास्त्री जो कि इन प्रयोग शालाओं में कार्य कर रहे हैं वे नये तरीके तथा अच्छा माल उत्पादन करने में प्रयत्नशील हैं।

भविष्य की ओर अग्रसर:—इस कम्पनी के सन् १९५७-५८ के आधुनिक ढंग के विस्तार के कार्यक्रम के अनुसार इसका उत्पादन बढ़कर १,३००,००० टन टुकड़ों का या ९३१,००० टन अच्छे इस्पात हो जावेगा। लगभग ४३ करोड़ रुपये या मूल पूँजी का २१ गुना धन खराब तथा पुराने प्लाट को बदलने, उत्पादन बढ़ाने और भिन्न भिन्न प्रकारकी वस्तुएँ बनाने के लिये खर्च किया जायेगा।

कोल्ड रोलिंग मिल और इलेक्ट्रिक रेजीस्टेएट ट्यूब प्लाएट भी लगाये गये हैं जो कि सन् १९५६ में पूर्ण हो जावेगें ऐसी आशा की जाती है।

इसके विकास की द्वितीय योजना जिसके ऊपर अभी अन्तिम निर्णय होना बाकी है बन जाने पर उसके पश्चात् इस कारखाने की उत्पादन क्षमता बढ़ाकर २,०००,००० टन लोहा या १,५००,००० टन बढ़िया ईस्पात की हो जावेगी।

हाल ही में इस द्वितीय योजना की पूर्ति के लिए टाटा सन्स लि० को विश्व बैंकने करीब तीस करोड़ रुपया कर्ज देना स्वीकार करलिया है और अब यह योजना बहुत ही शीघ्र कार्यान्वित की जा सकेगी।

जमशेदपुर

आधुनिक जमशेदपुर इस बात का द्योतक है कि किस प्रकार, कितनी इमानदारी से संस्थापक के निर्देशन का इसमें अनुसरण किया गया है। इस कम्पनी ने कर्मचारियों को केवल मकानों की ही सुविधा नहीं दी है बल्कि सारे शहर में बगीचे तथा खेलने के मैदान बनवा दिये हैं। प्रत्येक धर्म के व्यक्तियों ने जमशेद में पूजा के स्थान बनाये हैं।

समस्त भारत में इस शहर के आकार का केवल यही एक शहर है जो कि प्रारंभ से हीं पूर्ण रूप से एक ही अधिकारी के द्वारा योजित किया गया तथा शासित किया जाता है। यह नगर इस बात को बतलाता है कि इसके संस्थापक इस सिद्धान्त में, कि मनुष्य के उद्योग का माल अधिकतर उसके हितों पर निर्भर रहता है कितनी सरलता तथा इमानदारी से विश्वास करते हैं।

जमशेदपुर को संभालने के लिये प्रति वर्ष एक करोड़ बीस लाख रुपयों से भी अधिक व्यय किया है। मकानों के किराये, जमीन का किराया, बिजली का किराया इत्यादि सब मिलाकर कुछ आय ६० लाख रुपयों से कम होती है। सारे शहर को संभालने के लिये ६६ लाख रुपये प्रतिवर्ष का घाटा होता है।

यह घाटा और भी ३१ लाख रुपयों से बढ़ जाय अगर लगी हुई पूँजी का ब्याज तथा घिसाई (Depriciation) का हिसाब भी लिया जाय।

मकानों की व्यवस्थाः—जमशेदपुर में कम्पनी की ओर से निर्मित कुल १३००० मकान है जिनका कि कुल मूल्य तीन करोड़ रुपयों से अधिक है। कम्पनी के बने हुए प्रत्येक मकान जिसका कि किराया नाम मात्र लिया जाता है, एकदम स्वतंत्र है तथा इसके चारों ओर मैदान भी होता है। इस बात को महसूस कर लिया गया है कि कम्पनी कितनी ही तेजी से मकान बनाये फिर भी वह किसी भी प्रकार शहर की वृद्धि तथा जनता की वृद्धि के साथ अपनी गति चालू नहीं रख सकती इसलिये कम्पनी ने एक ऐसी पद्धति प्रारंभ की है जिसके अनुसार वह कर्मचारियों को लम्बे समय के लिये नाम मात्र के किराये पर भूमि दे देती हैं जिससे कि कर्मचारी अपना मकान खुद ही बना सके। इसके अतिरिक्त भी कर्मचारियों को और सहायता देने के लिये कम्पनी की ओर से मकान की कीमत का ७५% हिस्सा कर्ज दे दिया जाता है जो कि उन लोगों को दस वर्ष में अदा करना होता है।

जल मुफ्त में दिया जाता है तथा बिजली दो पैसे प्रति युनिट पर दी जाती है।

स्वास्थ्यः—स्वास्थ्य तथा सफाई का विभाग इस नगरकी स्थापना के साथ ही स्थापित कर दिया गया था और यह इस नगर की वृद्धि के साथ ही अपने आकार तथा महत्व को भी बढ़ा रहा है और आज स्वास्थ्य विभाग में लगभग १५०० व्यक्ति कार्य करते हैं। यथाक्रम रक्षा तथा सफाई के कार्य, जल की शुद्धता, डेअरी, भोजनालयों, होटलों की निगरानी इत्यादि के अतिरिक्त स्वास्थ्य विभाग छुआ-छूत की बिमारियों के नियन्त्रण करने के लिये तथा मलेरिया को रोकने के लिये कार्य करता है तथा स्कूल में टीके लगाता है। यही विभाग प्रत्यक्ष रूप से छः दाईखानो तथा बच्चों के दवाखानों के लिये जिम्मेदार हैं।

यह कम्पनी जमशेद पुर की स्वास्थ्य सेवा के लिये प्रतिवर्ष १८ लाख रुपये व्यय करती है।

मेडिकल सहायताः—जमशेदपुर के खास दवाखाने में ४१६ बिस्तर हैं जिसमें कि ५१ डाक्टर और १०० नर्सें काम करती हैं। जहाँ पर कि ३००० हजार मरीजों पर प्रति दिन ध्यान दिया जाता है। यह कम्पनी इसमें प्रतिवर्ष १६ लाख रुपयों की सहायता देती है। इसके अतिरिक्त यह कम्पनी अर्देशीर दलाल के क्षय रोग के दवाखाने का भी ३।४ खर्च देती है।

शिक्षा—इस कम्पनी के द्वारा शासित तथा निर्माणित चालीस स्कूलों मे २०,००० विद्यार्थियों से अधिक विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इसके अतिरिक्त यह कम्पनी ३६ स्कूलों को सहायता देती है तथा सब मिलाकर ११ लाख रुपया प्रतिवर्ष शिक्षा पर व्यय करती है। इञ्जिनियर तथा धातु शास्त्रियों के लिये भी कलापूर्ण शिक्षा का कार्यक्रम है। अकला निपुण व्यक्तियों की शिक्षा के लिए रात्रि को कला कौशल के स्कूल लगते हैं।

सामुदायिक हलचलेः—सन् १६१६ में कम्पनी की हितकारी समिति ने सर्व प्रथम सहकारी समिति प्रारम्भ की। उसके बाद यह सहकारी आन्दोलन निरन्तर बढ़ता जारहा है और आज ४३ सहकारी समितियाँ जिस पर कि २½ करोड़ की पूंजी लगी हुई है चल रही हैं एक औद्योगिक शिक्षा का केन्द्र स्त्रियों के लिये कातने, बुनने तथा अन्य कला कौशल की शिक्षा देता है। इन समितियों के अन्तर्गत अन्य समितियों के अलावा एक अद्वितीय सहयौगिक संगठन है जिसको कि शिक्षा और सभ्यता की सहयोगिक समिति (Educational of cuttural cooperative Secity) के नामसे पुकारते हैं और जो विश्वविद्यालय के स्तर पर शिक्षा केन्द्र को चलाती है।

आमोद-प्रमोदः—कर्नचारियों को कार्य समाप्त होने के पश्चात् आमोद-प्रमोद की सुविधाएँ भी दी जाती हैं। इनमें बाहर तथा भीतर खेलने के खेल, मैदान के खेल, खुली हवा का सिनेमा संगीत वगैरह सारे नगर में सुनाया जाता है, जिसमें सब शामिल रहते है। ये सब प्रकार की हलचलें विशेष शिक्षा अधिकारी के द्वारा नियंत्रित की जाती हैं जो कि कम्पनी के व्यक्तियों तथा हितकारी विभाग से सम्बन्धित रहता है।

आदिवासीः—जमशेदपुर और खदानों के गांव नोआमुन्डी, गुरुमहेसनी, बदामपहर और सुलैपेत में आदिवासियों की बहुत बस्ती है। यह कम्पनी १२००० आदिवासियों को रोजगारी देती हैं और इन पिछड़े हुए लोगों को विशेष शिक्षा तथा अन्य सुविधायें देती है।

नये कार्य्यों का प्रारम्भ

श्रीजमशेद टाटा का स्वर्गवास सन् १९०४ में होगया। उनकी बनाई हुई विद्युतशक्ति और आयर्नस्टील वर्क्स की योजनाओं को उनके योग्य उत्तराधिकारियों ने मूर्त रूप दिया जो कि इस समय तक (सन् १९५५) इस देशके सबसे बड़े उद्योग हैं।

मगर इनके सिवा श्रीजमशेद टाटा के योग्य उत्तराधिकारियों ने और भी कई नये उद्योगों को इस देशमें जन्म दिया। और नये नये उद्योगक्षेत्रों में प्रवेश किया।

हवाईजहाज

देशके अन्दर टाटा सन्स ने टाटा-एयर लाईन की स्थापना करके हवाके ऊपर अधिकार किया। यह लाइन प्रति सप्ताह ७८००० मील की यात्रा कराती थी। एयर-इण्डिया और एयर इण्डिया इण्टर नेशनल ने भारत को दुनिया के दूसरे देशोंसे बहुत ही नजदीक ला दिया है।

जब भारत सरकार ने सब हवाई जहाजों की कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया तब सरकारको एयर इण्डिया और एयर इण्डिया इण्टरनेशनल के समान सुदक्ष कर्मचारियों से संगठित और व्यवस्थित कम्पनियाँ प्राप्त हो गईं।

एञ्जिनों का उत्पादन

सन् १९५४ में जर्मनी के प्रसिद्ध डैमलर बेन्फ़ (Daimler Benz) के सहयोग से टाटा सन्स ने ट्रकों के लिये उन्नतिशील डीज़ल एंजिन तथा मोटरों के लिये चेसीस का उत्पादन करने के लिये एक कारखाना खोला। उसके उत्पादन के कार्यक्रम के अनुसार पांच वर्ष के समय में यह कम्पनी पूरे डीज़ल ट्रक के चेसीस फ्रेम सहित, एंजिन, गेअर बॉक्सेस, रीअर ट्रान्समिशन्स और रीअर एक्सल्स आदि आवश्यक हिस्सों का उत्पादन करने लग जावेगी।

उसी वर्ष में याने सन् १९५४ में टाटा ने एक भिन्न प्रकार की हलचल प्रारंभ की जब कि उन्होंने वोलकाट ब्रदर्स—एक स्विस व्यापारी की कम्पनी–जो कि सन् १८५१ में स्थापित हुई थी, के इंजिनियरिंग तथा आयात के विभाग पर अधिकार कर लिया। उन्होंने एक नई कंपनी स्थापित कर दी ..जिसका कि नाम वोल्टाज़ मिमिटेड रक्खा गया जिसका सम्बन्ध आयात, विभाजन, निर्माण, डिज़ाइन सर्विसिंग और बिजली के, यंत्र संबंध के, एयर कंडिशण्ड रेफ्रीजरेशन, कृषि और टेक्सटाइल इंजिनियरिंग के कल पूर्जे तथा मशीनों के उत्पादन से था।

रसायन पदार्थों का उत्पादन

टाटा एन्ड सन्स लि० ने मीठापुर में रसायन पदार्थों का उत्पादन करने का नया कारखाना खोला। आजकल एक औद्योगिक देश के लिये रसायन पदार्थ भी उतने ही आवश्यक हैं जितना कि इस्पात। भारत अपनी आवश्यकता के योग्य रसायन पदार्थों का खुद उत्पादन कर सके इसके लिये टाटा ने सतर्क होकर योजना बनाना तथा गवेषणा करना प्रारंभ कर दिया है। गत महायुद्ध से उत्पन्न हुई असंख्य अड़चनों को पार करके टाटा केमिकल्स लि० ने अब सोडा ऐश, कास्टिक सोडा, ब्लीचिंग पाउडर, जिंक क्लोराइड, मेगनिशियम क्लोराइड, पोटेशियम ब्रोमाइड और हाइड्रोक्लोरिक एसिड सरीखे बहुत से रसायन पदार्थों का उत्पादन प्रारंभ कर दिया, जिनसे ऐसे खाद बनाये जा सकते हैं जिससे दूनी फसल पैदा की जा सकती है या ऐसी दवाइयां बनाई जाती हैं जिससे कि लाखों मनुष्यों के प्राणों को बचाया जाता है।

इस्पात, बिजली की शक्ति, रसायन पदार्थ, कपड़ा, रेडियो इत्यादि के अतिरिक्त टाटा के द्वारा उत्पादित कुछ पदार्थ तो आप लोगों के घरों में रोजाना ही काम में आते हैं, जैसे साबुन टाटा ऑइल मिल बनाता है, जो कि करीब करीब उतना ही आवश्यक है जितना कि समृद्धिशाली भारत के निर्माण के लिये इस्पात, क्योंकि मजबूत होने के लिये हमें तन्दुरुस्त होना आवश्यक है और तन्दुरुस्त होने के लिये साफ रहना भी उतना ही आवश्यक है। इसके पश्चात् आपको लकमे लिमिटेड के द्वारा उत्पादित सुगंधित तेल वगैरह मिलेंगे जो कि टाटा ऑइल मिल्स कम्पनी की सहायक कम्पनी है।

सार्वजनिक कार्य

अधिक तर मकान भीतर से एक समान हैं, परन्तु टाटा के विशेष दफ्तर में एक बरामदा है जो कि दूसरों से बिलकुल भिन्न है। जिसके कि दरवाजे 'चेरीटेबल ट्रस्ट' के नामों से सुशोभित हैं जिनको कि टाटा के परिवार ने स्थापित किया है। ये नामों की प्लेटें ५ करोड़ रुपयों की पूँजी बतलाती हैं। इस पूँजी का ४।५ हिस्सा टाटा की खास फर्म में लगा हुआ है और इस पर जो लाभ कमाया जाता है वह वापस भारत की जनता की सेवा के लिये जाता है। यह रुपया वहां पर खर्च किया जाता है जहां पर कि इसकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट ने मेडिकल और औद्योगिक क्षेत्र में शिक्षा तथा गवेषणा के कार्य के लिए सहायता पहुँचाई है जो कि अब तक २ करोड़ ,३५ लाख रुपया बाँट चुका है। इस विशाल धन का कुछ भाग टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल बनाने में व्यय किया गया जो कि भारत वर्ष में केन्सर के समान भयंकर रोगों का पहला अस्पताल है। सर दोराबजी टाटा द्वारा स्थापित लेडी टाटा मेमोरियल ट्रस्टजो कि ल्यू कीमिया तथा रक्त सम्बन्धी बीमारियों को अच्छा करने की गवेषणा के कार्य को सहायता देता है। और दी सर रतन टाटा चेरीटीज जो कि अब तक १२७-५ लाख रुपय व्यय कर चुकी है जिसका कि सारा ध्यान सामाजिक उत्थान के ही ऊपर केन्द्रित है।

टाटा के परिवार वालों ने यह महसूस किया कि सामाजिक उत्थान करना भी एक विज्ञान बन गया है तो उन्होंने "टाटा इन्स्टिट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज" की स्थापना की जो कि बम्बई नगर के गन्दे स्थानों पर कार्य करता है और विद्यार्थियों को शीघ्र ही परिवर्तन शील भारत की असंख्य सामाजिक समस्याओं को सुलझाने की शिक्षा देता है। इस कार्य से बिलकुल भिन्न परन्तु उतना ही महत्वपूर्ण 'दी टाटा इन्स्टीच्यूट ऑफ फन्डामेन्टल रिसर्च' भौतिक शास्त्र और गणित शास्त्र की समस्याओं की जांच करता है और कॉस्मिक किरणों जैसे प्रश्नों की भी जांच करता है।

टाटा परिवार के संस्थापक श्री जे० एन० टाटा ने भारतीय स्नातकों को उच्च शिक्षा के अध्ययन के लिए विदेशों में भेजने में समर्थ बनाने के हेतु काफी धन व्यय किया। इसके अतिरिक्त श्री जमशेद टाटा ने बंगलोर में "इण्डियन इन्स्टिच्यूट ऑफ साइन्स" की स्थापना की जो कि इस बात को प्रमाणित करता है कि कला पूर्ण ज्ञान के बिना सारे उद्योगों की शृंखला, जिसका कि हम वर्णन कर चुके हैं, का अस्तित्व रहना असम्भव हो जायगा और वह कलापूर्ण ज्ञान हमारे ही देश बन्धुओं से प्राप्त किया जा सकेगा।

आज टाटा के नियंत्रण में जो आर्थिक साधन हैं उनमें १३६ करोड़ रुपयों से अधिक सम्पत्ति लगी लगी हुई है और यह बहुत से मनुष्यों द्वारा संभाली हुई है। टाटाके व्यापार में सम्पूर्ण साझेदारों (Share holders) की गिनती लगाई जाय तो यह संख्या ८५००० से कम न आवेगी। इनमें अधिकतर बहुत छोटे मनुष्य हैं, किसी भी प्रकार धनवान नहीं हैं। इसका मतलब यह हुआ कि टाटाने एक तरहसे १३६ करोड़ साधारण जनता का व्यय कर रक्खा है। टाटा ने इस धन का सम्भवतया जितना बुद्धिमानी पूर्ण व्यय किया जा सकता था किया। यह धन भारत को औद्योगिक देश बनाने के लिये व्यय किया गया जो कि केवल अपने ढङ्ग का माल ही नहीं बनाता और हजारों मनुष्यों को रोजगारी ही नहीं देता बल्कि और उद्योगों को भी कार्य करने में सहायता देता हैं। एक इस्पात का कारखाना ही उदाहरण के रूप में लीजिये जिसके ऊपर कि सैकड़ों अन्य कारखाने जो कि इस्पात को काम में लेते हैं अपना भरण पोषण करते हैं।

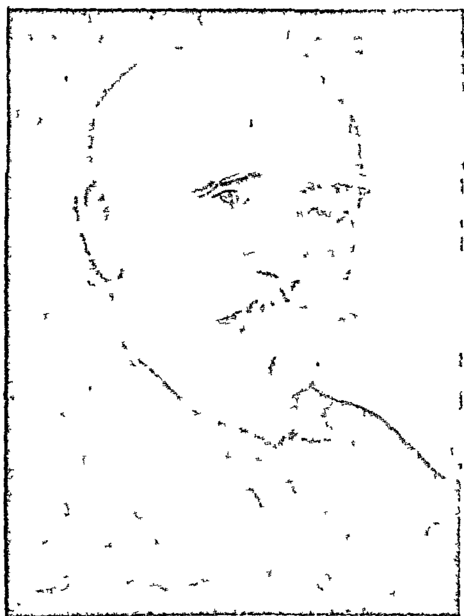
और इन सबके परिणाम स्वरूप गत दस वर्षों में टटा ने अपने देश भाईयों जेबों में केवल मजदूरी और वेतन के रूप में १४४ करोड़ रुपया दे दिया है।

सर दोराब ताता

(१८५६—१९३२)

सर दोराब ताता श्री जमशेद नसरवाना ताता के बड़े पुत्र थे। इनका जन्म २७ अगस्ट १८५९ को बम्बई में हुआ था। इनके पिता श्री जमशेद नसरवान ताता भारतीय उद्योग के एक तेजस्वी पायोनियर (प्रारम्भ करने वाले) थे। सर दोराब ताताने पहले बम्बई के प्रोप्राइटरी स्कूल में शिक्षा ग्रहण की और बाद में अध्ययन के लिए इंगलैण्ड गये। वहाँ केम्ब्रिज के कॉलेज में आपने अध्ययन

किया। सन् १८७७ में इन्होंने फुटबाल और क्रिकेट के खेल में विशेष योग्यता प्राप्त की। सन् १८७९ मे वापस बम्बई आकर आपने सेण्ट जेवियर कॉलेज में अपना अध्ययन चालू किया और बम्बई युनिवर्सिटी से बी० ए० की डिग्री प्राप्त की। कुछ समय तक आपने बाम्बे गजट के ऑफिस मे प्रेक्टिकल ट्रेनिंग प्राप्त किया और उसके पश्चात् आपके पिता ने आपको व्यवहारिक अनुभव लेने के लिए नागपुर एम्प्रेस मिल मे भेजदिया, वहाँ अनुभव प्राप्त कर आप शीघ्र ही अपने पिता को अपनी फर्म के कार्यों में सहायता देने लगे। यहाँपर उन्होंने भारत की व्यवसायिक और औद्योगिक स्थिति का गम्भीर अध्ययन किया और भारत के औद्योगिक विकास के सम्बन्ध मे अपने पिता की कल्पनाओ को पूरी तरह से समझा।


सर दोराव ताता

सन् १९०४ में सर दोराव ताता के पिता श्री जमशेद ताता का स्वर्गवास हो गया और सन् १९०७ मे इनके फर्म का टाटा सन्स कम्पनी के नाम से पुनर्निर्माण किया गया और सन् १९१७ में यह कम्पनी टाटा सन्स लिमिटेड के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस लम्बे समय मे कम्पनी ने कई बड़े २ दूरदर्शिता पूर्ण प्रतिष्ठानों की स्थापना की। इनमें से सबसे पहला विशाल प्रतिष्ठान "दी टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स" था। इस प्रतिष्ठान की स्थापना में सर दोराब टाटा ने अपने भाई सर रतन टाटा और भतीजे आर० डी० टाटा के साथ काफी दिलचस्पी ली। लोहे का यह विशाल कारखाना गहरे अध्ययन और योजना के साथ सन् १९११ में साकची नामक ग्राम मे जो इस समय जमशेद पुर के नाम से प्रसिद्ध है स्थापित किया गया।

दूसरा प्रतिष्ठान जो सर दोरार्व टाटा ने अपने गहरे अनुभव और योजना के साथ स्थापित किया, वह टाटा हाइड्रो इलेक्ट्रीक वर्क्स था। पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में होने वाली वर्षा के पानी को एक विशाल बाध द्वारा पश्चिम की ओर मोड़ कर उससे बिजली पैदा करना और लाखों एकड़ भूमि की सिचाई करना ही इस योजना का उद्देश्य था। यह योजना वास्तव में श्री जमशेद टाटा के दिमाग से पैदा हुई थी। अपने पिता के द्वारा बनाई इस योजना को मूर्त स्वरूप देकर उनकी कल्पना को साकार करने का श्रेय उनके सुयोग्य पुत्र सर दोराव टाटा ने प्राप्त किया।

सन् १९३१ में अपनी पत्नी के स्वर्गवास के समय सर दोराव टाटा ने इनकी स्मृति मे २५ लाख रुपये निकाले। इन पच्चीस लाख रुपयों से मनुष्य के रक्त के अन्दर होने वाली ल्यूकोमियाँ नामक बिमारी की खोज करने के लिए एक संस्था स्थापित की।

सन् १९१० में श्री दोराव टाटा को भारत के औद्योगिक विकास में प्रमुख भाग लेने के उपलक्ष मे भारत सरकार ने "सर नाइट" की उपाधि से सुशोभित किया।

अपने पिता श्री जमशेद जी की स्मृति में सर दोराव टाटा और उनके भाइयों ने कई सार्वजनिक लाभ की वस्तुओं का निर्माण कराया। इनमें सबसे महत्व की चीज उनके द्वारा बंगलोर में स्थापित किया हुआ 'दी इण्डियन इन्स्टीच्यूट आफ साइन्स'' नामक संस्था है। जिसकी स्थापना के लिए ३० लाख रुपये की रकम निकाली गई। इनके पिता श्री जमशेद टाटा की प्रबल इच्छा थी कि भारत वर्ष में एक ऐसा शिक्षा केन्द्र खोला जाय, जहां पर उच्च शिक्षा प्राप्त (Post Graduate) नव युवक आकर विज्ञान संम्बधी ऊँची खोजें कर के देश के विकास सहायता पहुँचायें। श्री जमशेद के दो पुत्रों ने अपने पिता के इस महान स्वप्न को पूरा किया और भारत सरकार व मैसूर सरकार के सहयोग से इस महान् संस्था की स्थापना की। आज यह "दी इण्डियन् इन्सटीय्यूट आफ साइन्स" इस देश में अपने ढंग की एक प्रमुख संस्था है। जो प्रतिवर्ष विज्ञान सम्बन्ध में अनुसन्धान करनेवाले विद्यार्थियों को राष्ट्र की भेंट करती है।

सर दोराव टाटा ने अपनी मृत्यु के समय अपनी सारी प्राइवेट सम्पति को सार्वजनिक कार्य के लिए एक ट्रस्ट बना कर उसके जिम्मे कर दिया। यह ट्रस्ट सर दोराब टाटा ट्रस्ट के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें ढाई करोड़ रुपये की सन्पत्ति लगी हुई है। इस फ़ण्ड की आमदनी से विभिन्न प्रकार के सार्वजनिक कार्यों में सहायता दी जाती है।

इस प्रकार औद्योगिक तथा सार्वजनिक क्षेत्रों में अक्षय कीर्ति का उपार्जन कर सर दोराव टाटा ३ जून सन् १६३२ को योरोप में स्वर्ग वासी हुए।

श्री जे० आर० डी टाटा

श्री जे० आर० डी० टाटा का जन्म सन् १६०४ में हुआ। आप इस समय "टाटा सन्स-प्रायवेट लि० और टाटा इण्डस्ट्रीज प्रायवेट लि० के चेयर मैन हैं। तथा टाटा से सम्वन्धित सभी कम्पनियों और ट्रस्टों के चेयरमैन तथा डाइरेक्टर हैं। टाटा इन्स्टीच्यूट आफ फन्डामेण्टल रिसर्च के चेयर मैन है। टाटा इन्सटीय्यूट आफ सोशल साइन्स के गवर्निङ्ग बोर्ड के आप मेम्बर है। इण्डियन इंस्टीव्यूट आफ साइन्स बैंगलोर की कोर्ट के आप प्रेसीडेण्ट हैं। एशोसियेटेड सिमेण्ट कं० लि०, हिन्दुस्तान एयर क्राफ्ट लि०, रिजर्व बैंक आफ इण्डिया के आप डाइरेक्टर हैं। एयर इण्डिया इन्टर नेशनल कारपोरेशन के आप चेयर मैन और इण्डियन एयर लाइंस कारपारेशन के आप मेम्बर है। नेशनल एसोसियेशन आफ फोरमैन अमेरिका के द्वारा सन् १९५३ में आप उस वर्ष के अन्तरराष्ट्रीय पुरुष की तरह सम्मानित किये गए। सन् १६५५ में भारत के राष्ट्रपतिने आप को "पद्म विभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। सन् १९४८ में आप इण्डियन एयर फोर्स के आनरेरी ग्रूफ कैप्टन बनाए गए। तथा यूनाटेड नेशन्स की जनरल एसेम्बली के तीसरे सीज़न में आप भारतीय डेलीगेशन के मेम्बर थे।



श्री जे० आर० डी टाटा

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists

भारत की औद्योगिक प्रतिभाएँ

Industrial magnates of India of 1955.

मेसर्स सूरजमल नागरमल उद्योग प्रतिष्ठान

(Jute Pioneer in India)

संचालक—

१—श्रीहनुमान जूट मिल्स
२—श्रीबंगाल जूट मिल्स कं० लि०
३—नासकपारा जूट मिल्स कं० लि०
४—रायगढ़ जूट मिल्स लि०
५—दी मून मिल्स लि०
६—दी एलफिन्स्टन स्पि० एण्ड वी० मिल्स लि०
७—दी ओरिएण्टल गैस कं० लि०
८—कलकत्ता गैस को० लि०
९—दी बाम्बे गैस कम्पनी लि०
१०—सिताबगंज शूगर मिल्स लि०
११—नार्थ बंगाल शूगर मिल्स लि०
१२—हवड़ा ट्रेडिंग को० लि०
१३—जेम्स अलेक्जेण्डर एण्ड को० लि०
१४—श्री हनुमान फाउण्डरी वर्क्स।
१५—नेशनल कॉस्टिंगकोन।
१६—दी जनरल इन्स्युरेंस सोसायटी लि०

भारतमें जूट उद्योगके पायोनियर

स्व० सेठ सूरजमल जालान तथा बन्सीधर जालान

भारतके औद्योगिक इतिहासमें स्व० सेठ सूरजमल जालान तथा स्वर्गीय सेठ बन्सीधर जालानका नाम उनके व्यवसायिक साहस औद्योगिक कर्मठता और दूरदर्शिताके कारण स्थायी रहेगा।

एक मध्यवित्त परिवारमें जन्म लेकर, मनुष्यको उन्नतिके पथपर ले जानेवाले सभी साधनोंसे वंचित रहकर भी इन दोनों जालान बन्धुओंने सिर्फ अपने पुरुपार्थ और ईश्वरके विश्वास पर खड़े होकर निजी परिश्रमसे औद्योगिक जगत्में सफलताका एक आश्चर्यजनक उदाहरण उपस्थित किया है।

जूटके विशाल उद्योगमें अंग्रेजोंके एकाधिकारको चुनौती देकर इन दोनों भाइयोंने अनेक विपरीत परिस्थितियोंमें प्रवेश किया। इस उद्योगकी बारीकसे बारीक बातोंका ज्ञान प्राप्त किया और मजबूतीके साथ इस विशाल उद्योगमें कदम बढ़ाते हुए, क्रमागत उन्नति करते हुए वह स्थिति पैदा कर ली कि लोग इन्हें जूट उद्योगका *पायोनियर* कहने लगे। इन्होंने व्यवहारिक उदाहरणोंसे सिद्ध कर दिया कि जूट उद्योगका संचालन सिर्फ अंग्रेजोंकी मौरूसी जायदाद नहीं है बल्कि भारतीय व्यक्ति भी उसका उतनी ही योग्यतासे संचालन कर सकते हैं।

आज इन दोनों बन्धुओं द्वारा स्थापित "सूरजमल नागरमल प्रतिष्ठान" भारतवर्षका एक प्रमुख औद्योगिक प्रतिष्ठान है जिसके, पास चार बड़ी २ जूट मिलें, २ कॉटन मिलें, २ शक्कर मिलें, ४ जूट प्रेस, १ बीमा कम्पनी, ३ गैस कम्पनी, ४ इञ्जीनियरिंग प्रतिष्ठान तथा और भी कई प्रतिष्ठान हैं। जिनका परिचय आगेके पृष्ठों पर मिलेगा।

सूरजमल नागरमल उद्योग प्रतिष्ठान

राजस्थानके मध्यमवित्त कुटुम्बमें पैदा होकर भारतके औद्योगिक जगतमें अपनी बुद्धिमानी, व्यवसायिक प्रतिभा, विचक्षण औद्योगिक साहस और दूरदर्शिता के बल पर महान् उन्नति करने वाले सेठ सूरजमल जालान का नाम भारतवर्ष के औद्योगिक इतिहास में हमेशा अमर रहेगा।

पैसेसे पैसा कमाना और उद्योगसे उद्योग बढाना दुनियामें इतना कठिन नहीं है जितना बिना पैसे और साधनके केवल अपने साहसके बल पर औद्योगिक क्षेत्रमें प्रवेश कर उसमें आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कर दिखाना है, सेठ सूरजमल जालान उन्हीं स्वनिर्मित उद्योगपतियों में से एक थे।

पूर्व इतिहास

इस परिवारका पूर्व इतिहास सेठ रूढ़मल जालानसे प्रारम्भ होता है जिनके सेठ कस्तूरचन्द, सेठ बीजराज और सेठ गुलाबराय नामक तीन पुत्र हुए।

विक्रम संवत् १९१० के करीब सेठ कस्तूरचन्द पैदल मार्गसे चलकर आसामके ग्वालपाड़ा नामक स्थानपर गये। कहना न होगा कि उस समय रेल, मोटर, तार इत्यादि यातायातके साधनोंका अभाव होनेसे पैदल यात्रा अत्यन्त भयंकर होती थी, चोर, डाकू, जंगली हिंसक जानवरोंके कारण यात्रियोंकी जान हमेशा खतरेमें रहती थी। ऐसे वातावरणमें अपने देशसे हजारों मील दूर आसामके समान दूरवर्ती प्रान्तोंमें जहांपर मीलोंतक बेंतके जंगल खड़े थे जाकर अपना व्यवसाय जमानेका प्रयत्न करना मानवीय साहसका उत्कृष्ट उदाहरण था। आसाम पहुँचकर सबसे पहले आपने वहांपर लाडनूंके बैंगानियोंकी फर्ममें नौकरी की। वहींपर आपने देखा कि धनश्री नदीके किनारेपर एक बहुत अच्छा मैदान बेंतके जंगलके रूपमें पड़ा हुआ है। सेठ कस्तूरचन्द जालानने अपनी विचक्षण बुद्धिसे उस स्थान-पर एक गांव बसानेकी कल्पना की और तत्काल ही वहांके कलक्टरसे इसके लिये स्वीकृति मांगी। कलक्टरकी स्वीकृति मिलनेपर आपने अपने कुछ साथियोंके साथ वहां जाकर गोलाघाट नामक बस्ती बसायी और अपना गोला कायम किया और फिर धीरे धीरे अपने भाइयोंको भी वहां बुला लिया।

सेठ कस्तूरचन्द जालानका स्वर्गवास संवत् १९२९ में हो गया। सेठ कस्तूरचन्द जालानके छोटे भाई सेठ गुलाबराय जालानके हरदेवदास नामक पुत्र हुए।

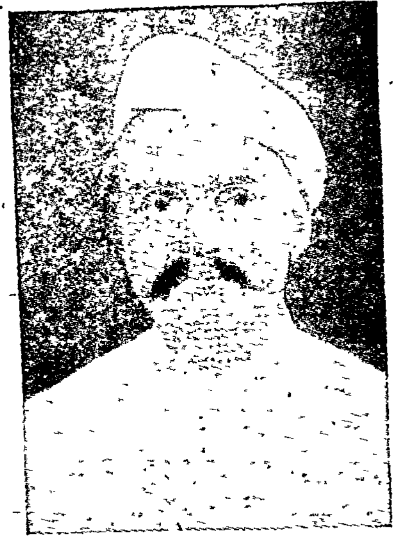
सेठ हरदेवदासके सेठ सूरजमल जालान, सेठ बन्शीधर जालान तथा सेठ बैजनाथ जालान नामक तीन पुत्र हुए।

सेठ सूरजमल जालान

सेठ सूरजमल जालानका जन्म संवत् १६३६ में हुआ। जब इनकी अवस्था केवल नौ वर्षकी थी तभी इनकी माताका स्वर्गवास हो गया और ये अपनी सौतेली माताके साथ रतनगढ़ आये। संवत् १६५२ में तेरह वर्षकी उम्रमें इनका विवाह सेठ रामचन्द्र बाजोरियाकी सुपुत्री रमादेवीके साथ हुआ। उसके पश्चात् ये व्यवसायके निमित्त अपने पिताके साथ गोलाघाट आसाम गये। मगर चार वर्ष बाद ही इनके पिता सेठ हरदेवदासकी मृत्यु हो गयी।

सेठ हरदेवदासके समयमें ही इस परिवारकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो गयी थी और मृत्युके समय वे कई हजारका कर्ज छोड़ गये थे।

पिताकी मृत्युके पश्चात् सारा कार्य और विस्तृत परिवारके खर्च संचालनका भार सेठ सूरजमल जालानपर आ पड़ा। गोलाघाटमें अब इनके अनुकूल क्षेत्र नहीं रहा था, इसलिए इन्होंने उड़ीसाके कटक शहरमें एक केरोसिनकी दुकानपर काम करना शुरू किया, मगर उस नौकरीसे इनका काम नहीं चला और ये वहांसे फिर कलकत्ता आकर कपड़ेका व्यवसाय करने लगे। मगर उसमें भी भाग्यने इसका साथ नहीं दिया।



स्व० सेठ सूरजमल जालान

इधर संवत् १६५८ में इनके श्वसुर सेठ रामचन्द्र बाजोरिया भी अपने एक तीन वर्षके पुत्र सेठ नागरमल बाजोरियाको छोड़कर स्वर्गवासी हो गये और उस परिवारका बोझ भी इन्हींपर आकर पड़ा। मृत्युके समय सेठ रामचन्द्र बाजोरिया सेठ विशनदयाल हरदयालके यहां जूटका काम देखते थे। उनकी सलाहसे सेठ सूरजमल जालानने नारायणगंजसे नौकाओंके द्वारा जूट लाकर यहांकी जूट मिलोंको सप्लाई करना प्रारम्भ किया।

कुछ समय पश्चात् सेठ रामचन्द्र बाजोरियाकी पत्नीने इनको व्यापार करनेके लिए दस हजार रुपयेकी पूंजी देकर, दोनों परिवारोंके साझेमें व्यापार शुरू करनेको कहा। इस प्रकार संवत् १६६२ में सबसे पहले 'सूरजमल नागरमल' फर्मकी स्थापना हुई। इस फर्ममें भी पहले वर्ष आपको कुछ घाटा रहा। मगर दूसरे वर्षसे ईश्वरकी कृपादृष्टि आप पर हुई और आपने इस वर्ष अपने घाटेको पूरा करके कुछ लाभ भी संचित किया जिससे आपने अपने पिताजीके समयके कर्जको चुका दिया।

इस सफलतासे उत्साहित होकर सेठ सूरजमल जालानने, सेठ दुलीचन्दके गोलावेरी जूट प्रेसमें जूट बेलिंगका व्यवसाय प्रारम्भ किया और अपने छोटे भाई सेठ बन्शीधर जालानको भी जो दूसरी जगह नौकरी करते थे अपने साथ बुला लिया।

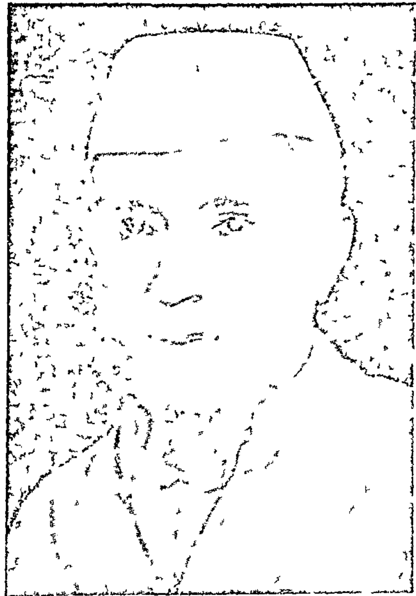
भूमिका

भारतीय गणतन्त्र का गत नौ वर्षों का इतिहास स्फूर्त्ति, प्रेरणा और तूफानी प्रगति का एक जीता जागता इतिहास है जिसने हजार वर्षों से गुलामीके शिकञ्चे में फँसे हुए एक विशाल राष्ट्र को नया जीवन देकर इतने थोड़े समय में एक महान राष्ट्र के रूप में परिवर्त्तित कर दिया।

बीसवीं सदी के प्रथम पूर्वार्द्ध में संसार के तीन विशाल, लेकिन अत्याचार और गुलामी की चक्की में पिसते हुए राष्ट्रों ने महान् क्रान्तिके द्वारा करवट बदली और एक समानान्तर रेखा पर तीनों ने प्रगति के पथपर अपनी दौड़ शुरू की। उन्नति के पथपर शीघ्र गामी गति से दौड़ते हुए इन तीन महान् राष्ट्रों का इतिहास विश्व के इतिहास में अत्यन्त प्रेरणा दायक और शिक्षा प्रद है।

इनमें सबसे पहले क्रान्ति की चिनगारी रूस के अन्दर प्रगट हुई। जारशाही और सामन्त शाहीकी दुर्द्धर्ष चक्की में पिसती हुई रूस की जनता ने, प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के पश्चात् ही साम्यवादी सिद्धान्त के जनक कार्लमार्क्स के अनुयायी लेनिन के नेतृत्व में जारशाही के तख्ते को उलट दिया और उसके पश्चात् अपने महान् नेताके नेतृत्व में साम्यवादी सिद्धान्तों पर अपने देश की संगठन प्रारम्भ किया। अपने सिद्धान्त के विरोधियों को भीषण रक्तपात, गोली काण्ड, और फाँसी के तख्तों पर खतम करके एक सिद्धान्त, एक व्यवस्था और एक विचारधारा के अन्तर्गत इस देश ने अपना पुनर्निर्माण किया। पहली पंच वर्षीय योजना बनी, दूसरी पञ्चवर्षीय योजना बनी, लेनिन गये उनकी जगह स्टेलिन आये। समस्त देशका उद्योगी करण हुआ, बड़े २ विशाल कारखाने खुले और इतने में ही दूसरा महायुद्ध आ धमका। इस महायुद्ध में इस देश के निर्माण कार्य्य, सुसंगठित व्यवस्था और अभूतपूर्व अनुशासन की कठोर परीक्षा हुई, शुरू २ में तो ऐसा मालूम हुआ मानों आज, मानों कल ही इस विशाल देश का पतन हो जायगा। मगर थोड़े ही समय में हारकी बाजी जीत में बदल गई और इस नवनिर्मित विशाल देश ने जर्मनी के समान महान् शक्ति को देखते २ पछाड़ दिया।

विश्व राजनीति के महान खिलाड़ी
गणतंत्र भारत के प्रधान मन्त्री



पं० जवाहर लाल नेहरू
जिनके महान् नेतृत्व में भारतीय महान् राष्ट्र का पुनर्निर्माण हो रहा है।

दूसरे महायुद्ध के पश्चात् ही रूस की गणना संसार के तीन बड़े राष्ट्रों में हो गई।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् संसार के और कई राष्ट्रों ने स्वाधीनता की ओर अपनी करवट बदली। उनमें चीन और भारत ये दो देश प्रधान हैं। ये दोनों ही देश अपने प्राचीन इतिहास और प्राचीन संस्कृति के धनी और विशाल जनसंख्या के संरक्षक हैं। इन दोनों का इतिहास भी एक सुदीर्घ अतीत से एक समानान्तर रेखा पर चलता आ रहा है।

चीन की जनता शताब्दियों से अनेक प्रकार की सामाजिक कुरीतियों, अशिक्षा, गरीबी और विषम समाज व्यवस्था की शिकार हो रही थी। कभी जापान के द्वारा वह सताई जाती थी और कभी अपने ही देश के राज्य वंश और सामन्त शाही के द्वारा वह अत्याचार की शिकार बनती थी। दूसरा महायुद्ध समाप्त होते ही वहां पर महान् साम्यवादी क्रान्ति हुई और करीब २ रूस के ही अनुकरण पर वहां की राज्य सत्ता साम्यवादियों के हाथ में आई। काफी रक्तपात हुआ, विनाश की ताण्डव लीला हुई, मगर अन्त में सब कुछ ठीक हो गया।

तब से अब तक के इस थोड़े से समय में चीन के इतिहास ने जो सर्वतो मुखी उन्नति की है वह अत्यन्त आश्चर्य जनक है।

ठीक इसी के साथ २ सन् १९४७ की १५ अगस्त को भारतके समान महान् देश ने भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद को हाथों से अपनी सत्ता हस्तान्तरित की।

दुर्भाग्यवश इसी समय देश का दो भागों में विभाजन होने से और जनता की साम्प्रदायिक भावनाओं में उफान आने से कुछ महीनों तक देश में भयङ्कर विशृंखला, आपसी संघर्ष और रक्त पात की घटनाएं हुई। मगर थोड़े ही समय में ये सब शान्त हो गई। और फिर पं० जवाहर लाल नेहरू के महान् नेतृत्व में इस देश में अपनी प्रगति का इतिहास बनाना शुरू किया।

मगर सबसे बड़ा आश्चर्य जो हमारे इतिहास के निर्माण में हो रहा है वह यह है कि हम अपने राष्ट्र के इतिहास का निर्माण स्वयं अपने द्वारा निर्मित एक मौलिक सिद्धान्त पर कर रहे हैं जिसका प्रयोग राजनीति के क्षेत्र में आजतक संसार के किसी राष्ट्र ने नहीं किया। अहिंसा और सत्य इन दो सिद्धान्तों पर आधारित "पञ्चशील" के महान् सिद्धान्त ने आज सारे संसार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रक्खा है।

रूस और चीन के इतिहास प्रेरणा दायक, आश्चर्य जनक और प्रगति पूर्ण जरूर हैं, उनके सिद्धान्त भी साम्यवाद के नये सिद्धान्त पर अवश्य आधारित हैं मगर राष्ट्र निर्माण की उनकी क्रियाएँ प्रायः प्राचीन परम्पराओं पर ही आधारित हैं। विरोधी पक्ष का हनन करके, विचार स्वाधीनता पर प्रतिबन्ध लगा कर, रक्तपात, फाँसी इत्यादि सभी चीजों का उपयोग करके एक पक्ष और विचारधारा का राज्य स्थापित करके ही उन्होंने अपने राष्ट्रों का निर्माण किया है। वहां की पार्लियामेंटों में आपको कभी किसी विरोधी दल की मुक्त विचारधारा की आवाज सुनने को न मिलेगी।

इंगलैण्ड और अमेरिका के शासन में आपको स्वस्थ विरोधी दल और मुक्त विचार-धारा की आवाज जरूर सुनने को मिलेगी मगर संसार में अपने विरोधी राष्ट्रों को दबाने के कूटनीति पूर्ण षड्यन्त्र, मानव जाति पर अपनी सत्ता और शान जमाये रखने के लिए तरह २ की घातक प्रवृत्तियाँ, उपनिवेशवाद और रंगविभेद की भावनाओं की दुरभिसंधि इन राष्ट्रों की



राजनीति के रोम २ में समाई हुई हैं और इसी से आज ये संसार की प्रताड़ित जातियों की आँखों में बुरी तरह खटक रहे हैं।

चूँकि ये दोनों ही प्रकार की कार्य्य-प्रणालियां प्राचीन परम्पराओं पर आधारित हैं, इसलिए अत्यन्त प्रगतिशील होने पर भी ये संसार में शान्त और स्वस्थ वातावरण का निर्माण करने में असमर्थ सिद्ध हो रही हैं। इसके विपरीत में दोनों विचार धाराएँ संसार के अन्दर दो युद्ध कालीन मोर्चों के रूप में परिणत हो गई हैं और किसी भी मिनिट संसार की शान्ति को खतरे में डाल सकती हैं।

मगर इन दोनों धूम्र केतुओं के बीच में एक शीतल चन्द्रमा की तरह धीरे २ भारत राष्ट्र का उदय हो रहा है और वह अपनी शीतल चन्द्रिका को समस्त संसार की मानव-जाति पर वरद हस्त की तरह फैला रहा है।

इन छः सात वर्षों में इस नवोदित राष्ट्र ने विश्व की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के अन्दर कठिन से कठिन समय में अपना जो महत्वपूर्ण पार्ट अदा किया है उसने सारे संसार की समस्त मानव-जाति का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लिया है। रूस, अमेरिका और इंगलैण्ड का जो अन्तर्राष्ट्रीय महत्व है वह उनके सैन्य बल, शस्त्र बल और अर्थबल पर आधारित है। मगर भारत के पास आज किसी प्रकार का सैन्यबल, शस्त्रबल और अर्थबल न होते हुए भी केवल अपने मौलिक सिद्धान्त के बल पर इतने थोड़े समय में उसने संसार के महान् राष्ट्रों के बीच अपना स्थान प्राप्त कर लिया है और आज यह हालत हो गई है कि संसार की राजनीति में उत्पन्न होने वाले ज्वार भाटे को शान्त करने के लिए आज जितनी उत्सुकता से इंगलैण्ड और अमेरिका उसकी ओर नजर जमाये रहते हैं उतनी ही उत्सुकता से रूस, चीन और मिश्र भी उसकी ओर देखते रहते हैं। उसके नेता का जितना महान् स्वागत रूस में होता है उतना ही अमेरिका में होता है और उतना ही सऊदी अरब और चीन में होता है।

किसी भी देश के लिए यह कम गौरव की बात नहीं है कि संसार की किसी भी कठिन से कठिन महत्व पूर्ण समस्याको सुलझानेके लिए संसार के सारे राष्ट्र उसके मुँह की ओर देखे, यह महान् सम्मान आज संसार में न अमेरिका को प्राप्त है न रूस को और न चीन को। आज सारे संसार में इस महत्व को प्राप्त करने वाला अगर कोई एक महान् देश है तो वह भारत है। जो संसार के प्राचीन इतिहास में भी जगद्गुरु के पद पर था और आज फिर से उसी पद पर आसीन होने जा रहा है।

और इसका एक मात्र कारण यह है कि उसकी राजनीति में किसी भी प्रकार के स्वार्थ की गंध नहीं है, वह अपने सिद्धान्तों को किसी पर जबर्दस्ती लादना नहीं चाहता, वह संसार के प्रत्येक छोटे से बड़े राष्ट्रको तथा समग्र मानवताको फलते फूलते देखना चाहता है, वह किसी देश की घरू राजनीति में किसी भी प्रकार का बेजा हस्तक्षेप नहीं करना चाहता और अपने महान् नेता महात्मा गांधी के पद चिन्हों पर चल कर वह सारे संसार में शान्ति, अहिंसा और सत्य की स्थापना कर मानव-जाति को युद्ध के आतंक से मुक्त करना चाहता है।

औद्योगिक विकास

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के साथ २ गणतन्त्र भारत ने राष्ट्रनिर्माण के कार्यों में भी धुँवाधार गति से अपनी प्रगति प्रारम्भ की। ब्रिटिश साम्राज्य के युग में बड़े २

गणतंत्र भारत के एक्स उद्योग मन्त्री और वर्तमान वित्तमन्त्री-जिनके तत्वावधान में भारतीय उद्योग ने अभूतपूर्व उन्नति की है।



श्री टी० टी० कृष्णमाचारी

औद्योगिक उत्पादनों की कुञ्जी ब्रिटेन ने अपने हाथों में रक्खी थीं। ऐसे उत्पादनों के सम्बन्ध में हमेशा भारत को दूसरे देशों का मुंह ताकना पड़ता था। इस बारे में देश को स्वावलम्बी बनाने के लिए नव भारत की सरकार ने इतनी तेजी से काम प्रारम्भ किया कि आठ-नौ वर्षों के इस छोटे से समय में ही यहां पर रेलवे एञ्जिन, डिब्बे डीजल एञ्जिन, मोटरें, सायकलें, सभी का निर्माण होने लगा। इस्पात के सम्बन्ध में देश को आत्म निर्भर करने के लिए तीन बड़े २ कारखानों का निर्माण प्रारम्भ कर दिया गया। सारे देश की कृषि योग्य भूमि में सिंचाई की सुविधा के लिए और राष्ट्र के छोटे से छोटे देहातों में भी बिजली का प्रकाश और शक्ति सुलभ करने के लिए बड़ी २ विशाल नदियों पर बांध बांधने के काम अरबों रुपयों की लागत से प्रारम्भ किए गये जिन पर पूरी तेजी से काम हो रहा हैं।

देश के नव निर्माण में प्रथम पंच वर्षीय योजना समाप्त हुई। योजनाके पांच वर्षों मेंदेश के उत्पादन के आंकड़ों को देखने से पता चलेगा कि प्रायः सभी प्रकार के औद्योगिक उत्पादनों में आशा और निर्द्धारित लक्ष्य से अधिक वृद्धि हुई है। कपड़ा, शक्कर तथा इञ्जीनियरिंग उद्योगों के उत्पादन ने तो तमाम पिछले रेकार्डों को तोड़ दिया है। जूट का बहुत बड़ा क्षेत्र पाकिस्तान में चले जाने से हमारे यहां कच्चे जूट का उत्पादन बहुत कम रह गया था मगर इस थोड़े से समय में कच्चे जूट का उत्पादन भी हमने इतना बढ़ा लिया है कि वह हमारे जूट मिलों की मांग के लगभग निकट पहुँच गया है। रेलवे उद्योग ने भी हमारे यहां धुंआंधार प्रगति की है। जिसका वर्णन पुस्तक के अन्दर देखने को मिलेगा। दूसरी पंचवर्षीय योजना में देश दृढ़ता पूर्वक अपने समाजवादी लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है।

जनता की कठिनाइयाँ

मगर यह भी सत्य है कि निर्माण में होने वाले अरबों रुपयों के खर्च का बोझ जनता के कन्धों पर ही पड़ रहा है। ऐसी हालत में उसकी कठिनाइयां बढना स्वाभाविक ही हैं। नित्य प्रति लगने वाले करों और दिन दिन बढने वाली मंहगाई से उसका घबरा जाना भी स्वाभाविक ही है क्योंकि साधारण जनता केवल अपने वर्तमान को ही देखने की अभ्यस्त होती है। भविष्य का सुनहला प्रकाश उसकी आंखों को सन्तोष नहीं देता।

सन् १९०३ में सेठ बन्शीधर जालानकी शादी हुई और सन् १९०४ में सेठ सूरजमल जालानके पुत्र श्री मोहनलाल जालानका जन्म हुआ और तभीसे भाग्यलक्ष्मी इनके बराबर अनुकूल रही।

सन् १९०७ में सेठ सूरजमल जालानने हेम्प बेलिंगका काम प्रारम्भ किया और इंगलैंड तथा जर्मनीके साथ एक्सपोर्ट व्यापार भी प्रारम्भ कर दिया।

सन् १९१२ में मेसर्स सूरजमल नागरमलने श्रीगुरुमुखराय सुरेकासे इण्डिया जूट प्रेसको खरीद लिया। इसी समय उन्होंने 'राजेन्द्र' और 'राम' नामके जूट मार्का भी प्राप्त कर लिये।

इसके कुछ समय पश्चात् ही पहला महायुद्ध सन् १९१४ में प्रारम्भ हुआ। इस समय मेसर्स सूरजमल नागरमल हेम्प और जूटके बहुत बड़े एक्सपोर्टर हो गये थे।

इसी वर्ष अर्थात् सन् १९१४ में इस फर्मने ओल्ड घूंसड़ी रोड, हवड़ामें स्थित हनुमान जूट प्रेसको उसके मकान जमीन और गोडाउन समेत खरीद लिया।

सन् १९१४ से १९१८ तक प्रथम महायुद्धके समय इस फर्मका सितारा एकदम चमक उठा और निर्यात व्यापारमें इस कम्पनीने बहुत लाभ अर्जित किया।

सन् १९१६ में श्यामनगरमें भजरामा जूट प्रेस खरीदा गया और इसकी मशीनरी हनुमान जूट प्रेसमें लगा दी गयी।

इस लगातार सफलतासे उत्साहित होकर सेठ सूरजमल जालानने जूट और हेम्पके व्यवसायमें आगे कदम बढ़ानेके विचारसे एक जूट मिलकी स्थापनाका निश्चय किया। उस समय यह कार्य वास्तवमें बहुत जोखिमसे भरा हुआ था क्योंकि जूट मिलोंपर उस समय यूरोपियन कम्पनियोंका एकाधिकार था और वे इस क्षेत्रमें किसी भारतीयका प्रवेश सहन नहीं कर सकते थे।

फिर भी साहस करके मेसर्स सूरजमल नागरमलने सन् १९१६ में घुसुड़ी हवड़ामें हनुमान जूट मिलकी स्थापनाके लिये श्रीशरदेन्दु मुकुर्जीसे २८ बीघा जमीन ९९ वर्षकी लीजपर ले ली मगर युद्ध-कालीन परिस्थितियोंके कारण उन्हें मशीनरी उपलब्ध न हो सकी और दस सालतक यह कार्य वैसे ही पड़ा रहा।

सन् १९२६ में अलीपुर जेलमें ५० लूम्स जूट बीविंगके वेचनेके लिये निकाले गये। मेसर्स सूरजमल नागरमलने इन्हींको खरीदकर इन्हींसे मिलका काम चालू किया और साथ ही २१३ लूम्सके लिए एक ब्रिटिश फर्मको आर्डर दिया।

कुछ ही समय बाद एक दिन हनुमान जूट प्रेसमें भयंकर आग लगी जो दोपहरको एक बजेसे शामको सात बजेतक बराबर जलती रही। रातको नौ बजे वह कण्ट्रोलमें आई। यद्यपि हनुमान जूट प्रेसका बीमा किया हुआ था फिर भी इस घटनाने फर्मकी प्रगतिको कुछ समयके लिए रोक दिया।

सन् १९१८–२० के बीचमें इस फर्मके हेम्प व्यवसायमें बहुत उन्नति हुई और मेसर्स सूरजमल नागरमलने बनारसमें भी हेम्प बेलिंग उद्योग प्रारम्भ किया।

इस प्रकार प्रगति के पथ पर बढ़ते हुए मेसर्स सूरजमल नागरमल ने १८ जनवरी १६२७ को हनुमान जूट मिल का मुहूर्त किया। एक वर्षमें बिल्डिंग बन कर, उसमें मशीनरी लग कर तैयार हो गई और २३ जनवरी १६२८ को मिल चालू हो गया। शुरूमें इसमें २५० लूम थे जो बढ़ते बढ़ते इस समय ६८१ हैं।

थोड़े ही वर्षोंमें इस मिलने सफलता पूर्वक हैसियन और सैकिंग के उत्पादनमें प्रगति की। सन् १६३१ में जूट वीविंगके काममें भी बहुत उन्नतिकी और इन चीजोंके लिये बेलजियम जैसे देशोंके मार्केटमें अपना एकाधिकार स्थापित किया और धीरे धीरे अमेरिका, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशोंमें भी इनका माल जाने लगा। जूट के कई डिजाईनोंके गलीचे बनानेका कार्य हिन्दुस्तानमें सबसे पहले मेसर्स सूरजमल नागरमलने प्रारम्भ किया।

मेसर्स सूरजमल नागरमल वास्तवमें इस लाइनके अन्दर पायोनियर हो गये। इनके बनाये हुए जूटके गलीचे जर्मनी, जेकोस्लोवाकिया इत्यादि देशोंमें प्रचारित हो गये।

जूट उद्योगमें अपनी उत्कृष्टता साबित करनेके पश्चात् सेठ सूरजमल जालानने दूसरे उद्योगोंमें कदम बढ़ाना प्रारम्भ किया। जूटके पश्चात् आपने चीनी उद्योग को अपनाया। बंगालमें उन दिनों कोई चीनीकी मिल नहीं थी। सबसे पहले आप ही ने बंगालमें गन्नेसे चीनी बनाना प्रारम्भ किया। सन् १६३२ के प्रारम्भमें आपने नार्थ बंगाल शुगर मिलका शिलारोपण किया और सन् १६३३में सितावगंज शुगर मिलको चालू किया। इन दोनों मिलोंके लिये गन्ना पैदा करनेके लिए सितावगंजमें दो बड़े बड़े कृषि फार्म स्थापित किये।

सन् १६३५–३६ में जब विश्वव्यापी व्यापारिक मन्दीका प्रारम्भ हुआ और वस्तुओंका मूल्य नीचे से नीचे स्तरपर चला गया उस मन्दीके जमानेमें भी इस फर्मने नरकरपाड़ा जूट मिल और डब्ल्यू० ए० हार्टन एंड कं० लि० नामक दो चालू कारखाने खरीदे।

इस प्रकार एक साधारण स्थितिसे प्रारम्भ कर अपनी विशेष मानवीय योग्ताओंसे करोड़ों रुपये की सम्पत्ति उपार्जित करके अपनी फर्मको उन्नतिके उच्चतम शिखर पर पहुँचाने वाले इस महन् उद्योगपतिका १५ फरवरी १६३८ को स्वर्गवास हो गया।

सार्वजनिक कार्य

सेठ सूरजमल जालानका लक्ष्य प्रारम्भसे ही सार्वजनिक कार्य और दानधर्मकी तरफ बहुत अधिक रहा। ज्यों २ आमदनी होती गयी उसका कुछ हिस्सा आप बराबर सार्वजनिक कर्योंके लिये निकालते गये।

बंगालमें रहनेके कारण सबसे पहले आपका ध्यान यहीं पर गया और गंगाजीके उस पार सलकिया हबड़ामें आपने एक हिन्दी पुस्तकालय एवं बालिका विद्यालयकी स्थापनाकी और सर्वसाधारण

की सुविधाके लिये एक वस्तु भण्डारकी भी स्थापना की। जहां पर विवाह शादीमें काम आने लायक आवश्यक सामान जनताको निःशुल्क दिया जाता है।

इसके बाद अपने जन्मस्थान रतनगढ़ (बीकानेर) की तरफ उनका ध्यान गया। वहां पर भी उन्होंने एक बालिका विद्यालयकी स्थापना की। साथ ही एक बृहद् हिन्दी पुस्तकालय, आयुर्वेदिक महाविद्यालय, व्यायामशाला, सर्वसाधारणके स्वास्थ्य लाभके लिये आरोग्य भवन, पब्लिक पार्क एवं वस्तु भण्डारकी स्थापना की। जिससे जनसाधारणको बहुत लाभ पहुंचा। गायोंके चारागाहके लिये एक बड़ी भारी बीड़ छोड़ी गयी जिसमें ट्यूब वेल भी बैठाया गया जिससे बीड़ बारहों मास हरी भरी रहने लगी। एक बड़ा भारी अस्पताल बना कर सरकारको दिया गया जो आज भी जनता जनार्दनकी सेवा कर रहा है।

सन् १९३२ में जगन्नाथ पुरीमें समुद्रके किनारे आपने एक बिल्डिंग श्री गौरीशंकर हिम्मतसिंहका से खरीद कर सर्वसाधारणके लिये सेनीटोरियम बना दिया। महाराज बीकानेरकी गोल्डन जुबलीके समय आपने रतनगढ़में एक विशाल अस्पताल बनवानेके लिये एक लाख रुपये दिये। बनारसमें मणिकर्णिका घाटपर आपकी ओरसे धर्मशाला और विश्राम भवन बना हुआ है। हरिद्वारमें हरकी पेड़ी पर आपने एक पुल भी बनवाया है।

आपकी मृत्युके पश्चात् आपके स्मारकमें सेठ सूरजमल स्मृति भवन चित्तरंजन एवेन्यू, कलकत्ता में बनाया गया है। जिसमें श्री रामचन्द्रका मन्दिर, श्री शिव मन्दिर, बालिका विद्यालय, गर्ल्स कालेज, बृहद् हिन्दी पुस्तकालय एवं दवाखाना आदि चलाये जा रहे हैं, जिससे सर्वसाधारणको बहुत लाभ पहुँच रहा है।

सेठ बन्शीधर जालान

यह कहनेमें कोई भी आतिशयोक्ति न होगी कि यदि सेठ सूरजमल जालान इस विशाल औद्योगिक प्रतिष्ठान के मस्तिष्क थे तो सेठ बन्शीधर जालान उसके हृदय थे। अगर सेठ सूरजमल जालान इस प्रतिष्ठानके नेत्र थे तो सेठ बन्शीधर जालान उसके हाथ-पैर थे। सेठ बन्शीधर जालानने जिस महान् परिश्रम, अध्यवसाय और दूरदर्शितासे इस विशाल प्रतिष्ठानकी इमारत बनानेमें अपना हार्दिक सहयोग प्रदान किया उसका मूल्य नहीं आंका जा सकता। इन दोनों भाइयोंका अद्भुत और हार्दिक प्रेम ही इस फर्मकी महान् प्रगतिका रहस्य है।

सेठ बन्शीधर जालानका जन्म सन् १८८४ में एक साधारण मध्यवित्त परिवारमें हुआ था। मगर ये उनलोगोंमें से एक थे जो अपने साहस और शौर्यके बलसे विपरीति परिस्थितियोंके बीचमें भी अपना रास्ता बना लेते हैं। सिर्फ बारह वर्षकी आयुमेंही ये धनोपार्जनके लिये कलकत्ता आ गये और कुछ समयके बाद एक प्राइवेट फर्ममें अपने बड़े भाईके साथ काम करने लगे।

मगर इस नौकरीसे इनको सन्तोष नहीं हुआ। तब उसे छोड़कर कुछ दिनोंतक इन्होंने दलालीका काम किया। उसके पश्चात् इन्होंने अपने बड़े भाईके साथ कुछ स्वतन्त्र व्यवसाय करनेका निश्चय किया। तब सेठ सूरजमल जालानने अपने नाबालिक साले श्री नागरमल बाजोरियाके साझेमें "सूरजमल नागरमल" के नामसे सन् १९०५ में अपना फर्म स्थापित किया। जिसका विवेचन हम ऊपर कर आये हैं। इस फर्मने जूटका व्यवसाय प्रारम्भ किया जो सेठ बन्शीधर जालानकी दूरदर्शितासे तेजीके साथ चल निकला।



श्री बन्शीधर जालान

सन् १९१३ में इस फर्मने इंडिया जूट प्रेस खरीदा और सन् १९१६ में हनुमान जूट प्रेस खरीदा गया जो इनकी आश्चर्यजनक सफलताका सूचक था। सन् १९२९ में इन्होंने अत्यन्त विपरीत परिस्थितियोंमें श्री हनुमान जूट मिलकी स्थापना की। उस समय जूट मिलोंपर अंग्रेजी कम्पनियोंका एकाधिकार था और वे किसीभी भारतीयको इस क्षेत्रमें प्रवेश करना पसन्द नहीं करती थीं। ऐसी स्थितिमें ये पहले या दूसरे भारतीय थे जिन्होंने अंग्रेजोंकी मोनोपोलीको जूट मिलोंके क्षेत्रमें भंग किया। यह साहस सेठ बन्धीधर जालानमें ही था।

जूट व्यवसायमें पूर्ण सफलता प्राप्त करनेके पश्चात् सेठ बन्शीधर जालानका ध्यान चीनी उद्योग की तरफ गया। उनकी दूरदर्शी आंखें उस समय बंगालमें चीनी उद्योगके उज्ज्वल भविष्यको स्पष्ट रूपसे देख रही थीं और तत्काल उन्होंने सन् १९३४ में नार्थ बंगाल शुगर मिल, गोपालपुर और सिताबगंज शुगर मिलकी स्थापना कर दी और उनको पूर्ण सफलताके साथ चलाया।

इस प्रकार 'सूरजमल नागरमल' प्रतिष्ठानके इतिहासका सूक्ष्म दृष्टिसे अवलोकन करनेपर यह स्पष्ट पता चलता है कि इस प्रतिष्ठानकी उन्नतिकी जड़में सेठ सूरजमल जालान और सेठ बंशीधर जालानके दोनों व्यक्तित्व समान रूपसे चमक रहे हैं।

इतना सब कुछ होते हुए और करोड़ों रुपयोंकी सम्पत्ति उपार्जनकर लेनेपर भी यह एक आश्चर्यकी बात थी कि सेठ बन्शीधर जालानमें अहंकारका लेशमात्रभी नहीं था, उनका व्यक्तित्व शुरूसे आखिर तक अत्यन्त सादगीसे परिपूर्ण और निराभिमान रहा।

उनका दरवाजा गरीब और अमीर सबके लिए हमेशा खुला रहता था। जीवनके हर एक क्षेत्रमें उनके विचार अत्यन्त उदार और दूसरोंको सहायता पहुँचाने वाले रहते थे। वे एक अत्यन्त प्रखर

बुद्धिके तेजस्वी और व्यवसायिक क्षेत्रमें एक लौह पुरुषकी भांति दृढ और साहसी थे। यही उनकी व्यवसायिक सफलताकी कुंजी थी।

मेसर्स सूरजमल नागरमलकी तरफसे जो भी सार्वजनिक कार्य और दान धर्म हुए सबमें सेठ बन्शीधर जालानका पूर्ण सहयोग रहा। सेठ सूरजमल जालान बिना उनकी सलाह लिए कोईभी काम नहीं करते थे। इन दोनों भाइयोंका प्रेम एक आदर्श भ्रातृ प्रेम था।

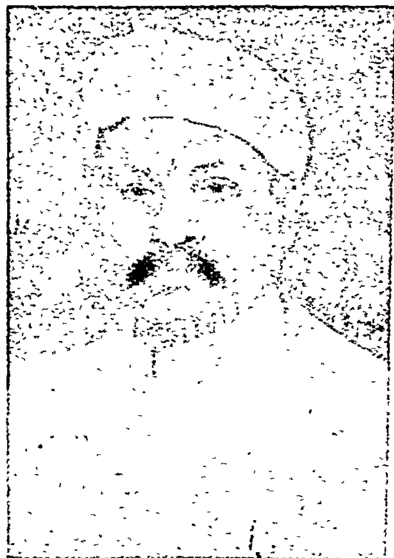
इस प्रकार अत्यन्त सफलतापूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए इस लौह पुरुषका ३ जनवरी सन् १९४३ को केवल ५८ वर्ष की उम्रमें स्वर्गावास हो गया। उस समय हजारों व्यक्तियोंने इस विशेष व्यक्तित्वके प्रति अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

सेठ बन्शीधर जालानके पांचा पुत्र हुए। श्री बाबूलाल जालान, श्री शिवभगवान जालान, श्री केशवदेव जालान, श्रीदेवकीनन्दन जालान और श्री नन्दकिशोर जालान। इनमेंसे श्रीदेवकी नन्दन जालानको श्री बैजनाथ जालानके नाम पर दत्तक दिया गया है।

सेठ बैजनाथ जालान

सेठ बैजनाथ जालान सेठ सूरजमल जालानके सबसे छोटे भाई थे। "सूरजमल नागरमल" उद्योग प्रतिष्ठानके निर्माणमें आपका सक्रिय सहयोग हमेशा आपके भाइयोंको मिलता रहा। यह कहने में कोई आतिशयोक्ति न होगी कि इस विशाल प्रतिष्ठानकी नींवमें तीनों भाइयोंका परिश्रम और अध्यवसाय समान रूपसे अपना प्रकाश फैला रहा है।

श्री बैजनाथ जालान अत्यन्त सरल स्वभावी, सज्जन, मृदुभाषी और व्यवसाय निपुण थे। आपका जूटके व्यवसायमें बहुत गहरा अनुभवथा। सेठ सूरजमल जालान और सेठ बन्शीधर जालानका स्वर्गवास होजानेके पश्चात् इतने बड़े प्रतिष्ठानका सारा भार आपके कन्धोंपर आपड़ा। लेकिन आपने बड़ी योग्यता और सफलताके साथ सारे प्रतिष्ठानका संचालन किया। सेठ बैजनाथ जालान जूटके बहुत बड़े विशेषज्ञ थे। जूट का विभागीकरण, वर्गीकरण, श्रेणीबद्ध और कीमत आंकने में आप बहुत निपुण थे। आपही की देख रेख में प्रतिष्ठान का जूट निर्यात विदेशोंको होता था। आपका आर्थिक एवं विनिमय सम्बन्धी ज्ञान गहरा एवं गूढ़ था। शेअर्स, स्टॉक्स, बैंकिंग और बीमामें आपकी बहुत दिलचस्पी थी।


श्री बैजनाथ जालान

सेठ बैजनाथ जालानका २३ अप्रैल सन् १९५४ को ५८ वर्ष की अवस्था में रक्त चाप की बीमारी से देहान्त हो गया। आपके कोई पुत्र न होने से सेठ बन्सीधर जालानके चौथे पुत्र बाबू देवकीनन्दन जालानको आपके नाम पर दत्तक लिया गया है।

सेठ रामचन्द्र बाजोरिया

कलकत्ते के सुप्रसिद्ध उद्योगपति मेसर्स सूरजमल नागरमलके पार्टनर स्वर्गीय सेठ नागरमल बाजोरियाका मूल निवासस्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। सेठ नागरमल बाजोरिया के पिता सेठ रामचन्द्र बाजोरिया संवत् १९२० विक्रमीमें रतनगढसे व्यापारके निमित्त कलकत्ता आये। आप मारवाड़ी अग्रवालों में सबसे पुराने व्यक्ति थे जिन्होंने बंगालमें पाटका व्यापार प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् मारवाड़ी व्यापारियोंमें सबसे पहले आपही ने जूट बेलिंग का कारबार प्रारम्भ किया।

संवत् १९५२ में आपने मेसर्स गुरुमुखराय शिवदत्तरायके पार्टनरशिपमें व्यवसाय प्रारम्भ किया। उसके बाद सं० १९५४ में आपने मेसर्स बिशनदयाल हरदयालके साझेमें काम प्रारम्भ किया। इन दोनों कार्योंमें आपको अच्छी सफलता मिली। संवत् १९५८ में आपका स्वर्गवास हो गया। जिस समय आपका स्वर्गवास हुआ उस समय आपके पुत्र श्रीनागरमल बाजोरिया केवल २ साल के थे। इसलिए सेठ रामचन्द्रके दामाद सेठ सूरजमल जालानने आपसे दस हजारकी पूंजी लेकर मेसर्स सूरजमल नागरमलके नामसे फर्म स्थापित किया। आज यह फर्म कलकत्ताके चोटीके करोडपति उद्योगपतियोंमें से एक है।

सेठ नागरमल बाजोरिया

सेठ नागरमल बाजोरिया का जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप मेसर्स सूरजमल नागरमलके पार्टनर रहे। आप बड़े योग्य और सज्जन पुरुष थे। आपकी प्रतिभा बड़ीही विचक्षण थी। संवत् १९९० में केवल ३४ वर्षकी अवस्थामें शिमलामे आपका स्वर्गवास होगया। स्वर्गवासी होते समय कलकत्तेमें एक इन्डस्ट्रियल स्कूल खोलनेके लिये आप दो लाख रुपयों का दान कर गये सेठ नागरमलके पांच पुत्र हुए। श्री चिरजीलाल बाजोरिया, श्री नन्दलाल बाजोरिया, श्री श्यामलाल बाजोरिया, श्री भगवती प्रसाद बाजोरिया एव श्री बनवारी लाल बाजोरिया।

सेठ मोहनलाल जालान

श्री मोहनलाल जालान सेठ सूरजमल जालान के इकलौते पुत्र हैं। आपका जन्म सन् १९०४ में हुआ। आप भारतके प्रसिद्ध औद्योगिक प्रतिष्ठान मेसर्स सूरजमल नागरमलके सबसे अधिक अनुभवी भागीदार हैं। पाट एवं पाटके मालके उत्पादन तथा व्यापारके आप एक विशिष्ट विशेषज्ञ हैं।



सेठ मोहन लाल जालान

श्री हनुमान जूट मिल्स, रायगढ जूट मिल्स लि०, ओरिएण्टल गैस कं० लि० आदि अनेक सुविख्यात उद्योगोंका संचालन आप बड़ी योग्यताके साथ कर रहे हैं। आप दि हिन्दुस्तान मर्केन्टाइल बैंक लिमिटेडके चेयरमैन भी हैं। व्यापारके साथ साथ शिक्षा प्रसारमें आपकी विशेष अभिरुचि है। सामाजिक कल्याणके कार्योंमें आप सक्रिय भाग लेते हैं एवं रचनात्मक कार्योंमें भी आपकी विशेष रुचि रहती है। आपने अपने पिता स्वर्गीय सेठ सूरजमल जालानकी यादगारमें स्मृति भवनकी स्थापनाकी है जिसमें श्री रामचन्द्रजीका मन्दिर, कन्या पाठशाला व कालेज, बृहत् पुस्तकालय, दातव्य औषधालय, हिन्दी साहित्य एवं महाजनी विद्यालय एवं वस्तु भंडार आदि लोकोपकारी संस्थायें अवस्थित हैं। आप नित्यप्रति डेढ़ दो घंटेका समय इन संस्थाओं के निरीक्षण में लगाते हैं। धार्मिक अनुष्ठानों में भी आपकी अभिरुचि हैं।

श्री चिरंजीलाल बाजोरिया

श्री चिरंजीलाल बाजोरिया सेठ नागरमल बाजोरिया के सबसे बड़े पुत्र हैं। आपका जन्म सन् १९१४में रतनगढमें हुआ। छोटी उमरसे ही आपने कारबारको संभाला। जूट उद्योगके आप बड़े विशेषज्ञ हैं। भारतवर्षके जूट उद्योगके संबंधमें आपकी जानकारी बड़ी महत्वपूर्ण है। इसी कारण कुछ समय पूर्व भारत सरकारने आपको अपनी निर्यात सलाहकार समितिका सदस्य बनाया था। कलकत्तेके प्रमुख चेम्बर आफ कामर्स और अन्यान्य व्यवसायिक संगठनोंसे आप सम्बन्धित हैं। कुछ समय तक आप हाइड्रोलिक प्रेस एसोसियेशनके अध्यक्ष और इंडियन सेन्ट्रल जूट कमेटी, जूट बेलर्स एसोसियेशन आदि के मेम्बर रहे।


श्री चिरंजीलाल बाजोरिया

वर्तमानमें आप मेसर्स मेकडोल ए० कं० लि० के सीनियर डाइरेक्टर हैं। अपने कारबारमें पूर्ण व्यस्त रहते हुए भी आप सामाजिक शिक्षा तथा जन कल्याणके कार्योंमें भाग लेते रहते हैं। आपने ग्रेट ब्रिटेन तथा अन्य यूरोपीय देशोंकी यात्राकी है।

श्री बाबूलाल जालान

आप सेठ बंसीधर जालानके सबसे बड़े पुत्र है। आप जनरल इन्स्युरेन्स सोसाईटीके चेयर-मैन हैं तथा इन्डियन कॉमर्स एसोसियेशनके प्रेसिडन्ट है। अभी इन्डियन श्रमिक कान्फ्रेन्स जो हैदराबाद

में हुई थी उसमें आप ही अध्यक्ष थे। आप इन्डियन हेम्प असोसियेशनके भी प्रेसिडेन्ट हैं। भारत चेम्बर आफ कामर्सके प्रेसिडेण्ट भी आप रह चुके हैं। आपके फेडरेशन आफ इन्डियन चेम्बर्स आफ कॉमर्स एन्ड इण्डस्ट्रीज जूट वेलर्स असोसियेसन कलकत्ता, वेल्स जूट असोसियेसन तथा कलकत्ता हाइड्रोलीक प्रेस असोसियेसनकी कमेटीके मेम्बर हैं। इसके इलावा एडवाइजरी बोर्ड भारत सेवक समाज बंगाल ब्रान्चके भी मेम्बर हैं। फर्मके जूट एक्सपोर्ट व्यवसायको भी आप ही देखते हैं।



श्री बाबूलाल जालान

आपने एक योजना जो कि एक हजार करोड़ रुपये प्रतिवर्षकी बचत (स्वावलम्बन) योजनाके नामसे प्रसिद्ध है बनाई है—इस योजना का उद्‌देश्य भारतवर्षके ग्रामीणोंके जीवन स्तरमें निश्चित सुधार है। तथा इसपर अमल करके वे अधिक सुखमय जीवनयापन कर सकते हैं। इस योजनाका आधार भूत सिद्धान्त यह है कि देशके गाँवोंमें निवास करनेवाले समस्त श्रम योग्य वयस्क प्रतिदिन अतिरिक्त एक घंटेका श्रम व्यस्त कालमें और दो घंटेका श्रम अव्यस्त कालमें निजी और सहकारी उत्थानके लिये दें।

इस योजनाका कलकत्ताके समीप पश्चिम बंगालके १२ गावोंमें सफल प्रयोग किया जा चुका है।

आप निम्नलिखित कम्पनियोंके डाइरेक्टर हैं।

(१) हिन्द बैंक लि०
(२) ओरियन्ट जूट ट्रेडिंग कं० लि०
(३) नादर्न बंगाल जूट ट्रेडिंग कं० लि०
(४) अटलस अन्ड यूनियन जूट प्रेस कं० लि०
(५) दी हनुमान इस्टेट्स लि०
(६) कलकत्ता गेस कं० (प्रोप्राइटरी) लि०
(७) असियन लि० लन्दन
(८) इन्टरनेशनल शिलिग कं० लि०
(९) जूट वेलिंग एन्ड ट्रेडिंग कं० लि०
(१०) एलफिन्सटन स्पि० एन्ड वि० कं० लि०
(११) बंगाल जूट मिल्स कं० लि०
(१२) ओरिन्टल गेस कं० लि०



श्री शिव भगवान जालान

(१३) एल्यूमिनियम कारपोरेशन आफ इन्डिया लि०

(४) बाम्बे गेस क० लि०

आप बंसीधर बैजनाथ तथा शिवभगवान चिरंजी लालके भी पार्टनर हैं।

श्री शिव भगवान् जालान

आप सेठ बन्सीधर जालानके सुपुत्र-तथा मेसर्स सूरज मल नागरमल, मेसर्स बन्सीधर बैजनाथ तथा शिवभगवान चिरंजी लालके पार्टनर हैं। सूरजमल नागरमल द्वारा संचालित कई कम्पनियोंका आज आप योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं तथा कई कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं।

स्व० श्री केशवदेव जालान

स्व० श्रीकेशवदेव जालान सेठ बन्सीधर जालानके तीसरे पुत्र थे। कलकत्तेके औद्योगिक क्षेत्रमें आप एक ज्योतिकी तरह चमक उठे थे। आपकी औद्योगिक प्रतिभाको देखकर लोग चकित हो उठे थे। आपका जन्म सन् १९१७ में हुआ था। आपका विवाह सर बद्रीदास गोयनका की सुपुत्री श्रीमती शान्ति देवीके साथ हुआ था।

आप इंडियन चेम्बर आफ कामर्स (१९४६।४७) फेडरेशन आफ इंडियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री (१९४९-५०) और इण्डियन नेशनल कमेटी आफ इण्टरनेशनल चेम्बर आफ कामर्सके अध्यक्ष बन चुके थे। इतनी छोटी अवस्थामें कोई भी इस चेम्बरका अध्यक्ष अभीतक नहीं बना था। इसके अतिरिक्त आप इण्डिया सेण्ट्रल जूट कमेटी तथा एम्प्लयायर्स एसोसियेशन कलकत्ताके उपाध्यक्ष रहे थे। १९५१-५२ में आप इण्डियन जूट मिल्स एशोसियेशन, जूट रिसर्च इन्स्टीस्यूट, सेण्ट्रल जूट बोर्ड, इन्स्टीस्यूट आफ जूट टेकनालाजीके चेयरमैन भी रहे थे।



स्व० श्री केशवदेव जालान

इसके अतिरिक्त कलकत्तेमें और कई चेम्बर्स, एसोसियेशन तथा संस्थाओंके आप सदस्य तथा कई कारखानोंके डायरेक्टर थे। आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी गतिसे औद्योगिक जगतमें अपना प्रकाश फैला रही थी।

आर्थिक एवं जूट क्षेत्रमें आपकी बड़ी धाक थी। द्वितीय महायुद्धके समय सरकारने अपने करोड़ों रुपयेके जूट गुड्सकी खरीदीका सारा भार आप पर छोड़ दिया और आपने आनरेरी रूपसे उसे सफलता पूर्वक निभाया।

मगर दैव दुर्विपाक से बहुत थोड़ी आयुमें ही अचानक आपका स्वर्गवास हो गया। आपके निधन से सारे व्यवसायिक जगतमें भयंकर शोककी लहर फैल गयी थी।

श्री देवकी नन्दन जालान

इन्जनियरिंग एसोसियेशन आफ इन्डियाके अध्यक्ष श्री देवकी नन्दन जालानका जन्म कलकत्ते के सुप्रसिद्ध जालान परिवारमें १६ अक्टूबर १६१८ में हुआ था। आप ख्याति प्राप्त मेसर्स सूरजमल नागरमल फर्मके अधिपतियोंमें हैं। तथा इनके तत्त्वावधानमें अनेक चटकल, चीनी मिल, कपड़ा मिल, जूट प्रेस, इंजीनियरिंग वर्क्स, आक्सीजन एसेटिलेन वर्क्स, गैस वर्क्स, बैंक तथा इन्शयोरेन्स आदि औद्योगिक संस्थाओंका संचालन होता है। विदेशोंसे आयात निर्यातका व्यवसाय आपके निरीक्षणमें सम्पादित होता है। आप स्वर्गीय सेठ वंशीधर जालानके सुपुत्र हैं। सुयोग्य शिक्षकोंके हाथों आपने उच्चतमस्तरकी शिक्षा घरमें ही पायी। किशोरावस्थामें ही इनकी अद्वितीय विलक्षणता एवं तीक्ष्ण बुद्धिसे आकृष्ट होकर इनके चाचा स्वर्गीय सेठ बैजनाथ जालानने आपको अपने पुत्र रूपमें गोद ले लिया। इस व्यवसायी प्रतिष्ठानके संचालन एवं व्यवस्था कार्यमें आप १६ वर्षकी अल्पावस्थामें ही संलग्न कर दिये गये तथा चीनी मिलोंका प्रबन्ध आपके हाथों सौंपा गया। चीनी मिलोंके संचालनमें आपने सुन्दर दक्षता दिखाई, जिसके फलस्वरूप जूट व्यवसायके प्रबन्धका भी भार आपके सुपूर्द कर दिया गया। सन् १६४१ में मेसर्स सूरजमल नागरमलने जेम्स एलेक्जेन्डर कम्पनी लि० नामकी संस्था खरीदी। उसके संचालनके लिये आपको ही उपयुक्त समझा गया और आपने उसका भार संभाल लिया। इस संस्थाके अन्तर्गत विविध प्रकारके कार्य किये जाते हैं। अतः सुदृढ़ कार्य पटुता सम्पन्न व्यक्ति ही उसे



श्री देवकी नन्दन जालान

संभाल सकते थे। इस गुणकी देवकी बाबूमें प्रचुरता पायी गयी। सन् १८५१ से इस प्रतिष्ठानका स्वार्थ मेकलोड कम्पनीमें भी हो गया। मेकलोड कम्पनीके अंतर्गत २६ इंजीनियरिंग, चाय तथा जूट की मिलें हैं। जिनका प्रबन्ध इनके सुपुर्द किया गया। आप अभी मेकलोड कंपनीके बोर्ड आफ डाइरेक्टर्सके उपाध्यक्ष हैं। आपके ज्येष्ठ भ्राता सेठ केशवदेव जालानके स्वर्गवासके उपरान्तसे आपकी जिम्मेदारियां अधिक बढ़ गयी हैं। अभी आप निम्नलिखित संस्थाओंके डाइरेक्टर हैं।

मेकलोड एंड कं० लि०, दि जनरल एन्स्युरेन्स सोसाइटी लि०, कलकत्ता गैस कं० लि०, नस्कर पाड़ा जूट मिल्स कं० लि०, हबड़ा ट्रेडिंग कं० लि०, नार्थ बंगाल शुगर मिल्स कं०लि०, सितारगंज शुगर मिल्स लि०, डबलू० एच० हार्टन एंड कं० लि०, एटलस एंड यूनियन जूट प्रेस कं० लि०, स्टार टैक्सटाइल्स लि०, दि हनुमान इस्टेट्स लि०, इस्टर्न बंगाल जूट ट्रेडिंग कं० लि०, इन्टरनेशनल शिपिंग कं० लि०, ओरियेन्टल जूट ट्रेडिंग कं० लि०, एरिचा ट्रेडिंग कं० लि०, वेस्टर्न बंगाल कं० लि०, गंगेज इंजीनियरिंग वर्क्स लि०, राजस्थान इनवेस्टमेंट एंड फाइनान्स लि०।

इसके अतिरिक्त आप मेसर्स सूरजमल नागरमल, मेसर्स बंशीधर बैजनाथ, मेसर्स शिवभगवान चिरंजीलाल फर्मोंके भागीदार हैं। सन् १९४५ से आप इंजीनियरिंग एसोसियेशन कमेटीके सदस्य रहे तथा १९५४।५५ में भारत चेम्बर आफ कामर्स, कलकत्ताके उपाध्यक्ष रहे। इंजीनियरिंग एसोसियेशन आफ इन्डियाके अध्यक्ष होनेके अतिरिक्त आप अनेक संस्थाओंसे सम्बन्धित हैं। जिनमें इंजीनियरिंग इन्डस्ट्रीज एक्सपोर्ट प्रमोशन कौंसिलके सभापति, इंडियन चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ताकी कार्यकारिणीके सदस्य, इंडियन जूट मिल्स एसोसियेशन रिसर्च इन्स्टीट्यूटकी कार्य कारिणीके सदस्य, वेस्ट बंगाल लेबर एडवाइजरी बोर्ड, वेस्ट बंगाल मिनिमम वेजेज एडवाइजरी बोर्ड, इन्डस्ट्रियल कमिटी आफ इंजीनियरिंग इन्डस्ट्री फार वेस्ट बंगाल, गवर्निंग बॉडी आफ शिवपुर इंजीनियरिंग कालेज एंड हास्पिटल विजिटिंग कमेटी, एक्जीक्यूटिव कमेटी आफ गनी ट्रेड्स एसोसियेशन, कलकत्ता और सनातन धर्म प्रतिनिधि सभाकी कार्यकारिणीके सदस्य हैं। आप कान्सुलेटीव कमेटी आफ कलकत्ता, इलेक्ट्रिक सप्लाई कारपोरेशन और गवर्निंग बॉडी आफ इन्डियन रेडक्रास सोसाइटीके सदस्य रह चुके हैं।

आप बड़ी उदार प्रकृतिके एवं सहृदय व्यक्ति हैं। इसी कारण आप व्यवसायिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में काफी ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। धार्मिक श्रद्धा एवं दानशीलता के कारण आप लोकप्रिय बन गये हैं।

श्री नन्दकिशोर जालान

आप सेठ बन्शीधर जालानके सुपुत्र हैं। आपका जन्म मार्च सन् १९२१ को हुआ था। आपका विवाह इलाहाबादके निवासी राजा हरिराम अग्रवालकी पुत्री शान्तिदेवीसे हुआ। आप १८ वर्षकी उम्रसे ही अपने उद्योग संचालनके कार्यमें लग गये। शीघ्र ही आपने डबल्यू, एच, हार्टन एंड

कम्पनी, श्री हनुमान स्टील रोलिंग मिल, तथा हवड़ा ट्रेडिंग कम्पनी लि० के संचालनका कार्य अपने हाथमें ले लिया। सन् १९४४ में मून मिल्स लि०, बम्बईका कार्यभार भी अपने हाथमें लिया और बड़ी सफलतासे उसका संचालन किया। आपही सर्व प्रथम भारतीय हैं जिन्होंने सन् १९४६ में दो बड़ी और सार्वजनिक कम्पनियां—ओरियेन्टल गैस कम्पनी लि०, कलकत्ता और बम्बई गैस कम्पनी लि०, बम्बई जो कि ६० वर्षों से विदेशी लोगोंके संचालनमें चल रही थीं—का संचालन भार अपने हाथमें लिया और यूरोपियन जेनरल मैनेजर तथा इन्जीनियरके पदत्याग कर देने पर भी सफलता पूर्वक उनका संचालन किया।

इस समय आप मेसर्स सूरजमल नागरमलके आइल, आयात, निर्यात, काटन, एवं गैस विभागों के अतिरिक्त बंगाल जूट मिल्स लि०, मून मिल्स लि०, एलफिन्स्टन स्पिनिंग एंड वीविंग मिल्स कम्पनी लि० तथा बम्बई गैस कम्पनी लि० का कार्य संभाल रहे हैं। आप अत्यन्त प्रतिभाशाली, दूरदर्शी और परिश्रमी नवयुवक हैं।



श्री नन्दकिशोर जालान

इस समय आप इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशन, कलकत्ता जूट फेब्रिक्स शिपर्स एसोसियेशन तथा कौन्सिल आफ आल इन्डिया इन्स्टट्यूट आफ सोशल वेलफेयर एवं बिजनेस मैनेजमेंटकी कार्य समितिके सदस्य हैं। इसके अलावा आप समय समय पर इन्डियन चेम्बर आफ कामर्सकी कार्य समितिके तथा कमिश्नर पोर्ट आफ कलकत्ताकी कार्य समितिके सदस्य रह चुके हैं।

बम्बई गैस कम्पनी लि०, एलफिन्स्टन स्पिनिग एंड वीविंग मिल्स कं० लि०, एशियाटिक टेक्सटाइल कं० लि०, मून मिल्स लि०, डबल्यू० एच० हार्टन कम्पनी लि०, मदारीपुर ट्रेडिंग कं० लि०, पापुलर जूट ट्रेडिंग कं० लि०, बंगाल जूट मिल कं० लि०, इस्टर्न बंगाल जूट ट्रेडिंग कं० लि०, इन्डियन जूट ट्रेडिंग कं० लि०, जूट बेलिंग एण्ड ट्रेडिंग कं० लि०, नार्दर्न बंगाल जूट ट्रेडिंग कं० लि०, शाहजहांपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी लि० के डायरेक्टर तथा बंशीधर बैजनाथ, सूरजमल नागरमल और शिव-भगवान चिरंजीलालके पार्टनर हैं।

खेलोंमें आपकी विशेष रुचि होने के कारण आप कई स्पोर्ट्स क्लबोंके सदस्य भी हैं।

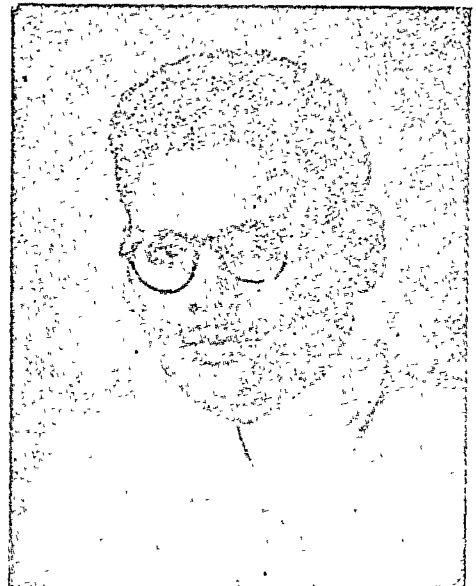
बिजिनेस मेनेज मेंटकी कौंसिलके सदस्य हैं इसके अलावा आप समय समय पर इण्डियन चेम्बर आफ कामर्सकी कार्य समिति के सदस्य तथा पोर्ट आफ कलकत्ताके कमिश्नर भी रह चुके हैं। आप इण्डियन सोसाईटी और क्वालिटी कण्ट्रोलकी कार्य समिति भी के सदस्य है।

हाल ही में आप फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज नामक अखिल भारतीय औद्योगिक संस्था के सदस्य चुने गये हैं।

बम्बई गैस कम्पनी लि०, एलफिन्स्टन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मील्स कं० लि०, एशियाटिक टेक्सटाइल कं० लि०, मून मिल्स लि०, डबल्यू० एच० हार्टन कम्पनी लि०, मदारीपुर ट्रेडिंग कं० लि०, पापुलर जूट ट्रेडिंग कं० लि०, बङ्गाल जूट मिल कं० लि०, इस्टर्न बंगाल जूट ट्रेडिंग कं० लि०, इण्डियन जूट ट्रेडिंग कं० लि०, जूट बेलिंग एण्ड ट्रेडिंग क० लि०, नार्दन बङ्गाल जूट ट्रेडिंग कं० लि०, शाहजहाँपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी के आप डायरेक्टर तथा बन्शीधर बैजनाथ, सूरजमल नागरमल और शिवभगवान चिरञ्जीलालके पार्टनर हैं।

खेलोंमें आपकी विशेष रुचि होनेके कारण आप कई स्पोर्टस क्लबोंके सदस्य हैं। आपके एक पुत्र श्री अशोक कुमार जालान हैं।

श्री नन्दकिशोर जालान अत्यन्त दानशील और बहुत सरल स्वभावके व्यक्ति हैं। व्यवसायमें भी आप अत्यन्त शान्ति और सदभावनासे कार्य करते हैं। आप इण्डियन रोप मैनूफैक्चरर्स एसोशिएशन के अध्यक्ष चुने गए हैं। आप कई कम्पनियोंके सञ्चालक भी हैं जैसे रायगढ़ जूट मिल्स लि०, श्रीगोपाल एण्ड कं० लि०, डब्लू एच हार्टन एण्ड कं० लि०, हल्दीवाड़ी जूट कं० लि०, विकानेर ट्रेडिंग कं० लि०, पापुलर जूट-ट्रेडिंग कं० लि०, नरोदा ट्रेडिंग कं० लि०, नस्करपाड़ा जूट मिल्स लि०, कूच बिहार ट्रेडिंग कं० लि०, नेशनल जूट ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड, चरमुगरिया ट्रेडिंग कं० लि०, दी ओरिएण्ट ट्रेडिंग कं० लि०, राजस्थान इन्वेस्टमेण्ट कं० लि०।



किशोरीलाल जालान

श्री किशोरीलाल जालान

आप स्व० सेठ बन्सीधर जालानके सबसे छोटे पुत्र हैं। शिक्षा समाप्त करके बहुत छोटी उमरमें ही आपने सूरजमल नागरमल औद्योगिक प्रतिष्ठानमें प्रवेश किया। आप एक कुशल व्यापारी हैं। पाटकी आपको विशेष जानकारी है। आप अनेक कम्पनियोंके

संचालक हैं। जिनमें नस्करपाड़ा जूट मिल्स, डब्लू० एच० हार्टन लि० का नाम उल्लेखनीय हैं। सामाजिक सेवा में आप उल्लेखनीय भाग लेते हैं। कई संस्थाओंसे आपका निकटतम सम्पर्क है।



श्री तोलाराम जालान

श्री तोलाराम जालान

आप श्री मोहनलाल जालानके सबसे बड़े पुत्र हैं। आपने छोटी अवस्थामें ही अपने कारबार को सँभाल लिया तथा सुचारु रूपसे अपने कार्यका संचालन कर रहे हैं आप श्री हनुमान जूट मिल्स का कार्य देखते हैं। आप निम्नलिखित कम्पनियोंके डाइरेक्टर भी हैं रायगढ़ ट्रेडिंग कं० लि०, रायगढ़ जूट मिल्स लि० श्रीगोपाल एण्ड० कं० लि०, ओरियण्टल गैस कं० लि०।

श्री श्यामसुन्दर जालान

आप श्री बाबूलाल जालानके ज्येष्ठ पुत्र हैं आप बड़े उत्साही एवं मिलनसार नवयुवक हैं। आपने अपने पिता एवं चाचाके निरीक्षणमें रहकर व्यापारिक शिक्षा ग्रहण की है। आपके ही तत्वाधानमें एशियाटिक आक्सीजन एसेटिलिन कम्पनीने बहुत ज्यादा उन्नति की है। इण्डस्ट्रियल गैसेज व वेल्डिंगका काम भी इस कम्पनीने शुरू कर दिया है। इसके अतिरिक्त आप एशियाटिक सोप कम्पनी तथा नेशनल कास्टिंगका भी काम देख रहे हैं।

आप स्पोर्टसमें बहुत ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं। आपने कलकत्ता पोलो क्लब को जो काफी वर्षों तक अकर्मण्य रहा पुनर्जीवित किया, आप स्वयं पोलोके एक अच्छे खिलाड़ी हैं।



श्री श्यामसुन्दर जालान

श्रीगोपालकृष्ण जालान

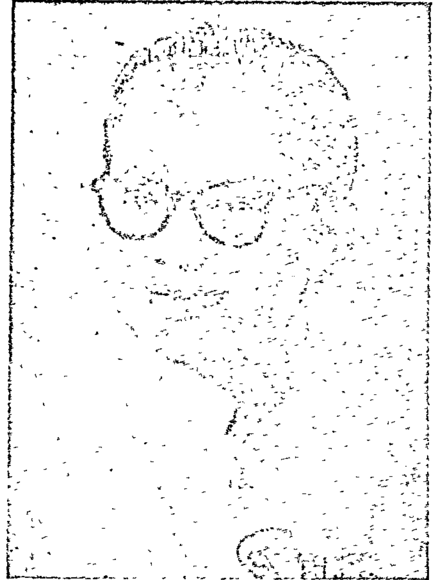
आप श्रीशिवभगवान जालानके बड़े पुत्र हैं। आप डब्ल्यू० एच० हार्टन कम्पनी का काम देखते हैं।



श्री गोपालकृष्ण जालान

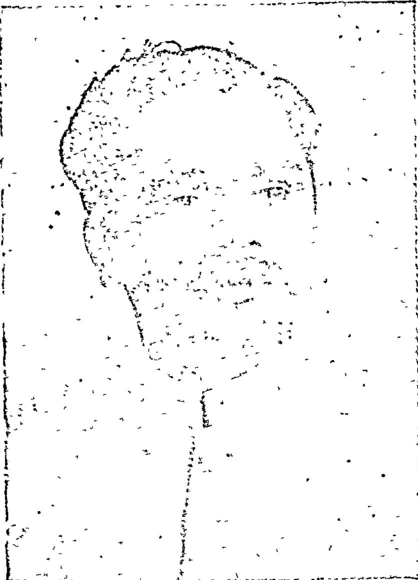
श्रीदेवीप्रसाद जालान

आप श्रीबाबूलाल जालानके पुत्र हैं। आप बड़े होनहार युवक हैं। आपने छोटी



श्री देवीप्रसाद जालान

अवस्थामें ही उच्च शिक्षा ग्रहण की है तथा व्यापारिक कामोंमें बहुत दिलचस्पी से कार्य करने लगे हैं। आप श्रीहनुमान फाउण्डरी वर्क्स तथा हवड़ा ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड का काम देखते हैं।



श्री बालकिशन जालान

श्रीबालकिशन जालान

आप श्रीशिवभगवान जालानके पुत्रहैं। आपने छोटी ही अवस्थामें व्यापारमें हाथ लगाना शुरू कर दिया है। आप मिलोंके स्टोर वगैरह का काम देखते हैं।

श्रीमहावीर प्रसाद जालान

आप श्रीमोहनलाल जालानके द्वितीय पुत्र हैं। व्यापारिक शिक्षा लेना प्रारम्भ कर दिया है। तथा हनुमान मिलका कार्य सँभालते हैं।

श्रीसुशील कुमार जालान

आप स्व० श्रीकेशवदेव जालानके सबसे बड़े पुत्र हैं। आप अभी कालेजमें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।



श्री महावीर प्रसाद जालान



श्री बजरंगप्रसाद जालान

श्रीअरुण कुमार जालान

आप श्री देवकीनन्दन जालानके ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप अभी कालेजमें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तथा साथ ही व्यापारिक शिक्षण भी लेना प्रारम्भ कर दिया है।

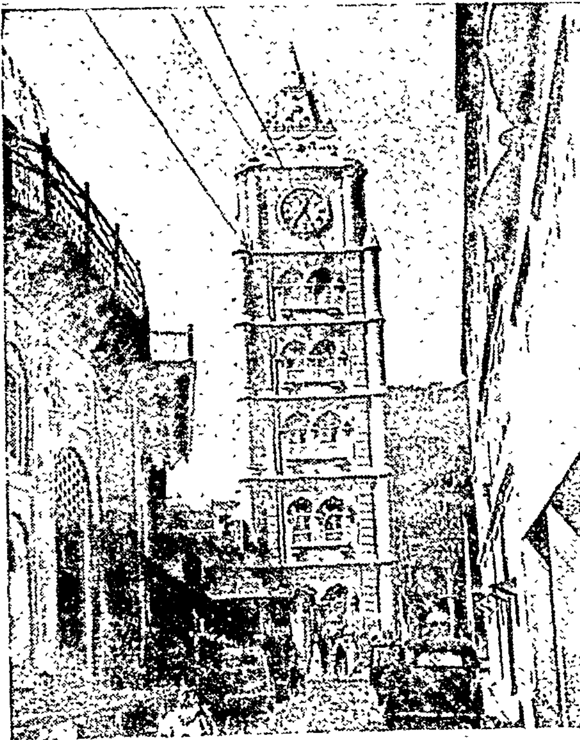
बजरंगप्रसाद जालान

कलकत्ता में इस साल B, A. Honor की परीक्षा देने जा रहे हैं।

———

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



कमला टॉवर

जे० के० इण्डस्ट्रीज लि०

कानपुर — कलकत्ता — बम्बई

भारतीय उद्योग के ठोस निर्माता

जे० के० इण्डस्ट्रीज लि०

भारतवर्ष की औद्योगिक उन्नति के इतिहास को जिन कतिपय प्रतिष्ठानों ने अपनी ठोस सेवाओं से प्रकाशमान किया है उनमें कानपूर का जे० के० प्रतिष्ठान अपना अत्यन्त प्रमुख स्थान रखता है। नाना प्रकार के विभिन्न उपयोगी उद्योगों के संचालन में इस प्रतिष्ठान ने अपनी अद्भुत क्षमता का परिचय दिया है।



सेठ कमलापति सिंघानियाँ

इस प्रतिष्ठान के तेजस्वी और कर्मठ संस्थापक स्व० सेठ कमलापति सिंघानियां का नाम भारतीय उद्योग के इतिहास में अमर रहेगा। उत्तरप्रदेश की उर्वरा भूमि के अन्तर्गत इस दूरदर्शी और महत्वाकांक्षी पुरुष ने सबसे पहले महान् औद्योगिक भविष्य के दर्शन किये और ऐसे समय में जबकि लोगों को औद्योगिक संस्थाओं की सफलता पर बिलकुल विश्वास न था बड़े उत्साह के साथ यह कर्मवीर कपड़ा, जूट और शक्कर की मिलों की स्थापना में जुट गया।

जे० के० इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

प्रथम सोपान

स्मृद्धिशाली भारतमाता के वैभवपूर्ण अक्षयवट का एक महत्व पूर्ण प्रतिष्ठान जे० के० उद्योग हैं। इस चिरंजीवी अक्षयवट की आश्रयदायिनी और संरक्षण-कारिणी शाखायें भारत भू पर वितान बनाये दूर २ तक फैली हुई लहलहा रही हैं। इस जे० के० प्रासाद की आधारशिला विगत शताब्दी के मध्यकाल में रखी गयी थी। इसका स्फूर्तिदायक इतिहास विख्यात सिंघानियाँ परिवार के इतिहास से घुलामिला है। इस परिवारके इतिहास का श्रीगणेश ईसा की १८ वीं शताब्दी के मध्यकाल से होता है जब इस परिवार के पूर्व पुरुष जैपुर राज्यान्तर सिंघाना नामक एक सामान्य ग्राम में निवास करते थे। मारवाड़ी अग्रवाल समाज में यह परिवार सिंघल गोत्र के नाम से प्रसिद्ध है और अपने पूर्वजो के आदि निवास सिंघाना ग्राम के नाम से यह परिवार सिंघानिया परिवार के नाम से प्रसिद्ध है। लगभग डेढ सौ वर्ष से अधिक समय पूर्व इस परिवार के पूर्वज सेठ विनोदीराम सिंघाना से शेखावाटी के बिसाऊँ नामक नगर में आकर बसे और वहाँ से वे व्यापार के निमित्त पैदल रास्ते अनेक विपत्तियों को झेलते हुए यू० पी० के फर्रुखाबाद शहर में आये और वहाँ अपना व्यवसाय प्रारम्भ किया। सेठ विनोदीराम के सात पुत्र हुए थे उनमें से इस समय सेठ सर्वसुखदास और सेठ रामसुखदासके नाम ज्ञातव्य हैं। इनमें से सेठ रामसुखदास के परिवार का व्यवसाय इस समय कानपुर तथा मिर्जापुर में तथा सेठ सर्वसुखदास के परिवार का व्यवसाय फर्रुखाबाद में चल रहा है।

सेठ रामसुखदास ने अपने यहाँ मेसर्स रामसुखदास सेवाराम के नाम से व्यवसाय प्रारम्भ किया। उस समय इस फर्म पर प्रधान रूप से बैंकिंग तथा हुण्डी चिट्ठी का व्यापार होता था। इस व्यवसाय में सफलता प्राप्तकर सेठ रामसुखदास ने अपनी शाखाएँ कलकत्ता, मिर्जापुर; बनारस, कानपुर इत्यादि स्थानों पर स्थापित की। आपके सेठ सेवाराम और सेठ हरनन्दराय नामक दो पुत्र हुए।

सेठ सेवाराम सिंघानिया, कार्यदक्ष मेधावी और भाग्यशाली पुरुष थे। आपने अपने बैंकिंग व्यवसाय को बहुत बढ़ाया। सन् १८६२ में आपकी फर्म का जुबिली उत्सव मनाया गया था उसमें तत्कालीन ब्रिटिश अफसर सर वेनाल्ड जेम्स ने भाग लिया था। इस प्रकार अपने व्यवसाय को उन्नति देकर सेठ सेवाराम सिंघानिया संवत् १९३४ में स्वर्गवासी हुए। आपके सेठ बलदेवदास और सेठ मुन्ना लाल नामक दो पुत्र हुए। अपनी मौजूदगी में ही संवत् १९२५ में आप ने अपने दोनों पुत्रों को अलग-अलग कर दिया था, तभी से सेठ बलदेवदास के यहाँ बैजनाथ रामनाथ के नाम से कानपुर में और सेठ मुन्नालाल के यहाँ सेवाराम मुन्नालाल के नाम से मिर्जापुर में व्यवसाय होने लगा। इस परिवार के वर्तमान सदस्यों के पूर्वजोंमें

लाला बलदेवदास ही वह प्रधान पुरुष हैं जो इस युग की वर्तमान पीढ़ी के सम्मुख विशेष रूप से प्रदीप्त होते हैं। लाला बलदेवदास के छठवें पुत्र लाला जुग्गीलाल के तीन पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र लाला कमलापति थे।

सिंघानियाँ परिवार उस समय गल्ले की बिक्री तथा वितरण के व्यवसाय में संलग्न था और साथ ही कृषक वर्ग को सौहाद्र पूर्ण ऋण देने का प्रबन्ध भी किये हुए था। जिस समय यह परिवार कानपुर में आ बसा उस समय से अपने उपरोक्त पैतृक व्यवसाय के अतिरिक्त यह परिवार कच्चे माल की सप्लाई का व्यवसाय और कपड़े की विभिन्न मिलों के बने हुए माल की बिक्री का व्यापार कानपुर में करने लग गया। सन् १६०५ ई० (तदनुसार चैत्र शुक्ला नवमी सम्वत् १६६२) तक मेसर्स बैजनाथ रामनाथ के नाम से यह परिवार अपना व्यवसाय वाणिज्य करता रहा। इस व्यवसाय सम्बन्धी नामाभिधान के अन्तर्गत तीन जूट मिल्स, एक हाइड्रोलिक प्रेस एसोसिएशन, कपास धुनने वाली तीन जिनिङ्ग फैक्टरियाँ और आटा तथा मैदा बनाने वाले दो फ्लोर मिल्स का एक सुविस्तृत समूह उद्यमशील था। इसके साथ ही यह प्रतिष्ठान, स्थानीय कानपुर काटन मिल्स का विक्रय प्रतिनिधित्व सेलिङ्ग ऐजेन्ट के रूप में और विक्टोरिया मिल्स तथा एलगिन मिल्स (तत्कालीन पुराना पुतली घर) की आढ़त का काम कमीशन ऐजेण्टस के रूप में करता था।

सम्वत् १६६२ विक्रमीय के अनन्तर जे० के० परिवार अपने एकान्त-मुक्त परिवार के स्थान में विभक्त परिवार के रूप में परिवर्तित हो गया और परिणामस्वरूप निम्नांकित पृथक व्यवसायिक प्रतिष्ठानों का प्राकट्य हो गया।

(१) मेसर्स बैजनाथ जुग्गीलाल।

(२) मेसर्स बलदेवदास केदारनाथ।

मेसर्स बैजनाथ जुग्गीलाल एक प्रगतिशील प्रतिष्ठान था। इस प्रतिष्ठान का अर्धभाग श्रीयुत लाला जुग्गीलाल के अधिकार में प्राप्त हुआ और अर्धभाग का प्रभुत्व लाला मुरलीधर को सौंपा गया। लाला जुग्गीलाल ने अपना स्वतन्त्र व्यवसाय आरम्भ किया। उस समय आप स्थानीय कानपुर काटन-मिल्स तथा विक्टोरिया मिल्स के विक्रय प्रतिनिधि थे। इन्होंने अपने प्रतिष्ठान के अन्तर्गत कपड़ा विभाग भी खोल दिया और लाला भगवान दास की भागीदारी में इंग्लैण्ड से कपड़े का आयात भी आरम्भ कर दिया। इनके प्रतिष्ठान की एक जिनिङ्ग फैक्ट्री माधवगंज जिला हरदोई में भी थी जिसका समस्त सञ्चालन सर्वरूपेण इन्हींके प्रभुत्व में होता था।


सेठ जुग्गी लाल सिंघानियां

सन् १६१८ ई० में उपरोक्त पारिवारिक व्यवसाय का विभाजन हो गया। इस घटना को, पारिवारिक वैभव को परिवर्तित करनेवाला स्वीकार करने में कोई संकोच न करना चाहिये और देश के औद्योगिक विकास में यह घटना बहुत सहायक ही हुई। इसका कारण प्रत्यक्ष ही है कि भारतीय वैभव के

नव-निर्माण की भुवन विमोहिनी रूप-रेखा को दूर क्षितिज में प्रकट रूप से देखनेवाले और कला-कौशल पूर्ण उद्योग की नव-चेतना से अनुप्राणित लाला कमलापत सिंघानिया ने सिंघानिया परिवार के सुविस्तृत व्यवसाय में से औद्योगिक उद्यम को अपने स्वयं के भाग के रूप में स्वेच्छापूर्वक स्वीकार कर लिया।

यह समय राष्ट्रीय जागरुकता से ओतप्रोत एक युगान्तर उपस्थित करनेवाला विशेष समय था। असहयोग आन्दोलन अपनी युवावस्था को प्राप्तकर अपनी पूर्ण शक्ति से अपने विपक्षी पर आतङ्क जमा चुका था। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का गगन-विदारक उद्घोष चतुर्दिक प्रतिध्वनित हो रहा था। यही वह शुभ मुहूर्त था जब लाला कमलापत भारतमाता के समृद्धिशाली अनुपम औद्योगिक रूप की कल्पना में आकण्ठ निमग्न थे। वह बने हुए माल का बाहुल्य भारत में देखने की उत्कट उत्कण्ठा से आकुल थे। औद्योगिक क्षेत्र में सर्वतोमुखी स्वावलम्बी भारत ही उनका एकमात्र आराध्य था।

अपने मनवांछित अभीष्ठ की सिद्धि के लिये आपने अपने बहु लाभप्रद क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय का आत्मोत्सर्ग कर दिया और सहर्ष औद्योगिक क्षेत्र में निभ्रान्त कूद पड़े। चूँकि उद्योग ही वह पथ-प्रदर्शक पट्टिका है जो किसी राष्ट्र को सर्वमान्य वैभवपूर्ण आर्थिक सुदृढ़ता के सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित करती है, अस्तु कोई भी ऐसा उद्योग जिसे वैदेशिक शोषण के ज्वार-भाटे के बीच राज्य सहाय सुलभ जैसी दुर्दान्त दानवीय शक्ति से सम्पन्न विदेशी उद्योगपतियों से टक्कर लेने के लिये विवश होना पड़े, वह दुस्साहस ही कहा जायगा और ऐसे अनुष्ठान की सफलता प्राप्त करनेवाले की सर्वतोमुखी प्रतिभा का यही सर्वश्रेष्ठ और सर्वमान्य प्रमाण है। इस साहसी पुरुष की व्यवसायात्मिक बुद्धि की जितनी सराहना की जाय थोड़ी है। जे० के० कॉटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल कम्पनी लिमिटेड का शिलान्यास स्वर्गीय लाला कमला पति सिंघानिया के द्वारा सन् १६११ में सम्पन्न हुआ था, जो कि जे० के० उद्योगों की संरक्षण-कारिणी शाखाओं का जन्मदाता है और इस कपड़े की मिल का इतिहास ही जे० के० संघ का इतिहास है। उपरोक्त मिल ने व्यवसाय को चमकाया तथा आगे जाकर बहुत सी औद्योगिक कम्पनियों व कारखानों को जन्म देने का मूलभूत कारण हुई हैं। जिनके वास्तविक आँकड़ों का विश्लेषण किया जाय तो सहस्त्रों पृष्ठ बहुत ही सरलता से रंगे जा सकते हैं जिसका उल्लेख करना इस समय हमारा लक्ष्य नहीं है।

अपने मनवांछित अभिष्ट की सिद्धि के लिये लाला कमलापति ने सप्तवर्षीय जटिल संघर्षमय कार्यकाल में साहस व दृढ़ संकल्प के साथ इन व्यापारिक कम्पनियों को चलाया। उन्होंने भारतीय कपड़े की मिलों में भी अच्छे दर्जे का ४० से ६० नम्बर तक का सूत तैयार करने का प्रयोग किया जिसको कि विदेशी माल से मुकाबला करना था, यह उनके जीवन का प्रथम प्रयास था। सर्वप्रथम उत्तरप्रदेश में आपके ही प्रयास से ड्राइंग व प्रिंटिंग के विभाग खोले गये जिसका श्रेय आपको ही है। काली-छींट तथा सरमाई ने जो कि जे० के० में छापी जाती थीं एक तरह से सारे कपड़े के बाजारों पर अपना

आधिपत्य जमा लिया था, जिसको कि बेचने में व्यापारियोंको किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा।

जे० के० कॉटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड कम्पनी सन् १६२१ में प्राइवेट व्यवसायिक कम्पनियों के तौर पर चली और सन् १६२३ में प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी के रूप में ज्वाइण्ट स्टाक एक्ट के अनुसार रजिस्टर कर दी गई। इसमें उस समय २५००० स्पीण्डल (Spindles) और ५०० लूम (Looms) थे। वर्तमान में इस मिल की कार्यक्षमता ४४६६४ स्पीण्डल और १११६ लूम की है और लगभग ५० लाख पौण्ड सूत और ३०० लाख गज कपड़ा इसका वार्षिक औसतन उत्पादन है।

स्वर्गीय लाला कमलापति ने अपने जीवन कालमें ही निम्नांकित औद्योगिक और व्यावसायिक कम्पनियाँ शुरू कर दी थीं।

(१) कमला आइस फैक्टरी - १६२१
(२) जे० के० आयल मिल्स—१६२४
(३) जे० के० होजियरी फैक्टरी (कानपुर)—१६२६
(४) जे० के० जूट मिल्स—१६३१
(५) एम० पी० सुगर मिल्स—१६३२
(६) जे० के० काटन मैन्युफैक्चरर्रस—१६३३
(७) जे० के० होजियरी फैक्टरी (कलकत्ता)—१६३४
(८) जे० के० आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि० - १६३४

स्वर्गीय लाला कमलापति की दूरदर्शिता तथा साहस ने भारत के औद्योगिक उत्थान तथा राष्ट्रोत्थान में बहुत बड़ा भाग लिया जो कि इस भारतभूमि में अमर रहेगा। भारतमाता को औद्योगिक क्षेत्र में उन्नतिशील तथा वैभवपूर्ण बनाना ही उनका एकमात्र उद्देश्य था और इनको भारतवर्ष का एक बहुत सफल तथा बड़ा उद्योगपति कहना वास्तव में इनकी सफलता का मापक है।

परन्तु लाला कमलापति स्वयं एक परिश्रमी और हाथ से काम करनेवाले व्यक्ति थे। वे बहुत बड़े पूँजीपति होते हुए भी पूँजीवाद के परम्परागत अस्वस्थ व्यवहारों से कोसों दूर थे। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि जो मनुष्य अपने हाथों से काम करता है वही उसका बदला पाने तथा उच्चश्रेणी का बौद्धिक जीवन तथा मानवीय प्रतिष्ठा पाने का अधिकारी है।

स्वर्गीय लाला कमलापति ने न केवल अपने दृढ़-विश्वासों तथा अनुभवों को व्यावहारिक सफलताओं के उपयोग में लिया परन्तु उन्होंने अपने तीन पुत्रों में भी इन गुणों को प्रतिष्ठित किया तथा साथ ही साथ उस संघ में भी फैलाया जिसको कि उन्होंने ऊँचे आदर्शों पर जन्म दिया था। इन्हीं उपरोक्त कारणों की वजह से जे० के० की फैक्टरियाँ इतनी सम्मानित दृष्टि से देखी जाती हैं तथा व्यापारिक क्षेत्र में तीव्र-गति से बढ़ रही हैं।

जे० के० का आज का दृढ़ भव्य भवन

जे० के० उद्योगों के चालकों ने यह बहुत ही शीघ्र महसूस कर लिया था कि भारतवर्ष का उद्धरा छोटे पैमाने पर चलनेवाले कारखानों तथा फैक्टरियों से होना असम्भव है परन्तु बड़े पैमाने पर चलने वाले कारखानों तथा फैक्टरियों से हो सकता है जिससे कि भारत की आवश्यक जरूरतों को पूरा किया जा सके तथा भारतमाता को दूसरे देशों की पर निर्भरता से स्वतन्त्र किया जा सके।

स्वर्गीय लाला कमलापति ने कुछ मिलों को स्थापित करने के पश्चात् पश्चिमीय देशों का दौरा किया जहाँ पर कि वे उद्योगों तथा कारखानों में हाल ही में हुई प्रगति का बहुत ही अच्छी तरह से अध्ययन कर सकें। वे प्रगतिशील तथा नई तरह के कारखानो को स्थापित करने में हमेशा ही बहुत उत्साहित रहते थे जोकि अबतक अपने देश में स्थापित नहीं किये गये थे, यद्यपि नये उद्योगो को खोलने में हमेशा ज्यादा कठिनाइयां तथा आपत्तियों का सामना करना पड़ता है। यह रास्ता कोई सरल रास्ता नहीं था और कितनी ही अड़चनें भी आयी मगर उन्होंने इस विषय में प्रगति करने का दृढ़ संकल्प कर लिया था और इसको पूरा करने में उनको कोई शक्ति नहीं डिगा सकती थी।

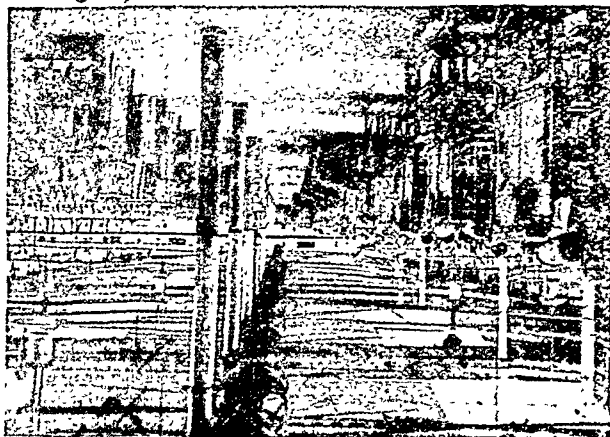
इस तरह से उन्होंने अपने अमूल्य समय, शक्ति एवं धन का विभाजन तुलनात्मक दृष्टि से अनावश्यक कामों पर कम किया, लेकिन कपास, जूट, ऊनी कपड़े, रासायनिक वस्तुएँ, लोहा, फौलाद एवं एल्युमिनियम, प्लायऊड और स्ट्रा प्रोडक्सन के सामान, प्लास्टिक, काँच और रबर, तेल और साबुन, शक्कर और भोजन की सामग्री पर आपने अधिक ध्यान दिया।

ये सब प्रकार के औद्योगिक प्रतिष्ठान क्रमशः देश की लीडिंग इण्डस्ट्रीज का रूप ग्रहण कर रहे थे। जे० के० इण्डस्ट्रीज का उच्च लक्ष्य आवश्यक एवं अनिवार्य व्यवसाय को बढ़ाना था। उनकी महत्वाकांक्षा जे० के० के औद्योगिक क्षेत्र एवं वाणिज्य को अथक प्रयत्न के साथ एक दिन भारत में औद्योगिक वैभव के महान् स्मारक के रूप में लाना था। जैसे कि प्राचीनकाल में भारत-भूमि अपने स्वाभिमान, गौरव एवं महानता के लिए प्रसिद्ध थी।

प्रत्येक उद्योग का लक्ष्य लघु नहीं था। धन राशि के रूप में करोड़ो रुपये उपरोक्त लक्ष्य की पूर्ति के हेतु लगा दिये थे और हजारों मजदूरों की जीवन वृत्ति एव रहन सहन को अत्युत्तम साधन सम्पन्न बनाना ही उनकी अभिलाषा थी। वे जे० के० इण्डस्ट्रीज का भविष्य संगठित योग्यता साहस एवं व्यवसाय को पूर्णरूप में परिवर्तित करके उज्ज्वल देखना चाहते हैं।

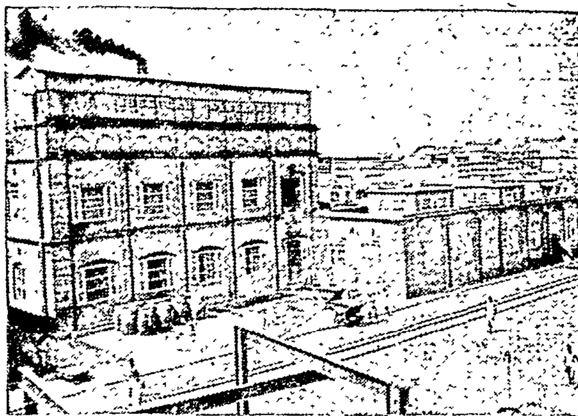
कमला टावर:—इस भव्य घड़ियाल का निर्माण सन् १९३४ में हुआ जो कि चटाई मोहल्ले में कोठी आफिस के सामने स्थित है और सेक्रट्रीयेट तथा हिसाब लेखे का कार्यालय मिल से इसी भव्य भवन में स्थान्तरित कर दिया गया। यह जे० के० उद्योगों का एक प्रकार से हृदय है जहाँ से कि संघ का सर्वेसर्वा नव-निर्माणों की कल्पनायें दौड़ाया करता था तथा वहीं से समस्त संघ का संचालन एवं नियंत्रण होता है।

जे० के० जूट मिल कम्पनी लिमिटेड:—सन् १९२९ में जे० के० जूट मिल की स्थापना हुई और सन् १९३१ में ज्वाइंट स्टाक कम्पनी के नाम में परिवर्तित कर दिया गया जो कि इस समय उत्तरप्रदेश में सबसे बड़ा जूट मिल है, जिसमें बिल्कुल नवीन प्रकार की मशीनों का प्रयोग किया गया है। इसमें लगभग १२००० टन कच्चे जूट की खपत है और ११८५८ स्पिण्डल तथा ४५० लूम लगे हुए हैं। यहाँ पर सन, बोरे और सुतली वगैरह निर्यात तथा नागरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये उत्पादित किया जाता है। इस मिल में लगभग ५००० मनुष्य रोजाना काम करते हैं।



जे० के० जूट मिल स्पीनिंग डिपार्ट मेन्ट

स्वर्गीय लाला कमलापति ने सन् १९३४ में जे० के० आयर्न व स्टील का कारखाना स्थापित किया जो कि उनके महान् कार्यों में से यह अन्तिम कार्य था। इसके लिये खास तौर से एक डायरेक्टर रखा गया जिसका कि खास काम विदेशों से यन्त्रों तथा मशीनों का प्रबन्ध करना था। यह कार्य सन् १९३५ तक समाप्त हो गया था। इस मिल में एक विशेष यन्त्र लगाया गया जोकि जेकोस्लाविया की स्कोडा वर्कस् लिमिटेड के द्वारा बनाया गया था। यह रोलरों के ऊपर चलता था जिससे कुछ आवाज होती है, यह भारतवर्ष में इस प्रकार की पहली ही मशीन थी। इसमें एक बिजली की भट्टी भी है जिसमें फौलाद तथा टुकड़े पिघलाये जाते हैं और दो रोलर मिल और है जिनसे छोटे सेक्शन बनाये जाते हैं। इसमें लोहे तथा नान् फेरस धातुओं की ढलाई का काम होता है तथा फौलाद की ढलाई के कारखाने भी खुलने की निकट भविष्य में सम्भावना है।

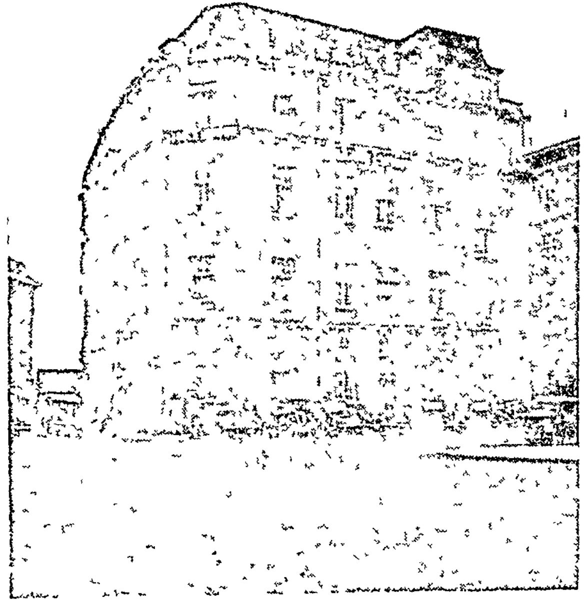


जे० के० काटन मिल

इस फैक्टरी में रेलवे के डिब्बों के खास हिस्से, फौलाद की ढलाई, शक्कर की तथा तेल की मिलों के हिस्से, फौलादी मेनगनीज के हिस्से जोकि पत्थर का चूरा करने में काम आते हैं, कपड़े तथा जूट की मिलों में गाँठे दबाने की मशीनें इत्यादि ये सब प्रकार की मशीनें बिजली के द्वारा फौलाद से बनायी जाती

है जिसकी कि फैलाने तथा तानने की शक्ति अत्युत्तम है। इस फैक्टरी में एक प्रयोगशाला भी है जोकि सब साधनों से सम्पन्न है जिससे हर एक चीज को हर समय में कंट्रोल किया जा सकता है।

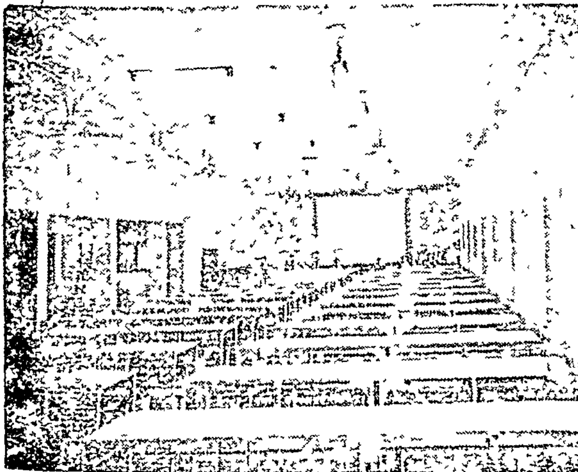
जे० के० काटन मैन्युफैक्चरर्स लिमिटेड - यह फैक्टरी सन् १९२३ में स्थापित की गयी इसमें २२४०० रिंग स्पींडल्स और ५७०० डबलिंग स्पींडल्स लगे हुए हैं, इसमें १५०० मनुष्य प्रतिदिन काम करते हैं। इसमे कपड़े की मिलों तथा बनियाइनो के लिये सूत तैय्यार किया जाता है और एक सर्व साधन सम्पन्न बुनने का कारखाना डालने का भी विचार किया जा रहा है।



जे० के० बिल्डिंग बम्बई

जे० के० इण्डस्ट्रीज वेस्टर्न झोन का कण्ट्रोलिंग सेण्टर

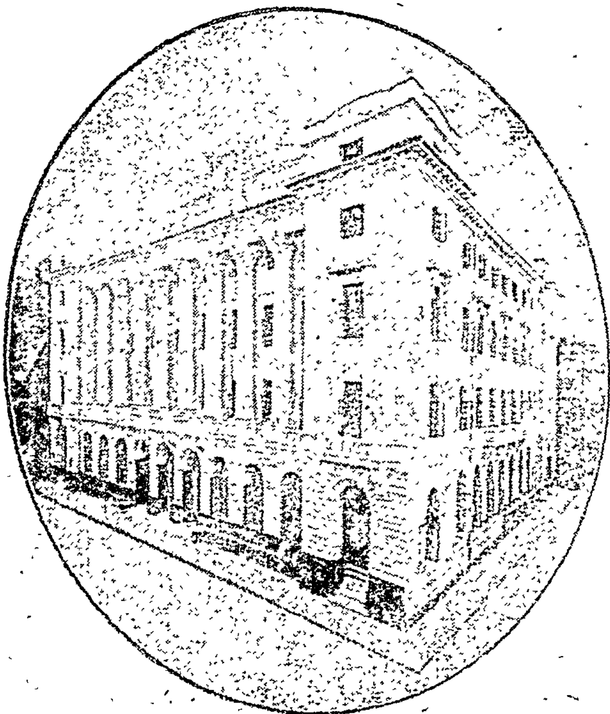
प्लास्टीक प्रोडक्टस् लिमिटेड—उत्तरी भारत में प्लॉस्टिक उद्योग का प्रारम्भ सबसे पहले जे० के० इण्डस्ट्रीज ने ही किया। उत्तरी भारत में यह प्रथम ही प्रयास था जिसकी कि स्थापना सन् १९३८ में हुई। यह फैक्टरी बिजली का सामान उत्पादन करने के लिये खोली गयी थी जो कि फिनाल फार्मोंडहाइडं पाउडर से तैय्यार किया जाता है। उन्नतिशील तरीको में इस चीज का उपयोग बहुत ही बढ़ गया है जोकि घरेलू तथा व्यवसायिक कामो में काम आता है। प्लास्टीक की सामान्य घरेलू काम में आनेवाली वस्तुएँ बनाने में यह फैक्टरी बहुत ही सफल सिद्ध हुई है और कई नई प्रकार की वस्तुएँ बनाने से उसकी सूची दिन प्रतिदिन बढ़ती ही चली जा रही है। अब इस फैक्टरी ने स्वीचेस्, प्लग, साकेट, लैम्प होल्डर, ब्रेकेट होल्डर, कंघे चश्मों के फ्रेम सेफ्टी रेजर, साबुन दानियाँ, इत्यादि वस्तुओं को तैय्यार करने में विशिष्टता प्राप्त करली है।



वकस कॉन्टिन न्यू कैसरे-हिन्द मिल, बम्बई

दी एल्युमिनियम कारपोरेशन आफ इण्डिया लिमिटेड - सन् १९३७ में बिहारी व्यवसायिक संघ द्वारा हिन्दुस्थानी बौक्साईट से शुद्ध धातु तैय्यार करने के हेतु सर्वप्रथम एल्युमिनियम कम्पनी स्थापित की गयी और जे० के० इण्डस्ट्रीज ने इसका कार्य भार सन् १९४१ में अपने हाथों में ले लिया। इस कारपोरेशन को लड़ाई के समय मशीनों का अभाव होने से बहुत कठिनाइयो का सामना करना पड़ा। सन् १९४३ में ही यह कारपोरेशन अपने कर्त्तव्य पालन में सफल हुई। अधिक धन-राशि अग्रिम जमा होने पर १० जुलाई सन् १९४४ में ए० आई० सी० लिमिटेड जे० के० नगर द्वारा शुद्ध हिन्दुस्थानी एल्युमिनियम निकाला गया। भारतीय बौक्साइट से इस कारपोरेशन ने शुद्ध एल्युमिनियम के टुकड़े, चद्दर और बरतन तैय्यार किये। यही पहली एल्युमिनियम कम्पनी है जिसने हिन्दुस्तान में पैदा होने वाली धातुओं के द्वारा रुपहला एलूमिनियम का सामान उत्पन्न किया। इस फैक्टरी में एल्युमिनियम के बहुत से रासायनिक पदार्थ तैय्यार किये जाते हैं जैसे एल्युमीना, व्हाइट एल्युमीना, लोहे से स्वतंत्र हाइड्रेट, कारबन और सोडियम एल्युमिनेट इत्यादि।

स्नोव्हाइट फुड्स प्रोडक्टस् लिमिटेड—अन्य उद्योगों की तरह यह अपने क्षेत्र में एक अग्रसर उद्योग है जोकि वनस्पति तेलों का उत्पादन करती है जिसकी रजिस्ट्री २५ सितम्बर सन् १९३६ में हुई। यह फैक्टरी शुद्ध किया हुआ तेल, वनस्पति घी, साबुन इत्यादि वस्तुएँ तैय्यार करती हैं जिसकी बिहार, उड़ीसा और बंगाल में बहुत ज्यादा खपत है।



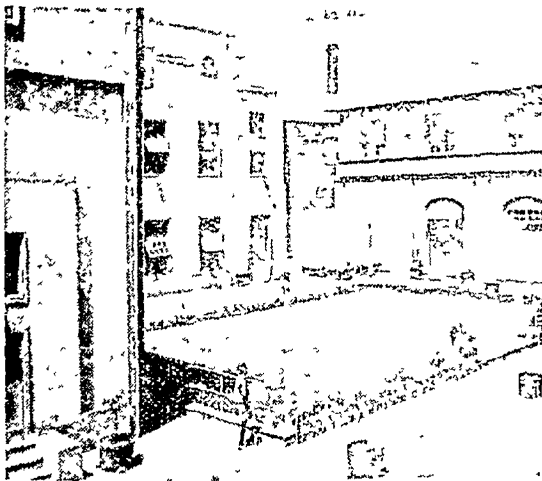
आफिस ऑफ नेशनल इंश्योरेन्स कं० कलकत्ता

हावड़ा सोप कम्पनी लिमिटेड :— इस फर्म की रजिस्ट्री ६ अप्रैल सन् १९०३ में कलकत्ता में हुई यह नागरिक उपयोगों के लिये साबुन तथा अन्य उद्योगों के लिये अन्य सामान तैयार करती है।

रेमाण्ड ऊलन मिल :—यह मिल भारतवर्ष में ऊन की बड़ी-बड़ी मिलों में से एक है और बम्बई में सबसे बड़ी मिल है। इसकी स्थापना श्री वाडिया के द्वारा सन् १९२० में हुई थी। सन् १९२५ में इस मिल की मैनेजिंग एजेन्सी मेसर्स ई० डी० मैसून एण्ड कम्पनी लिमिटेड के हाथों में सौंप दी गयी और उनसे सन्

१९४४ में जे० के० इण्डस्ट्रीज ने इसे खरीद लिया था। यह मिल जे० के० इण्डस्ट्रीज का सबसे बड़ा आमदनी का जरिया है। इस मिल में १०० प्लेट (Platt), २८ सोडन (Sowden) और ६८ डोबक्रास (Dobcross) लूम है तथा १०४०० वर्स्टेड स्पीण्डल्स (Worsted Spindles), २५०० ऊलन स्पीन्डल्स (Woolen Spindlas) हे और वे लोग मेरीनो स्पीनिंग फ्रेम लगाना चाहते हैं। इस मिल में चारों ओर बिजली लगी हुई है तथा अब इसमें ट्यूबलर लाइट तथा फ्लोरेसेंट लगाने का और सारी इमारत को एयर-कण्डीशन (Air-Condition) बनाने का तथा सब नई प्रकार की मशीनें लगाने का विचार किया जा रहा है और यह आशा की जाती है कि यह मिल भारतवर्ष में ऊनी कपड़े बनाने का सबसे बड़ा तथा आधुनिक मिल होगा। प्रथम श्रेणी की आस्ट्रेलियन ऊन का उपयोग करने का परिणाम यह हुआ कि जे० के० आजकल सबसे बढ़िया ऊनी कपड़ा तैयार के लिये प्रसिद्ध है। इस मिल की लगभग २५ लाख पौंड ऊन की प्रतिवर्ष की खपत है। इस मिल में लगभग ३००० स्त्री, पुरुष काम करते हैं और दो पालियाँ चलती हैं।

इस मिल के प्रबन्ध कर्ताओं में परिवर्तन होने के परिणामस्वरूप इस मिल ने बहुत उन्नति कर ली है, अब इसमें कितने ही प्रकार का माल तैयार किया जाता है और पहले से बढ़िया बनता है। जे० के० इण्डस्ट्रीज के कार्यभार लेने के पश्चात् इसमें शर्टिंग, जे० के० सूटिंग, जे० के० के धूँसे, जे० के० के कम्बल, स्त्रियों की पोशाकें, सर्ज, मोजे बुनने का सूत, बनियाईनों का सूत, गुलूबन्द इत्यादि बनने लग गये। वे लोग इससे भी ज्यादा महत्वाकांक्षी प्रोग्राम बनाने की कल्पना कर रहे हैं और जे० के० के गलीचे जर्सियाँ, बुना हुआ माल इत्यादि सरकार का प्रतिबन्ध हटने पर तैयार करने का विचार कर रहे हैं।



न्यू कैशरे हिन्द स्पीनिंग एण्ड वीविंग कं० बम्बई।

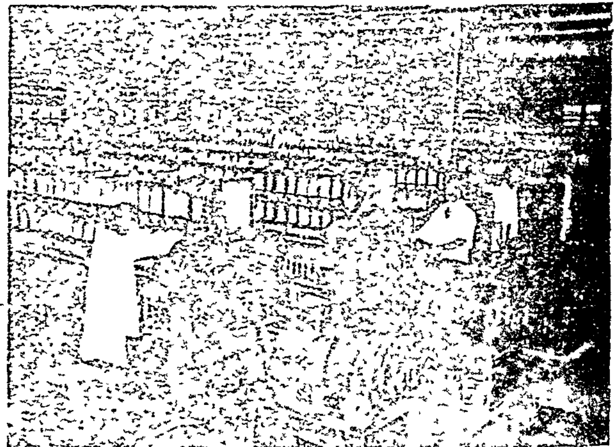
मजदूरों की कार्यक्षमता के साथ-साथ माल का उत्पादन बढ़े और उसके साथ-ही साथ माल के भिन्न-भिन्न प्रकार के नमूने तैयार हो तथा उसकी सुन्दरता में भी वृद्धि हो तब यह कहा जा सकता है कि जे० के० के अधिकार में आने के बाद रेमाण्ड ऊलन मिल के इतिहास का पृष्ठ बदल दिया गया है।

दी ईस्टर्न केमिकल कम्पनी (इण्डिया) :—सर्वप्रथम यह कम्पनी सन् १९१३ ई० में इग्लैंड में पब्लिक लिमिटेड कम्पनी की तरह रजिस्टर हुई थी और इसका उद्देश्य बम्बई में कई प्रकार के खनिज तेजाबों का उत्पादन करना था। इसमें नमक, गन्धक तथा शोरे का तेजाब और बहुत से दूसरे पदार्थ जैसे इप्सम

लवण, ग्लोबर लवण इत्यादि उत्पादित किये जाते थे। यह अपने प्रकार की पश्चिमीय भारत में पहली ही फैक्टरी थी। धीरे-धीरे यह और भी रासायनिक और औद्योगिक पदार्थ उत्पन्न करने लगी, जैसे टर्की लाल तेल, शुद्ध करने के पदार्थ, लकड़ी रक्षक रासायनिक पदार्थ, रंगों को हटानेवाले पदार्थ तथा चिकनाई देनेवाले पदार्थ इत्यादि। तीस वर्षों तक सफलतापूर्वक चलने के पश्चात् यह कम्पनी जे० के० इण्डस्ट्रीज के द्वारा १४ मार्च सन् १६४४ में खरीद ली गयी।

यह ध्यान में रखते हुए कि इन उद्योगों को शीघ्र ही बढ़ाना है जे० के० संघ ने अपने माल को तैयार करने के नये ढंग अख्तियार किये और निम्नांकित माल और तैयार करने लग गये।

सल्फेट आफ एल्युमिना, पोटाश एलम, सोडियम थायो सल्फेट, डी० डी० टी०, झाग देनेवाले लवण, छापने की स्याही, दवाइयाँ इत्यादि। अच्छे प्रकार के रासायनिक पदार्थ तैयार करने के लिये भी प्रबन्ध किया गया। मशीन की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिये नई मशीनें लगा दी गयी और इसमें लगभग ४०० मनुष्य काम करते हैं।



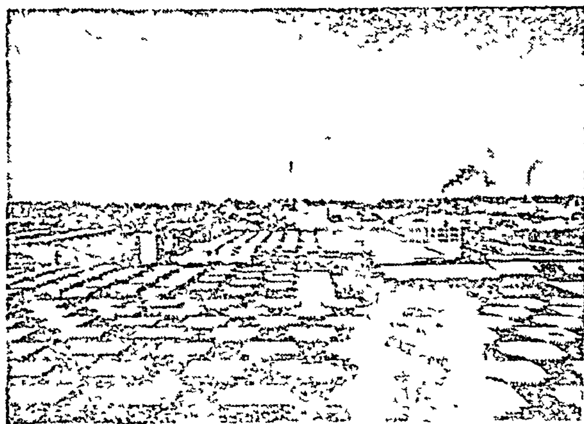
स्पीनिंग डिपार्टमेन्ट न्यू कैसरे हिन्द मिल्स बम्बई

न्यू कैसरे हिन्द स्पीनिंग और वीविंग कम्पनी लिमिटेड— इस मिल की नींव सन् १६०१ में रखी गई तथा २६ अक्टूबर सन् १६४५ में जे० के० इण्डस्ट्रीज ने इसको खरीद लिया। इस मिल में ५१३५४ स्पिण्डल और लगभग १६०० लूम लगे हुए हैं तथा ५,००० हजार मजदूर प्रतिदिन काम करते हैं। यह मिल बढ़िया कपड़ा और सूत बनाता है तथा एक वर्ष में ३२४ लाख गज कपड़े का उत्पादन करता है। ज्योंही जे० के० इण्डस्ट्रीज का इस मिल पर आधिपत्य हुआ त्योंही उन्होंने इसमें कितने ही प्रकार के नये साधन जुटा दिये। हाल ही में इस मिल में डायनामाइट कलर का उपयोग चालू कर दिया गया जिससे कि एक मौलिक परिवर्तन हो गया है और सारे वातावरण में सुधार नजर आता है और कार्यक्षमता भी बढ़ गयी है। मिल के प्रबन्धकों ने मजदूरों की हालत को सुधारने के लिये भी खास ध्यान दिया है।

कम्पनी की ओर से मजदूरों के छोटे बच्चों को संभालने के लिये एक बहुत ही सुन्दर व्यवस्था है जोकि इस दिशा में दूसरों के लिये उदाहरण के रूप में है। बहुत ही आधुनिक ढंग पर एक भोजनालय बना हुआ है जोकि एक ही समय में ५०० मजदूरों की व्यवस्था कर सकता है। जिसमें सिनेमा प्रोजेक्टर तथा चल-

चित्र वगैरह की भी सुन्दर व्यवस्था है। कम्पनी की ओर से अफसरों के आराम के लिये कमरे बने हैं। एयर-कण्डीशनिंग का कार्य भी विचाराधीन है।

दी टेक्सटाइल फैब्रीकस लिमिटेड बम्बई :—इस कम्पनी के खोलने का खास उद्देश्य गलीचे, दरियाँ, चटाइयाँ, धूंसे, कम्बल और दूसरा माल मार्केट के लिए तैयार करने का था जो रूई, ऊन, जूट, रेशम, पटुआ इत्यादि से बनाया जा सकता है यह ८ जून सन् १९४६ में मिली।

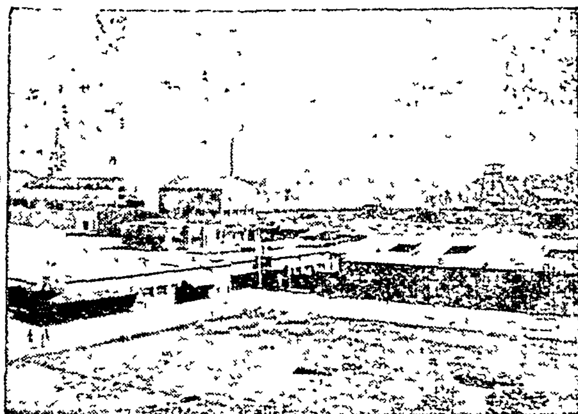


एरियल दृश्य जे० के० काटन मिल्स कानपुर

इम्पेक्स (इण्डिया) लिमिटेड (बम्बई)—इस फर्म को १८ जून सन् १९४६ में ज्वाइंट स्टाक कम्पनी के नाम से मिलाया जिसका कि उद्देश्य व्यापार को चलाने के लिये आयात और निर्यात का व्यापार करना था।

स्ट्रा प्रोडक्टस् लिमिटेड, भोपाल :—यह फर्म ९ अगस्त सन् १९३८ में हर प्रकार के निकम्मे पदार्थों से गुदा तैयार करने तथा उनसे कार्डबोर्ड, पेस्टबोर्ड, मिलबोर्ड और पेटियाँ बनाने के लिये खोली गई थी। घास के कार्ड बोर्ड बहुत ही सुन्दर क्वालिटी के अलग-अलग नाप के और अलग अलग मोटाई के बनते हैं जो कि बहुत ही आधुनिक ढंग के होते हैं। जो कि बहुत ही सस्ते तथा दवाइयों, लालटेनों, काँच के सामान और चीनी के बरतनों को बाँधने के काम में आते हैं। और ये पेटियाँ, फाइल, लिफाफे, निमंत्रण-पत्र तथा फ्रेम बनाने के लिये बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

यद्यपि जे० के० का खास स्वार्थ कानपुर में ही है फिर भी उन्होंने अन्य शाखायें दूसरी जगह पर भी खोल रखी हैं जहाँ पर कि कच्चा माल, शक्ति यातायात इत्यादि सब सुविधायें सुलभ हैं। वैसे तो मुख्य-मुख्य मिल तथा व्यावसायिक कम्पनियों की स्थापना बम्बई और कलकत्ता में ही है फिर भी जे० के० संघ की छोटी छोटी शाखायें लगभग चारों दिशाओं में बँटी हुई हैं।



ए० सी० आई० लि० जेके नगर

जे० के० की जो फैक्टरियाँ, मिल तथा व्यावसायिक कम्पनियाँ बिहार, कलकत्ता आदि पूर्वीय क्षेत्र में हैं उनका प्रमुख कार्यालय

कलकत्ता में, ७ कौंसिल हाउस स्ट्रीट में है। और जो उद्योग बॉम्बे राज्य में हैं उन सबका प्रमुख कार्यालय जे० के० बिल्डिंग, डौगाल रोड बम्बई में है। और उत्तरीय क्षेत्र उत्तरप्रदेश, जयपुर तथा भोपाल में स्थापित उद्योगों का प्रबन्ध करता है।

जे० के० द्वारा संचालित तमाम उद्योगों को नाम-सूचि।

(१) कॉटन टेक्सटाइल्सः—(१) जे० के० कॉटन स्पीनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कम्पनी, लिमिटेड कानपुर; (२) जे० के० कॉटन मैन्युफैक्चरर्स लिमिटेट, कानपुर; (३) दी न्यू केसर-ए-हिन्द स्पीनिंग एण्ड वीविंग कम्पनी लिमिटेड बम्बई और (४) दी टेक्सटाइल फैब्रीक्स लिमिटेड, बम्बई।

(२) जूटः—जे० के० जूट मिल्स कम्पनी लिमिटेड, कानपुर।

(३) ऊलः—(१) दी रेमाण्ड ऊलन मिल्स लिमिटेड, बम्बई।
(२) जे० के० ऊलन मैन्युफैक्चर्स, लिमिटेड, कानपुर।

(४) होइजरीः—(१) जे० के० होइजरी फैक्टरी, कानपुर।
(२) जे० के० होइजरी फैक्टरी, कलकत्ता।

(५) शुगरः—(१) कमलापति मोतीलाल गुटैया शुगर मिल्स कानपुर एण्ड फैजाबाद।
(२) मोतीलाल पदमपत शुगर मिल्स कम्पनी लिमिटेड मजहौलिया।

(६) प्लाउड एण्ड स्ट्रा प्रोडक्शन :—(१) दी प्लाउड प्रोडक्शन सीतापुर।
(२) दी स्ट्रा प्रोडक्टशन लिमिटेड भोपाल।

(७) मेटल एण्ड इञ्जिनियरिंगः—(१) जे० के० आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि० कानपुर।
(२) दी एल्युमिनियम कारपोरेशन आफ इण्डिया लिमिटेड जेके नगर।

(८) प्लास्टीक एण्ड रबरः—(१) दी प्लास्टीक प्रोडक्शन लिमिटेड कानपुर।
(२) दी माडर्न रबर मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी बम्बई।

(९) केमिकलसः—(१) जे० के० केमिकल्स लिमिटेड बम्बई।
(२) दी आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी मेडिसिन्स लिमिटेड, कानपुर।

(१०) फूड, आइल, सोप और आइसः—(१) दी स्नोव्हाइट फूड प्रोडक्शन कं० लि० कलकत्ता।
(२) दी रिफार्म फ्लावर मिल्स लि कलकत्ता।
(३) जे० के० आइल मिल्स एण्ड सोप फैक्टरी, कानपुर।
(४) दी हावड़ा सोप कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता।
(५) कमला आइस फैक्टरी, कानपुर।

(११) बैंकर्स एण्ड बैंन्करस्:—(१) दी हिन्दुस्तान कमरशियल बैंक लि० कानपुर। (हिन्दुस्तान भर में शाखाओं सहित)।
(२) जुग्गीलाल कमलापत, बैंकर्स, कानपुर।
(३) जुग्गीलाल, कमलापत, बैंकर्स कलकत्ता।

(१२) इनवेस्टमेंन्टस् :—(१) जे० के० इनवेस्टमेंट ट्रस्ट लिमिटेड, कानपुर।
(२ जे० के० इनवेस्टर्स् लिमिटेड, बम्बई।

(१३) इन्श्योरेन्स कम्पनीज:—(१) दी फ्री इन्डिया जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि०, कानपुर।
(२) दी नेशनल लाइफ इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता।
(३) दी नेशनल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड कलकत्ता।

(१४) मैंनेजिंग एण्ड सेलिंग एजेन्टस्—(१) जे० के० कमरशियल कारपोरेशन लिमिटेड कानपुर।
(२) जुग्गीलाल कमलापत डिस्ट्रीब्युटरस्, कानपुर।
(३) जे० के० लिमिटेड कलकत्ता।
(४, जे० के० ईस्टर्न इण्डस्ट्रीज लिमिटेड कलकत्ता।
(५) जे० के० लिमिटेड भोपाल।
(६) जे० के० ट्रेडरस् लिमिटेड कानपुर।
७) जे० के० ट्रस्ट कानपुर।

(१५) इस्टेट एण्ड प्रापरटीज—(१) जे० के० प्रापरटीज लिमिटेड कलकत्ता।
(२) जे० के० जमींदारी सुल्तानपुर।

(१६) एक्सपोर्टरस् एण्ड इम्पोर्टरस्—(१) इम्पेक्स (इण्डिया) लिमिटेड बम्बई।

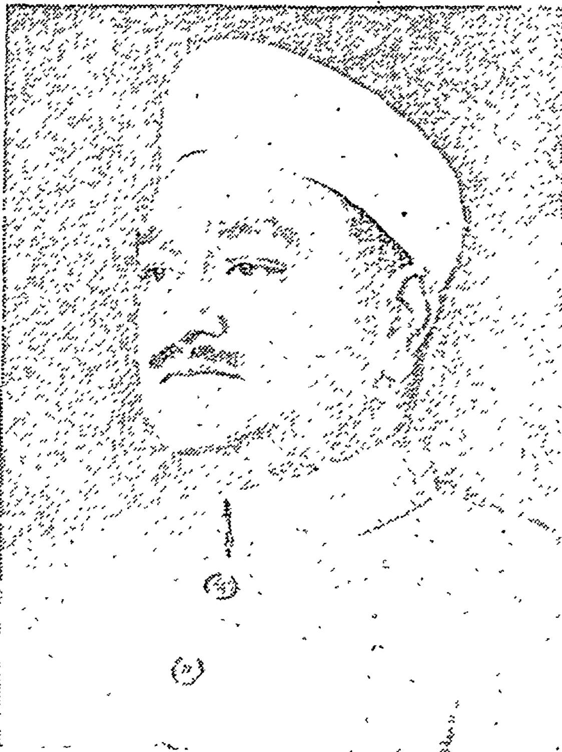
जे० के० इण्डस्ट्रीज के केन्द्रीय मस्तिष्क

जे० के० इण्डस्ट्रीज के संस्थापक अत्यन्त दूरदर्शी थे, उनका विश्वास था कि किसी भी बड़े प्रतिष्ठान का सफलतापूर्वक संचालन करने के लिए असाधारण योग्यता और ईमानदारी वाले व्यक्ति उसके मैनेजमेंट में होना चाहिए। इसलिए उन्होंने अपने प्रतिष्ठान में उच्चकोटि के तेजस्वी व्यक्तियों को प्रतिष्ठित किया, और अपने-अपने विभाग की सम्पूर्ण जवाबदारी उनपर छोड़ दी। वे अपने विभाग की सम्पूर्ण प्रशासकीय और टेकनिकल जानकारी देश-विदेश से संग्रह करते हैं। जे० के० इण्डस्ट्रीज की व्यापक सफलता का श्रेय इन लोगों के व्यक्तित्व को है।

सर पद्मपति सिंहानिया

सर पद्मपति सिंहानिया, जो कि लाला कमलापत सिंहानिया के सबसे बड़े पुत्र हैं, जे० के० इण्डस्ट्रीज के गवर्निंग डायरेक्टर हैं। इनकी तीव्र बुद्धि और पैनी दृष्टि जे० के० इण्डस्ट्रीज के शीघ्रगामी विकास में एक प्रमुख कारण है। भारत की विधान सभा के लिए जनता की तरफ से आप मेम्बर चुने गये हैं।

सर पद्मपत सिंहानिया मर्चेन्ट्स चेम्बर ऑफ कामर्स उत्तर प्रदेश के संस्थापक हैं और फेडरेशन ऑफ इण्डियन मर्चेंट चेम्बर्स, और इम्प्लायर्स एसोसिएशन्स उत्तर प्रदेश के चेयरमैन रह चुके हैं। केन्द्रीय सरकार के द्वारा संस्थापित कई महत्वपूर्ण कमेटियों में आप मेंबर बनाए गए हैं। इस समय आप जे० के० इण्डस्ट्रीज के उत्तरीय झोन के तथा फ्री इण्डिया जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड और दी हिन्दुस्तान कमर्सियल बैंक लिमिटेड के चेयरमैन और कन्ट्रोलर हैं। दो शक्कर की मिलें, दो कपड़े की मिलें, एक जूट मिल, एक जे०के० आयर्न एण्ड स्टील कपनी लिमिटेड, एक आईस फैक्टरी और एक प्लास्टिक प्राडक्ट्स का आप अत्यन्त सफलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। आप हिन्दी भाषा के बहुत बड़े समर्थक हैं। लख- और इलाहाबाद युनिवरसिटियों में जे० के० इण्डस्ट्रीज की तरफ से दो सांस्कृतिक केन्द्र खोले गए हैं। जिनके नाम जे० के० इन्स्टीट्यूट ऑफ अप्लाइड फिजिक्स (लखनऊ) और जे० के० इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल सर्विसेज हैं। इन दोनों संस्थाओं को आपकी ओर से पूर्ण सहायता मिलती है। आपके द्वारा बनाया हुआ कमला रेटरीट (Kamla Retreat) कानपुर की दर्शनीय वस्तुओं में एक प्रमुख आकर्षण है। जो प्रतिवर्ष हजारों यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। मंसूरी का कमला कैस्टिल (Castle) भी एक परम रमणीय और सुन्दर बिल्डिंग है जो जे० के० प्रतिष्ठान की दिव्य स्मृति के रूप में वहाँ पर बनी हुई है।

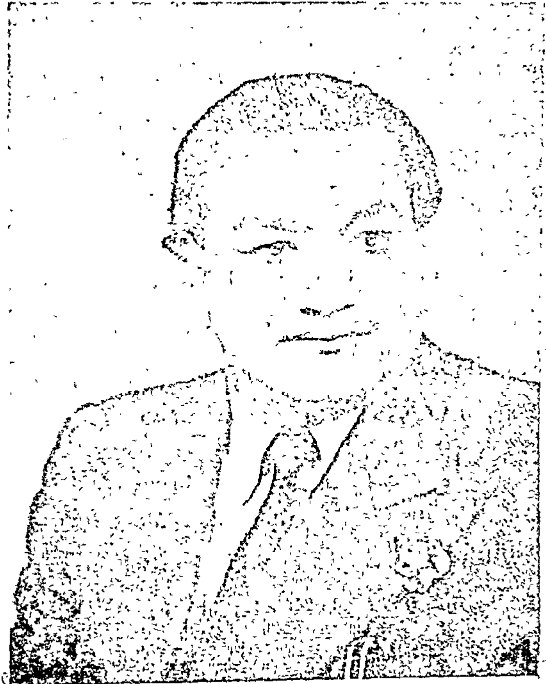


सर पद्मपति सिंहानियाँ

लाला कैलाशपत सिंहानिया

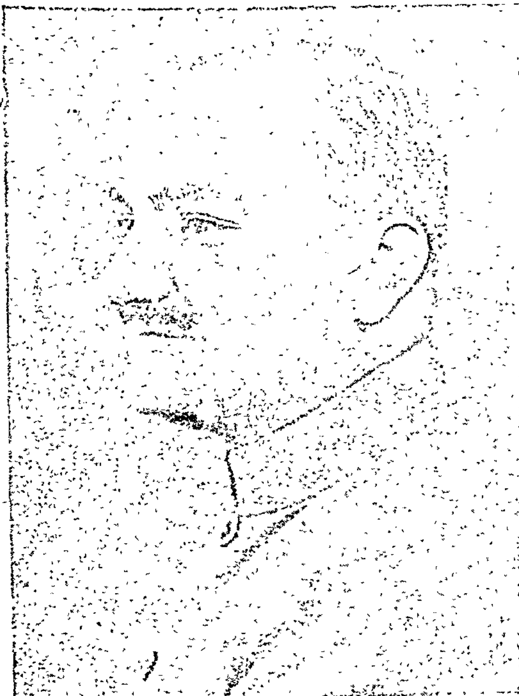
लाला कैलाशपत सिंहानिया लाला कमलापत सिंहानिया के द्वितीय पुत्र हैं। आप जे० के० इण्डस्ट्रीज के पश्चिमीय झोन की व्यवस्था को कण्ट्रोल करते हैं। जिसके साथ न्यू कैसरे हिन्द कॉटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स लिमिटेड, रेमण्ड ऊलन मिल्स, माडर्न रबर मैन्यूफैक्चरिंग को०, ईस्टर्न केमिकल्स को०, टैक्स टाइल फेब्रिक्स लि०, इम्पेक्स लि० और कई भिन्न-भिन्न प्रकार के उद्योग सम्मिलित हैं। लाला कैलाशपत एक प्रतिभाशाली, उदार हृदय, और साहित्य प्रेमी व्यक्ति हैं आपको घुड़सवारी और तैरने

अच्छा अभ्यास है। वे अपने यहाँ काम करने वाले मजदूरों और कर्मचारियों के स्वास्थ्य और आराम का पूरा पूरा ख्याल रखते हैं। आपने कानपुर में कमला क्लब की स्थापना की। आप एक सच्चे रोटेरियन (रोटरी क्लब के सदस्य) और फ्रीमेसन के सदस्य हैं। आप दस से अधिक सामाजिक क्लबों के मेंबर और इतने ही मेसेनिक इन्स्टीट्यूशन्स के सदस्य हैं। फेडरेशन आफ ऊलन मैन्यूफैक्चरर्स आफ इण्डिया के आप चेयरमैन हैं। औद्योगिक और अर्थशास्त्र सम्बन्धी विषयों पर आप अक्सर लिखते रहते हैं। बागवानी, कलात्मक वस्तुओं का संग्रह, पुस्तकाध्ययन आदि का आप को बहुत शौक है।


लाला कैलाशपति सिंघानिया

लाला लक्ष्मीपत सिंहानिया

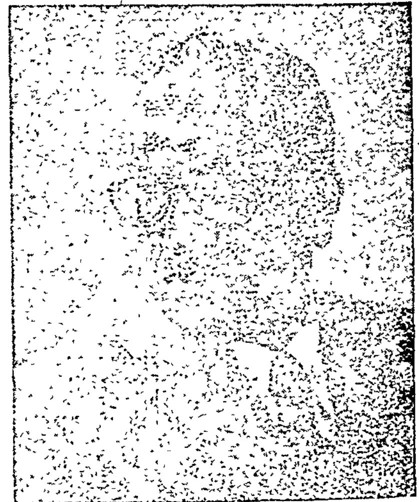
लाला लक्ष्मीपत सिंहानिया, लाला कमलापत सिंहानिया के तीसरे और सबसे छोटे पुत्र हैं। आप जे० के० इण्डस्ट्रीज के पूर्वीय झोन का संचालन करते हैं। इनका हेड ऑफिस कलकत्ते में है जहाँ करीब एक दर्जन कम्पनियों का संचालन ये करते हैं। लाला लक्ष्मीपत नेशनल लाइफ इंस्यूरेंस कम्पनी, तथा नेशनल फायर एण्ड जनरल इन्स्युरेंस कम्पनी के चेयरमैन हैं। दी एल्यूमिनियम कारपोरेशन ऑफ इण्डिया के आप डॉयरेक्टर इन जनरल हैं। इसके अतिरिक्त जे० के० इण्डस्ट्रीज के पूर्वीय झोन के दूसरे उद्योगों की जैसे जे० के० होजियरी लि०, स्नोह्वाइट फुडप्राडक्टस लि०, रीफार्म फ्लोअर मिल्स लि०, हवड़ा सोप कम्पनी लि०, नेशनल इन्स्यूरेंस की० लि०, विटा लॉइफ


लाला लक्ष्मीपत सिंहानिया

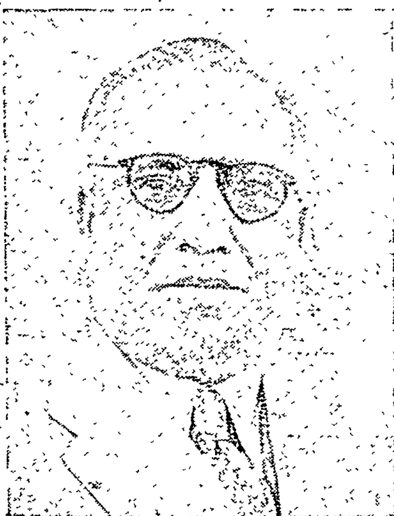
कारपोरेशन लि०, इत्यादि की आप व्यवस्था करते हैं। आप मर्चेण्ट्स चेम्बर ऑफ उत्तर प्रदेश के चेअरमैन रह चुके हैं। मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कॉमर्स कलकत्ता के भी आप चेअरमैन रह चुके हैं। इसके सिवा एफ० आई० सी० सी० आई० की कमेटी के सदस्य, तथा कोल कण्ट्रोल बोर्ड, इण्डियन सेण्ट्रल जूट कमेटी, और कॉटन, यार्न और क्लॉथ सेक्शनल कमेटी ऑफ इण्डियन स्टेण्डर्डस इन्स्टिट्यूशन के भी सदस्य हैं। आप घुड़सवारी और टेनिस के खेल में बहुत रुचि रखते हैं।

लाला सोहन लाल सिंहानिया

लाला सोहन लाल सिंहानिया लाला मुरलीधर सिंहानिया के ५ वें पुत्र हैं। ये जुग्गी लाल कमलापत काटन स्पिनिंग एण्ड विविंग मिल्स कं० लि० के जनरल मैनेजर और डाइरेक्टर इन चार्ज हैं। सन् १९४२ में आप जे० के० इन्डस्ट्रीज के बोर्ड आफ डाइरेक्टर में सम्मिलित किए गए। आप प्लास्टिक प्राडक्टस लि० के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। इसी प्रकार जे० के० ग्रुप के कई उद्योगों के जैसे - रेमण्ड ऊलन मिल्स, न्यू कैसरे हिन्द मिल्स, जे० के० कामर्सियल कारपोरेशन इत्यादि के बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स में आप सम्मिलित हैं। आप गवर्नमेण्ट सेण्ट्रल टेक्सटाइल इन्स्टीट्यूट की एडवाइसरी कमेटी के मेम्बर हैं।



लाला सोहनलाल सिंहानिया



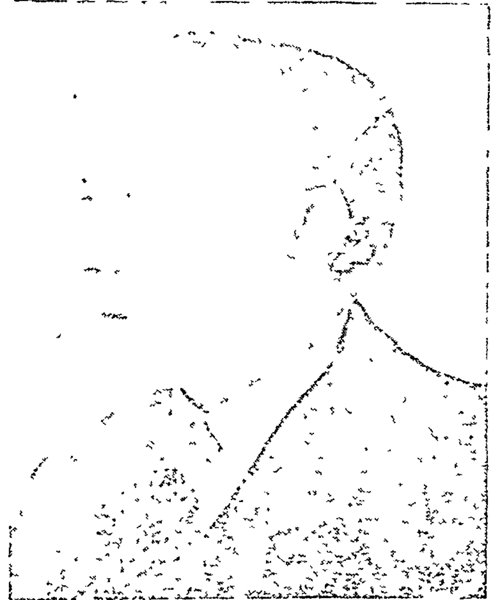
लाला पुरुषोत्तमदास सिंहानिया

लाला पुरुषोत्तम दास सिंहानिया

लाला पुरुषोत्तमदास सिंहानिया सन् १९३४ में जे० के० जूट मिल्स कं० लि० के मैनेजर के रूप में जे० के० ग्रुप में सम्मिलित हुए। क्रमशः सन् १९४२ में ये उसके बोर्ड आफ डाइरेक्टर में लिए गए। इसी प्रकार आप जे० के० कामर्सियल कारपोरेशन लि०, जे० के० इनवेस्टमेंट ट्रस्ट लि०, दी आयुर्वेदिक एण्ड यूनानी मेडिसिन्स लि०, दी वेस्टर्न इण्डिया शेअर्स कारपोरेशन लि० और जे० के० केमिकल्स लि० इत्यादि उद्योगों के बोर्ड आफ डाइरेक्टर्स में सम्मिलित हैं।

लाला शीतल प्रसाद

लाला शीतल प्रसाद जे० के० ग्रूप के अन्तर्गत उच्च सत्ता प्राप्त व्यक्तियों में से एक हैं। आपका पूर्व जीवन भारत सरकार और यू० पी० सरकार की उच्च पदस्थ सेवाओं में व्यतीत हुआ। सन् १९१५ में युक्तप्रान्त की प्रान्तीय सिविल सर्विस परीक्षा को उत्तीर्ण करने के पश्चात आप सन् १९२० से ३२ तक कानपुर में इनकमटैक्स आफिसर हो कर रहे। सन् १९४० में आप सेन्ट्रल बोर्ड आफ रेवेन्यू के आफिस में स्पेशल ड्यूटीवर रहे। सन् १९४१ में आप इनकमटैक्स के डाइरेक्टर आफ इन्सपेक्शन बनाए गए। फरवरी सन् १९४३ में आप रिटायर हुए और उसी साल आपने जे० के० इन्डस्ट्रीज में प्रवेश किया। आप जे० के० इनवेस्टमेन्ट ट्रस्ट लि०, जे० के० कामर्सियल कार्पोरेशन लि०, फ्री इण्डिया जनरल इन्श्योरेन्स कम्पनी लि० और हिन्दुस्तान कामर्सियल बैंक लि० की व्यवस्था करते हैं। वेदान्त दर्शन का आपने विशेष रूप से अध्ययन किया है।



लाला शीतल प्रसाद



एल० एम० वसीर

श्री एस० एम० वशीर

श्री एस० एम० वशीर जे० के० इण्डस्ट्रीज के पुराने और उच्च पदस्थ कार्यकर्त्ताओं में से एक हैं। आप जे० के० ऑयर्न एण्ड स्टील को० लि० के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

श्री के० सी० पुरी

श्री के० सी० पुरी जे० के० इण्डस्ट्रीज द्वारा संचालित हिन्दुस्तान कॉमर्शियल बैंक लि० के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

श्री तेज नारायण खेतान

आप स्वर्गीय श्री देवी प्रसाद खेतान के सुपुत्र



श्री तेज नारायण खेतान

हैं। आप जे० के० इण्डस्ट्रीज द्वारा संचालित रेमन्ड ऊलन मिल्स के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

मजदूरों और कर्मचारियों की सुविधा के लिए जे० के इण्डस्ट्रीज द्वारा उठाये गये प्रशंसनीय कदम

भारतीय उद्योग के सम्मुख इस समय मजदूरों और कर्मचारियों की सुख और सुविधा का प्रश्न सबसे प्रमुख है इस प्रश्न को लेकर एक व्यापक तनातनी और असन्तोष का वातावरण सारे उद्योग पर छाया हुआ है, देश के उद्योगधन्धों को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए देश के उद्योगपति और मजदूर दोनों को ही मिलकर इस समस्या का समाधान करना है।

हर एक मजदूर जो दिन रात अपने पसीने से उद्योग धन्धों के उत्पादन की वृद्धि करता है और हर एक कर्मचारी जो दिन भर टेबिल के सामने बैठकर काम करता है, स्वाभाविक रूप से यह आकांक्षा करता है कि उसे उत्तम दर्जे का खाना, हवादार मकान, खेल-कूद और मनोरंजन के साधन, उत्तम पारिवारिक जीवन और सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो। जिससे उसका शरीर और मन पूरी तरह से देश के उत्पादन की वृद्धि में सहयोग दे सकें।

जे० के० इण्डस्ट्रीज हमेशा से यह सोचती आ रही है कि मजदूरों के मुसकराते हुए चेहरे और खुश दिल हृदय ही प्रत्येक उद्योग धन्धे की मूलभूत पूंजी होती है। जे० के० इण्डस्ट्रीज के व्यवस्थापक यह अनुभव करते रहे हैं कि मजदूरों का सुख और उनकी सुरक्षा न केवल काम करने के कमरों और आफिसों में ही आवश्यक है बल्कि उनके घरों में और उनके मिलने-जुलने के स्थानों में भी उसकी उतनी ही आवश्यकता है।

इस कार्य की सिद्धि के लिये जे० के० के प्रयत्न हमेशा क्रियाशील रहे हैं। मजदूरों से काम सुन्दरता के साथ कराना और उसके बदले में उनको योग्यतम वेतन देना, योग्य व्यक्तियों को उनकी रुचि के अनुकूल योग्य कार्य देना और उसके बदले में उनको योग्य मेहनताना देना जे० के० के व्यवस्थापकों का हमेशा से लक्ष्य रहा है और आज भी बना हुआ है। इस सिद्धान्त के अपनाने से जे० के० इण्डस्ट्रीज अपने कर्मचारियों और मजदूरों को आकर्षक डिविडेंड और बोनस देती रही है जिससे दोनों पक्ष अपनी उन्नति और उज्वल भविष्य की ओर क्रमशः आगे बढ़ रहे हैं।

जे० के० की उन्नति का दूसरा एक कारण यह भी है कि कम्पनी के लाभ के हिस्से के रूप में वह

काम करनेवालों को अधिकतम मँहगाई भत्ता और बोनस देती रहती है जिसके कारण इस कठिन समय में भी मजदूर अपने योग्यतम रहन-सहन और खाने पीने की चिन्ताओं से मुक्त रहते हैं।

उपरोक्त सुविधाएँ जहाँ काम करने वालों को हर प्रकार की चिन्ता और भय से मुक्त रखती हैं जे० के० के द्वारा कार्य करने वालों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा के लिए तथा हर प्रकार के मनोरंजन और दूसरी हलचलों के लिए एक विशेष आकर्षक संस्था का संगठन किया गया है —



कमला क्लब

कमला क्लब

सबसे पहले कमला क्लब नाम की संस्था की ओर ध्यान जाता है। यह संस्था काम करने वालों को बतलाती है कि अपने खाली तथा बचत के समय का उपयोग कैसे करना चाहिए। इस क्लब की एक बहुत सुन्दर इमारत बनी हुई है। जो कि इस देश में इस प्रयोजन के लिए बनी हुई इमारतों में श्रेष्ठ है। बिल्डिंग के आस पास अत्यन्त विस्तीर्ण क्षेत्र घिरा हुआ है।

काम करने वाले लोगों के बच्चे इस पार्क में बने हुए झूलों, फिसलने की सीढ़ियाँ तथा तरह-तरह के खेल-कूद और मनोरंजन के साधनों को कभी नहीं भूल सकते जो कि इस पार्क में उनके लिए स्थान-स्थान पर बने हुए हैं।

कमला क्लब के द्वारा आयोजित खेल-कूद की विभिन्न गति विधियोंने कई ऐसे नौजवान खिलाड़ियों को पैदा किया है जिन्होंने देश के विभिन्न टूर्नामेंटोमें विजय पाकर पुरस्कार और पदक प्राप्त किये है।

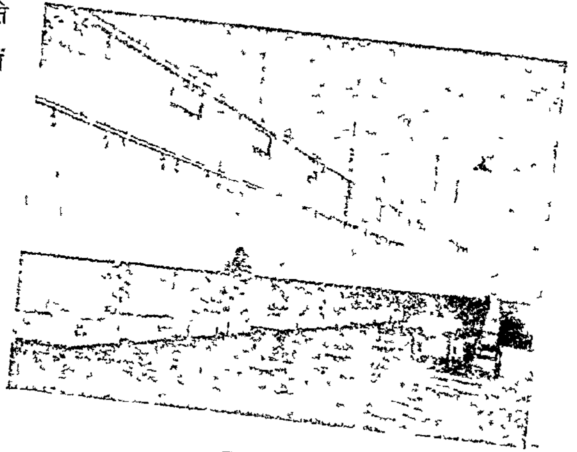
दिमागी मनोरंजन के लिए कमला क्लब में समय-समय पर कवि सम्मेलन, मुशायरा इत्यादि नाना प्रकारके मनोरंजक प्रोग्राम होते रहते हैं।

जे० के० इण्डस्ट्रीज का एक लक्ष्य यह है कि उसके अन्दर काम करनेवाले ठोस और उत्तम स्वास्थ्य से सुरक्षित रहें, इसके लिए इण्डस्ट्री की तरफ से सुयोग्य डाक्टरों और नर्सों और अस्पतालो के द्वारा उनके स्वास्थ्य की सुरक्षा का पूरा इन्तजाम रक्खा जाता है। जे० के० के प्रत्येक कारखाने में बनी हुई डिस्पेन्सरियाँ, क्वालिफाइड डाक्टरों और चिकित्सा सम्बन्धी आधुनिक समस्त साज सजाओं से सुसज्जित हैं। आउट डोअर और इनडोअर दोनों विभाग रात और दिन नियमित रूप से चलते हैं।

काम करने वालों को सभी प्रकार की मेडिकल सहायता बिलकुल मुफ्त दी जाती है।

प्रसूति गृह

जे० के० इण्डस्ट्रीज द्वारा प्रसूति के लिए हवादार क्षेत्रों में आधुनिक साधनों से लेस तथा योग्य लेडी डाक्टरों और नर्सों से युक्त प्रसूति गृह और क्रीचेस बनाये गये है। इन प्रसूति गृहों में जच्चा और बच्चा की सुख-सुविधाओं की पूर्ण व्यवस्था है जिससे अगली पीढ़ी के ये होनहार बच्चे भविष्य में योग्य नागरिक और स्वस्थ्य शरीर तथा मनके व्यक्ति बनकर समाज की सेवा कर सकें।



प्रसूति गृह

स्कूल और पाठशालाएँ

अनपढ कार्यकर्ता और उनके बच्चो को शिक्षित करने के लिए जे० के० इण्डस्ट्रीज ने सर्वत्र



बिल्डिंग कमला प्राइमरी स्कूल

निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध कर रक्खा है। लडके-लडकियों के लिये अलग-अलग स्कूल बने हुये है। इन स्कूलों मे शिक्षा देने के लिये ट्रेण्ड अध्यापक रक्खे हुए है।

वयस्क और अधिक उम्र के मजदूरों के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था की गई है जिससे वे अपना विकास स्वयं कर सकें और अध्ययन-मनन के द्वारा ज्ञान का संग्रह कर सकें, इसके लिए एक विशाल लायब्रेरी कमला टॉवर में बनी हुई है। इस लायब्रेरी में टैक्नीकल तथा दूसरे विषयों की पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का विशाल संग्रह किया हुआ है। इस संग्रह के द्वारा, इसमें पढ़नेवाले कार्यकरों को दुनिया में होनेवाली प्रत्येक गतिविधि का पता लगता रहता है।

लाला कमलापत सिंघानिया प्रारम्भ से ही देश की निरक्षरता को दूर करने के लिए अत्यन्त उत्सुक थे। उन्होंने जब विदेशों की यात्रा की तो वहाँ के शिक्षा गृहों की भव्य इमारतों को देखकर बहुत प्रभावित हुए जो कि वहाँ की सार्वजनिक संस्थाओं के द्वारा निर्माण की हुई थी। भारतवर्ष में वापस आनेपर उन्होंने सबसे पहले कानपुर जिले मे शिक्षा प्रचार की योजना बनाई। यद्यपि उनके जीवन-काल में यह योजना पूरी न हो सकी, मगर उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके बड़े पुत्र सर पद्मपत सिंघानिया ने २,५०००० की एक धनराशि दान करके कानपुर जिले मे १०० प्रायमरी स्कूलों की इमारते बनवाकर इस योजना को आगे बढ़ाया।

सात वर्ष की अवधि में सन् १९४७ के अन्त तक २२ इमारते नये ढंग के डिजाइनों पर तैयार हुई जिसमे ६ लड़कियों के लिए और १६ लड़कों के लिए थीं। इन सब इमारतों में करीब ३,२५०००खर्च हुए।

जे० के० इण्डस्ट्रीज ने भारतीय उद्योग-प्रतिष्ठानों के सम्मुख ईर्ष्या करने योग्य एक उच्चतम आदर्श रखा है। उसका विश्वास है कि देश की अज्ञानता को दूर करने पर ही इस देश का वास्तविक उत्थान हो सकता है। लाखों, करोड़ों देशवासी—फिर चाहे वे अमीर हो या गरीब—ज्ञान के प्रकाश में आवेंगे तभी यह देश अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर संसार में अपना स्थान प्राप्त कर सकेगा।

जे० के० इण्डस्ट्रीज ने सिर्फ प्रायमरी स्कूलों के लिए ही दान दिया हो, यह बात नहीं है। इलाहाबाद युनिवर्सिटी में जे० के० इन्स्टीट्यूट ऑफ आपलाइस फिजिक्स" का निर्माण करने के लिए उसने ६५०००० साढ़े छः लाख रुपया दिया है। उक्त इन्स्टीट्यूट का फाउण्डेशन स्टोन भारत के प्रधान मन्त्री माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू के हाथों रखा गया। दूसरा "जे० के० इन्स्टीट्यूट आफ सोशियालॉजी एण्ड ह्यूमन रिलेशन" लखनऊ युनिवर्सिटी में खोला गया। ये दोनो इन्स्टीट्यूट अपने ढङ्ग के भारतवर्ष में निराले है।



पं० जवाहरलाल नेहरू इलाहाबाद युनिवर्सिटी में जे० के० इन्स्टीट्यूट का उद्घाटन कर रहे हैं

जे० के० द्वारा निर्मित बगीचा का विशाल शहर

(कमला नगर)

जे० के० इन्डस्ट्रीज के व्यवस्थापकों की बहुत दिनों से यह इच्छा थी कि मजदूरों तथा कर्मचारियों के लिए एक बगीचों का बड़ा शहर निर्माण किया जाय जिसमें कर्मचारियों को शुद्ध हवादार और सुविधाजनक मकान मिल सकें। और हरेक मकान के आगे एक छोटा सा बगीचा हो जिसमें साग-सब्जी और फूल-फल पैदा हो सकें। इसके लिए जमीन भी ले ली गई और काम भी शुरू होने वाला था । लेकिन युद्ध की वजह से सामान न मिलने के कारण यह इच्छा पूरी नहीं हो सकी। सिर्फ उसके कुछ हिस्से में मजदूरों के रहने के लिए लेबर कालोनी बना दी गई।

जे० के० इण्डस्ट्रीज के संचालकों की जब यह इच्छा पूरी हो जायगी, तब यह नगर कानपुर के औद्योगिक केन्द्रों में एक बहुत सुन्दर बगीचे का शहर बन जायगा। इसमें बनने वाले हरेक मकान की डिजाइन सुन्दरता और लोगों की सुख-सुविधा के ख्याल को सामने रखकर तैयार किया जा रहा है। हर मकान के साथ जमीन का कुछ प्लाट छोड़ दिया गया है। जिसमें काम करने वाले अपने लिए साग-तरकारी पैदा कर सकें।

उसमें बहुत सी जगह खेल-कूद के प्लाट बनाने के लिए छोड़ दी गई है। जहाँ पर जाकर लोग स्वच्छ हवा का आनन्द ले सकें, तथा शहर में उड़ने वाले धूल और गर्द से बच सकें। तथा उनके बच्चे-बच्ची भी इन स्थानों पर आकर खेल-कूद से अपना मनोरंजन कर सकें।

अस्पताल, प्रसूति गृह और नेत्र चिकित्सा का अस्पताल भी उस बगीचे के अन्दर बनाया जायगा जिससे बगीचे का शहर और भी सुन्दर हो जाय। इसमें बच्चो की पढ़ाई के लिए स्कूल, मनोरंजन के लिए सिनेमा गृह और खेल-कूद के मैदान बनाए जायेंगे। सट्टी लगाने के लिए दुकानें भी इसमें बनेंगी। मतलब यह कि तैयार हो जाने पर यह शहर मजदूरों की एक आदर्श बस्ती का एक रूप ग्रहण करेगा।

लाला कमलापत सिंघानियाँ जो कि जे० के० इण्डस्ट्रीज के निर्माण कर्त्ता हैं उनका यह मूल सिद्धान्त था कि हिन्दुस्तान का मौलिक रूप से औद्योगिक विकास हो। यहाँ के उद्योगों में लगने वाली पूँजी, मैनेजमेन्ट और मशीनरी बिना विदेशों पर निर्भर रहे हुए इसी देश में पैदा की जाय।

उनकी यह इच्छा पूरी हो गई। जे० के० का जितना उद्योग इस देश में फैला हुआ है उस सबमें हिन्दुस्तान की पूँजी लगी हुई है। और उसके सब कार्यकर्त्ता भी हिन्दुस्तानी हैं।

इनकी जितनी भी फैक्टरियाँ चल रही हैं सब देश के लिए उपयोगी चीजों का उत्पादन कर रही हैं।

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists

भारत की औद्योगिक प्रतिभाएं

An Industrial magnate of India of 1955.

सेठ हरिदास मूंधड़ा, उद्योग प्रतिष्ठान कलकत्ता

संचालक :—

१—एस० बी० इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट कं० लि०
२—एफ० एण्ड सी० ओसलर लि० (इण्डिया)
३—ओसलर इलेक्ट्रिक लैम्प मै० कं० लि०
४—डङ्कन स्ट्रेटन एण्ड कम्पनी लि०
५—रिचर्ड सन एण्ड क्रूडास लि०
६—वर्द्धमान कोलियारी कं० लि०
७—ब्रह्मपुत्र टी कम्पनी लि०
८—जेसप एण्ड कम्पनी लि०
६—ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन लि०
१०—टर्नर एण्ड मॉरिसन लि०

भारतीय औद्योगिक जगत् का एक चमकता नक्षत्रः—

सेठ हरिदास मूंधड़ा

सन् १९५५ के अन्तर्गत भारतीय उद्योग के इतिहास में जिन उद्योगपतियों ने आश्चर्य-जनक कार्य करके दिखलाये हैं उनमें सेठ हरिदास मूंधड़ा का नाम बहुत प्रमुख है। भारत के अन्तर्गत पैर जमाये हुए तथा करोड़ों रुपये के उद्योग स्थापित किये हुए कई विदेशी प्रतिष्ठानों के कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट खरीदकर उन उद्योगों का भारतीयकरण करने में सेठ हरिदास मूंधड़ा ने असीम व्यापारिक साहस का परिचय दिया है।

स्वतन्त्र भारत के पुनर्निर्माण में इञ्जीनियरिंग उद्योग की कितनी बड़ी आवश्यकता है यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। बड़ी-बड़ी नदियों के बाँध बँधवाकर उनसे बड़े पैमाने पर विद्युतशक्ति उत्पन्न करना, सड़कें बनाना, मशीनरी बनाना इत्यादि सारे कार्य इञ्जीनियरिंग उद्योग की सहायता से ही सम्पन्न होते हैं। सेठ हरिदास मूँधड़ा अपने बाल्यकाल से ही इञ्जीनियरिंग-उद्योग में दिलचस्पी रखते थे और इनकी कल्पनाएँ इस उद्योग के चरम विकास को देखने के लिए दौड़ा करती थीं। इनके परिश्रम, अध्यवसाय और भाग्य ने इनका पूरा साथ दिया। आज इनकी कल्पनाओं ने साकार रूप धारण कर लिया है और आज भारतवर्ष के इंजीनियरिंग-उद्योग के आप बहुत बड़े उद्योगपति हैं। बड़ी-बड़ी प्रमुख विलायती इंजीनियरिंग कम्पनियाँ जैसे एफ० एण्ड सी० ओसलर लि०, ओसलर इलेक्ट्रिक लैम्पमैन्युफैक्चरिंग कम्पनी लि०, डङ्कन स्टारटन एण्ड को लि०, रिचर्डसन क्रूडास लि०, जेसप एण्ड कम्पनी लि०, आपके कण्ट्रोल में आ गई हैं।



सेठ हरिदास मूंधड़ा, कलकत्ता

इसके अतिरिक्त कोयले के क्षेत्र में वर्द्धमान कोलियारी लि०, चाय के क्षेत्र में ब्रह्मपुत्र टी० कम्पनी लि० की मैनेजिंग एजेन्सियाँ आपने अपने अधिकार में ले लीं।

हाल ही में भारत की बहुत बड़ी मशहूर विलायती कम्पनी ब्रिटिश इंडिया कारपोरेशन लि० जिसका रजिस्टर्ड आफिस कानपुर में है और जिसमें आठ मिलें शक्कर की, दो कपड़े की, एक लालइमली ऊन की एक चमड़े की तथा और भी कई छोटी-मोटी फैक्टरियाँ हैं उसका भी कण्ट्रोलिंग इंट्रेस्ट आपने ले लिया है। टर्नर मॉरिसन एण्ड कम्पनी लि० जिसके मैनेजमेंट में भी बहुत से कारखाने, जहाजी कम्पनी, शैलाक कम्पनी इत्यादि हैं उसका कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट भी आपने ले लिया है।

इस महान् उद्योगपति का जीवन परिचय हम आगे दे रहे हैं।

सेठ ग्वालदास हरिदास मूंधड़ा

उद्गम और विकास

सेठ हरिदास मूँधड़ा के पूर्वजों का मूल निवास स्थान डीडवाना (राजस्थान) का था। वहाँ से संवत् १८०५ में इनके पूर्व पुरुष सेठ भीमराज मूँधड़ा महाराजा गजसिंह के शासन काल में बीकानेर आये। सेठ भीमराज मूँधड़ा बड़े प्रतिष्ठित और प्रभावशाली व्यक्ति थे। आपने अनेक प्रकार के धार्मिक और सार्वजनिक कार्यों में बहुत द्रव्य खर्च किया "चाप" नामक ग्राम में सार्वजनिक उपयोग के लिए आपने एक तालाब और मन्दिर बनवाया जो आज भी विद्यमान है। महाराजा गजसिंह आपका बड़ा सम्मान करते थे। आपके सेठ हरगोविन्द मूँधड़ा नामक एक पुत्र हुए। सेठ हरगोविन्द मूँधड़ा के सेठ जयकिशन और सेठ जयकिशन मूँधड़ा के सेठ सवाई राम नामक पुत्र हुए।

सेठ सवाईराम मूँधड़ा

सेठ सवाईराम मूँधड़ा उन दिनों कलकत्ता आये जब कि इस देश में रेल, तार, मोटर इत्यादि यातायात के साधनों का प्रायः अभाव था। सेठ सवाईराम मूँधड़ा पैदल मार्ग से ही मिर्जापुर तक आये और वहाँ से रेल मार्ग द्वारा कलकत्ता आये। जिस समय सेठ सवाईराम मूँधड़ा कलकत्ता आये उस समय कलकत्ते में कठिनाई से सौ घर मारवाड़ियों के होंगे और माहेश्वरी समाज के तो कुल बीस व्यक्ति उस समय कलकत्ते में रहे होंगे। आपने यहाँ आकर हाथीदाँत का व्यापार प्रारम्भ किया। आपके सेठ फतेचन्द और हरदेवदास नामक दो पुत्र हुए।

सेठ फतेचन्द भी अपने पिता के साथ कलकत्ता आये और यहाँ आकर माहेश्वरी समाज को संगठित कर उसका एक धड़ा बाँधा। आपने पहले हाथी दाँत का और फिर कपड़े का व्यापार प्रारम्भ किया। आपके सेठ मदन गोपाल, और लक्ष्मीचन्द नामक दो पुत्र हुए।

सेठ मदनगोपाल मूँधड़ा

सेठ मदनगोपाल मूँधड़ा का जन्म संवत् १८६२ में हुआ। आप बड़े धार्मिक और व्यापार कुशल व्यक्ति थे। संवत् १९४४ में आपने बीकानेर में पुष्टिमार्ग का एक मन्दिर बनवाया। सम्वत् १९५६ के भयंकर अकाल के समय आपने बीकानेर में एक कुआँ बनवाया तथा रघुनाथ सागर का जीर्णोद्धार करवाया और पुष्कर के तालाब की मिट्टी निकलवा कर वहाँ एक घाट बनवाया। पुष्टिमार्ग के आप कट्टर प्रचारक और परमभक्त वैष्णव थे। बीकानेर में उस समय से आज तक श्री वल्लभाचार्य महाराज तथा व्रजवासी जो भी पधारते हैं इसी मन्दिर में ठहरते हैं।

धार्मिक कार्यों की ही तरह व्यापारिक क्षेत्र में भी सेठ मदनगोपाल मूँधड़ा ने बहुत सफलता प्राप्त की। आपने अपने व्यवसाय का कुशलता पूर्वक संचालन किया और कलकत्ते में नरसिंहसहाय मदन-

गोपाल नामक अपना फर्म स्थापित किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९६० में हुआ। आपके सेठ नरसिंह दास नामक एक पुत्र हुए।

सेठ नरसिंहदास मूँधड़ा

सेठ नरसिंहदास मूँधड़ा दस साल की छोटी उमर में ही अपने पिता के साथ व्यवसाय में भाग लेने लगे थे। आगे जाकर आपने अपने व्यापार को खूब बढ़ाया। आप ज्योतिष के अच्छे जानकार थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९५७ में हो गया। आपके चार पुत्र हुए जिनमें सबसे छोटे पुत्र का नाम सेठ ग्वालदास मूँधड़ा है।

सेठ ग्वालदास मूँधड़ा

सेठ ग्वालदास मूँधड़ा का जन्म संवत् १९५५ में हुआ। आप बड़े धार्मिक, व्यापारकुशल और मिलनसार व्यक्ति हैं। आपने सेठ दाउदयाल कोठारी के साझे में महाराज वर्द्धमान से कलकत्ते का राजा कटरा नामक बहुत बड़ा मार्केट लीज पर लिया। सन् १९२२ में आपने एस० बी० ट्रेडिंग कम्पनी नामक एक प्राइवेट लि० कम्पनी की स्थापना की। जिसमें बिजली का काम प्रारम्भ किया। राजा कटरा की लीज का भी पूरा भाग धीरे धीरे इस कम्पनी के नाम से ले लिया गया। इस प्रकार इस परिवार में बिजली के व्यापार का आरम्भ हुआ।

सेठ हरिदास मूँधड़ा



सेठ हरिदास मूँधड़ा

सेठ हरिदास मूँधड़ा इस परिवार में बहुत प्रतापी हुए इन्होंने अपनी प्रतिभा से अपने परिवार के सारे इतिहास को चमका दिया है। सेठ हरिदास मूँधड़ा का जन्म सन् १९२३ में हुआ। जिस समय ये स्कूल में पढ़ते थे उसी समय से इनका लक्ष्य व्यापार की ओर बहुत अधिक था। इस कारण एस० बी० ट्रेडिंग कम्पनी के काम को आप बारह साल की उम्र से ही देखने लगे थे।

पन्द्रह-सोलह वर्ष की उम्र से ही आप बिजली का व्यवसाय करनेवाली बड़ी बड़ी विलायती कम्पनियों के उच्च अधिकारियों से मिलने लगे और उनसे घनिष्ठता स्थापित करना प्रारम्भ किया। और तभी से बिजली के उद्योग को उच्चतम स्तरपर प्रारम्भ करने की महत्वाकांक्षा इनके मनमें

उत्पन्न होने लगी। ऐसा लगता था मानों प्रकृति ही इस महत्वाकांक्षी और साहसी युवक के हृदय में महान् आशा का संचार कर उसका पथ-प्रदर्शन कर रही है।

इसी समय सन् १६३६ में जब सेठ हरिदास मूंधड़ा की आयु केवल सोलह वर्ष की थी दूसरा विश्वव्यापी युद्ध प्रारम्भ हो गया।

सन् १६४२ में जब कलकत्ते पर जापानी बम वर्षा हुई और सब लोग यहाँ से जान ले-लेकर भागने लगे तब उस भयंकर समय में भी यह साहसी नवयुवक अपने मोर्चे पर डटा रहा और एस० बी० ट्रेडिंग कम्पनी की व्यवस्था स्वयं अपनी देख-रेख में करता रहा।

सन् १६४६

सन् १६४६ से सेठ हरिदास मूंधड़ा के महत्वाकांक्षा पूर्ण औद्योगिक जीवन का प्रारम्भ होता है। इसी वर्ष से इन्होंने अपनी विशाल कल्पनाओं को साकार रूप देना प्रारंभ किया। इसी वर्ष आपने एस० बी० इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट कम्पनी के नाम से एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी की स्थापना की।

एफ० एण्ड सी० ओसलर लि० नामक एक विलायती कम्पनी भारतवर्ष में करीब एक सौ वर्षों से व्यापार कर रही थी। जबतक बिजली का प्रचार नहीं हुआ था तब तक यह कम्पनी राजा, महाराजा तथा रईस लोगों के महलों को झाड़, फानूस इत्यादि काँच के बनाये हुए रोशनदानों तथा सामानों से सजाने का काम करती थी। बिजली का प्रचार होने पर यह कम्पनी बिजली का सामान बनाकर उनसे सजावट करने का काम करने लगी। सेठ हरिदास मूंधड़ा ने सन् १६४६ में इस कम्पनी को खरीद कर एफ० एण्ड सी० ओसलर (इंडिया) लि० के नाम से एक पब्लिक लिमिटेड कम्पनी प्रमोट किया और इस पब्लिक लि० कम्पनी की मैनेजिंग एजन्सी एस० बी० इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट कम्पनी के नाम पर ले ली।

इसी १६४६ के नवम्बर महीने में सेठ हरिदास मूंधड़ा ने बिजली का सामान भारतवर्ष में बनाने के लिए एक दूसरी पब्लिक लिमिटेड कम्पनी "ओसलर इलेक्ट्रिक लैम्प मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी" के नाम से स्थापित की। बाजार में इस समय जो ओसलर लैम्प चल रहे हैं वे इसी कम्पनी के द्वारा भारतवर्ष में तैयार होते हैं।

सन् १६४६ के दिसम्बर महीने में बम्बई में डंकन स्ट्रेटन एण्ड कम्पनी नामक एक प्रायवेट कम्पनी जिसके मालिक यूरोपियन थे और सिविल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में बम्बई के अन्दर जिसका बहुत बड़ा नाम था उसका मैनेजमेंट श्री हरिदास मूंधड़ा ने लेकर उसको पब्लिक लिमिटेड कर दिया और इसकी मैनेजिंग एजन्सी एस० बी० इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट कम्पनी के हाथ में ले ली।

सन् १९४७

सन् १९४७ में दक्षिण और पश्चिमी भारत में स्ट्रक्चरल इञ्जीनियरिंग के क्षेत्र में मेसर्स रिचर्डसन एण्ड क्रूडास के नाम से सौ साल पुरानी सबसे बड़ी विलायती कम्पनी थी। श्री हरिदास मूंधड़ा ने इस कम्पनी के प्रोप्राइटरी अधिकार खरीदकर इसको भी पब्लिक लि० कर दिया और उसकी मैनेजिंग एजन्सी भी एस० बी० इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट कम्पनी के नाम से ले ली। इसी वर्ष आपने अपने व्यापार के सिलसिले में विदेश यात्रा की। इस विलायत यात्रा में भी आपने अपनी वैष्णव-मर्यादा का पूरा पालन किया।

इसी वर्ष में सेठ हरिदास मूंधड़ा का ध्यान कोयला-उद्योग की ओर आकर्षित हुआ और आपने वर्द्धमान कोलियारी कम्पनी लि० को नाम से एक पब्लिक लि० कम्पनी प्रमोट की इसकी मैनेजिंग एजन्सी एस० बी० इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट कम्पनी के नाम पर ली गई।

श्री हरिदास मूंधड़ा एस० बी० इण्डास्ट्रियल डेवलप मेंट कम्पनी के मैनेजिंग डॉयरेक्टर हैं। और ऊपर लिखी तमाम कम्पनियों का मैनेजमेंट केवल २६ साल की आयु से अत्यन्त सफलता पूर्वक कर रहे हैं।

सन् १९५०

सन् १९५० में सेठ हरिदास मूंदड़ा की सूक्ष्म दृष्टि चाय के बढ़ते हुए व्यवसाय की ओर आकृष्ट हुई। आसाम में सन् १८६३ से ब्रह्मपुत्र टी० कम्पनी लि० के नाम से एक विलायती चाय की कम्पनी थी इस कम्पनी के करीब २ पूरे शेअर आपने अपने कण्ट्रोलमें ले लिये और सन् १९५४ में ब्रह्मपुत्र टी कम्पनी इण्डिया के नाम से इसको आपने पब्लिक लिमिटेड कम्पनी प्रमोट कर दिया। इस कम्पनी के बगीचों से करीब ४०००० मन चाय प्रति वर्ष पैदा होती है।

सन् १९५५

मार्च सन् १९५५ में आपने भारत वर्ष की मशहूर इञ्जीनियरिंग कम्पनी जेसप एण्ड कम्पनी लि० का कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट अपने हाथ में ले लिया। इस कम्पनी के कारखानों में सड़क दबाने वाले एञ्जिन, क्रेन मशीनें, रेलवे वैगनस इत्यदि बड़े-बड़े सामान और मशीनें बनती हैं। बड़ी-बड़ी नदियों के बांध, पुल वगैरह का यह कम्पनी निर्माण करती है।

सितम्बर १९५५ में भारत की बहुत बड़ी और मशहूर विलायती कम्पनी ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन, जिसका रजिस्टर्ड आफिस कानपूर में है और जिस की मैनेजिंग एजन्सी में १० शक्कर की मिलें, २ कपड़े की मिलें, १ लाल इमली ऊन की मिल और १ फ्लेक्स चमड़े की मिल तथा और कुछ कारखाने हैं का कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट भी सेठ हरिदास मूंधड़ा ने ले लिया।

दिसम्बर १९५५ में टर्नर मॉरिसन एण्ड कम्पनी लि० जिसके मैनेजमेंट में भी बहुत से कारखाने, जहाजी कम्पनी और शैलाक कम्पनी इत्यादि हैं का कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट भी सेठ हरिदास मूँधड़ा ने ले लिया है।

इस प्रकार भारत वर्ष का यह साहसी उद्योगपति दिन प्रतिदिन अपने अदम्य साहस और पराक्रम से देश के औद्योगिक क्षेत्र में अपना नाम चमका रहा है।

सेठ हरिदास मूँधड़ा का विवाह जलपाईगुड़ी के सेठ रामदीन डागा की सुपुत्री श्रीमती यशोदा देवी से हुआ आपको इस समय एक कन्या और एक पुत्र विजयकुमार हैं। कन्या का विवाह राय-बहादुर मंगतूलाल तापड़िया के छोटे पुत्र से हुआ है।

औद्योगिक विस्तार

इञ्जीनियरिंग कम्पनियाँ—

१—एस० बी० इण्डस्ट्रियल डेवलपमेंट कम्पनी लि०—

२—एफ० एण्ड० सी० ओसलर इण्डिया लि०—

३—ओसलर इलेक्ट्रिक लैम्प मैन्यू फैक्चरिंग कम्पनी लि०—

४—डङ्कन स्टार्टन एण्ड कं० लि०—

५—रिचर्डसन क्रूडास लि०

६—जेसप एण्ड कम्पनी लि०—

कोलियारी कम्पनी—

१—दी वर्द्धमान कोलियारी कम्पनी लि०—

चायबगान—

१—श्री ब्रह्मपुत्र टी० कम्पनी इण्डिया लि०—

शक्कर और कपड़े की मिलें—

१—ब्रिटिश इण्डिया कार्पोरेशन लि०—कानपुर।

विविध—

टर्नर मॉरिसन लि०—कलकत्ता।

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



भारत की औद्योगिक प्रतिभाएँ

Industrial Magnates of India



मेसर्स जयपुरिया ब्रदर्स उद्योग प्रतिष्ठान

भारत वर्ष के प्रथम श्रेणी के सुविस्तृत उद्योग प्रतिष्ठानों में जयपुरिया ब्रादर्स का उद्योग प्रतिष्ठान भी अपना एक महत्व पूर्ण स्थान रखता है।

इस उद्योग प्रतिष्ठान के प्रधान सञ्चालक सेठ मगतूराम जयपुरिया का विशिष्ट व्यक्तित्व सहज ही लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है। अंग्रेजियत के इस युगमें जब कि भारत के प्रायः सभी उद्योगपति अंग्रेजी ढङ्गके रहन-सहन में रहना गौरव पूर्ण समझते हैं सेठ मंगतूराम जयपुरिया आज भी प्राचीन परम्पराकी रक्षा करते हुए अपनी राष्ट्रीय वेषभूषा में ही गौरव पूर्ण ढङ्ग से रहना पसन्द करते हैं। उनका उन्नत और भव्य ललाट हँसमुख चेहरा, मारवाड़ी पगड़ी और वेषभूषा के अन्तर्गत अत्यन्त दिव्य और प्रभावशाली मालूम होता है। इस प्राचीन वेषभूषा और रहन सहन में रहते हुए भी देश की औद्योगिक उन्नति की घुड़दौड़ में वे किसी से पीछे नहीं हैं। इस देश के अन्तर्गत उनकी औद्योगिक सेवाओं का विस्तार बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बम्बई, राजस्थान इत्यादि सभी क्षेत्रों में फैला हुआ है। कपड़ा, शक्कर, कोयला, वनस्पती घी, इत्यादि विभिन्न प्रकार के उद्योगों में उनका महत्व पूर्ण स्थान है।

सेठ मंगतूराम जयपुरिया अत्यन्त सरल स्वभावी, उदार और सहानुभूति पूर्ण प्रकृति के समाजसेवी व्यक्ति हैं। दूसरे उद्योगपतियों की तरह उनसे मिलने जुलने में लोगों को कठिनाइयों का सामान नहीं करना पड़ता। उनका द्वार सभी लोगों के लिए खुला रहता है।

जयपुरिया ब्रदर्स के द्वारा बनाई हुई, आनन्द राम इण्टर कालेज, आई हास्पिटल तथा अन्य अनेकों सार्वजनिक संस्थाएं उनकी दीर्घ समाज सेवाओं को घोषित करती हैं और उनसे यह पता चलता है कि गान्धीजी की इस शिक्षामें कि "पूंजीपति अपनी अपनी पूंजी को समाज हित के लिए ट्रस्ट की सम्पत्ति समझ कर स्वयं को उसका ट्रस्टी मानें" आप लोग पूरा विश्वास रखकर उसी के अनुसार अपने द्रव्य को समाज सेवा में लगा रहे हैं।



सेठ मंगतूराम जैपुरिया

मेसर्स आनन्दराम गजाधर जयपुरिया

भारतवर्ष के औद्योगिक इतिहास पर जब हम सूक्ष्म दृष्टिपात करते हैं तो उसमें प्रकाशमान नक्षत्रों की तरह कुछ थोड़े से ऐसे व्यक्तित्व दृष्टिगोचर होते हैं जिन्होंने अपनी महान कर्मठता और औद्योगिक प्रतिभा से इस देश के औद्योगिक विकास में अपनी महत्वपूर्ण सेवायें अर्पित की हैं।

ऐसे व्यक्तियों में जैपुरिया बन्धु भी अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते है। नीचे के परिचय से मालूम होगा कि भारत के औद्योगिक विकास में जैपुरिया बन्धुओं ने कितना महत्वपूर्ण भाग अदा किया है।

पूर्व इतिहास

इस परिवार का पूर्व इतिहास विक्रम सम्वत १७६४ से इनके पूर्व पुरुष सेठ मथुरादास जैपुरिया से प्रारम्भ होता है। सम्वत १७६४ में शेखावाटी प्रान्त में जब नवलगढ़ बसाया गया तब वहाँ के ठाकुर साहब जयपुर से सेठ मथुरादास सर्राफ को बहुत आदर पूर्वक नवलगढ़ बसाने को ले गये। विक्रमी सम्वत् १७६४ की अक्षय तृतीया के दिन सेठ मथुरादास जैपुरिया की हवेली की नींव रखी गई थी।

सेठ मथुरादास की छठीं पीढ़ी में सेठ सूरजमल जैपुरिया हुए। सेठ सूरजमल जैपुरिया के चार पुत्र सेठ शिवबक्सराय, सेठ हरीराम, सेठ गनपतराय और सेठ आनन्दराम हुए।

सेठ शिवबक्सराय के सेठ रामेश्वरलाल और कुंजलाल नामक दो पुत्र हुए। सेठ रामेश्वरलाल के सेठ भीखराज और सेठ कुंजलाल के सेठ मुंगतूराम नामक पुत्र हुए। सेठ मुंगतूराम सेठ आनन्दराम के नामपर दत्तक हुए।

सेठ हरीराम जयपुरिया के चार पुत्र हुए जिनके नाम सेठ मूंगीलाल, सेठ मुखराम, सेठ गजाधर और सेठ पूरनमल हैं। इनमें सेठ पूरनमल सेठ गणपतराय के दत्तक हुए। सेठ मूंगीलाल और सेठ मुखराम का कम उम्रमें स्वर्गवास हो गया। सेठ मुंगीलाल के सेठ मोतीलाल दत्तक आये।

स्वर्गीय सेठ आनन्दराम जैपुरिया

सेठ आनन्दराम जयपुरिया का जन्म नवलगढ़ में विक्रमी सम्वत १६२८ में हुआ था। आप सम्वत १९५७ में सर्व प्रथम कलकत्ता आये। उस समय आप नागपुर की स्वदेशी कॉटन मिल्स के सेल्समैन नियुक्त हुए। इसके पश्चात् विक्रमी सम्वत १६६२ में आपने सुखदेवदास रामप्रसादके साझे में कपड़ेका व्यापार शुरू किया। इसमें आपको अच्छी सफलता मिली। इसके बाद सं० १९७४ में आपने सेठ ताराचन्द घनश्यामदास

के साथ में कपड़े का व्यापार किया और पूर्ण सफलता मिलने के बाद आपने विक्रमी सं० १९७८ में कलकत्ते में आनन्दराम गजाधर एवं बम्बई में आनन्दराम मुंगतूराम के नाम से अपना स्वतंत्र व्यापार शुरू किया। कुछ ही समय के पश्चात आपने कानपुर में आनन्दराम पूरनमल के नामसे भी एक फर्म खोली। जैपुरिया परिवार का सर्व प्रथम औद्योगिक प्रतिष्ठान सेठ आनन्दराम जैपुरिया द्वारा सन् १९३१ ई० में स्थापित किया गया। गोरखपुर जिलेके अन्तर्गत फरेन्दा नामक स्थान में गणेश शूगर मिल्स लिमिटेड के नाम से इस प्रतिष्ठान का जन्म हुआ और इसके पश्चात दिन प्रति दिन इस फर्मके औद्योगिक प्रतिष्ठानों की वृद्धि होती ही रही है। सेठ आनन्दराम के स्वर्गवास के पश्चात फरेन्दा नामक ग्राम का नाम उनकी पुण्यस्मृति में उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा आनन्दनगर में परिवर्तित कर दिया गया।



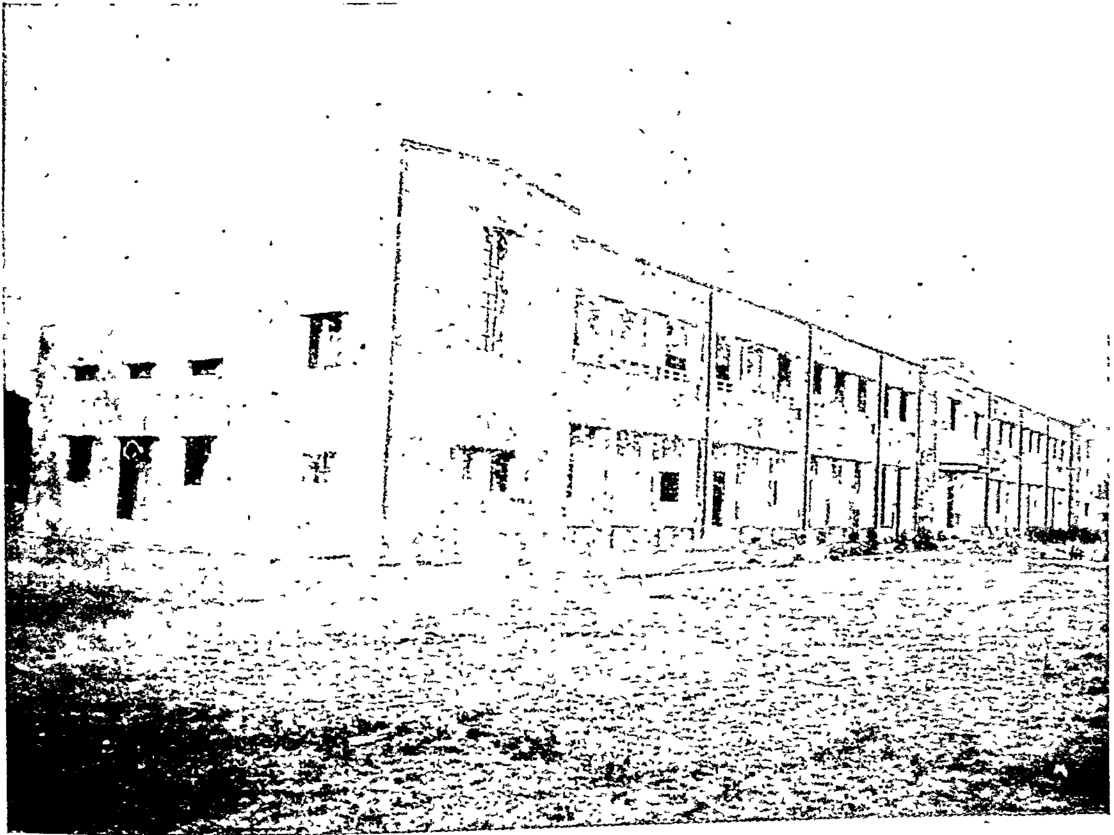
स्व० सेठ आनन्दराम जैपुरिया

सेठ आनन्दराम बड़े बुद्धिमान, मेधावी और व्यापारकुशल व्यक्ति थे। आपकी बुद्धिमानी एवं व्यवसाय कुशलता से फर्म की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी। आरम्भसे ही आपने केवल देशी वस्त्रों का ही व्यापार किया। विलायती, जपानी आदि विदेशी कपड़े के व्यापार से आपको सदैव नफरत रही। समस्त भारतवर्ष में देशी कपड़े का सबसे बड़ा व्यापार आपकी ही फर्म में होता था। साधारण व्यापारिक परिस्थिति से बढ़ कर आपने अपनी प्रतिभा से बहुत बड़ी सम्पत्ति उपार्जित की।

सेठ आनन्दराम जयपुरिया न केवल एक असाधारण व्यापारी ही थे बल्कि सामाजिक एवं व्यापारिक उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने में समर्थ व न्याय के पक्षपाती भी थे। आपने अपने जीवन काल में सहस्रों पंचायतें की होंगी जिनके फलस्वरूप हजारों परिवार कचहरियों में जाने और बर्बाद होने से बचे होंगे। एक ज्वलन्त उदाहरण सेठ ताराचन्द घनश्यामदास एवं सेठ जयनरायण रामचन्द्र के आपसी झगड़े के सुलझाने का है। इस फर्म में करीब १५०० बसने थे और इसका फैसला करने में सेठ जी को लगभग ५ वर्ष का समय लगा था परन्तु आपने दो परिवारों को आपसी झगड़े में बरबाद होने से बचा लेने के खयाल से ही ५ वर्ष का अपना अमूल्य समय इस कार्य में लगाया।

सेठ आनदराम को तीर्थ-पर्यटन एवं गरीब, अपाहिज और असहाय व्यक्तियों की सहायता करने का एक प्रकार से व्यसन सा था। अपने जीवन काल में उन्होंने लाखों मनुष्यों को भोजन तथा वस्त्र से परि पूरित किया होगा।

आपने नवल गढ़ में एक संस्कृत पाठशाला की स्थापना भी की जिसमें विद्यार्थियों को विद्याध्ययन कराने के अलावा भोजन-वस्त्र आदि दिया जाता है।



सेठ आनन्दराम जैपुरिया इन्टरमीजिएट कालेज, आनन्दनगर

आज इस परिवार का एक मात्र संस्थापक, पोषक और पथप्रदर्शक सेठ आनन्दराम जैपुरिया को ही कहा जा सकता है।

स्वर्गवास के पूर्व सेठ आनन्दराम ने एक ट्रस्ट की स्थापना की। जो सेठ आनन्दराम जैपुरिया ट्रस्ट के नाम से है और इसके द्वारा अनेक दीन-दुखियों की बराबर सेवा होती रहती है।

मिती मंगसर सुदी ११ सम्वत् १९८६ को आपका स्वर्गवास हो गया।

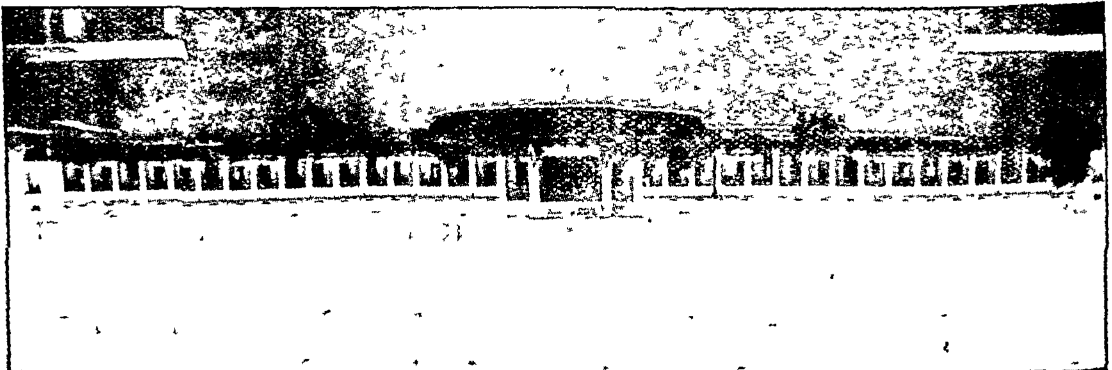
सेठ गजाधर जयपुरिया



सेठ गजाधर जैपुरिया

सेठ गजाधर जयपुरिया का जन्म मिती मंगसर बदी ४ संवत् १६४५ को हुआ। आपने संवत् १९५७ से केवल बारह वर्ष की उम्र से ही जौनपुर में कपड़े का काम देखना प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् आप १६६० में आये और तभी से आप अपने चाचा सेठ आनन्दराम जयपुरिया की देखरेख में बहुत लगन और मेहनत के साथ कार्य करने लगे। कपड़े के व्यापार में आप का अनुभव बहुत बढ़ा चढ़ा रहा और आपने सदैव ही साहस तथा होशियारी के साथ व्यापार किया। इस विशाल प्रतिष्ठान की उत्तरोत्तर वृद्धि में तथा उसे वर्तमान स्तर तक पहुँचाने में आप का बहुत बड़ा हाथ है। आपकी व्यापार के साथ २ सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में बहुत रुचि रही है। आप बम्बई की हिन्दुस्तानी नेटिव मर्चेंट्स एसोसिएशन के सभापति रह चुके है। इसी एसोसिएशन के अन्तर्गत एक बहुत बड़ी हाईस्कूल है, जो कि मारवाड़ी कमर्शियल हाईस्कूल के नाम से प्रसिद्ध है उसके आप प्रमुख संस्थापक हैं। बम्बई में निर्मित बृहत् बम्बई हास्पिटल ट्रस्ट के प्रथम ट्रस्टीयों में आप भी एक रहे हैं। इस समय आप विश्राम ले रहे हैं।

आप बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष हैं और तीर्थयात्रा में दिलचस्पी रखते हैं। अभी हाल ही में आप बद्रीनारायण केदारनाथ, इत्यादि तीर्थस्थानों की यात्रा करके लौटे हैं। बद्रीनारायण में आपने अपने बड़े भाई की पुण्यस्मृति में एक धर्मशालाका निर्माण भी करवाया है।



सेठ आनन्दराम जैपुरिया आइ हास्पिटल नवलगढ़



रायसाहब सेठ पूर्णमल जैपुरिया

सेठ पूरनमल जैपुरिया

आपका जन्म आसौज बदी १४ सम्वत् १९५१ में हुआ आप को बृटिश सरकार की तरफ से जनवरी सन् १९३८ ई० में राय साहब की पदवी मिली। सन् १९३१ ई० में जब गोरखपुर जिले में शुगर मिल्स की स्थापना की गई उस समय आपने स्वयं उस मिल का निर्माण करवाया और कई वर्षों तक तक वहां रह कर उसका सफलता पूर्वक संचालन करते रहे।

तदुपरान्त आपका रहना विशेष कर इस प्रतिष्ठान के मुख्य कार्यालय कलकत्ता में ही होता है। यहां से आप बहुत से उद्योग एवं कार्यालयों का संचालन करते हैं। एकाउण्टन्स से आप को विशेष रुचि है। इस फर्म के हिसाब-किताबों की देखभाल आपही के ऊपर रहती है।

सेठ पूर्णमल जैपुरिया कलकत्ते की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से काफी दिलचस्पी रखते हैं। इस समय आप कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी एवं काशी विश्वनाथ-सेवासमिति के सभापति भी हैं। आप कई फर्मों के डाइरेक्टर हैं।

सेठ मुंगतूराम जैपुरिया

आपका जन्म सम्वत् १९५७ में हुआ। सिर्फ १३ वर्ष की आयु से ही आप अपनी कपड़े की दूकान पर काम देखने लगे।

सेठ मुंगतूराम जयपुरिया प्रारम्भ से ही बड़े उद्योगी, कर्मठ और बुद्धिमान व्यक्ति रहे हैं। इस फर्म के औद्योगिक विकास में आपका बहुत बड़ा हाथ रहा है। आपने अपने पिताजी को सहयोग देकर अपने कपड़े के व्यवसाय को बहुत चमकाया, मगर आपके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता "औद्योगिक" विस्तार की है। आपके पिताजी ने औद्योगिक विस्तार की जो आधार-शिला स्थापित की थी आपने अपनी प्रतिभा से उस आधार शिला पर गगनचुम्बी महलों का निर्माण किया जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। सर्व प्रथम गोरखपुर जिले में गणेश शुगर मिल्स की स्थापना सेठ आनन्दराम जैपुरिया द्वारा सन् १९३१ ई० में की गई थी। उस समय इस मिल की क्रशिंग कैपैसिटी ६०० टन की ही थी परन्तु आपके प्रयत्नों से अब इस मिल की शक्ति ९०० टन प्रति दिन की है। इसके पश्चात् आपके प्रयत्न और उत्साह से इस फर्म के औद्योगिक प्रतिष्ठान बढ़ते गये।



सेठ आनन्दराम जैपुरिया इन्टर माजिएट कालेज आनन्दनगर

आपने दूसरी चीनी की मिल श्री आनन्द शुगर मिल्स लिमिटेड, खलीलाबाद जिला बस्तीमें खरीदी।

इसके पश्चात सन् १६३६ में आपने स्वदेशी इन्डस्ट्रीज लिमिटेड की स्थापना की। इसमें कलकत्ता के अन्दर एक सिल्क मिल, एक बैकालाइट प्लास्टिक एवं रोलिंग मिल्स हैं।

इसके पश्चात आपने वर्ड कम्पनी के पास से एक कोयले की खदान खरीदी जिसका नाम जैपुरिया कजोरा कोलरीज रक्खा गया। यह कोलरी ऑडल स्टेशन के पास है।

इसके बाद मार्टिन कम्पनी के पास से आपने शामला कौलरीज खरीदी। इसमें चार खदाने हैं और आज इस प्रतिष्ठान की खदानों से २५०१० टन कोयला प्रतिमास निकाला जाता है। इसके पश्चात् सन् १६४६ ई० में आपने हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी कपड़े की मिल दी स्वदेशी काटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड, के बहुमत हिस्से सर हेनरी हार्समैन से खरीद लिये।

इस मिल में से है। जिसमें लगभग १०००० मजदूर काम करते हैं।

बरार में आपने एक वेजीटेबुल घी की मिल भी चालू की।

सेठ मुंगतूराम दिल के बड़े उदार, मिलनसार और दानी पुरुष हैं। आप और आपका परिवार

भारतीय राजनीति में शुरू से अब तक कांग्रेस के अनुयायी रहे हैं। भारतीय स्वाधीनता के युद्ध मै आपने कांग्रेस को दिल खोल कर आर्थिक सहायताएँ प्रदान की थीं एवं अब भी सदैव अपना सहयोग देते रहते हैं।

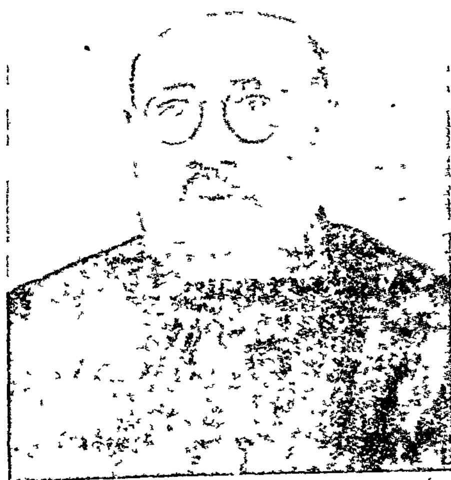
आप मारवाड़ी रिलीफ सोसायटी कलकत्ता के दो वर्ष तक एवं विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी के भी दो वर्ष तक सभापति रहे हैं।

सेठ मगतूराम जयपुरिया हमेशा से भारत की औद्योगिक उन्नति के बड़े समर्थक रहे हे। आप शुगर सिन्डीकेट के संस्थापक और डाइरेक्टर भी रहे हैं। मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ता के आप दो वर्ष तक सभापति रह चुके हैं। इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स की कार्य कारिणी के भी आप वर्षो से सदस्य हैं। आप बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिल के भी मेम्बर रह चुके हैं। उत्तर प्रदेश सरकार के स्टेट प्लानिंग बोर्ड के आप सदस्य हैं एवं आयल टैकनालाजीकल एसोसियेशन के वर्तमान समय में सभापति हैं। आप उत्तर भारत मिल मालिक संघ के सभापति भी रह चुके हैं। कानपुर की समस्त मारवाड़ी संस्थाओंकी समिति 'मारवाड़ी चेरीटेबुल सोसाइटी' के आप सभापति हैं। आप इण्डस्ट्रियल एडवाइजरी कमेटी राजस्थान के भी मेंबर हैं।

पिछले वर्ष १६५४ ई० में आप बर्मा, बैंकाक, हाँगकांग एवं जापान आदि विभिन्न देशों का भ्रमण करके लौटे हैं। आपने विदेश में अनेक प्रकार की इण्डस्ट्रीज को देख कर उनका अनुभव प्राप्त कियाहै

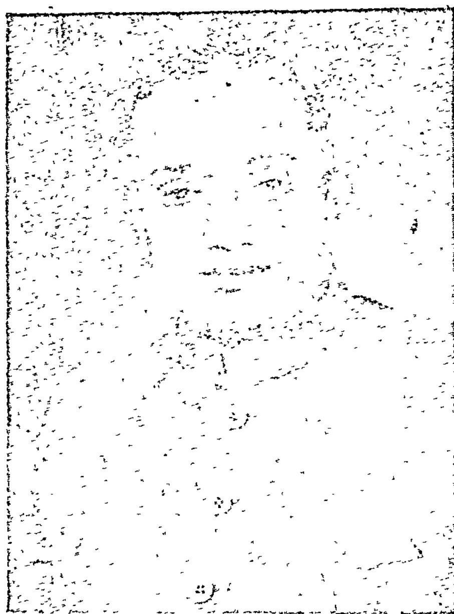
सेठ भीखराज जैपुरिया

आपका जन्म मिती ज्येष्ठ सुदी ३ सम्वत १६६१ में हुआ। आपने आरम्भ से ही कपड़े का काम देखना शुरू किया। आपकी बुद्धि और कार्यक्षमता को देख कर बृटिश सरकार ने जनवरी सन् १६४५ ई० में आपको रायबहादुर की पदवी से सुशोभित किया। इस समय आप आनन्दनगर और खलीलाबाद की चीनी की मिलों का काम देख रहे हैं। शेखावाटी राजस्थान में जब कि एक बार बहुत जोरों से बारिश हुई थी और जनता त्रस्त हो गई थी उस समय बिना अपने स्वास्थ्य की परवाह किये आपने बहुत लगन और साहस के साथ जनता जनार्दन की सेवा की थी। आपको दीन दुखियों की सेवा करने का शौक सा है। आप कई कम्पनियों के डाइरेक्टर हैं



सेठ भीखराज जैपुरिया

श्री दामोदरलाल जैपुरिया



श्री दामोदरलाल जैपुरिया

आप सेठ पूरनमल जैपुरिया के बड़े पुत्र हैं। आप इस समय अपने बम्बई आफिस का काम देख रहे हैं। आप सुयोग्य, मिलनसार एवं सुलझे हुए विचारों के व्यक्ति हैं। बम्बई के सामाजिक क्षेत्रों में आप काफी भाग लेते रहते हैं। इस समय आप इस्ट इण्डिया काटन एसोसियेशन बम्बई के डाइरेक्टर हैं एवं अन्य कई संस्थाओं के पदाधिकारी भी हैं। आपको बाल-शिक्षा का विशेष अध्ययन है।

आप २ वर्ष पहले सपरिवार विदेशयात्रामें गये थे। तब आपने मिश्र, इंगलैण्ड, अमरीका इत्यादि देशों का बहुत विस्तार पूर्वक भ्रमण किया था। और भी कई कंपनियों के आप डाइरेक्टर हैं।

श्री सीताराम जैपुरिया

आप सेठ मुंगतूराम जैपुरिया के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका जन्म मिती वैसाख शुक्ला पूर्णिमा सं० १९८३ में हुआ। आपने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से बी-काम की परीक्षा पास की। आप बड़े बुद्धिमान उद्योगी और कर्मशील नवयुवक हैं। कानपुर की विशाल स्वदेशी काटन मिल्स का आप संचालन करते है। सार्वजनिक कार्यों में भी आपकी बड़ी रुचि है। इस समय आप नीचे लिखी हुई संस्थाओं के पदाधिकारी हैं।

१. चेयरमैन, एडवायजरी कमेटी, गवर्नमेंट सेन्ट्रल टेक्सटाइल इन्सटीस्यूट, कानपुर।

२. सदस्य, इन्टर नेशनल फेडरेशन आफ मास्टर काटन स्पीनर्स, मैनचेस्टर (लन्दन)।

३. सदस्य, रेलवे एडवाइजरी कमेटी ।

४. सदस्य, एडवायजरी, कमेटी हरकोर्ट बटलर टेक्सटाइल इन्सटीस्यूट, कानपुर।

५. सदस्य, कमेटी ऑफ इम्प्लायर्स एसोसियेशन कानपुर।

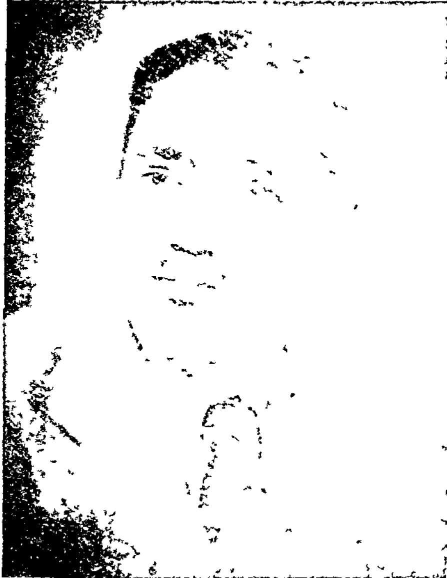
६, वाईस प्रेसीडेण्ट, मर्चेन्ट्स म्चैंबर आफ यू-पी कानपुर।

आप छोटी उम्र से ही जैपुरिया ब्रादर्स के विशाल फैले हुए कारोबार में भाग ले रहे हैं। आप बड़े



श्री सीताराम जैपुरिया

बड़े औद्योगिक प्रतिष्ठानों को सुचारु रूप से चला रहे हैं। कुछ समय पूर्व आप कई महीनों तक विदेशों का भ्रमण करके लौटे हैं। विदेशों में आपने मिश्र, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, स्विट्जरलैंड आदि विभिन्न देशों के कल कारखानों और व्यापार-वाणिज्य का अध्ययन किया है।



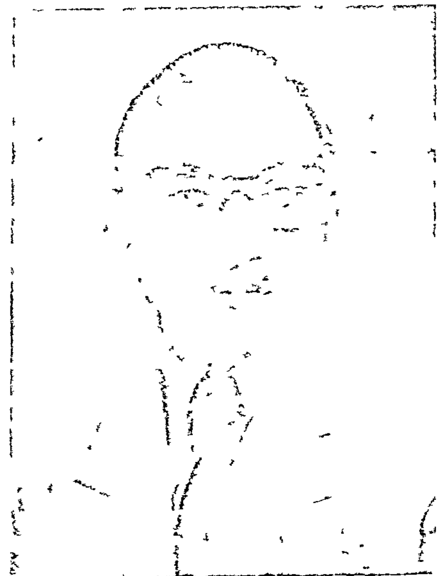
श्री बनवारीलाल जैपुरिया

श्री बनवारीलाल जैपुरिया

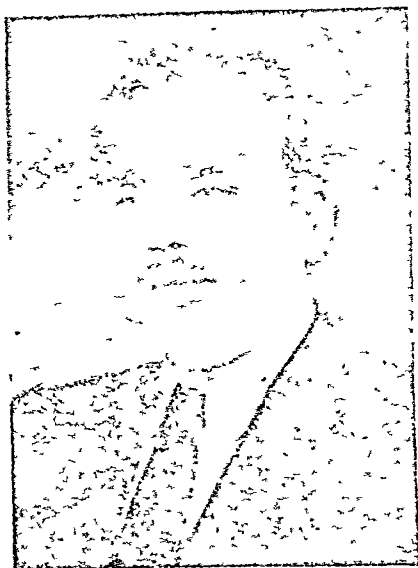
आप सेठ गजधर जैपुरिया के पुत्र हैं। आपने कानपुर से बी-काम की डिग्री प्राप्त की है और स्वदेशी काटन मिल्स के संचालन में मुख्य भाग ले रहे हैं। आप बहुत ही मिलन सार, उद्योगी और सुयोग्य नवयुवक हैं। स्वदेशी काटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड के विशाल उद्योग में आप अति सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं। शिक्षा की ओर आपको विशेष रुचि है। श्री मारवाड़ी विद्यालय इण्टर कालेज, कानपुर के आप अवैतानिक मन्त्री हैं।

श्री रामलाल जैपुरिया

आप सेठ पूर्णमल जैपुरिया के द्वितीय पुत्र हैं। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी० कॉम० की परीक्षा पास की है। आप इस समय स्वदेशी इन्डस्ट्रीज लिमिटेड कलकत्ता का कार्य संचालित करते हैं।



श्री रामलाल जैपुरिया



श्री राजाराम जैपुरिया

श्री राजाराम जैपुरिया

आप सेठ मुंगतूराम जैपुरिया के द्वितीय पुत्र है। आपका जन्म सं०१९६१ में हुआ। आपने एम० ए० की परीक्षा आगरा विश्वविद्यालय से पास की और इस समय आप स्वदेशी काटन मिल्स कम्पनी लिमिटेड, कानपुर का काम बड़ी तत्परता के साथ देख रहे है।

श्री कृष्णकुमार जैपुरिया

आप सेठ भीखराज जैपुरिया के ज्येष्ठ पुत्र है। आप अपने पूज्य पिताजी के साथ श्रीआनन्द शुगर मिल्स लिमिटेड, खलीलाबाद का काम देख रहे हैं



श्री कृष्ण कुमार जैपुरिया

श्री विजय कुमार जैपुरिया

आप सेठ भीखराज जैपुरिया के द्वितीय पुत्रहैं। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी० एस० सी० की डिग्री प्राप्त की है। इस समम आप भी चीनी की मिलों का काम देख रहे हैं।



श्री विजयकुमार जैपुरिया

श्री बाबूलाल जैपुरिया

आप सेठ पूर्णमल जैपुरिया के तृतीय पुत्र है। इस समय आप विक्टोरिया जुबली टेकनिकल इन्सटीट्यूट, बम्बई में स्पीनिंग एण्ड वीविंग का कोर्स चौथे वर्ष में पढ़ रहे हैं। आप होनहार नवयुवक हैं। परिवार को आपसे बहुत आशायें हैं।

श्री शिवराम पोद्दार

आप सेठ मुन्नूराम जैपुरिया के भांजे हैं। आपका जन्म सं० १६६५ में हुआ। १६७६ से आपने अपने मामाजी के साथ कारोबार में भाग लेना प्रारम्भ किया और अभी तक बदस्तूर आप जैपुरिया ब्रादर्स लिमिटेड के विशाल कारोबार में भाग ले रहे हैं। कलकत्ते के सामाजिक क्षेत्र में आप बहुत दिलचस्पी लेते हैं और इण्डियन माइनिंग फेडरेशन और बंगाल आर्ट सिल्क मिल एशोसियेशन के सभापति हैं। भारत चैम्बर आफ कामर्स की कमेटी के सदस्य है। आप कई कम्पनियों के डाइरेक्टर है। स्वदेशी इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, कलकत्ता का काम देखते है।



श्री शिवराम पोद्दार

श्री जगदीश प्रसाद पोद्दार

आप श्री शिवराम पोद्दार के ज्येष्ठ पुत्र है। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी० काम० की परीक्षा पास की है। इस समय आप स्वदेशी इण्डस्ट्रीज लिमिटेड, कलकत्ता का काम देखते हैं।



श्री जगदीश प्रसाद पोद्दार

श्री श्रीप्रकाश पोद्दार

आप श्री शिवराम पोद्दार के कनिष्ठ पुत्र हैं। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी० काम की परीक्षा पास की है। इस समय आप शामला एवं कजोरा कॉलेरी का काम देखते हैं।

सार्वजनिक कार्य

इस परिवार की ज्यों ज्यों व्यवसायिक और औद्योगिक उन्नति होती गई त्यों त्यों इसकी दानशीलता में भी बराबर वृद्धि होती रही है।

आपकी ओर से नवलगढ़ (राजस्थान) में विशाल नेत्र चिकित्सालय चल रहा है जिसका नाम सेठ आनन्दराम जैपुरिया आई हास्पिटल है। इसमें १७५ इनडोअर रोगिमों को रहने के लिये बेड लगे हुए हैं। उनके लिए आपरेशन, दवा, भोजन, दूध इत्यादि की मुफ्त व्यवस्था की जाती है। इसके अलावा काफी तादाद में रोज आउट डोर रोगी भी आते रहते हैं।

कलकत्ते में आप लोगों की तरफ से सेठ आनन्दराम जयपुरिया कालेज चल रहा है। जिसका उद्‌घाटन सन् १९४३ में भारत के वर्तमान प्रधानमन्त्री माननीय पं० जवाहरलाल नेहरू के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ था। आज यह कालेज बंगाल की बहुत बड़ी सेवा कर रहा है। इस कालेज में लगभग ११०० विद्यार्थी प्रति वर्ष बी० काम, बी० ए० और बी-एस० सी० की शिक्षा प्राप्त करते हैं। सारी बंगाल यूनिवर्सिटी में इस कालेज का परीक्षाफल तीसरे नम्बर का रहता है।

आनन्दनगर में आप लोगों की तरफ से सेठ आनन्दराम जैपुरिया इण्टर कालेज चल रहा है। इसमें इण्टर मीजिएट तक की शिक्षा दी जाती है। लगभग ११०० विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए इसका विशाल भवन बनायागया है और लगभग



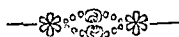
श्री श्रीप्रकाश पोद्दार

१०० छात्रों के लिये छात्रावास की भी व्यवस्था है। यहाँ पर एक स्कूल की स्थापना सेठ पूरनमल जैपुरिया के नाम से की गई है जिसमें करीब ३०० विद्यार्थी छठवें दर्जे तक की शिक्षा प्राप्त करते है।

शामला कोलरोज में भी आपकी तरफ से एक हाई स्कूल है जिसमें करीब ५०० विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं। इसके अतिरिक्त अनेक विद्यार्थियों को आपकी ओर से छात्रवृत्ति दी जाती है।

सेठ पूरन मल जैयपुरिया मिडिल स्कूल आनन्द नगर

आपका तरफ से हिन्दुस्तान भर में विभिन्न प्रकार का संस्थाएँ चल रही हैं। और देश की ऐसी शायद ही कोई संस्था होगी जिसे आपका सहयोग न प्राप्त हो।



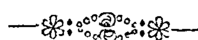
औद्योगिक विस्तार

जयपुरिया ब्रदर्स के संचालन में इस समय निम्नाङ्कित प्रतिष्ठान संचालित हो रहे हैं

दी स्वदेशी काटन मिल्स कं० लि० कानपुर–१,१५००० रिंग स्पिण्डल्स १२५०० डबलिंग स्पिण्डल्स २१०० लूम्स, ७२००० गाँठ रुई की खपत।

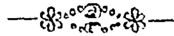
दी बरार स्वदेशी बनस्पति शेगांव (बरार)

गणेश सूगर मिल्स लि० आनन्द नगर (गोरख पुर) क्राशिंग कैपेसिटी ८५० टन
आनन्द सूगर मिल्स लि० खलीलाबाद (बस्ती) क्राशींग कैपेसिटी ६५० टन
सामला कोलियारी लि० पाण्डवेश्वर (वर्दवान) पाच लाख टन कोयला वार्षिक उत्पादन
जयपुरिया काजोरा कोलियारी लि० ओएडल (वर्दवान)
स्वदेशी इण्डस्ट्रीज लि० कलकत्ता—सिल्क, प्लास्टिक्स, आयर्न स्टील
राजेन्द्र जयपुरिया आयल मिल्स जीनिंग प्रेसिंग फैक्टरी भवानी मण्डी (राजस्थान)
श्री भवानी आनन्द काटन मिल्स लि० भवानी मण्डी (राजस्थान)
श्री जयपुरिया दाल एण्ड आयल मिल्स वारा (राजस्थान)
श्री शिवशङ्कर माइका सप्लाई क० लि० सिकन्दरा (मुगें)
श्री जयपुरिया चायना क्ले माइन्स रायकमान (सिंह भूमि)
सुधा इण्डस्ट्रीज लि० शेगांव ।
गौरी शंकर मिल्स लि० लक्खीसराय (बिहार) (आयल, दाल राईस एण्ड कं०
आनन्द राम गजाधर कलकत्ता ।
आनन्दराम पूरनमल कानपुर ।
आनन्द राम मंगतू राम बम्बई ।
आनन्द राम भीखराज मऊ और टाण्डा ।
शिवराम सीताराम कलकता, मदुरा, इंदौर, डिण्डिगुल ।
जयपुरिया कम्पनी बनारस ।
जयपुरिया ब्रदर्स लि० कलकत्ता, कानपुर, बम्बई, दिल्ली ।
जयपुरिया सन्स लि० ।
जयपुरिया कोल एजेण्ट्स लि० ।
जयपुरिया प्रापर्टीज लि० ।
सी० पी० प्रापर्टीज लि० ।
रामलाल राजाराम कानपुर ।
गजाधर नेमिचन्द नागपुर।



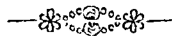
भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



भारत की औद्योगिक प्रतिभाएँ

Industrial Magnates of India



रामनारायण सन्स (प्राइवेट) लिमिटेड

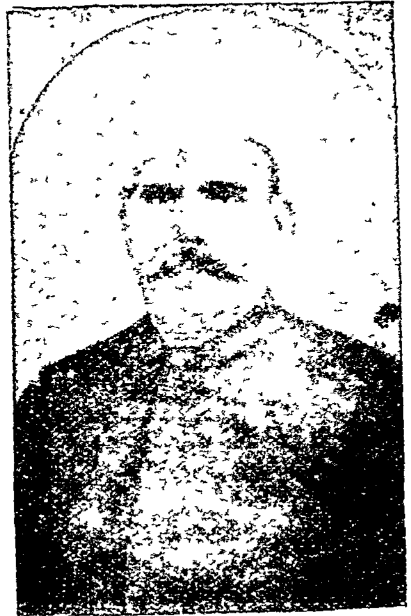
बम्बई

संचालक—

(१) दी ब्रेडबरी मिल्स लिमिटेड (२) दी फोनिक्स मिल्स लि० (३) दी डॉन मिल्स लि०

सेठ रामनारायण रुइया उद्योग प्रतिष्ठान

सेठ रामनारायण रुइया का जीवन एक उत्साह और प्रेरणा का जीवन है। केवल पन्द्रह वर्ष की आयु में आप व्यवसाय में प्रवृत्त होकर अपने देशसे मालवा के प्रसिद्ध इन्दौर नगर में आये। उन दिनों इन्दौर अफीम के व्यवसाय का प्रधान केन्द्र होरहा था। आपने अपने पिताजी के साथ अफीम के व्यवसाय का अनुभव लेना प्रारम्भ किया। कुछ दिनों के पश्चात् आप बम्बई आये और यहाँ पर रूई के व्यापार में अपनी प्रखर बुद्धि और प्रतिभा का परिचय देना प्रारम्भ किया। रूई के व्यापारिक क्षेत्र में जब २ पेचीदे मामले और उलझनपूर्ण समस्यायें उपस्थित होतीं तब २ आप उनको हल करने में अग्रगण्य पार्ट लेते थे।


सेठ रामनारायण रुइया जे० पी०

आपके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना बम्बई में मारवाड़ी चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स की स्थापना है यह संस्था अपही के विशेष प्रयत्नों से सन् १९१५ में स्थापित की गई और इसके प्रथम सभापति आपही बनाए गये।

आपके जीवन की दूसरी महत्वपूर्ण घटना "बैंक ऑफ इण्डिया" की स्थापना है इस बैंक की स्थापना में आपने जी जान से कोशिश की और सन् १९०६ में जबसे इस बैंक की स्थापना हुई तबसे अन्त तक आप उसके डॉयरेक्टर रहे।

इसी समय आपकी दूरदर्शी निगाहें बीमा व्यवसाय के बढ़ते हुए क्षेत्र और उसके उज्वल भविष्य की ओर देख रही थी। अतः इस क्षेत्र में भी आपने "न्यू इण्डिया इन्स्युरेंस कम्पनी" की स्थापना में अपना हाथ बटाया और जीवन भर इस कम्पनी के डॉयरेक्टर रहे।

सार्वजनिक सेवाओं और शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में आपने अपने जीवन काल में लाखों रुपये का दान किया और अपमे अन्तिम समय में करीब बीस लाख रुपयों का एक दान एक ट्रस्ट के जिम्मे करके गये।

इस प्रकार भारत के औद्योगिक क्षेत्र में स्व० सेठ रामनारायण रुइया ने अपना एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया हैं।

मेसर्स रामनारायण सन्स लि० बम्बई

मनुष्य जीवन विधाता की सृष्टिका सर्वोत्कृष्ट नमूना है। उसके अन्तर्गत अनेक दिव्य शक्तियां और महान गुण भरे रहते हैं। मगर ऐसे भाग्यशाली लोग संसार में बहुत ही कम होते हैं जो अपनेमें छिपे हुए महान गुणोंका विकास कर उज्वल चांदनीकी तरह संसारमें अपनी प्रतिभाका प्रकाश फैलाने में सफल हो सकते हैं। भारत के औद्योगिक क्षेत्र में सेठ रामनारायण रुइया का नाम ऐसे ही कर्म शील व्यक्तियों के अन्दर माना जा सकता है।

व्यापारके अन्दर कुशलता प्राप्त करके संसारमें धनको प्राप्त करना बहुत कठिन है, उसमें भी अपनी मानवोचित वृत्तियों को कायम रखते हुए व्यवसायिक सफलताको प्राप्त करना और भी कठिन है फिर—व्यवसायमें प्राप्त किये हुए द्रव्यको सदूव्ययमें सारासार विवेकके साथ खर्च करना और भी कठिन है, और इन सबसे कठिन है, इतनी सफलताओंके प्राप्त होने के पश्चात् भी बिलकुल निरभिमान और उच्च सेवाकी भावनाओंसे युक्त निर्मल हृदयका बना रहना। ऐसे उदाहरण प्रत्यक्ष जीवन में बहुत कम पाये जाते हैं। सेठ रामनारायण रुइया भी ऐसे ही व्यक्तियोंमें से एक थे।

वंश परिचय

सेठ रामनारायण रुइयाके पूर्वज पहिले सीकर जिलेके फतहपुर नामक स्थानमें रहते थे। आपका गौत्र बांसल और बङ्क जालान है। ऐसा कहाजाता है कि इस खानदानमें बहुत समय पूर्व जालोजी नामक एक बड़े प्रतापी और नामांकित पुरुष हुए थे। उन्हींके वंशमें होनेसे आपका बङ्क जालान नामसे प्रसिद्ध हुआ। जब अट्ठारहवीं शताब्दीमें शेखावाटीमें रामगढ़ नामक शहर बसाया गया, तब इस परिवारके पूर्वज सेठ मगनी राम फतेहपुरसे उठकर रामगढ़ जाकर बस गये। यहां पर रुईका व्यापार विशेष रूपसे करते रहने के कारण आपका खानदान रुइया नामसे प्रसिद्ध हुआ। सेठ मगनीराम के सेठ खेतसीदास, नोपचन्द, गणेशदास, जोखीराम और गुलाबराय नामक पांच पुत्र हुए। इन भाइयोंने अपने पिताजी की स्मृति में रामगढ़में एक छत्री बनवाई जो वहां अब भी विद्यमान है।

कहना न होगा कि उन दिनों भारतवर्षमें अफीमका व्यापार बहुत जोरों पर था, और तमाम मारवाड़ी व्यापारियों की दृष्टि इस व्यापार की ओर केन्द्रीभूत होरही थी, फलतः सेठ खेतसीदासके छोटे भाई सेठ जोखीराम और पुत्र सेठ हरमुखरायका ध्यान भी इस व्यापारकी ओर गया और इसके निमित्त वे रामगढ़से चल कर बम्बई आये और यहां आकर "खेतसीदास हरमुखराय" के नामसे अपना व्यापार आरम्भ किया। उस समय अफीमके व्यवसायके मुख्य केन्द्र उज्जैन, मन्दसौर, इन्दौर, आदि

स्थान थे, अतः इन सब स्थानों पर आपने अपनी शाखाएँ स्थापित कीं और इस व्यापार में अच्छी सफलता प्राप्त की।

सेठ खेतसीदासके सेठ हरमुखराय, कालूराम, हरनन्दराय, जेसराज और लक्ष्मीनारायण नामक पांच पुत्र हुए। आप सब लोग सम्वत् १६४० तक सेठ खेतसीदास हरमुख रायके नामसे सम्मिलित रूपमें रूई और अफीमका व्यापार करते रहे, उसके पश्चात् आप सब अलग हो गये और सेठ हरनन्दराय, सेठ खेतसीदास हरनंदराय नामसे अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगे।

सेठ हरनन्दराय रुइया बड़ी धार्मिक वृत्तिके पुरुष थे। ईश्वर भक्ति और सेवा पूजामें आपकी बहुत लगन रहती थी। आपने अपने भाइयोंके साथ एक धर्मशाला और एक कबूतर खाना का निर्माण करवाया। इसके पश्चात् अलग होने पर भी आपने रामगढ़ में एक कुआं, एक कबूतर खाना और साधुओं के लिए एक बगीची बनवाई। आपने अपने बड़े भ्राता सेठ हरमुखरायके साथ काशीमें एक अन्नक्षेत्र प्रारम्भ किया, जो अभीतक सुचारु रूपसे चल रहा है। सेठ हरनन्दराय ऊंचे दर्जेके व्यवसायिक बुद्धिके प्रतिभाशाली पुरुष थे। अपनी फर्मके मालवे प्रान्तका सब व्यवसाय आप बड़ी निपुणतासे सञ्चालित करते थे। उस समय मालवा प्रान्तमें जहां जहां आपकी शाखाएं थीं वे दुकानें वहां की गण्यमान्य और प्रभावशाली फर्मोंमें समझी जाती थीं। इस प्रकार प्रतिष्ठा प्राप्त कर आपका स्वर्गवास सम्वत १९६६–७० के लगभग हुआ। आपके सेठ घनश्यामदास, राम नारायण, सूरजमल और बैजनाथ नामक ४ पुत्र हुए, इन भाइयों में सेठ रामनारायण रुइया आपके दूसरे पुत्र थे।

सेठ रामनारायण रुइया जे० पी०

सेठ रामनारायण का जन्म सम्वत १६२० की श्रावण सुदी ८ को रामगढ़में हुआ। बचपनसे ही आप बड़े तेजस्वी और प्रतिभाशाली बालक दिखलाई देते थे। आपको देखने वाले व्यक्तियोंके हृदयमें स्वभावतया यह कल्पना बलवती हो जाया करती थी कि वयस्क होने पर आप एक विशेष चमकने वाले पुरुष होंगे तथा अपने परिवारके नामको विशेष समुज्वल करेंगे। इस प्रकार आपका बाल्य जीवन रामगढ़में ही व्यतीत हुआ।

सेठ रामनारायण केवल १५ सालकी वयमें ही देशसे अपनी इन्दौर दुकान पर आये, और वहाँ आकर अपने पिताजीके संरक्षणमें व्यवसायका ज्ञान प्राप्त करने लगे। केवल दो ही वर्षों में आपने व्यवसाय में काफी दक्षता प्राप्त कर ली। इसके कुछ समय पश्चात् आप बम्बई आये और एक वर्ष तक आपने अपने ताऊ सेठ हरमुखराय के पास व्यापारिक अनुभव प्राप्त किया। ज्यों-ज्यों आपकी वय बढ़ रही थी त्यों-त्यों आपकी प्रतिभा का प्रकाश चारों ओर छिटकता हुआ चला जा रहा था। आपकी असाधारण योग्यता को देखकर सन् १६४० में आपके पिताजीने अपना फर्म अलग कर लिया, और उसकी देख रेख का भार आपके जिम्मे किया। आपके काम सभालते ही आपकी



सेठ रामनिवास रुइया

फर्म तेजी के साथ अपनी उन्नति करने लगी, यह वह समय था जब आपकी सर्वतोमुखी प्रतिभा अपने विकासकी ओर अग्रसर हो रही थी। उसी समय आपकी फर्म पर सासुन जे डेविड के अफीम विभाग की दलालीका कार्य्य आरम्भ हुआ, एवं सम्वत् १६४८ में आप इस फर्म के रूई विभाग के भी ग्यारंटेड ब्रोकर हो गये। इस व्यवसायिक सम्बन्ध के साथ-साथ आपके भाग्यने जोर दार पलटा खाया, और शीघ्र ही अपनी प्रतिभाके कारण आप बम्बई के नामाङ्कित व्यापारियों में गिने जाने लगे।

सेठ रामनारायण रुइया की कार्य्य-कुशलता तथा उद्योगशीलता को देख कर सासुन जे० डेविड एण्ड कम्पनी के मालिक सर सासुन जे० डेविडका विश्वास और प्रेम दिन प्रतिदिन आप पर विशेष बढ़ता गया। धीरे-धीरे सर सासुन जे० डेविड हर एक व्यापारिक कामों में आपको अपने साथ रखने लगे। जिससे नित्य बड़ी बड़ी कम्पनियों और आफिसों के सन्सर्गमें आने के कारण आपका व्यवसायिक ज्ञान परिपक्व होता गया, तथा तत्कालीन व्यापारिक गतिविधिके सूक्ष्म तत्वोंका अध्ययन भली प्रकार करनेका अवसर आपको प्राप्त होता गया।

सम्वत् १६५३ में आपके पिताजीने अत्यन्त प्रेमके साथ आप चारों भाइयोंको अलग अलग कर दिया, तबसे आपने स्वतंत्र व्यापार "मेसर्स हरनन्दराय रामनारायण" के नामसे प्रारम्भ किया। इस प्रकार अफीम और रूईका व्यवसाय आप बहुत वर्षों तक सफलता पूर्वक करते रहे। उस समय रूईके व्यवसायियोंमें आप गण्यमान्य और दूरदर्शी व्यवसायी थे। जब २ व्यवसायिक क्षेत्रमें पेचीदे मामले उपस्थित होते, तब-तब उलझन पूर्ण गुत्थियोंको सुलझानेमे आपका बहुत अग्रभाग रहता था। उस समय बम्बईमें मारवाड़ी समाजकी भिन्न-भिन्न छः पञ्चायतों की दुकानों का कोई सङ्गठन नहीं था, अतएव उन्हें अपने रुई, अलसी, सीड, गेंहूँ, और चांदी सोनाके व्यवसायमें पैदा होने वाले झगड़ोंको निपटानेके लिये पञ्च सराफ एसोसिएशन या कोर्टकी शरण लेनी पड़ती थी। इसी समय युरोपीय महायुद्ध के आरम्भ हो जानेसे सन् १९१४ के श्रावण भाद्रपदमें वायदे की चांदी के भाव एक दम बढ़ गये जिससे एक भाव निश्चित करनेके लिये यहाँके व्यापारिक समाजको एक मत होने की आवश्यकता अनुभव हुई, अतएव सेठ रामनारायण रुइया ने नीमच के सेठ नथमल चोरड़ियाको साथ लेकर व्यवसायिक समाजका एक सम्मिलित सङ्गठन किया और सन् १९१५ की १८ जुलाईको छहों पञ्चायतोंके १३६ सभ्योंने

एकत्रित होकर "दि मारवाड़ी चेम्बर आॅफ कामर्स" की स्थापना की; एवं इस संस्थाके स्थाई सभापतिके स्थान पर सेठ रामनारायण रुइया जे० पी० अधिष्ठित किये गये। थोड़े ही कालमें इस चेम्बरने सीड, गेंहूँ, अलसी और हुण्डी चिट्ठीके सम्बन्धमें कई निश्चित नियम बनाये, एवं रेलवे कम्पनीसे लिखा पढ़ी करके रेलवे दरके सम्बन्ध में कई बड़ी बड़ी मुश्किलें आसान की। इस प्रकार बहुत थोड़े काल में सेठ रामनारायणके वजनदार सहयोगसे यह संस्था "कमर्शियल इंटेलिजेंस ब्यूरो" के समान कार्य्य करने लगी और दिन प्रतिदिन संस्था पर मेम्बरों का विश्वास अधिक दृढ़ होने लगा।



बाबू मदनमोहन रुइया

यूरोपीय युद्धके समय सन् १६१६-१७ में बम्बईमें काटन ट्रेड एसोशिएशन और काटन एक्सचेंज कम्पनी नामक दो संस्थाएं थीं। प्रथम संस्था अंग्रेजों के हाथोंमें एवं दूसरी अंग्रेजों तथा भारतीयों के हाथोंमें थी। इन संस्थाओं में अपील सुनने, ड्यूटेका भाव भरने, एवं इसी प्रकार के महत्वपूर्ण कार्य्योंमें मारवाड़ी समाजका कोई व्यक्ति न होने से बड़ा कष्ट उठाना पड़ता था अतएव सेठ रामनारायणने चेम्बरकी ओर से उक्त सभामें अपने प्रतिनिधि रखने की पूर्ण कोशिश की, जिससे कॉटन ट्रेड एसोसिएशन से, कॉटन एक्सचेंज कम्पनीको कई अधिकार प्राप्त हुए। इस महत्वपूर्ण सहूलियतसे व्यवसायिक वर्गको बहुत लाभ हुआ। इसके सम्बन्धमें मारवाड़ी चेम्बरने आपको धन्यवाद पूर्वक लिखा था कि* "आपने चेम्बर की नौकाको जिस योग्यता, दीर्घ दर्शिता और आत्म भोगसे तरह-तरह के तूफानों से बचाया है, वह अत्यन्त सराहनीय है। हमें इस बातका गर्व है कि आप चेम्बरके अध्यक्ष आसन पर विराजमान हैं। ईश्वरसे प्रार्थना है कि इस आसनको आपके समान प्रतिष्ठित और सुयोग्य व्यक्ति भूषित किया करें।" इस प्रकार सेठ रामनारायण मारवाड़ी समाजके हितोंके दृढ़ करनेके लिये अधिकाधिक भाग लेते रहे। उस समय अलसी व गल्ले के सौदों के जो कबाले आफिस और मिल वालों के द्वारा होते थे, उनसे भारतीय व्यापारियों को बहुत हानि होती थी, इससे चेम्बरने ग्रेन मर्चेन्ट एसोशिएसन से मिल कर नये कबाले तैयार किये जो आफिस और मिल वालोंको स्वीकार करने पड़े।

* देखो मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सकी रिपोर्ट पृष्ठ १९, सन् १९१६-१७

सन् १९१७-१८ में रूई के बाजारने बहुत गम्भीर रूप धारण किया, रुई का भाव ३५०) से उठ कर ७००) तक पहुँच गया, और उसकी बढ़ती रोकी नहीं जाती तो शायद उसका भाव ८००-६०० तक पहुँच जाता। माल की कमी तथा भड़ौचकी रुई फाइन निकलनेके कारण भाव बहुत ऊँचे चले गये, इससे दलालोंने बाजार बन्द कर दिया। अन्तमें बायदा ७१२ के भाव पर पट गया। इसी अर्सेमें भारत सरकार द्वारा स्थापित इण्डियन कॉटन कमेटीने, रूईके व्यापार को पक्के पाये पर चलानेके लिये यहाँ की संस्थाओंके साथ ऊहापोह किया। इस रिपोर्टके पहुँचने पर भारत सरकारने विलायतसे अपनी कार्यकारिणी के २ सभासद सर जार्जबार्नस तथा सर जार्ज लाइसको भारत भेजा। बहुत विरोध तथा परामर्श के पश्चात् उन्होंने डिफेंस आफ इण्डिया एक्टको काम लेकर रूईके व्यापार का प्रबन्ध करने के लिये एक 'कॉटन कंट्राक्ट कमेटी" बनाई। इसमें मारवाड़ी चेम्बर की ओरसे उसके सभापति सेठ रामनारायण रुइया जे० पी० तथा कॉटन ब्रोकर्स एसोसिएशनके सभापति सेठ शिवनारायण नेमाणी नियत किये गये।

उपरोक्त काम चलाऊ के कमेटी बाद सरकारने रुई के व्यापारका संगठन करनेके लिए एक कॉटन कंट्राक्ट बोर्डका स्थापन किया। बोर्डके सभासद् सरकार निश्चित करेगी तथा उसका सभापति सरकारी अधिकारी रहेगा। सरकारके इस प्रस्तावका व्यवसायिक समाज ने काफी विरोध किया। आखिर यह तय हुआ कि बोर्ड के १२ सदस्यों में से तीन व्यापारियों द्वारा, २ मिल एसोशिएसन द्वारा एवं ७ सरकार द्वारा तय किये जायँ। इस प्रकार सरकार की तरफसे चुने हुए मेम्बरों में सेठ रामनारायणजी रुइया तथा व्यापारियों की ओरसे सेठ आनंदीलाल पोद्दार और सेठ लक्ष्मणदास डागा चुने गये। इस कमेटी के द्वारा भी मारवाड़ी समाजका बहुत हित हुआ। उपरोक्त अवतरणों से यह सिद्ध होता है कि सेठ रामनारायण रुइया जिस प्रकार व्यापारिक समाजमें अग्रगण्य और प्रतिभावान पुरुष थे, उसी प्रकार गवर्नमेन्ट में भी उनका बहुत सम्मान था।



बाबू राधाकृष्णजी रुइया

रुई के व्यापारमें सेठ रामनारायण रुइया बड़े अथारिटी माने जाते थे। कई अच्छे २ व्यापारी और आपके मित्रगण रुईके सम्बन्धमें आपसे सलाह लेते रहते थे। उपर हम कॉटन कंट्राक्ट बोर्ड के स्थापनमें जिस प्रकार आपका वजनदार सहयोग रहा, उसका उल्लेख करही चुके हैं। जब रुई की प्रसिद्ध व्यापारिक संस्था ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन की स्थापना हुई तो उसमें भी आपका अच्छा सहयोग

रहा। जब तक आपकी रुईके व्यवसायमें विशेष रुचि रही, तब तक आप उक्त एसोसिएशनमें लीडिंग पार्ट लेते रहे, एवं उसके डायरेक्टर पद पर सम्मानित रहे। इसी प्रकार और भी कई मिलों तथा ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियों के डाइरेक्टर पदपर आप मनोनीत थे।

आपके सार्वजनिक जीवन की एक अत्यंत महत्व पूर्ण घटना "बैंक ऑफ इण्डिया" की स्थापन है इस बैंक की स्थापना में आपने जी जान से कोशिश की। सन् १९०६ में जब इस बैंक की नींव पड़ी, तबसे अन्त तक आप उसके डायरेक्टर रहे। हिन्दुस्थानी सराफे का काम आपकी बहुमूल्य सलाह से किया जाता था। इस बैंक के लिए आपकी सेवाएँ बहुत महत्वपूर्ण थीं और यही कारण था कि बैंक के दूसरे डायरेक्टरों ने उसका विशेष भार आपही पर ही छोड़ रक्खा था। आपकी सलाह के अनुसार काम करके "बैंक ऑफ इण्डिया" ने बहुत उन्नति की तथा इस प्रतिष्ठित स्थान पर अपना अस्तित्व कायम किया। यह वह समय था जब संसार में बीमा व्यवसाय जोर पकड़ रहा था और सेठ रामनारायण बीमा व्यवसाय के उज्वल भविष्य को अपना दूरवर्ती दृष्टि से स्पष्ट देख रहे थे। यही कारण था कि आपने बीमा व्यवसाय को स्पष्ट उत्तेजन देने के लिये "न्यू इण्डिया इन्श्यूरेंस कम्पनी" की स्थापना में अपना हाथ बंटाया और जीवन भर आप उसके डायरेक्टर रहे। कहना न होगा कि उस समय भारत में बीमा कम्पनियाँ इनी गिनी ही थीं। इस प्रकार सेठ रामनारायण का जीवन अत्यंत उच्च व्यवसायिक एवम् प्रभावशाली रहा है। बम्बई के मारवाड़ी समाज में ही नहीं, प्रत्युत अंग्रेज, पारसी और गुजराती व्यवसाइयों में भी आप गण्यमान्य व्यक्ति थे।

दानशीलता तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्य्य

हम ऊपर लिख आये हैं कि संसार में सम्पत्ति का उपार्जित करना बहुत कठिन कार्य है; मगर उससे भी कठिन कार्य अपनी उपार्जित की हुई सम्पत्ति का सद् व्यय करना है। सम्पत्ति का उपार्जन करने में जहाँ सौ आदमी सफल होते हैं, वहाँ उसका सद्व्यय करने में कठिनाई से एक आदमी सफल होता है। सेठ रामनारायण रुइया ने जहाँ अपने बुद्धिबल से लाखों करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। वहाँ उस सम्पत्ति का सद्व्यय करने में भी आपने अपनी योग्यता का पूरा २ परिचय दिया।

आपने देखा कि हमारे समाज और इस देश के पतन के जितने मूल कारण हैं, उनमें शिक्षा का अभाव ही सबसे प्रधान है। शिक्षा के अभाव से ही हमारे देशवासी पङ्गु और अकर्मण्य हो रहे हैं। तब आपने अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग अधिकतर शिक्षा के प्रचार में ही करना उचित समझा। उस समय माननीय मालवीयजी के द्वारा स्थापित बनारस का हिन्दूविश्वविद्यालय अपनी महत्व पूर्ण सेवाओं से सारे देश का ध्यान अपनी ओर खींच रहा था, आप भी इस विद्यालय की ओर आकर्षित हुए और उदारता के साथ एक लाख रुपयों का दान उस संस्था को दिया।

इसके पश्चात् जब बम्बई में आपके तथा दूसरे मारवाड़ी महानुभावों के प्रयास से सुप्रसिद्ध मारवाड़ी विद्यालय की स्थापना होने लगी, तब आपने उसमें भी लगभग पञ्चानवे हजार रुपया प्रदान करने की

उदारता दिखलाई। भारत के अग्रवाल समाज में आप नामी पुरुष थे, आप जब मारवाड़ी अग्रवाल सभा के बम्बई अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष के पद पर आसीन हुए थे, उस समय अग्रवाल जातीयकोष के स्थापन की बहुत आवश्यकता प्रतीत हुई अतएव जाति को स्थायी और ठोस लाभ पहुंचाने के उद्देश से जातीय कोष की स्थापना में भी आपने प्रशंसनीय भाग लिया तथा उसमें भी लगभग एक लाख रुपयों की सहायता आपने प्रदान की।

इसके अतिरिक्त रामगढ़ में आपके तथा आपके छोटे बन्धु सेठ सूरजमल रुइया की ओर से "हरनंदराय संस्कृत कालेज" चल रहा है तथा आपकी ओर से वहां एक कन्या पाठशाला तथा सेठ रामनारायण रुईया इंटर कॉलेज चल रहा है। संस्कृत कॉलेज के लिये आपने एक लाख रुपयों की स्थाई सम्पत्ति दान की है। इसी प्रकार स्वर्गाश्रम (लक्ष्मण झूला) तथा अनूप शहर के समीप भृगुक्षेत्र में आपकी ओर से साधुओं के लिए अन्नक्षेत्र और विद्यार्थियों के लिये पाठशाला चल रही है। इसी प्रकार और भी अनेकों सार्वजनिक संस्थाओं में आप उदारता पूर्वक सहायता देते रहते थे।

अनुकरणीय दान—सबसे महत्वका दान सेठ रामनारायण अपने स्वर्गवास होने के समय करीब वीस लाख रुपयों का एक ट्रस्ट बनाकर कर गये हैं। इस ट्रस्टके वर्तमान ट्रस्टी आपकी सुयोग्य धर्मपत्नी श्रीमती सुव्रतावाई, आपके पुत्र श्री मदनमोहनजी, श्री राधाकृष्णजी आपके विश्वासपात्र मुनीम श्री पालीरामजी हैं। इस ट्रस्ट के द्वारा लगभग पौन लाख रुपया प्रति वर्ष धार्मिक और सार्वजनिक कामों में खरच होता है।।

सेठ रामनारायण के सामाजिक विचार भी बड़े परिष्कृत और वजनदार थे। यद्यपि जमाने की धारके साथ बहना आपको पसन्द नहीं था, फिर भी सच्चे सामाजिक सुधारों की जो मजबूत पायेदारी है, उस पर आपकी सूक्ष्म दृष्टि हमेशा रहा करती थी। आप कई सामाजिक कुरीतियों के कड़े विरोधी थे, मारवाड़ी अग्रवाल सभा में आप बड़ा सहयोग देते थे और उसके बम्बई अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का आसन भी आपने ग्रहण किया था।

उपरोक्त अवतरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सेठ रामनारायण रुइया का जीवन क्या व्यापारिक, क्या सार्वजनिक और क्या धार्मिक सभी विषयों में उत्तरोत्तर प्रगतिशील रहा है। इतने बड़े वैभव और सम्पत्ति के मालिक होते हुए भी आपका स्वभाव अत्यन्त सरल और निरभिमान था। अहंकार ने कभी आपको स्पर्श भी नहीं किया था। आपकी परोपकार वृत्ति हमेशा ज्वलन्त बनी रही। आपका जीवन आदर्श और व्यवहारिक जीवन का बहुत सुन्दर नमूना रहा। सेठ रामनारायण बम्बई नगर के अन्दर बड़े प्रतिष्ठित, नामांकित और सम्पतिशाली व्यक्ति रहे हैं। आपकी प्रतिभा और योग्यता के साथ आपकी भाग्य लक्ष्मी ने भी आपका पूरा पूरा साथ दिया है। उसी का प्रताप है कि आपके पीछे भी आपका कुटुम्ब सारे अग्रवाल समाज में प्रतिष्ठा के साथ चमकता हुआ दिखाई दे रहा है।

स्वर्गवास—आपके जीवन के अन्तिम तीन वर्षों में आपके शरीर पर श्वास की बीमारी ने बड़ा प्रबल आक्रमण किया, जिससे आपका शरीर बहुत कमजोर हो गया था। इन वर्षों में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सुव्रताबाई ने आपको जो प्रशंसनीय सेवाएँ कीं' वह भारतीय नारियों के लिये एक आदर्श और अनुकरणीय वस्तु है। इस कठिन समयमें आपने अपने सारे व्यक्तित्वको अपने पतिदेव के व्यक्तित्व में लीन कर दिया। इससे सेठ साहब की आत्मा को बड़ा सन्तोष और सांत्वना प्राप्त हुई। अन्त में सं० १९८९ की भादवा वदी ४ शनिवार को ६६ वर्ष की अवस्था में आपका स्वर्गवास बम्बई में हुआ। आपके निवास आनन्द भवन में आपकी अन्त्येष्टि क्रिया हुई। इस स्थान पर आपके स्मारक स्वरूप एक छत्री बनी हुई है।

विवाह—सेठ रामनारायण के दो विवाह हुए थे, प्रथम विवाह बिसाऊ के कारुण्डिया खानदान में हुआ, मगर प्रथम पत्नी का शीघ्र ही स्वर्गवास हो जाने से आपका दूसरा विवाह बम्बई में फतह पुर निवासी श्री हरद्वारीमल बाजोरिया की पुत्री श्रीमती सुव्रताबाई से हुआ।

श्रीमती सुव्रता बाई का जीवन मारवाड़ी महिलाओं के लिये एक आदर्श जीवन है। पति सेवा का जो उज्वल आदर्श आपने उपस्थित किया है, वह अत्यन्त अनुकरणीय है। सेठ साहब की मृत्यु के पश्चात् आप पूर्ण वैराग्यमय शान्त जीवन व्यतीत करती है। आपका स्वभाव अत्यन्त सरल और प्रतिभा पूर्ण है। सामाजिक सुधार, शिक्षा सम्बन्धी तथा धार्मिक कामों में आप मुक्त हस्त होकर दान करती रहती हैं। आज कल आपका विशेष समय धर्म, ध्यान, पूजा, पाठ और उपनिषदों के पठन और श्रवण में व्यतीत होता है।

सेठ साहब को अपनी द्वितीय पत्नी से चार पुत्र और एक कन्या हुई जिनके नाम क्रम से श्री रामनिवास, मदनमोहन, राधाकृष्ण, सुशील कुमार तथा श्रीसुशीलाबाई हैं। श्रीमतीसुशीला बाई का सम्बन्ध भारत के सुप्रसिद्ध लाहोर हाईकोर्ट के भूतपूर्व चीफ़ जस्टिस राइट आंनरेबल सर शादीलाल के बड़े पुत्र कुंवर राजेन्द्रलाल के साथ हुआ।

सेठ रामनिवास रुइया

सेठ रामनिवास रुइया का जन्म सं० १९६७ में हुआ। आपका शिक्षण मारवाड़ी विद्यालय में हुआ। आप बड़े योग्य बुद्धिमान तथा प्रतिभाशाली युवक हैं। शिक्षा प्राप्तकर आप अपने पिताकी आज्ञानुसार उनके स्वास्थ्य खराब रहने की वजह से फिनिक्स मिल एजेन्सी एवं अन्य व्यवसायिक कार्यों में योग देने लगे। थोड़ी ही वय में आपने अपने पिताजी द्वारा स्थापित तमाम व्यवसाय को उत्तमता पूर्वक सम्भाल लिया। आपके पिताजी की इच्छा थी कि मेरे स्वर्गवास होने के पश्चात् तमाम व्यवसायिक कार्य एक लिमिटेड फ़र्म के रूप में किया जाय। इस इच्छा को मान देकर आपने १९२९ में राम नारायण सन्स लिमिटेड नामक एक प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी की स्थापना की और इस कम्पनी के आप

डायरेक्टर नियत हुए। इस कम्पनी के कार्य को आपने अच्छा संगठित किया। इस कम्पनी ने सन् १६३४ में ब्रेडवरी मिल की एजेन्सी ले ली। इस समय आप अपने तीन मिलों की एजेन्सी का कार्य एवं बैंकिंग व्यापार को बड़ी बुद्धिमत्ता से संचालित कर रहे हैं। तथा इस कार्य को आपने अच्छा व्यवस्थित कर रक्खा है।

सेठ रामनिवास बम्बई के व्यापारिक समाज में अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। इन तमाम जिम्मेदारी के पदों को आप योग्यता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। आपका विवाह कलकत्ते के सुप्रसिद्ध व्यवसायी सर सर हीरराम गोयनका के भाई सेठ घनश्यामदास गोयनका की पुत्री से हुआ है। आपके निर्मल कुमार नामक एक पुत्र तथा वीणा बाई नामक एक पुत्री है।

इस समय आप नीचे लिखी कम्पनियों के डायरेक्टर हैं—

(१) दी फ़ोनिक्स मिल्स लि०
(२) दी ब्रेडवरी मिल्स लि०
(३) दी डॉन मिल्स लि०
(४) दी फिनले मिल्स लि०
(५) दी गोल्ड-माहुर मिल्स लि०
(६) दी स्वान मिल्सलि०
(७) दी बैंक आफ इण्डिया लि०
(८) आन्ध्र वेली पॉवर सप्लाई को० लि०
(९) दी अवध सूगर मिल्स लि०,
(१०) दी हिन्दुस्तान सूगर मिल्स लि०,
(११) दी मुकुन्द आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स लि०
(१२) हिन्द सायकल्स लि०
(१३) दी न्यू इण्डिया इन्स्युरेंस को० लि०
(१४) आक्सी क्लोराइड फ्लोरिंगप्रोडक्ट्स लि०
(१५) ओरियण्टल इण्डस्ट्रियल इनवेस्टमेंट कारपोरेशन लि०,
(१६) दी कोल्हापुर सूगर मिल्स लि०,
(१७) ब्रंडी इञ्जीनियरिंग को० लि०,
(१८) मैशीनरी पेण्ट्स एण्ड केमिकल्स लि०
(१९) न्यू कान्सोलिडेटेड कन्स्ट्रक्शन लि०
(२०) एअर इण्डिया लि०
(२१) अशोक सीमेण्ट लि०
(२२) जे० के० केमिकल्स लि०
(२३) पोली चेम लि०
(२४) यूनाइटेड पॉवर को० (प्राइवेट) लि०
(२५) रामनारायण सन्स लि०
(२६) यूनाइटेड एजेन्सीज प्रायवेट लि०
(२७) रुइया इण्डस्ट्रीज प्रा० लि०
(२८) बच्छराज एण्ड को० प्रा० लि०
(२९) बच्छराज फैक्टरीज प्रा० लि०
(३०) इण्डोकेम प्रायवेट लि०
(३१) केमिकलर प्रायवेट लि०
(३२) कारोना शू को० प्राइवेट लि०
(३३) कारोना साई को प्रायवेट लि०
(३४) होलेरिथ (इण्डिया) प्रायवेट लि०
(३५) माइनिंग मेनेजमेंट सिंडिकेट प्रा० लि०
(३६) जैपुर माइनिंग कारपोरेशन (प्राइवेट) लि०

बाबू मदन मोहन रुइया

आपका जन्म संवत १९७१ में हुआ। आप बड़े प्रतिभाशाली और सज्जन युवक हैं, तथा अपने

व्यवसाय में बड़ी योग्यता और तत्परता से भाग ले रहे हैं। आप वम्बई युनिवर्सिटी से ग्रेजुएट हुए हैं। आपने बिदेशों की यात्रा करके वहां से औद्योगिक अनुभव प्राप्त किये हैं।

इस समय आप निम्नलिखित कम्पनियों के डॉयरेक्टर हैं—

१—दी फोनिक्स मिल्स लि०
२—दी ब्रेडवरी मिल्स लि०
३—दी डॉन मिल्स लि०
४—दी ईस्ट इण्डिया कॉटन एसोसिएशन लि०
५—दी यूनाइटेड कॉमर्शियल बैंक लि०
६—चोपड़ा इलेक्ट्रिक सप्लाई को० लि०
७—दी ग्रेट ईस्टर्न शिपिंग को० लि०
८—दी वाम्बे म्यूच्यूअल लाईफ इन्स्युरेंस सोसायटी लि०

ट्रस्टी— १—बाम्बे पोर्टट्रस्ट
१३—रामनारायण सन्स प्राइवेट लि०
१४—विजय ट्रेडिंग को० प्रा० लि०
१५—यूनाइटेड एजेन्सीज प्राइवेट लि०
१६—रुइया इण्डस्ट्रीज प्राइवेट लि०
१७—रामनारायण सन्स (पाकिस्तानन) प्रा० लि०
१८—जगत् ट्रेडिंग को० प्राइवेट लि०
१९—मेसर्स रामनारायण प्राइवेट लि०
२०—दी अपर दोआब सूगर मिल्स लि०
१२—बाम्वे पोटेरीज एण्ड टॉइल्स लि०
२२—दी सेंचुरी स्पिनिंग एण्ड मेन्यूफैक्चरिंग को० लि०
२३—नेरिन एण्ड जनरल इन्स्युरेंस को० लि०

बाबू राधाकृष्ण रुइया

आपका जन्म संवत् १९७३ में हुआ। आप बहुत बुद्धिमान युवक हैं। रामनारायण सन्हाकी मिलोंकी देखरेख आपही करते हैं। आपके अशोक कुमार और भरत कुमार नामक दो पुत्र हैं।

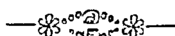
आप इस समय नीचे लिखी कम्पनियों के डायरेक्टर हैं—

१—दी फोनिक्स मिल्स लि०
२—दी ब्रेडवरी मिल्स लि०
३—दी डॉनमिल्स को० लि०
४—मीलाम्बर माइन्स लि०
५—दी कोल्हापुर सूगर मिल्स लि०
६—रामनारायण सन्स प्रायवेट लि०
७—विजय ट्रेडिंग को० प्राइवेट लि०
८—नोवल स्टील प्राडक्ट्स प्रा० लि०
९—यूनाइटेड एजन्सीज प्रा० लि०
१०—रुइया इण्डस्ट्रीज प्रा० लि०
११—रामनारायण सन्स (पाकिस्तान) प्राइवेट लि०

—०:※:०—

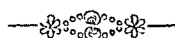
भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



भारत की औद्योगिक प्रतिभाएँ

Industrial Magnates of India



थापर उद्योग प्रतिष्ठान

कलकत्ता

थापर उद्योग प्रतिष्ठान

व्यक्तिगत उद्योग तथा उनका आरम्भ ये दोनों ही औद्योगिक उन्नति के बड़े उत्प्रेरक हैं, यह चीज कहीं भी इतनी अधिक सच सिद्ध नहीं हुई जैसी कि भारत के सम्बन्ध में हुई है। भारतीय उद्योग एक बहुत ही रंग बिरंगे जीवन में से गुजरा है और इस शताब्दि के पलटने के समय जो उन्नति की चिनगारियाँ एकाएक संकोच से जगमगाई थीं तथा प्रथम महायुद्ध के छिड़ने के साथहीं धुंधलेपन से चमकीं थीं वे भारतीय उद्योग के अग्रगण्यों की दूरदर्शिता तथा विश्वास से आश्रय पा रहीं थीं। वे साहसी व्यक्ति विदेशी सरकार की प्रतिकूल नीतियों के समक्ष भी आगे बढ़ने में नहीं लड़खड़ाये थे।



श्री लाला करमचन्द थापर

वस्त्र तथा लोहे और इस्पात के उद्योग के अतिरिक्त, जो कि बहुत पहले से ही प्रारंभ कर दिये थे, भारत का औद्योगिक विकास वास्तवमें प्रथम महायुद्ध के अन्त होने के पश्चात् आरम्भ हुआ ऐसा कहा जा सकता है, जब कि ब्रिटिश सरकार ने एक धक्के के साथ यह महसूस किया कि भारतीय उद्योगके विकास के सम्बन्धमें स्थायी रुकावट की नीति इस देश में ब्रिटिश राज्यके हित में न होगी। जिस नीतिका अनुसरण किया गया था उसका निर्माण किसी प्रकार इस देश की उन्नति को अग्रसर करने के लिये नहीं किया गया था परन्तु वास्तव में भारतीय उद्योगों को ब्रिटिश हितों के दृष्टिकोण को लेकर निर्माण किया गया था। यह विवेक पूर्ण संरक्षता की नीति जैसा कि इसको कहा जाता था जिसने की स्वतन्त्र व्यापार के प्रचलित सिद्धान्त को कर्णधार बनाया था वह भारत के विरुद्ध बोझ सी बन गयी और किसी उद्योग को संरक्षण पाने के लिये जो शर्तें पूरी करनी होती थीं वे अत्यन्त कठोर थीं तथा इस नीतिका पालन करना इतना चक्करदार था कि इसने भारतीय उद्योग के विकास में बहुत क्षति पहुँचाई।

यद्यपि द्वितीय महायुद्ध के संकट कालीन समय ने औद्योगिक हलचलों को बड़ा प्रयास करने के लिये उत्साहित किया परन्तु सरकार ने अपनी बुनियादी नीति में कोई परिवर्तन नहीं किया था मगर स्वतन्त्रता पाने के पश्चात् भारतीय उद्योग विचारपूर्ण विकास के लिये आशान्वित हुआ।

लेकिन यहाँ पर लड़ाई के परिणामों ने बहुत सी समस्यायें छोड़ दी थीं जिसने कि देश की अर्थ व्यवस्था में शीघ्र ही उन्नति करने में बहुत अड़चनें डालीं। युद्ध के समय में खराब हुई मशीनों को बदलने के लिये विदेशों से नई मशीनों को मँगवाने की कठिनाई, नई मशीनों की कीमतों में एकदम वृद्धि, सन् १९४६ में पूंजी की कमी, सरकार तथा उद्योगपतियों के बीच में आदर्शों के झगड़े से तनाव होना, मजदूरों की घबड़ाहट और इससे भी अधिक देशके विभाजन ने भयङ्कर कठिनाइयाँ पैदा कर दीं। ये सब बातें उद्योग के विकास में बाधक थीं। स्वतन्त्रता के एक दम पश्चात् ही भावों में कमी का आना परीक्षा तथा क्लेश का समय था और इतनी असंख्य कठिनाईयों की पृष्ठ भूमि के विरुद्ध जो कि चारों ओर से घेरे हुई थी, उनका सामना करना औद्योगिक जगत् के लिए एक स्मरणीय वस्तु थी जिसको कि कोई भी आँक सकता है। स्वतंत्रता की प्राप्ति के पश्चात् भारतीय उद्योग ने यह पर्याप्त रूप से सिद्ध कर दिया है कि वह उन्नति की बहुत बड़ी क्षमता रखता है और प्रत्येक विभाग में उत्पादन में वृद्धि करके वह राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था की उन्नति में बड़ी सहायता कर रहा है।

इस वृद्धि के तत्व ने थापर के औद्योगिक प्रतिष्ठान पर भी बहुत बड़ा प्रभाव डाला है जो कि भारतीय उद्योगों का लगभग २० वर्षों से एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। थापर उद्योगों की हलचलों में शनैः शनैः वृद्धि हुई है तथा स्वतन्त्रता के पश्चात इनके कारखानों के सम्पादन में प्रशंसनीय वृद्धि हुई जो कि निम्नलिखित आंकड़ों से देखी जा सकती है।

	१९४७	१९५४–५५
(१) कोयला	५,११,४४० टन	१७,००,००० टन
(२) कागज	४,९५९ टन	२४,००० टन
(३) शक्कर	४,११,६०० मन	८,८२,००० मन
(४) स्पिरीट	२,२६,३०० एल. पी. गैलन	४,७६,३०० एल. पी. गैलन
(५) वस्त्र (१९५२)	१,५३,९९,५४७ गज	२,२१,००,००० गज ३,७०,००० पौंड सूत
(६) वनस्पति (१९४९)	७५२ टन	३०२५ टन
(७) स्टार्च (कलप)	८२७ टन	५४०० टन (आंशिक उत्पादन)

आज यह संगठन बहुत विस्तृत हो गया है, जिसमें कोयला, कागज, शक्कर, स्टार्च, वस्त्र, औषधियाँ, रेडियो और बिजली का सामान, शराब, साबुन, वनस्पति और इंजिनियरिंग सम्मिलित हैं। कुल पूँजी जो कि इनके उद्योगों में लगी हुई है वह १९ करोड़ रुपयों से भी अधिक है और कर्मचारियों को जो वेतन प्रतिवर्ष दिया जाता है, वह २५ करोड़ रुपयों से भी अधिक होता है। इस संगठन में विशेषता

इस बात की है कि इसकी सारे भारतवर्ष में ५० शाखाएँ फैली हुई हैं। यह रंग बिरंगी या भिन्न-भिन्न शाखाओं में विभाजित विशाल भवन, लाला करमचंद थापर के किसी भी प्रकार निराश न होने वाले उत्साह तथा न थकने वाली शक्ति का परिणाम है जिसको कि व्यापार के क्षेत्र में इतनी अच्छी स्थिति में यह अकेला ही व्यक्ति अपने प्रयास से लाया है।

इस संगठन की खास हलचलो का वर्णन करते समय यह निश्चित करना कठिन हो जाता है किसका वर्णन सर्वप्रथम किया जाय क्योंकि सामुदायिक जीवन के लिये प्रत्येक बराबरी का महत्व रखती हैं।

कोयले का उद्योग

कोयले को प्रथम लेकर—क्योंकि यह कोयला ही है जो कि उद्योगों को चालू रखता है—यह संगठन ६ कोयले की कम्पनियों पर नियंत्रण करता है जिसके अन्तर्गत १७ कोयले की खदानें हैं और जो कि भारत की खास कोयले की खदानों का प्रमुख उत्पादक हैं। इन कम्पनियों पर कुल २॥ करोड़ रुपयों के लगभग पूँजी लगा रक्खी है। सन् १९५४–५५ की दरमियान इस संगठन ने २४,००,००० टन कोयला बेचा, जिसमें से २॥ लाख टन कोयला विदेशों को भेजा गया और केवल निर्यात कोयले की ही कीमत १½ करोड़ रुपये थी। इस संगठन का प्राइव्हेट उद्योग में कितना विश्वास है यह इस बात से प्रमाणित किया जाता है कि हाल ही में गत वर्ष राष्ट्रीयकरण की इतनी अफवाह के पश्चात् भी इस संगठन ने एक कोयले की नई कम्पनी की स्थापना की— भोवरा कंकानी कोलरीज़ लिमिटेड। इस कम्पनी के पास लगभग १८॥ करोड़ टन कोयला बचत में है जिसमें ७२०५ प्रतिशत कोयला चुनी हुई किस्म का है। यह चुनी हुई किस्म के कोयले की बचत झरिया कोयले के क्षेत्र की कुल बचत का ११% भाग है।

कागज का उद्योग

यह संगठन भारत के कागज की विशाल मिलों में से दो मिलों का नियन्त्रण करता है—श्री गोपाल पेपर मिल्स लिमिटेड और बल्लारपुर पेपर एण्ड स्ट्रा बोर्ड मिल्स लिमिटेड। इन दो मिलों में जो पूँजी लगा रक्खी है वह ४॥ करोड़ रुपयों से अधिक है और उनका सन् १९५४-५५ का कुल उत्पादन २४००० टन का था।

पंजाब उच्च न्यायालय के द्वारा नीलाम की हुई पेपर मिल कम्पनी सन् १९३६ में इस संगठन के द्वारा खरीद ली गई तथा श्री गोपाल पेपर मिल्स के नाम से चालू की गई। उस समय इस मिल में दो मशीनें दी गईं थीं जो कि टूट चुकी थीं। किसी प्रकार विदेशी तथा स्थानीय कला निपुण व्यक्तियों के द्वारा यह ६।७ टन कागज का प्रति दिन उत्पादन करने लगी। शीघ्र ही उसके पश्चात् इसकी क्षमता बढ़कर १६।१८ टन प्रति दिन की होगई। इसके पश्चात् सन् १९५२-५३ में एक तीसरी मशीन और लगाई गई जिससे कि इस मिल का उत्पादन बढ़कर ४०।४२ टन प्रति दिन का हो गया। सन् १९५४ में इसका उत्पादन लगभग १५००० टन का हुआ था और हाल ही में द्वितीय पंच वर्षीय योजना का एक हिस्सा होने के कारण इसमें और मशीनें लगाई जावेंगी तथा पुरानी मशीनों में पूर्ण परिवर्तन कर दिया जावेगा और एक पल्प बनाने का प्लांट भी हाल ही में लिया है जिससे कि इसका उत्पादन बढ़कर २४००० टन प्रतिवर्ष का सन् १९५७ तक हो जावेगा।

इस कागज की मिल के लिए कच्चा माल पंजाब तथा नेपाल के जंगलों से आता है। मौसम के समय में यह कम्पनी ७००० व्यक्तियों से भी अधिक रोजगारी देती है तथा यह कम्पनी सरकार को लगभग १,८०,००० रुपये प्रतिवर्ष कर के रूप में देती है।

श्री गोपाल पेपर मिल्स में स्टेशनरी मैन्यूफैक्चरिंग प्लान्ट, ए डीहाइड्रीजनेशन फैक्टरी डिब्बे बनाने के प्लान्ट सहित और एक तेल की मिल ये सब सहायक कारखाने हैं।

दूसरी मिल—बल्लापुर पेपर एण्ड स्ट्रा बोर्ड मिल्स जो कि मध्य प्रदेश में स्थित है तथा जिसके ऊपर २ करोड़ रुपया लगाया गया और वह केवल २ वर्षों में स्थापित कर दिया गया था। कोई भ औद्योगिक कारखाने के इतिहास का अध्ययन करना हमेशा रुचि पूर्ण विषय रहता है। यह बात विशेषकरके बल्लारपुर मिल्स के सम्बन्ध में है। इस मिल के भाग्य ने इतना उतार चढ़ाव खाया कि बहुतसी बार ऐसा प्रतीत होता था कि क्या यह कारखाना कभी भी पूरा हो सकेगा। प्रबन्धकों को तीन बार बदलने और साथ ही एकबार स्थान के बदल जाने के पश्चात् जब थापर परिवार के हाथ में इसके प्रबन्ध का कार्य गया तब इसके पूरे होने की आशा होने लगी और इसने सन १९५३ में उत्पादन आरम्भ कर दिया। उच्च श्रेणी के छापने तथा लिखनेके कागजों का उत्पादन करने के लिए इस मिल का निर्माण किया था जिसकी कि उत्पादन क्षमता २५ टन प्रति दिन की थी। यह मिल अपने ढंग की भारत में सबसे आधुनिक मिल हैं। सन १९५८ तक ४० टन प्रति दिन तक उत्पादन करने की योजना बनाई है। इसकी अगली किश्त में और भी पूंजी लगेगी जिससे कि इसकी क्षमता ६०।६५ टन प्रति दिन की हो सके।

मुख्य कच्चा माल बाँस जहां पर उपलब्ध हो सकता है वहीं पर यह मिल स्थित है। बाँसों की खूब पैदावार के मौसम में जंगलों में ५,००० मजदूरों से भी अधिक मजदूर व्यस्त रहते हैं जिनको यह मिल बांसों के बदले १,१०,००० रुपये प्रति वर्ष देती है।

शक्कर का उद्योग

बिहार, उत्तर-प्रदेश और पेप्सू मे इस संगठन की पांच शक्कर की मिलें हैं और जो कि उत्पादन क्षमता के दृष्टिकोण से भारत के शक्कर के उद्योग में प्रथम चार उद्योगपतियों में अपना स्थान रखता है। पेप्सू में धुरी नामक स्थान पर "दी मालवा शुगर मिल" का निर्माण कार्य चल रहा है। इन मिलों में कुल पूंजी १ करोड़ ८५ लाख रुपयों की लगा रक्खी है और सन् १९५४--५५ के मौसम में इन मिलों का कुल उत्पादन ९, ००, ००० मन हुआ था। अगले पांच वर्षों के समय मे जब कि उनके विस्तार का कार्यक्रम पूर्ण हो जावेगा तब उनका उत्पादन बढ़कर १७, ००, ००० मन हो जावेगा ऐसी आशा की की जाती है। अगले चन्द वर्षों में उन्नाव (U. P.) का शराब बनाने का कारखाना पावर एल्काहल और ब्युटाइल एल्काहल का उत्पादन करना आरंभ कर देगा।

कपड़े का उद्योग

कपड़ा भी कोयला, शक्कर और कागज की अपेक्षा देश की अर्थ--व्यवस्था के लिये कम महत्वपूर्ण नहीं है और मैनेजिंग एजेंटों की कपड़े के उद्योग के प्रति रुचि "जगतजीत काटन टेक्स-

टाइल्स मिल्स लिमिटेड"से बतलाई जा सकती है जो कि पेप्सू में फगवाड़ा नामक स्थान पर स्थित है। इस मिल की गिनती भारत के बहुत ही कार्य दक्ष, मिलों में की जा सकती है। इस मिल की स्थापना करना इस संगठन के साहस तथा बुद्धिमत्ता का द्योतक है क्योंकि इस मिल का निर्माण उस समय किया गया था जब कि सारे देश की अर्थ-व्यवस्था अस्त व्यस्त हो रही थी तथा पूंजी का इकट्ठा करना अत्यन्त कठिन हो रहा था और मशीनों की तथा निर्माण करने की कीमतों की लगातार वृद्धि ने इसके अंदाजों को एक बक्त से अधिक बार गलत सिद्ध कर दिया था। इसके बावजूद भी इस कम्पनी को देश के विभाजन का जबरदस्त धक्का सहन करना पड़ा।

यह मिल एक मिश्रित कारखाना हैं जिसमें स्पीनींग, वीवींग, डाईंग और ब्लीचींग विभाग हैं और इसके अलावा एक वेस्ट प्लान्ट (Waste plant) है जो कि दरियों तथा कंबलों के लिये मोटे सूत का उत्पादन करता है। इस मिल में ५३० लूम और १७,८५६ स्पीन्डल हैं जहाँपर कि चादरें, शर्टिंग, धोतियां और साड़िया बनाई जाती हैं। इस मिल में ७०, ००० गज कपड़ा प्रतिदिन बनाया जाता है और इसमें रूई की २०,००० गांठें प्रतिवर्ष खपती हैं। इस कम्पनी की कुल १½ करोड़ रुपये की पूंजी लगी हुई है और इसमें २००० कर्मचारी काम करते हैं।

इस मिल को और बढ़ाने का कार्यक्रम बना लिया गया है जो कि सन १९५६-५७ तक पूर्ण हो जावेगा और जिसपर ७० लाख रुपयों का व्यय किया जावेगा। इस कार्य के पूर्ण होने के पश्चात् स्पीन्डलों की संख्या १६००० हो जावेगी। विस्तार की योजना के समाप्त होने के पश्चात् इस मिल की रूई की खपत ४०००० गाँठों तक की हो जावेगी। इस मिल की खुद की खन्ना में जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है जो कि ३२० एफ रूई का सबसे उत्तम केन्द्र है। लगभग सारी ही रूई मिलों में खप जाती है।

जब हम वस्त्र उद्योग के विषय में चर्चा करते हैं, तब प्रायः प्रत्येक मनुष्य को स्टार्च के उद्योग का स्मरण हो ही जाता है जिसका कि माल वस्त्र उद्योग का महत्वपूर्ण सहायक पदार्थ है। भारत स्टार्च एण्ड केमिकल्स लिमिटेड, थापर के औद्योगिक समुदाय का दूसरा कारखाना है जो कि जगाधरी (Jagadhari) में स्थित है। वह औद्योगिक तथा भक्षणीय दोनों जाति के स्टार्च का उत्पादन करता है। इस क्षेत्र में सबसे प्रथम यह सन् १९३८ में स्थापित किया गया था जब कि विदेशी स्टार्च का बहुत अधिक मुकाबला था। ४ टन प्रति दिन की उत्पादन क्षमता से यह कारखाना प्रारंभ किया था जिसकी कि आज ४२ टन प्रति दिन की उत्पादन क्षमता हो गई है और यह भारत के बड़े तीन कारखानों में गिना जाता है। ब्रिटेन तथा अमेरिका से नई मशीनें मँगवाकर इस कारखाने को बिलकुल आधुनिक बना दिया है।

यह कारखाना पंजाब में उस जगह पर स्थित है जहाँ पर कि सबसे अधिक मक्का की खेती होती है तथा इसको २१००० हजार टन मक्का की प्रतिवर्ष आवश्यकता लगती है। इसके द्वारा निर्मित्त स्टार्च वस्त्र उद्योग तथा अन्य उद्योगों में बहुत काम में आता है।

बहुत से अन्य पदार्थों के अतिरिक्त यह कारखाना ग्लूकोस और उच्च श्रेणी के जानवरों के भोजन

का उत्पादन करता है। यह अब (Corn steep liquor) कार्न स्टीप लीकर का उत्पादन करने की योजना बना रहा है जो कि पेनीसिलीन के उत्पादन के काम आती है। भारतवर्ष में केवल यही एक भी कारखाना है जिसमें फरफरल डी हाइड (Furfural dehyde) के उत्पादन करने का प्रबन्ध है जो कि प्लास्टीक, पेट्रोलियम, प्लायउड और अन्य रासायनिक उद्योगों का बहुत महत्वपूर्ण पदार्थ है।

स्टार्च के कारखाने का महत्वपूर्ण सहायक एक साबुन का कारखाना भी स्थापित किया गया है जो कि आधुनिकतम साबुन बनाने की विदेशी मशीनों से सम्पन्न है, जिससे कि ग्लीसरीन के अतिरिक्त, जो कि साबुन के उत्पादन के समय प्राप्त किया जाता है, उच्च श्रेणी के तेल साबुन, क्रीम इत्यादि और घरेलू काम में आने वाले साबुन का उत्पादन किया जाता है।

इस संगठन के नियन्त्रण के अधीन एक औषधियों के बनाने का भी कारखाना है जो कि "इण्डियन मेडिकल सप्लाय लेबोरेटरी लिमिटेड" के नाम से प्रसिद्ध है। यह कारखाना लखनऊ के उपनगर अमौसी में सन् १९३५ में स्थापित किया गया था और यह उत्तरीय भारत में सबसे बड़ा औषधियों का उत्पादन करने वाला कारखाना है। इस कारखाने ने ऊंची औषधियों तथा रासायनिक इन्जेक्शनों के उत्पादन में विशेषता प्राप्त कर रक्खी है। उत्पादन के विभागों के अतिरिक्त इस प्रयोगशाला में पूर्णरूप से संगठित नियन्त्रण करने के तथा गवेषणा करने के विभाग भी हैं और यहाँ पर ऐसी विशेष दवाइयों के उत्पादन करने का प्रयास किया जाता है जो कि आधुनिक ढंग के उपचार के प्रयोग लाई जाती है। इन्जेक्शन विभाग का कार्य पूर्णरूप से मशीनों के द्वारा किया जाता है और इसके अलावा विदेशों से आई हुई ज्यादा मात्रा को छोटी छोटी मात्रा में विभाजन करने का कार्य भी होने लग गया है।

दूसरी कम्पनी, हिन्दुस्तान जनरल इलेक्ट्रीकल कार्पोरेशन लिमिटेड, जो कि (H.G.E.C.) के नाम से प्रसिद्ध है भारतवर्ष में रेडियो के उत्पादन करने का सबसे प्रथम साधन सम्पन्न कारखाना है जो कि घरेलू बाजारों की बड़े पैमानों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। यह कारखाना बिहार में करमपुर नगर में स्थित है जिस पर कि ६२ लाख रुपयों की पूंजी लगी हुई है और जिसकी कि बिजली के सामानों अतिरिक्त २०० रेडियो प्रतिदिन बनाने की क्षमता है। रेडियो के अधिकतर पुर्जे इसी कारखाने में बनाये जाते हैं। यद्यपि कुछ पुर्जों के लिए इस कारखाने को अब भी विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता है।

हाल ही में इस कम्पनी ने पश्चिमीय जर्मनी की प्रसिद्ध सबाज (Sabas) के साथ कला पूर्ण सम्बन्ध कायम कर लिये हैं और उनके कला विशेषज्ञों से सलाह लेकर नये रेडियो का निर्माण किया हैं जो कि अब बाजारों में आने लग गये हैं।

इस रेडियो के कारखाने के समीप ही "बाराकर इंजिनियरिंग फाउन्ड्री वर्क्स" नामक कारखाना है जो कि कोयले की खदानों की मशीनें जैसे हॉलेजेस (Haulages), शक्ति शाली पम्प, हेडगी अरस बीयम पुलीज, स्कीनींग प्लान्ट, उजालदानों के पंखे, कॉनवेयर्स इत्यादि का उत्पादन करता है।

इन सब कारखानों का सुप्रसिद्ध इंजिनियरिंग कारखाने ग्रीव्ज़ कॉटन एण्ड कम्पनी लिमिटेड के उल्लेख के बिना वर्णन अधूरा ही रह जावेगा जो कि भारत के औद्योगिक साम्राज्य में गत एक शताब्दी से कार्य कर रहा है और जो कि अब थापर से मिल गया है। यह कारखाना सन् १९४६ में थापर के द्वारा खरीद लिया गया है। वे किसी प्रकार अप्रैल सन् १९५१ से इसके मेनेंजिग एजेन्ट नहीं रहे हैं और अब यह सीधे लाला करमचंद थापर के द्वारा नियंत्रित किया जाता है जो कि संचालकों की समिति के अध्यक्ष हैं।

ग्रीवृज़ कॉटन एण्ड कम्पनी लिमिटेड बहुत से ब्रिटिश तथा अमेरिकन उत्पादकों का भारत में प्रतिनिधित्व करती है। दूसरी कम्पनियों के मध्य में यंत्र सम्बन्धी इञ्जिनियरिंग के क्षेत्र में रस्टन एण्ड हार्नबी लिमिटेड, एवेलिंग बारफोर्ड लिमिटेड, डेवी पक्सभन एण्ड कंपनी लिमिटेड, डेविड ब्राउन एण्ड सन्स लिमिटेड का नाम लेना आवश्यक है जिनका कि ग्रीवृज़ कॉटन के द्वारा प्रतिनिधित्व किया जाता है। यह कम्पनी वस्त्र मिलों की मशीनों के उत्पादकों का भी प्रतिनिधित्व करती है जिनमें थॉस होल्ट लिमिटेड, ट्रान्सफील्ड ब्रदर्स लिमिटेड, मथर एण्ड प्लाट लिमिटेड, विलियम केनीयन्स एण्ड सन्स लिमिटेड, लान्गलोज़ इञ्जिनियरिंग कम्पनी इत्यादि विशेष हैं। इस कम्पनी का हवाई विभाग ब्रिस्टल एरोप्लेन कम्पनी लिमिटेड, ब्लेकबर्न एण्ड जनरल एयर-क्राफ्ट लिमिटेड, ब्रिटिश मेसीयर लिमिटेड, रोटोल लिमिटेड इत्यादि कम्पनियों का प्रतिधित्व करती है। ग्रीवृज़ कॉटन का धातु सम्बन्धी तथा अन्य विभाग इङ्गलिश स्टील कार्पोरेशन लिमिटेड, मॉन्ड निकल कम्पनी लिमिटेड हेनरी वीजिन एण्ड कम्पनी लिमिटेड इत्यादि कम्पनियों का प्रतिनिधित्व करता है।

उत्पादन की दिशा में इनका पूना में स्थित कारखाना जिसमें रस्टन एण्ड हार्नस्बी लिमिटेड हिस्सेदार हैं उसका वर्णन करना भी अनिवार्य है जहाँ पर डीज़ल एंजिन का उत्पादन किया जाता है। उन्होंने, क्राम्पटन पर्किन्सनके हिस्सेमें एक कारखाना और बम्बई में डाला है जहाँ पर ट्रान्सफार्मरस, मोटर्स, बिजली के पंखे और स्टार्टर्स का उत्पादन किया जाता है। विलियम केनीयन्स के हिस्से में ये औद्योगिक तथा वस्त्र उद्योग की आवश्यकता के बम्बई के कारखाने में रूई के रस्से बनाते हैं जो कि अपनी तरह का भारत में एक ही कारखाना है और जो कि आधुनिकतम मशीनों से सम्पन्न है तथा १½" के व्यास तक के कितने ही लम्बे रस्से बना सकता है।

कोई भी संगठन जो कि थापर के ही मुकाबले का हो वह बिना कर्मचारियों की शुभकामना के कभी भी काम नहीं कर सकता और व्यवस्थापकों और कर्मचारियों के बीच सद्भावना के अस्तित्व के कारण तथा उनकी हितकारी सुविधाओं के कारण ही यह संगठन सुगमता से कार्य कर रहा है। देश के विभाजन के समय यह इस संगठन की नीति थी कि शरणार्थियों को फिर से जमाने में सहायता करे। एक हजार व्यक्तियों से भी अधिक को जगाधरी के थापर के कारखाने में रोजगारी दी गई और लगभग इतने ही वस्त्र के मिल में लगा लिये गये।

ये सब उपरोक्त बातें मैनेजिंग डायरेक्टर लाला करमचंद थापर की उदारता की द्योतक है और यह जाहिर करती हैं कि ये जरूरत शुदा व्यक्तियों को सहायता करने में कभी भी पीछे नहीं रहते हैं। उन्होंने एक नियमित ट्रस्ट खोल दिया है जो कि मोहनी चेरीटेबल ट्रस्ट के नाम से प्रसिद्ध है जहां से योग्य विद्यार्थियों, विधवाओं और अनाथों को और उचित कार्यों में निरन्तर आर्थिक सहायता दी जाती है। यह बहुत ही हर्ष की बात है कि हाल ही में उन्होंने पेप्सू में इंजिनियरिंग कालेज की स्थापना के लिये २०,००,००० रुपये दान में दिये हैं।

यह सब गर्व करने योग्य प्रमाण हैं। किसी भी स्तर से जांचने पर ऐसा आभास होगा कि थापर का एक बहुत ही उन्नतिशील परिवार है। इस संगठन ने कोयला, शक्कर, कागज, वस्त्र इत्यादि के उत्पादन में वृद्धि करने की तथा नये ढंग से देश की अर्थ-व्यवस्था को सहायता देने की योजनायें बनाली है नये व्यापार के प्रस्तावों का हमेशा अध्ययन किया जाता है और उनको जांचा जाता है। और कोई भी मनुष्य आशा से पूछ सकता है कि, इसके पश्चात् क्या होगा।

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists

[दूसरा खण्ड]

भारत की औद्योगिक प्रतिभाएँ

Industrial Magnates of India

रावराजा सर सेठ स्वरूपचन्द हुकुमचन्द इन्दौर

The Merchants King of Malwa

रावराजा सर सेठ सरूपचन्द हुकुमचन्द

(The merchants prince of Malwa)

मध्यभारत के राज्य-प्रमुख श्रीमंत जीवाजी राव शिन्दे ने सेठ हुकुमचन्द के जीवन पर अपनी शुभकामनाएँ भेजते हुए ३० मार्च १९५१ के एक पत्र में लिखा है—

"सर सेठ हुकुमचन्द का व्यापारिक क्षेत्र में तो विशेष स्थान रहा ही है साथ ही साथ उन्होंने राष्ट्र के सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्तर को ऊँचा उठाने तथा मानव-समाज की सेवा के लिए जो हितकर कार्य किये हैं वे वर्तमान व भविष्य की परिस्थितियों में भी आदर के साथ स्मरण किये जायंगे। इन्दौर नगर के निर्माण में और उसको औद्योगिक केन्द्र बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ रहा है। वे हमारे प्रदेश के सबसे वयोवृद्ध उद्योगपति, समाजसेवी और राष्ट्रसेवी हैं।"



रावराजा सर सेठ हुकुमचन्द

सन् १९३० के जनवरी मास में इन्दौर में आयोजित स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक सर प्रफुल्लचन्द्र राय ने सर सेठ हुकुमचन्द को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था—

"सर सरूपचन्द हुकुमचन्द जिनकी अध्यक्षता में इस प्रदर्शनी की आयोजना हुई है भारतीय उद्योग धन्धों का श्रीगणेश करनेवालों के पथप्रदर्शक या अगुआ हैं।......................। जिस समय हम लोगों ने स्वदेशी उद्योग-धन्धों के महत्वको ठीक-ठीक समझा भी न था उससे भी बहुत पहले सर हुकुमचन्द ने अपनी दूरदर्शिता से कपड़े की मिलों के महत्व को जान लिया था और उनका श्रीगणेश भी कर दिया था। उनकी औद्योगिक हलचलों का क्षेत्र सिर्फ महाराजा होल्कर के राज्य तक ही सीमित नहीं है बल्कि वह कलकत्ता और बम्बई के समान प्रसिद्ध औद्योगिक नगरों में भी उनके अदम्य उत्साह तथा कार्य-कुशलता का परिचय दे रहा है।"

रावराजा सर सेठ सरूपचंद हुकुमचन्द इन्दौर

पूर्व इतिहास

इन्दौरके सुप्रसिद्ध सर सेठ हुकुमचन्द के पूर्वजों का मूल निवास स्थान मारवाड़ में लाडनू के समीप मेडसिल गाँव का था। इस परिवार के सेठ पूसाजी ने अपने दो पुत्र श्री शामाजी और कुशलाजी के साथ सन् १७८७ में मालव भूमि का प्रवास किया। उस समय होल्कर राज्य की राजधानी महेश्वर थी और इन्दौर आजकल के इन्दौर की तरह नहीं था। उस समय इन्दौर एक कस्बे के रूप में था। आज जिसको जूनी इन्दौर कहते हैं उस समय इन्दौर का उतना ही हिस्सा आबाद था। सन् १८१८ में महारानी अहिल्याबाई के स्वर्गवास के २२ वर्ष बाद राजधानी महेश्वर से इन्दौर लाई गई और तभी से इन्दौर का भाग्य चमक उठा। इन्दौर के भाग्य के साथ-साथ सेठ पूसाजी का भी भाग्य चमक उठा। क्रमशः इन्दौर की आबादी ५ गुना बढ़कर ६५ हजार के लगभग पहुँच गई। सर्राफे का काम अच्छे पैमाने पर शुरू हो गया था। इन्दौर का अपना हाली रुपया चलता था और सर्राफे में तोड़ा मोहर चलती थी।

महाराज तुकोजी राव द्वितीय के शासन काल में इन्दौर के वाणिज्य, व्यवसाय, शिक्षा और चहल-पहल का बहुत विकास हुआ। उद्योग-धन्धे और व्यापार व्यवसाय में भी उन दिनों बहुत उन्नति हुई। व्यापारियों को निजी कारबार के लिए भी राज्य की ओर से आर्थिक सहयोग दिया जाता था। किसी भी साहूकार का दिवाला पिटना राज्य की प्रतिष्ठा के खिलाफ समझा जाता था। ग्यारह पंच नामकी व्यापारिक संस्था की स्थापना भी उन्हीं दिनों में हुई थी और उसको अनेक अधिकार भी प्रदान किये गये थे। सन् १८६७ में महाराजा द्वितीय तुकोजीराव की प्रेरणा से ही १५ लाख की पूँजी से स्टेटमिल की स्थापना की गयी और इन्दौर नगर की इस स्थिति के साथ-साथ सेठ पूसाजीकी व्यापारिक स्थिति भी दिन-दिन समृद्ध होती गयी।

सेठ पूसाजी के दो पुत्र सेठ कुशलाजी और सेठ शामाजी हुए। सेठ शामाजी के पौत्र सेठ स्वरूपचन्द हुए।

सेठ स्वरूपचन्द बहुत तीक्ष्ण बुद्धि के व्यक्ति थे। वाणिज्य व्यवसाय में इनकी प्रतिभा बहुत गतिशील थी। उन दिनों भारतवर्ष में मालवा अफीम के व्यवसाय का प्रधान केन्द्र था। अफीम के व्यवसाय से बहुत बड़ी सम्पत्ति मालवा को प्रतिवर्ष मिलती थी और इन्दौर के व्यापारी इस व्यवसाय की बदौलत मालामाल हो रहे थे। सेठ स्वरूपचन्द अपने दो भाई सेठ ओंकार मल और सेठ त्रिलोकचन्द के साथ अपनी दुकान का जो मेसर्स मंगनी राम माणकचन्द के नाम से प्रचलित थी—काम करते थे। सेठ स्वरूपचन्द उदारचित्त, धर्मात्मा और स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। इनका स्वास्थ्य भी बहुत उत्तम था।

विशाल शरीर, उन्नत ललाट और कान्ति युक्त चेहरा था। समाज में भी उनका सम्मान और प्रतिष्ठा बहुत थी।

सेठ स्वरूपचन्द की प्रखर बुद्धि से इस फर्म का व्यवसाय चमक उठा। परिश्रम, लगन, तत्परता और सत्य निष्ठा के कारण समाज में उन्होंने अच्छा नाम पैदा किया।

रावराजा सर सेठ हुकुमचन्द

सन् १८७४ के जुलाई मास की १४ तारीख को सेठ स्वरूपचन्द के यहाँ पर मालवा के सुप्रसिद्ध उद्योगपति सर सेठ हुकुमचन्द का जन्म हुआ। बचपन से ही सेठ हुकुमचन्द के ललाट पर भाग्य लक्ष्मी की मुस्कराहट के लक्षण दिखाई पड़ते थे। १६ वर्ष की उम्र से ही आपके अन्दर मनुष्य के व्यक्तित्व को महान् बनाने वाली सभी प्रकार की महत्त्वाकांक्षाओं का जन्म हो चुका था।

संन् १८८० में सेठ स्वरूपचन्द ने त्रिलोकचन्द हुकुमचन्द के नाम से अपने दोनों भाइयों के साथ स्वतन्त्र दुकान की स्थापना की और उसी दिन से सर सेठ हुकुम चन्द का नाम व्यापारिक जगत् के साथ जुड़ गया।

जब तक अफीम का व्यवसाय मालवे में चलता रहा तब तक यह फर्म अफीम व्यवसाय का नेतृत्व करती रही। ई० सन् १९०० में तीनों भाइयों का बटवारा होकर तीनों फर्में अलग-अलग हो गई और सर सेठ हुकुमचन्द, स्वरूपचन्द हुकुमचन्द के नाम से अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगे।

अफीम का व्यवसाय बन्द होने के पश्चात् सर सेठ हुकुमचन्द ने रूई के व्यवसाय में प्रवेश किया और इस व्यवसाय में प्रवेश करने के साथ-साथ ही आपकी व्यवसायिक प्रतिभा की धाक भारतवर्ष के सभी प्रमुख रूई के बाजारों पर और यहाँ तक कि अमेरिका के रूई के बाजारों पर भी पड़ने लगी। सेठ हुकुमचन्द की लेवा-वेची से सभी बाजारों में उथल-पुथल मच जाती थी। कभी-कभी तो यह हालत होती थी कि बाजार के रुख का सेठजी के ऊपर कोई असर नहीं पड़ता था बल्कि सेठजी के रुख पर ही बाजार का रुख बदल जाता था। सेठजी की इसी अद्भुत व्यवसायिक प्रतिभा और उनके आकर्षक व्यक्तित्व से लोग उनको *"मर्चेंट किंग आफ मालवा"* और *"पायोनियर इन स्वदेशी इन्डस्ट्री"* कहने लगे।

औद्योगिक जगत में प्रवेश

मध्यभारत के शिक्षा-सचिव श्री युधिष्ठिर भार्गव ने सेठजी के जीवन पर श्रद्धांजलि देते हुए लिखा है—

"सेठ हुकुमचन्द का पूर्ण महत्व समझने के लिए हमें अपने आपको उस काल और परिस्थिति में ले चलना होगा जब कि भारतवर्ष में औद्योगिक युग का सूत्रपात हो रहा था और इस देश के पूँजी-

पति इस क्षेत्र में प्रवेश करने में बहुत हिचकिचाते थे। देश की विदेशी सत्ता का यह ध्येय था कि भारत में उद्योग-धन्धे पनपने न पायें जिससे विदेशी कारखानों को भारत में खुला बाजार मिलता रहे।

मगर सेठ हुकुमचन्द की तीक्ष्ण दृष्टि देश के औद्योगिक भविष्य का प्रत्यक्ष दर्शन कर रही थी जिसके परिणाम-स्वरूप सन् १६०६ में इन्होंने प्रयत्न करके इन्दौर में मालवा मिल की स्थापना करवाई और उसमें स्वयं भी एक डाइरेक्टर बने। उसके बाद सन् १६१३ में इन्होंने स्वयं हुकुमचन्द मिल्स की स्थापना की। सन् १६१६ में दूसरी हुकुमचन्द मिल, १६२० में राजकुमार मिल, १ २८ में उज्जैन में हीरा मिल्स और १६१६ में ८० लाख रुपये की पूंजी लगाकर कलकत्ते में एक विशाल जूट मिल तथा स्टील के कारखाने की स्थापना की और इस प्रकार सट्टे की दुनिया की तरह औद्योगिक दुनिया में भी अपना जबरदस्त प्रभाव स्थापित कर लिया।

औद्योगिक जगत की तरह सार्वजनिक क्षेत्र में भी इस विशिष्ट पुरुष ने लाखों रुपये अपने पास से बड़ी-बड़ी विशाल धर्मशालायें, बोर्डिंग हाउस, औषधालय, प्रसूतिगृह, आयुर्वेदिक कालेज तथा तीर्थ-क्षेत्रों के बनवाने में खर्च किए। उनके दिये हुए दानों की कुल संख्या ८० लाख रुपये तक पहुँचती है।

मालवा मिल की स्थापना :—

इन्दौर में अफीम का व्यवसाय बन्द करने के पश्चात् सर सेठ हुकुमचन्द के हृदय में यह भावना पैदा हुई कि भारतवर्ष की रुई विलायत जाकर वहां से उसका कपड़ा बनकर वापस इस देश में आ सकता है और वहाँ के लोग कपड़ा भेजकर धन पैदा कर सकते हैं तो उस रुई का कपड़ा यहाँ ही क्यों न बनाया जाय और उसका लाभ यहीं क्यों न उठाया जाय। अपनी इस कल्पना को प्रत्यक्ष रूप देने के लिए सर सेठ हुकुमचन्द ने सन् १६०९ में इन्दौर मालवा कम्पनी कायम की। कम्पनी की पूँजी १५ लाख रुपये रक्खी गयी। बम्बई के सर करीम भाई इब्राहीम की मैनेजिंग एजन्सी में इन्दौर मालवा मिल की स्थापना की गई। थोड़े ही दिनों में इस मिल ने बहुत उन्नति की।

हुकुमचन्द मिल्स

मालवा मिल की सफलता से उत्साहित होकर सर सेठ हुकुमचन्द ने ठीक ४ वर्ष के बाद सन् १६१३ में १५ लाख की पूँजी से हुकुमचन्द मिल्स की स्थापना की। मिल खोलने के कुछ ही समय बाद प्रथम महायुद्ध चालू हो गया और उसके कारण इस मिल को एक ही वर्ष में १ करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ। १६१६ में इसी मिल के मुनाफे से हुकुमचन्द मिल नम्बर २ की स्थापना की गई।

इस दूसरी मिल की स्थापना के ३ वर्ष बाद ही राजकुमार मिल्स के नाम से तीसरे मिल की स्थापना की गई।

औद्योगिक क्षेत्र में सर सेठ हुकुमचन्द की इन सफलताओं को देखकर ग्वालियर के तत्कालीन महाराजा माधव राव सिन्धिया ने सेठजी को उज्जैन में भी एक मिल स्थापित करने के लिए प्रेरित

किया। इसके फलस्वरूप सन् १६२८ में आपने उज्जैन में हीरा मिल का शिलान्यास किया। इस मिल में सारी मशीनें नए ढंग की लगाई गई हैं। इस मिल का बारीक व रंगीन कपड़ा जनता में बहुत पसन्द किया जाता है।

हुकुमचन्द जूट मिल

सर सेठ हुकुमचन्द का ध्यान सिर्फ इन्दौर और उज्जैन तक ही परिमित नहीं था। सारे भारत वर्ष के औद्योगिक क्षेत्र में धूम मचाने की महत्त्वाकांक्षा प्रतिदिन की सफलताओं के बाद सेठ हुकुमचन्द के दिल में उत्पन्न हो रही थीं। उन्होंने देखा कि जूट के उद्योग के लिए कलकत्ता एक बहुत अच्छा केन्द्र है, मगर समस्त जूट उद्योग के ऊपर अंग्रेज उद्योगपतियों का ही अधिकार है। जूट मिल एसोसियेशन में भी उन्हीं का बोलबाला है। जूट के क्षेत्र में अंग्रेजों के इस एकाधिकार को तोड़ने का निश्चय कर सन् १६१६ में कलकत्ता आकर सेठजी ने नैहाटी में अपनी जूट मिल खोलने का निश्चय किया। दी हुकुमचन्द जूट मिल्स के नाम से ८० लाख की पूँजी से कम्पनी खड़ी की गई। थोड़े ही दिनों में इसके मामूली शेयर की कीमत ७।।) साढ़े सात रुपये से बढ़कर ३२) बत्तीस रुपये तक पहुँच गई और शीघ्र ही इस मिल के मुनाफे से नम्बर २ और नम्बर ३ की मिलें भी खोल दी गई। जूट के उद्योग में काम करनेवाली यह पहली भारतीय मिल थी और सेठ हुकुमचन्द ही पहले भारतीय उद्योगपति थे जिन्होंने इस क्षेत्र में प्रवेश कर अंग्रेजों के एकाधिकार पर छापा मारा था। ऐसा कहा जाता है कि सारे संसार की जूट मिलों में यह मिल तीसरे नम्बर की मानी जाती थी और भारतीय जूट मिलों में तो इसका पहला नम्बर था।



श्री रायबहादुर सेठ, राजकुमार सिंह
इन्दौर

सन् १६३४ तक कलकत्ते में जूट मिल का काम खूब फला फूला जिसके परिणामस्वरूप लक्ष्मी जूट मिल भी खरीद ली गई। मगर सन् १६३४ से १६३८ के बीच में कलकत्ते में भीषण औद्योगिक संकट पैदा हुआ और सन् १६३६ में वह चरम सीमा पर पहुँच गया। सेठ जी के पार्टनर भट्टड़ बन्धु उसे सम्भाल न सके। तब इस मिल की मैनेजिंग एजेन्सी में मेसर्स रामदत्त रामकृष्ण दास को मिला लिया गया।

लोहे का कारखाना :—

जूट मिल में प्राप्त हुई सफलता से प्रेरित होकर सर सेठ हुकुमचन्द ने कलकत्ते में लोहे का एक बड़ा कारखाना खोलने का निश्चय किया, २५ लाख रुपये की पूँजी से हुकुमचन्द आयर्न एण्ड स्टील

कं० लि० नामक कम्पनी की स्थापना की गई। इसमें भी श्री हरकिशन दास भट्टड़ का साझा रक्खा गया। लोहे का यह कारखाना अपने ढंग का एक ही था। रेलवे कम्पनियों को इस कारखाने का काम बहुत अधिक पसन्द था। इस कारखाने से रेलवे को बहुत माल सप्लाई किया जाता था।

बीमा के क्षेत्र में

सन् १९२९ में सरस्वरूप चन्द हुकुमचन्द एण्ड कम्पनी ने हुकुमचन्द इन्श्योरेन्स कं० लि० के नाम से एक बीमा कं० खड़ी की और इस कं० में आग, मोटर, दुर्घटना और जिन्दगी के बीमे का काम शुरू किया गया। सन् १९३१ में श्री डेढ़ राज भरतिया को इस कं० का काम सौंप दिया गया। सन् १९४६ में श्री डेढ़ राज के उत्तराधिकारी भी इस बीमा कं० के कार्य को संभालने में असमर्थ हो गये और फिर से उसका प्रबन्ध स्वरूप चन्द हुकुमचन्द एण्ड कम्पनी के हाथों में आ गया। उसके बाद उसका प्रबन्ध एक डाइरेक्टर बोर्ड के हाथों में दे दिया गया।

इस प्रकार कपड़ा, जूट, लोहा, बीमा इत्यादि सभी प्रकार के प्रगतिशील उद्योगों में प्रवेश करके और उसमें सफलता प्राप्त करके भारत के औद्योगिक जगत में सर सेठ हुकुमचन्द ने अपने महान् व्यक्तित्व के बल से एक अमिट छाप लगा दी।

सार्वजनिक कार्य—

केवल व्यापारिक और उद्योग-जगत में सफलता प्राप्त करके करोड़ों रुपये की दौलत इकट्ठी कर लेना ही सेठ हुकुमचन्द ने अपने जीवन का ध्येय नहीं समझा बल्कि उस कमाए हुए पैसे को जनता के लिए सार्वजनिक उपयोग में खर्च करने में भी वे सबसे आगे रहे। आज इन्दौर नगर के अन्दर सेठ हुकुमचन्द की बनाई हुई सार्वजनिक संस्थाएँ उनकी कीर्ति को अमर कर रही हैं। इनकी बनाई हुई जंवरी बाग धर्मशाला, हुकुमचन्द बोर्डिंग हाउस, हुकुमचन्द दिगम्बर जैन मन्दिर, कंचन बाई प्रसूति-गृह, प्रिंस यशवन्त राव आयुर्वेदिक औषधालय, राजकुमार सिंह आयुर्वेदिक कालेज इत्यादि संस्थाएं इन्दौर में आने वाले दर्शकों के आकर्षण का प्रधान केन्द्र रहती है। सेठ जी का बनाया हुआ दिगम्बर जैन मन्दिर तो कला की दृष्टि से सारे भारतवर्ष में अपना एक प्रमुख स्थान रखता है। इन सब संस्थाओं के बनाने में तथा दूसरे फुटकर कार्यों में सर सेठ हुकुमचन्द ने ८० लाख रुपये के करीब दान किया है।



श्री राजबहादुर सिंह एम० ए० एल० एल० बी०

रायबहादुर राजकुमार सिंह

सर सेठ हुकुमचन्द के पुत्र कुँवर राजकुमार सिंह का जन्म सं० १६७० में हुआ। इन्दौर के डेली कालेज में आपकी शिक्षा हुई। एम० ए० एल० एल० बी० तक आपने अध्ययन किया। भारत सरकार से आपको सं० २००१ में राय बहादुर की और इन्दौर राज्य से मशीरे बहादुर की पदवी प्राप्त हुई। जैन समाज की संस्थाओं ने भी आपको जैन रत्न और दानवीर की उपाधियाँ प्रदान की है। सर सेठ हुकुमचन्द ने अपने उत्तर जीवन को त्यागमय विरक्त जीवन की साधना में लगा दिया है। इसलिए उनका सब काम रायबहादुर राजकुमार सिंह ही सम्हालते हैं। रायबहादुर राजकुमार सिंह के पाँच पुत्र हैं।



कुंवर महाराज बहादुर सिंह
सुपुत्र श्री राजकुमार सिंह, इन्दौर।

१—कुँवर राजबहादुर सिंह २—कुँवर महाराज बहादुर सिंह ३—कुंवर जम्बूकुमार सिंह ४—कुंवर चन्द्रकुमार सिंह और ५—कुंवर यशकुमार सिंह हैं। श्री राजबहादुर सिंह का जन्म १६८२ में, श्री महाराज बहादुर सिंह का जन्म सं० १६८६ में, श्री जम्बू कुमार सिंह का जन्म १६६३ में, श्री चन्द्रकुमार सिंह का २००२ में और श्री यशकुमार सिंह का जन्म २००४ में हुआ। श्री राजबहादुर सिंह ने एम० ए० एल० एल० बी० की परीक्षा पास की।

इस प्रकार व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्र में अपना प्रबल व्यक्तित्व स्थापित करके, तथा दान, धर्म और सार्वजनिक क्षेत्र में लाखों रुपये खर्च करके दानवीर की उपाधि प्राप्त करके अपनी वृद्धावस्था में यह महान् व्यक्ति इस समय सब सांसारिक झगड़ों से निवृत्त हो त्यागपूर्ण विरक्त जीवन व्यतीत कर रहा है। इतने बड़े वैभव का स्वामी होने पर भी अब उस वैभव से उसका कोई सारोकार नहीं है प्रभु-चिन्तन ही उसका एक मात्र ध्येय रह गया है। इस प्रकार अपनी युवावस्था की तरह वृद्धावस्था को भी यह महान् व्यक्ति सफल कर रहा है।

भारत के उद्योग और उद्योगपति



Indian Industries & Industrialists



दूसरा खण्ड

मोदी उद्योग-प्रतिष्ठान मोदीनगर

भारतीय उद्योग का विशाल प्रतिष्ठान

मोदी इण्डस्ट्रीज, मोदीनगर

मोदी नगर के संस्थापक और मोदी इण्डस्ट्रीज के विशाल उद्योग-समूह के संचालक रायबहादुर गूजरमल मोदी देश की सुप्रसिद्ध औद्योगिक विभूतियों में से एक है। अपनी उत्कट औद्योगिक प्रतिभा, संगठन शक्ति और अपने अद्भुत साहस के बल पर आपने बहुत लघु साधनों के आधार पर एक विशाल औद्योगिक प्रतिष्ठान स्थापित कर दिया। इस प्रतिष्ठान में कपड़ा, शक्कर, साबुन, तैल, वारनिश, बिस्कुट इत्यादि दैनिक जीवन के उपयोग में आनेवाली सभी चीजें बड़े पैमाने पर तैय्यार होती है।

राय बहादुर गूजर मल मोदी के द्वारा स्थापित किया हुआ मोदीनगर अपने आप में सम्पूर्ण एक विशाल औद्योगिक नगर है जहाँ पर कॉलेज, हाईस्कूल, अस्पताल; कैण्टीन, लायब्रेरी आदि सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

मजदूरों की सुविधा के लिए राय बहादुर गूजरमल मोदी हमेशा से सक्रिय और सचेष्ट रहे हैं। इस विशाल प्रतिष्ठान का परिचय आगे देखिए।


राय बहादुर गूजरमल मोदी

मोदी इण्डस्ट्रीज के प्रतिष्ठानों की सूची

मोदी शुगर मिल लिमिटेड—

१. मोदी शुगर मिल
२. मोदी वनस्पती फैक्ट्री
३. मोदी सोप वर्क्स
४. मोदी टिन फैक्ट्री
५. मोदी गिलसीन वर्क्स

मोदी फूडप्रोडक्ट्स कं० लिमिटेड—

१. मोदी ऑयल मिल्स
२. मोदी पेंट्स ऐण्ड वारनिश वर्क्स

मोदी सप्लाइज कारपोरेशन लिमिटेड—

१. मोदी बिस्कुट फैक्ट्री
२. मोदी कन्फैक्शनरी वर्क्स
३. मोदी लेन्टर्न वर्क्स

मोदी स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स कं० लिमिटेड—

१. मोदी टेक्सटाइल मिल्स
२. मोदी होजियरी वर्क्स

मोदी इण्डस्ट्रीज मोदीनगर

आज से बीस वर्ष पहले, मोदी नगर के संस्थापक, श्री गूजरमल मोदी पटियाला राज्य में रहा करते थे। आप अपने पिता राय बहादुर सेठ मुलतानीमल मोदी और अपने दादा के द्वारा स्थापित किए हुए कारखानो का प्रबन्ध करते थे जो कि पटियाला तथा उसके आस पास स्थापित थे। इनके पिता यह कार्य छोटी अवस्था में ही इन्हें सौंपकर स्वयं विश्राम-जीवन व्यतीत करते थे। आपके पिता आपको भिन्न २ प्रकार के कार्यों की शिक्षा (ट्रेनिंग) दी। आपने बैंकिंग तथा एकाउण्टेन्सी में विशेष योग्यता प्राप्त की। अपने पिता द्वारा विभिन्न नये कारखाने लगाने तथा नई इमारतों के बनाने से आपको अपने जीवन में हर समय तथा हर घड़ी नये कारखाने, नई इमारतें बनाने और देखने का शौक हो गया। आपके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि कारखानों का एक नया नगर बसाया जाय, तो वह एक आदर्श नगर बन सकता है।

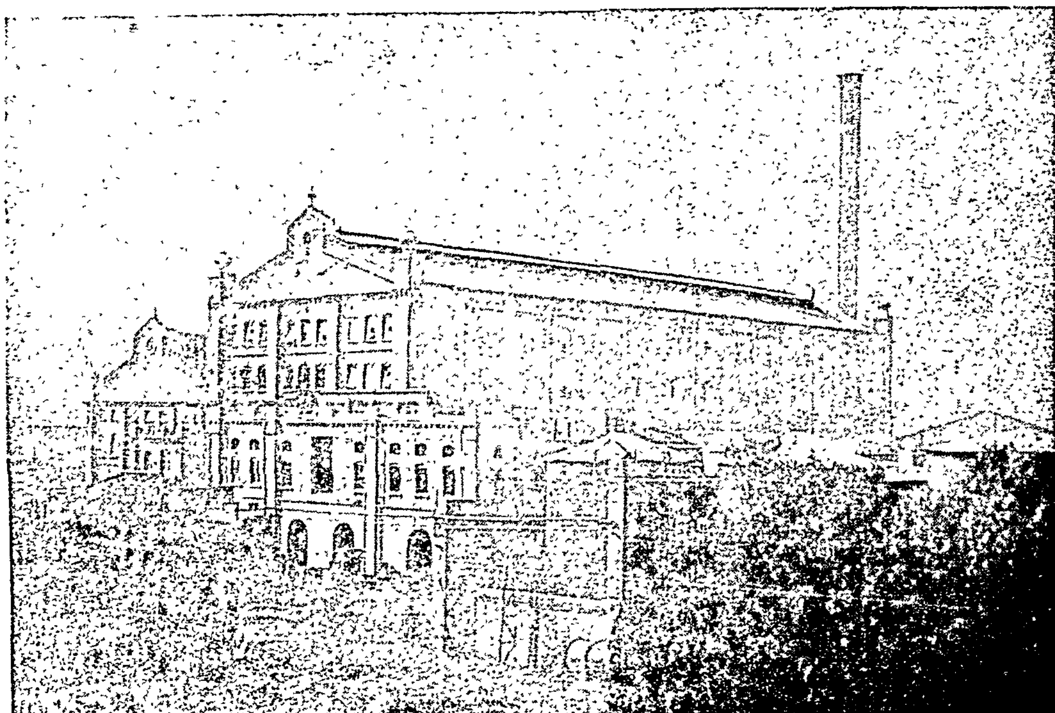
सन् १९३२ में आपको किसी व्यापार कार्य के लिए कुछ दिन देहली जाना पड़ा। इस शहर की चमक दमक तथा यहाँ की बढ़ती हुई रौनक को देखकर आपके मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि यदि कोई ऐसा ही नगर देहली के निकट ही स्थापित किया जाय तो क्या ही अच्छा हो।

इन विचारों ने इनके मस्तिष्क पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला तथा होनहार को भी कुछ ऐसा स्वीकार था कि वह अपने सब कार्य-कलाप को छोड़कर इसी स्वप्न को पूरा करने की धुन में दिन रात घूमने लगे। इसी खोज में जब आप मोटर द्वारा देहली से मेरठ जा रहे थे तो एक विस्तृत और उजाड़ स्थान दिखाई पड़ा। वहाँ पर एक छोटा सा थाना, डाकखाना और कुछ झोपड़ियाँ नजर आईं। मालूम करने पर पता चला कि वे झोपड़िया जरायम पेशा लोगों की हैं और उनकी निगरानी के लिए ही यह थाना बनाया गया है।

यह स्थान देहली से २५ मील और मेरठ से १५ मील की दूरी पर स्थित है। यहाँ की जमीन समतल और विशाल मैदान के रूप में थी जो कि ऊसर होने के कारण खाली पड़ी थी। यहाँ एक तरफ देहली से देहरादून जाने वाली पक्की सड़क और दूसरी तरफ रेलवे की मेन लाइन और एक छोटा सा रेलवे स्टेशन बेगमाबाद के नाम से मौजूद था। यहाँ पर बरसाती तथा दूसरे पानी के निकास के लिये नाला भी मौजूद था, मानो प्रकृति ने वे सब सुविधाएँ जो कि एक औद्योगिक नगर के लिए आवश्यक हैं यहाँ पहले से पैदा कर रक्खी थीं। वास्तव में भावी केवल इसी प्रतीक्षा में थी कि उन चीजों से लाभ उठाकर उनको प्रयोग में लाया जाये।

इन्हीं सब बातों को देखते हुए श्री मोदी ने निश्चय किया कि यह ऐसा ही स्थान है, जिसकी, उन्हें वर्षों से खोज थी। इन्हीं दिनों भारत सरकार ने चीनी उद्योग को संरक्षण (प्रोटेक्शन) देकर भारत

में चीनी का उत्पादन बढ़ाने की चेष्टा की थी। श्री मोदी ने इस स्थिति का लाभ उठाते हुए यहाँ पर शुगर मिल बनाने का निश्चय किया।



मोदी शूगर मिल्स मोदी नगर

अब प्रश्न यह पैदा हुआ कि उसके लिए पूँजी का क्या प्रबन्ध हो। पिता की सहायता लेना तो उन्हें स्वीकार न था क्योंकि उन्हें इस बात का अनुभव लेना था कि क्या किसी उद्योग को जारी करने के लिए पूँजीपति का होना आवश्यक है परन्तु उनको विश्वास था कि पूँजी से अधिक मनुष्य की साख होती है। यदि जनता को विश्वास हो तो फिर पूँजी एकत्र करने में क्या कठिनाई हो सकती है। इसी विश्वास पर उन्होंने एक शुगर मिल कम्पनी की स्थापना की और जनता से मिल के हिस्से खरीदने के लिए अपील की। व्यापारी वर्ग के लोग इन्हें पहले से ही जानते थे और इनके कल-उद्योग सम्बन्धी विशेष ज्ञान से भी परिचित थे। अतः इनको इस शुगर मिल के लिए रुपया एकत्र करने मे कुछ भी कठिनाई नहीं पड़ी। बात की बात में दस लाख रुपया एकत्र हो गया और फिर कारखाना लगाने का कार्य चालू कर दिया गया।

आपके पिता को इनकी सफलता देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई, परन्तु वे यह सहन नहीं कर सकते थे कि उनका पुत्र उनसे अलग रहे और उनको दोबारा कारबार सँभालना पड़े। परन्तु उन्होंने अपने पुत्र के आत्म-विश्वास और साहस को देखकर हर एक त्याग स्वीकार किया और उन्होंने भी अपना रुपया अपने पुत्र के संचालित कार्य में लगाया जिसके कारण यह शुगर मिल और भी बड़े रूप में जारी हो सकी।

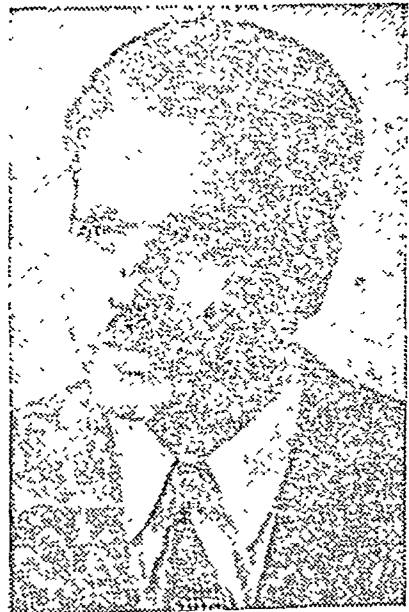
चूँकि श्री मोदी का विचार शुरू से ही एक नगर बसाने का था इसलिए उन्हें आरम्भ से ही उस

सब चीजों के बनाने का ध्यान था जो कि एक शहर के लिए आवश्यक होती हैं। इसलिए कारखाने के साथ ही साथ कर्मचारियों के लिए मकान बनाने का प्रवन्ध भी किया गया जिससे वे सुखी जीवन व्यतीत कर सकें।

इसके कुछ वर्ष बाद श्री मोदी ने यह अनुभव किया कि केवल शुगर फैक्टरी से जो कि साल में कुछ ही महीने चलती है एक औद्योगिक नगर का विकास नहीं हो सकता। इसके लिए तो कई प्रकार के उद्योग एक ही स्थान पर स्थापित करने चाहिए। अतः उन्होंने यहाँ पर वनास्पती (जमा हुआ तेल) जिसको उस समय वैजीटेबिल घी कहते थे, बनाने का कारखाना आरम्भ किया।

तुरन्त ही, सन् १९४० से वनास्पती फैक्ट्री होने के कारण यह आवश्यक समझा गया कि कपड़े धोने का साबुन जो कि वनास्पती का ही उपांश है बनाने का कारखाना भी चालू कर दिया जाय प्रायः भारत में जो नहाने के साबुन बाहर से आते थे उनमें अधिकतर पशुओं की चर्बी का प्रयोग होता था। परन्तु हिन्दू संस्कारों के कारण यह चीज श्री मोदी की रुचि के विरुद्ध थी। इसलिए उन्होंने नए प्रकार के नहाने के साबुन का बनाना आरम्भ किया जिसमें चर्बी के बजाय वनास्पति (जमाया हुआ तेल) प्रयोग में लाया जा सके। उनको इस उद्योग में बहुत सफलता प्राप्त हुई और उनका, यह नये ढंग का साबुन जिसे "प्रीफैक्ट सोप" कहते हैं, थोड़े दिनों में ही सारे भारतवर्ष में प्रसिद्ध हो गया।

कुछ समय के पश्चात् यहाँ का कार्य-भार बढ़ जाने के कारण आपने पंजाब के काम-काज का भार अपने छोटे भाई श्री हरमुख राय मोदी को सौंप दिया। आपके तीसरे भाई श्री केदारनाथ मोदी भी यहाँ आ गए। इन दिनों दूसरा विश्व युद्ध जारी था और फौजियों के लिये सुखाए हुए फल और सब्जियाँ चाहिएँ थीं। इस काम के लिए यहाँ कई फैक्ट्रियाँ चालू करनी पड़ी। परन्तु इनके लिए पूँजी का सवाल था। चूँकि लोगों का यह विश्वास दृढ़ हो गया था कि मोदी उद्योगधन्धों में रुपया लगाना उचित है। इसलिए पर्याप्त धन एकत्र हो गया। इन फैक्ट्रियों की देख-भाल श्री मोदी ने अपने तीसरे भाई श्री केदारनाथमोदी को सौंपी। इन फैक्ट्रियों में फौजियों के लिए खाने की नई-नई वस्तुओं का उत्पादन किया गया।



सेठ केदारनाथ मोदी

मोदीनगर में उद्योग धन्धो की बढ़ती के साथ-साथ रोगियों की चिकित्सा का प्रबन्ध सन् १९४१ में उचित रूप में प्रारम्भ किया गया और एक अस्पताल पुरुषों के लिए और दूसरा स्त्रियों के लिए खोला गया। इन में सुयोग्य और अनुभवी डाक्टरों और स्टाफ का प्रबन्ध किया गया। बढ़ते २ आज यहाँ पर चार अस्पताल हैं। जिन पर करीब एक लाख रुपया सालाना खर्च होता है। मोदीनगर में प्रति-वर्ष आँखों के विशेषज्ञ डाक्टर

बाहर से बुलाये जाते हैं और उस समय आँखों के इलाज के लिए देहात से सैकड़ों नर-नारियाँ आकर आँखों का मुफ्त इलाज कराते हैं।



मोदी हास्पिटल मोदी नगर

तंतपश्चात् यह भी आवश्यक हो गया कि यहाँ पर कर्मचारियों के बच्चों की उचित शिक्षा का प्रबन्ध किया जाय। इसलिए सन् १९४२ में एक हाई-स्कूल लड़कों के लिए, और दूसरा लड़कियों के लिए स्थापित किया गया। फैक्ट्रियों की वृद्धि के साथ-साथ लड़कों का वह स्कूल, कालेज हो गया जिसमें १४०० लड़के शिक्षा पा रहे हैं। कन्या महा विद्यालय में भी ६०० से अधिक लड़कियाँ और छोटे लड़के पढ़ रहे हैं। इन विद्यालयों में कर्म-चारियों के लड़के व लड़कियों को नि शुल्क शिक्षा दी जाती है। इन विद्यालयों का प्रबन्ध मोदी "चेरीटेबिल फंड सोसाइटी" द्वारा होता है। अब तक कालेज, स्कूल और होस्टल की इमारतों पर सोसाइटी ने लगभग आठ लाख रुपया खर्च किया है और इन विद्यालयों का सालाना खर्च लगभग एक लाख रुपया है।

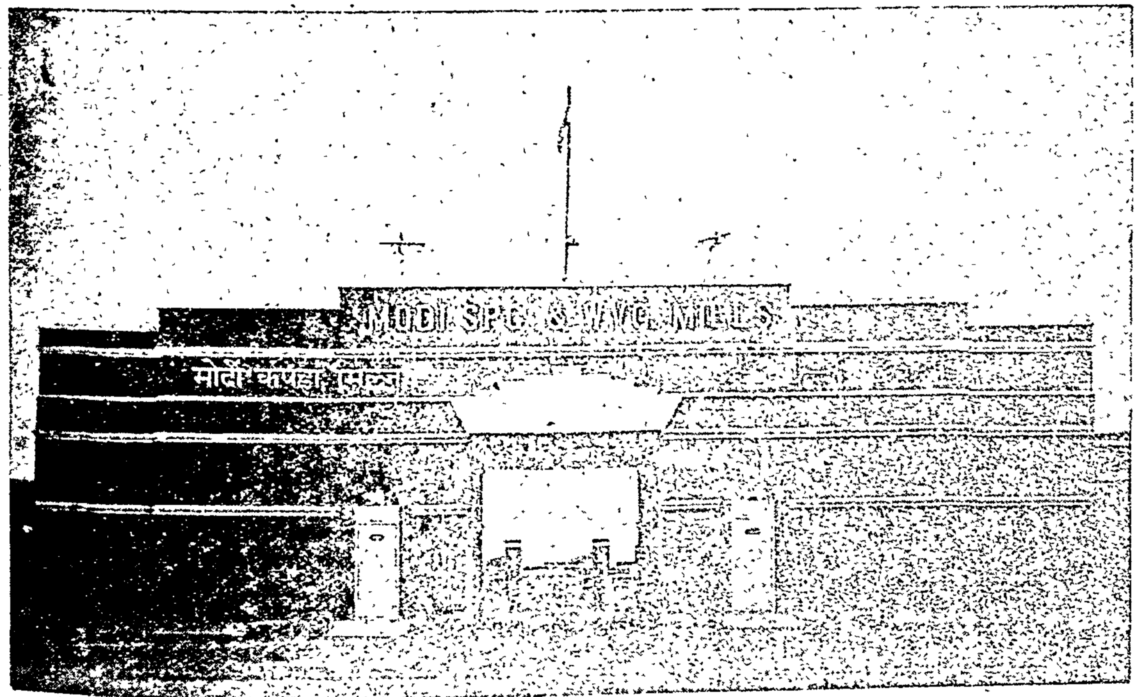
सन् १९४३ में गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया की प्रेरणा से यहाँ पर बिस्कुट बनाने की एक कम्पनी जारी की गई। कुछ महीनों में ही यहाँ के 'एक्मी बिस्कुट' देश भर में प्रसिद्ध हो गये। यहाँ की बिस्कुट फैक्ट्री का यह दावा है कि उसके बिस्कुट बढ़िया से बढ़िया बिस्कुटों से मुकाबला करते हैं, हालांकि इनके बनाने में अंडे या किसी प्रकार की चरबी का प्रयोग नहीं होता और लोगो की धार्मिक भावना का विचार रखा जाता है। इसी प्रकार यहाँ की बनाई हुई मिठाइयाँ (Confectionary) भी शुद्ध तथा उच्च कोटि की हैं।

वनास्पती फैक्ट्री के प्रयोग के लिए शुद्ध तेल की आवश्यकता को देखकर सन् १९४४ में यहाँ पर

तेल मिल खड़ी करने की जरूरत पैदा हुई। इस का कार्य-भार श्री मोदी के चौथे भाई श्री मदन लाल मोदी को सौंपा गया। यह तेल मिल देश भर में अपने प्रकार की सब से बड़ी मिल मानी जाती है। साथ ही साथ रंग-रोगन (Paints Varnish) का काम भी शुरु किया गया। यहाँ के पेंट्स उच्च कोटि के माने गए हैं। अभी तक पेंट्स तथा वारनिश का काम विदेशियों के हाथ में होने का, सिवाय इसके कोई कारण नहीं था कि पुरानी गवर्नमेंट विदेशियों को प्रोत्साहित करती थी। अब आशा है कि अपनी नेशनल गवर्नमेंट हिन्दुस्तानी उद्योग-धन्धों को अवश्य ही प्रोत्साहित करेगी और इसलिये पेंट तथा वारनिश की फैक्ट्रियों का भविष्य अति उज्जवल है।

इसके अगले वर्ष 'गिलेसरीन' फैक्ट्री की स्थापना की गई क्योंकि यह साबुन की सहायक उपज है। इसी तरह मोदी टिन-फैक्ट्री भी चालू की गई ताकि भिन्न भिन्न फैक्ट्रियों को टिन के डिब्बे मिल सकें।

इस समय तक यह एक छोटा सा नया शहर बन चुका था। अतः भारत सरकार ने यह उचित समझा कि इसका नाम 'मोदीनगर' निश्चित करके यहाँ के रेलवे स्टेशन, डाकखाने तथा पुलिस स्टेशन को भी मोदी नगर का नाम दिया जाये।



मोदी स्पीनिंग और विविंग मिल्स मोदी नगर

सन् १९४६ में युद्ध के उत्तर काल के निर्माण (Post War Reconstruction) के सम्बन्ध में कपड़े की कमी को दूर करने के लिए एक नवीन और आधुनिक ढंग की कपड़ा मिल चालू करने का विचार हुआ। ईश्वर की कृपा से मोदी धन्धों ने पब्लिक में बहुत ऊँचा नाम पैदा कर लिया था। इस-लिये पूँजी एकत्रित करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। तीन ही दिन में आम लोगों ने एक करोड़ रुपये के हिस्से खरीद लिए, हालांकि हिस्सेदार कोई बड़े पूँजीपति या उद्योगपति नहीं थे। इस कार्य में ५ हजार से अधिक हिस्सेदारों ने भाग लिया और थोड़ा थोड़ा करके एक करोड़ की रकम एकत्रित हो गई।

सन् १९४९ में एक विशाल कपड़ा मिल जारी हुई जिसमें अमरीका की नई किस्म की बनी हुई मशीनरी लगाई गई। जिसका बना हुआ कपड़ा हिन्दुस्तान के कोने कोने में प्रसिद्ध है। इसी के साथ साथ होजरी तथा बनियान फैक्ट्री भी लगाई गई।

श्री मोदी ने अपने छोटे भाई श्री केदारनाथ मोदी तथा अपने टेकनिकल मैनेजर श्री राजकुमार द्विवेदी को विदेश यात्रा पर भेजा ताकि वे वहाँ देख आवें कि उन देशों में आधुनिक काल में कर्मचारियों के लिये क्या क्या सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

इसी अनुभव के आधार पर मोदीनगर में भी मैनेजमेंट में एक नवीन क्रान्ति आई और १९४७ में श्री हरिहर नाथ शास्त्री के द्वारा एक सम्मिलित बोर्ड की स्थापना हुई जिस में कर्मचारी तथा मिल अधिकारी बैठ कर आपस में प्रेम-भाव से कार्य-पटुता को बढ़ा सकें। उस समय जब कि देश के दूसरे हिस्सों में हड़तालों और झगड़ों की लहर दौड़ रही थी, मोदी नगर में प्रेम-पूर्वक काम जारी था। इसी आधार को लेते हुए यू० पी० सरकार ने भी उस किस्म की योजना प्रचलित की।

सन् ११५० में लालटेन फैक्ट्री की स्थापना हुई जिसकी बनी हुई लालटेन प्रचलित होने से अब विदेशों से लालटेनें आनी बन्द हो गई हैं।

समय की गति के साथ यह भी आवश्यक समझा जाने लगा कि कर्मचारियों को कारखाने की जिम्मेदारियाँ संभालने तथा अपनी योग्यता बढ़ाने का भार बाँटना चाहिये। उत्पादन की जिम्मेदारी में भी उनको मैनेजमेंट का हाथ बटाना चाहिये। इस लिये यहाँ पर प्रायः मैनेजिंग-डाइरेक्टर और कर्मचारियों की सम्मिलित मीटिंग्स् होती हैं जिन में कारखाने के काम काज के बारे में विचार विनिमय होता है।

कर्मचारियों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाता है। बाकायदा खेलकूद तथा टूर्नामेंट होते हैं। वार्षिक उत्सवों पर इनाम बाँटे जाते हैं। कर्मचारियों के लिए आधुनिक ढंग की बढ़िया क्लब बनाई गई हैं। लाइब्रेरी में पुस्तकें तथा अखबार पढ़ने को मिलते हैं।

सन् १९४७ के देश-विभाजन (Partition) से जो हजारों पुरुषार्थी यहाँ आये, उनके लिए सेंट्रल गवर्नमेंट तथा प्रान्तीय सरकार ने मोदी-इण्डस्ट्रीज की सेवायें प्राप्त कीं, जिनके द्वारा शरणार्थियों की एक खास बस्ती का निर्माण हुआ। यह बस्ती औद्योगिक दृष्टि को सामने रखते हुए स्थापित की गई ताकि यहाँ पर छोटे छोटे उद्योग-धन्धों के लिए, मोदी नगर के समीप होने का लाभ प्राप्त हो सके। इस बस्ती की, स्थापना सन् १९४९ में पं० गोविन्द वल्लभ पन्त के करकमलों द्वारा हुई और इस का नाम 'गोविन्दपुरी रक्खा गया। यहाँ पर शरणार्थियों को मकान १५ साल की किश्तों पर मिलते हैं। दो ही वर्ष में यहाँ पर १२०० घर आबाद हो गये हैं। यहाँ पर छोटी छोटी २ इण्डस्ट्रीज जैसे ताले, एलोक्ट्रोप्लेटिंग, बटन, ऐनक, हैण्डलूम, फाउंटेन-पेन इत्यादि की चालू हो गई हैं। यहाँ पर अलग डाकखाना, पुलिस चौकी अस्पताल और प्राइमरी स्कूल भी बन गये हैं। इसके अतिरिक्त गवर्नमेंट की ओर से एक टेकनिकल स्कूल भी जारी है जिस में शरणार्थी लड़के, लड़कियाँ छात्रवृत्ति पाते हैं और काम सीखते हैं।

श्री गूजरमल मोदी को इन शरणार्थी कारखानों में अपनी फैक्टरियों से भी अधिक स्नेह है और वह प्रति दिन इस नई बस्ती के निवासियों को उत्साहित करते हैं जिससे कि वे अपने जीवन को सुखी व समृद्ध बना सकें।

श्री मोदी कीसोदा यही आकाँक्षा रही है कि मोदीनगर एक विशाल नगर हो जहाँ पर सब सुखी हों। कोई बेरोजगार न हो और किसी को कोई कष्ट न हो तथा मोदीनगर निवासियों का सदा ईश्वर में विश्वास रहे।

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



भारत की औद्योगिक प्रतिभाएं

Industrial Magnates of India



बागला उद्योग प्रतिष्ठान

कानपुर — बम्बई

बागला उद्योग प्रतिष्ठान

कानपूर—बम्बई

भारतवर्ष के प्रगतिशील और लब्ध प्रतिष्ठित औद्योगिक प्रतिष्ठानों में कानपूर का "बागला उद्योग प्रतिष्ठान" भी अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

कानपूर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी सेठ रामेश्वर प्रसाद बागला और सेठ हरिशङ्कर बागला ने उस समय के सुप्रसिद्ध अंग्रेज उद्योगपति सर हेनरी हार्समैन के तत्वावधान में औद्योगिक शिक्षा प्राप्त कर औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश किया।

औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश करने के साथही दोनों बागला बन्धुओं की व्यवसायिक प्रतिभा अनुकूल क्षेत्र को पाकर चमक उठी और सिर्फ बीस वर्ष के अल्प समय में ही बागला औद्योगिक प्रतिष्ठान समस्त भारत में एक विराट् औद्योगिक प्रतिष्ठान हो गया जिसमें आज करीब २५००० मजदूर और कर्मचारी प्रतिदिन काम कर रहे हैं।

मजदूरों के प्रति बागला बन्धुओं का व्यवहार अत्यन्त उदार और सौम्य है, वे उन लोगों को अपने परिवार के व्यक्तियों की तरह समझते हैं और उनकी सुख, सुविधा का पूरा २ ध्यान रखते हैं। इसी प्रकार मजदूर भी इन पर अपनी पूरी श्रद्धा रखते हैं। परिणाम स्वरूप पारस्परिक सद्भावना के वातावरण में प्रतिष्ठान का काम चल रहा है।

श्री हरिशङ्कर बागलाके बड़े पुत्र श्री सत्यनारयण बागला एम० ए० एल० एल० बी० समग्र यूनिवर्सिटी में प्रथम स्थान से उत्तीर्ण होकर अब पूरी दिलचस्पी से प्रतिष्ठान का कार्य्य संचालन कर रहे हैं। इस छोटी आयु में ही इस विशाल औद्योगिक प्रतिष्ठान के सचालन में आपने प्रखर बुद्धि का परिचय दिया है।

बागला उद्योग प्रतिष्ठान

भारत का एक विशाल उद्योग प्रतिष्ठान

भारत के औद्योगिक विकास में भारतवर्ष के जिन इने गिने उद्योगपतियों ने अपनी ठोस सेवाएं अर्पित की हैं उनमें कानपुर का बागला परिवार भी अपना एक महत्व पूर्ण स्थान रखता है।

पूर्व इतिहास

इस परिवार का आदि निवासस्थान राजस्थान प्रान्त के चूरू नामक स्थान का है। इस परिवार के सेठ गंगाधर बागला सबसे पहले व्यवसाय के निमित्त चूरू को छोड़कर यू० पी० के फर्रुखाबाद नामक ऐतिहासिक शहर में आज से करीब सौ वर्ष पूर्व आये। इस नगर में आकर बसने वाले आप पहले मारवाड़ी व्यापारी थे। यहां आकर आपने कपड़े और गल्ले का व्यापार प्रारम्भ किया।

सन् १८५७ में सेठ गंगाधर बागला फर्रुखाबाद से कानपुर आये और यहां आकर आपने गंगाधर केदारनाथ के नाम से व्यापारप्रारम्भ किया, यही नाम आगे जाकर गंगाधर बैजनाथ के रूप में परिवर्तित हो गया। जोकि आज कानपुर की एक प्रमुख फर्म है।

सेठ गंगाधर बागला के सेठ बैजनाथ और सेठ मदीलाल नामक दो पुत्र हुए। इनमें से सेठ बैजनाथ बागला का देहान्त कम आयु में ही हो गया। सेठ बैजनाथ बागला के सेठ गणेशी लाल बागला नामक एक पुत्र हुए।

सेठ मदीलाल बागला के एक पुत्र सेठ दीनानाथ बागला हुए। सेठ गंगाधर बागला ने अपनी वृद्धावस्था के कारण फर्म का सारा कारबार अपने पौत्र सेठ दीनानाथ बागला के जिम्मे कर दिया।

सेठ दीनानाथ बागला उस समय के एक माने हुए समाज सेवी और सार्वजनिक स्प्रिट के व्यवसायी थे। अपने व्यवसाय की उन्नति के सम्बन्ध में भी इनका दृष्टिकोण महत्वाकांक्षाओं से ओत प्रोत था इन्होंने स्वदेशी कॉटन मिल्स, कानपुर कॉटन मिल्स तथा अहमदाबाद के कई मिलों की एजेन्सियां लीं ये बड़े राष्ट्रीय विचारों के और श्रीमती एनी बीसेन्ट के होमरुल आन्दोलन में दिलचस्पी रखने वाले व्यक्ति थे। कानपुर के व्यापारिक समाज में आपने बहुत नाम कमाया। समाज की धार्मिक और शिक्षा सम्बन्धी उन्नति में आप हमेशा प्रमुख भाग लेते रहे। बीस वर्षों तक आप यहाँ के म्यू०कमिश्नर रहे। अपर इण्डिया चेम्बर ऑफ कॉमर्स और यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के संस्थापकों में आप भी एक प्रमुख व्यक्ति थे। मारवाड़ी विद्यालय (इस समय का मारवाड़ी इण्टर कालेज) और सनातन धर्म कामर्शियल कालेज कानपूर की स्थापना में भी आपने प्रमुख भाग लिया था। अपने जीवन काल में आप कितनी ही संस्थाओं के सभापति भी रहे थे।

सेठ गंगाधर बागला का स्वर्गवास संवत् १९७३ में, सेठ मदीलाल बागला का संवत् १९७४ में और सेठ दीनानाथ का बागला का स्वर्गवास संवत् १९७४ में हो गया।

रायबहादुर रामेश्वर प्रसाद बागला

सेठ दीनानाथ बागला के सेठ रामेश्वरप्रसाद बागला और सेठ हरिशङ्कर बागला नामक दो पुत्र हुए।

सेठ रामेश्वर प्रसाद बागला का जन्म सन् १९०४ में हुआ। आप इस परिवार में बड़े तेजस्वी, प्रतिभासम्पन्न और व्यवसाय कुशल व्यक्ति हैं। इस परिवार को औद्योगिक क्षेत्र में प्रविष्ट करने का श्रेय आपही को है। अपने पिता की मृत्यु के समय आपकी आयु केवल चौदह साल की थी। इतनी कम उम्र में पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण कुटुम्ब और व्यवसाय की सारी जवाबदारी आपके ऊपर आ पड़ी।

इस आकस्मिक जवाबदारी के कारण आपको स्कूल की पढ़ाई छोड़कर अपनी सारी शक्तियां अपने पिता के द्वारा छोड़े हुए व्यवसाय को सम्हालने में लगानी पड़ी।

इनकी फर्म मेसर्स गगाधर बैजनाथ के पास उस समय समस्त भारत में सुप्रसिद्ध स्वदेशी कॉटन मिल की सोल सेलिंग एजन्सी थी। आपको उस मिल के सर हेनरी हार्समेन के संरक्षण में सूती मिल व्यवसाय की शिक्षा विशेष कर स्पिनिंग सम्बन्धी शिक्षा ग्रहण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सर हेनरी हार्समेन का महत्वपूर्ण शिक्षण पाकर श्री रामेश्वर प्रसाद बागला की महत्वाकांक्षा औद्योगिक जगत में प्रवेष करने की ओर बढ़ी और क्रमशः इस क्षेत्र में बढ़ते २ आपने बागला ग्रूप को भारत वर्ष का प्रथम श्रेणी का औद्योगिक ग्रूप बना दिया।

सन् १९३६ में आपने श्री माहेश्वरी देवी जूट मिल्स की कानपुर मे स्थापना की और सन् १९४२ मे कुछ दूसरे लोगों के साथ बम्बई के सुप्रसिद्ध उद्योगपति सर विक्टर सासूनसे इण्डिया यूनाइटेड मिल्स" का कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट खरीद लिया जो कि सारे एशिया में सबसे बड़ा सूती मिल समूह है। कुछ दूसरे हिस्सेदारों के साथ अग्रवाल एण्ड को० के नाम से उसकी मैनेजिंग एजेन्सी ले ली।

सन् १९५० में आपने म्योर मिल्स कानपुर के कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट खरीद लिये।

दी अमर इण्डिया कोल्डस्टोरेज लि० भी एक दूसरा कन्सर्न है जिसको श्री रामेश्वर प्रसाद बागला ने अपने दूसरे साथियों के साथ ले लिया।

इस प्रकार औद्योगिक और व्यवसायिक क्षेत्र में श्री रामेश्वरप्रसाद बागला ने सम्पूर्ण भारत वर्ष में एक प्रमुख स्थान ग्रहण कर लिया है।

श्री रामेश्वर प्रसाद बागला बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स इण्डिया यूनाइटेड मिल्स, दी कल्यान मिल्स लि० और दी म्योर मिल्स कम्पनी लि० के चेयरमैन हैं।

आपने कई बार यूरोप और अमेरिका की यात्राएं कीं और हर बार वहां से विशिष्ट औद्योगिक ज्ञान प्राप्त कर वापस आये हैं।

श्री रामेश्वर प्रसाद बागला सामाजिक और सार्वजनिक जीवन में भी बहुत लोकप्रिय हैं। आप कई व्यापारिक और औद्योगिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। जब आप सिर्फ १८ वर्ष के थे उसी समय मारवाड़ी समाज की तरफ से म्यू० बोर्ड के मेंबर चुने गये थे और दस साल तक उस स्थान पर रहे थे। बाद में आप म्यू० बोर्ड के चेअरमैन भी चुने गये। इस स्थान पर आप सन् १६४० से ४३ तक रहे। केवल २६ वर्ष की अवस्था में सन् १६३१ में कौन्सिल आफ स्टेट्स के मेम्बर चुने गये और सन् १६३६ तक वहां रहे। यू० पी० चेम्बर आफ कामर्स के आप सन् १९३१ से ४० तक ऑनरेरी सेक्रेटरी रहे और सन् ४० से ४५ तक आप उसके प्रेसिडेण्ट रहे। आप फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज तथा अपर इण्डिया चेम्बर आफ कामर्स की कमेटी के कई वर्षों तक मेम्बर रहे।

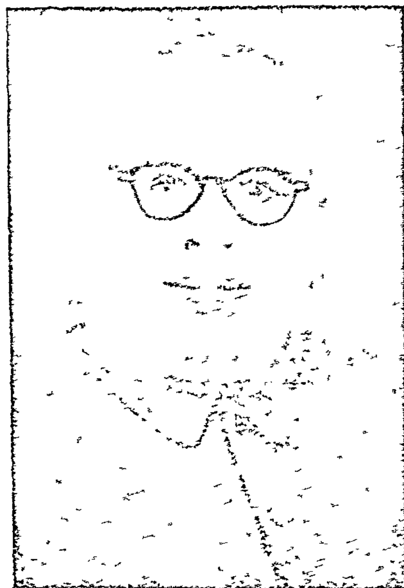
गवर्नमेंन्ट सर्कल में भी आपकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी हुई रही। सन् १९४८ में आप अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन (I. L. O.) के दूसरे सेशन में इम्प्लायर्स डेलीगेशन के अन्दर मेम्बर होकर जेनेवा गये थे।

आप कई वर्षों तक बी० एन० एस० डी० कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी के चेअरमैन तथा मारवाड़ी इण्टर मीजिएट कालेज के वाईस प्रेसिडेण्ट रहे। बी० एन० एस० डी० कालेज की मैनेजिंग कमेटी के आप लाइफ मैम्बर हैं आप हमेशा राष्ट्रीय विचार धारा के व्यक्ति रहे हैं।

सेठ हरिशङ्कर बागला

सेठ हरिशङ्कर बागला श्री दीनानाथ बागला के द्वितीय पुत्र है। आपका जन्म सन् १६०८ में हुआ। जिस समय आप केवल दस वर्ष के थे उसी समय अर्थात् १६१८ में आपके पिता श्री दीनानाथ बागला का स्वर्गवास हो गया। अतः इस छोटी उम्र में ही आपके ऊपर बहुत सी जिम्मेदारियां आ गईं।

सेठ हरिशङ्कर बागला की प्रारम्भिक शिक्षा मारवाड़ी स्कूल में प्रारम्भ हुई। उसके पश्चात आपने श्रीमती एनीबीसेण्ट की थियासोफिकल सोसायटी द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज में पढ़ना प्रारम्भ किया। इस स्कूलमें उन दिनों हिन्दुस्थान के प्रसिद्ध विद्वान श्री परांजपे महोदय पढ़ाते थे। उन्हीं के संरक्षण में श्री हरिशङ्कर बागला का अध्ययन हुआ। उन दिनों में यही एक स्कूल ऐसा था जिसका दृष्टिकोण सर्वतो भावेण राष्ट्रीय था। इसी स्कूल के सम्पर्क में आने से श्री हरिशङ्कर बागला का दृष्टिकोण भी एकदम राष्ट्रीय हो गया और वे देश में होनेवाली सभी राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में आप दिलचस्पी रखने लगे।



सेठ हरिशङ्कर बागला कानपुर

मगर दूसरी ओर फर्म के व्यवसाय का काम भी आपको देखना पड़ता था और उसका भार इतना था कि आपको शीघ्रही स्कूल छोड़ देना पड़ा। स्कूल छोड़ने का एक और कारण यह भी था कि उन दिनों सोलह वर्ष से कम उम्र के विद्यार्थी मैट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित नहीं किये जाते थे और भी हरिशङ्कर बागला जब मैट्रिक में पहुँचे तब केवल चौदह साल के थे। दो वर्ष तक इन्तिजार करना इनके लिए असम्भव था और यह भी एक कारण था कि इनको स्कूल छोड़ना पड़ा। फिर भी प्राइवेट विद्यार्थी की तौर पर इन्होंने उस स्कूल से सम्पर्क बनाये रक्खा।

यह स्कूल सारे भारत वर्ष में पहला स्कूल था जिसने अपने यहां के विद्यार्थियों को स्काउटिंग की तालीम देना प्रारम्भ किया और श्री हरिशङ्कर बागला इस स्कूल में स्काउटिंग की पहली बेच में ही शामिल हो गये। शुरू से ही आप राष्ट्रीय भावनाओं के समर्थक रहे हैं,

व्यवसायिक और औद्योगिक क्षेत्र में भी आपने काफी प्रतिष्ठा तथा योग्यता का परिचय दिया है। अपने पिता के द्वारा छोड़े हुए व्यवसाय को आपने अपने बड़े भ्राता श्री रामेश्वर प्रसाद बागला के सहयोग से उन्नति की सीमा पर पहुंचा दिया है। आपकी फर्म मेसर्स गंगाधर बैजनाथ उत्तर हिन्दुस्थान के नामाङ्कित स्वदेशी कटान मिल्स लिमिटेड की सोल सेलिंग एजण्ट थी। इसी सिलसिले में आपको प्रसिद्ध इण्डस्ट्रीयल मेगनेट सर हैनरी हार्समेन के तत्वावधान में औद्योगिक शिक्षण लेने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। इस सुअवसर से आपकी व्यापारिक प्रतिभा चमक उठी। जिसके बल पर श्री हरिशङ्कर बागला ने अपनी फर्म की उन्नति में बहुत हाथ बटाया।

इस प्रकार क्रमशः बढ़ते हुए सन १९३६ से आपने औद्योगिक जगत् में क्रियात्मक रूप से प्रवेश किया और कानपुर में श्री माहेश्वरी देवी जूट मिल्स की स्थापना की और धीरे २ आगे बढ़ते हुए भारत के औद्योगिक जगत् में आपने विशिष्ट स्थान प्राप्त कर लिया और आपका मिल समूह "बागला ग्रूप" के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

जैसा कि ऊपर श्री रामेश्वर प्रसाद बागला के परिचय में लिख आये हैं सन् १९४२ में आपने एशिया के सबसे बड़े मिल समूह "इण्डिया यूनाइटेड मिल्स" का कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट सर विक्टर सासून के परिवार से खरीद लिया। इसी प्रकार इस मिल समूह के मैनेजिंग एजण्ट मेसर्स अग्रवाल एण्ड को० में भी आप पार्टनर हो गये।

सन् १९५० में आपने म्योर मिल्स कम्पनी लि० के कण्ट्रोलिंग इण्ट्रेस्ट खरीद लिये। अपर इण्डिया कोल्डस्टोरेज नामक एक दूसरा कन्सर्न भी आपने अपने दूसरे सहयोगियों के साथ ले लिया। इस प्रकार बागला परिवार उत्तर भारत का एक इण्डस्ट्रीयल मेगनेट हो गया।

श्री हरिशङ्कर बागला सामाजिक और सार्वजनिक क्षेत्र में भी बहुत लोकप्रिय हैं। आप भारत वर्ष की कई औद्योगिक और व्यवसायिक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं।

कई वर्षों तक आप फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स और इण्डस्ट्रीज की कमेटी के मेम्बर रहे। दी अपर इण्डिया चेम्बर ऑफ कॉमर्स और दी यू० पी० चेम्बर ऑफ कामर्स के भी आप कई वर्षों तक मेम्बर रहे। इस संस्थाके कई वर्षों तक आप प्रेसिडेण्ट भी रहे। इसी प्रकार ऑल इण्डिया आर्गेनिजेशन ऑफ इण्डस्ट्रीयल इम्प्लायर्स न्यूदेहली की एक्जीक्यूटिव कमेटी के मेम्बर और उसके ऑनरेरी ट्रेझरर भी रहे। कानपूर के म्यू० बोर्ड और इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के भी आप कई वर्षों तक मेम्बर रहे। यू० पी० के बदनाम गवर्नर सर हैलेट की सरकार ने आपको कुछ साधारण कारणों पर म्यू० बोर्ड से अलग करा दिया था। सेठ हरिशङ्कर बागला हैलट शाही के इस अन्याय के खिलाफ कोर्ट में लड़े। कोर्ट ने भी हरिशङ्कर बागला के दावे को स्वीकार किया। आगे जाकर श्री हरिशङ्कर बागला उसी गवर्नमेंट के द्वारा कानपूर डेवलपमेंट बोर्ड में मनोनीत किये गये।

श्री हरिशङ्कर बागला बी० एन० एस० डी० कॉलेज की मैनेजिंग कमेटी के सदस्य और मारवाड़ी औषधालय के प्रेसिडेण्ट हैं। इसी प्रकार और कई धार्मिक और शिक्षण संस्थाओं से आप सम्बन्धित हैं इसी प्रकार यू० पी० मारवाड़ी सम्मेलन के आप कई वर्षों से प्रेसिडेण्ट हैं और समाजोन्नति के कार्यों में भाग लेते रहते हैं।

श्री हरिशङ्कर बागला कुछ समय पूर्व सपत्नीक संसार भ्रमण के लिये गये थे। आप जब संसार भ्रमण से वापस लौटकर आये थे तक मिल के करीब हजारों आदमी स्टेशन पर इनका स्वागत करने के लिए गये थे हरएक के हाथ में मालाएं थीं। सबने एक स्वर से श्री हरिशङ्कर बागला की जय बोली। बागला जी अपने चपरासी तक से गले मिले थे। इससे पता चलता है कि मिल के मजदूरों के प्रति बागला बन्धुओं का व्यवहार अत्यन्त उदार है और मिल के मजदूर और कर्मचारी इनसे बड़े सन्तुष्ट हैं।

श्री सत्यनाराण बागला

श्री सत्यनारायण बागला श्री हरिशंकर बागला के बड़े पुत्र हैं। आपका जन्म सन् १९२७ में हुआ। आपका विद्यार्थी-जीवन का केरियर अत्यन्त उच्च कोटि का रहा है। एम. ए. और एल. एल. बी. की परीक्षाओं में आप ने समग्र यूनिवर्सिटी में प्रथम पोजिशन प्राप्त की थी इसी प्रकार बी० ए० की परीक्षा में मैथेमेटिक्स के अन्दर सर्वोच्च नम्बर प्राप्त किए थे। आप इस प्रान्त में पहले मारवाड़ी नवयुवक हैं जिन्होंने उच्च परीक्षाओं में इतना बेजोड़ रेकार्ड कायम किया।

शिक्षा समाप्त करके आपने बागला ग्रूप के विस्तृत उद्योग में प्रवेश किया और उसके अन्दर भी आप अत्यन्त तत्परता के साथ इस विशाल उद्योग का संचालन कर रहे हैं।

श्री सत्यनारायण बागला कई वर्षों तक यू० पी० चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सेक्रेटरी रहे और अब उसके वाईस प्रेसिडेण्ट है। यू० पी० की टेलीग्राफ और टेलीफोन एडवाइजरी कमेटी के भी आप सम्माननीय सदस्य रह चुके है।

रीजनल रेलवे यूजर्स कन्सलटेटिव कमेटी भी आप सदस्य हैं।

इसके अतिरिक्त विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज और गवर्नमेंट टैक्स टाईल इन्स्टीट्यूट की कार्य्य कारिणी के मेम्बर तथा यूनियन क्लब के प्रेसिडेण्ट और गेंजेजक्लब की कार्य्य कारिणी के सदस्य हैं।

श्रीसत्यनारायण बागला के अर्थ शास्त्र सम्बन्धी लेख और विचार बड़े महत्व पूर्ण होते हैं।



श्री सत्यनारायण बागला

सिर्फ २६ वर्ष की छोटी आयु में ही आप बागला ग्रूप के विशाल उद्योग का सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।

बागला उद्योग समूह से सम्बन्धित प्रतिष्ठान

मैनेजिंग एजन्सीज--

मेसर्स गंगाधर बैजनाथ जूट डिपार्टमेंट कानपुर
मेसर्स अग्रवाल कम्पनी बम्बई
मेसर्स इण्डियन टैक्स टाइल्स सिण्डीकेट लि० टालीगंज कलकत्ता
मेसर्स कानपुर इण्डस्ट्रियल डेवलप मेंट लि० कानपुर
मेसर्स फैक्टरीज लि० टालीगंज कलकत्ता
मेसर्स बागला ब्रदर्स लि० कानपुर

सेलिंग आर्गेनिजेशन—बागला ब्रदर्स लि० कानपुर।

शेअर डिपार्ट मेंन्ट—

बागला ब्रदर्स लि० कानपुर

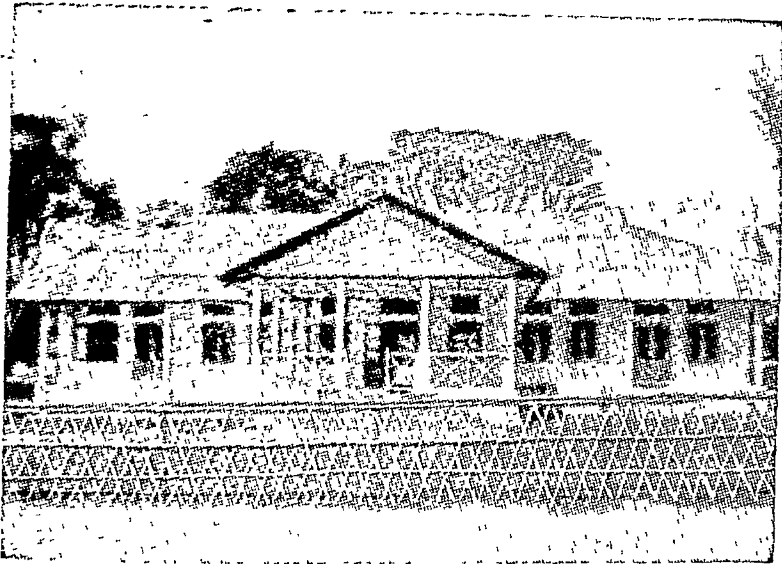
मिल्स एण्ड फैक्टरीज—

दी म्योर मिल्स कम्पनी लि० (टैक्स टाइल मिल) कानपुर
दी इण्डिया यूनाइटेड मिल्स बम्बई
दी माहेश्वरी देवी जूट मिल्स लि० कानपुर
कोल्ड स्टोरेज लि०

बागला उद्योग समूह के करीब २५००० मजदूर और कर्मचारी प्रतिदिन काम करते हैं।

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



डिब्रूगढ़ हनुमानबक्ष सूरजमल पुलिस क्लब

भारतीय चाय उद्योग में क्रान्तिकारी उन्नति करनेवाले उद्योगपति



रायसाहब श्रीहनुमान बक्स कनोई

(आपके गणेश बाड़ी टी इस्टेट की पैदावार प्रति एकड़ तीस मन है जो सभी बगीचों के उत्पादन से अधिक है।)

मेसर्स हनुमानबक्स सूरजमल कनोई कलकत्ता

आज से प्रायः ६०-६५ वर्ष पूर्व उन्नीसवीं शताब्दी के शेष दशाब्द में श्री गणेशदास कनोई-अपने जन्म स्थान सुजानगढ़ (राजस्थान) से चलकर डिब्रूगढ़ आये थे। घर की अवस्था साधारण होते हुए भी आप व्यापार-व्यवसाय में दिलचस्पी रखते थे। अपनी छोटी सी पूंजी एवं अपने लोकप्रिय स्वभाव की सहायता से इन्होंने डिब्रूगढ़ के पास डिकम निकटस्थ मोकलबाडी चायबगान में एक गल्ले कपड़े की दुकान स्थापित की। धीरे धीरे बगीचे के मैनेजर एवं अन्यान्य व्यवसायी लोगों पर इनकी सचाई एवं इमानदारी की अच्छी पैंठ जम गई और वे बगीचे को हुंडी देने लग गये। यहाँ का काम जमने पर ये अपने परिवार को भी यहाँ पर ले आये तथा अपने दोनों बड़े लड़कों को—श्री हनुमानबक्स कनोई एवं श्री सूरजमल कनोई—उस काम का अनुभव कराने लगे। "होनहार बिरवान के होत चिकने पात" वाली कहावत के अनुसार ये दोनों भाई श्री गणेशदास जी के जीवन-काल में ही कार्य संभालने लगे।

श्रीगणेशदास जी बहुत संयमी, मितव्ययी एवं धर्मात्मा स्वभाव के पुरुष थे; भगवत्भजन के बहुत प्रेमी थे—ये सब गुण उनके दोनों ज्येष्ठ सुपुत्रों को भी वारसाना तौर पर उनसे प्राप्त हुए। अतः श्री गणेश दास के देहान्त के बाद जब गृहस्थी का भार इन दोनों भाइयों के कंधे पर आया तो इन दोनों भाइयों ने उसको बहुत योग्यता एवं सफलता पूर्वक उठा लिया।

रायसाहब हनुमान बक्स कनोई—आपका जन्म संवत् १६४२ में सुजानगढ़ में हुआ था। आप १२-१३ वर्ष की उम्र में ही अपने पिता जी के पास आसाम आ गये थे। आप बाल्यकाल से ही बहुत परिश्रमी एवं प्रगतिशील थे। दुकान के काम की शिक्षा पिताजी से लेने के बाद भी आप की आकांक्षा तृप्त नहीं हुई, वरंच आपमें एक बड़े उद्योगपति के अंकुर प्रस्फुटित होने लगे। दुकानदारी का काम तो श्री सूरजमल कनोई संभाल लेते थे अतः आपका मनोयोग चाय-उद्योग पर अग्रसर होने लगा। चाय बगीचे में होनेवाली सकल क्रियाओं को ये सूक्ष्म दृष्टि से देखते रहते थे एवं मनन करते थे तथा बगीचों के मैनेजर एवं अन्यान्य कर्मचारियों से बातचीत करते थे। इसी संस्कार से इनके मन में एक चाय बगीचा लगाने का स्वप्न जाग्रत हुआ। इन्होंने एक चाय गुटी बाड़ी (Seed garden) भी लगायी थी। १६२०-२१ के आस पास मोकल बाड़ी से २-३ मील दूर पर ही इन्होंने कुछ जंगल भूमि खरीद ली। १६२५ ई० में इन्होंने इसी भूमि में चाय बगीचा लगाना आरंभ कर दिया। अपने पिताजी की पुण्य स्मृति को सदा हरा-भरा रखने के उद्देश्य से इन्होंने इस बगीचे का नाम 'गणेश बाड़ी' टी० इस्टेट रक्खा। १६३० में यह बगीचा प्रायः २०० एकड़ लग चुका था एवं दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा था। इसकी उपज एवं (Quality) भी बहुत अच्छी होने लगी। पार्श्ववर्ती अंग्रेज कम्पनियों के बगीचों को भी इनका उत्कर्ष एवं विकास देखकर इर्षा होने लगी। १६३२ की Tea Crisis में बहुत से चायबागान संकट ग्रस्त हो

गये थे किन्तु ये उस संकटकाल को भी सफलतापूर्वक पार कर गये। इस बीच में आपका परिवार बहुत बड़ा हो चुका था एवं गृहस्थी का खर्चा भी बहुत बढ़ गया था, अतः बगीचे के काम में द्रव्य की कमी से कुछ समय तक बाधायें हुईं किन्तु "God helps them who help them selves" की कहावत के अनुसार ये आगे बढ़ते गये। गणेश बाड़ी बगीचे में इनकी सूझ, संभाल एवं कार्य-अध्यवसाय के कारण अच्छा लाभ होने लगा। इनकी इतनी बड़ी उन्नति को देखकर अन्यान्य बगीचों के मालिक आप से परामर्श लेने लग गये थे। १६३२ से ही आप ४-५ बगीचों की संभार करने लग गये थे। इस प्रकार करते-करते द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हो गया। इस महायुद्ध के समय में गवर्नमेंट की सेना का अड्डा आपके बगान में ही कायम हुआ तथा बम्ब भी गिरते रहे किन्तु ये वशिष्ठजी के दंड की भांति अविचल एवं अक्षुण्ण रहे। इनके धैर्य एवं शौर्य से उत्साहित होकर इनके कर्मचारी व श्रमिक लोग भी वहीं पर टिके रहें।

युद्धकाल में आसाम प्रांत में व्यापार भी अच्छा चला एवं आपकी लोकप्रियता एवं आपके कनिष्ठ भ्राता की व्यापार कुशलता से इनको अच्छा लाभ हुआ।

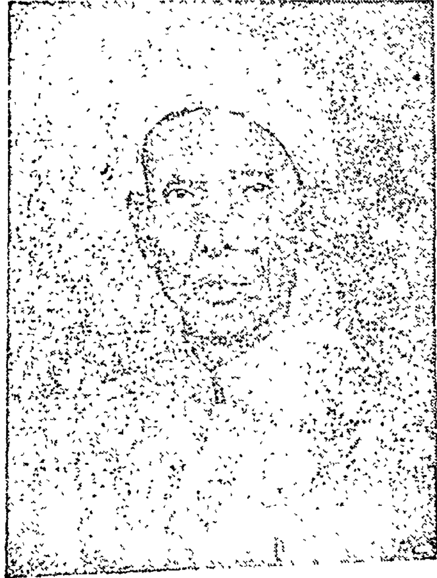
इनकी महत्वाकांक्षा एवं गृहस्थी का नियोजन एक बगीचे से पूरा नहीं होता था अतः १६४७ ई० में इन्होंने टीटा डमरू (Tita Damaroo T. F.) बगीचा खरीद लिया एवं अपनी धर्मपत्नी की स्मृति अमर एवं अक्षुण्ण रखने के लिए इन्होंने इसका नाम 'मनोहरी टी इस्टेट" रक्खा। १६४६ में इन्होंने मोकलबाड़ी बगीचा खरीद लिया। यह भी श्री हनुमानबक्स कनोई की एक बहुत बड़ी विजय थी। जिस बगीचे में ये एक साधारण दुकानदार की हैसियत से रहते थे उसी बगीचे के पूर्णांश में मालिक हो जाना इन्हीं की प्रतिभा का प्रभाव था। इसके बाद १६५० ई० में इन्होंने रंग-लीटिंग Rungliting बगान भी खरीद लिया। १६५२ के चाय संकट में बहुत से बगान डगमगा गये थे किन्तु इन्होंने सभी बगीचों में लाभ ही किया। १६५३ में इन्होने Ubbotajan gam T. E. बगीचा ले लिया और उसका नाम श्री कृष्ण टी० स्टेट रखा। इस प्रकार १६४७ से लेकर १६५३ तक इन्होंने ५ बगान कर लिये। इन सब बगीचों में कुल मिलाकर ४५ हजार मन चाय प्रति वर्ष होती है। गणेशबाड़ी बागान की उपज का औसत ३० मन प्रति एकड़ होता है जिसका मुकाबला अभी तक कोई भी अंग्रेजी व देशी बगान नहीं कर पाया है। चाय उद्योगपति की हैसियत से जितनी उन्नति श्री हनुमान बक्स ने गत ७ वर्षों में की है वैसी उन्नति आज तक किसी ने शायद ही की हो।

चाय उद्योग में इतनी लगन होते हुए भी आप पूजा पाठ एवं धार्मिक ग्रन्थावलोकन में अच्छा समय लगाते हैं। आप बड़े शिक्षा प्रेमी हैं—आपके ७ लड़के एवं २ लड़कियाँ हैं। आप की धर्मपत्नी का देहान्त १९३४ में हो गया था। उनकी समाधि पर आपने मन्दिर एवं एक पाठशाला स्थापित कर दी है। आप भगवतप्रेमी हैं एवं बराबर लोकोत्तर कल्याण के लिए यज्ञादि करते रहते हैं।

इतना व्यस्त कार्य भार होने पर भी आप पब्लिक कामों में बहुत बड़ा सहयोग देते हैं। डिब्रूगढ़ में एक कालेज की स्थापना करके आप वहाँ के क्षेत्र में एवं युवक वृन्द में अमर हो गये हैं। बच्चा बच्चा आपको जान गया है। आप की आयु इस समय ६९ वर्ष की है, मगर अब भी आप अथक परिश्रम करते हैं और कई बगीचों का निरीक्षण करते हैं। आपके सातों पुत्र सुयोग्य आज्ञाकारी एवं प्रगतिशील हैं और बगीचों का काम संभालते हैं। आपको अंग्रेज गवर्नमेंट ने राय साहिब की पदवी से विभूषित किया है।

श्री सूरजमल कनोई

आप श्री गणेशदास कनोई के द्वितीय पुत्र हैं एवं रायसाहिब के कनिष्ठ भ्राता हैं। रायसाहिब के प्रति इनका प्रेम व श्रद्धा अटूट है इनकी कार्यक्षमता, दक्षता एवं शौर्य बहुत बढ़ा हुआ है। व्यापार में इन्होंने अच्छा धन उपार्जन किया है। इन्हीं की व्यापार कुशलता से संतुष्ट होकर दुकान एवं व्यापार का भार इनपर छोड़कर रायसाहिब, स्वयं चाय-उद्योग के विकास में लग गये। आप राय साहिब की इच्छाओं का बड़ा ध्यान रखते हैं यह कहा जा सकता है गृहस्थ संचालन और व्यापार में राय-साहिब मस्तिष्क हैं तो आप हृदय हैं।



श्री सुरजमल कनोई

"सरल स्वभाव न मन कुटिलाई" वाली कहावत इनपर चरितार्थ होती है। इस गुणने इनके इतने बड़े कुटुम्ब को अभेद्य अक्षुण्ण एवं आदर्श गृहस्थ बना रखा है। इतनी बड़ी उन्नति होनेपर भी इनको अभिमान ने नहीं छुआ है। आप बहुत आस्तिक, मितव्ययी एवं धर्मनिष्ठ पुरुष हैं। धर्मशास्त्रानुसार व्यापार का सारा भार अपने सुपुत्र श्री लालचन्द कनोई पर छोड़कर आप स्वयं धर्म व समाज के उपकार में लग गये हैं। आपकी जन्मभूमि सुजानगढ़ में बहुत बड़ा जल कष्ट है—वहाँ का पानी खारा है। वहाँ की ३०|३५ हजार जनता को मीठा पानी पर्याप्त मात्रा में मिलता रहे इसके हेतु इन्होंने ७|८ लाख रुपया खर्च कर पानी प्राप्त करने की स्कीम बनाई है और उसको पूरा करने में भगीरथ की भाँति प्रयत्न कर रहे हैं।

इनकी धर्मपत्नी का देहान्त ३८ वर्ष की उम्र में ही हो गया था किन्तु इन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया एवं अपना जीवन बड़े संयम से बिता रहे हैं।

श्री लालचंद कनोई

आप श्री सुरजमल के सुपुत्र हैं। आपका जन्म संवत् १६७८ में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गणेशवाड़ी में हुई। उसके पश्चात १६४० से १६४४ तक आपने उच्च शिक्षा कलकत्ते में प्राप्त की। आपमें व्यापार की एक बहुत बड़ी उमंग (Burning Desie.) है। कलकत्ता क्षेत्र आप को बहुत अनुकूल हुआ एवं इन्होंने कलकत्ता में निम्नलिखित फर्म स्थापित किये —

१६४६—हनुमान बक्स सूरजमल लि०।

१६४६—मोकलवाड़ी कनोई टी स्टेट लिमिटेड।

१६५०—कनोई इंडिया लि०।



श्री लालचंद कनोई

कनोई इण्डिया लि० के तत्त्वावधान में आपने चाय का निर्यात व्यापार प्रारंभ कर दिया। चाय निर्यात के लिए १६४६-५२ तक का समय बहुत अनुकूल नहीं था तथापि अपनी मनस्विता एवं कार्य कुशलता से ४-५ वर्ष में ही आपने अपने निर्यात व्यापार को बहुत बढ़ा लिया। इस समय आप प्रायः १ करोड़ पौंड चाय निर्यात करते हैं। छोटी सी उम्र में ही आपने कलकत्ता नगरी में एवं चाय-उद्योग-क्षेत्र में बहुत बड़ी ख्याति प्राप्त कर ली है।

यहीं नहीं, अभी १६५४ के शेष में एवं १६५५ के प्रारंभ में ४, ५ अंग्रेज कंपनियों के ४, ५ बगीचों के Share Capital पर अधिकांश अधिकार (Major share-holding) प्राप्त कर उन बगीचों का संपूर्ण संचालन एवं प्रबंध का भार आपने अपने हाथ में ले लिया है। प्रायः देखा गया है कि इस प्रकार तीव्रगति से विस्तार होने पर किसी भी कार्य की स.र संभार एवं सुंदर प्रबंध हो नहीं हो पाता किन्तु श्री लालचन्द ने अपनी कार्य-क्षमता, सहिष्णुता एवं कुशाग्र-बुद्धि से इन सभी कामों को बहुत सुंदर ढंग से व्यवस्थित कर लिया है। आप बहुत उत्साही एवं निडर हैं तथा जिस प्रकार रायसाहिब ने आसाम बगीचों को समुन्नत किया है उसी प्रकार कलकत्ता का निर्यात् व्यापार एवं कलकत्ता आफिस का विकास एवं ख्याति आपके परिश्रम का ही प्रत्यक्ष फल है। पहिले के ५ बगीचों में ५ बगीचे और बढ़ाकर इन्होंने हनुमान बक्स सुरजमल लि० की कीर्ति दुगुनी करदी है। आप उदार विचार रखते हैं एव निरभिमान होकर छोटे बड़े सबसे मिलते हैं। कनोई परिवार के विकास करने में आपका बहुत बड़ा हाथ है। आपकी महत्वाकांक्षा है कि अंग्रेजों के Agency House की भाँति हनुमान बक्स सूरजमल लि० को एक बहुत बड़ा Agency House बनाया जावे।

श्री भगवानप्रसाद कनोई

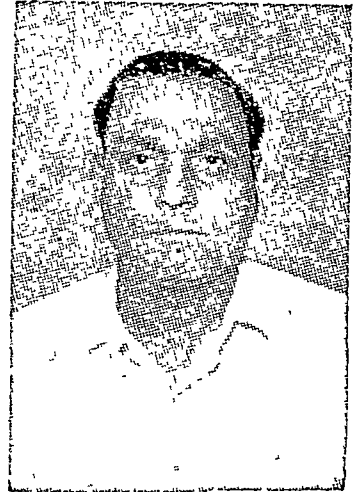
आप राय साहब हनुमान बक्स कनोई के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप गणेश बाड़ी टी इस्टेट में रहकर वहां का सारा काम सम्हालते हैं। आप बड़े योग्य, परिश्रमी और मिलनसार प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं।



श्री भगवान प्रसाद कनोई

श्री ज्वालाप्रसाद कनोई

आपका जन्म संवार में हुआ। आप मोकलबाड़ी चायबागान में रहकर वहां का सारा कार्य सम्हाले हैं और बड़े परिश्रमी, योग्य और उत्साही प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं।

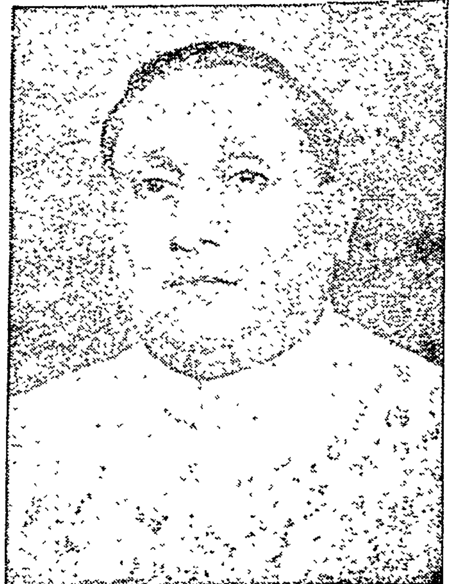


श्री ज्वाला प्रसाद कनोई

श्री हरिप्रसाद कनोई

आप रायसाहिब के तृतीय सुपुत्र हैं। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गणेशबाड़ी एवं डिब्रूगढ़ में हुई है। पठन-पाटन के बाद आप चाय बगीचों का काम सँभालने में रायसाहिब का हाथ बटाते थे एवं डिब्रूगढ़ में रहकर सभी बगीचों का निरीक्षण, फाईनान्स एवं चाय निर्यात का काम सँभालते थे। अभी १–१॥ वर्ष से आप कलकत्ता आ गये हैं तथा कलकत्ते में हनुमान बक्स सूरजमल लि० का काम सँभालकर श्री लालचन्द कनोई को बहुत सहयोग प्रदान करते हैं।

आप मृदु-भाषी और मिलनसार एवं बहुत ही सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आजकल के जमाने का कोई भी व्यसन आपमें नहीं है।



श्री हरि प्रसाद कनोई

श्री ओंकारप्रसाद कनोई

आप राय साहब हनुमान बक्स के चौथे पुत्र हैं। आप डिब्रूगढ़ में ही रहते हैं और वहाँ पर सब चायबगानों की व्यवस्था के लिए गवर्नमेंट ऑफिसरों से मिलना-जुलना तथा चाय निर्माण की सारी व्यवस्था करते हैं। तथा चायबगानों में जिन चीजों की आवश्यकता पड़ती है उनकी व्यवस्था करते हैं।



श्री ओंकार प्रसाद कनोई



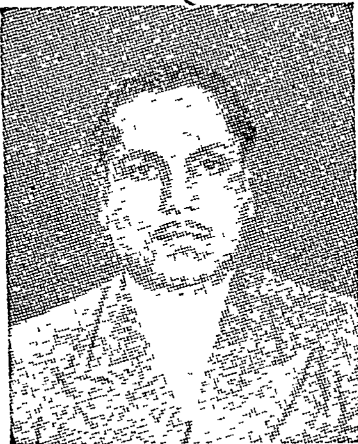
श्री लेख चन्द्र कनोई

श्री लेखचन्द्र कनोई

आप रायसाहब के पाँचवे पुत्र हैं। आपके Rungliting चाय बगान की सारी व्यवस्था करते हैं। आप बड़े प्रतिभाशाली, परिश्रमी और मिलनसार व्यक्ति हैं। चाय प्रोडेक्शन के बारे में आपका बहुत गहरा अनुभव है।

श्री जयदेव प्रसाद कनोई

आप रायसाहब के छठवें पुत्र हैं। आप मनोहारी टीइस्टेट में रहकर वहाँ का सारा काम काज सम्हालते हैं। आप बड़े मिलनसार, परिश्रमी और प्रतिभाशाली युवक हैं।



श्री जयदेव प्रसाद कनोई

श्री राधेश्याम कनोई

आप रायसाहबके सबसे कनिष्ठ पुत्र हैं। आप गणेश बाड़ी में रहकर सब बगीचों के निरीक्षण का कार्य्य देखते हैं।

औद्योगिक विस्तार

भारतवर्ष के चाय उद्योग में बहुत थोड़े समय में अपनी प्रतिभा, अध्यवसाय और बौद्धिक शक्तिसे प्रमुख स्थान प्राप्त कर लेने का कनोई परिवार को बहुत बड़ा गौरव प्राप्त है। रायसाहब हनुमान बयाजी के पद चिह्नों पर चलकर श्री लालचंद जी कनोई अपनी बौद्धिक और व्यपारिक प्रतिभा से चाय उद्योग में अभूतपूर्व उन्नति की है। इनसे उत्पन्न चाय क्वाण्टिटी और क्वालिटी दोनों में बहुत उत्तम श्रेणी की होती है।

१--गणेश वाड़ी टी इस्टेट—यह चाय बागान आसाम में डिब्रूगढ के पास स्थित है। इसकी एरिया में ३१ एकड़ में चाय का प्लाण्टेशन किया हुआ है। यह बगीचा प्रतिवर्ष ८८०० मन चाय उत्पन्न करता है। इस बगीचे की उत्पादन शक्ति औसत तीस मन प्रति एकड़ है जो आसाम की औसत उत्पादन से बहुत अधिक है।

२—मोकल वाड़ी टी इस्टेट—यह बागान भी आसाम में डिब्रूगढ़ के पास है। इसकी एरिया में ८०० एकड़ में प्लाण्टेशन किया हुआ है। इस बगान में १,०००० मन चाय प्रतिवर्ष पैदा होती है।

३—मनोहारी टी इस्टेट—यह बागान भी आसाम में डिब्रूगढ़ के पास स्थित हैं। यह ३५० एकड़ में प्लाण्टेशन किया हुआ है इसमें ७००० मन चाय प्रतिवर्ष पैदा होती है।

४—रंगलिटिंग टी इस्टेट—यह बगीचा ३०० एकड़ में प्लाण्टेशन किया हुआ है। इसका वार्षिक उत्पादन ६०:० मन है। यह भी आसाम में डिब्रूगढ़ के पास है।

५—श्रीकृष्ण टी इस्टेट—यह बगीचा २५० एकड़ में विस्तृत है। इसमें ५००० मन चाय प्रतिवर्ष पैदा होती है। यह भी डिब्रूगढ़ के पास स्थित है।

६—कमख्या वाड़ी टी इस्टेट—यह बगीचा १७५ एकड़ के विस्तार में है। यह बगीचा आपने फिलहाल बिलकुल नया लगाया है।

७ गीलापुकरी टी इस्टेट—यह बगीचा ४०० एकड़ के विस्तार में है। यह भी डिब्रूगढ़ के पास में ही है। इसका उत्पादान सात हजार मन प्रतिवर्ष है।

८—मानावारी टी इस्टेट—यह बगीचा नार्थ बंगाल में सिलीगुड़ी के पास स्थित है। यह आपने अभी हाल ही में नवीन खरीदा है। इसका विस्तार ६३० एकड़ में है। इसका उत्पादन इस समय ७००० मन प्रतिवर्ष है। मगर आपके मैनेजमेंट में आने से शीघ्र ही १०००० मन पहुँचने की आशा है।

९—ईथाल वाड़ी टी इस्टेट—यह बगीचा नार्थ बंगाल में जलपाई गुड़ी के पास स्थित है। इसका विस्तार ४४७ एकड़ में है। यह बगीचा भी अभी २ आपके मैनेजमेंट में आया है इसका उत्पादन फिलहाल ६००० मन वार्षिक है। मगर आपके व्यवस्था चातुर्य से बहुत ही शीघ्र इसका उत्पादन ८००० मन प्रतिवर्ष होने की आशा है।

मेसर्स बी० नेवर एण्ड कम्पनी कलकत्ता



श्री बाबूलाल नेवार

इस कम्पनी के मालिक श्री बाबूलाल नेवर नौहर (बिकानेर स्टेट) के मूल निवासी हैं। आपके पिता श्री दुलिचन्द्र नेवर हैं। आपका जन्म सन् १९११ में कलकत्ता में हुआ। आप बचपन से ही बड़े तेजस्वी और प्रतिभशाली रहे। आपका विवाह बिड़ला ब्रदर्स के सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री रामेश्वरदास बिड़ला की पुत्री श्रीमती लक्ष्मी देवी के साथ हुआ।

आपने सन् १९३० में व्यवसाय क्षेत्र में प्रवेश किया और अपनी प्रतिभा, परिश्रम और मिलनसारिता से उसे खूब चमकाया।

इस समय आप हलमीरा टी इस्टेट लिमिटेड, शूगर एजेन्ट्स लिमिटेड, यू०पी० पेपर कार्पोरेशन लि० तथा वेजिटेबिल एण्ड ऑयल एजेन्ट्स लि० के मैनेजिंग डॉयरेक्टर हैं। बंगाल सुगर मरचेन्ट एसोसिएशन लि० के आप चेअरमैन हैं। कलकत्ता स्टॉक एसोसिएशन लि०, ईस्ट इण्डिया जूट एण्ड हैसियन एक्सचेंज लि० तथा कलकत्ता वेल्ड जूट एसोसिएशन के सदस्य हैं। शूगर मर्चेण्टस एसोसिएशन के आप उपाध्यक्ष भी हैं। टेनिस तथा घुड़सवारी का अच्छा शौक रखते हैं।

औद्योगिक परिचय

हलमीरा स्टेट टी लि०—आपका यह चाय का बगीचा आसाम में गोलाघाट स्थान पर स्थित है। इस बगीचे की एरिया ३००० एकड़ है। इसमें प्रतिवर्ष ६ लाख पाउण्ड चाय उत्पन्न होती है। आसाम के अच्छे बगीचों में से है। आपका ऑफिस २३।२४ राधा बाजार स्ट्रीट में सेठिया भवन के अन्दर है। वहां का तार का पता Kamdhenu और टेलीफोन नं० २२,५९५८ २२-२१३७-३३-३३४५ है।

आपके श्री अजय कुमार और अरविन्द कुमार नामक दो पुत्र हैं।

राय बहादुर मुखराम लक्ष्मीनारायण

इस नामी और प्रतिष्ठित उद्योगपति खानदान के पूर्वजों का आदि निवास स्थान कानोड़ (पटियाला-स्टेट) का था। वहाँ इस खानदान के पूर्व पुरुष सेठ तेजपाल निवास करते थे। आपके पुत्र सेठ पूरनमल संवत् १६११-१२ के लगभग कानोड़ से भिवानी आकर आबाद हुए। कानोड़ से आने के कारण आपका परिवार 'कानोड़िया' बंक से प्रसिद्ध हुआ। तब से इस खानदान का खास निवास-स्थान भिवानी ही है। सेठ पूरनमल के पुत्र रा० ब० मुखराम हुए।

रा० ब० सेठ मुखराम कनोड़िया

सेठ मुखराम कानोड़िया का जन्म सं० १६१५ में हुआ था। आप इस खानदान में बड़े भाग्यवान्, कार्यकुशल और कीर्तिशाली व्यक्ति हुये। आरंभ से ही आपकी प्रतिभा से आपका होनहारपन टपकता था। केवल १५ साल की आयु में आप संवत् १६३० में व्यवसायार्थ कलकत्ता आये और यहाँ पर देहली की प्रसिद्ध फर्म 'सेठ परसराम हरनन्दराय गोयनका, की कलकत्ता शाखा "सेठ हरनन्दराय बद्रीदास" के जनरल मैनेजर पद पर नियुक्त हुये। इस प्रसिद्ध फर्म के तमाम व्यापारिक कामो को आपने इतनी उत्तमता और कार्य-पटुता से संचालित किया कि फर्म के व्यवसाय की वृद्धि के साथ साथ आपकी समझदारी और व्यवस्था संचालन नीति की तत्कालीन व्यवसायिक समाज पर गहरी छाप पड़ी और थोड़े ही समय में आप अपने समाज के चमकते हुये व्यक्तियों में मानेजाने लगे।

इसके पश्चात् रा० ब० सेठ मुखराम कानोड़िया ने अपना स्वतंत्र व्यवसाय स्थापित कर लाखों रुपयों की सम्पत्ति उपार्जित की। व्यवसाय में विपुल संपत्ति उपर्जित कर दान-धर्म के कार्यों में भी आपने समय समय पर लाखों रुपये उदारता पूर्वक व्यय किये। आपने कलकत्ते के बाबूघाट में (मैदान के पास) एक लाख रुपये की लागत से एक विशाल और रम्य धर्मशाला का निर्माण कराया। देवघर वैद्यनाथ धाम में एक धर्मशाला, भिवानी में श्याम-संस्कृत पाठ- शाला और बनारस में एक अन्नक्षेत्र स्थापित किया। ये सब संस्थायें आज तक बड़ी उत्तमता से अपना कार्य संचालित कर रही हैं। इसी प्रकार अनेको सार्वजनिक और धार्मिक कार्यों में उदारताके साथ आपने सहयोग दिया। ब्रिटिश गवर्नमेंटने आपकी सेवाओ के पुरस्कार स्वरूप सन् १६२० में रायबहादुर का सम्माननीय खिताब देकर आपकी शोभा बढ़ाई।

रा० ब० सेठ मुखराम कानोड़िया उन साहसी और प्रतिभाशाली पुरुषों में थे, जो बहुत साधारण स्थिति से अपने जीवन को प्रारंभ कर अपनी प्राकृतिक प्रतिभा, अपने औदार्य और अपने भाग्य के सहारे व्यवसाय में विपुल सम्पत्ति उपार्जिति कर अपनी शुभ कृतियों के द्वारा जन-समाज में महत्वपूर्ण और आदरणीय स्थान प्राप्त करते हैं और अपने समाज और जाति में अपना और अपने खानदान का वजनदार अस्तित्व कायम करते हैं। इस प्रकार यशस्वी जीवन बिताते हुए सं० १६६० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके सम्मान स्वरूप हवड़ा की जनता एवं कारपोरेशन ने आपके निवास-स्थान के किनारे की सड़क का नाम रायबहादुर मुखराम कानोड़िया रोड रख कर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। आपके सेठ लक्ष्मीनारायण और सेठ वंशीधर नामक दो पुत्र हुए।

सेठ लक्ष्मीनारायण और सेठ बंशीधर कानोड़िया

सेठ लक्ष्मीनारायण का जन्म संवत् १६४० में भिवानी में हुआ था। आपने केवल १३ वर्ष की छोटी अवस्था से ही व्यवसायिक कार्यों में भाग लेना आरंभ कर दिया था। सर्व प्रथम आपने हैसियन और बोरे की दलाली का कार्य करके व्यवसायिक ज्ञान प्राप्त किया। सं० १६५५ के करीब आपने अपने पिता सेठ मुखराम कनोड़िया के नेतृत्व में 'मेसर्स लक्ष्मीनारायण बंशीधर' के नाम से अपनी फर्म स्थापित की। आप भी अपने पिताजी के अनुरूप ही व्यवसाय कुशल और बुद्धिमान पुरुष थे। आपके छोटे भाई सेठ बंशीधर कानोड़िया का जन्म सं० १६५० में हुआ था। आप भी बालिग होने के पश्चात् कलकत्ता आये और अपने पिताजी के नेतृत्व में अपने बड़े भाई सेठ लक्ष्मीनारायण के साथ व्यवसायिक कार्य में भाग लेने लगे। इन दोनों भाइयों में आपस में अत्यधिक प्रेम था और दोनों बन्धुओं ने मिलकर व्यवसाय की उन्नति में पूर्णरूप से भाग लिया। इतने बड़े स्केल पर आपकी फर्म पर हैसियन और बोरे का काम होने लगा कि कलकत्ते के हैसियन बाजार की फर्मों में आपकी फर्म नामी गरामी और मजबूत मानी जाने लगी। यह फर्म उसी भाँति आज तक अपनी व्यवसायिक प्रतिष्ठा और सम्मान को ऊँचा बनाये हुए हैं।



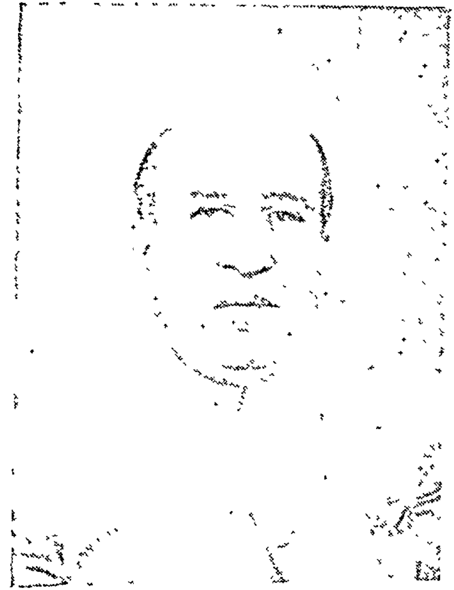
स्व० सेठ लक्ष्मीनारायण कनोड़िया

व्यवसाय में सम्पत्ति उपार्जित कर आप दोनों बन्धुओं ने बहुत सी जमीन, मकानात, जायदाद आदि का संग्रह किया। बाबू बन्शीधर राजयक्ष्मा (क्षय) रोग से पीड़ित होकर केवल ३३ वर्ष की अवस्था में सं० १६८३ में स्वर्गवासी हो गये। सन् १६३१ तक सेठ लक्ष्मीनारायण और सेठ बंशीधर का परिवार सम्मिलित रूप से व्यवसाय करता रहा। इसके पश्चात् दोनों बन्धुओं का कारबार पृथक-पृथक हो गया। अब सेठ लक्ष्मीनारायण के वंशज 'सेठ मुखराम लक्ष्मीनारायण कानोड़िया' के नाम से अपना स्वतन्त्र कारबार कर रहे हैं। सेठ लक्ष्मीनारायण कलकत्ते के अग्रवाल समाज में बड़े नामी और समझदार पुरुष थे। एक लम्बे समय तक अपने व्यापार का संचालन कर उसे अच्छी प्रगति प्रदान कर सं० १६६० में आपका स्वर्गवास होगया। आपके बाबू गौरीशंकर, बाबू राधाकृष्ण, बाबू मोतीलाल एवं बाबू साँवलराम नामक ४ पुत्र हुये। इन भाइयों में बाबू गौरीशंकर का केवल २१ साल की वय में सं० १६७६ में स्वर्गवास हो गया। शेष तीन बन्धु विद्यमान हैं।

सेठ लक्ष्मीनारायण ने अपने पूज्य पिताजी के स्मारक में बड़तल्ला-स्ट्रीट कलकत्ता में 'रा० ब० मुखराम कानोड़िया स्कूल, के नाम से एक स्कूल खोला। इसी प्रकार सलकिया में एक घाट बनवाया। सेठ लक्ष्मीनारायण ने उदारतापूर्वक सात लाख रुपयों की विशाल रकम धर्मादा स्वरूप प्रदान कर अपने पिताजी के नाम से 'श्री मुखराम चैरिटी ट्रस्ट फंड, नामक ट्रस्ट का स्थापन किया है और यह ट्रस्ट सफलतापूर्वक अपनी तमाम सार्वजनिक संस्थाओं के संचालन में योग ले रहा है।

बाबू राधाकृष्ण कानोड़िया

बाबू राधाकृष्ण कानोड़िया का जन्म सं० १९५९ में, बाबू मोतीलाल का सं० १९६४ में और बाबू साँवलराम का सं० १९६८ में हुआ। आप तीनों बन्धु मिलनसार, व्यापार कुशल और प्रतिभाशाली युवक हैं। आपका ध्यान औद्योगिक उन्नति की ओर विशेष रहता है। आप तीनों भाइयों ने सन् १९३१ में पृथक होकर अपने व्यापार में विशेष तरक्की की है और धनोपार्जन किया है। आपने सन् १९३५ में हुगली जिले के अन्तर्गत कोतनगर नामक स्थान में 'श्री लक्ष्मीनारायण जूट मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड, के नाम से एक जूट मिल खोला है। इसके पश्चात् सन् १९३६ में आपने 'कानोड़िया इंडस्ट्रीज लिमिटेड, और 'बङ्गाल जूट एजेंसी लिमिटेड, नामक दो और लिमिटेड कम्पनियों की स्थापना की। इन तमाम लिमिटेड कम्पनियों का संचालन आप लोग बड़ी योग्यता और व्यवस्थापूर्वक कर रहे हैं। आपका आफिस ९५ नेताजी सुभास रोड में है। अपने पूर्वजों द्वारा स्थापित तमाम सार्वजनिक संस्थाओं का संचालन आप के द्वारा भली भाँति हो रहा है और आप अपने पूर्वजों के अनुरूप ही अनेक शुभ कार्यों में भाग लेने की रुचि रखते हैं। कलकत्ते के मारवाड़ी-समाज में आपके खानदान का अच्छा आदर है।


राधाकृष्ण कानोड़िया

इस समय स्व० बाबू गौरीशंकर के श्री छोटेलाल नामक एक पुत्र हैं, जो अपने विस्तृत कारबार के संचालन में योग दे रहे हैं। बाबू राधाकृष्ण के श्री देवीप्रसाद, श्यामाप्रसाद एवं पुरुषोत्तमदास नामक ३ पुत्र हैं।

रा० ब० साँवलराम के सज्जन कुमार नामक एक पुत्र हैं। इनका जन्म सन् १९३८ का है।

रायबहादुर सांवलराम कानोड़िया

रायबहादुर सांवलराम कानोड़िया का जन्म संवत् १९६४ में हुआ। आप इस परिवार में बहुत प्रतिभाशाली और उद्योग निपुण व्यक्ति हैं। इस फर्म के विस्तृत उद्योग को विशेष रूप से आपही



रायबहादुर सांवलराम कानोड़िया

संचालित करते हैं। सन् १६४२ में वृटिश सरकार ने आपको रायबहादुर की उपाधि से विभूषित किया। आपका विवाह कलकत्ते के प्रसिद्ध उद्योगपति सेठ चिरंजीलाल बाजोरिया की बहन श्रीमती भगवानी देवी से हुआ।

रायबहादुर सांवलराम कानोड़िया इण्डियन जूट मिल्स एसोसिएशन की एक्जीक्यूटिव कमेटी के कई वर्षों तक मेम्बर रह चुके हैं। गनी ट्रेडर्स एसोसिएशन के भी आप वाईस प्रेसीडेण्ट रह चुके हैं। मोहन बगान एथेलेटिक क्लब तथा राजस्थान क्लब की एक्जीक्यूटिव कमेटी के आप मेम्बर हैं।

आप कानोड़िया इण्डस्ट्रीज लि० तथा बंगाल जूट एजण्ट्स लि० के मैनेजिंग डायरेक्टर तथा श्रीलक्ष्मीनारायण जूट मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी लि०, हिन्दुस्तान ऊलन मिल्स लि०, भारत लक्ष्मी कम्पनी लि० और बजबजइनवेस्टमेंट कम्पनी लि० के डॉयरेक्टर तथा मेसर्स मुखराम लक्ष्मीनारायण कानोड़िया के पार्टनर हैं।

राजनैतिक विचारों में आप कांग्रेसी विचारधारा के अनुयायी हैं। कांग्रेसी क्षेत्रों में आपका अच्छा प्रभाव है।

आपके प्रधान सहायक एवं विश्वसनीय सेक्रेटरी श्री हरिराम बगड़ोदिया बड़े गम्भीर, स्वामिभक्त और उद्योग कुशल व्यक्ति हैं।

औद्योगिक विस्तार

श्रीलक्ष्मीनारायण जूट मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी लि०—इस कम्पनी की स्थापना सन् १६३५ में हुगली जिले के अन्तर्गत कोतनगर नामक स्थान में हुई। इसमें एक बड़ा जूट मिल है। जिसकी अधिकृत पूँजी पच्चीस लाख रुपये की है जो दस-दस रुपये के ढाई लाख शेयरों में विभाजित है। इस मिल में पाँच सौ लूम्स जूट के और १२५ लूम्स कपड़ा बनाने के हैं। इसके डॉयरेक्टर श्री राधाकिशन कानोड़िया श्री मोतीलाल कानोड़िया, रा. ब. सांवलराम कानोड़िया, श्री छोटेलाल कानोड़िया, श्री एस. एम. बसु, श्री रामकृष्ण नाथानी, और श्री नरेन्द्रनाथ चौधरी हैं। इसके मैनेजिंग एजण्ट मेसर्स मुखराम लक्ष्मीनारायण हैं।

कानोड़िया इण्डस्ट्रीज लि०—यह सूत कातने की मिल है। सुपर हाइड्राफ्ट की आधुनिकतम मशीनरी से सज्जित सारे पश्चिमी बंगाल में यह पहली मिल है। इसकी अधिकृत पूँजी पचास लाख रुपया है। इसमें दस हजार स्पिण्डल्स काम करेंगे। इसके डॉयरेक्टर्स रा. ब. सांवलराम कानोड़िया, श्रीछोटेलाल कानोड़िया, श्री एस. एम. बसु, श्री चिरंजीलाल बाजोरिया और श्री केदारनाथ बाजोरिया हैं तथा इसके मैनेजिंग डॉयरेक्टर रा. ब. सांवलराम बाजोरिया हैं।

मेसर्स रामप्रसाद मुरलीधर सोमानी एण्ड कम्पनी

भारतवर्ष के अन्तर्गत काँच के उद्योग में जिन उद्योगपतियों ने उत्साहपूर्ण कदम बढ़ाया है उनमें कलकत्ते के मेसर्स रामप्रसाद मुरलीधर सोमानी अपना प्रमुख स्थान रखते हैं।

इस परिवार का मूल निवास स्थान चिडावा (राजस्थान) का है। इस परिवार में सन् १६०५ के लगभग सेठ रामप्रसाद सोमानी कलकत्ता आये और यहाँ पर सबसे पहले उन्होंने अपने छोटे भाई सेठ महादेव सोमानी के साझे में हैसियन बोरे का व्यापार शुरू किय।

सेठ रामप्रसाद सोमानी का स्वर्गवास करीब सन् १६०६-१० में हो गया। सन् १६३६ में इनके छोटे भाई महादेव सोमानी भी व्यापार से रिटायर हो गये। और इसी साल दोनों भाइयों के परिवार का व्यवसाय भी अलग अलग हो गया। सेठ रामप्रसाद के सेठ मुरलीधर नामक एक पुत्र हुए। इनका स्वर्गवास भी सन् १६४४ में हो गया।

सेठ मुरलीधर सोमानी के छः पुत्र हैं, उनके नाम क्रमशः श्री हीरालाल सोमानी, श्री उंकारमल सोमानी, श्री सुरेन्द्र कुमार सोमानी, श्री चन्द्र कुमार सोमानी, श्री राजेन्द्र कुमार सोमानी और ललित कुमार सोमानी हैं।

श्री हीरालाल सोमानी

आपका जन्म संवत् १६२० में हुआ। आप बड़े योग्य बुद्धिमान और प्रतिभाशाली युवक हैं। अपने पिता जी के स्वर्गवास के पश्चात् आपने कलकत्ते की आर० बी० रोडा एण्ड कम्पनी विदेशियों के हाथ से खरीद ली। इसमें पम्प, डीजल इंजिन और बंदूकों का व्यवसाय होता है। सन् १८३० में सबसे पहले भारतवर्ष में बन्दूकों का व्यवसाय इसी कम्पनी ने प्रारम्भ किया था। सन् १६४३ में सोमानी गलार्स वर्क्स के नाम से एक छोटी ग्लास फैक्टरी, इस फर्म के पास थी उसे बन्द कर श्री हीरालाल सोमानी के छोटे भाई उंकारमल सोमानी विलायत जाकर एक बड़ी ग्लास फैक्टरी का प्लाना बना कर लाये और सन् १६५२ में हिन्दुस्तान नेशनल ग्लास वर्क्स के नाम से एक बिशाल ग्लोस फैक्टरी की स्थापना की। यह फैक्टरी भारतवर्ष में सबसे बड़ी ग्लास फैक्टरी है जो २५ टन अथवा एक लाख नग प्रतिदिन शीशी, बोतल, काँच के ग्लास वगैरह बनाती हैं।



हीरालाल सोमानी

श्री हीरालाल सोमानी का विवाह कुचायन के



श्री उंकारमल सोमानी

श्री गोवर्द्धनलाल काबरा की पुत्री श्रीमती कमला देवी से हुआ, आपके एक पुत्र श्री श्रीकान्त है आपने तीन बार विदेश यात्रा की है।

श्री उंकारमल सोमानी

आप का जन्म सन् १६२३ में हुआ। आप भी इस फर्म में अपने बड़े भाई श्री हीरालालजी सोमानी के साथ बड़े मनोयोग से काम कर रहे हैं। सन् १६४६ में आपने विलायत जाकर अपनी विशाल ग्लॉस फैक्टरी का प्लॉन बनाया और १६५२ में उसको प्रारम्भ किया। आपकी शादी विख्यात उद्योगपति श्री ब्रजमोहनजी बिड़ला की पुत्री श्रीमती गंगा देवी से हुआ। आपके दो पुत्र शशिकुमार और विमल हैं।

श्री सुरेन्द्र कुमार सोमानी

आपका जन्म सन् १६१५ में हुआ। इनका मस्तिष्क इञ्जीनियरिंग कामों में बहुत चलता है। आपका विवाह बीकानेर के श्री सूरज रतन दम्माणी की पुत्री श्रीमती नलिनी देवी से हुआ है।

श्री चन्द्र कुमार सोमानी

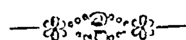
आपका जन्म सन् १६२६ हुआ। इनका मस्तिक भी इञ्जीनियरिंग कामों में खूब चलता है। गलॉस फैक्टरी के प्राडक्शन कामों को आपही देखते हैं।



सुरेन्द्र कुमार सोमानी

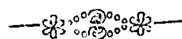
भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



भारत की औद्योगिक प्रतिभाएँ

Industrial Magnates of India



अमृतलाल ओझा एण्ड कम्पनी

कलकत्ता

सेठ अमृतलाल ओझा एण्ड कम्पनी

स्व०-सेठ अमृत लाल ओझा का जीवन मनुष्यकी कार्य क्षमता, प्रतिभा और भाग्य लक्ष्मी की प्रसन्नता का एक सम्मिलित अनुष्ठान है जिससे निराश और अकर्मण्य लोगों को एक सहज प्रेरणा और स्फूर्ति मिल सकती है।

पन्द्रह वर्ष की उम्रमें सिर्फ पन्द्रह रुपये मासिक की नौकरी से इस कर्मशील युवक ने अपना जीवन प्रारम्भ किया और तीस वर्ष के पश्चात् अपने जीवन काल में ही करोड़ों रुपये की सम्पत्ति, एक विशाल उद्योग प्रतिष्ठान और देश विदेश में अपनी शाखाएँ स्थापित कर यह व्यक्ति ईश्वरके घर वापस चला गया।

भारतीय कोयला उद्योग के इतिहास में सेठ अमृतलाल ओझाने जो नाम पैदा किया वह शायद कोई भी दूसरा भारतीय उद्योगपति नहीं कर सका। अंग्रेजी राज्य के उस जमाने में जब यूरोपियन लोगोंके स्वार्थ के सम्मुख भारतीय लोगों के स्वार्थ की कोई पूछ नहीं थी इस साहसी उद्योगपतिने भारतीय-स्वार्थों के पक्षमें बुलन्द आवाज उठाकर सरकारी आसन को भी हिला दिया और अनेक विपरीत परिस्थितियों में भी भारतीय स्वार्थों के पक्ष में फैसला लेकर विजय का डङ्का बजा दिया और उस अन्धकार पूर्ण युग में भी विदेशियों के दिलों पर भारतीय योग्यता का सिक्का जमा दिया जिस के फलस्वरूप लोग इसको कोलकिंग के नामसे पुकारने लगे।

कलकत्ते के इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स की स्थापना में प्रमुख भाग लेना, कालेरी आनर्स एसोसिएशन की स्थापना करना, उसके सात वर्ष तक लगातार प्रेसिडेण्ट रहना, फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स का प्रेसिडेण्ट चुनाजाना इत्यादि विशेषताओंने भारतीय औद्योगिक क्षेत्र में सेठ अमृतलाल ओझा के नामको अत्यन्त विशिष्टता प्रदान करदी है।

—०:❀:०—

मेसर्स अमृत लाल ओझा उद्योग-प्रतिष्ठान

स्व० सेठ अमृतलाल ओझा देश के उन थोड़े से कर्मशील पुरुषों में से एक थे जो अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करते हैं और बहुत छोटे साधनों से कार्य प्रारम्भ करके अपनी कर्मशीलता, उच्च चारित्र और ईमानदारी के बलपर उसे ऊंची से ऊंची स्थिति पर पहुंचा देते हैं।

सेठ अमृतलाल ओझा का मूल निवास स्थान कच्छ प्रान्त के अन्जर जिले का है। इनके पितामह श्री रेवाशंकर ओझा अंजरमें एक बड़े और ईमानदार व्यापारी माने जाते थे। उनकी जायदार भी काफी थी और वे कच्छ स्टेट के तौल और नाप के पैमानों की जांच पर सुपरवाइजर बनाये गये थे।

मतलब यह कि यह परिवार एक सुखी और सम्पन्न परिवार था। मगर कुछ दिनों के पश्चात् इनके भाग्य-चक्र ने एक दम पलटा खाया और व्यापार में घाटा होने के साथ २ कर्ज का बोझ भी इस परिवार पर लद गया।

सेठ रेवशंकर ओझा के स्वर्गवास के पश्चात् उनके पुत्र सेठ लालजी ओझा ने अपने पुराने व्यवसाय को सम्हाला। इनकी शादी मोरवी स्टेट के सुप्रसिद्ध अधिकारी श्री विश्वनाथ जयशंकर ओझा की पुत्री से हुआ। सेठ अमृतलाल ओझा इन्हीं के इकलौते पुत्र थे।

सेठ अमृतलाल ओझा का जन्म सन् १८९० में हुआ। ये बचपन से ही बड़े तेजस्वी, बुद्धिमान, चंचल और आकर्षक प्रकृति के थे। इनकी पढाई पहले गांव के स्कूल में और उसके बाद मोरवी हाई स्कूल में हुई, मगर मोरवी में थोड़े दिनों बाद ही प्लेग की बीमारी चल जाने से इनको मोरवी छोड़ना पड़ी और फिर अन्जर में ही इनकी प्रायवेट शिक्षा चौथे दर्जे तक हुई। उसके पश्चात् परिस्थितियों से लाचार होकर सन् १९०५ में इन्होंने एक पारसी ठेकेदार के यहाँ नौकरी शुरु की और चार महीने काम करने के पश्चात् ही वे वहाँ बहुत लोकप्रिय हो गये।

अपनी बहन की शादी के अवसर पर इनको वापस कच्छा जाना पड़ा। पारसी ठेकेदार के यहाँ यद्यपि इनको सिर्फ १५ मासिक वेतन मिलता था मगर इनके कार्य्य से प्रसन्न होकर शादी के इस अवसर पर उसने इनको कुछ विशेष सहायता दे दी थी। शादी से निपट जाने पर जब ये फिर अपनी नौकरी पर जाने लगे तो इनकी माता ने इनको वहां जाने से मना कर दिया और घर पर ही रह कर काम करने की सलाह दी। तब इन्हों ने अपने गांव के ही एक प्रायवेट स्कूल में अध्यापक की नौकरी कर ली। दो वर्ष तक यह नौकरी करने के पश्चात् एक वकील के यहाँ दूसरी नौकरी करली और कुछ कानूनका ज्ञान प्राप्त कर लिया।

सेठ अमृतलाल के पिता अपनी अंजर दुकान का कारबार अपने तीन छोटे भाइयों के जिम्मे छोड़ कर संयोग वश झरिया कोलफिल्ड में चले गये और यहां आकर मेसर्स खीमजी मूलजी के यहां जयरामपुर कालेरी में नौकरी कर ली और यहींपर अपने लड़के श्री अमृतलाल ओझा को मेसर्स खेंगारजी ट्रिकू एण्ड सन्स के यहां ३१) मासिक बेतन पर सर्विस दिला दी।

श्री अमृतलाल ओझा के मालिक इनके काम और इनकी बुद्धिमानी से बहुत सन्तुष्ट थे। जिसके परिणाम स्वरूप इनका वेतन बढ़ते २ सत्तर रुपये मासिक हो गया। खास करके इनके अकाउण्ट सम्बन्धी ज्ञान और अंग्रेजी पत्र व्यवहार की शैली ने सबको प्रभावित करदिया। धीरे २ इनको कोयले की बिक्री पर कुछ कमीशन भी मिलने लगा और कुछ ही समय बाद उस फर्म के सारे डिपार्टमेंट इनके चार्जमें आगये और ये उस कालेरी के एजण्ट की तरह काम करने लगे।

धीरे २ इनकी भाग्य लक्ष्मी इनपर प्रसन्न होने लगी, जिसके परिणाम स्वरूप सन् १६१२ में सेठ अमृतलाल ओझा के पिता ने नौकरी छोड़कर अपना निजी कोयले का कारबार मेसर्स लालजी रेवाशंकर ओझा एण्ड सन्स के नाम से प्रारम्भ कर दिया। श्री अमृतलाल ओझा भी इस कार्य्य में अपने पिता की मदद करने लगे। इस व्यवसाय में इनको अच्छा लाभ होने लगा। तब इनके पिताने अंजर जाकर सेठ रेवाशंकर ओझा के सिर का कर्ज अदा कर दिया।

सेठ अमृतलालओझा जब झरिया कोल्डफील्ड में सर्विस करते थे उन दिनों कोयले के व्यवसाय में रेलवे बोर्ड, हिन्दुस्तानी और यूरोपियन कम्पनियों के बीच बहुत भेद भाव का व्यवहार करता था। देशी कम्पनियों से रेलवे बोर्ड जिस भाव से माल खरीदता था वही माल यूरोपियन कम्पनियों से उससे ऊंची कीमत पर खरीद लेता था। इस भेद भाव पूर्ण नीतिके विरुद्ध सेठ अमृतलाल ओझा ने बहुत आवाज उठाई। वे अपने इस केस को उच्च पदाधिकारियों के पास ले गये और अन्त में न्यू देहली में रेलवे बोर्ड के सर्वोत्तम अधिकारियों के पास जाकर इस भेद-भाव पूर्ण नीति का अन्त करवा दिया।

इन घटनाओंसे कोल क्षेत्र में सेठ अमृतलाल ओझा का नाम चमक उठा और थोड़े ही दिनों में सन् १६१६ में उन्होंने अपना एक आफिस कलकत्ते में मेसर्स खेङ्गारजो अमृतलाल एण्डको के नाम से स्थापित किया और अब ये सेठ खेङ्गारजी के साथ पार्टनरशिप में काम करने लगे।

इन लगातार सफलताओं से उत्साहित होकर सेठ अमृतलाल ने रानीगंजमें सन् १९२० में एक छोटा कोल फ़ील्ड सेठ खेङ्गारजी नानजी के साझे में खरीद लिया और एक ब्राञ्च ऑफ़िस झरिया में भी खोल दिया।

थोड़े समय के पश्चात् सेठ अमृत लाल ओझा ने अपना नाम गवर्नमेंट के विभिन्न विभागों और रेलवे डिपार्टमेंट के कोल-मर्चेण्टस की सूचिमें दर्ज करवालिया। जिसके परिणाम स्वरुप इनको कई लाईट रेलवेज़ की सोल सेलिंग एजन्सी प्राप्त हो गई और मेसर्स राबर्ट हडसन एण्ड को० की कोलियारीज

में काममें आने वाली मशीनरियों की बंगाल, बिहार, उड़ीसा और आसाम के लिए सोल सेलिंग एजन्सी प्राप्त हो गई।

सन् १९२३ के करीब रेलवे बोर्ड ने कुछ अपनी निजी कोल माइन्स ऐसे स्थान पर शुरू करने का विचार किया जहाँ पर रेलवे आसानी से कोयला प्राप्त कर सके और ऐसे संकट कालमें जब कि कोयला कहीं से प्राप्त न हो सके अपनी खदानों से कोयला प्राप्त करलें। इसके लिए हजारी बाग जिले में भूरकुण्ड नामक स्थान पसन्द किया गया और वहीं पर रेलवे ने अपनी कोलमाइन्स प्रारम्भ करने का निश्चय किया। इस कार्यके लिए रेलवेबोर्डके चीफ माइनिंग इंजीनियर ने उस क्षेत्र को डेवलप करने का भार सेठ अमृतलाल ओझा को सौंप कर उसकी सारी जवाबदारी इनको सौंप दी।

यह स्थान उस समय एक भयङ्कर जङ्गल के रूप में ही पड़ा हुआ था और जङ्गली जानवर वहाँ पर निवास करते थे और कभी भी किसी उपयोगी काम में वह नहीं लिया गया था। रेलवे बोर्ड का चीफ माइनिंग इंजीनियर श्री अमृतलाल ओझा की काम करने की शक्ति और उनकी ईमानदारी से परिचित था इसलिए इतने उत्तरदायित्व पूर्ण काम के लिए भी इनसे उन्होंने किसी प्रकार की जमानत अथवा डिपाजिट रकम की मांग नहीं की। इसके विपरीत सेठ अमृतलाल ने ही वहां कार्य्य प्रारम्भ करने के लिए बहुत बड़ी रकम रेलवे बोर्डसे ली। उस क्षेत्रमें इन्होंने अपनी कार्य कुशलता से कई कोयले की खदानों का विकास किया। जिसके लिए गवर्मेंमेंट को साठ लाख रुपये से अधिक रकम उस क्षेत्रमें लगाना पड़ी यह एक पूर्ण विश्वास और सहयोग का उदाहरण था।



स्व० सेठ अमृत लाल ओझा

सन् १९२८ में सेठ नानजी खेंगारजी ने अपना पार्ट इस फ़र्म से अलग कर लिया और तब से सेठ अमृत लाल ओझा मेसर्स अमृत लाल ओझा एण्ड कम्पनी के नाम से अपना स्वतन्त्र व्यवसाय करने लगे। सन् १९३१ में यह कम्पनी प्रायवेट लिमिटेड कम्पनी के रूप में बदल दी गई।

सन् १९३० में सेठ अमृत लाल ओझा हिन्दुस्तान की तरफ से एम्प्लायर्स डेलीगेट चुने गये और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिए जेनेवा गए। जहां उन्होंने सारे यूरोप की व्यापक यात्रा की। यूरोप यात्रा से वापस आने के बाद उन्होंने अपने व्यवसाय को भारत वर्ष से बाहर भी फैलाने

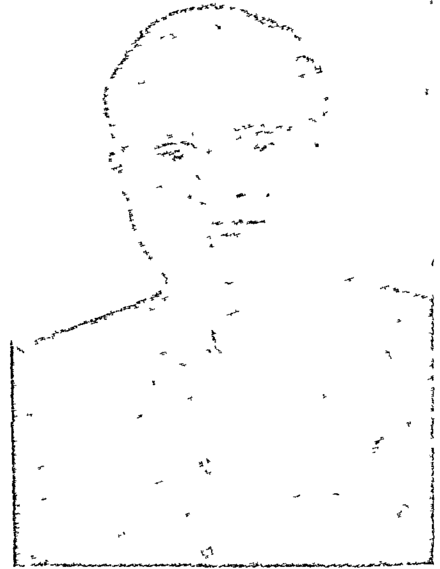
का निश्चय किया और बरमा में रंगून के अन्दर मेसर्स अमृतलाल ओझा एण्ड कम्पनी के नाम से अपना ऑफिस खोला और एक पब्लिक लि० शूगर मिल की वहीं स्थापना की।

सन् १९३३ में आपने हांगकांग, केण्टन और चीन के अन्तर्गत वामपुआ में अपने ऑफिस खोले और इन स्थानों पर भारत वर्ष से कोयले का निर्यात करना प्रारम्भ किया।

सन् १९३५-३६ में आपने और भी कुछ कॉलेरीज खरीदली और उन सबको पब्लिक लि० करा दिया।

सेठ अमृतलाल ओझा ने कलकत्ते में एक अप टू-डेट और आधुनिक ढंग का सेफ डिपाजिट वॉल्ट स्थापित किया। इस क्षेत्र में आप पायोनियर माने जाते है। क्योंकि इस पद्धति का कोई भी सेल्फ डिपाजिटवॉल्ट इसके पहले नहीं था। पब्लिक ने आपके इस कार्य को बहुत पसन्द किया।

इसी समय में आपने अपनी एक आफिस बम्बई में भी खोली और इसके साथ ही उद्योग की कुछ दूसरी लाइनों में जैसे टेक्सटाइल, बीमा, जहाजी कम्पनी और इनामेल वर्क्स में भी प्रवेश किया। कच्छ स्टेट ने भी आपको अपने यहां के खनिज द्रव्यो का विकास करने के लिए सलाह लेने को बुलाया।


सेठ भूपत लाल ओझा

कलकत्ते के इण्डियन चेम्बर आफ कांमर्स के संस्थापकों में सेठ अमृतलाल ओझा भी एक प्रमुख व्यक्ति थे। वे इण्डियन माइनिंग फेडरेशन की कमेटी के अपनी युवावस्था में ही मेम्बर हो गए थे और इण्डियन कोल कमेटी के भी मेम्बर चुने गये थे। जब इण्डियन माइनिंग फेडरेशन विहार गवर्नमेंट के द्वारा रिकगनाइज्ड किया गया। उस समय सेठ अमृत लाल ओझा पहले मेम्बर थे जो सन् १९२९-३१ तक विहार लेजेस्लिटिव कौन्सिल में फेडरेशन का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुने गये थे।

आप ऑल इण्डिया श्रीमाली ब्राह्मण सभा के द्वितीय अधिवेशन के अहमदाबाद में प्रेसीडेण्ट चुने गए और लगातार सात वर्ष तक इस पद रहे।

इण्डियन माइनिंग फेडरेशन के भी आप प्रेसीडेण्ट चुने गये और साथ ही आपने इण्डियन कॉलेरी ऑनर्स एसोसिएशन नामक एक अलग संस्था की स्थापना की। इस संस्था के आप लगातार सात वर्ष तक प्रेसीडेण्ट रहे।

सन् १९४० में आप फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज के प्रेसीडेण्ट चुने गये। उस समय उनके दिए हुए वक्तव्य और भाषण लन्दन और न्यूयार्क में बड़े गौर से अध्ययन किये जाते थे। भारत वर्ष की औद्योगिक और व्यवसायिक स्थिति में दिलचस्पी रखने वाले लोग आपके वक्तव्य और भाषण बड़े ध्यान से पढ़ते थे। आप एक तरह से पूर्वीय औद्योगिक ग्रूप के नान ऑफिसियल सलाहकार होगये थे।

सामाजिक उन्नति और समाज सुधार तथा शिक्षा प्रसार के कामों में भी आपकी बड़ी दिलचस्पी थी। आप आठ वर्षों तक कलकत्ता के एंग्लो गुजराती स्कूल—जिसमें करीब २००० लड़के और लड़कियां शिक्षा प्राप्त करती हैं, वे जनरल सेक्रेटरी रहे, आप स्कूल की मैनेजिंग कमेटी के अध्यक्ष चुने गये और अपनी मृत्यु पर्यन्त इस स्थान पर बने रहे।

दूसरे महायुद्ध के समय में जब इस देश में कोयले का संकट पैदा हो गया और सरकार को कोयले की बहुत अधिक आवश्यकता हुई तब सरकार ने विलायत से कोल कमिश्नर की जगह पर एक अंग्रेज को बुलाया और उसको कोयले की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में पूरा अधिकार दे दिया। इस कमिश्नर की कार्य-पद्धति से भारतीय कोयला व्यवसाय को बड़ा आघात पहुँचने लगा। सेठ अमृतलाल ओझा ने इसके खिलाफ बड़े जोर से आवाज उठाई और नई दिल्ली के उच्च अधिकारियों के पास बड़े तर्क पूर्ण ढंग से अपने पक्ष को पेश किया। इसका बहुत ही अच्छा परिणाम हुआ और एक समझौता-पूर्ण प्लॉन पेश करने को इनसे कहा गया। तुरन्त ही इन्होंने अपनी योजना कोल कण्ट्रोल बोर्ड के सामने पेश की जो कि गवर्नमेंट के द्वारा तुरन्त स्वीकार कर ली गई। कोल कण्ट्रोल बोर्ड की स्थापना के समय भी इनको काफी लड़ाई करना पड़ी और जब कोयले की कीमत स्थिर करने का प्रश्न उठाया तो भारतीय ग्रूप और यूरोपियन ग्रूप के बीच बहुत मतभेद हो गया। ऐसे समय में भी अमृत लाल ओझा ने ऐसी योजना बतलाई जिससे दोनों पार्टियों को संतोष हो गया। इस योजना से भारतीय कोल ग्रूप को करीब दो करोड़ रुपये का मुनाफा हुआ। तभी से सेठ अमृत लाल ओझा भारतीय कोल ग्रूप में कोलकिंग के नाम से प्रसिद्ध हो गये और कोयले से सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक चीज पर इनकी सलाह वजनदार मानी जाने लगी।



सेठ केशव लाल ओझा

इन सब कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहने पर भी सेठ अमृत लाल ओझा पब्लिक सेवा के कार्यों से कभी उदासीन न रहे। सन् १९३४ में जब बिहार में भयंकर भूकम्प आया तब कलकत्ते के मेयर द्वारा स्थापित की हुई कमेटी में आप भी सम्मिलित हुए थे। बंगाल के भयंकर अकाल के समय में भी आपने बहुत

द्रव्य एकत्रित कर अकाल पीड़ितों को सहायता पहुँचाई थी। इनका स्वर्गवास सन् १९४४ में १८ अक्टूबर नव वर्ष प्रतिपदा के दिन अचानक हार्ट फेल से हो गया।

सेठ अमृतलाल ओझा के ग्यारह पुत्र हैं जिनके नाम श्री बसन्त राय ओझा (२) श्री भूपत राय ओझा (३) श्री केशव लाल ओझा (४) श्री गुणवन्तराय ओझा (५) श्री चिमन लाल ओझा (६) श्री नवीनचन्द्र ओझा (७) श्री मनसुखलाल ओझा (८) श्री गिरीशचन्द्र ओझा (९) श्री विनायक राय ओझा (१०) श्री प्रमोदराय ओझा और (११) श्री श्रीराम ओझा हैं।

श्री बसन्त राय ओझा

श्री बसन्तराय ओझा श्री अमृतलाल ओझा के सबसे बड़े पुत्र हैं आप अपने बम्बई आफिस का काम देख रहे हैं।

श्री भूपतराय ओझा

श्री भूपतराय ओझा श्री अमृतलाल ओझा के द्वितीय पुत्र हैं। आपका जन्म सन् १९१८ में हुआ। आप मेसर्स अमृतलाल ओझा एण्ड कम्पनी के पार्टनर हैं और नीचे लिखी कम्पनियों के डायरेक्टर हैं।

(१) अमृतलाल ओझा एण्ड कम्पनी लि० (२) ग्रेट सोशल लाइफ एण्ड जनरल इन्स्युरेंस को० लि० (३) सेफ डिपाजिट कम्पनी लि० (४) प्योर सीतलपुर कोल कन्सर्न लि० (५) श्री महाकाली कोल माइन्स लि० (६) नेशनल मेटल इण्डस्ट्रीज लि० (७) मेटल प्राडक्ट्स लि० (८) ओझा ब्रदर्स लि० (९) गजाधर काजोरा कोल मॉइन्स लि० (१०) जोटडेमो कोलियारी प्रा० लि० (११) इण्डियन कोल शिपिंग इण्डस्ट्री लि० (१२) न्यू बासदेव पुर कोल कम्पनी लि०।

आप इण्डियन माइनिंग फेडरेशन की वर्किंग कमेटी के मेम्बर हैं तथा इञ्जीनियरिंग एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के सदस्य हो चुके हैं।

श्री केशवलाल ओझा

श्री केशवलाल ओझा का जन्म १९२६ में हुआ। आप इस समय नीचे लिखी कम्पनियों के डॉयरेक्टर हैं।

(१) अमृतलाल ओझा एण्ड को (प्रायवेट लि०) (२) ओझा ब्रदर्स प्रायवेट लि० (३) सौराष्ट्र कोल एजण्ट्स (प्रा०) लि० (४) जोंटडेमो कोलियारी प्रा० लि० (५) मेटल प्राडक्ट्स प्रा० लि० (६) प्योरे सीतलपुर कौल कन्सर्न लि० (७) गजधर काजोरा कोल माइनर लि०। श्री महाकाली कोल माइन्स लि०।

श्री केशवलाल ओझा इण्डियन कोलियारी ऑनर्स की वर्किंग कमेटी के मेम्बर हैं। गुजरात सम्मिलनी के वाईस प्रेसीडेण्ट हैं। तथा भवानीपुर गुजराती स्कूल कमेटी तथा कलकत्ता एंग्लो गुजराती स्कूल कमेटी के भी मेम्बर हैं।

श्री गुणवन्तराय ओझा

श्री गुणवन्तराय ओझा का जन्म सन् १९२८ में हुआ। आप राजनीति में कांग्रेसी विचार धारा के पृष्ठ पोषक हैं। कल्याणी कांग्रेस के अधिवेशन में आपकी सेवाएं बहुमूल्य रही थीं। कांग्रेस के बड़े २ नेता कलकत्ते में विशेष कर आप ही के यहाँ ठहरते हैं। आप न्यू वासदेवपुर कोल कम्पनी लि०, अमृतलाल ओझा एण्ड कम्पनी (प्रायवेट) लि०, तथा ग्रेट सोशल लाईफ एण्ड जनरल इन्स्युरेंस कम्पनी के डॉयरेक्टर हैं।

—:※:—

भारत के उद्योग और उद्योगपति

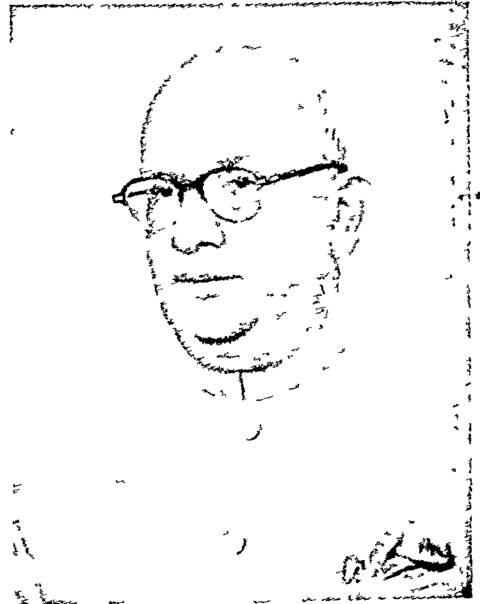
Indian Industries & Industrialists



मध्य भारतके प्रसिद्ध उद्योगपति

राय बहादुर सेठ लालचन्द सेठी

मध्य भारतके औद्योगिक क्षेत्रमे राय बहादुर लालचंद सेठीका एक प्रमुख स्थान है। आपका जन्म सन् १८६३ में हुआ। बाल्यकालसे ही आपके अन्दर प्रखर प्रतिभा के लक्षण दिखलाई पड़ रहे थे। राजस्थानके सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध कवि और साहित्यकार पं० गिरधर शर्मा नवरत्नके सहयोगसे आपमें साहित्यिक अभिरुचि भी पैदा हो गई थी और सन् १६११-१२ के उस समयमें जब कि हिन्दी साहित्य अत्यन्त पिछड़ी हुई हालतमें था और देशमें उँगलियोंपर गिनने लायक हिन्दीके लेखक नजर आते थे आपने झालरा पाटनमें राजपूताना हिन्दी साहित्य सभाकी स्थापनाकी और अपने खर्चसे उत्तमोत्तम साहित्यका प्रकाशन प्रारम्भ किया था।



राय बहादुर सेठ लालचन्द सेठी

इसी प्रकार व्यवसायिक और औद्योगिक जगत्में भी रा० ब० सेठ लालचन्द सेठीने अपनी प्रतिभा और कर्मठताका पूरा प्रमाण दिया है। सन् १६२८ के पहले आपके औद्योगिक प्रतिष्ठानोंकी हालत मैनेजमेण्टकी खराबीसे बहुत कमजोर और अस्तव्यस्त हो गई थी इस स्थितिको देखकर इसी वर्ष विनोद मिलके मैनेजमेंटका कुल भार आपने अपने ऊपर ले लिया। तभीसे इन प्रतिष्ठानोंने एक नई करवट बदली और दिन-दिन तरक्कीके आसार नजर आने लगे। सन् १६३४ में इसी सफलता से उत्साहित हो आपने एक नवीन मिलको खरीदकर उसका नाम दीपचन्द मिल रख दिया। यह मिल भी खूब चली। लूम्स और स्पिण्डिल्स बढ़ने लगे, नईसे नई मशीनरियाँ लगाई जाने लगीं और इस प्रकार इस कुशल संचालकके संचालनमें यह औद्योगिक प्रतिष्ठान आजकी उन्नत स्थितिमें पहुँच गया। आपकी सार्वजनिक सेवाओं से प्रसन्न होकर तत्कालीन भारत सरकारने आपको "रायबहादुर", ग्वालियर सरकार ने "ताजीरुल मुल्क" और जैन समाजने "वाणिज्य भूषण" की उपाधियांसे अलंकृत किया।

मेसर्स बिनोदीराम बालचन्द उद्योग प्रतिष्ठान

प्रथम प्रकाश

मध्यभारतके उद्योग धन्धोंमें मेसर्स बिनोदीराम बालचंदका नाम बहुत अग्रगण्य है। सन् १९१३ से ही यह फर्म मध्यभारतके औद्योगिक क्षेत्रमें अपना हाथ बटा रही है। इस फर्मके मूल संस्थापक सेठ बिनोदीराम जोधपुर राज्यके नागोर नगरमें श्री गुमानीरामके यहाँ उत्पन्न हुए थे। आपने सम्वत् १८८१ में झालरापाटन आकर "बिनोदीराम बालचन्द" के नामसे फर्म कायम की और अफीमका व्यवसाय शुरू किया। इस व्यवसायसे आपको बहुत लाभ हुआ और इन्दौर आदि स्थानोंमें इस फर्मकी शाखाएँ स्थापित की गई।

सम्वत् १८३६ में सेठ विनोदीराम के यहाँ सेठ बालचन्दका जन्म हुआ। ये ही वे व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस प्रतिष्ठानको प्रतिष्ठावान बनाकर उसकी शाखाएँ दूर २ तक फैलाईं। बंबई, कोटा, इन्दौर उज्जैन आदि स्थानोंमें शाखाओंकी स्थापना आपके समय में ही हुई। आपने अपने उद्योगके सभी कार्यों में धार्मिकता, सचाई और गरीबोंको सहायता, इन गुणोंको प्रधानता दी। आपको साधु-सेवाका बड़ा चाव था। आपने संघके साथ जैन तीर्थोंकी यात्राएँ कीं, और कई धार्मिक कार्य किये। आपके समयमें फर्मने अपने वाणिज्य व्यवसाय को बहुत बढ़ा लिया था। आपके चार पुत्र हुए —सेठ दीपचन्द १९३३ सेठ मानिकचन्द (१९४५) सेठ लालचन्द (१९५०) सेठ नेमीचन्द (१९५२) इस प्रकार लहलहाते हुए कारोबार और परिवारको छोड़कर सम्वत् १९५६ में आप स्वर्ग सिधारे।



स्वर्गीय सेठ बालचन्द

आपके पीछेसे आपकी छठी धर्मपत्नी श्रीमती पाँचीबाईने युवावस्थामें अपना वैधव्य जीवन अत्यंत सादा, सात्विक और साध्वीरूपमें धार्मिकताके साथ बिताया। आप मुनीम श्री लूनकरनकी सहायतासे प्रत्येक दूकानके कार्यको सुचारु रूपसे चलातीं रहीं। आपहीके सामने 'बिनोदमिल' की स्थापना हुई, जो आज मालवाप्रान्तकी प्रमुख मिलोंमें है।

सेठ दीपचन्दने सारा जीवन अत्यन्त सादगीके साथ व्यतीत किया। आपमें परोपकार और दयाकी मात्रा अधिक थी। ये बहुत सरल स्वभावके थे।

रायबहादुर, ताजीरुलमुल्क, वाणिज्यभूषण सेठ मानिकचन्द फर्म की उन्नतिके लिए सदा प्रयत्नशील रहे। आप गवालियर नरेश स्व० माधवराव सेंधियाके आनरेरी ए० डी० सी० थे। महाराजका आप पर सच्चा स्नेह था। उज्जैन नगर मध्यभारतका केन्द्रविन्दु है, और यहाँ कपासकी आवक तथा उपज भी अधिक है, यह देखकर सेठजीने यहाँ एक कपड़ेकी मिल खोलनेका इरादा किया। उस समय माधव महाराज अपने राज्यमें उद्योग-धन्धोंको काफी बढ़ाना चाहते थे। अतः आपने सेठजीके प्रस्तावको सहर्ष स्वीकार करके काफी जमीन मिल बनानेके लिए दे दी। फलस्वरूप सन १६१३ में उज्जैनमें "विनोद मिल्स" के नामसे काटन स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल की स्थापना २१ लाखकी पूँजीसे, उक्त माधव महाराज की संरक्षतामें हो गई और राज्यके कंपनी एक्टके मुताबिक इसकी रजिस्ट्री कराली गई। सेक्रेटरीज, ट्रेजरर्स, एवम् एजेंट्स मेसर्स बिनोदीराम बालचन्द रहे; सेठ मानिकचन्दका अन्य राजा महाराजाओंसे भी परिचय था, इसीसे उस समय विनोद मिलकी स्थापनामें काफी मदद मिल सकी।


स्वर्गीय रायबहादुर माणिकचन्द सेठी

सेठ मानिकचन्द के नामसे झालरापाटनमें एक अच्छा औषधालय चल रहा है जिससे सभी लोग लाभ उठाते हैं। वहाँ अच्छे पैमानेपर एक प्रसूतिगृह बनानेकी भी जल्दी ही योजना है। खंडेलवाल जैन जातिमें सबसे प्रथम आपने ही विलायत यात्राएँ की थीं। आपके सुयोग्य दत्तक पुत्र बां० तेजकुमारजी सेठी बी० एस० सी० अथक परिश्रमके साथ मिलोंका कार्य देखते हैं।

सेठी परिवारमें इस समय रा० ब० लालचंद सेठी, श्री नेमीचन्द सेठी, और स्व० दीपचन्दके सुपुत्र भँवरलाल सेठी हैं, जो अपने कारोबारकी उन्नतिमें सदा तत्पर रहते हैं।

श्रीलालचन्दसेठीकी अनुकरणीय कार्य पद्धतिसे आज मिल इतनी उन्नत दशामें दिखाई दे रहा है। आप अपना सारा समय मिल-कार्यमें लगाते हैं। यही आपका "आराम" कहा जा सकता है। आपने मिलोंमें कुशल कारीगरों के सिवा निपुण अफसर रखे हैं। कई अंग्रेज अफसरोंको हटाकर उनके स्थान पर भारतीयोंको काम दिया है। कुछ लोगोंको छोटे पदों से ऊंचे पदोंपर पहुँचाया है जैसे—श्री पूनमचन्द गर्ग, पन्नालाल वर्मा, रामनिवास गोयल इत्यादि। प्राचीन सेवकों में बा० रतीलालजी अध्या-

पक आज मिलके मैनेजर और चीफ इंजिनियर दोनों पदोंपर हैं। आपके पिताजी भी मिलमें इंजिनियर थे। समय२ पर अच्छी रकम पारितोषिकमें देकर इनका उत्साह बढ़ाया गया है।

वाणिज्यभूषण राज्यरत्नाकर सेठ नेमीचंद के ज्येष्ठ पुत्र बा० नरेन्द्रकुमार (डेनिस सेठी) एम० ए० यूरोपयात्रा कर आए हैं। अंग्रेजी वाङ्मयके तुलनात्मक अध्ययनका आपको बड़ा शौक है। आप पी० एच० डी० के लिए कलकत्तामें अध्ययन कर रहे हैं। शेष सन्तानें विद्याध्ययन कर रही हैं।

वाणिज्यभूषण सेठ भँवरलाल होलकर राज्यके समयमें एम० एल० ए० थे। अब आप इन्दौर बैंक तथा महाराज शूगर मिलके डाइरेक्टर हैं। इन्दौर के हर सार्वजनिक कार्यों में आप भाग लिया करते हैं आपके सुयोग्य पुत्रों में बा० कैलाश चन्द्र, बाबू राजेन्द्रकुमार बी० ए० एल-एल० बी० तथा बाबू वीरेन्द्रकुमार एम० ए० हैं। आप तीनों महानुभाव दूकानोंका, जीनिंग व प्रेसिंग फेक्टरियोंका काम सम्हालते हैं। बूँदीके निकट क्रय किया हुआ आपका अल्फानगर ग्राम है, जहाँकी कृषि उपजसे एक लाख रुपये वार्षिक आय होती है। इसमें चावल और गेहूँकी पैदावार अच्छी होती है। इसका निरीक्षण तथा कोटा मैच फेक्टरी का निरीक्षण भी आप ही करते हैं।

प्रारम्भमें विनोद मिलका काम मुनीब श्री लूनकरणके पुत्र श्री मदनमोहन पांडिया देखते रहे। तत्पश्चात् रायबहादुर, ताजीरुलमुल्क, वाणिज्यभूषण जनरल सेठ लालचंदने मिल संचालनका कार्य १२ जून सन् १६२८ को अपने हाथों में ले लिया। तबसे मिल बराबर उन्नति करता जा रहा है।

विनोद मिलके पास ही 'दीपचन्द मिलको' ३ सितंबर सन् १६३४ में ४६ ०००) रु० में खरीद कर विनोद मिलमें शामिल कर लिया गया। दोनों मिलोंमें लूम्स और स्पिंडल्सकी काफी संख्या बढ़ा दी गई। इस समय दोनों मिलोंमें १३३६ लूम्स और ५८००० स्पिंडल्स काम करते हैं। इनकी पूँजी सन् १६४६ से २० लाख से बढ़ाकर ६० लाख रु० की कर दी गयी है। दैनिक मजदूरों की संख्या ५००० है। दो पाली चलती है। प्रतिमास ४ लाख रुपया वेतनके रूपमें दिया जाता है। दोनों मिलों का संयुक्त वस्त्र उत्पादन ६६ लाख पौंड अर्थात् ४ करोड़ ७ लाख गज वार्षिक होता है। बढ़िया कपड़ा और सूत बनता है। यहाँका बना कपड़ा मध्यभारतके अतिरिक्त भारतके बड़े २ प्रान्तोंमें, जैसे उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली, में व्यापारियोंके द्वारा काफी तादादमें जाता है। शाखाओंके द्वारा भी अच्छी बिक्री होती है। भारतके बाहरके देशोंमें भी यहाँके कपड़े की खूब माँग रहती है।

५० लाखसे ऊपरकी नई मशीनरियाँ इन मिलोंमें लगाई गई हैं। ऐसी माडर्न-मशीनरियाँ लगाने वाला मध्यभारतमें यह एक ही मिल है। अभी तक इस मिलका जो विकास हुआ है, वह केवल इंजिन द्वारा बिजली उत्पन्न करने से ही हुआ है, परन्तु यदि विद्युत्प्रेषण की चम्बल योजना कार्यान्वित हो जायगी तो इसका विकास और भी बहुत हो जायगा।

कम्पनीकी ओरसे मजदूरोंकी सुविधाओंका बहुत ख्याल रखा जाता है। दोनों मिलोंमें एयर कन्डीशन्स का प्रबन्ध है। श्रमिकोंके बालकोंके लिए "विमल प्राइमरी स्कूल" बना है। छोटे बच्चों के लिए

"विमल शिशुगृह" है और चिकित्साके लिए "श्रीविमलचन्द हास्पिटल" है जिसमें दैनिक रोगी-संख्या ६०० के लगभग रहती है। मजदूरोंके रहनेके लिए क्वार्टर्स बने हुए हैं, और भी क्वार्टर्स बनवानेकी योजना है।

मिलसे सम्बन्धित अन्य कारखाने निम्नलिखित हैं:—

(१) दि भूपेन्द्र आयर्न एन्ड मेटल वर्क्स—यह आधुनिकतम यन्त्रोंसे सज्जित फाउण्डरी है जिसमें उत्तम श्रेणीका छोटा बड़ा कास्टिंग होता है।

(२) नरेन्द्र केमिकल वर्क्स

(३) दि विनोद सिल्क एंड आर्ट सिल्क मिल्स—इसमें उत्तम प्रकारका रेशमी वस्त्र निर्माण होता है। जैसे जारजेट, वाइल, साटन, छींट साटन आदि

(४) दि नरेश आयल मिल्स

(५) दि नरेश जीनिंग एंड प्रेसिंग फैक्टरी

(६) दि प्रदीप टेप एंड वेविंग फैक्टरी

(७) दि विनोद एब्सारबेंट काटन वूल एंड लिंट फैक्टरी

(८) दि कैलाश सोप फैक्टरी

(९) दि राजेंद्र प्रेसिंग फैक्टरी आगर

रा० ब० सेठ लालचंद सेठीका जन्म संवत् १९५० में हुआ आप अत्यन्त कार्य्य कुशल, उत्तम संगठनकर्त्ता और पुराने साहित्य प्रेमी हैं। सन् १९२८ में आपने अपने औद्योगिक कारखानोंकी व्यवस्था अपने हाथमें ली और इन कारखानों को ऐसी उन्नति पर पहुँचाया कि मध्यभारतके औद्योगिक क्षेत्रमें इस प्रतिष्ठानका एक प्रमुख स्थान बनाया।

श्री लालचन्दसेठीका जीवन सभी दिशाओंमें सदा कर्त्तव्य परायण रहा है। आपके पुत्र बा० विमलचन्द्र सेठी (उम्र १८ साल) के देहावसान से यद्यपि आपके हृदयमें गहरा घाव लगा है, परन्तु उनकी पूर्ति उन्हींके दो पुत्र बा० भूपेन्द्र कुमार बी० ए० तथा तेजकुमार बी० एस० सी० ने अपनी विनयशील कार्यदक्षता द्वारा कर दी है। दोनों सुयोग्य भ्राता मिलोंके प्रत्येक कार्यका बड़ी तत्परता से निरीक्षण करते हैं। बा० भूपेन्द्रकुमार सेठी यूरोपके जर्मन, इटली, फ्रांस, इंग्लैंड, स्वीडेन, स्विटजरलैंड आदि देशोंका ६ मास तक भ्रमण करके १५ अक्तूबर सन् १९५५ को सपत्नीक स्वदेशमें सकुशल आ गये हैं। आप अपने मिलोंमें मशीनरियों का तथा सब प्रकारका प्रेक्टीकल ज्ञान प्राप्त करके मिलोंका संचालन-कार्य बड़ी योग्यतासे कर रहे हैं। आपने यहाँके बाद जयाजीराव काटन मिल ग्वालियरमें रहकर शिक्षा प्राप्त की। पश्चात् भारतके प्रमुख नगर अहमदाबाद, बंबई, कोयम्बटूर, मदुरा आदिके मिलोंका अध्ययन किया। फिर आपने यूरोप जाकर बड़ी बड़ी इन्डस्ट्रीजका नया ज्ञान और नया अनुभव प्राप्त किया है।

सेठ मानिकचन्द, सेठ लालचन्द, सेठ भँवरलाल व सेठ नेमीचन्द झालावाड़ राज्य द्वारा प्रायः सभी राजकीय पदवियोंसे तथा सन्मानोंसे विभूषित हैं। मध्यभारतके राजप्रमुख महोदयकी सेठ लालचन्दपर पूर्ण कृपा है। आप विद्याव्यसनी और हिन्दीके परम हितैषी हैं। इसीसे झालरापाटन, उज्जैन, इन्दौरकी हिन्दी सभाओंके आप सभापति, प्रधान मंत्री तथा सदस्य हैं। आपका विशाल पुस्तकालय है। कई औद्योगिक संस्थाओंके आप सभापति, उपसभापति और मेम्बर हैं। मध्यभारत फाइनेन्स कारपोरेशन के डाइरेक्टर तथा चेम्बर आफ कामर्सके प्रेसीडेंट हैं। विनोद मिलके मैनेजिंग डाइरेक्टर और हुकुमचन्द मिल तथा अन्य कई प्रतिष्ठानों के भी आप डाइरेक्टर हैं। आपके सभापतित्वमें झालावाड़ और उज्जैनकी नगरपालिकाओंमें अनेक जनहित कार्य हुए हैं। उज्जैन नगरपालिकाके आप सन् १९३३ से १९४७ तक चेयरमैन रहे हैं। हाल हीमें आपको मध्यभारत मिलमालिक संघका अध्यक्ष चुना गया है। उज्जैनका माडल स्कूल, जो विनोद मिलकी सहायतासे चल रहा है, उसके आप सभापति हैं और उसकी देखरेख करते हैं। सभी संस्थाओंके कार्योंमें आप यथोचित श्रम और समय लगाते हैं। आपमें उदारता और मृदुभाषिता है। उज्जैनमें पंच पंचायत के झगड़ोंको निपटानेका भार प्रायः आपपर डाला जाता है, जिसे आप योग्यताके साथ निपटाते हैं।

मिलके अतिरिक्त इस फर्मकी १३ दूकानें भारतके भिन्न-भिन्न नगरोंमें है। ग्वालियर, उज्जैन, आगरा, पाइली, इन्दोर, सनावद, खरगौन—ये ७ दूकानें मध्यभारतमें है। बम्बईमें प्राचीन दूकान है। राजस्थानमें कोटा और भवानीमंडी तथा हैदराबादमें उमरी और निगवामें दूकाने हैं।

जीनिंग तथा प्रेसिंग फैक्टरियाँ मध्यभारतमें—सनावद, खरगौन, आगर, नीमाड़खेड़ी, पाइली और आकेदियामें स्थित है। हैदराबादमें—ऊमरी और निगवामें। राजस्थान कोटामें मैचफैक्टरी है।

हेडआफिस झालरापाटनमें है। वहाँ तथा इन्दोर, उज्जैन, महू आदि नगरोंमें फर्मके कई विशाल भवन और बाग-बगीचे हैं।

भारत के उद्योग और उद्योगपति
Indian Industries & Industrialists

भारत की औद्योगिक प्रतिभाएँ

Indiustrial Magnates of India

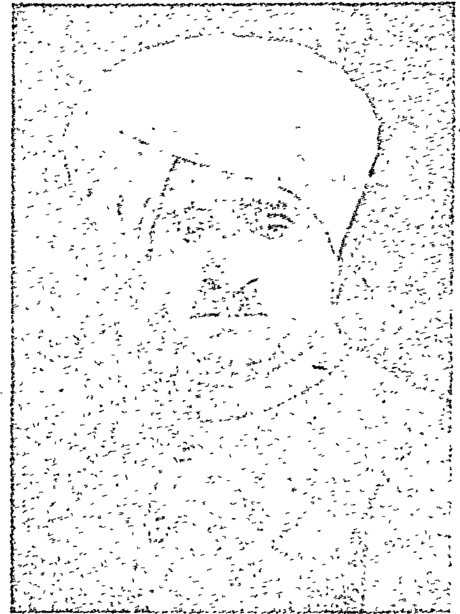
भण्डारी उद्योग प्रतिष्ठान इन्दौर

भण्डारी उद्योग प्रतिष्ठान इन्दौर

भण्डारी उद्योग प्रतिष्ठान मध्य भारत का एक प्रसिद्ध औद्योगिक प्रतिष्ठान है। इस प्रतिष्ठान में दो कपड़े की मिलें, दो आॅयर्न एण्ड स्टील फैक्टरी और एक बीमा कम्पनी सम्मिलित हैं। इस उद्योग के संस्थापक मध्य भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति स्व० रायबहादुर कन्हैयालाल भण्डारी थे जिनका परिचय आगे दिया जाता है।

राय बहादुर, सेठ कन्हैलालाल भण्डारी का जन्म सन् १८८८ में हुआ। ये मेसर्स नन्दलाल भण्डारी एण्ड सन्स लिमिटेड के अध्यक्ष तथा मध्य-भारत के प्रसिद्ध उद्योग पतियों में से एक थे।

राय बहादुर सेठ कन्हैयालाल भण्डारी का शिक्षण इन्दौर के सरकारी विद्यालय में हुआ था। इन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन काल में ही अपने पिता के द्वारा चलाये हुए कपड़े के व्यापार में बहुत अधिक रुचि बताई और सन् १९०३ में अपनी शिक्षा के कार्य को समाप्त करके अपने पिता के व्यापार में सहायता देना प्रारम्भ कर दिया।



राय बहादुर सेठ कन्हैयालाल भण्डारी

सेठ भण्डारी की रुचि प्रारम्भ से ही औद्योगिक क्षेत्रमें प्रवेश करने की ओर रही। सन् १९१७ में आपने सनावद में पट्टे पर जीनींग और प्रेसिंग फैक्टरी लेकर आपने अपना जीवन प्रारम्भ किया। सन् १९२० में आपने होल्कर स्टेट का मिल २० वर्ष के लिये पट्टे पर लिया। बाद में यह मिल इन्होंने खरीद लिया। यद्यपि यह मिल ६० वर्ष काम कर चुका था तो भी इन्होंने अपनी बुद्धिमता, धैर्य, मितव्ययी व्यवस्था और अन्य कितने ही सुधारों को करके इसको एक सफल मिल बनाया। इन्होंने डाईंग और ब्लीचींग के प्लान्ट लगाये और लाखों रुपये की कीमत की नई मशीनें लगाई जिनसे कि भिन्न २ जाति के रंगीन कपड़े बनाये जा सके और माल की क्वालिटी सुधारी जा सके। इन्होंने अपने मिल के माल को उत्तर-प्रदेश के तथा पंजाब के बाजारों में भेजना आरंभ किया और बाद में बिलोचीस्थान तथा अफगानिस्थान में भेजने लगे।

सेठ भण्डारी का औद्योगिक उत्साह केवल इसी से सन्तुष्ट नहीं हुआ। सन् १६२२ में ३० लाख रुपये की पूँजी लगाकर आपने "दी नन्दलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड" के नाम से एक कॉटन स्पीनींग एण्ड वीवींग मिल प्रारम्भ किया जिसमें एक दम आधुनिकतम मशीनें लगाईं गईं। यह मध्य-भारत में बहुत ही कार्य दक्ष तथा सुव्यवस्थित मिल मानी जाती है। मिल के कर्मचारियों को बहुत सी ऐसी सुविधाएँ दी जातीं हैं जोकि "रॉयल कमीशन ऑन लेबर" के द्वारा सिफारिश की जातीं हैं।

सेठ भण्डारी ने एक आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी भी प्रारंभ की। यह कम्पनी सन् १६३१ से कार्य कर रही है। यह कारखाना वस्त्र उद्योग की मशीनें तथा उनके पूर्जे, रोलिंग मिल्स, ऑइल एन्जिन इत्यादि का उत्पादन करता है। यह कम्पनी "भण्डारी आयरन एण्ड स्टील कम्पनी" के नाम से प्रसिद्ध है। बहुत ही थोड़े समय के दरमियान में इसने समस्त राजस्थान, मध्य-भारत और मध्य-प्रदेश को अपने ग्राहक बना लिये थे।

सेठ भण्डारी हमेंशा अपने कर्मचारियों तथा मजदूरों के साथ सौजन्य पूर्ण का व्यवहार करते थे। मजदूरों की स्थिति की उन्नति तथा उनके स्वास्थ्य के हित और उनके सामान्य हित के लिये आपने बहुत सी सुविधाएँ प्रदान की। मजदूरों के आरोग्य के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सफाई के विभाग की स्थापना की गई। शुद्ध, ताजा और साफ पानी को प्राप्त करने के लिये विशेष प्रबन्ध किया गया। मजदूरों तथा खास तौर से उनके कुटुम्ब के व्यक्तियों के उपचार के लिये एक दवाखाने की व्यवस्था भी है जिसमें एक पूर्ण शिक्षित तथा अनुभवी डाक्टर रहता है। इन्होंने "नन्दलाल भण्डारी मेटरनीटी होम" के नाम से एक ८५००० रुपयों की लागत का प्रसूतिगृह बनवाया है जिसमें ३०००० रुपयों का प्रतिवर्ष खर्च होता है। यह प्रसूतिगृह सब सुविधाओं से सम्पन्न है, इसमें सब शिक्षित कार्यकर्त्ता हैं। यह मध्यम श्रेणी तथा निम्न श्रेणी के व्यक्तियों में बहुत प्रसिद्ध है जिनके लिये कि यह बनवाया गया है। भारत के तथा विदेशों के प्रख्यात व्यक्तियों ने इसके लिये प्रशंसा के शब्द कहे हैं।

सेठ भण्डारी ने अपने परिश्रम तथा प्रयास से बहुत अच्छे कार्य शनैः शनैः किये। विशाल औद्योगिक हलचलों की वृद्धि के अतिरिक्त उन्होंने इन्दौर में तथा इन्दौर के बाहर के अपनी जाति के व्यक्तियों के उत्थान के लिये हमेशा ध्यान दिया। उन्होने अपनी जाति के हित तथा उन्नति के लिये तथा समाज में फैले हुए बुरे रीति रिवाजो को जड़ से समाप्त करने के लिये भरसक प्रयत्न किया तथा सामान्य जनता की भलाई तथा हितों के लिये भी बहुत धन दान में दिया। इस विषय में उन्होंने बहुत सी सभाओं तथा अधिवेशनों में नेतृत्व किया।

रायबहादुर भण्डारी, नंदलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड, दी राय बहादुर कन्हैयालाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड, दी सेन्ट्रल इण्डिया इन्शोरेन्स कम्पनी लिमिटेड, गजेन्द्रसिंह रनधीरसिंह ऑइल मिल्स लिमिटेड, नन्दलाल भण्डारी एण्ड सन्स लिमिटेड के संचालकों की समिति के अध्यक्ष थे। भण्डारी आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, बिसको यनमार लिमिटेड, भण्डारी आयरन एण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड

उदयपुर, दी महाराना भूपाल इलेक्ट्रिक सप्लाय कम्पनी लिमिटेड उदयपुर, के संचालक थे। सदस्य ग्यारा पंच, रावर्टस नर्सिंग होम मैनेजिंक कमेटी, डेली कॉलेज की आर्थिक सलाहकार समिति। ये मध्य भारत विश्वविद्यालय, इण्डियन रेड क्रास सोसायटी होल्कर स्टेट वॉर रिलीफ फण्ड के कोषाध्यक्ष थे। २० वर्षों तक ऑनरेरी न्यायाधीश रहे। मिल मालिकों के संगठन के उपाध्यक्ष रहे। सन् १६४४ में इन्दौर में हुवे इंजिनियरिंग एसोसियेशन के २५ वें अधिवेशन के आजीवन सदस्य तथा सभापति रहे। आप गोल्ड एन्कलेट, हाथी सिरोपाव तथा इकोरी ताजीम से जोधपुर महाराज के द्वारा सम्मानित किये गये। इनका परिवार कई लाख रुपये सामाजिक, शैक्षणिक और स्वास्थ्य सुधार के लिये अब तक चन्दे के रूप में देता आया है। इनके द्वारा रामपुरा बोर्डिंग हाउस तथा नन्दलाल भण्डारी हाई स्कूल इन्दौर चलाये जाते हैं। आप बहुत अच्छे वक्ता थे तथा औद्योगिक उन्नति और योग विज्ञान में कॉफी दिलचस्पी लेते थे। व्यापारिक जीवन से निवृत्ति पाने के पश्चात् अपना अधिकतर समय पीड़ित मानव जाति को मुफ्त में आयुर्वेदिक औषधियाँ देने में व्यतीत करते थे। साधारण बीमारी के पश्चात् २२ नवम्बर सन् १६५३ को वे इस असर संसार से कूच कर गये।

सेठ भण्डारी को अपने पैतृक स्थान रामपुरा से बहुत अधिक प्रेम था। उन्होंने विद्यार्थियों के निवास स्थान के लिये रामपुरा में ३५०००) खर्च करके एक भवन का निर्माण किया और वहाँ के सरकारी अस्पताल में इनकी ओर से एक चीरा फाड़ी (Operation room) करने का कमरा बनवाया।

इन्होंने महाराजा तुकोजी राव हास्पिटल, इन्दौर में दो कुटुम्बों को रहने के लिये वार्ड बनवाये। संकट कालीन समय में भी उन्होंने किंग एडवर्ड हास्पिटल इन्दौर के मेडिकल स्कूल को २५०००) रुपये चंदे के रूप में दिये। उस समय के सेन्ट्रल इण्डिया के गवर्नर जनरल के एजेन्ट ने मेडिकल कॉलेज में भण्डारी पैथालॉजीकल लेबोरेटरी के उद्घाटन के समय उनको श्रद्धांजली अर्पित की। नन्दलाल भण्डारी हाईस्कूल के लिये अच्छा भवन बनवाने के हेतु उन्होंने ८०,००० रुपये खर्च किये जहाँ पर हाइस्कूल की शिक्षा के साथ साथ कला पूर्ण शिक्षा भी दी जाती है। इस विद्यालय पर ३०,००० रुपये प्रति वर्ष खर्च किया जाता है। सेठ भण्डारी हमेशा ही गरीब तथा योग्य विद्यार्थियों को छात्र वृत्ति दिया करते थे। उनके दान लाखों को संख्या में सरलता से गिने जा सकते हैं।

इनको पठन पाठन का बहुत बहुत शौक था। संसार के औद्योगिक तथा व्यापारिक सम्बन्ध की जटिल और वाद विवाद से परिपूर्ण समास्याओं पर अध्ययन करने की इनकी बहुत इच्छा रहती थी। उनके पास बहुत ही अच्छा तथा आधुनिकतम पुस्तकालय था। उनके पास सब महत्वपूर्ण विषयों तथा विचारधाराओं की पुस्तकों का संग्रह था।

इन्दौर, जोधपुर, उदयपुर, देवास और अन्य भारतीय रियासतों के महाराजा इनको बहुत आदर देते थे। ये होल्कर स्टेट के द्वारा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट नियुक्त किये। इन्होंने लगभग २० वर्षों तक इस स्थान पर काम किया।। कुछ वर्षों तक ये नगर पालिका के कार्पोरेटर रहे और इम्प्रुवमेंट ट्रस्ट बोर्ड के

सदस्य रहे। वे कितनी ही स्टेट कमेटियों के सदस्य थे। कितने ही वर्षो तक देवास (जूनियर) और मध्य भारत विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष रहे।

भारत सरकार ने तथा रियासतों के महाराजाओं ने इनकी सेवाओं के आदर में कई सम्मानित उपाधियाँ प्रदान की। होल्कर महाराजा ने इनको "राज्य भूषण" की उपाधि देकर सम्मानित किया। भारत सरकार की ओर से उनको "रायबहादुर" तथा उदयपुर महाराज की ओर से "राज्य बन्धु" की उपाधियाँ प्रदान की गई। जोधपुर महाराजा ने इनको गोल्ड एन्कलेट, ताज़ीम और हाथी शिरोपाव तथा इनके पुत्र और पुत्र वधू को दाल्ड इन्कलेट प्रधान किया।

नन्दलाल भण्डारी मिल्स लिमिटेड के अध्यक्ष होने के अतिरिक्त इन्होने कई उद्योगों के उत्थान लिये भी भरसक प्रयत्न किया। थे मध्य भारत के मिल मालिको के संगठन के उपाध्यक्ष थे। इनके निरन्तर प्रयास ने इन्दौर को औद्योगिक नक्शे में महत्वपूर्ण स्थान दिया। मध्य भारत की जनता की स्मृति में इनकी सामाजिक क्षेत्र की शिक्षा तथा औद्योगिक क्षेत्र की सेवायें हमेशा रहेगी।

श्री सुगनमल भण्डारी

श्री सुगनमल भण्डारी रायबहादुर कन्हैयालाल भण्डारी के छोटे भ्राता हैं। आपका जन्म सन् १६०४ में हुआ। आप नन्दलाल भण्डारी मिल्स लि०, रायबहादुर कन्हैयालाल भण्डारी मिल्स लि०, दी सेन्ट्रल इण्डिया इन्श्युरेंस को० लि०, नन्दलाल भण्डारी एण्ड सन्स लि०, भण्डारी आयर्न एण्ड स्टील को० लि०, गजेन्द्र सिंह रणधीर सिंह आइल मिल्स लि०, महाराना भूपाल इलेक्ट्रिक सप्लाय को० लि० दयपुर इन सब प्रतिष्ठानों के बोर्ड आफ डायरेक्टर्स के चेअरमेन हैं। इसके अतिरिक्त मध्य भारत सरकार द्वारा निर्मित एड-ट्र इण्डस्ट्रीज बोर्ड एण्ड काटन कमेटी, राबर्ट्स नरसिंग होम की मैनेजिंग कमेटी तथा मध्य भारत मिल ओनर्स एसोसिएशन, इन्दौर, लेबर हाऊसिंग कमेटी, इण्डियन मर्चेण्ट्स चेम्बर बम्बई, बेंक आफ इन्दौर लि० की वर्किंग कमेटीज के मेम्बर हैं। डेली कालेज के राइफल क्लब के आप पेट्रन हैं। मध्य भारत चेम्बर आफ कामर्स के वाइस प्रेसिडेण्ट हैं। सन् १६५१ में इन्दौर में जो आल इण्डिया इण्डस्ट्रियल और एग्रीकल्चराल प्रदर्शनी हुई थी उसकी वर्किंग कमेटी के आप चेअरमेन थे। उदयपुर दरबार ने आपको सोने (Anklet) का सम्मान बख्शा था। आप हर प्रकार के सामाजिक और शिक्षा सम्बन्धी कार्यों में उदारता

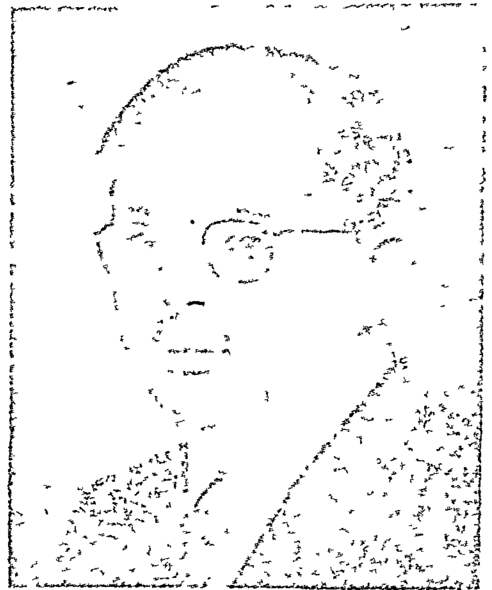


श्री सुगनमल भण्डारी

के साथ सहायता देते रहते हैं। आपकी तरफ से रामपुरा में नन्दलाल भण्डारी बोर्डिंग हाऊस के नाम से एक छात्रावास और इन्दौर में एक हाई स्कूल चल रहा है। अपने मिल में काम करने वाले मजदूरों तथा कर्मचारियों के हितों का आपको पूरा ध्यान रहता है। तथा भारतवर्ष की आर्थिक और औद्योगिक उन्नति के लिए आप अपनी शक्ति के अनुसार हमेंशा सचेष्ट रहते हैं। आपने जापान, अमेरिका और सम्बन्धित देशों का वहाँ की औद्योगिक स्थिति का अध्ययन करने के लिये भ्रमण किया है और कपड़ा उद्योग के सम्बन्ध में गहरा ज्ञान प्राप्त किया है।

श्री भँवर सिंह भण्डारी

आप स्व० मोतीलाल भण्डारी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। आपका जन्म सन् १९१४ में हुआ। आप इन्दौर के रोटरी क्लब के सन् ४९-५० और सन् ५४-५५ में प्रेसीडेण्ट चुने गये। और कई भिन्न २ स्थानों पर आफिस बेअरर की तरह काम करते रहे। सन् ५१ में आप रोटरी इण्टर नेशनल डिस्ट्रिक्ट के गवर्नर चुने गये और इसी सिलसिले में रोटरी इण्टर नेशनल असेम्बली में शरीक होने के लिये सन् १९५० में आपने अमेरिका का भ्रमण किया।


श्री भँवर सिंह भण्डारी

आपने जापान, चीन, और फिलिपाइन की यात्रा सन् १९३९ में और इटाली, फ्रान्स, स्वीझर-लैण्ड, हालेण्ड, डेनमार्क, स्पीडन और इंग्लैण्ड की यात्रा सन् १९५० में की।

जैनवाचनालय इन्दौर के आप प्रेसिडेण्ट, और मध्यभारत क्रिकेट एसोसिएशन के वाईस प्रेसिडेण्ट हैं। आप इन्दौर नगर पालिका के दस वर्षों से मेम्बर हैं।

आप दी नन्दलाल भण्डारी मिल्स लि०, राय बहादुर कन्हैयालाल भण्डारी मिल्स लि०, नन्दलाल भण्डारी एण्ड-सन्स लि०, दी महाराजा भूपाल इलेक्ट्रिक सप्लाई कं० लि० उदयपुर, राजेन्द्र सिह रणधीर सिंह ऑइल मिल्स लि०, भण्डारी ऑयर्न एण्ड स्टील को० लि० उदयपुर, उदयपुर मिनेरल्स लि० उदयपुर, विस्को यानमार लि० इन्दौर, तथा मेसर्स टी० मानेकलाल मैन्यू फैक्चरिंग को० लि० बम्बई के डॉयरेक्टर हैं।



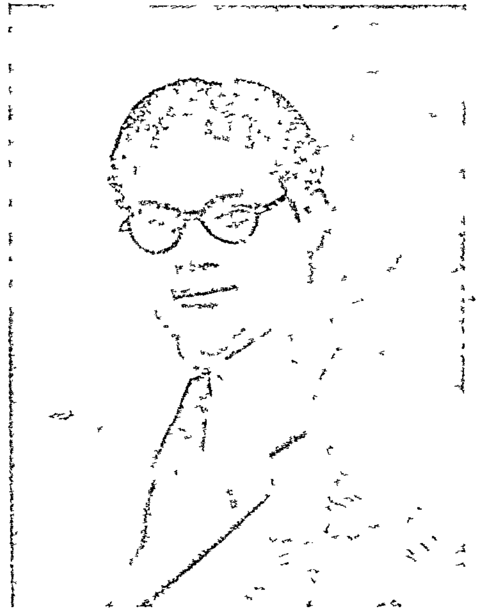
कैप्टेन नरेन्द्रसिंह भण्डारी

कैप्टेन नरेन्द्रसिंह भण्डारी

आप स्व० मोतीलाल भण्डारी के द्वितीय पुत्र हैं आप का जन्म सन् १९१७ में हुआ। आप भण्डारी उद्योग प्रतिष्ठान के विस्तृत कारबार की देखरेख में भाग लेते हैं।

श्रीवीरेन्द्रसिंह भण्डारी

आप स्व० मोतीलाल भण्डारी के तृतीय पुत्र हैं। आपका जन्म सन् १९२८ में हुआ। आपने होल्कर कालेज में शिक्षा ग्रहण की। सन् १९५० में आप क्रिकेट टीम में मैच खेलने सीलोन गये थे। १९५१ में आपने इंग्लैण्ड की यात्रा की। मिल के कारबार में आप बहुत दिलचस्पी लेते हैं।



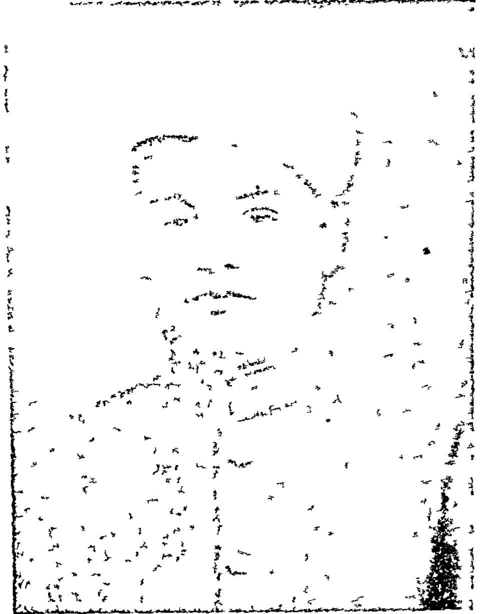
श्री वीरेन्द्रसिंह भण्डारी

कोठारी उद्योग प्रतिष्ठान कलकत्ता

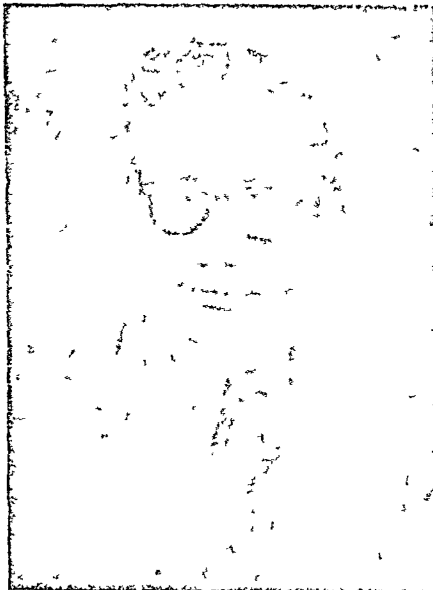
कोठारी उद्योग प्रतिष्ठान कलकत्ते का एक सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठान है जो इञ्जीनियरिंग क्षेत्र में निर्माण होनेवाले नदियों के बड़े २ बांधों तथा इसके कार्य्यों के कण्ट्राक्ट लेता है तथा इस प्रतिष्ठान के संचालक बीकानेर के मूल निवासी हैं। आप माहेश्वरी जाति के कोठारी गोत्रीय सजात हैं।

करीब पचास वर्ष पूर्व इस फर्म के पूर्व पुरुष बीकानेर से कलकत्ता आये और यहाँ पर अपना व्यापार प्रारम्भ किया।

कोठरी ने इस फर्म की उन्नति में बहुत भाग लिया मगर कम उमर में ही उनका स्वर्गवास हो गया।



स्व० सेठ नरसिंह दास कोठारी



सेठ गिरधर दास कोठारी

सेठ नरसिंह दास कोठारी के पुत्र सेठ गिरधर दास कोठारी इस समय फर्म का संचालन कर रहे हैं। आप बहुत प्रतिभाशाली, तेजस्वी और इण्टर प्राइजिंग प्रकृति के नवयुवक हैं। आपने इस फर्म के व्यवसाय को बहुत उन्नति पर पहुँचाया है। कुछ समय पूर्व आपने दामोदर नदी पर बँधने वाले एक विशाल बाँध का कण्ट्राक्ट लिया था जिसे सफलतापूर्वक पूर्ण कर दिया गया है। हाल ही में आपने एक जूट मिल भी खरीदा है।

आपके तत्वावधान में कोठारी उद्योग प्रतिष्ठान मजबूती के साथ उन्नति के पथ पर बढ़ता जा रहा है।

भारतके उद्योग और उद्योगपति

Indian Industrial & Industrialists

भारतकी औद्योगिक प्रतिभाएँ

Industrial Magnates of India

मेसर्स बाजोरिया एण्ड कम्पनी

कलकत्ता ।

बाजोरिया एण्ड कम्पनी कलकत्ता

इस प्रसिद्ध औद्योगिक प्रतिष्ठानके पूर्वजोंका मूल निवासस्थान फतहपुर (शेखावटी) का है। इस परिवारमें सेठ रामानन्द बाजोरिया हुए। आप देशसे पैदल मार्ग द्वारा चलकर व्यापारके लिए आगरा आये। यहाँपर आप साधारण व्यवसायिक कार्य करते रहे, आपके सेठ शिवदयाल एवं सेठ हरदयाल नामक दो पुत्र हुए। आप दोनों बन्धुओंने अपने पिताकी मृत्युके पश्चात् आगरेसे गाजीपुर आकर यहाँपर नीलका व्यवसाय प्रारम्भ किया। उन दिनों सारे भारतवर्षमें नीलसे तैयार किए हुए रंगका ही व्यापार था। अतः आपको इस व्यवसायमें बहुत सफलता मिली। आपकी फर्मने भी धीरे-धीरे बहुत तरक्की की और थोड़े समयमें आपकी फर्म वहाँकी प्रतिष्ठित फर्मोंमें गिनी जाने लगी। तदनन्तर आप दोनों भ्राताओंने गोरखपुरमें जमींदारी भी खरीद की और सेठ शिवदयालने संवत् १९१२ में कलकत्तामें अपनी एक शाखा खोली। आप दोनोंने इस प्रकार अपने व्यापारको खूब बढ़ाया और कलकत्ताको व्यवसायके लिए उपयुक्त स्थान जानकर संवत् १९२८ से आप लोगोंने इसे अपना हेडआफिस बना लिया। तबसे आप लोग यहीं रहते हैं।

सेठ शिवदयाल बाजोरिया

सेठ शिवदयाल बाजोरिया बड़े साहसी, व्यापार कुशल एवं चतुर व्यक्ति थे, आपने अपनी फर्मके व्यापारको खूब चमकाया और उस पर कई नये-नये काम शुरू किये। इसी समय संवत् १९५० के करीब आपने अपनी फर्मपर कागजके सावा घासका व्यापार शुरू किया। इसके लिए साहबगंज आदि स्थानोंपर आपने अपनी फर्में स्थापित कीं।

आपके सेठ गौरीदत्त, सेठ जगन्नाथ एवं सेठ रामजीदास नामक तीन पुत्र हुए। इनमें सेठ गौरीदत्तका अल्पवयमें ही स्वर्गवास हो गया।

रायबहादुर रामजीदास बाजोरिया

रायबहादुर रामजीदासका जन्म सं० १९२८ में हुआ था। आपने व्यापारिक कार्योंके साथ-साथ अपने जीवनमें कई चिरस्मरणीय धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्य किये। आप कलकत्तेकी मारवाड़ी समाजमें प्रतिष्ठित एवं नामी पुरुष माने जाते हैं। आप बड़े साहसी, दृढ़ प्रतिज्ञ एवं कट्टर सनातनधर्मी महानुभाव थे सन् १९११ में आपने श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी विद्यालयके भवनके लिए ३ लाख रुपये बड़े परिश्रम करके एकत्र किये। आप बहुत वर्षों तक इसके सेक्रेटरी एवं प्रेसिडेंट रहे। परोपकार और सार्वजनिक कामोंमें आप बहुत ही दिलचस्पीसे हाथ बँटाते रहे। उपरोक्त विद्यालयके अनुसार ही आपने एक विशाल स्केलपर विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल स्थापित करनेमें बहुत ही प्रयत्न किया। तथा इस परोपकारी कार्यमें स्वयंने ढाई लाख रुपयोंका दान देकर अपने बहुतसे मित्रोंके

सहयोगसे बीस लाख रुपये इकट्ठे किये। इसके अतिरिक्त आप उक्त नामी संस्थाके १५ वर्षों तक सेक्रेटरी रहे और उसकी पूर्ण रूपसे व्यवस्था लगानेमें सफल हुए। स्थानीय सावित्री पाठशालाकी अन्य कई कठिनाइयोंको हल करनेके साथ साथ आपने उक्त संस्थाको २५०००) की आर्थिक सहायता भी प्रदान की। इसी प्रकार यहाँकी 'मारवाड़ी एसोसिएशन', सनातनधर्म देवालय समिति, वर्णाश्रम संघ, आदि-आदि संस्थाओंको पूर्ण रूपसे सहायता प्रदान कर आपने अपनी उदारताका परिचय दिया। मारवाड़ी थाइसेस अस्पताल नामक परोपकारी संस्थाको २५,०००) की रकम दानस्वरूप प्रदान की। आपकी इन सार्वजनिक सेवाओंसे प्रसन्न होकर ब्रिटिश गवर्नमेंटने आपको सन् १९२४ में "राय बहादुर"की पदवीसे सम्मानित किया। यहांकी गवर्नमेंटने भी आपका यथोचित सत्कार किया। आप इनड़ाके १८ सालोंतक आनरेरी मजिस्ट्रेटके पदको विभूषित कर चुके हैं। इसी प्रकार अग्रवाल जातिमें भी आपका बहुत मान है। आप अग्रवाल पंचायतके सभापति भी रह चुके हैं। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपने अपने हिस्सेकी रकम ७॥ लाख रुपयोंको धार्मिक कामोंमें खर्च करनेका संकल्प छोड़ दिया था और उसका नियमानुसार व्यवस्थित ट्रस्ट भी बना दिया है। आपके बाबू बलदेवदास, बैजनाथ, केदारनाथ तथा रामनाथ नामक चार पुत्र हुए।

स्व० सेठ बलदेव दास बाजोरिया

बाबू बलदेवदास बाजोरियाका जन्म सं० १९५० में हुआ। आप सेठ बलदेवदास बाजोरिया सेठ रामजी दास बाजोरियाके सबसे बड़े पुत्र थे। आप बड़े होशियार और धार्मिक प्रवृत्तियोंके सज्जन थे। आपने सन् १९३६ में सहारनपुरमें 'स्टार पेपर मिल' के नामसे विशाल कागज उद्योग प्रतिष्ठानकी स्थापना की। आपके अध्यवसाय, कार्य कुशलता और बुद्धिमानीके कारण यह मिल आज भारतकी प्रमुख कागज मिलोंमें गिनी जाती है और उत्तर प्रदेशकी व्यर्थमें जाने वाली सबाई घासका उपयोग कर १० हजार आदमियोंकी जीविकोपार्जनका साधन बन रही है।


स्व० सेठ बलदेव दास बाजोरिया

कागज उद्योगके अतिरिक्त सेठ बलदेवदास बाजोरियाने जमींदारी और शेयरोंके व्यापारमें भी बहुत सफलता प्राप्त की। अपने पिताकी तरह ही आप नितान्त धर्मपरायण एवं दयालु प्रकृतिके पुरुष थे। आप मारवाड़ी एशोशियेशन और मारवाड़ी

अग्रवाल पंचायतके मन्त्री रह चुके थे। बंगालकी और अनेक धार्मिक और सार्वजनिक प्रवृत्तियोंमें आप बराबर अग्रगण्य रहे।

सेठ बलदेवदास बाजोरिया बलसुन्द सूगर कम्पनी, लारेन्स जूट कं०, शिवा जूट प्रेस, इस्टर्न बंगाल जूट ट्रेडिंग कं०, कूच बिहार ट्रेडिंग कं० इत्यादि नौ लि० कम्पनियोंके डाइरेक्टर थे।

आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः सेठ नन्दकिशोर बाजोरिया, सेठ बद्रीप्रसाद बाजोरिया और सेठ शिवशंकर बाजोरिया हैं। सेठ बलदेवदास बाजोरियाके स्वर्गवासके पश्चात् उनके नामपर इन तीनों भाइयोंने पाँच लाख रुपयेके दानसे सेठ बलदेवदास बाजोरिया चैरिटी ट्रस्टकी स्थापना की। इस ट्रस्टकी ओरसे सहारनपुरमें एक डिग्री कालेज एक आधुनिक यंत्र सामग्रीसे सज्जित अस्पताल और अन्य धार्मिक प्रवृत्तियाँ चल रही हैं। जिनसे हजारों व्यक्ति लाभ उठाते हैं।

सेठ नन्दकिशोर बाजोरिया

सेठ नन्दकिशोर बाजोरिया सेठ बलदेवदास बाजोरियाके ज्येष्ठ पुत्र हैं। स्टार पेपर मिलके संस्थापन और कुशल संचालनमें आप हमेशा अपने पिता सेठ बलदेवदास बाजोरियाका हाथ बँटाते रहे और उनके स्वर्गवासके पश्चात आपही स्टार पेपर मिलके बोर्ड आफ डाइरेक्टर्सके चेयरमैन हैं। इस प्रतिष्ठान व बाजोरिया एण्ड कं० की युद्ध कालमें इतनी उन्नति होनेमें आपकी बुद्धिमानी व कार्य तत्परताही प्रमुख है। स्टार पेपर मिलके अतिरिक्त आपने स्टार टेक्सटाइल्स लि० नामक कपड़ा उद्योग और शिवा ग्लास वर्क्स कं० लि० नामक काँच उद्योगकी स्थापनाकी। और शेयरोंके व्यापारमें भी खूब सफलता प्राप्त की।

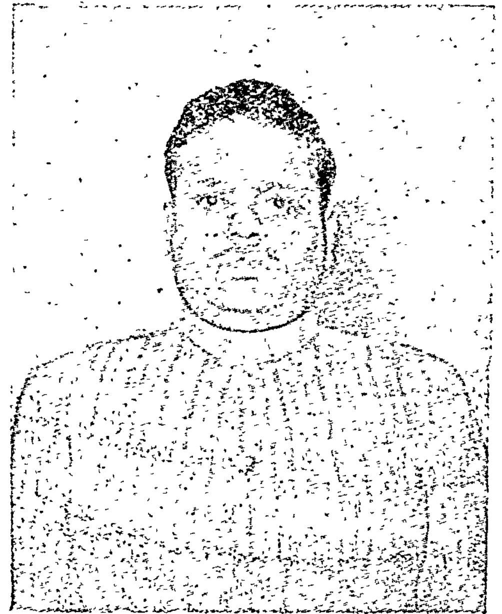


नन्द किशोर बाजोरिया

आप इण्डियन पेपर मिल्स एशोशियेशनके दो साल तक सभापति रह चुके हैं तथा 'मधुसूदन कॉटन मिल्स लि० एलेक्ट्रिक सप्लाई कं० मुजफ्फरपुर, हाल एन्ड एन्डर सन्, शाहजहाँपुर एलेक्ट्रिक सप्लाई कं, विक्टोरिया ग्लास वर्क्स, गया सूगर मिल्स, सोदपुर ग्लॉस वर्क्स, बलसुन्द सूगर कम्पनी, हल्दी बाड़ी जूट कम्पनी, पद्म टी कम्पनी, जूट बेलिंग एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी, आदि करीब २० लिमिटेड कम्पनियोंके डॉयरेक्टर हैं। आप बड़े मिलनसार और धार्मिक प्रवृत्तिके व्यक्ति हैं। भारतके प्रसिद्ध उद्योगपति मेसर्स सूरजमल नागरमलके पार्टनर सेठ बैजनाथ जालान की पुत्रीसे आपका विवाह हुआ है।

सेठ बद्री प्रसाद बाजोरिया

सेठ बद्रीप्रसाद बाजोरिया सेठ बलदेवदास बाजोरियाके द्वितीय पुत्र हैं। आपकी औद्योगिक संगठनशक्ति और कार्यतत्परता बहुत बढ़ी हुई है। आजकल स्टार पेपर मिल्सका संचालन आपहीके द्वारा हो रहा है। आपके ही लगातार प्रयाससे इस मिलका उत्पादन करीब डेढ़ा होगया है और आशा की जाती है कि बहुत शीघ्रही इस मिलका उत्पादन चौगुना हो जावेगा। जिससे यह मिल एशियामें अपने ढङ्गकी अद्वितीय हो जावेगी। आप श्री हनुमान कॉटन मिल्स मुजफ्फरपुर, एलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी, शाहजहाँपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कं०, बिहार नेशनल कारपोरेशन, स्टार ट्रेडिंग एण्ड इनवेस्ट मेण्ट कम्पनी इत्यादि कई कम्पनियोंके डाइरेक्टर हैं।



सेठ बद्री प्रसाद बाजोरिया



सेठ शिवशंकर बाजोरिया

सेठ शिवशङ्कर बाजोरिया

सेठ शिवशङ्कर बाजोरिया सेठ बलदेवदास बाजोरियाके सबसे छोटे पुत्र हैं। आप धार्मिक प्रवृत्तिके सुशील नवयुवक हैं। स्टार पेपर मिलकी व्यवस्थामें आपका भी बड़ा सहयोग है। शिवा-ग्लास कम्पनीके आप डायरेक्टर हैं।

श्री उमाशङ्कर बाजोरिया

श्री उमाशंकर बाजोरिया सेठ नन्दकिशोर बाजोरियाके ज्येष्ठ पुत्र हैं। आप एक होनहार और सुशिक्षित नवयुवक हैं। स्टार पेपर मिलके कार्योंकी देखभालके अतिरिक्त आप स्टार टैक्स टाइल्स लि० के सम्पूर्ण कार्यभारको सम्भाले हुए हैं। इस

उद्योग प्रतिष्ठानने आपकी देख-रेखमें काफी उन्नति की है। आपने कुछ समय तक बम्बईकी श्री मधुसूदन काटन मिल्सका काम भी बड़ी योग्यतासे सम्हाला। हाल ही में आपकी प्रेरणासे इस कम्पनीमें आर्कटिपुर टी कम्पनी नामक एक चाय बगान भी खरीदा गया है।

औद्योगिक विस्तार

(१) स्टार पेपर मिल्स लिमिटेड

यह कागजकी मिल उत्तरप्रदेशमें सहारनपुरमें बनी हुई है। इसकी अधिकृत और स्वीकृत पूँजी चालीस लाख रुपया है। जो शीघ्र ही एक करोड़की की जानेवाली है। इस मिलमें उत्तरप्रदेशमें प्रचुरतासे पैदा होनेवाली सवाई घाससे छापने और लिखनेका कागज बनता है। इस समय इस मिल का उत्पादन बीस टन प्रतिदिन होता है। मगर शीघ्र ही करीब पचास टन प्रतिदिन उत्पादनकी शक्ति रखनेवाली एक मशीन और लगानेकी योजना है। इस नई मशीनमें 'पाईन" नामक लकड़ीसे कागज बनेगा। इस लकड़ीसे कागज बनानेवाली यह पहली ही मिल होगी। यह लकड़ी भी उत्तरप्रदेशमें काफी तादादमें पैदा होती है और अभी तक इसका कोई उपयोग नहीं है। इस मिलकी सफलताका अनुमान इसी बातसे किया जा सकता है कि काफी अर्सेसे यह मिल अपने शेअर होल्डरोंको दस प्रतिशत डिविडेंट बाँट रही है।

इस कम्पनीके डायरेक्टर निम्नाङ्कित हैं—

१—सेठ नन्दकिशोर बाजोरिया (चेअरमैन)
२—सेठ मोहनलाल जालान
३—डा० नृपेन्द्रनाथ ला
४—सेठ चम्पालाल जटिया
५—सेठ मदनलाल चमड़िया
६—सेठ बद्रीप्रसाद बाजोरिया

इस मिलकी मैनेजिंग एजण्ट मेसर्स बाजोरिया एण्ड कम्पनी है।

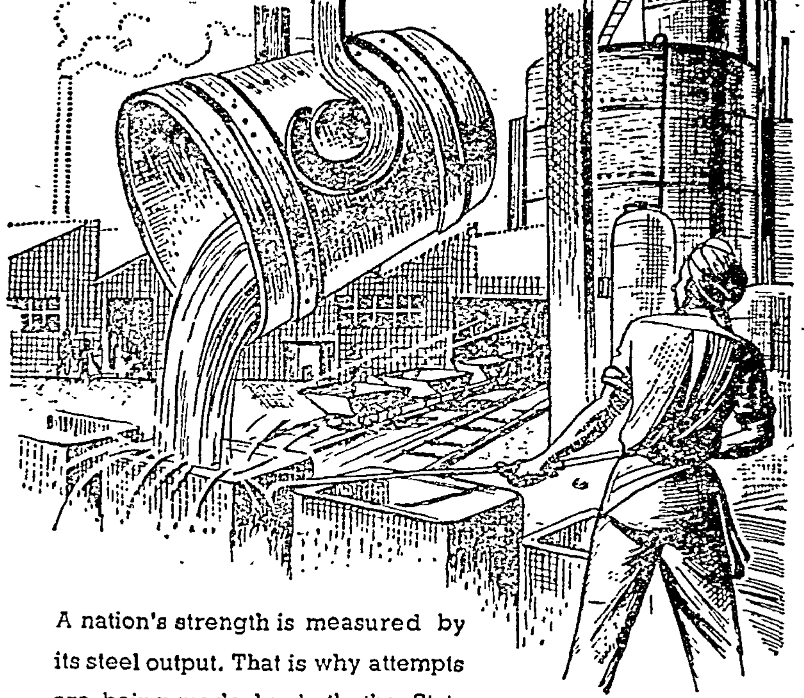
२—शिवा ग्लॉस वर्क्स कम्पनी लि०

इस प्रतिष्ठानके अन्तर्गत कांचकी दो फैक्टरियाँ चल रही हैं। इन फैक्टरियोंमें कांचका सब प्रकार का सामान बनता है। यह प्रतिष्ठान अत्यन्त गिरी हुई हालतमें बाजोरिया बंधुओंके द्वारा खरीदा गया था। मगर इनके संचालनमें आनेके बाद अब इसकी हालत बहुत अच्छी होगई है। इन फैक्टरियोंके बने हुए मालकी भारतमें बहुत मांग है और इनकी क्वालिटी भी भारतकी अच्छी फैक्टरियोंके मुकाबले की होगई है। दोनों कारखानोंमें करीब ७०० आदमी काम करते हैं इस प्रतिष्ठानका कार्य श्रीशिवप्रसाद मोदी देखते हैं।

३—स्टॉक टैक्सटाइल्स लि० कलकत्ता, (४) नन्दकिशोर एण्ड कम्पनी (५) स्टार ट्रेडिंग एण्ड इनवेस्टमेंट लि०, (६) आर्कटिपुर टी कम्पनी।

स्टार पेपर मिल
सहारनपुर

Wanted - MORE STEEL..



A nation's strength is measured by its steel output. That is why attempts are being made by both the State and the private producers to step up our Steel output speedily. The Government has already embarked upon its first Steel unit at Rourkella, in Orissa, and is contemplating the establishment of other units in the country.

As everywhere else, paper has helped in the framing of the plans for the setting up of these large steel units.

"STAR Paper" is always ready to do its part in the country's development.

स्टार पेपर मिल आधुनिक मशीनरियोंसे सुसज्जित, एक विशाल मिल है। यहाँ का बना कागज सुन्दर, मजबूत तथा आकर्षक होता है।

HEAD OFFICE
NARAYANI BUILDINGS
27, BRABOURNE ROAD,
CALCUTTA-1

MILL AT
SAHARANPUR

STAR PAPER MILLS LTD.

SP/O.27

भारत के उद्योग और उद्योगपति

Indian Industries & Industrialists



भारत की व्यवसायिक प्रतिभाएं



मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र (प्रा० लि०) प्रतिष्ठान
कानपुर, अमृतसर, कलकत्ता।

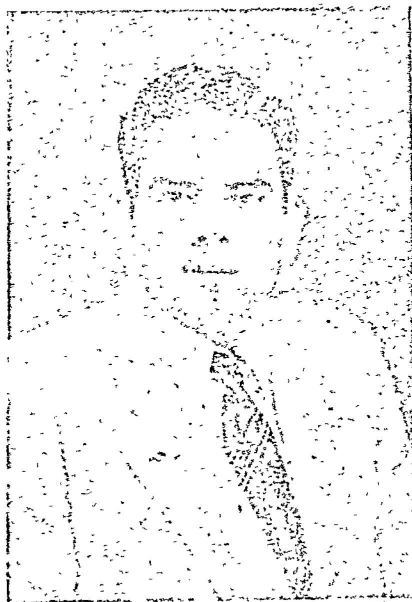
सोल सेलिंग एजण्ट्स–
दी एलगिन मिल्स लि०, दी कानपुर टैक्सटाईल्स लि०, दी कानपुर काटन मिल्स लि०,

लाला मोतीचन्द केजड़ीवाल कानपूर

हृदय में तीव्र महत्त्वाकांक्षा, मनमें अदम्य उत्साह, मस्तिष्क में निश्चयात्मक विवेक बुद्धि और सेवा-भावना को लेकर कानपुर का यह व्यवसायी नवयुवक धीर और सुदृढ गति से औद्योगिक क्षेत्र में अपने मजबूत कदम बढ़ाता चला जारहा है।

बहुत छोटी उमर में अपने पिता का देहावसान हो जाने पर लाला मोतीचन्द ने अपने विस्तृत व्यापार का सञ्चालन अपने हाथों में लिया और केवल २७ वर्ष की आयु में ही उसे अत्यन्त सुन्दर ढङ्ग से व्यवस्थित कर दिया।

लाला मोतीचन्द कानपुर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी स्व० लाला बलदेव सहाय (निहालचन्द बलदेव सहाय) के उत्तराधिकारी हैं। इस समय कानपूर की तीन बड़ी २ कपड़ा मिलों (एलगिन मिल, कानपूर टैक्सटाइल्स, और कानपूर कॉटन मिल्स) की सारे भारत के लिए सोल सेलिङ्ग एजन्सी का आप सञ्चालन कर रहे हैं। और निकट भविष्य में एक विशाल टैक्सटाइल मिल्स की स्थापना करने के लिए योजना बनाने के कार्य्य में व्यस्त हैं।



लाला मोतीचन्द केजड़ीवाल कानपुर

लाला मोतीचन्द कानपूर के व्यवसायिक समाज में एक प्रतिभा शाली युवक हैं और यह आशा की जाती है कि निकट भविषय में सारे भारत के औद्योगकि, और व्यवसायिक समाज में आप चमकने लगेंगे।

मेसर्स रूपनारायण रामचंद्र प्रतिष्ठान

अपनी उत्कृष्ट व्यापारिक प्रतिभा के बल पर बड़े २ उद्योग प्रतिष्ठानों की समस्त भारत के लिए सोल सेलिंग एजन्सियां लेकर सारे देश में उनका प्रचार करना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और विलक्षण बुद्धि का कार्य्य है। इस प्रकार के समस्त भारत के व्यवसायिक क्षेत्र में कानपूर के मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र एक प्रमुख स्थान रखते हैं। टैक्सटाइल उद्योग के क्षेत्र में यह प्रतिष्ठान बड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

पूर्व इतिहास

इस प्रतिष्ठान के संचालकों के पूर्व पुरुषों का मूल निवास स्थान नारनौल (परियाला) का है। इस परिवार का इतिहास लाला हरगोपाल केजड़ीवाल से प्रारम्भ होता है।

लाला हरगोपाल केजड़ीवाल के लाला निहालचंद, लाला बलदेवसहाय और लाला रामजसमल नामक तीन पुत्र हुए।

लाला बलदेव सहाय

इनमें लाला बलदेव सहाय का जन्म सम्वत् १८०० में हुआ था।

लाला बलदेव सहाय सन् ५७ के गदर के पूर्व अपनी छोटी उमर में ही व्यवसाय के निमित्त देश छोड़ कर लखनऊ आये तथा लखनऊ से कानपुर आये।

कानपूर आकर आपने जानकी दास बलदेव सहाय के नाम से व्यवसाय प्रारम्भ किया। उस समय दूर २ से बैलों की कतारों द्वारा इस फर्म पर बाहर से नमक आता था और यहाँ पर बिकता था।

सेठ बलदेव सहाय बड़े व्यवसाय कुशल और भाग्यवान पुरुष थे। आपने छोटी सी अवस्था में व्यवसाय प्रारम्भ किया और उसे लम्बे समय तक सञ्चालित कर अपनी बुद्धिमत्ता से बहुत उन्नति पर पहुँचाया।

व्यवसायमें सम्पत्ति उपार्जित करके आपने अपने पिता लाला हरगोपाल के स्मारक में नारनौल में एक बहुत बड़े तालाब तथा एक मन्दिर का निर्माण करवाया।



स्व० लाला बलदेव सहाय कानपुर

लाला बलदेव सहाय सं० १९४३ तक मेसर्स जानकी दास बलदेव सहाय के नाम से व्यापार करते रहे। तत्पश्चात् आपने सम्वत् १९४७ में मेसर्स निहालचन्द बलदेव सहाय के नामसे फर्म स्थापित किया और जीवन भर इसकी उन्नति में भाग लेते रहे।

क्रमशः उन्नति करते हुए आपने अपनी दुकान की ४ शाखाएँ देहली, अमृतसर, मुलतान तथा झाँसी में खोलीं।

इस फर्म के व्यवसाय में आपके साथ आपके बड़े भाई के पुत्र लाला किशोरीलाल भी भागीदारी के रूप में काम करते थे। सम्वत् १९७२ में लाला किशोरीलाल अलग होकर मेसर्स निहालचन्द किशोरी लाल के नाम से अलग व्यवसाय करने लगे।

आगे जाकर इस फर्म ने कानपूर के सुप्रसिद्ध कपड़ा मिल म्यौर मिल की समस्त भारत के लिए सोल सेलिंग एजन्सी ले ली और साथ ही यह फर्म बहुत बड़े पैमाने पर रूई का व्यवसाय भी करने लगी।

इन सब व्यवसायों में सफलता प्राप्त करती हुई यह फर्म दिनपर दिन बढ़ती गई और व्यवसायिक समाज में मजबूत और नामांकित फर्मों में मानी जाने लगी।

इस प्रकार प्रतिष्ठापूर्ण जीवन बिताते हुए लाला बलदेव सहाय ६७ वर्ष की अवस्था में सम्वत् १९६७ में स्वर्गवासी हुए।

लाला बलदेव सहाय के लाला छंगामल नामक एक पुत्र हुए।

लाला छंगामल

लाला छंगामल का जन्म सम्वत् १९२४ में हुआ आप अपने विस्तृत व्यापार के संचालन में अपने पिताजी को सहयोग देते रहे। अपने पिताजी की स्मृति में आपने कई लाख रुपये लगाकर "श्री बलदेवसहाय संस्कृत महाविद्यालय" की सम्वत् १९७७ में स्थापना की। इसमें १०० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं तथा कुछ विद्यार्थियों के लिए भोजन का भी प्रबन्ध है। इस प्रकार धार्मिक तथा व्यवसायिक कार्यों को करते हुए सम्वत् १९८२ में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम लाला गयाप्रसाद, लाला रूपनारायण तथा लाला रामचन्द्र था। इनमें से लाला गयाप्रसाद का सम्वत् १९६७ में और लाला रूपनारायण का १९८२ में निःसन्तान स्वर्गवास हो गया। लाला रूपनारायण ने इस फर्म पर एलगिनमिल की सोल सेलिंग एजन्सी प्राप्त कर उसे और उन्नति पर पहुँचाया।

लाला रामचन्द्र केजड़ीवाल।

लाला रामचन्द्र केजड़ी वाल का जन्म संवत् १९६३ के जेठ मास में हुआ। कानपुर नगर के आप एक धनिक तथा गण्यमान्य व्यक्ति थे। आप स्वभाव के बड़े नम्र तथा सज्जन पुरुष थे। शिक्षा और पठन पाठन के काम में आपकी बहुत रुचि थी। कपड़ा बाजार में उनके व्यवहार की सच्चाई का आज भी



स्मरण किया जाता है। आप वर्षों चेम्बर आफ कामर्स के ऑनरेरी सेक्रेटरी रहे और भी कई सार्वजनिक संस्थाओं से आपका सम्बन्ध रहता था। आपका स्वर्गवास बहुत युवावस्था में ही ३ दिसम्बर १९४५ में होगया। आपके लाला मोतीचंद और किशनचंद नामके दो पुत्र हैं।

लाला मोती चन्द

लाला मोतीचन्द इस परिवार में अत्यन्त बुद्धिमान, इण्टरप्राइजिंग प्रवृति के उत्साही नवयुवक हैं। देश की औद्योगिक उन्नति के अन्दर आप बहुत दिलचस्पी रखते हैं। औद्योगिक क्षेत्र में काम करने की बड़ी २ योजनाएं आपके दिमाग में घूमा करती हैं और दिखलाई देता है कि बहुत ही शीघ्र देश के औद्योगिक क्षेत्र में आप चमकने लगेंगे।

स्व० लाला रामचन्द्र केजड़ी वाल

लाला मोतीचन्द का जन्म २९ जून १६२९ को कानपुर में हुआ। अपने पिता के स्वर्गवास के पश्चात् व्यवसाय संचालन का सारा भार आपके कन्धों पर आपड़ा जिसे आपने खूबी के साथ सम्हाला।

रूपनारायण रामचन्द्र की भागीदारी २९ फरवरी १९५६ को समाप्त कर आपने उसके स्थान पर रूपनारायण रामचन्द्र (प्रायवेट लिमिटेड) प्रतिष्ठान की स्थापना की। जोकि वर्तमान समय में एलगिनमिल कम्पनी लि० तथा कानपुर टैक्स टाइल लि० नामक दो बड़ी २ मिलों की समस्त भारतके लिए सोल सेलिंग एजन्ट है। इस प्रतिष्ठान की शाखाएं अमृतसर, देहली, मुजफ्फरपुर, गया तथा कलकत्ता में है और इसका प्रधान कार्यालय कानपुर में है।

मेसर्स आर० आर० एजन्सीज उपरोक्त कम्पनी की मैनेजिंग एजण्ट्स है।

सन् १९५४ में लाला मोतीचन्द ने ब्रिटिश इण्डिया कारपोरेशन की कानपुर कॉटन मिल्स की सम्पूर्ण भारत के लिए सोलसेलिंग एजन्सी प्राप्त कर एम० के० ब्रदर्स (प्रायवेटलिमिटेड) नामक एक दूसरे प्रतिष्ठान की स्थापना की। इस प्रतिष्ठान के मैनेजिंग डायरेक्टर लाला मोतीचन्द केजड़ीवाल हैं।

इस कम्पनी की शाखाएं मुजफ्फरपुर तथा आगरा में है। तथा हेड आफिस कानपुर में है।

मेसर्स रामचन्द्र एण्डसन्स (प्रा० लि०) इस प्रतिष्ठान की स्थापना लाला मोतीचन्द ने सन् में की। इस प्रतिष्ठान पर बड़े पैमाने पर बैंकिंग और दूसरे व्यवसाय होते हैं। इस कम्पनी की एक शाखा दी अग्रवाल न्यू इण्डस्ट्रीज कानपुर में ही है। इसके अन्तर्गत स्क्रू निर्माण करने की एक फैक्टरी लगाई गई है जो अभी अपनी शैशव अवस्था में है।

आपकी एक दूसरी शाखा मेसर्स मोतीचन्द किशनचन्द के नाम से नयेगंज में है जहाँ कत्थे का बड़े पैमाने पर व्यवसाय होता है।

हालही में वांसल ट्रेडिंग कम्पनी (प्रायवेट लि०) के नामसे आपने एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट का काम भी प्रारम्भ किया है।

निकट भविष्य में ही आपका ध्यान औद्योगिक क्षेत्र में प्रवेश करने का है जिसके परिणामस्वरुप एक बड़ी टैक्सटाइल इण्डस्ट्री स्थापित करने की योजना बनाई जारही है।

लाला मोतीचंद अपर इण्डिया चेम्बर ऑफ कॉमर्स के मेम्बर, श्री बलदेव सहाय संस्कृत महाविद्यालय के सभापति, मेसर्स रूपनरायण रामचन्द्र (प्रा० लि०) के पार्टनर, रामचन्द्र एण्ड सन्स लि०, तथा एम० के० ब्रदर्स लि० के मैनेजिंग डॉयरेक्टर हैं। टेनिस, बागवानी व फोटोग्राफी के आप बड़े शौकीन हैं।

इस छोटी उम्र में ही आपने जिस महत्वाकांक्षा से अपने व्यवसाय की उन्नति की है उसे देखकर आपके व्यवसायिक और औद्योगिक उज्वल भविष्य का सहज ही अनुमान किया जा सकता है।



लाला किशन चन्द

लाला किशन चन्द

लाला किशनचन्द लाला मोतीचन्द के छोटे भाई हैं। इनका जन्म सन् १६४३ में हुआ। इस समय ये विद्याध्ययन कर रहे हैं।

व्यवसायिक विस्तार

मेसर्स रूपनारायण रामचन्द्र कानपूर (प्रा० लि०)
सोल सेलिंग एजण्ट्स एलगिन मिल्स कम्पनी लि० और कानपूर टेक्सटाइल्स लि०
शाखाएँ—अमृतसर, देहली, मुजफ्फर पुर, गया, कलकत्ता

मेसर्स एम० के० ब्रदर्स (प्रा० लि०) कानपूर
सोलसेलिंग एजण्ट् कानपूर, कॉटन मिल्स लि०
शाखाएँ—मुजफ्फर पुर, आगरा

मेसर्स रामचन्द्र एण्ड सन्स (प्रा० लि०)
शाखा—न्यूइण्डस्ट्रीज कानपूर
फैक्टरी—स्क्रू फैक्टरी

मेसर्स मोतीचन्द किशनचन्द नयागंज कानपूर
कत्थे का विशाल व्यापार

मेसर्स वासल ट्रेडिंग कम्पनी (प्रा० लि०)
एक्सपोर्ट इम्पोर्ट।